प्रकाशकीय

'धन्वन्तरि' मासिक पत्र आयुर्वेद जगत मे ७१ सफल वर्ष पूर्ण कर, इस विशेषाक के साथ अपने स्वर्णिम ७२ वे वर्ष मे अत्यधिक गौरवान्वित होकर प्रवेश कर रहा है। मे इस शुभ अवसर पर 'हृदय फुफ्फुस निदान चिकित्सा बुद्धिजीवी पाठको को सादर समर्पित करते हुए हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। इस मासिक पत्र को पिछले छ वर्षो से मे अपने सतत् प्रयास से अनुभवी लेखको की अनुसधानात्मक लेखनी से परिपूर्ण कर तथा आफसेट प्रणाली पर सुन्दर ढग से छपवाकर प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मुझे अपार प्रसन्नता हे कि आपके सहस्रो पत्रो के माध्यम से धन्वन्तरि के पाठको की सख्या मे निरन्तर वृद्धि से इस महान ग्रन्थ को नये परिवेश मे प्रस्तुत करने मे सफल हो रहा हूँ।

म धन्वन्तरि के विद्वान लेखको तथा सहयोगी पाठको से भी अनुरोध करता हूँ कि वह अपने उपयोगी लेखो तथा सुझावो के माध्यम से हमारा सहयोग करते रहे।

प्रस्तुत ग्रन्थ—

प्रस्तुत विशेषाक 'हृदय फुफ्फुस निदान चिकित्सा' का प्रणयन वेद्य हरिमोहन शर्मा के विशेष सम्पादकत्व मे हुआ है। आप पहले भी धन्वन्तरि के विशेषाक का सफल सम्पादन कर चुके हे। इस विशेषाक मे भी आपके सम्पादन का कोशल परिचय आपको अवश्य प्राप्त होगा। इसमे विद्वान चिकित्सको के लिए शोधपरक लेख है, वहीं सामान्य चिकित्सको की दृष्टि से हृदय फुफ्फुस रोगो के निदान एव चिकित्सा का सागोपाग वर्णन कई लेखो मे प्रस्तुत हे। आज के युग मे निदान और चिकित्सा मे आधुनिक चिकित्सा पद्धति ने जीवन मे एक विशिष्ट स्थान बनाया हे। कई बार रोगी आधुनिक पद्धति के निदान प्रतिवेदनो **(Dianostic Reports)** तथा आधुनिक उपचारात्मक प्रतिवेदनो **(Modern Treatment Reports)** के साथ वेद्यो के सम्मुख प्रस्तुत होते हे। इससे उन्हे आधुनिक पद्धति से परिचय कराने की दृष्टि से भी कुछ लेखो का समायोजन किया हे। हमारे सुधी पाठको मे ऐसे जन भी है जो यद्यपि चिकित्सक तो नहीं है पर आयुर्वेद प्रेम ओर अभिरुचि के कारण हमारे नियमित पाठक व ग्राहक हे। यह ग्रन्थ उनके लिए भी उपयोगी हो सके इस दृष्टि से भी कुछ लेखको का चयन कर इसमे सम्मिलित किया गया है। इस सबके लिये हमारे विशेष सम्पादक महोदय बधाई के पात्र ह। अब यह ग्रन्थ केसा बन पडा ? इसका निर्णय तो आप पाठकगण ही करेगे। आप अपनी प्रतिक्रिया से अवगत अवश्य कराईयेगा, ऐसी अपेक्षा है। इसके लिए हम आपके आभारी रहेगे। लेखो को कई खण्डो मे प्राप्त होने से विषयो मे व्यतिक्रम हुआ है, इसके लिए पाठको से क्षमाप्रार्थी हूँ।

आगामी विशेषांक—

धन्वन्तरि पत्रिका के पाठकगणो की ओर से प्राकृतिक चिकित्सा विषय पर विशेषाक प्रकाशित करने की माग काफी समय से है। ३५ वर्ष पूर्व प्राकृतिक चिकित्सा पर विशेषाक हमने प्रकाशित किया था, जिसको ग्राहको ने काफी पसन्द किया एव कई बार इसका पुन. मुद्रण कराना पडा। अब हमारे ग्राहको के अनुरोध को ध्यान मे रखते हुए आगामी वर्ष का वृहत् विशेषाक ''प्राकृतिक चिकित्सा सागर (प्राकृतिक चिकित्सा)'' निकालने का निश्चय किया है। इसके लिए भारत के ७० वर्षीय युवा प्राकृतिक चिकित्सक योगाचार्य डा० गौरीशकर मिश्र द्वारा सम्पादन किया जायेगा। आप पिछले ५० वर्षो से प्राकृतिक चिकित्सा का कार्य कर रहे है। आपने प्राकृतिक चिकित्सा पर कई पुस्तके लिखी है। इस समय आप जीवन निर्माण आश्रम योग प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र के सस्थापक एव सचालक है। धन्वन्तरि के विद्वान लेखको से हमारा अनुरोध है कि वह आगामी वर्ष मे प्रकाशित होने वाले प्राकृतिक चिकित्साक मे अपने सहयोग के लिए विशेषाक के विशिष्ट सम्पादक से सम्पर्क करे। उनका पता निम्न है—

डा० गौरी शकर जी मिश्र
जीवन निर्माण आश्रम, रामघाट रोड, अलीगढ - 202 001
फोन न० — 0571-508710

क्षमा याचना—

इस वर्ष का यह विशेषाक काफी लेट प्रकाशित कर पा रहे है, उसके लिए हम क्षमाप्रार्थी है। इस विशेषाक का सम्पादन का कार्य वैद्य हरिमोहन जी शर्मा को जून मे ही सौप दिया था एव नवम्बर के अन्त तक मैटर देने का निवेदन किया था, परन्तु उनके लगातार बीमार रहने के कारण फरवरी के प्रथम सप्ताह मे हमे मैटर मिल सका। काफी प्रयत्नो के बाद इस समय इसका प्रकाशन कर सके। आगामी विशेषाक 'प्राकृतिक चिकित्सा सागर' का लेखन कार्य डा० गौरी शकर जी मिश्र ने प्रारम्भ कर दिया है। आशा है इस वर्ष समय से प्रकाशन कर सकेगे।

मेरे पूज्य पिताजी श्री भगवती प्रसाद गर्ग का कार मे रखा हुआ ब्रीफकेस चोरी हो गया, जिसमे कुछ लेखको के लेख भी थे। इन लेखो के विषय मे विशेष सम्पादक श्री दाऊदयाल जी गर्ग से विचार-विमर्श करना था। इन लेखो को रजिस्टर मे चढा ही नहीं पाये, जिससे लेख के लेखको का पता भी रिकार्ड मे नहीं रहा, इसके लिए लेखको से क्षमा याचना करते है। हृदय फुफ्फुस निदान चिकित्सा में हृदय खण्ड काफी अधिक मैटर की वजह से फुफ्फुस खण्ड के तीन-चार लेख ही दे पा रहे है। शेष लेखो को मई अक मे परिशिष्टाक के रूप मे प्रकाशित करा रहे है।

इस वर्ष धन्वन्तरि में चार लघु विशेषांक प्रकाशित किये जायेंगे—

पिछले वर्षो की तरह से इस वर्ष चार लघु विशेषाक प्रकाशित किये जायेगे। लेखको से पत्राचार कर रहे है, अभी विषय एव सम्पादकगणो का निश्चय नहीं हुआ है।

आभार प्रदर्शन—

सर्वप्रथम इस विशेषाक के सम्पादक श्री हरिमोहन जी शर्मा का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होने रुग्ण रहते हुए भी धन्वन्तरि का इतने सुन्दर ढग से सम्पादन किया। मै पूज्य ताऊजी डा० दाऊदयाल जी गर्ग आयुर्वेदाचार्य, रत्न सदस्य, आयुर्वेद वृहस्पति, राष्ट्रीय आयुर्वेद सस्थान एव सम्पादक धन्वन्तरि का

भी हृदय से आभारी हूँ जिन्होने निस्वार्थ भाव से इस धन्वन्तरि का आजीवन सम्पादन कर रहे ह।

मै आयुर्वेद मार्तण्ड डा० शिशुपाल जी वार्ष्णेय का भी हृदय से आभारी हूँ जिन्होने कि धन्वन्तरि को अपने जीवन का अग समझकर इसकी सेवा कर रहे है।

मै अपने पिता श्री भगवती प्रसाद बी० फार्मा के प्रति भी अत्यन्त आभार एव कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, उन्हीं के परिश्रम के कारण धन्वन्तरि का यह ग्रन्थ प्रकाशित करा सका हूँ।

पिछले वर्ष धन्वन्तरि के पाठको से निवेदन किया था कि धन्वन्तरि के नवीन ग्राहक बनाकर हमारी सहायता करे। हमे प्रसन्नता है कि हमारी इस अपील का पाठको पर अच्छा प्रभाव हुआ, काफी पाठको ने नवीन ग्राहक बनाये। कई पाठको ने तो दस से अधिक ग्राहक बनाये। हम उन सभी पाठको के हृदय से आभारी है एव निवेदन करते है कि भविष्य मे भी इसी प्रकार नवीन ग्राहक बनाकर हमे सहयोग देते रहेगे।

विद्वान लेखकों के प्रति आभार—

यहाँ पर मैं धन्वन्तरि के सामान्य, लघु तथा वृहत् विशेषाको के समस्त लेखक वृन्दो के प्रति नतमस्तक होकर अपार कृतज्ञता एव आभार प्रकट करता हूँ, जो इस असीम महगाई के युग मे भी बिना किसी पारिश्रमिक के धन्वन्तरि से स्नेह के कारण अपना कृपापूर्ण सतत् सहयोग अपने लेख भेजकर देते रहते है। उनके इसी प्रेमभावपूर्ण सहयोग के कारण धन्वन्तरि आर्थिक सकटो को पार करते हुए पाठको की सेवा मे समर्पित हो पाता है।

अपनों के प्रति—

प्रकाशन के लिए अनिवार्य समयानुसार धन की व्यवस्था, कम्प्यूटर कपोजिग, आफसैट मुद्रण, बाइडिग एव प्रेषण व्यवस्था के सहयोगियो व कर्मियो के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिनके सहयोग से 'धन्वन्तरि' का सतत् प्रकाशन सम्भव हो पाता है।

अपने हृदय के उद्‌गार लिखें—

''धन्वन्तरि'' मासिक के इस वर्ष के विशाल विशेषाक को पढकर आप निश्चित ही भाव विभोर होगे। साथ ही साथ आपकी आत्मा की आवाज हर पल इस प्राचीन पत्र की ओर होगी ऐसा मेरा आत्मगत विश्वास है। हमारा प्रयास कैसा रहा ? यह विशेषाक आपको कैसा लगा ? आप हमे अवश्य लिखे। हम इस आयुर्वेदीय अमृत सजीवनी का पूर्ण समर्पित भाव से आप सभी को पान कराते रहे, ऐसी मेरी आकाक्षा है।

अन्त मे मै भगवान धन्वन्तरि से आपके सुस्वास्थ्य तथा दीर्घायु की कामना करते हुए सदैव उच्चकोटि की सामग्री से परिपूर्ण प्रकाशन कर आपकी सेवा समर्पित भाव से करने का वचन देता हूँ।

— *हरीश अग्रवाल*

प्रकाशक हरीश फार्मा विजयगढ (अलीगढ)

वैद्य हरिमोहन शर्मा

एक परिचय

१ नाम वैद्य श्री हरिमोहन शर्मा

२ जन्म दिनाक १ मई १६३६

३ शैक्षिणिक योग्यता व्याकरण उपाध्याय, (राजस्थान), साहित्याचार्य (भारतीय विद्या भवन, बम्बई) साहित्य रत्नाकर (बिहार हिन्दी विद्यापीठ देवघर)

४ आयुर्वेदीय योग्यता भिषग्वर, भिषगाचार्य (पोस्ट ग्रेजुएट इन आयुर्वेद) शिक्षा विभाग, राजस्थान।

५ पिताजी का नाम श्री प० श्री नारायण शर्मा।

६ निवास स्थान ४०५४, जोहरी बाजार, जयपुर

७ (क) राज्य सेवा– सवाई माधोपुर, जयपुर, अजमेर जिले के ग्रामीण आयुर्वेदिक औषधालयो मे वैद्य।

(ख) जयपुर, अजमेर, व्यावर, मदनगज, किशनगढ, माडल, सीकर, करौली, फतेहपुर, शेखावटी मे राजकीय 'अ' श्रेणी शैया युक्त अनेक वैद्यो वाले चिकित्सालयो मे प्रधान चिकत्सक।

(ग) राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय जयपुर (अब राष्ट्रीय आयुर्वेद सस्थान, जयपुर) के शल्य, आतुरालय, बहिरग विभागो में चिकित्सक।

(घ) राजकीय आयुर्वेद नर्सिंग प्रशिक्षण केन्द्र, अजमेर मे प्राध्यापक।

(ड) जयपुर, भरतपुर, झुन्झुनू, कोटा, टौंक, भीलवाडा, सवाई माधोपुर, सीकर जिलो मे जिला आयुर्वेद अधिकारी।

(च) दी वोर्ड ऑफ होम्योपैथिक मेडिसिन राजस्थान मे रजिस्ट्रार।

(छ) कोटा, जयपुर मे क्षेत्रीय आयुर्वेद उपनिदेशक, राजस्थान सरकार।

६ सार्वजनिक जीवन–

(अ) राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय जयपुर मे सयुक्त मत्री, मत्री, अध्यक्ष।

(ब) राजस्थान प्रदेश आयुर्वेद विद्यार्थी महासघ का अध्यक्ष।

(स) जिला वैद्य सवाई माधोपुर, जयपुर का अध्यक्ष।

(द) राजस्थान प्रदेश वैद्य सम्मेलन जयपुर मे सगठन मत्री, प्रचार मत्री, महामंत्री।

(ई) अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन का स्थाई समिति सदस्य, विषय निर्वाचनी समिति एव सयोजक। इडियन मेडिसिन बोर्ड का सदस्य।

(फ) राज्य सेवारत वैद्यो के "राजस्थान आयुर्वेद विभागीय चिकित्सक सघ" का सस्थापक अध्यक्ष।

राजस्थान आयुर्वेद सेवा परिषद् का महामत्री, राजस्थान राज्य कर्मचारी सयुक्त महासघ का सयुक्त मत्री, सगठन मत्री, उपाध्यक्ष तथा अरथाई अध्यक्ष। राजस्थान राज्य राजपत्रित अधिकारी सेवासघ का टौक, सवाई माधोपुर, अजमेर, भरतपुर, जयपुर, जिलो मे जिलाध्यक्ष, सयुक्त मत्री, मत्री व उपाध्यक्ष।

- राजस्थान आयुर्वेद सस्थान, जयपुर राजस्थान का ट्रस्टी।
- विश्व हिन्दू परिषद् का विभाग सगठन मत्री, सत यात्र, एकात्मता यात्रा मे भागीदारी, धर्म यात्रा महासघ का राजस्थान राज्य सयोजक।

सपादन

- ''आयुर्वेद प्रहरी'' मासिक का सपादन।
- ''आयुर्वेदामृत जयपुर'' के सम्पादक मडल का सदस्य।
- ''नीरोगी दुनिया'' त्रैमासिक का मानद सम्पादन।
- धन्वन्तरि महास्रोत्स रोग विशेषाक (उदर रोग निदान चिकित्साक) वर्ष १६८६ का विशेष सम्पादक।
- १६६८ मे प्रकाशनाधीन हृदय फुफ्फुस रोग विशेषाक धन्वन्तरि विजयगढ का विषय सम्पादक।
- सचित्र आयुर्वेद, आयुर्वेद विकास, धन्वन्तरि, सुधानिधि, स्वास्थ्य, कादम्बिनी, दैनिक राजस्थान पत्रिका, जयपुर, दैनिक भास्कर, जयपुर, दैनिक अधिकार, जयपुर, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, निरोगी दुनिया त्रैमासिक मे अब तक २०० लेखो का प्रकाशन।
- आकाशवाणी केन्द्र, जयपुर, दूरदर्शन केन्द्र, जयपुर से आयुर्वेद कार्यक्रमो, स्वास्थ्य चर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि मे नियमित भागीदारी।

शाखा सचिव--

इन्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन ब्यावर। मानद उपाधिया--

- वैद्य रत्न, हेतुयुक्तिज्ञ, आयुर्वेद मार्तण्ड, चिकित्सक चूडामणि तथा धन्वन्तरि सम्मान प्राप्त जिला प्रशासन सीकर, द्वारा ३ बार, जयपुर द्वारा १ बार, अजेमर द्वारा १ बार तथा आयुर्वेद विभाग राजस्थान द्वारा १ बार प्रशस्ति पत्र से सम्मानित।
- राजस्थान आयुर्वेद चिकित्सक वेलफेयर एसोसियेशन द्वारा अमृत कलश समर्पण, चिकित्सा एव स्वास्थ्य विभाग राजस्थान द्वारा २ बार पुरस्कार।
- राजस्थान जनजाति विकास विभाग द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदत्त।
- आठ सभाषा परिषदो, तीन चिकित्सक सम्मेलनो तथा साठ चिकित्सा शिविरो के आयोजन द्वारा जन-जन मे आयुर्वेद का प्रचार-प्रसार तथा स्वास्थ्य यज्ञ, पत्रचार द्वारा व प्रत्यक्ष चिकित्सा परामर्श, धन्वन्तरि जयन्ती को ''विश्व आयुर्वेद दिवस'' के रूप मे मनाने का प्रचार।
- रोटरी क्लब, बार एसोसियेशन, महाविद्यालय छात्र सघो, जूनियर चेम्बर आदि सस्थाओ मे आयुर्वेद विषयक वार्ताये।
- वनौषधि उद्यान लगाने तथा औषधालयो मे उगाने, सग्रह करने तथा प्रयोग का प्रचार-प्रसार।

- राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयुर्वेद चिकित्सक के पदो के साक्षात्कार मे विशेपज्ञ साक्षात्कारकर्त्ता।
- अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ की आयुर्वेदाचार्य, वेदाचार्य परीक्षाओ का प्रायोगिक परीक्षक।
- हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की आयुर्वेदरत्न परीक्षाओ का परीक्षक तथा प्रायोगिक परीक्षक।
- आयुर्वेद विभागीय परीक्षाओ का उदयपुर, अजमेर, धौलपुर, सरदारशहर केन्द्रो का परीक्षक।
- हिन्दी, राजस्थानी, ढूढाडी (जयपुरी) सस्कृत ,तथा उर्दू भाषा (देवनागिरी लिपि) मे काव्य सृजन।
- राज्य कर्मचारी आन्दोलनो मे ४ वार जेल यात्रा तथा एक वार ६-६ माह के महीने के कारावास से दडित वाद मे समझौता होने पर सजा निरस्त। चारो वार मे कुल ६७ दिन जयपुर जेल मे वदी।
- देश के प्रख्यात सतो जगद्गुरु शकराचार्य पुरी श्री स्व० निरजनतीर्थ जी, स्व० स्वामी चिमयानन्द जी सस्थापक चिन्मय मिशन, स्वामी सत्य मित्रनद जी गिरि, जगद्गुरु शकराचार्य काची कामकोटि पीठ स्वामी श्री जयेन्द्र सरस्वती जी, स्वामी भारती तीर्थ जी, वद्रिकाश्रम के वासुदेव शरणानद सरस्वती जी, आचार्य धर्मेन्द्रनाथ जी, युगपुरुप परमानद जी, फलाहारी वावा साध्वी (तभरा जी, साध्वी शिवा सरस्वती जी आदि के आशीर्वाद व सानिन्ध्य प्राप्त।

समर्पण प्रसूनांजलि

भारत के सर्वाधिक प्राचीन, हिन्दी भाषा के प्रमुख आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान के प्रचारक ''धन्वन्तरि'' मासिक, विजयगढ (अलीगढ) उत्तर प्रदेश के वार्षिक विशेषाको की शृखला का वर्ष १९९८ जो स्वतत्र भारत की आजादी की स्वर्ण जयन्ती का वर्ष भी है, का प्रस्तुत विशेषाक 'उरोगुहा'' रोग विशेषाक अथवा हृदय एव फुफ्फुस रोग निदान चिकित्सा विशेषाक किसी एक व्यक्ति विशेष को समर्पित न होकर समर्पित हे आयुर्वेद क आदिदृष्टा ब्रह्मा, इन्द्र, दक्ष अश्विनी कुमार, धन्वन्तरि, भारद्वाज, पुनर्वसु, आत्रेय, चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, नागार्जुन माधवकर, भावमिश्र, शार्गधर की पुण्य स्मृति को तथा उनकी उदात्त परम्पराओ को, तदनन्तर यह विशेषाक आधुनिक भारत के आयुर्वेद महर्षिगण स्वामी श्री लक्ष्मीराम जी, डा० गण [illegible] सेन सरस्वती, आचार्य यादव जी त्रिकम जी तथा उनके शतश शिष्यो, अनुयायियो, सहयोगियो एव समर्थको की पुण्य स्मृति को समर्पित है।

यह विशेषाक आज के दिन जीवित तथा समभ्यास कर रहे आयुर्वेदज्ञो, विद्वानो आचार्यो, लखको एव गाव-गाव मे फैलकर आयुर्वेद की यश पताका को उत्तुग रख उठाय चल रहे नवयुवक वैद्यो एव आयुर्वेद विद्यार्थियो को प्रत्यक्ष समर्पित है।

समर्पण का एक सुमन ''धन्वन्तरि'' के सस्थापक वैद्य राधावल्लभ जी तथा आयुर्वेद मनीषी, पीयूषपाणि चिकित्सक चूडामणि स्वर्गीय वैद्यराज श्री देवीशरण जी गर्ग, श्री ज्वालाप्रसाद जी गर्ग बन्धुद्वय की पुण्य स्मृति मे समर्पित हे।

एक सुमन ''धन्वन्तरि'' के स्थाई सम्पादक डा० दाऊदयाल जी गर्ग के कुशल हाथो मे जो धन्वन्तरि की परम्परा का सतत् निर्वाह कर रहे हे समर्पित हे। एक सुमनाजलि धन्वन्तरि के विशेषाका के प्रधान सपादक वर्ग सर्व श्री गोपानीनाथ पारीक 'गोपेश , वैद्य अम्बालाल जोशी आयु० केशरी कविराज डा० गिरिधारीलाल मिश्र, श्री ब्रजविहारी मिश्र, श्री अशोक भाई तलाविया भारद्वाज, श्री धीरेन्द्र टी० जोशी, श्री प्रेमशकर अशुमान, श्री शोभन भाई वासाणी, श्री किरीट भाई पाण्डया, श्री जी० के० दवे के सशक्त कर कमलो मे समर्पित हे। इन महान विद्वानो की पक्ति मे मुझसे अकिचन तथा निरीह का भी सयोगवश नाम शामिल हो गया है जबकि मै इस योग्य नहीं हूँ। अस्तु भगवान धन्वन्तरि आप सब का कल्याण करे। आयुर्वेद का शाश्वत विज्ञान पीडित मानवता की सेवा मे अग्रसर रहे इसी शुभाशा के साथ।

—वैद्य हरिमोहन शर्मा (विशेष सम्पादक)

हृदय रोग-आधुनिकता तथा आयुर्वेद

इसे आधुनिक सभ्यता, मानव जीवन शैली तथा अधानुकरण के साथ ओद्योगिक आर्थिक समृद्धि का अभिशाप ही कहा जावेगा कि आज पैतालीस वर्ष से अधिक आयु वाले हर रोगी को कोई न कोई हृद्रोग रोग विद्यमान हे। धूम्रपान, मद्यपान? भाग दौड, जीवन यापन की गलाकाट होड, दूषित खान-पान, व्यायाम व परिश्रम के अभाव तथा सयुक्त परिवार सस्था का विखडन भी इसका एक बडा कारण है। इस रोग को जब बीसवीं शताब्दी समाप्त होने मे बहुत कम समय हे इक्कसवीं सदी मे सबसे अधिक परिमाण मे मानव वध करने का श्रेय मिलने वाला है। वेदिक सहिता युगो का भारतीय परमात्मा से प्रार्थना करता ''तच्चक्षुर्देवहित पुरस्ताच्छुत्र मुच्चरत्। पश्येम शरद शत जीवेम शरद शत शृणुयाम शरद शत प्र ब्रवाम शरद शत मदीना स्याम शरद शत भूयश्च शरद शतात'' जबकि आज का मानव समझता है कि खाओ पीओ मौज करो कल किसने देखा है। कितना अतर है विचारो मे। वेद्यो के आराध्य भगवान अग्निवेश ने हृदय रोगो के सामान्य कारण बताते हुए निर्देश किया हे कि–

''व्यायाम तीक्ष्णाति विरेक वस्ति, चितामयत्रास गदातिचारा, छर्द्याम सधारण कर्षणाकि हृद्रोग कर्तृणि तथा भिघात।।'' इसी विषय मे भगवान काशीराज दिवोदास का कथन ह– ''वेगाधातोष्ण रूक्षान्नै रतिभात्रोपसेविते । विरुद्धाध्यशना जीर्णेरसात्यैश्चापि भोजनै । दूषयित्वा रस दोषा विगुणा हृदयगता । कुर्वन्ति हृदये बाधो हृद्रोग त प्रचक्षते।।'' आचार्य माधवकर ने अपने हृद्रोग निदान प्रकरण मे ''अत्युष्ण गुर्वन्न कषाय तिक्त श्रमाभिघाताध्यशन प्रसगे सचितने वेग विधारणैश्च हृदामय पच विध प्रदिष्ट ।।'' उपरोक्त चारो श्लोक मे लिखित सभी कारण व लक्षण आज घर-धर मे हर व्यक्तिकी दिनचर्या, जीवन शैली मे विद्यमान है। रात देर तक सिनेमा, टी० वी०, वीडियो फिल्म, सुवह बिलम्ब से जागना, उष्णपान के बजाय बेड-टी, अथवा रात के मद्यपान से भारी सिर को हलका करने के लिए पुन मद्यपान, सिगरेट, सुलगाकर पडे-पडे अखवार देखना, बाद मे शोच व न होने पर जोर लगाकर प्रवारण कर आना, दूषित वस्तुओ से बने पेस्ट, सर्दियो मे गीजरके गर्म जल से शिर, हृदय प्रदेश, ओर अण्डकोषो का भी स्नान के समय सिचन, मसालेदार चटपटे अचार, चटनी, नमकीन युक्त दूषित वनस्पति तथा गर्हित तेलो मे तले पके भोजन, शारीरिक श्रम का नितान्त अभाव, वात बात मे धूम्रपान, चायपान, अनेको वार आदत के रूप मे कुछ न कुछ खाते रहना, दद्देदार विस्तर, दोपहिया या चार पहिया मोटर वाहन, ए० सी०, कूलर, तथा

हीटकन्वेटर का आरामदायक जीवन, हमेशा विछा बिस्तर, गद्देदार सोफे, छोटा परिवार होने के कारण वर्जना के अभाव मे अमर्यादित यौन आचरण, पैसा कमाने की चिता, यात्रा, फास्ट फूड, टेलीफोन, शेयर बाजार, राजनीति, प्रगति तरक्की तथा दूसरो को पराजित करने की चिता, तनाव, नींद की गोलिया, थकान, बढता मोटापा, अधाधुन्ध औषधिया, प्रतिजीवी दवाओ का सेवन, हृदय अगर ससार के सबसे कठोर पदार्थ वज या हीरे से भी बना हो तो दरक जावेगा। इस सबसे असर से बिवन्ध, अध्यशन, ऊर्ध्ववात, थकान, वेचेनी, स्नायु दौर्वल्य, तथा अनिद्रा तथा वेग विधारण विरुद्धाहार, घातक निकोटीन, टैनिन, केफीन युक्त वस्तुओ के सेवन भोजन के बाद काफी तथा गिद्ध भोज (बर्फ) के बाद आइसक्रीम दोनों अग्निमाध व आमवर्धक हो जाते हे।

हृदय रोगो के सामान्यतया लक्षण आयुर्वेदोक्त निम्नाकित हे– '

''वैवर्ण्य मूर्च्छा ज्वर कास हिक्का, श्वासास्य वैरस्य तृषा प्रमोहा ।

छर्दि कफोत्क्लेश रूजाऽरूचिश्च, हृद्रोगजा स्यु र्विविधा तथाऽन्ये।।

आचार्य वाग्भट्ट चरक व सुश्रुतोक्त कारणो के अलावा गुल्म रोग के कारणो से भी विविध हृद्रोग होने की वात ''स्मृता पच हृदामया । तेषा गुल्म निदानो कै समुत्थानैश्च सभव ।। कहते हे अधिकाश लोग तो उर्ध्ववात (गेस चढने) मे हुई हृत्प्रदेश की पीडा को ही हृदयरोग समझ लेते है जबकि आज का हर पाचवा व्यक्ति जो बिवन्ध अध्यशन, अजीर्ण से पीडित हे मे उर्ध्ववात के लक्षण नित्य मिलते है।

आयुर्वेद में यद्यपि वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज एव कृमिज पचविध हृद्रोग ही बताये गये हे। परन्तु अनेक अन्य रोगो मे भी हृद्रोगो के लक्षण मिल जाते है। जो कि मूल रोग का निदन उपचार होने पर शान्त हो जाते है। ये लक्षण हे ये लक्षण हे– हृच्छूल, हृद्ग्रह, हृद्दाह, हृद्व्यथा, हृद्प्रदोष, हृदये कुपित वात, हृदयदुष्टि, हृत्स्पदन, हृत्पीडन, हृद्विदाह, हृदयापकर्तन हृन्मोह, हृदितम, हृदय सशुष्क, हृदयद्रव, हृदयोवरोध, हृदमोपताप, हृदयोपलेप इत्यादि। इन्हे विस्तारपूर्वक चरक चिकित्सा निदान, इन्द्रिय, विभान तथा सिद्धि स्थानो मे देखा जा सकता हे। मे हृच्छूल तथा हृद्ग्रह, हृदद्रव, हृत्स्पद न आदि प्रमुख लक्षणो को आधुनिक हृदय चिकित्सा के विभिन्न रोगो के रूप मे स्वीकार करता हूँ ये स्वतत्र रूप से रोग न होकर रोग लक्षण हे। परन्तु सुपर स्पेशियलिटी के आज के युग मे विभिन्न यत्र, पद्धति, निदान साधनो, शल्य क्रियाओ, वाईपास बैलूनो प्लास्टी आदि ने इनको उस रूप मे रोग बना दिया है। आर्ष जीवन प्रणाली से जीवन बिताने वाले लोगो को जो ''समदोष समाग्निश्च समधातु मल क्रिय । प्रसन्नत्मे द्रियमन ' स्वस्थ है तथा हिताहार विहार सेवी निदचर्या, ऋतुचर्या, रात्रिचर्या का भली प्रकार पालन करते है। स्वस्थवृत्त, सद्वृत्त, का पालन करते है किसी ईश्वरीय शक्ति मे विश्वास करते है पर्याप्त शारीरिक श्रम और थकने पर उचित विश्राम करते है उनको तो हृदय राग पूछने आ नहीं सकता। हृदय रोगो मे भगवत् आस्था, पर्याप्त विश्राम, तथा पर्याप्त श्रम मुख्य कर प्रतिभ्रमण कतिपय योगासन, प्राणायाम, गौघृत के अतिरिक्त अन्य स्नेहो का त्याग, मास, अण्डे आदि का पूर्ण त्याग

नमक से यथासभव बचाव, खाद्य तेलो मे सरसो, मूंगफली, खोपरा, तिल आदि तेलो के बजाय करडी, सूरजमुखी आदि के सतृप्त वसा रहित तेलो का सेवन, फल, गौदुग्ध, मीठा ताजा तक्र, अंगूर, अनार, मुनक्का, सेव, गाजर, अदरक, आवला, सेवन, सतरा, प्रजाति के रसीले फल, आम, छुहारा, बथुआ, मेथी, कारीफल, लौकी, तुरई, टिडा, परवल, कुन्दरू, करेला, सेवन करना लाभदायक हे। हृदय रागी को प्रिजर्व्ड खाद्य अचार, चटनी, पापड बिल्कुल नहीं खाने चाहिये। यदा कदा घर मे बना थोडा नमकीन ले सकते है। यह प्रश्न उठता है कि क्या इस सधोघातक अति विनाशकारी रोग की चिकित्सा भी आयुर्वेदज्ञ कर सकते हे। मेरा तथा वैद्य समाज का स्वाभिमान पूर्वक कथन है हा हम ही तो थे जो हजारो वर्षो तक हृद्रोग को साधारण रोग बनाये रहे। यह तो आधुनिक जीवन शैली, ओषधियो के अधाधुन्ध उपयोग तथा दूषित खान, पान, वातावरण का कमाल है जो आज इतनी वडी संख्या मे हृदय रोग ही रहे है। धन्वन्तरि के इस विशेषाक मे देश के वर्तमानकाल के चरक, सुश्रुत, वाग्भट्टो ने अपने ज्ञानामृत कर्णो की विस्तृत वर्षा की है। मेरी आयुर्वेज्ञो से एक विनम्र प्रार्थना है कि हर विद्वान किसी न किसी रोग विशेष पर तुलनात्मक रूप से कार्य करे तथा अपने सचित ज्ञान को विस्तार पूर्वक वेद्य समाज के समक्ष मार्ग दर्शक के रूप में प्रस्तुत करे। हमारी वडी बडी डाबर, झडु, बेद्यनाथ, ऊँझा आदि रसायनशालाये वर्ष मे कम से कम एक एक कार्यशाला, सभाषा परिषद् सगोष्ठी आयोजित करे जिसमे अपने निध ारित सूची के अतिरिक्त हर प्रानत से गिने चुने वैद्यो को अपने व्यय से सम्मापूर्वक बुलाकर उनके कार्यो को सपादन, सग्रह, प्रकाशन करे। यह भी आवश्यक है कि आयुर्वेद का मानकी करण हो। मे विशेषाक के सभी लेखको का आभारी हूँ इस विशेषाक मे कई ऐसे विद्वानो के लेख है जो सामान्यत पत्र पत्रिकाओ मे कम लिखते हे पर देश के मूर्धन्य विद्वान हे। मै उनका नामोल्लेख कर कलेवर को विस्तार रूप नहीं देता चाहता। एक और निवेदन है मै स्वय पूरे एक वर्ष से हृदय धमनी रोग, उच्च रक्तचाप तथा तज्जन्य भ्रम , बलक्षय तथा ज्योति स्वल्पता से पीडित हूँ। अत पूरा श्रम नहीं कर पाया। शीघ्र थक जाता हूँ। हो सकता है जब तक अक आपके हाथो में हो प्रभु का निमत्रण आ जावे। अस्तु अत मे वैदिक प्रार्थना के रूप मे ''भद्र कर्णे मि श्रृणुयाम देवा भद्र पश्येमाक्षमिर्यजत्रा स्थिरै रगेस्तुष्टव ॅ सस्तनूमित्र्यसेमहि देवहित यदायु ।। तथा स्वास्तिन इन्द्रो वृद्ध श्रवा स्वास्तिन पूषा विश्ववेदा स्वास्तिनस्ताक्ष्र्यो रिष्ट नेमि स्वास्तिनो गृहस्पति र्दधातु।। ऊँ धो शान्तिरन्तरिक्ष ॅ शान्ति पृथवी शान्ती राप शान्तिरोषधय शान्ति वनस्पतय शान्ति र्विश्वेदेवा शान्ति ब्रहत शान्ति सर्व ॅशान्ति शान्तिरेव शान्ति सा मा शान्तिरेधि।''

भगवान धन्वन्तरि हम सबका कल्शण करे।

— हरिमोहन शर्मा

कृतज्ञता ज्ञापन

मैं धन्वन्तरि के इस विशेषांक के सभी विद्वान लेखकों, आयुर्वेद के मूर्धन्य विद्वानों, नव वैद्यों तथा प्रथम बार लिखने वालो, मेरे अनुरोध को स्वीकार कर विशेषांक हेतु लेख भेजने वालो का व्यक्तिशः कृतज्ञ हूँ। साथ ही गुजरात के श्रद्धेय आदरणीय विद्वान वैद्यवरों का क्षमा प्रार्थी हूँ कि मेरे द्वारा प्रमाद- असावधानी तथा अदूरदर्शितावश भाषा वर्तनी सम्बन्धी जो विपरीत टिप्पणी अंकित कर दी गई उसका मुझे हार्दिक खेद है। मैं स्वयं जयपुर स्कूल आफ आयुर्वेद परम्परा का विद्यार्थी हूँ जो गुजरात स्कूल आफ आयुर्वेद एवं बंगाल स्कूल आफ आयुर्वेद दोनो के सम्मिश्रण से मूर्तरूप ले पाया है। इस प्रकार मैंने स्वय अपनी गुरु परम्परा को ही अपकृत किया है। इस अपराध के लिए मैं बार-बार क्षमाप्रार्थी हूँ।

मैं इस पूरे वर्ष विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं उच्चरक्तदाब, तनाव, स्नायु दौर्बल्य, एवं हृद धमनी विकार ग्रस्त रहा हूँ। इससे मुझसे यह प्रमाद हुआ है। यद्यपि मैंने गुजरात प्रदेश के प्रमुख विद्वानो को व्यक्तिशः पत्र लिखकर भी क्षमा चाही थी पर इस सार्वजनिक याचना को अवश्य स्वीकार किया जावेगा यह विश्वास है।

– वैद्य हरिमोहन शर्मा
विशेष सम्पादक

वैद्य अम्बा लाल जोशी

आयुर्वेद केशरी साहित्यायुर्वेद रत्न (प्रयाग)
मकराना मोहल्ला, जोधपुर
फोन निवास— २१७०१

प्रियवर मित्र हरिमोहन जी

मुझे विश्वास हे कि आपके सम्पादन मे निकलने वाला "धन्वन्तरि" का यह विशेषाक आयुर्वेद जगत की अवलोकनीय तथा अद्वितीय निधि होगा। मेरी शुभकामनाये स्वीकार करे।

शुभैषी— ह० वैद्य अम्बालाल जोशी

कविराज डा० गिरिधारीलाल मिश्र एम ए , पी एच डी

आयुर्वेद चक्रवर्ती (श्रीलका) साहित्यायुर्वेद रत्न
प्रधान चिकित्सक— केदारमल आयुर्वेद हास्पीटल, तेजपुर (असम)
फोन एस टी डी (०३७१२) २११४०

मुझे यह जानकर असीम प्रसन्नता हुई कि आयुर्वेद जगत की लोकप्रिय पत्रिका 'धन्वन्तरि' का आगामी विशेषाक "हृदय फुफ्फुस निदान चिकित्साक" आयुर्वेद जगत के उद्भट विद्वान, समाजसेवी, मृदुभाषी, अनेक आयुर्वेद औषधालयो के सृजनकर्ता, लोकप्रिय वैद्यरत्न श्रीयुत हरिमोहन जी शर्मा के विशेष सम्पादकत्व मे प्रकाशित होने जा रहा है।

आज के समाज का रहन-सहन, खान-पान, दिनचर्या मनोदशा का स्तर बहुत ही विकृत हो रहा है तथा सभी शहरो के विकास के साथ बढता हुआ प्रदूषण पेट्रोल् की दूषित धुआ एव खाद्यान्न व साग सब्जियो पर जीवाणुनाशक औषधियो का प्रयोग आदि कारणो द्वारा भोतिकवाद की दौड मे मानव के तनावग्रस्त जीवन के कारण हृदय एव फुफ्फुस रोगो का वाहुल्य वढता जा रहा हे। जिसमे हृदयरोग तो मृत्यु का पर्याय वन गया है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने जहा अनेकानेक यन्त्रो का आविष्कार कर हृदय रोग के निदान का मार्ग प्रशस्त किया है वहा भय ओर भ्रम को भी वहुत फेलाया हे। अत अधिकाश रोगी हृदयरोग के नाम के भय से ही कालकवलित हो जाते हे। ऐसे समय मे प्रयुक्त विशेषाक निश्चय ही उत्तम पथप्रदर्शक होगा तथा एक सन्दर्भ ग्रथ के रूप मे धरोहर की भाति सुरक्षित रहेगा ऐसा मुझे विश्वास है। विशेषाक की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाओ के साथ

भवदीय
ह० डा० गिरिधारीलाल मिश्र

वैद्य प्रो० पी० एस० अंशुमान, एच० पी० ए०

प्रोफेसर मो० सि०/ इचा० प्राचार्य

शेठ जी० प्र० सरकारी आयुर्वेद कोलेज, भावनगर

निवास— १४६७, ए २/१ कृष्णानगर, रूपाणि सर्कल,

भावनगर (गुज) ३६४००१

यह जानकर अति आनन्द हुआ कि आयुर्वेद की पक्षधर पत्रिका धन्वन्तरि का वर्ष १९९८ का आगामी विशेषाक हृदय फुफ्फुस निदान चिकित्साक के रूप मे वैद्य श्री हरिमोहन जी के सम्पादकत्व मे प्रकाशित होने जा रहा है।

समयोचित विषय चयन कर इस प्रकाशन योजना के निर्णय के लिए धन्वन्तरि परिवार के सभी सदस्य धन्यवाद के पात्र है। आशा है यह अक आयुर्वेद के क्षेत्र मे कार्यरत सभी के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

इस आगामी विशेषाक की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाये है।

—प्रेमशकर अशुमान

वैद्य ब्रजबिहारी मिश्र PH · 266177

मत्री— निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ दिल्ली

अध्यक्ष— प्रादेशिक आयुर्वेद सम्मेलन उत्तर प्रदेश

सदस्य— स्थायी समिति, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

सरक्षक— रामनाथ आरोग्य धाम, दीनदयाल शोध सस्थान, जयप्रभा ग्राम, गोण्डा

फेलो तथा सदस्य— शासीनिकाय, राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ दिल्ली (स्वायत्त निकाय, भारत सरकार)

सदस्य— परामर्शदात्री समिति आयुर्वेद सकाय, चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट

सदस्य— प्राकृतिक चिकित्सा एव योग समाज कार्य विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

माननीय प्रधान सम्पादक जी,

आयुर्वेद जगत की ख्याति लब्ध पत्रिका "धन्वन्तरि" का "हृदय फुफ्फुस निदान चिकित्साक" आपके कुशल सम्पादन मे प्रकाशित होने जा रहा है, ज्ञातकर हर्ष हुआ।

आयुर्वेद मे जो तीन मर्म बताये गये है उनमे हृदय का प्रमुख स्थान है। हृदय के सम्बन्ध में सदियो से प्रचलित भ्रान्तियो का निराकरण यथा हृदय एक है या दो, हृदय रोगी को घी का सेवन करना चाहिये या नहीं ? हृच्छूल, हृदयाघात, नाडी की बढी हुई गति, हाई ब्लड प्रेशर, लो ब्लड प्रेशर की त्वरित लाभकारी दवाये आयुर्वेद मे है या नहीं, का तर्क सगत समाधान विशेषाक के माध्यम से हो सके तो अति अच्छा है।

विशेषाक की सफलता की हार्दिक शुभकामना करता हूँ।

— वैद्य ब्रजबिहारी मिश्र

वैद्यरत्न कविराज पं० शंकरलाल गौड "शंभु कवि"

व्रजवावा पथ, दूरा (आगरा) उत्तर प्रदेश

चन्द्रमात्त ददाति सोख्य हृद्रोग विनाशक ।
धन्वन्तरिर्विशेषाक गुण शान्ति विधायक ।।
वेद पुराण शास्त्र दर्शन मे हृदय का विशद् विवेचन है।
सुश्रुत मे "शकरजी" गौड,तत्व, जिनका नहीं "शभु" पलायन हे।।१।।
आयुर्वेद धुरधर ने अपने विचार दिखलाये है।
हृदय की रचना क्रिया कलाप, जिसको हमने भी लख पाये हे।।२।।
वात पित्त अरु कफज रोग, क्या लक्षण आशु चिकित्सा है।
त्रिदोष कृमिज वुध विविध रोग, जिसकी क्या "शभु" विभित्सा है।।३।।
रक्तभार अरु हृदयशूल, सूजन की क्या गति हे।
उर्ध्ववात अवसादजन्य, वद्यवन्धु की क्या मति है।।४।।
मनोविकार अरु मूत्र वहन, स्वस्थान हृदय पर क्या प्रभाव।
योन क्रिया का "शकरजी" जिससे सुख का होता अभाव।।३।।
प्रभावशाली वनोपधि, करवीर, द्राक्षा शुण्ठी हे।
अर्जुन, पुष्कर, अरु कोलपच, पिप्पली लवग गुण साठी है।।४।।
एला, हृत्पत्री पुष्पी अश्वरथ, जटामासी पान गुलाव रसोन।
कमल आवला गिलोय अश्व, गावजवान पपीता गुणोन।।५।।
भरकत, मोती, अकीक ।।शंभु।। इनका तत्काल प्रभाव होता।
मोहराजहर, अभ्रक सोना, चॉदी, कस्तूरी का नहिं गुण सोता।।६।।
शृग तक्र सुख सिद्धोपधि ।।शकरजी।। अद्भुज गुणकारी।
योगासन व्यायाम चिकित्सा सव, वतलायी मुनिवर न्यारी।।७।।
फुफ्फुसो की विस्तृत व्याख्या, इस अक मे ।।शभु।। वतायी है।
"हरि मोहन शर्मा" सम्पादन कर, रोगी की व्यथा मिटायी है।।१०।।

श्री अयोध्याप्रसाद अचल

एम०ए०, पी०एच०डी०, आयुर्वेद वृहस्पति
योगायुर्वेद स्वास्थ्य सुधार केन्द्र, आनन्द कुज, सी०-३० गोविन्दपुरी, मोदीनगर (उत्तर प्रदेश)

वन्धुवर शर्मा जी,

सस्नेह नमस्ते । हमे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि धन्वन्तरि के यशस्वी युवा प्रकाशक धन्वन्तरि के सुप्रसिद्ध ओर आयुर्वेद प्रेमियो मे व्यापक रूप से प्रिय विशेषाको की लम्बी परम्परा मे १९९८ के वर्ष मे हृदय ओर फुफ्फुस निदान चिकित्सा नाम की नई कडी जोडने जा रहे है, और उन्होने इसकी सर्वतोमुखी सफलता के लिए आप जैसे मर्मज्ञ विद्वान और सिद्धहस्त चिकित्सक का चयन किया हे। मुझे पूरा विश्वास हे कि आप अपने दीर्घकाल के अनुभव-से लाभान्वित हो और अपनी लेखनी के प्रसाद से हृदय ओर फुफ्फुस रोगो पर प्रचुर और पठनीय सामग्री प्रस्तुत कर आयुर्वेद प्रेमियो मे व्यापक रूप से प्रिय होगा।

शुभेच्छु– डा० अयोध्याप्रसाद अचल

आचार्य डा० महेश्वर प्रसाद आयुर्वेद वृहस्पति,
प्राचार्य, शल्य शास्त्र विद, आयुर्वेद चक्रवर्ती
निदेशक— आडाम विज्ञान शोध केन्द्र, दुग्धपुरा, मगलगढ (समस्तीपुर)

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि आप इस वर्ष ''धन्वन्तरि'' का 'हृदय फुपफुस निदान रोग विशेषाक'' प्रकाशित करने जा रहे हे। ''धन्वन्तरि'' का प्रतिवर्ष विशेपाक निकालने की गौरवशाली परम्परा मे यह भी एक विशिष्ट कडी होगी।

आज विश्व मे हृदय रोग एक जटिल समस्या वनकर रह गई है। आयुर्वेद मे हृदयगाही एव निरापद समाधान हे जिसमे ऐसी-ऐसी दिव्य जडी वूटियो तथा रस भस्मो के अनमोल, वहुपरीक्षित एव अनुभूत योगो के प्रयोग के चमत्कार भरे पडे हे जिन्हे देखकर जग-गण ही नहीं वडे वडे डाक्टर, सर्जन भी मत्रमुग्ध हो अत्यन्त प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। आशा हे यह विशेषाक इन्हीं सव वातो से परिपूर्ण हो एक अद्वितीय साहित्य को प्रस्तुत करेगा जो परम उपयोगी एव सग्रहणीय होगा।

मे इसकी सफलता की हार्दिक कामना करता हूँ।

विनीत
महेश्वर प्रसाद

वैद्य सुनील कुमार
बी ए एम एस , आयुर्वेदाचार्य, एम आई एम एस
(धन्वन्तरि स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी लेखक)
ईस्ट निमचा कोलियरी, बिधानबाग, बर्दवान (वगाल)

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि धन्वन्तरि 'हृदय फुपफुस निदान चिकित्सा विशेषाक'' प्रकाशित हो रहा है जिसका विशेष सम्पादन आप जैसा अनुभवी एव विद्वान वैद्य कर रहा है। धन्वन्तरि के पूर्व प्रकाशित विशेषाको की तरह यह विशेषाक भी पठनीय एवं सग्रहणीय होगा, ऐसी आशा है। मैं इस विशेषाक की सफलता हेतु हृदय से कामना करता हूँ।

आजकल हृदय रोगो का विशेष प्रचार प्रसार है। ऐसे समय मे हृदय रोगो पर विशेषाक निकालना बहुत ही उपयोगी साबित होगा।

— वैद्य सुनील कुमार

डा0 महेन्द्रकुमार पी. नाफड़े.

आयुर्वेद विशारद, आयुर्वेद रत्न, एम डी इलेक्ट्रोपेथी, एक्यूपचर, एक्यूप्रेशर, मग्नेटोथेरपी, योग अण्ड मराज, हर्बल रेमिडीज, मानद उपाधि— आयुर्वेद समाट, आयुर्वेद चूडामणि, अध्यक्ष— अखिल भारतीय आयुर्वेद सेवा सघ (महाराष्ट्र राज्य), सदस्य— अखिल भारतीय आयुर्वेद सेवा सघ, दिल्ली, अखिल भारतीय चिकित्सक प्रचारक सघ, लखनऊ, इटरनेशनल मेडीकल सोसायटी, दिल्ली, इडियन मेडीकल प्रेक्टी एसोसियेशन, कानपुर, विदर्भ मेडिकल प्रेक्टी एसोसियेसन, अकोला,
पो० मेढली जि बुलडाना ४४३१०२ (महाराष्ट्र)

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई की हरीश फार्मा द्वारा प्रकाशित "धन्वन्तरि" पत्रिका का इस वर्ष १९९८ का वृहद विशेषाक "हृदय फुपफुस निदान चिकित्सा" वेद्य हरिमोहन शर्मा जी (भिषगाचार्य) के द्वारा सम्पादित हो रहा है।

आप जसे विद्वानो के कर कमलो से आयुर्वेद चिकित्सा को बरकरार रखने के प्रयासो से ही आयुर्वेद हजारो वर्षो से भारत वर्ष की चिकित्सा पद्धति का नाम टिका हुआ है। आपका यह विशेषाक आयुर्वेद के निदान एव सामग्री से परिपूर्ण होने की वजह से हमारे साथ-साथ आने वाली नई पीढी को आयुर्वेद चमत्कारिक तथा हृदय द्रावक अवश्य ही सिद्ध होगा।

"धन्वन्तरि" परिवार के डा० दाऊदयाल जी गर्ग और अन्य विभूतियो के प्रयासो ने स्व० वैद्य देवीशरण गर्ग एव स्व० ज्वालाप्रसाद अग्रवाल के स्वप्नो को साकार किया। आयुर्वेद के विद्वान चिकित्सको के अविरल परिश्रमो के कारण यह विशेषाक भी अन्य विशेषाकों की तरह सग्रहणीय अवश्य ही सिद्ध होगा।

— महेन्द्र पी० नाफडे

डा० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

साहित्य, आयुर्वद, ज्योतिष, आचार्य
शिवशक्ति आरोग्य निकेतन
क० ३०/६, घासीटोला, वाराणसी

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपके सम्पादकत्व मे उक्त विशेषाक योग्यतापूर्वक ढग से सम्पादित होगा। आपके लिए यह कार्य दुरुह नहीं हे। आपकी योग्यता विश्वविश्रुत है। आशा की जाती है कि आप इस दिशा मे अवश्य कुछ नवीन दिशा निर्देश करेगे। अनेक शुभकामनाओ के सहित

आपका
ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

प्रो0 हरिभाई त्रिवेदी

७८ अजितनगर सोसायटी
अकोटा, बडौदा (गुजरात)

आप ''धन्वन्तरि'' का ''हृदय रोग विशेषाक'' प्रकाशित कर रहे हे अतीत आनन्द एव खुशी की बात है।

आपका—
हरिभाई त्रिवेदी

डा0 डाह्याभाई के0 पटेल

चैयरमैन— बान लैब्स प्रा० लि०
राजकोट (गुजरात)

मान्यवर महोदय श्री शर्मा जी,

ज्ञात हुआ है कि १९९८ वर्ष ''धन्वन्तरि'' के ''हृदय फुफ्फुस रोग विशेषाक'' के सम्पादन कार्य आपने स्वीकार कर लिया है इस बात का मुझे बहुत हर्षानद हुआ। विशेषांक प्रकाशन के लिए ओर सफलता की कामना के साथ मै अपनी शुभकामनाये प्रेषित करता हूँ।

सादर अभिनन्दन
डा० डाह्याभाई पटेल

डा० रामचन्द्र शाकल्य

सिवनी— मालवा (होशगाबाद) मध्य प्रदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि ''धन्वन्तरि'' का आगामी विशाल विशेषाक १९९८ ''हृदय फुफ्फुस निदान चिकित्सा'' का आप सम्पादन, लेखन, सयोजन का गुरुत्तर दायित्व वहन करने जा रहे है, एतदर्थ बधाई ।

मुझे विश्वास है कि यह विशेषाक उपयोगी एव महत्वपूर्ण सामग्री से परिपूर्ण होगा। भगवान 'धन्वन्तरि' आपको सफलता प्रदान करें, हार्दिक मगल कामना के साथ।

डा० रामचन्द्र शाकल्य

डा0 जगदीश चन्द्र पाण्डेय

बी०यू०एम०एस० (राजस्थान विश्वविद्यालय)
जगदीश औषधालय
रसाला रोड, जोधपुर (राजस्थान)

आदरणीय डाक्टर साहब,

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि इस बार के विशेषाक का सम्पादन आपके द्वारा हो रहा है। आशा है आप जैसे आयुर्वेद के कीर्तिस्तभ के अनुभवी नुस्खो से मानवजाति का कल्याण होगा एव लोगो की आयुर्वेद मे रुचि जगेगी।

डा० जे० सी० पाण्डेय

सगठन मत्री (रीवा सम्भाग)
मध्यप्रदेश आयुर्वेद महासम्मेलन
नजीराबाद, सतना (म० प्र०)

प्रिय शर्मा जी,

सादर अभिवादन, नववर्ष मगलमय हो

आयुर्वेद का अपना मौलिक स्वरूप है। आयुर्वेद को भारतीय मनीषियो ने पाचवे वेद की सज्ञा दी हे। आयुर्वेद पद्धति जीवन पद्धति है इसमे आधुनिक चिकित्सा पद्धति की तरह अस्थाई लाभ एव दुष्परिणाम नहीं है।

यथोचित है ऐसे समय पर "हृदय फुफ्फुस रोग निदान चिकित्सा विशेषाक" प्रकाशित होने जा रहा है। मानव समाज का विशेष रूप से युवा वर्ग का ज्ञान वर्धन कराने मे उपयोगी होगा। यह बढते चरण निश्चय ही उपादेय सावित होगे।

आपके साथ डा० दाऊदयाल गर्ग एव श्री भगवती प्रसाद गर्ग जी के प्रति आभार एव शुभ कामनाये।

—डा० एस० एम० शफी

Dr. Dinesh N. Shrivastav
M D. (AYURVED)
202, Shree Dutt House, Opp Badamadi Baug,
Shanker Tekri, Dandia Bazar
VADODARA-1

आपकी विद्वता का पूर्ण प्रकाश "हृदय फुफ्फुस निदान चिकित्सा" अक पर पड़ेगा और आपके द्वारा चयन किये रत्नो से भारत जैसे विकासशील देश को लोकोपयोगी धन्वन्तरि पत्र के माध्यम से नि शक आशातीत लाभ होगा। विशेषाक की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाये।

दिनेश कुमार श्रीवास्तव

वैद्य प० मोतीलाल शर्मा
एम.ए (संस्कृत), (रिटायर्ड यू टी डी), आयुर्वेद रत्न, भिषगाचार्य
कमलेश भवन, फाटक मौहल्ला, पिपलिया स्टेशन (मध्य प्रदेश)

'धन्वन्तरि' के आगामी विशेषाक १९९८ हेतु आपको विशेष सम्पादक नियत किया है यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। आशा है आपके सम्पादन मे यह विशेषांक सर्वांगपूर्ण, हृदयरोगो एव फुफ्फुस रोगो पर प्रकाश डालकर आयुर्वेद जगत मे विशिष्ट सम्मानीय होगा।

— वैद्य प० मोतीलाल शर्मा

डा० उमाशंकर प्रसाद
रजनी धर्मार्थ क्लीनिक
निर्माण कैम्प (धरना कैम्प) हैदरपुर, दिल्ली-११००५२

मुझे यह पढकर प्रसन्नता हुई कि इस वर्ष 'धन्वन्तरि' का समसामयिक "हृदय फुफ्फुस रोग चिकित्सा" नामक विशेषाक शीघ्र प्रकाशित होने जा रहा है। आयुर्वेद के पत्रकारिता जगत मे धन्वन्तरि का एक विशिष्ट एव गौरवस्पद स्थान है तथा इस वर्ष एक परम उपयोगी विशेषाक निकालने की परम्परा का निर्वहन इसके सम्पादक एव प्रकाशक बडी ही विशिष्टता के साथ करते है जो आयुर्वेद जगत मे एक कीर्तिमान स्थापित किये हुए है। आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि विशेषाक के द्वारा कष्टसाध्य हृदय एव फुफ्फुस रोगो का निदान, सम्प्राप्ति एव सफल चिकित्सा के ज्ञान द्वारा चिकित्सको को पथप्रदर्शन मिलता रहेगा। मै इसकी सम्पूर्ण सफलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

उमाशकर प्रसाद

वैद्य मनोहरलाल गक्खड

आयुर्वेद रत्न, आयुर्वेद वाचस्पति
मनोहर चिकित्सालय खेरली (अल्वर) राजस्थान

''धन्वन्तरि' पत्रिका का आगामी विशेषाक (१६६८) ''हृदय फुफ्फुस निदान चिकित्सा'' के सम्पादन, लेखन एव सयोजन का दायित्व आपके द्वारा वहन किया जा रहा हे यह अत्यन्त गोरवपूर्ण सूचना ''धन्वन्तरि'' के अगस्त अक मे पढकर अति आनन्द हुआ।

— वद्य मनोहरलाल गक्खड

PH (05192) 82276

निदेशक– देवज्ञ धाम फाउण्डेशन
मुख्यालय– पचनेही (बादा)

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आगामी आयुर्वेद के लोकप्रिय मासिक ''धन्वन्तरि'' के ''हृदय फुफ्फुस रोगाक'' का सम्पादन आप जेसे मर्मज्ञ विद्वान द्वारा किया जा रहा है। हमे पूर्ण विश्वास ह कि यह विशेषाक लोकोपकारी एव सग्रहणीय होगा। शुभकामनाये।

— डा० लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी

डा० कमल अग्रवाल | डा० (श्रीमती) उषा अग्रवाल

बी० ए० एम० एस०
चिकित्साधिकारी आयुर्वद विभाग

बी० ए० एम० एस०
चिकित्साधिकारी आयुर्वेद विभाग

निवास गवर्नमेन्ट क्वार्टर पी० आर० ६१, जोधपुर रोड, पाली-मारवाड (राजस्थान)

आपके सम्पादन, लेखन, सयोजन, निर्देशन मे ''धन्वन्तरि'' का आगामी विशेषाक प्रकाशित किया जा रहा है। एतदर्थ हमारी हार्दिक शुभकामनाये स्वीकार करे। इस विशेषाक से जन-जन लाभान्वित हो यही मगल कामना है।

—कमल अग्रवाल

हृदय फुफ्फुस निदान चिकित्सा

की विषयानुक्रमणिका

हृदय व्याधियों में आध्यात्मिक उपचार

वैद्य हरिमोहन शर्मा, भिषगाचार्य

हृदय के विभिन्न रोग अत्यन्त घातक पीड़ादायक, तथा मन मानसिक सभी को दुर्बल करने वाले होते हैं। रक्तचाप की न्यूनता अधिकता, दम घुटना, स्वयं धड़कन महसूस होना, बेचैनी तथा निर्बलता आहार विहार में सख्त नियंत्रण आदि कारणों से स्वयं रोगी अपने आपको विवश, हताश तथा निकम्मा अनुभव करता है। उसका मनोबल गिर जाता है। वह जोर से बोल नहीं सकता। जरा सा श्रम का काम भी नहीं कर सकता। ऐसी स्थिति में उसको उचित चिकित्सा के साथ-साथ मनोबल बनाये रखने वाले तंत्र-मंत्र, उपासना, रत्न प्रयोग जप आदि की भी आवश्यकता होती है। व्यक्ति चाहे कितना भी नास्तिक क्यों न हो स्वयं को बुद्धिजीवी या सर्वशक्तिमान मानता हो पर हृदयरोग होने पर उसकी मनोवृत्ति, बुद्धि, विचारधारा, भावना आस्तिकता की तरफ स्वतः मुड़ जाती है। यदि उसे इस अवसर पर औषधि चिकित्सा पथ्यपालन तथा व्यायाम व उचित विश्राम के साथ कुछ आधिदैविक, तांत्रिक उपचार उपासना मंत्रजप भी करावें तो रोग में उल्लेखनीय सुधार होता है। इनकी नियमितता उसकी प्राण शक्ति को बढ़ाती तथा जीने की लालसा उत्पन्न करती है। उसे ईश्वर पर आस्था तथा विश्वास कराती है। इस लेख में हृदय रोग की उस प्रकार की कुछ उपासना, तंत्र, वलयधारण विधियों पर प्रकाश डाला जा रहा है। दुनिया के प्रचलित सभी धर्म, पंथ, मत, सम्प्रदायों में भगवान, गोड, अकाल पुरुष, अल्लाह, अरिहन्त आदि को माना जा कर उन्हीं के आधार पर पाठ, पूजा, जप, नमाज, प्रेयर आदि निश्चित की गई है। हिन्दुओं में भी ऐसे प्रमुख तत्व हैं सूर्य गायत्री, ललिता, हनुमान, शिव विष्णु, नृसिंह, श्रीराम आदि। आध्यात्मिक या तांत्रिक उपासना के लिए इनमें से किसी एक को अपना इष्ट बनाकर उनकी विधिवत उपासना पुरश्चरण, स्तुति, मंत्र जप करनी चाहिये।

सूर्य उपासना—

आरोग्य के प्रदाता तथा जीवनदायिनी शक्तियों के स्वामी भगवान सूर्य हैं। "आरोग्यं भास्करादिच्छेत" के अनुसार सूर्य की आराधना आरोग्य प्रदाता है। प्रातः सूर्योदय से एक या डेढ घण्टे पूर्व उठकर उषाकाल की लालिमा के सुहावने वातावरण में मंद गति से खुली हवा में भ्रमण करना तथा सूर्य रश्मियों ... स्नान उदित होते सूर्य का दर्शन, सूर्य को इस प्रकार ताम्रपात्र के जल का समर्पण करें, जिससे जल बहकर पांवों में न आवे। समर्पित किये जा रहे जल की धाराओं में से मंडल का दर्शन करे तथा ॐ मित्राय नमः, ॐ रवये नमः ॐ सूर्याय नमः, ॐ भानवे नमः, ॐ खगाय नमः ॐ पूष्णे नमः, ॐ हिरण्य गर्भायनमः, ॐ मरीचये नमः ॐ आदित्याय नमः, ॐ सवित्रे नमः, ॐ अर्काय नमः, ॐ भास्कराय नमः इन बारह आदित्य नामों से सूर्य को नमस्कार करे।

भगवान सूर्य का ध्यान " ध्येय सदा सवित् मंडल मध्यवर्ती नारायण सरसिजासन सन्निविष्टः। केयूरवान मकर कुंडलवान किरीटी, हारी हिरण्मय वपुर्धृत शंखचक्र ।।" मंत्र से करे। अर्घ्यजल में लाल चन्दन अक्षत तथा जपा कुसुम (गुड़हल का पुष्प या अभाव में लाल पुष्प) अवश्य मिलावे। रवि को व्रत करे। लवण रहित भोजन करे। महर्षि वाल्मीक प्रणीत आदित्य हृदय स्तोत्र अथवा याज्ञवल्क्य रचित सूर्यकवच का पाठ करे। उक्त उपासना के साथ स्वर्ण की अंगूठी में प्रशस्त माणिक्य धारण करना प्रशस्त रहता है।

गायत्री उपासना—

मा गायत्री समस्त वेदो की माता, ब्रह्मा और सूर्य की शक्ति तथा समस्त कामनाये पूर्ण करने वाली है। सात्विक आहार विहार पूर्वक श्रद्धा के साथ स्वय रोगी को स्नान, सध्या, पूजन के पश्चात् तथा रोगी असमर्थ हो तो उसके परिवारजन, शुभेच्छु द्वारा एक निर्धारित समय पर निश्चित सख्या मे गायत्री मत्र का जप करना चाहिए। जप करते समय न आवाज निकले, न होठ हिले। ये जप रोगी द्वारा लेटे-लेटे भी किये जा सकते है। गायत्री मत्र "ॐ भुर्भुव स्व । तत्सवितुर्वरेण्य। भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योन प्रचोदयात्"।। को सभी लोग जानते है। इसका शुद्ध उच्चारण किसी विद्वान के साथ बैठकर सीख ले। कफज हृद्रोग मे मत्र एक बार पाठ के पश्चात् "ए" बीज मत्र पढे हर जप के पश्चात् बीज मत्र की सपुट दे। पित्तज हृद्रोग मे "ऐ" बीज मत्र सपुट दे तथा वातज हृद्रोगो मे बीज मत्र "हुँ" का पुट देकर दूसरा मत्र पढे।

जप करते समय हृदय, मस्तिष्क तथा नेत्रो पर हाथ फेरते जावे। जप के पश्चात् ताम्र पात्र मे भरे हुए शुद्ध जल मे तुलसीपत्र तथा कालीमिर्च घोटकर रोगी को पिलावे। रोगी की रक्षार्थ उसे गायत्री कवच धारण करना लाभदायक तथा आकस्मिक हृदयाघात से रक्षक होता है। कवच बनाने के लिए किसी रविपुष्य, गुरुपुष्य, अक्षय तृतीया, अक्षय नवमी इत्यादि शुभ तिथी को जब रोगी के गोचर मे चद्रमा चौथे, आठवे, बारहवे घर मे न हो किसी विद्वान कर्मकाडी निर्लोभ ब्राह्मण द्वारा अथवा स्वय रोगी के हितेच्छु परिजन द्वारा प्रात स्नान, पूजन, जप करने के पश्चात् केशर जायफल, जावित्री, गोरोचन तथा कस्तूरी एक साथ घोटकर इसके मिश्रण से अनार की टहनी की कलम से भोज पत्र पर पाच ॐ तथा गायत्री मत्र अकित करे। इसे चादी के कवच मे भरकर केशरिया, लाल डोरे मे डालकर रोगी को धारण करावे। कवच को शमशान, शवयात्रा आदि मे साथ न ले जावे। यह कवच रोगी की प्राण रक्षा करता है।

भारतीय धार्मिक पौराणिक ग्रथो मे दत्तात्रेय वज्र कवच या वरद दत्त रक्षा स्तोत्र, महागणपति कवच, श्री नृसिह कवच, त्रैलोक्य मगल कवच, नारायण कवच, देवी कवच, हनुमान कवच, अमोघ शिव कवच श्री [illegible] रक्षा स्तोत्र, सकट मोचन हनुमानाष्टक, आदि अनेक दिव्य स्तोत्र, मत्र एव रक्षक कवच वर्णित है। [illegible] विद्वान से उनकी विधिवत शिक्षा लेकर एक निश्चित समय पर विधिवत् अपने इष्ट के अनुसार पूजा उपासना स्तोत्र पाठ तथा बीजमत्र या महामत्र का जप लाभदायक है।

वेदिक मंत्र जप—

शुक्ल यजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी का सस्वर नियमित पारायण, विशेष रूप से पचम अध्याय के [illegible] मत्रो का स्नान भस्म व रुद्राक्ष धारण सहित पाठ करना भी हृद्रोगी की प्राण रक्षा कर सकता है। इसी प्रकार निम्न दोनो वेदिक मन्त्र भी प्रभावशील बताये जाते है जो यो हे— तेजोऽसि तेजोमयि धेहि। वीर्यमसि वीयमयि धेहि।। बलमसि बलमयि धेहि। ओजोऽसि ओजोमयि धेहि।। मन्युरसि मन्यु मयि धेहि। सहोऽसि सहो मयि धेहि।।१।।

दूसरा मत्र निम्नलिखित हे—

ॐ अभय न करत्यन्तरिक्षमभय द्यावा पृथिवी उभेइम।
अभय पश्चादभय पुरस्तात् अभय उत्तरादिभयनास्त्।
अभय मित्रादभयममित्रात् अभयज्ञातादभय पुरोय ।
अभय नक्तमभय दिवान सर्वाऽऽ आशा ममित्र भवन्तु।।२

इसी प्रकार श्री मद्भागवत् के चतुथ स्कन्ध के नवम अध्याय का छटा पद स्वय रोगी मन ही मन जप करता रहे तो समस्त रोगो से मुक्ति मिलती है। पद यो हे—

योन्त प्रविश्य मम वाच मिमा प्रसुप्ता,
सजीवयत्यखिल शक्तिधर स्वधाम्ना
अन्याश्च हस्त चरण श्रवण त्वगादीन्
प्राणान् नमो भगवते पुरुषाय तुभ्यम्।।१।।

इसी प्रकार श्रीमद् भागवत के दशम स्कन्ध के तेतीसवे अध्याय का चालीसवा श्लोक भी हृद्रोगी की प्राण रक्षा करने का चमत्कार करता हे। यह श्लोक अग्रलिखित है—

विक्रीडित व्रजवधूमिरिद च विष्णो
श्रद्धान्वितो आनृश्रृणुयादथ वर्णयेद् य ।
भक्ति परा भगवति प्रतिलभ्य काम।

हृद्रोग माश्व पहिनोत्य चिरेण धीर ।।१।।

यदि किन्ही सत, महन्त, धर्माचार्य, जगद्गुरु आदि से गुरुदीक्षा ले गुरुमत्र श्रवण किया गया है फिर चाहे वह पचाक्षर मत्र हो चाहे षडक्षर, अष्टाक्षर हो चाहे द्वादशाक्षर निष्टा, श्रद्धा व आस्थापूर्वक नियमित जप प्राण रक्षक हे।

प्रणव जप—

ओकार अथवा प्रणव स्वय ही महाभिमत्र हे इसको सर्वत्र अनिवार्यत सर्व प्रथम उच्चारण किया जाता ह। सच्चे मन से निरन्तर ओकार मत्र का जप सभी आपदाओ से वचाता हे।

राम नाम जप—

राम नाम जप भगवान राम, परशुराम, वलराम का प्रतीक तो ह ही हिन्दु धर्म का महान रक्षक तथा अद्भुत चमत्कारक भी हे। मात्र राम नाम का सच्चे मन, आस्था व भक्तिपूर्वक जप करना हृद्रोगी का सच्चा रक्षक ह।

विभिन्न तत्रो मे वर्णित वीज मत्र भी उन सबके हितावह ह जो वड मत्र ओर विधियो का पालन नहीं कर सकते ऐसे वीज मत्रो मे 'हीं' का वीजमत्र का मानसिक जप हृद्रोग नाशक ह। इसी प्रकार लघु मत्रो मे ''ॐ हीं हीं सूर्यायनम '' 'ॐ हीं दु दुर्गायै नम '' ॐ हीं नम '' ''ॐ जू स ॐ ल ललितादेव्य नम , ॐ हृद्य परमेश्वराय नम , ॐ दण्डाये महादडाय स्वाहा, ॐ हो जू स मे से किसी एक तात्रिक मत्र का स्वय रोगी तथा रोगी के हित चितक किसी शास्त्रज्ञ विद्वान से विधिपूर्वक दीक्षित होकर निर्धारित विधि से निरन्तर एक निर्धारित समय पर निश्चित सख्या मे करता रह। इसके लिए पहले सकल्प करना सकल्प पूरा होने (वाछित जप पूरे होने) पर उसका दशमाश हवन अथवा दशाश जप करना चाहिए। ध्यान रहे पूजा, जप, दशाश होम या जप के साथ योग्य वेद्य, डाक्टर, हकीम, होम्योपेथ द्वारा समय पर निदान एव निर्धारित ओषधि सेवन बिना रुके नियमित रूप से व्यायाम, आराम, पथ्यपालन, प्रतिभ्रमण सहित करता रहे। भारतीय आध्यात्मिक, धार्मिक तथा ज्योतिपीय जगत मे सभी गम्भीर घातक तथा मारक रोगो से रक्षार्थ महामृत्युजय अथवा लघु मत्युजय जप, रुद्राभिषेक दशाश होम, को अत्यधिक महत्व दिया गया है। इनकी सम्पूर्ण विधिवत् विधि पद्धति किन्हीं मान्य योग्य विद्वान जैसे— वेद्यराज नन्दकिशोर शर्मा आगर (मालवा), महाकवि शकरलाल गोड ''शभुकवि'' दूरा, आगरा, स्वामी श्री हिमाशु ५५७, मन्टोला स्ट्रीट, नई दिल्ली आदि विशेषज्ञा से सीखनी चाहिये। अपने स्वल्प ज्ञान के अभ्यास पर सक्षिप्त विधि मे भी अकित कर रहा हूँ—

महामृत्युजय जप—

विश्व की समस्त प्राण रक्षक उपासनाओ का सिरमार महामृत्युजय भगवान आशुताष मृत्युजय शिव की आराधना की उत्पन्न महत्वपूर्ण विधि ह। शिव ही मृत्यु के स्वामी हे तथा वे ही मृत्यु को टाल सकते हे वे आदिदेव, अज, अविनाशी, भूतनाथ, मृत्युजय, चन्द्रशेखर तथा पशुपति ह। ब्रह्माण्ड की रक्षार्थ अमृत मथन से उद्भूत कालकूट विष को पीकर कठ मे ही रोककर नीलकठ हे। उनमे पूर्ण श्रद्धा, विश्वास भक्ति रखते हुए आस्थापूर्वक महामृत्युजय जप का पुर श्चरण, रुद्राभिषेक तथा दशाश हवन, हवन का दशाश तर्पण किया जाता ह। महामृत्युजय का पुरश्चरण साढे तीन लाख मत्र जप का होता है। इसे यदि स्वय रोगी कर तो अति उत्तम परन्तु आत्ययिक स्थिति मे रोगी न कर सके तो उसे प्राणाधिक चाहने वाला परिजन पुत्र, पिता, भ्राता, मित्र अथवा निर्लोभी पवित्र जीवन बिताने वाला ब्राह्मण या कोई भी विधिपूर्वक कर सकता ह। रोगी का ज्योतिषीय दृष्टि से चन्द्रवर्ण आदि देखकर प्रदोष, सोमवार, मगलवार, शनिवार या किसी भी शुभ दिन इसको प्रारम्भ किया जा सकता ह। पुरश्चरण काल मे सात्विक आहार विहार, ब्रह्मचर्य पालन, भूमि शयन, नापित से क्षार कर्म न करवाना, कुत्सित इच्छाओ का दमन, जप निश्चित समय पर करना भगवान मे दृढ आस्था व विश्वास रखना आवश्यक ह। साथ ही पथ्य पालन सहित उपर्युक्त ओषधियो का प्रयोग निरन्तर रखना ह। यदि आप समझत हे कि साढे तीन लाख मत्र जप सभव नहीं तो छोटा पुरश्चरण एक लाख पच्चीस हजार जप का किया जा सकता हे। जप शिवालय, घर के पूजा स्थान, शिव मूर्ति, लिग अथवा नर्मदेश्वर के सानिध्य मे किया जाना चाहिए। ये नर्मदश्वर मध्य प्रदेश के होशगाबाद जिले मे शिवप्रिया कुमारी नदी रेवा, नर्मदा क जल मे स्वाभाविक रूप से उपलब्ध होकर भक्तो को उपासनार्थ मिलते हे। इस लिग मे प्राकृतिक रूप से शिव के चिन्ह

मुकुट, जटा, नाग, चन्द्रमा आदि बने होते है। यथा सम्भव धवल वर्ण का नर्मदेश्वर हो तो सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इस अथवा नित्य काली या पीली चिकनी मिट्टी से बनाये गये पार्थिव शिवलिग की प्रतिष्ठा व स्थापना की अवश्यकता नहीं होती। यदि विधिवत् स्थापित शिवलिंग वाले शिवालय मे जप हो तो वह भी उत्तम है। जप विधि निम्नानुसार है। शिवालय, देवालय, जप व पूजा स्थल को भली प्रकार झाड, बुहार पवित्र जल से प्रक्षालन कर या कच्चा आगन हो तो गोमय गगोदक से लीप पोत स्वच्छ करे। स्नान स्वच्छ वस्त्र पहन सर्वप्रथम पूर्वाभिमुख बैठ गायत्री मत्र की कम से कम एक माला (१०८ मत्र जप) करे। जप के बाद तीन आचमन, प्राणायाम, शातिपाठ, प्रार्थना तथा महामृत्युजय का सकल्प करे। सकल्प के बाद मत्रजप करे। महामृत्युजय मत्र निम्नांकित है।

ॐ त्र्यम्बक यजामहे सुगधि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात'

जप करने से पूर्व भस्म से त्रिपुण्ड धारण करे। रुद्राक्ष धारण करे तथा रुद्राक्ष की माला से ही मौन रहकर मन ही मन जप करे। मत्र के साथ प्रारम्भ मे तथा अन्त मे बीज मत्र के सयुक्त करने पर वास्तव मे जप योग्य मत्र निम्नानुसार बनता है।

ॐ ह्रौ ॐ जू स भुर्भुव स्व ॐ त्र्यम्बक यजामहे सुगधि पुष्टि वर्धनम। उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्यो मुक्षीयमामृतात। भुर्भुव स्व स जू स ह्रौ ॐ।।'

जब पुरश्चरण पूर्ण हो जाय तब साढे तीन लाख का महापुरश्चरण किया हो तो ३५००० तथा सवा लाख का लघु पुरश्चरण किया हो तो १२५०० आहुति डालते हुए यज्ञ किया जाना आवश्यक है। अगर केवल जप का ही सकल्प लिया हो रुद्राभिषेक का नहीं तो अभिषेक आवश्यक नही पर दशाश आहुति अथवा असमर्थता होने पर दशाश जप किया जाना अनिवार्य है। रोग निवृत्ति हेतु किये गये जप के पश्चात गुरुची खण्ड गोदुग्ध तथा गोघृत की आहुति दी जानी चाहिए। हवन के पश्चात् यथा शक्ति दान धर्म, भोजन, प्रसादी करनी चाहिए। इस महामृत्युजय के अलावा छोटा लघु पुरश्चरण त्र्यक्षर मत्र का भी होता है। जो इसी प्रकार साढे तीन लाख या सवा लाख सख्या मे करना चाहिए यह मत्र है ॐ जू स जप के समय इसे साथ ही उलटकर तथा रोगी की प्राण रक्षा की प्रार्थना भी मिलाकर इस प्रकार जपते है। "ॐ जू स मा पालय पालय स जू ॐ" अगर रोगी के अलावा कोई शुभेच्छु या पडित जप करे तो व मा के स्थान पर रोगी का नाम लेकर पालय पालय जपे। जप पूजा, न्यास सबकी विधिवत पूर्ति आवश्यक है। त्र्यम्बक जप मे लाल व श्वेत चदन, स्नानार्थ दूध शुद्ध जल या गगा जल, अक्षत सभव हो बिल्व पत्र, धूप, घृत दीप तथा नैवेद्य भगवान शिव को श्वेत पुष्प सहित समर्पण कर पद्म पुराण के उत्तर खण्ड का मृत्युजय स्तोत्र भी शिवाराधन की प्राण रक्षक प्रार्थना है। मैने पूर्व मे ही निवेदन किया है कि मै वैदिक विद्वान, योगी, तान्त्रिक, ज्योतिर्विद तथा पाराहित्य विज्ञ विद्वान नहीं हूँ। अत केवल मुझपर विश्वास न रख विद्वज्जनो के निर्देशानुसार उपासना करे। पार्थिव शिवलिग बनाकर पूजा करने पर कुछ अतिरिक्त और करना पडता है। मिट्टी को स्वच्छ शुद्ध जल मे भिगाकर शिवमूर्ति (जलहरी या योनिपीठ मे स्थापित शिवलिंग) बनाना पडता है। सर्वप्रथम "भगवत्य उमाय नम कहकर योनि पीठ पर रक्त चदन लगावे। हरराय नम कहकर मृत्तिका शिवलिग बनाने हेतु ग्रहण करे। महेश्वराय नम कहकर शिवलिंग बनावे। शूल पाणय नम कहकर योनिपीठ पर शिवलिंग की स्थापना करे। सर्वप्रथम भगवत्य उमाय नम कहकर योनिपीठ पर रक्तचन्दन लगावे। 'पिनाक ध्वज नम कहकर पार्थिव शरीर लिंग मे शिव का आवाहन करे। 'शिवाय नम" कहकर पहले कच्चा गादुग्ध से पुन स्वच्छ पवित्र जल से स्नान कराये। 'पशुपतयेनम ' मत्र से क्रमश लाल चन्दन श्वेत चन्दन अक्षत पुष्प, बिल्वपत्र धूप तथा घृत दीप समर्पण कर नैवेद्य समर्पण कर शिव का किरीटी [illegible] गिरि निभ चारु चन्द्रावतस [illegible] वितारचन स्थित मुख पद्मासनस्थम आदि मत्र से ध्यान करे। जप के पश्चात् ' ॐ चण्डेश्वरायनम मत्र से अक्षत फल पुष्पाजलि समर्पण कर' ॐ महादेवाय नम " मत्र से शिवमूर्ति का किसी तीर्थ स्थल नदी कूप, बावडी, सरोवर जो पवित्र हो मे विसर्जन करे। पुन जोर देकर कह रहा हूँ पथ्यपालन, उचित श्रम हलके व्यायाम, प्राणायाम विश्राम तथा औषधि प्रयोग कभी न छोडे।

विभिन्न हृदयरोग
आयुर्वेदीय चिकित्सा क्रम व पथ्य

हरिमोहन शर्मा, भिषगाचार्य

आयुर्वेदीय मत से मुख्यत वातिक, पैत्तिक, श्लेष्मिक, त्रिदोषज एव कृमिज पाच प्रकार के हृद्रोग परिगणित किये गये ह। यद्यपि आधुनिक चिकित्सा की प्रगति शल्य चिकित्सा के विकास आधुनिकतम कम्प्यूटराइज यत्रो एव निदान साधनो के उपयोग न एक तरह से आधुनिक चिकित्सा को हृदय रोगो की चिकित्सा का एकाधिकार दे दिया सा लगता ह। प्रश्न यह उठता ह क्या आयुर्वेद हृदयरोगो की चिकित्सा मे सक्षम ह। क्या वद्या को केवल मात्र धनार्जन अथवा मिथ्याभिमान की रक्षार्थ रोगी व उसके हितैषिया को वहका वहलाकर भ्रम म रखत हुए हृद्रोगी के उपचार का प्रयास करना चाहिए। मेरा उत्तर हे हॉ हम आयुर्वेदज्ञ हृद्रोगो की सम्यक् चिकित्सा मे पूर्ण सक्षम हे। हमार विद्वान चिकित्सक सृष्टि के प्रारम्भ से आज तक आयुर्वेदिक आषधियो के प्रयोग से हृद्रोगिया की चिकित्सा कर उन्हे स्वस्थ करते रह ह। परन्तु कुछ एसी विशिष्ट स्थितियो जेसे हृदयाघात, हृदय के वाल्व म छिद्र, हृदय धमनी मे ८० प्रतिशत से वढकर अवरोध, आकस्मिक तीव्र हृच्छूल आदि आत्ययिक एव सद्योघातक स्थितियो म सवप्रथम रोगी का प्राणरक्षक आधुनिक चिकित्सा जिसमे आक्सीजन वाइ पास सर्जरी आदि हो सकते हे करवाने के पश्चात फिर दीर्घकालीन आयुर्वेदिक चिकित्सा देनी चाहिए। आधुनिक चिकित्सक भी ज्यादातर हृद्रोगो मे आजीवन चिकित्सा एव पथ्य पालन ही निर्देशित करते हे। यदि तीव्र एव घातक स्थिति से पूव ही रोगी आपके पास आ जावे तथा आप उसे दर्शन, स्पश, प्रश्नादि से हृद्रोगी निदान करले तो सावधानी रखते हुए रोगी या परिवारजन को वह हृद्रोग पीडित हे यह कभी न वतावे क्योकि मालूम पडत ही रोगी अधमरा विषाद ग्रस्त, चितित, अशक्त ओर निराश हो जाता हे। उसके परिजन भी अत्यन्त दुखी हो जात ह।

उरोगुहा के मध्य बायी ओर झुका कोष्ठगत हृदय ह। यहा हाथ रखने से धडकन सुनाई पडती हे। कान लगान या स्थेटिस्कोप से धडकन सुनाई देती हे। गभीरतापूवक श्रवण कर धडकनो के अन्तराल को अध्ययन करे। उसकी ध्वनि मे नियमितता के अलावा इतर ध्वनि अनुभव करे। रक्तभार नापकर उसका अकन किया। नाडी गति का भी अकन करे। रोगी को उठाकर परीक्षण, वद्धकोष्ठता ऊर्ध्ववात आहार विहार व्यसन धूम्रपान, मद्यपान भोजन मे प्रिय व अक्सर खाये जाने वाला भोजन सम्पूर्ण दिनचर्या रात्रिचर्या, जीवन यापन के लिए व्यावसायिक स्थिति आदि की भली प्रकार जानकारी ले। फिर शास्त्रोक्त लक्षणो, नाडी आदि के आधार पर निश्चित करे कि हृदय रोग किस दोष के प्रकोप के कारण हे। सामान्य रूप से हृदयरोगी दम फूलने, शीघ्र थकने, भ्रम, थकान, मुखशोथ, धडकन स्वय अनुभव होने वक्ष प्रदेश मे शूल चुभन, ऊर्ध्ववात आदि की सूचना पूछने पर द देता हे। प्राय अधिक रोगी ता ऊर्ध्ववात जन्य मासपेशी शूल व उरोगुहा के गारव का भी हृच्छूल मान लेते ह। रोगी का शरीर भार तथा वसा स्थूलता पेडू जघा, नितम्ब, स्कन्ध प्रदेश पर जमाव भी दे। वसाधिक्य होने पर हृदय धमनी रोग होन के अधिक अवसर होते हे। रोगी की दिनचर्या, व्यायाम खान पान तथा पदभ्रमण आदि की पूछताछ स यह मालूम पडेगा कि वह परिश्रम कितना करता ह। क्योकि पदभ्रमण शारीरिक श्रम तथा वसा रहित सुगढ शरीर हृदय रोगो की सभावना को न्यूनतम करता ह। यदि रोगी के घर परिवार व्यवसाय म आकस्मिक दुर्घटना, मृत्यु, वडा घाटा, सेवा मे व्यवधान गभीर सामाजिक व पारिवारिक विघटन या ऐसी स्थिति जिस मे वह स्वय को हताश क्लान्त पीडित व प्रभावित अनुभव कर चितित व तनावग्रस्त शोक पीडित हो तो भी हृदयरोग सभव हे।

(१) अस्तु आयुर्वेदोक्त वातिक हृद्रोग लक्षण निम्नांकित हैं—

शोक, उपवास, अति व्यायाम, रूक्षान्न, पोषण रहित शुष्क एव स्वल्प भोजन से वायु प्रकुपित हो हृदय मे पहुच वातिक हृद्रोग उत्पन्न करता है। इससे शरीर व हृदय के कम्पन मे वृद्धि, हृदय मे मरोड, स्तब्धता, जकडन, मूर्च्छा, हृत्प्रदेश मे रिक्तता की अनुभूति, धडकन वदलना, हृदय मे सूई जैसी चुभना मानो हृदय मे कोई चाकू घोप रहा हो, शोषण, पकडकर खींचने, मुट्ठी मे भीचने डडे से कूटने, हथौडे की चोट जैसी विविध पीडा मे दैन्य, ग्लानि, शोक, भय, बातचीत सहन न होना, निद्रा का अभाव तथा दम घुटने जैसे लक्षण मिलते है।

(२) पैत्तिक हृदयरोग का कारण—

उष्ण, अम्ल, लवण, कटु रसो का अतिसेवन, क्षार का दीर्घकालीन प्रयोग, अर्धपक्व व अपक्व आहार, मद्य, क्रोध, आतप सेवन, ऊष्माघात व अधिक गर्म क्षेत्रो, महानगर, रेलवे इजनो, इजन रूम, मरुस्थलो मे भ्रमण, चटपटे मिर्च मसालेदार भोजनो से पेत्तिक हृदय रोग होते हे। इन रोगो मे हृदय तथा छाती मे जलन, मुह कडुवा तथा चरपरा रहना, खट्टा जलता हुआ वमन, विना श्रम के थकान, आखो के सामने अधकार, हाथ पाव के तलवो, श्वास प्रश्वास तथा शरीरमे दाह, मूर्च्छा, त्रास गर्मी प्रतीत हाना, ज्वर, मल मूत्र नख वर्ण व नेत्रो मे पीलापन पिपासा, हृदय कौ जेसे कोई चूस रहा हो ऐसा आभास, स्वेदाधिक्य, मुखशोथ, भ्रम, अम्लोदर तथा खट्टी छर्दि होना जेसे लक्षण होते हे। जिह्वा पीली हो जाती हे।

(३) कफज हृदय विकार का कारण—

अति भोजन, अध्यशन, गुरु व स्निग्ध आहार, निश्चिन्तता, आरामदायक जीवन जीना, दिवा स्वप्न तथा ज्यादा नींद लेना, शारीरिक श्रम व व्यायाम न करना कफज हृद्रोग कारक है। इसके होने पर हृत्क्षेत्र सुप्त सुन्न, जकडा, भारी तथा जैसे हृदय पर भार रखा हे ऐसा अनुभव होना, तद्रा, अरुचि, मुख से लालास्राव, ज्वर, कास, अग्निमाद्य, मुह मीठा रहना, निद्राधिक्य आलस्य शरीर मे भारीपन तथा थकान लक्षण होते हे।

(४) त्रिदोषज हृदय के कारण—

पूर्वोक्त तीनो प्रकार के मिले जुले तथा तीनो प्रकार के रोग लक्षण एक साथ अनुभव करना त्रिदोषज हृद्रोग के लक्षण है।

(५) कृमिज हृद्रोग—

त्रिदोषज हृदय रोग ग्रस्त होने पर यदि रोगी कृमि उत्पादक आहार विहार तिल, दूध, गुड मिठाई, दूषित जल आदि सेवन करता ह तो उसे हृदय मे एक ग्रथि (कोलेस्ट्रोल) उत्पन्न होती हे। वहा रस आदि क स्रोत म वाधा उत्पन्न होकर रस धातु सक्लिन्न होकर स ने लगती है। इस सडन से वह क्षेत्र शोथ, पीडा तथा तोद युक्त ह जाता हे। वहा विभिन्न प्रकार के कृमि (रोगाणु) उत्पन्न हो जाते हे। रक्त सचार मे वाधा आने लगती ह। वाद म मासपेशियो तथा ग्रथि स्थान पर छिद्र हो जाता ह। (वाल्व मे छेद या वाल्व खराव होना) कृमि सारे हृदय म फलकर विभिन्न स्थलो का भ्रमण करने लगते ह। एसा होन पर सूई चुभोने जैसी, जेसे कोई हृदय को चीर रहा हो जसे खुजली चल रही हो, ऐसी वेदनाये रोगी के शरीर तथा हृदय मे होती हे। रोगी को अन्न मे अरुचि, खासी, अग्निमाद्य आखो की पुतलियो मे कलोंस (श्यावता), ज्वर आलस्य, निद्राधिक्य, जी मिचलाना, हृदय सूखता, डूवता श्वास घुटता अनुभव होना, अन्दर वाहर अधकार की प्रतीति लालास्राव, करोती चलने जेसी वेदना होती ह। चक्कर आना, विना श्रम या अल्प श्रम से थकान भ्रम मोह शथिल्य मुखशोथ आदि मिलते ह। शास्त्रोक्त उन पचविध हृदय रोगो के अतिरिक्त गुल्मज हृदोग कफज हृद्रोग के लक्षणा स युक्त होता ह। वहुप्रचलित हृच्छूल वातज हृदोग मे अतर्भूत हे। हृदय रोगो मे आयुर्वेद तथा यूनानी भारतीय पद्धति की उभयविध चिकित्सा पद्धतियो म अनेक एकल योग यथा अजुन, पुष्करमूल शालपर्णी जटामासी रसोन आदि रक्तचाप वृद्धिजन्य हृद्रोगो म सर्पगन्धा शुण्ठी, रसोन आदि स्वल्प मूल्य रत्न एव खनिज प्राणिज द्रव्यों मे मुक्ता शुक्ति, हरिण श्रृग साभरश्रृग अकीक, यशव आदि तथा मूल्यवान प्राणिज द्रव्यो मे मुक्ता अम्बर, कस्तूरी आदि वहुमूल्य खनिज द्रव्यो मे मरकत (पन्ना) माणिक्य आदि का प्रयोग सभी वेद्य हकीम करत रहे हे। कोलेस्टरोल अथवा रक्तवसा वृद्धि की स्थिति मे गुग्गुल, रसोन, पलाण्डु शल्यकी निर्यास गोभाजरा

निर्यास, शुण्ठी, पचकोल का प्रयोग प्रशस्त हे। हृदय विशिष्ट योगो के विषय मे वहुत से अन्य विद्वानो ने अपने लेखो मे विस्तृत प्रकाश डाला है अत मे निर्माण विधि घटक द्रव्य, मात्रा सेवन विधि का अकन न करते हुए मात्र नाम दशन ही करा रहा हूँ।

बहुमूल्य एव रसायन— वृहत् चिन्तामणि, विश्वेश्वर रस हृदयेश्वर रस, चतुर्मुख चिन्तामणि रस, जवाहरमोहरा, याकूती, हिरण्यगर्भ पोटली, मकरध्वज, स्वर्णयुक्त लक्ष्मीविलास रस स्वर्ण सूतशेखर रस, प्रशस्त हे।

अवलेह पाको में— मुक्तावलेह, हृद्य द्राक्षावलेह, खमीरा गाजवान अवरी, खमीरा आबरेशम, हकीम अर्शद वाला, खमीरा मरवारीद, चन्द्रावलेह, ब्राह्म रसायन, च्यावनप्राश, धात्री रसायन, दाडिमावलेह, दवा उल मिश्क, लवूवे क्वीर, विभिन्न प्रकार के मुरब्वे हृद्य हे।

भस्म पिष्टियों में— पन्ना भस्म व पिष्टी, मुक्ता भस्म व पिष्टी, स्वर्ण भस्म, रजत भस्म, माणिक्य भस्म, प्रवाल शाखा भस्म तथा इनके विभिन्न योगिक अर्जुन क्वाथ की वारवार भावना दिया गया नागार्जुनाभ्र शिलाजतुवटक, योगराज रसायन, हृदयार्णव रस, प्रभाकर वटी, आरोग्यव र्धिनी वटी अनुपान भेद से हृद्रोगो मे उपयोगी हे।

अपने हृदय रोगी की दिनचर्या रात्रिचर्या आपको तय कर देनी चाहिए। सर्वप्रथम सूर्योदय से अधिक नहीं तो एक घण्टे पूर्व अवश्य उठे इष्ट स्मरण करे, रात को ताम्रपात्र मे भरकर रक्खा हुआ एक सवा लीटर जल पीवे व शोच करे। इसके पश्चात् अनिवार्यत प्रात भ्रमण करे। भ्रमण के समय तीव्र गति से न चले तथा वीच मे थकान लगे तो कुछ देर वठकर विश्राम के वाद पुन भ्रमण करे। भ्रमण का काल, दूरी क्रमश वढाते हुए एक से डेढ घण्टे की तथा दूरी ४ कि० मी० तक हो सकती हे। अगर सीढिया चढनी हो तो २५-३० फुट ऊँचाई तक की सीढी केवल दाये पाव से ऊपर चढते हुए दिन मे दो वार तक चढ सकता ह। चढते व उतरते समय क्षिप्रता न वरते। साहस तिपमासन, दौडना सर्वथा न करे। भस्त्रिका प्राणायाम तथा पूरक व रेचक प्राणायाम, हाथ, पाव शिर को शन शन हिला डुलाकर हलका व्यायाम करे। मध्याह्न भोजन के वाद अनिवायत १५ मिनट विश्राम करे। भोजनो के पश्चात् भ्रमण न करे। साय भोजन से पूर्व एक दो किलोमीटर घूम सकते हे। भोजन कभी पेट भरकर न करे। कभी पेट मे तनाव न आने दे। कभी जोर से वोलना, क्रोध करना अट्टाहास, वाद विवाद न करे। कभी आचार वाजारू आरक्षित (प्रिजर्व्ड) चटनिया, पापड लवण प्रधान आहार न करे। खोपरे, मूगफली, तिल, सरसो के तेल, पशु चर्वी मसालेदार भोजन, सहवास म अतिप्रवृत्ति धूम्रपान मद्यपान, अन्ये नशीले पदार्थो का सेवन नहीं करे। वनस्पति तेलो व डालडा से वनी, उडद, चना चोला, पीठी व मैदा से वने पदार्थो का आहार न करे। रात को प्रभु स्मरण कर जल्दी शया रूढ हो जावे। रूद्राक्ष, अकीक मोती पन्ना आदि मणियो व भूषणो के रूप मे धारण करना प्रशस्त ह। पानी थोडा-थोडा वार-वार पीवे। ट्रिपल या डवल रिफाइन्ड कोलेस्ट्रोल रहित कुसुभ या करणी, सूरजमुखी, सोयावीन का तेल, अल्प मात्रा मे गोघृत, नवनीत, तक्र, गोदुग्ध, छेना रसगुल्ला, पत्रशाक, परवल, घीया, तुरई, करेला, टिण्डा मूग, मसूर, कुलथी की दाल, पेठा, पुराने गेहू, जो, साठी चावल, लोग, मेथी, दालचीनी, अदरक कालीमिर्च, अनार मोसमी, गाजर, आवला, सतरा, वेल, धनिया, जायफल, सोफ, अजवायन, पीपल, हींग, करेला, परवल रसभरी, जो का दलिया, आम का पानी कच्चा खोपरा, मुनक्का, पपीता आदि खाद्यान्नो, फलो, शाको मसाले का सेवन करे। अन्य पदार्थो पर चाहे मजबूरी हो सेवन नहीं करे। हृदय रोगी को कतिपय योगासन जेसे सर्वागासन, शवासन पवनमुक्तासन, उत्तानपादासन, सतुलासन तथा सूर्य नमस्कार हलका प्राणायाम आदि करना चाहिए।

रोगी के जीवन मे प्रवल अभिलाषा, प्रभु मे विश्वास वेद्य तथा चिकित्सक के प्रतिसद्भाव, परिवारजनो मे रोगी के हितार्थ स्वय के आचार व्यवहार को वदलने की कामना तथा सही मात्रा मे भली प्रकार से निर्मित औषधियो व सम्यक् पथ्यापथ्य अनुपान मे मधु आदि का प्रयोग होने आवश्यक हे। हृदय रोगी को प्राय आजीवन ओषधि सेवन करना पडता हे। वह इसके लिए तेयार होना चाहिए। पिछले दिनो के कुछ प्रयोगो मे सूक्ष्म मात्रा मे पीत करवीर (कन्नेर) की टिंचर या क्षार, स्वल्प मात्रा मे कारस्कर लाभप्रद सिद्ध हुए हे। तिलपुष्पी हृदय रोगो मे सर्वश्रेष्ठ औषधि ह, जिसके घटक या योगिको का प्रयोग आधुनिक चिकित्सक भी करते हे हृदय रोगी को मधुमेह की सभी स्थितिया से वचना चाहिए।

'हृदयं चेतनास्थानमुक्तं सुश्रुत देहिनाम्'
सु० शा० ४/३४

डा० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी
क० ३०/६, घासी टोला वाराणसी

"धन्वन्तरि के प्राचीन वयोवृद्ध लेखक श्री त्रिपाठी जी के लेखों का रसास्वादन 'धन्वन्तरि' के पाठक दीर्घकाल से करते रहे है। आपके लेख आयुर्वेद का प्रतिपादन करने वाले, नवीनतम एव विद्वत्तापूर्ण सामिग्री से परिपूर्ण होते है। आशा है पाठको को रुचिकर लगेगा। भगवान धन्वन्तरि से श्री शास्त्री जी के शतवर्षायु की प्रार्थना के साथ।
— वैद्य हरिमोहन शर्मा भिषगाचार्य

आयुर्वेद के परवर्ती सहिताकार वाग्भट्ट ने अपनी सहिता का अष्टाग हृदय नाम इसलिए रखा है कि जिस प्रकार समस्त शरीर अवयवो मे हृदय का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है, उसी प्रकार अन्य समस्त सहिताओ मे इसका स्थान भी रहेगा। इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि मानव शरीर के अन्य अवयवो का अपने- अपने स्थान पर महत्व नहीं है। प्रसगवश सभी क्रियाओ का तरतम भाव तो देखा ही जाता है लेकिन प्रयोग मे भी यह पुरुष सहृदय है अथवा हृदयहीन है ऐसा जो प्रयोग किया जाता है इसका तात्पर्य इतना ही है कि यह सवेदनशील है अथवा यह दूसरा की अपेक्षा सवेदनशील नहीं है, अस्तु हम यहा हृदय के सम्बन्ध मे आयुर्वेदीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करेगे।

मनुष्य के जीवन का प्रारम्भ गर्भाधान के दिन से हो जाता है। चौथे मास मे सुश्रुत के अनुसार सभी अगो एव प्रत्यगो की रचना पूर्वापेक्षा या अधिक स्पष्ट हो जाती है तदनन्तर गर्भ का हृदय नामक अवयव स्पष्ट प्रतीत हो जाता है क्योकि इस अवधि मे हृदय की धड़कन सुनी जा सकती है और इस काल मे चेतना धातु (आत्मा) स्पष्ट हो जाती है क्योकि चेतना का स्थान हृदय ही है यही कारण है कि गर्भिणी स्त्री गर्भ की इच्छा से सम्बन्धित हो जाने के कारण दौहृदिनी (दो हृदया वाली) कही जाती है। अतएव आयुर्वेद शास्त्र ने उसकी इच्छाओ की पूर्ति कराने का आदेश दिया है। इस काल मे उसकी इच्छाओं की पूर्ति करा... गर्भिणी विशेष तथा शक्तिशाली सन्तान को जन्म... कुबड़ी लगडी ... अन्धी आदि सन्तान को जन्म देती है। इसका समर्थन पुराणो तथा काव्यो मे भी मिलता है। रघुवश के तृतीय सर्ग मे सुदक्षिणा के गर्भकाल ... दलीप स्वय आकर उसकी सखियो से पूछ पूछकर उसके दोहद की पूर्ति ... तत्परता से करते थे ... तदुपरान्त ... सुदक्षिणा जो इच्छा प्रकट करती थी वह राजा लाया हुआ ही दिखता था अस्तु। सुश्रुत मे विविध प्रकार के दोहदो का विस्तृत विवरण मिलता है इस प्रसग को ध्यान से देखे। सु० शा० ३/...

शरीर के अवयवो के निर्माण के सम्बन्ध मे जो तत्कालीन आयुर्वेदविदो का विवाद सु० शा० ३/३२ मे दिया है उसका निष्कर्ष है सर्वप्रथम मध्य शरीर की रचना होती है उसमे भी हृदय अवयव की ... कृतवीर्य ऋषि का मत है इसी का समर्थन च० शा० मे ... मे गर्भाशय मे रजवीर्य का सम्मिश्रण होते ही उसी प्रकार सम्पूर्ण शरीर के अवयव उसमे विद्यमान होते है ... बरगद आदि के बीज मे वृक्ष के सम्पूर्ण सूक्ष्मतम अवयव।

फुफ्फुस—

हमारे शरीर मे यकृत तथा प्लीहा का निर्माण ... होता है और ये ही अवयव (यकृत-प्लीहा) रक्त का भी

निर्माण करते हे। देखे— 'स खलु आप्यो रसो यकृत्प्लीहानो प्राप्य रागमुपैति' सु० सू० १४/४ यह जलीय सफेद वर्ण वाला रस यकृत प्लीहा मे पहुचकर रक्त के रूप मे परिणित हो जाता है, यही कारण हे कि पाण्डु रोग मे अथवा रक्त की कमी हो जाने पर मास खाने वालो को वकरा आदि प्राणी का यकृत खिलाया जाता है। वास्तव मे आहार रस सर्वप्रथम रक्त मे मिलता है फिर रक्त के साथ यकृत प्लीहा मे जाकर वहा रजक पित्त की रासायनिक क्रिया द्वारा लाल हो जाता है। निष्कर्ष यह है कि आहार रस के श्वेत कण ही रंजक पित्त के योग से रक्तकण के रूप मे परिवर्तित हो जाते है। इसी के भाग से फुफ्फुस का निर्माण होता हे। देखे—

'शोणितफेनप्रभव फुफ्फुस' सु० शा० ३/२५

यह फुफ्फुस उदानवायु के श्वास-उच्छ्वास का आधार है। कण्ठ से श्वास मार्ग का आरम्भ होकर वह दोनो भागो मे वटकर दोनो फुफ्फुसो मे चला जाता है, वहा जाकर फेन (झाग) की भाति असख्य वायुकोष्ठो मे विभक्त होकर समस्त फुफ्फुस मे व्याप्त हो जाता है। इन्ही को फेफडा कहते है। ये फुफ्फुस श्वास द्वारा ली गई वायु का ग्रहण करते समय फूल जाते है और उसके निकलने पर कुछ सिकुड जाते है यह सकोच विस्तार का कम श्वास-प्रश्वास क्रिया के साथ निरन्तर चलता रहता है। फुफ्फुसो को मर्म मानते हुए भगवान धन्वन्तरि ने सु० शा० ६/२५ मे स्तनरोहित २, स्तनमूल २ अपस्तम्भ २, अपलाप २ नामक आठ मर्म माने है—

मर्म परिचय

उक्त दो मर्मो के आरम्भ मे स्तन शब्द का प्रयोग हुआ है। यहा उक्त स्तन शब्द से किसका ग्रहण किया गया है देखे स्तन शब्द की निरुक्ति—ष्टन् शब्द धातु से निष्पन्न है और शब्द शत आक्रोशे धातु से बना है आक्रोशक का अर्थ है, चिल्लाना। यह कार्य फुफ्फुसो के बल पर ही सभव है। वाह्यस्तन उक्त अर्थ की अभिव्यक्ति करने मे असमर्थ हे, हमारा विश्वास है कि यहा प्रयुक्त स्तन शब्द फुफ्फुसो के लिए प्रयुक्त हुआ हे। फुफ्फुस सिरा मर्म है, क्योकि इनका प्रत्येक कोष्ठ-प्रकोष्ठ सिराओ से व्याप्त है। दूसरा हेतु इन पर आघात लगने से उर क्षत हो जाता है उसके कारण श्वास कास रोग हो जाते हे। ये लक्षण वाह्यस्तनो पर आघात लगने पर नहीं दिखलायी देते, इन स्तनो पर विकार होने से इन्हे काट भी दिया जाता है। इसके विपरीत उरस् के मर्मो मे हृदय को सद्योमारक तथा स्तनमूल मर्म (Root of the lungs) को कालान्तर मारक माना गया है, यह मर्म फुफ्फुसो के नीचे का दो अगुल परिमित भाग है। स्तनरोहितमर्म (Base of the lungs) फुफ्फुसो के वाहरी स्तन या उपलक्षित भीतरी भाग से दो अगुल ऊपरी भाग ही उक्त मर्म है। अपलामर्म— (Apex of the Lungs) यह असकूट के नीचे भीतर पसलियो से घिरे हुए फुफ्फुसो के ऊपरी भाग मे विद्यमान हे। यहा तन्त्रकार ने पार्श्व शब्द का स्पष्ट रूप से प्रयोग किया है। पार्श्व शब्द का अर्थ है— 'पर्शुकासु भव पार्श्वम्' यह फुफ्फुस पर्शुकाओ के भीतर ही रहता हे। अपस्तम्भ मर्म (Bronchi) उरस् के दोनो ओर विद्यमान श्वास वायु का वहन करने वाली दो वातवाही नालियॉ हे जो श्वासनलिका विभक्त होकर दोनो फुफ्फुसो मे जाती हे, फुफ्फुसो को सु० शा० ५/८ मे 'वाताशय' भी कहा गया हे, क्योकि इनमे सदेव वायु भरा रहता है श्वासक्रिया मे जितना वायु भीतर आता है उच्छ्वास क्रिया मे उतना ही वायु वाहर निकलता है।

श्लेष्माशय—

यह उरस्याकला का पर्याशय भाग हे। उरस शब्द 'ऋगतौ' धातु से निष्पन्न होता हे, जिसमे निरन्तर गति हो उसे उरस् कहा गया है अतएव यह हृदय एव फुफ्फुसो के लिए प्रयुक्त भी होता है। यद्यपि साहित्य मे वाह्य स्तनो के लिए उरोज शब्द प्रयुक्त देखा जाता है, किन्तु यह आयुर्वेद का विषय नहीं है, उक्त उरस्या कला के दो स्तर है ये दोनो कलाये फुफ्फुसो को लपेटकर अपनी गोद मे लिए रहती है। श्वास लेने पर फुफ्फुसो मे वायु के भर जाने से वे फूलकर समीप हो जाते है और श्वास के निकल जाने पर ये सकुचित होकर दूर हो जाते है। ये अवयव (आशय) नर्मो चाडी वन्द थली के सदृश होते है।

हृदय—

रक्ताशय ही हृदय है। रक्त का एक नाम शोणित भी है इसका अर्थ है रक्त रक्त का सर्वदा गतिशील वना रहना सुश्रुत ने 'शोणितकफप्रसादज हृदयम' सु० शा० ४/३१ मे कहा हे वह शुद्ध रक्त कुछ समय के लिए हृदय मे आकर रुकता हे, अतएव इसका आशय अर्थ चरितार्थ

होता है, यह हृदय शरीरारम्भक शुद्धरक्त एव कफ धातु के प्रसाद से निर्मित होता है, रक्तवाहिनी सिराओ मे हृदय से ही धमन क्रिया का आरम्भ होता है, जिसे हम स्टेथिस्कोप यन्त्र की सहायता से सुन सकते है, इसी धमन क्रिया को देखकर इन रक्तवाहिनियो को धमनी नाम रखा गया है। अमरसिंह ने अपने कोश मे इसे 'हृदय हृत्' कहा है। देखे— अमर०२, मनुष्य० ६४, इसके अतिरिक्त 'चित्त तु चेतो हृदय स्वान्त हृन्मानस मन ' अमर० १ कालवर्ग, ये पर्याय मनस के वाचक है, धर्यपूर्वक विचार करे। लेटिन भाषा मे हृदय को 'हार्ट कहा जाता है। हृदय शब्द का अर्थ है— 'हरति रक्त' अथवा 'ह्रियते रक्तम् अनेन' अर्थात् जो रक्त को लेता है, अथवा जिसके द्वारा रक्तधातु शरीर मे लिया जाता है, यही हृदय का प्रमुख कार्य है। ध्यान दे— ध्मान या धमन करने वाली शिराओ को प्राणवहा इसलिए कहा जाता है, कि हार्टफेल (हृदय के अपने उक्त कार्य से विरत) हो जाने पर मानव की मृत्यु हो जाती है। इस के विपरीत मनस् की क्रिया के रुक जाने पर कई दिनो तक मृत्यु नहीं होती। देखे— मूर्च्छा, उन्माद अभिन्यास आदि मानसिक रोगो मे तत्काल मृत्यु होते नहीं देखा गयी है कारण यह है कि मनस् की विकृति के कारण उत्पन्न उक्त रोगो मे हृदय मर्म निरन्तर क्रियाशील रहता है।

इस तथ्य पर विचार करने के बाद कोई भी विवेकशील पुरुष हृदय को मालिक मानने के लिए तैयार नहीं होगा। यह हृदय जो गर्भ म रक्त एव कफ के प्रसाद से निर्मित होता है, वह वक्षस् तथा फुफ्फुस के अन्तराल मे स्थित है, इसकी आकृति अधोमुख कमल के सदृश है। यह विशेष रूप से चेतना का अधिष्ठान है। अत यह जागते समय विकसित होता है और सोने पर सकुचित हो जाता है इसका तात्पर्य यह है कि जाग्रत अवस्था मे चेतनाशक्ति क्रियाशील रहती है ओर गाढनिद्रा मे वह क्रियाशील नहीं रहती, यही हृदय का सकोच- विकास का स्वरूप है यह हृदय शिरोमर्म भी है, देखे— सु० शा० ६/७

हृदय के अर्थ मे विवाद—

आजकल जहा हृदय शब्द से हार्ट का ग्रहण किया जाता है वहा मस्तिष्क शब्द से वेण्ट्रीकल अवयव का भी ग्रहण किया जाता है। इस विषय पर हमने अपना युक्तियुक्त समाधान ऊपर दे दिया है उसे मनोयोगपूर्वक समझे और विचार करे।

मर्मस्थलो के परिमाण—

उर्वी कूर्चशिर, विटप, कक्षधर, स्तनमूल ये मर्म १ १ अगुल परिमित होते है। मणिबन्ध, गुल्फ ये २ २ अगुल होते है। दोनो कूर्पर ३-३ अगुल हृदय, बस्ति कूर्च गुद नाभि सिर मे स्थित चारो शृगाटक पाचो सीमान्त, गल के बाहरी प्रदेश मे स्थित २ नीला, २ मन्या तथा ८ मातृकाये ये स्थली के बराबर तथा हृदय कुचितपाणि (मुट्ठी) के बराबर या जैसा है देखे— सु० शा० ६/२८ २९, इसके आगे भी मर्मस्थलो के समीप किये जाने वाले शस्त्र प्रयोग के अवसर पर विचारणीय विषयो का निर्देश प्रस्तुत अध्याय के अन्त तक किया गया है। इनका अध्ययन, मनन शस्त्र प्रयोग के पूर्व अवश्य कर लेना चाहिए। ये ममस्थल भी कारण भेद से १ सद्य प्राणहर, २ कालान्तरघ्न (मारक) ३ वेकल्यक, ४ विशल्यघ्न तथा ५ रुजाकर भेद से पाच प्रकार के होते है। देखे— सु० शा० ६/२२ २३।

इसके आगे कुछ उपयोगी द्रव्य सग्रह प्रस्तुत है—

हृद्य— अर्जुन, कर्पूर, हृत्पत्री, वनपलाण्डु ताम्बूल करवीर, पीत करवीर, गुलाब। हृदयोत्तेजक- काफी मदकारी— अहिफेन भाग मद्य आदि तज्जात्य। निद्राजनन सर्पगन्धा। रक्तदाबशमन- रुद्राक्ष। श्लेष्महर काडा वासा तालीसपत्र लाग दालचीनी मुलैठी। गाजवा रूमीमस्तगी, बोल, ऊपक, लोहबान सिल्हक, वनफशा खूबकला, तोदरी, खत्मी जूफा। कासहर— पिप्पली कण्टकारी, बडी कटेरी काकडासिंगी, कासमर्द अगस्त्यपत्र। श्वासहर— शटी, कचूर, पोहकरमूल, भारगी दुग्धिका सोम। दीपन— हींग अनीस कलम्बक चित्रक मरिच जीरा, कालाजीरा। पाचन— मुस्तक, एरण्डककटी। वातानुलोमन— पुदीना मरुवक दमनक सातया नादीहिंग, वामक— मनफल इक्ष्वाकु, धामागव, कृतवेधन आरग्वक ताम्रपर्ण। मृदुविरेचन— अजीर, अतरी इसबगोल। यकृत पर कार्य करने वाले— दारुहल्दी मकोय अपामार्ग कालमेघ, दुग्धफेनी कासनी पारिजात। प्लीहा पर काय करने वाले— रोहितक शरपुखा झावुक।

*

हृदयं चेतना स्थानम्

आयुर्वेदाचार्य डा० महेन्द्र कुमार पी० नाफडे आयुर्वेद विशारद,
आयुर्वद रत्न, एम० डी० इलक्ट्रोपथी, एक्यूपचर, एक्यूप्रेशर, मेग्नेटोथेरपी
योगा एण्ड मसाज, हर्वल रेमीडिज
मानद उपाधि— आयुर्वेद सम्राट आयुर्वेद चूडामणि मु० पो० मेढली
अध्यक्ष— अ० भा० आयुर्वेद सेवा सघ,
महाराष्ट्र राज्य, दिल्ली एव लखनऊ
इण्टरनेशनल मेडिकल सोसायटी, दिल्ली
इडियन मेडिकल प्रेक्ट्रीशनर एसोसिएसन कानपुर
विदर्भ मेडिकल प्रेक्टिशनर एसोसिएसन अकोला
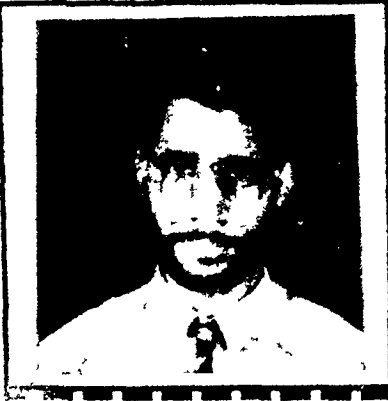
पाच भातिक प्राणी शरीर में चेतना, चेतन्य या चिति का क्या स्थान ह यह बहुत ही जटिल विषय हे। प्रोटोप्लाज्मा को चेतना तत्व मानने वाले वेज्ञानिक भी वास्तव मे इस विषय मे किसी तत्थपूर्ण निर्विवाद निर्णय पर अभी तक नहीं पहुँच पाये। शरीरातिरिक्त चतन्य ह यह मानने के लिए पाश्चात्य जगत् को भी वाध्य होना पडता ह किन्तु चतन्य एव शरीर का क्या सम्वन्ध ह, साथ ही मन क्या हे, कहा ह आदि प्रश्नो का समुचित उत्तर भारतीय दर्शन ही दे सकता ह। कतिपय पाश्चात्य मानस शास्त्री स्नायु सस्थान का ही मन कहते ह। कुछ के अनुसार प्राणियो की प्रत्येक क्रिया मनोशारीरिक हे। यहा मुख्यत चेतना स्थान क्या होना चाहिए इसी की विवेचना की जायेगी। इसका निर्णय हो जाने पर उसके कार्य-कलाप एव सम्वन्ध स्वत ही स्पष्ट हो जाते ह।

> "पुण्डरीकेण सदृश हृदय स्यादधोमुखम्।
> जाग्रतस्तद्विकसति स्वपतश्च निमीलति।।"

उक्त श्लोक सुश्रुत सहिता का एक प्रसिद्ध स्थल हे, इसके द्वितीयार्थ का अर्थ सामान्यतया दो भागो मे पृथक करके किया जाता हे। यथा— 'जाग्रतस्तद्विकसति" अर्थात् जागते समय वह विकसित होता हे और "स्वपतश्च निमीलति' अर्थात् शयनकाल मे वह निमीलित रहता हे। आलोच्य सुश्रुत सहिताकार की उक्ति "हृदय चेतना स्थान हे। वह अधोमुख पुण्डरीक के सदृश आकृतिमान ह जाग्रत अवस्था मे वह विकसित रहता ह एव सुषुप्ति म निमीलित रहता ह। हृदय चेतन्यास्पद या मुख्य चेतना कन्द्र ह या नहीं इस विवाद से पूर्व हृदय शव्द प्रकृति म किस अथ मे आया हे यह भी देखना चाहिये। सुश्रुत क अनुसार "शोणित कफ प्रसादज हृदय यदाश्रयाहि धमन्य प्राणवहा" ही हृदय ह जिस अग्रजी म (HEART) कहत ह। जिसके अधोवाम भाग मे प्लीहा एव फुफ्फुस ह दक्षिण भाग म यकृत क्लोम ह। यहा हृदय शव्द मन का पर्यायवाची नहीं। मन का स्थान आचार्य भेल 'शिरस्ताल्वन्तर गत सर्वेन्द्रिय पर मन' कहकर निर्णीत करते ह जो कि दर्शनकारो को भी अभिमत ह। योग शास्त्र के अनुसार मन का स्थान आज्ञाचक्र मे ह जिसे (HIND BRAIN) भी कह सकते ह। मन की स्थिति आज्ञाचक्र (भ्रूमध्यस्थ) म होने के कारण ही [illegible] पद्धति मे आज्ञाचक्र से प्रारम्भ होने वाले [illegible] का स्वीकार किया गया हे। साधारण भाषा मे इस लघु मस्तिष्क (CEREBRELLUM) कहत ह। इसे कपालकन्द भी कहा जाता हे। यही पच ज्ञानेन्द्रियो एव स्वप्न की नाडियो का स्थान माना जाता हे। सहस्रार जिसे कि एक प्रकार स सुषुम्ना से आने वाले स्नायु समूहो का प्रसार (Cerebrum)

कहना चाहिए सर्वोच्च भाग है। इसके बीच में ही ब्रह्मरन्ध्र (Third Ventricle) है जो मनश्चक्र से अतिसूक्ष्म नलिका द्वारा सम्बन्धित है। ब्रह्मरन्ध्र त्रिलोकाकृति माना जाता है। यही वेदोक्त हिरण्यमयकोश भी है। ब्रह्मरन्ध्र के पृष्ठ भाग में एक आंख के आकार की ग्रन्थि (Pinealgland) है जिसे योगियो का तृतीय नेत्र कहना चाहिए। उपनिषदो के अनुसार "मन स्थान गलान्त बुद्धयहङ्कारश्च हृदय चित्तस्य नाभिरिति।" ये चार ही आभ्यन्तर कारण कहलाते है। केवल उसके संयुक्त रहने पर स्वप्नावस्था होती है जहां कर्मेन्द्रिय एव ज्ञानेन्द्रिय दोनो निष्क्रिय रहती है। एक अन्य मत के अनुसार हृदय बुद्धि का स्थान है। 'तन्न यत्पकज तुल्य यद् बुद्ध स्थान तद् हृदय।' आधुनिक विज्ञान के मतानुसार हृदयाख्य शरीर का स्थान पम्प का कार्य करता है, जो एक ओर रक्त को लाने ले जाने वाली नालिकाओ से सम्बन्धित है। यह हृदय चेतना स्थान या आत्मा का स्थान नहीं हो सकता। वरन प्राण वाहिनी नाडिया जिसकी सख्या ७२ हजार है जो समग्र शरीर का सम्बन्ध सुषुम्ना द्वारा मस्तिष्क से करती है अत मुख्य चेतना केन्द्र मस्तिष्क माना जाना चाहिए तथा सामान्य रूप से चेतना सर्व शरीर व्यापी है। उपनिषदो मे "आपोमय प्राण" कहा गया है। तदनुसार जल का स्थूल भाग मूत्र, मध्यम प्राणवाही रक्त तथा सूक्ष्मतम प्राणीशक्ति के रूप मे परिवर्तित होता है। इसलिए "रक्त जीव इति स्थिति" कहा गया है। उन समस्त नाडियो मे भी नासिका वाम स्थित इडा दक्षिण स्थित पिगला मध्यस्थित सुषुम्ना से तीन प्रमुखतम वाहिनी मानी गयी है। तदतिरिक्त— वामदक्षिण चक्षु गाध ारी हस्ति जिह्वा। दक्षिण वामकर्णपुषा यशस्विनी। मुख— अलम्बुसा कुहु— लिगदेश। मूलस्थान शखिनी— ये भी प्रधान वाहिनिया है। अन्य गोण एक विश्लेषण के अनुसार नाडियो मे चित्त की गति प्राण शक्ति के आधार पर हे जो एक होते हुए भी प्राण अपान व्यान समान उदान भेद से पञ्चधा विभक्त है। तदनुसार मन, बुद्धि, चित्त, अहकार ये चार चेतना के स्तर, जो मस्तिष्क से नाभिपर्यन्त मुख्यत फले हुए हे, माने जाने चाहिए। इसलिए नाभि से ऊपर का भाग पवित्र नीचे का भाग अपवित्र। आधुनिक मनोविज्ञान चेतन अचेतन अवचेतन ये तीन स्तर मस्तिष्क के मानता है। अहकार को उस मत मे Ego कहते हे जिसके भी एकाधिक विभाग है।

लेकर ही कुछ लोगो के मन ... को चेतना स्थान कहा है।

उपनिषद भी प्रज्ञानात्मक ब्रह्म के ... कहता है— यदेतद हृदय मनश्चैतत। स[ंज्ञा]न ... प्रज्ञान मेधा दृष्टिर्धृतिर्मति र्मनीषा जूति स्मृति सकल्प क्रतु असु कामोवश इति सर्वाण्येतानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि।"

जेसा कि सुश्रुत कहते हे हृदय आकार मे एक अधोमुख (मुकुलाकार) कमल के समान (अवयव) है। (जिसकी ... विशेषताये है, जसे कमल समान्यतया मुकुलाकार ... अधोमुख ही रहता है। परन्तु विकसित होने पर ... पर) उसका मुख ऊपर हो जाता है)। किन्तु ... अधोमुख अर्थात् नीचे की ओर मुख करके ही रहता है। दूसरी विशेषता यह हे कि कमल नियत समय मे दिन मे विकसित होता हे आर सायकाल या रात्रि मे सकुचित हो जाता हे। परन्तु यह अवयव रूपी हृत्कमल रात ... अहर्निश विकास एव सकोच करता रहता है। ... के विस्फार तथा निमीलन से सकोच का अर्थ ग्रहण करना समुचित हे। योगशास्त्र अनाहत चक्र जो कि ठीक सुषुम्ना के मध्य, नाभिस्थ स्वाधिष्ठान चक्र के ऊपर है अधोमुख एव १२ दल वाला कहा गया है वह सूर्यतत्व है अत चक्रमण्डल आज्ञाचक्र (भूमध्यस्थ) से झरने वाले अमृत का शोषण करता हे, सभवतया आचार्य सुश्रुत ने उपयुक्त अनाहत चक्र के आशय से ही अपना मत स्थापित किया हे, किन्तु शयनकाल मे निमीलन यहा भी सभव नहीं दिखाई पडता। योगियो के अनुसार अनाहत चक्र कुण्डलिनी जागरण के पश्चात् उन्मुख हो चन्द्रमण्डल से अमृत श्रवण करता हे एव जब सहस्रार पर्यंत षट्चक्र वेधपूर्वक कुण्डलिनी शक्ति का गमन होता हे तो समग्र नाडिया अमृतपूर्ण होकर योगी के शरीर को दिव्य बनाती हे।

एक अन्य दृष्टिकोण परिस्वतन्त्र नाडी मण्डल

(Autonomus Nervous System) का हे। शास्त्रानुसार कपालकद से ही एक नाडी जिसके स्थानानुसार कूर्म विश्वोदरी कुहु (Vagus Nerve) आदि नाम हे। ग्रीवा, वक्ष, कटि भाग मे होती हुई गुदा पर्यान्त आती हे। इसके वाम दक्षिण दो भाग है। दक्षिण भाग वक्ष, उदर, कटिप्रदेश मे होती हुई इडा-पिगला की मुख्य नाडियो (Sympathetic Columns) से सम्वन्ध करती हे तथा इडा-पिगला द्वारा सुपुम्नागत चक्रो से भी सम्वन्ध रखती हे। सभवत सुश्रुत वर्णित, हृदय कमल इसी प्राण, अपान, समान की स्वतत्र नाडी से सम्वन्द्ध होना चाहिए किन्तु "यह अधो हो एव इसका निमीलन उन्मीलन भी होता ह।" इसका प्रमाण प्राय नहीं तथापि मुख्य केन्द्र मस्तिष्क मूर्धास्थान ही माना जायेगा। क्योकि ऐतरय उपनिपद कहता हे "स एतमेव सीमान विदार्थ तया द्वारा प्रपद्यत। सेपा विहतिर्नाम द्वारस्तदेतन्नान्दनम् ?" सेन्द्रिय शरीर पूर्ण वनाकर ब्रह्म न मूर्धास्थान से उसमे प्रवेश किया एव समग्र इन्द्रियो व शरीर को अनुप्राणित किया। विदीर्ण करने क कारण वह स्थान विहति कहलाता ह। आनन्द निकेतन ब्रह्म द्वार वहीं ह। अतएव ब्रह्मरन्ध्र भी कहना चाहिए। वहीं चिति शक्ति का योगियो को साक्षात्कार होता ह। वही प्रणवकला ह—
अर्ध मात्रा स्थिता नित्यायानुच्चार्या विशेपत" (अगम्यता ही अनुच्चार्या का तात्पर्य ह) का भी रहस्य ह। विन्दु (प्रणव) का स्थान ललाट का अथरारश माना हे जहा जीवात्मा सूक्ष्मरूप से निवास करता ह। जसा कि कहा ह—

भागे विन्दुमयी शक्ति ललाटस्या पराशके।
विन्दुमध्य च जीवात्मा सूक्ष्म रूपेण वर्तते हृदये स्थूल रूपेण मध्यमन तु मध्यमे।'

सभवत सुश्रुत का आशय इसी स्थूल रूप से हो। परम सन्त योगी श्री रमण महर्पि की प्रतिज्ञा के अनुसार हृदय—

अहवृत्ति समस्ताना वृत्तिना मूलमुच्यते।
निर्गच्छति यतोऽहधीर्हृदय तत्समासता ।।
अन्यदेव ततो रक्त पिण्डाद् हृदयमुच्यते।
अय हृदिति वृत्या तदात्मनो रूपमीरितम।।
तस्य दक्षिणतो धाम हृत्पीठ नव वामत'।
तस्मात्प्रवहति ज्योति सहस्रार सुपुम्नया।।

हृदय-अयम (आत्मा)— हृदयम्। इस व्युत्पत्ति के द्वारा हृदय आत्मा का स्वरूप ह वक्ष मे दक्षिण की ओर स्थित है। यह अष्टदल कमल सदृश ह, अनाहत अधोमुख चक्र से पृथक, रक्त पिण्ड से अन्य हे जहा से ज्योति प्रवाह ऊपर सुषुम्ना से होता हुआ सहस्रार मे जाता हे। यहा उल्लेखनीय वात हे कि, महर्षि रमण हृदय को अहवृत्ति (Egoism) का उदय स्थान मानते हैं। अहवृति ही समस्त वृत्तियो का मूल हे। यह हृदय दक्षिण मे ह अत इसका सम्वन्ध उपयुक्त विश्वोदरी (Vagus Nerve) नाडी से माना जाता ह। साथ ही यह चक्र सुपुम्नागत षट्चक्रो से पृथक हे तथापि इसका सुषुम्ना से पूरा-पूरा सम्वन्ध ह। इसे शंकित कमल की सज्ञा दी गई ह।

छान्दोग्य उपनिपद का भी यही अभिमत ह। स वा एप आत्मा हृदि तस्यत देव निरुक्त हृद्ययमिति तस्माद्हृदयमहरहर्वा एव वित्स्वर्ग लोकमेति।" वहा इन हृदय की नाडियो म पिगल, शुक्ल, नील, पीत एव लोहितवण का अनुरस प्रवाहमान रहता ह, ऐसा माना जाता ह। इसकी सख्या एक शत कही गई हे। इन्हीं मे एक नाडी मूर्धास्थान सहस्रार की ओर जाती ह। इन नाडियो का आदित्य की रश्मिया से (सूर्य की किरणो से) सम्वन्ध ह। इन्ही नाडिया मे पुरुष का प्रवेश प्रगाढ सुषुप्ति अवस्था मे माना गया ह। अत पुरीततिनाडी यही माननी चाहिए जसा कि शकराचाय जी ने "पुरीतदितिहृदय परिवेप्टन मुच्यते" कह कर माना ह। "तद्यत्रतत्सुप्त समस्त सप्रसन्न स्वप्न न विजानाति आसुतदा नाडीपु सृप्ताभवति तन कश्चन पाप्मा स्पृशति तेजसा हि तदा सपन्नो भवति।'

शत चैका च हृदयस्य नाड्यस्तासा मूर्धानमभिनि सृतेका।" यही शकराचाय का ' यदिदमस्मिन्ब्रह्म पुर दहर पुण्डरीक वेश्मदह रोहस्मिनन्नन्तराकाश ह।

यदि उक्त प्रकार से वर्णित इस युग क परम योगी श्री रमण महर्पि तथा शकराचार्य जी आदि स समर्थित ओपनिषद हृदय को ही आचार्य सुश्रुत द्वारा वर्णित [illegible] माने तव भी "अधोमुख पुण्डरीक सदृशता तथा निमीलन उन्मीलन की असगति कही जायेगी। क्योकि किसी आचार्य या उपनिषद ने ऐसा नहीं माना ह। ऐसा प्रतीत होता ह कि आचार्य सुश्रुत वेद, दर्शन, उपनिपद, तन्त्र एव योगियो क इस चक्र जाल मे फसकर निकल नहीं पाय। उपनिषदो ने इस हृदय का वर्णन प्राय शयन के सदभ मे ही किया हे जेसा कि कोपीतकी व्राह्मणोपनिपद् से ज्ञात होता ह।

इन हृदय नाडियो को हिता भी कहा गया हे। हिता नाम हृदयस्थ नाड्यो हृदयात्पुरीततमभि प्रतन्वान्ति तद्यथा सहस्रधा केशोविपाटित स्तावदप्ल्य पिंगलस्याणिम्ना तिष्ठन्ति। शुक्लस्य, कृष्णस्य, पीतस्य, लोहितस्येति तासु तदा भवति।' इसलिये सुश्रुत ने भी इस सदर्भ मे निद्रा का वर्णन किया ह। अच्छा होता यदि आचार्य सुश्रुत इस विषय का स्पष्ट एव विस्तृत वणन करते किन्तु उन्होने इस जटिल प्रश्न का एक श्लोक मात्र मे वर्णन कर पलायनवादी प्रवृत्ति का आश्रयण किया। हो सकता हे कि आचार्य सुश्रुत जैसे महान शल्य-शास्त्री को वेदान्तो मे वर्णित उक्त हृदय की व्याख्या समग्र अशो मे मान्य न हो किन्तु आज इस विषय म जवकि उल्लेख अति सक्षिप्त ह। "इदमित्थ रूप से केसे कुछ कहा जा सकता ह। वेद उपनिषद तन्त्र के रहस्य अति जटिल ह। उनमे सूक्ष्म विज्ञान भरा पडा हे, जिसे भातिक विज्ञान नहीं पा सकता, किन्तु उसका उद्देश्य भूतवाद से ऊपर उठकर आत्मा की ओर जाना था। जव किसी वाद के विवाद की कोई सत्ता नहीं, केवल शक्ति ब्रह्म ही सत् रूप से जहा वर्तमान हे। वेसे विज्ञान के अनुसार वेदिक प्रक्रिया की व्याख्या पूर्णत सभव है। तदनुसार ही चिति शक्ति (Conciousness) का केन्द्र सहस्रार हे, जहा से मनरूपी चन्द्र चेतना ग्रहण करता हे एव प्राण रूप सूर्य सम्पूर्ण शरीर को अनुप्राणित चेतना प्रवाह से युक्त करता हे। ये दोनो चिति शक्ति के नेगेटिव व पोजेटिव स्रोत के समान ह। इन दोनो का प्रारम्भ ओर अवसान वहीं होता हे अत प्रणव की नित्या कला भी वहीं मानी गयी ह। आत्मा की स्थिति सहस्रार मे मानने पर ही आत्मा से आकाश, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी, पृथ्वी से ओषधियॉ, ओषधियो से अन्न, अन्न से पुरुष अत यह शरीर पुरुष अन्न रसमय हे, यह सृष्टि प्रक्रिया जो आयुर्वेद को भी मान्य ह, सगत होती हे, क्योकि मूलाधार (गुदा), पृथ्वीतत्व स्वाधिष्टान (उपस्थ) जलतत्व, मणिपूर (नाभि) अग्नितत्व, अनाहत (हृदय) वायुतत्व, विशुद्ध (कठ) आकाशतत्व आज्ञा (भूमध्य-मनचक्र) तदुपरि सहस्रार (मूर्धास्थान) आत्मा का।

अन्न रसमय पुरुष हे अतएव यह भूतात्मा हे। विज्ञान भी प्रोटोप्लाज्म रूप रस को जीव कहता हे। उसमे कोई आपत्ति नहीं हे वह अन्न से वनता ह। उपनिषदो मे प्राणशक्ति रूप माना जाता ह। वह सूक्ष्म शक्ति स्वरूप ह जल उसका स्थूल वाहक ह। उपनिषदो म भूतात्मा एव [illegible] का पृथक पृथक वर्णन मिलता ह। आचार्य चरक [illegible] श्रुत ने उसे यथावत स्वीकार किया ह ' पञ्चतन्मात्र भूत [illegible]नोच्यतेऽथ पञ्चमाहाभूतानि भूत शब्देनाच्यन्ते। तत्र यत्समुदय तच्छरीर मित्युक्तमथयोर खलुवाव शरीर इत्युक्त [illegible] तात्मा।' शरीर पुरुष कर्मकर्ता तथा आत्मपुरुष क[illegible] कहा ह।

'य कर्ता सोऽय व भूतात्मा करण कारयितान्त पुरुष । अथ यथाऽग्निायस्पिण्डोऽन्या वाऽभिभूत कर्तृभिर्हन्यमान नानात्वमुपेति एव वाव खल्वसो भूतात्माऽन्त पुरुषाभिभूत गुणेर्हन्यमानोनानात्व मुपति। चतुर्जाल चतुर्दश[illegible] चतुरशीतिधा परिणत भूतगणमेतद्वे नानात्वस्य रूप, पुरुष नानात्व की इससे श्रेष्ठ व्याख्या प्राप्त [illegible] हे। यह चेतना वायु रूप ह तथा शरीर म स[illegible] करता ह'' स वायुरिवात्मान कृत्वाऽभ्यन्तर प्राविशत। [illegible] पुरुष ने अपने पाच विभाग किये ' स एकात्मान[illegible] पञ्चधा [illegible]ात्मान विभज्योच्येते य प्राणाऽपान समान उदानो व्यान इति।' चरक सुश्रुत न भूतात्मा के सिद्धान्त का उपनिषदो से ही लिया हे। योगी लोग इसलिए प्राणशक्ति पर ध्यान केन्द्रित करते हे उसे हृदय से व्रह्मरन्ध्रस्थ आत्मा से मिला देते ह तव अमरत्व होता हे शक्ति ही इस जगत म मुख्य वास्तविक तत्व हे। शक्तिमान उससे अभिन्न ही माना गया हे। जडशक्ति को ही, जिसे विज्ञान के अनुसार Cosmicenergy ओर साख्य के अनुसार प्रकृति कहना चाहिए जिसे वेदो मे अव्यक्त असत् कह कर सतरूप समग्र सृष्टि का कारण माना गया ह। (Electrons व Protons आदि) इसी सर्जक शक्ति का अणुपरिणाम ह। Granulation यह शक्ति ईश्वर की सकल्पात्मिका शक्ति परिणाम हे। कहा ह असत् (अव्यक्त से) सद (व्यक्त) अजायत।" ऋग्वेद मे इसी प्रक्रिया को निम्न प्रकार स वर्णित किया ह। "यद्देवा अद सलिले सुसरब्धा अतिष्ठत। अत्रा वो नृत्यतामिव तीव्रो रेणुरणयत्।।' सृष्टि शक्तिया सलिलाकार घनीभूत हो गई, उनमे विक्षोभ हुआ वह एक प्रकार के वेगपूर्ण तीव्र नर्तन के समान था। (जसा कि परमाणु जो स्थूल जगत का कारण ह की रचना म

शेषांश पृष्ठ 51 पर

अर्थेदशाम हामूलीय विवेचन हृद्रोग के सन्दर्भ में

(Concept of Cardiology in Ayurveda)

प्रो० वेणीमाधव अश्विनी कुमार शास्त्री

एम० ए०, भिषगाचार्य, एच० पी० ए० (स्वर्ण पदक)

रत्न सदस्य- राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ

कार्यकारी अध्यक्ष अखिल भारतीय आयुर्वेद विशेषज्ञ सम्मेलन

पूर्व प्राचार्य- शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, ग्वालियर

प्रोफेसर विभागाध्यक्ष- चिकित्सा (मेडिसिन)

सकायाध्यक्ष- आयुर्वद सकाय जीवाजीराव विश्वविद्यालय

सदस्य— केन्द्रीय आयुर्वेद एव सिद्ध अनुसधान परिषद्

केन्द्रीय फार्माकोपिया समिति

केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद्

अ० भा० आयुर्वेद शास्त्र चर्चा परिषद्

निवास सी-६, चेतकपुरी, ग्वालियर - ४७४००६

प्रो० वणी माधव अश्विनी कुमार जी शास्त्री आयुर्वेद के उद्भट विद्वान हे। राष्ट्रपति के निजी चिकित्सक रहे ह। ''धवन्तरि' के लिए आपका अत्यन्त प्रेम हे। 'धन्वन्तरि' के प्रत्येक वृहद् विशेषाक मे आपका विद्वत्तापूर्ण एव आयुर्वेद का विवेचन करने वाला लेख अवश्य ही उपलब्ध होता हे। प्रस्तुत लेख मे हृदय की रचना एव क्रिया शारीर का विवेचन किया हे। आप शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, ग्वालियर के प्राचार्य के पद से सेवानिवृत्त हुए ह। आशा हे पाठको को ज्ञानप्रद होगा।

— वेद्य हरिमोहन शर्मा भिषगाचार्य (विशेष सम्पादक)

हृदय अग की मानव शरीर रचना एव क्रियाओ मे महत्ता का ज्ञान आयुर्वेद प्रणेता महर्षि आत्रेय क काल से ईसा से पूर्वकाल मे विदित था। तत्काल मे शास्त्र सिद्धान्त एव रचना शली के अनुसार हृदय की रचना क्रियात्मक विशेष स्थिति तथा रोग की दशा मे आशुकारिता तथा मर्मोपघात की स्थिति प्रकट करने के लिए प्रथक से अर्थे दशमहामूलीय अध्याय की रचना प्रसिद्ध ग्रथ चरक सहिता मे की हे।

हृदय की अर्थ संज्ञा—

इस प्रकरण मे अर्थ शब्द अति महत्वपूर्ण है। इसकी परिभाषा भी अर्थ के अनेक कर्म प्रतिनिधित्व की द्योतक हे। इसलिए हृदय के पर्याय शब्दो मे अर्थ— महत् शब्द की ग्रहण क्रिया है। हृदय का अर्थ पर्याय हृदय की रचना की विशेषता, क्रिया की विशेषता, पोषण की विशेषता तथा जीवन योनि प्रयत्न की विशेषता का द्योतक है। प्रचलित शारीर ग्रथ का अवलोकन करने पर हृदय मे चार प्रकोष्ठ होते हे। चारो वाम ओर दक्षिण सम्वन्ध से अग्रेजी के एक्स अक्षर के रूप मे एक दूसरे प्रकोष्ठ के कर्म सहायक हे। सभी प्रकोष्ठो मे कपाट है। परस्पर युति एव लय मे कार्य करते ह। सकोच

ओर निमीलन हृत्कर्म आजन्म मरणपर्यन्त होता रहता हे। रस (वर्तमान रक्त सज्ञा) धातु का सवहन ह। प्राणवायु का सचार माध्यम है। सभी अग प्रत्यगो से सीधे तथा प्रकारान्तर से रस सवहन प्रणाली द्वारा सम्बन्धित हे। स्वय का पोषण तत्र विचित्र प्रकार का हे। स्वय का निर्माण मासपेशी मय ह। यह मासपेशी शरीर भी अन्य मासपेशियो की रचना से विशिष्ट ह। रसवह स्रोतस् एव प्राणवह स्रोतस् का मूल हे। साधकपित्त, प्राणवायु, अवलम्बक कफ, व्यानवायु, उदानवायु का सयुक्त क्रिया स्थल हे। इन विशिष्ट कर्मसूक्ष्मताओ को स्वय मे धारण करने के कारण ही हृदय को अर्थ सज्ञा हे।

हृदय की महत् सज्ञा—

शरीर मे सभी अग प्रत्यगो से महत्वपूर्ण कर्म ही तथा जन्म से मृत्युपर्यन्त अजस्रकर्म करने की क्षमता के कारण महान् सज्ञा भी हृदय का युक्ति पयाय ह।

महामूला (हृदयाश्रित धमनी समूह)—

सख्या मे दश धमनिया महत्, हृदय से ससक्त ह। ये दश धमनिया हृदय को महान् फलवान, वृक्ष=शरीर रूप षडश का सारभूत फल ह। शरीर के जीवन कर्म रूपी महानकर्म को सम्पादित करन के कारण भी हृदयाश्रित धमनियो को महाफला सज्ञा से उल्लेख किया गया ह।

हृदय की महत्— अर्थ सज्ञाओ का कारण—

हृदय अपने महत् तथा अथ कर्म व्यापार तथा महामूल महाफल धमनियो के द्वारा रस सवहन रूप सावदहिक व्यापार से शिर=, चार शाखाये तथा मध्य शरीर शरीर क यावन्मात्र स्थूल सूक्ष्म अशावयव, स्मृति व्यापार, इन्द्रिय व्यापार (ज्ञान कर्मात्मक) शब्दस्पर्श रूप रस गध ग्रहण, चेतना सुख दु खानुभव, प्रतीति मनोव्यापार, चितन, विचार ऊहा ध्यान, सकलन आदि सब कुछ जीवन कर्म हृदय के आश्रित ह। हृदय ही जीवनाधार हे। इसीलिए तत्रकार ने इसको अति विशिष्ट सज्ञा प्रदान की ह। शरीर के स्थूल व्यापार के बोधक उक्त रचनाक्रियात्मक काय समुदाय का अनवरत निर्वाह करने के कारण ही हृदय व्यापार का अति विशिष्ट महत्व एव स्थान बोध कराने के लिए आधुनिक अस्पताल मे स्थापित आई० सी० यू० की तरह ह। हृदय वर्णन की अति विशिष्ट शेली अलग कर चरक सहिता सूत्र स्थान अध्याय ३० की रचना की ह।

एक ओर जहा हृत्काय का स्थूल सूक्ष्म ... क्रिया तक परिचय अर्थेदश महामूलीय शब्द स प्रकट किया ह वही शरीर क्रियाओ के साथ हृदय क सबध का भवन क आच्छादन के रूप मे महत्ता प्रदान की गई ह। इसीलिए हृदय को आज Vital Organ कहा जाता ह। ऋषि ... आत्रेय न गृहाच्छादन (छत) मे डाली गइ काष्ठवल्लिया क मध्य मे स्थापित छोटी छोटी काष्ठ पट्टिकाओ क उदाहरण से व्याख्या की ह। क्योकि भवनाधार काष्ठ वल्लिया क मध्य (आगा कर्णिका) छोटी पट्टिकाय भार स्थापित नहीं तो भवनाधार का ककाल मात्र छत नहीं बन सकेगी। काष्ठ क कार्य रूप षडग शरीर इन्द्रिय मन आत्मा सब का सयोग कराने वाला रस सवाहन तत्रराज हृदय ही ह। इसी स सारा भवन सयुक्त रूप मे एक जीवन इकाई (Life Unit) बनकर मानव शरीर की चेतना क्रियाशील बनाय रखता ह

हृदयोपघात के प्रकार—

हृदय जहा शरीर की समस्त रचना क्रियाओ ... समन्वयता हे वहीं रोगविकृति विज्ञान की दृष्टि ... दोषोपघात (वात पित्त कफ) से दूषित होने पर रचना विकार (रावगुण्य हो जाने पर) स्रोतो दुष्टि, अति प्रवृत्ति विमार्ग गमन, सज्ञा तथा ग्रथि रूप विकारो क होने पर मूर्च्छा तथा अभिघात होने पर मृत्यु हो जाती ह।

यह हृदयाश्रित व्याधियो की आशुकारी चिकित्सा करन की ओर सकेत करने का ऐतिहासिक उदाहरण ह।

हृदय के महत्, अर्थ सज्ञाओ का विशेष निरूपण—

हृदय की महत सज्ञा का हेतु प्रकट करत हुए महर्षि आत्रयने हृदय क क्रिया व्यापार का स्पष्टीकरण किया ह। शरीर क चेतनावान बन रहने के हेतु पच ज्ञानन्दिय तथा मानसिक व्यापार की प्रतीति अनिवार्य ह। इसे स्पर्श विज्ञान कहकर इसका मूलाधार हृदय के रस सवहन का माना ह। हृदय के सवहन कर्म से ही रक्त प्रवाह या रस प्रवाह प्रतिक्षण अजस्र धारा के साथ मे होता रहता हे अत रक्त का प्रवाहण करने का आशय हृदय ही हे। हृदय मे ही पर आज का अधिष्ठान हे। यह पर ओज सम्भवत हृदय का पोषण करने वाले विशिष्ट रक्त का भी बोधक हो सकता ह। हृदय मे ही चेतना का सग्रह ह। क्योकि सेन्द्रियमन हृदय के द्वारा

ही अशावयवो से अनुस्यूत बनाये रखा जाता हे। इस विशिष्ट शरीर क्रियात्मक हृदय की महत् ओर अर्थ दोनो सज्ञाये पूर्णत यथार्थ रूप मे तत्र मे निरूपित की गई हे।

हृदयाश्रित दश धमनियो का विशेष निरूपण—

महान कर्म करने वाले महत हृदय से निकलने वाली महामूला (महाधमनी) की शाखाओ क रूप मे दश धमनिया प्रमुख ह। इन्हीं धमनियो को जीवन कर्म करने के कारण ओजोवहा सज्ञा प्रदान की गई हे। य धमनिया सम्पूर्ण देह म विस्तार प्राप्त कर अपनी स्थूल सूक्ष्म शाखाओ तथा कोशिकाओ ओर धमनियो के माध्यम स सम्पूर्ण शरीर मे रस रक्त सचार कराती ह। यहा प्रासगिक रस रक्त वाहिनी धमनियो तथा अपवाद रूप १-२ स्थानो की शिराओ को रक्त के स्थान पर ओजोवहा सज्ञा दी गई हे। इस सज्ञा का कारण रक्त (रस) की मानव देह व्यापार मे शीर्ष महत्ता तथा जीवनाधार शक्ति के प्रकट करने के लिये किया गया हे। पुन इसी क्रम मे च० सू० ३०/७-८ सूत्र म आचार्य अग्नि वेश न रक्त ओज की क्रिया को सुस्पष्ट करते हुए कहा ह कि इसी रक्त के द्वारा प्राणीमात्र के शरीर मे अशावयव तथा सूक्ष्मतम कोषो का पोषण होता हे। यही रक्त रक्तगत अशुद्धताओ को अग प्रत्यगो से प्रथक कर अन्यत्र विसर्जन—शील फुफ्फुस द्वय, वृक्क द्वय, त्वचा, आदि तक पहुचकर बहिर्गत करता हे तथा यही रक्त (रसायनी समूह) आत्र मे पाचित एव शोषित आहार रस का रक्त प्रवाह म ले जाकर सभी अगो को यथा योग्य ग्राह्य पोपण प्रदान करता हे। इसीलिए रक्त के बिना जीवन नहीं रह सकता तथा इसीलिए रक्त को धारि तथा जीवन पर्यन्त ऐसा ही शास्त्र मे व्यवहार किया गया हे।

धमनियो मे संवाहित रक्त का महत्व—

यह रक्त ही शुक्रशोणित सयोगरूप गर्भ का आदिसार रूप ह। इसीलिए गर्भोत्पत्ति क्रम मे "तत्र प्रथमे कलल जायते"। गर्भ स्वरूप प्रत्यक्ष होता ह। गर्भ का प्रथम रूप रस रक्त रूप ही होता ह। गर्भ के विकास के साथ-साथ यही रक्त सर्वप्रथम हृदय मे प्रविष्ट होकर सवहन प्राप्त करता ह। रक्त नाश (गर्भस्राव या पात) से गर्भनाश हो जाता ह। यही गर्भ आर विकसित शरीर का बहुआयामी धारक ह। हृदयाश्रित रक्त ही जीवन ह। शरीर मे रस धातु रूप अथवा क्षीर म स्नेह के समान रक्त प्राणाधिष्टान भी ह। शरीर क्रिया विज्ञान के प्रभावित सभी रक्तकर्म एव हृत्कार्य गत का वह प्रतीकात्मक सार सक्षेप हे।

हृदय चेतना स्थान है—

महर्षि अग्निवेश ने शरीर सख्या व्याकरण मे च० शा० ७/८ मे "हृदय चेतना स्थानमेकम्" कहा ह। चेतना का स्थान हृदय ही हे ओर वह एक हे।

दश प्राणायतन—

मानव शरीर के जीवनाधार अग प्रत्यगो मे से अति महत्वपूर्ण दश अवयवो (रचनाओ) की प्राणायतन सज्ञा प्रदान की गई हे। इनमे मूर्धा, कठ, हृदय, नाभि, वृक्क, बस्ति, ओज, शुक्र, शोणित, मासम्। इनमे से मूधा से बस्ति पर्यन्त ६ मर्म स्थान भी माने गये हे। इनमे अभिघात होने से रुजा, विकलता तथा मृत्यु तक हो जाती ह। यहा यह स्मरणीय हे कि वर्तमान चरक सहिता मे सूत्र स्थान अध्याय २६ दश प्राणायतनीयाध्याय कहा गया ह। इस अध्याय मे दश प्राणायतनो की गणना मे शरीर अ० ७/६ मे उक्त दशप्राणायतनो से किचित् भेद प्रकट किया हे।

शरीर स्थान मे दश प्राणायतन—

(१) मूर्धा (२) कण्ठ (३) हृदय
(४) नाभि (५) गुद (६) बस्ति
(७) ओज (८) शुक्र (६) रक्त
(१०) मास हे।

सूत्र स्थान में वर्णित दश प्राणायतन—

(१) शख (२) मर्मत्रय (३) हृदय
(४) बस्ति (५) शिर (६) कण्ठ
(७) रक्त (८) शुक्र (६) ओज
(१०) गुद हे।

शरीर स्थान के वर्णन म दोनो शख रचनाओ के स्थान पर नाभि एव मास का ग्रहण किया ह। इसका [illegible] ह कि शखक मर्म स्थानवर्णन मे दोनो शख रचनाओ [illegible] स्थान पर नाभि एव मास का ग्रहण किया ह। इसका [illegible] यह ह कि [illegible] स्थान होने से ग्रहण किया गया [illegible] नाभिगर्भ काल म गर्भ पोषण म हृदयवत काय करती [illegible] तथा रस रक्त सचार का प्रमुख अधिष्ठान [illegible] नाभि प्राणायतन [illegible] ह इसी प्रकार मास [illegible] पर क्रम म आन [illegible] हृदय की रचना म जो महत्वपूर्ण

होने से प्राणायतन कही गई है। आयुर्वेदज्ञो ने मूल तत्वो पर ठीक उसी दृष्टि से विचार किया था जैसा कि आज अपेक्षित है। आयुर्वेद के उत्तरकालीन आचार्यो तथा अध्येतावर्ग एव शिक्षक तथा शोधकर्ताओ ने आयुर्वेद तत्र के सूत्रो को समयानुसार विकसित और तुलनात्मक अध्ययन की श्रेणी मे नहीं लिया। अत यह तव सूत्र वनकर एतिहासिक वचन मात्र बन गया है।

प्राणाभिसर चिकित्सक—

महर्षि आत्रेय ने चिकित्सा शास्त्र मे अध्ययन के उपरान्त जात तत्र स्नातको को शास्त्र सिद्धान्त एव प्रयोग प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने के आधार पर दो श्रेणियो मे विभक्त किया है।

प्राणाभिसर— प्राणानाम् के अभिसरा, हन्तारो रोगाणाम

रोगाभिसर— रोगाणाम् के अभिसरा हन्तारो प्राणानाम

इनमे दश प्राणायतन स्थान— शखद्वय शिरहृदय, वस्तिमूत्रप्र कण्ठ रक्त, ओज, गुद, ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय इनका शास्त्रोक्त विज्ञान (रचना क्रिया) चेतना सहित विज्ञान, इनको रोग पीडा उत्पन्न करने वाले कारण, इन दश प्राणायतनो के रोग समूह को जो जानता है वही जिस प्राणाभिसर चिकित्सा स्नातक कहे जाने योग्य है। यहा ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि रक्त हृदय, ओज जो हृदय रोगो का मूल रोग विकृति आधार है। इनका सहेतु रोग विज्ञान और समान्यतया आत्विक चिकित्सा विज्ञान जान लेने पर ही चिकित्सा स्नातक ईसापूर्व (६) के महर्षियो ने मान्य किया था। इस स्थिति मे वर्तमान आयुर्वेद स्नातक चिकित्सा की क्या स्थिति है ? यह तुलना, समीक्षा अन्तरावलोकन आयुर्वेदज्ञ स्वय ही करेगे। ऋषिप्रणीत इन संहिता वचनो की आज के युगानकूल उपयोगिता आयुर्वेद के लुप्त एव परित्याग अशो के प्रति सस्कार और प्रत्यास्मरण द्वारा पुन प्रतिष्ठित की जा सकती है।

हार्दिक धमनियो के क्रिया विज्ञान—

पुनर्वसु आत्रेय ने अपने शिष्य अग्निवेश को हृदय एव हृद्रोगो के विज्ञान के लिए हृदय, उसमे सवाहित जैव पदार्थ रस रक्त तथा हृदय के कार्य मे सहायक धमनियो के बारे मे निर्देशात्मक रचना क्रिया विज्ञान की सूक्ष्मताओ को प्रकट करने वाले अनेक उदाहरण देकर स्पष्ट किया कि हृदय स्वय अकेला नहीं अपितु उसकी सहचारिणी धमनिया भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितना कि [illegible] मे हृदय महत् और अर्थ रूप मे महत्वपूर्ण [illegible] महाफला धमनी फलवती होकर बहुविधा [illegible] सुविभक्त होकर यावन्मात्र शरीर मे दश धमनिया [illegible] से अतिरिक्त दो सौ धमनियो की सख्या गणना मे विकसित हो जाती है। यह सख्या आधुनिक आज की व्याकरण के साथ यत्र तत्र विसवाद मे आने पर भी मूलत [illegible] उपस्थित नहीं करती क्योकि धमनी सिरा सख्या के आधार और साधनो मे आज गुणानुरूप आमूल परिवर्तन हो चुका है। यह तो ऋषि निर्देश था आयुर्वेदाध्याय [illegible] स्नातको का मार्गदर्शन देने का इस पर कभी किसी शरीर विद् या आयुर्वेद विद ने प्रस्तार का विचार भी नहीं किया है। जहा मात्र पुरातात्विक सामग्री बनाकर ही रह गया है।

हृदय से सम्बन्धित प्रणालियो की सज्ञाये—

धमनी हृदय से बाहर जाने वाली स्पन्दन युक्त प्रणालियो को आयुर्वेद मे धमनी कहा गया है। यह [illegible] सज्ञा आज भी प्रचलित है।

सिरा— हृदय मे आकर समाप्त होने वाली प्रणालियो को नीचे ऊपर तथा विभिन्न मार्गो से रक्त सरण [illegible] तक पहुचाने तथा कपाटो की शक्ति से निरन्तर सरण करने के कारण शिरा सज्ञा दी गई है। यह सिरा सज्ञा भी आज प्रचलित है।

स्रोतासि— धमनी और सिरा के अतिरिक्त जो सूक्ष्म रस वाहिनिया जिनमे से सच्छिद्र भित्ति के कारण [illegible] सवहन नहीं होता अपितु रक्त रस या रक्त [illegible] परिस्रुत होकर शरीर धातु कोषाओ का पोषण करता है उन्हे स्रवणकर्म के कारण स्रोतस सज्ञा दी गई है। यह सज्ञा आज मात्र आयुर्वेद परिभाषा मे ही प्रचलित है।

हृदय रोग से प्रतिषेध के उपाय तथा चिकित्सा सूत्र—

हृदय एव इसकी सहयोगी धमनियो मे कोई व्यापद या विकृति न हो इसके लिए हृदयस्थ ओज (रसरक्त) तथा धमनियो सिराओ तथा स्रोतस् की रक्षा करनी चाहिए। इस रक्षा निर्देश मे स्पष्टत धमनीसकोच (Arteriosclerosis) सिराभिस्तृति (Vericosis) स्रोतोरोध (Coagulation) आदि स्थितियो से बचाव का सकेत है। इस विषय के

विस्तारपूर्वक निर्देश चरक सूत्र अध्याय २३ सतर्पणीय अध्याय तथा चरकसूत्र २४ विधि शोणितीय अध्याय मे किया गया है। यदि इस समग्र विषय का कदाचित् पूर्वापर सदर्भपूर्वक प्रति सस्कार किया गया होता तो आज आयुर्वेद का अपना एक विकसित रूप Cardiology होता। अब भी समय सापेक्ष यह अनुसधान का विषय है।

हृदय की रक्षा के लिए मानसिक दु ख हेतुओ से उसका बचाव ही सर्वश्रेष्ठ प्रतिबधन आयुर्वेदज्ञ मानते है। आज भी Stress or Strain ये दोनो ही कारण हृदय रोगो के व्यजक कारणो के रूप मे प्रतिपल देखने को मिलते है।

चिकित्सा सूत्र—

हृदयावरोधो मे रक्तवर्धक, रसवर्धक प्रीणन सवहन सहायक ओजोवर्द्धक स्रोतस् सप्रसादक, द्रव्य गुण, कर्म का सेवन करना हितावह है।

हृद्य वे द्रव्य है जो हृत्पेशी के कार्य मे नियमन करते हो प्राण प्रसादन, व्यान् प्रसादन, उदान प्रसादन, अवलबक प्रसादन, साधकपित्त प्रसादन तथा लघुवशद्य एव सूक्ष्म गुणयुक्त आकाश, वायु महाभूत सगठन प्रधान मधुररस, अम्लरस, तिक्तरस, प्रधान आप्य एव पार्थिव मुक्ता प्रवाल मृगनाभि, कश्मीर, पुष्कर, हिगु, कर्पूर, एला, लवग फल स्वरसादि है। स्रोतसप्रसादन न करने के लिए सचित मेदोवर्गीय (Cholestrol) का विम्लापन करने वाले त्रिफला रस गुग्गुल रसोन आदि द्रव श्रेष्ठ होते है।

इनके अतिरिक्त मानसिक हृदय प्रभाव करने वाले शोक, चिन्तादि कारणो को विपरीत प्रभाव करने वाले प्रशम शाति तथा ज्ञान तत्वज्ञान के सतत अभ्यास से दूर करना चाहिए। इसके लिए भगवान आत्रेय ने हृदय रोगो को ... रोकथाम के लिए कुछ शरीर और मन पर प्रभाव करने वाले उपाय अभ्यास या व्यवहार बताये है। उनका ... करने पर हृद्रोग कदापि नहीं हो सकते। हृदरोगियो को इन उपायो का अभ्यास कराया जाय तो आरोग्य प्राप्ति सभव है। यह उपाय और उनका प्रयोग सूत्र निम्न है –

उपाय	प्रयोग
(१) प्राणवर्द्धन	(१) अहिंसा प्राणिनाम
(२) बलवर्द्धन	(२) वीर्यवृद्धि
(३) वृहण	(३) विद्याभ्यास
(४) नन्दन	(४) इन्द्रियजय
(५) हर्षण	(५) तत्त्वावबोध
(६) अमन	(६) ब्रह्मचर्य

इस सार सक्षेप अर्थेदशमहामूलीय परिचय मे आयुर्वेदीय अर्थ कार्डियोलाजी के मोती एव सूत्रक्रमपूर्वक विचारको, चितको एव शोधार्थियो के लिए यदि सहायक होगे तो लेखक का श्रम सार्थक होगा।

■

हृदय चेतना स्थानम्   शेषांश पृष्ठ 46 का

न्यूक्लीयस केन्द्रक स्थित प्रोटोन्स के चारो ओर ६ स्तरो पर विद्युदणु (Electronus) घूमते हे।) जिससे रणुभुत परिमाणुओ का निर्माण हुआ।

वेदो के अनुसार भू , स्व , मह , जन , तप , सत्य को सृष्टि प्रक्रिया के ७ स्तर (ब्रह्माण्ड प्रक्रिया मे) मानने चाहिए। पिण्ड प्रक्रिया मे जेसा कि मुख्य विषय चल रहा था मूलाधार से सहस्रार पयन्त भू , भुव के क्रम से मानते हुए सहस्रार को सत्यलोक- मुख्य चिति शक्ति का स्थान मानना चाहिए। इनकी नाडियो का प्रसार एक प्रकार से शरीर है जिसमे सारे मे ही प्राणशक्ति प्रावाहित होती रहती है। आधुनिक विज्ञान अभी तक वेद-वेदान्त और योग दर्शन की सूक्ष्मता एव ऊँचाई को नहीं छू पाया है क्योकि उनका अवसान भेतिक शक्ति एव मानसिक शक्ति पर्यन्त ही है। Einstein के अनुसार भूत (Matter) शक्ति मे परिणत हो जाता है या शक्ति भूत (Matter) मे। किन्तु सब शक्तिया का मूल ब्रह्म आदि शक्ति हे। वेदान्त सृष्टि प्रक्रिया मे विज्ञान एव उसके तत्वो आदि का अतर्भाव हो जाता हे। योग दर्शनकार ने समस्त भूत एव भूतशक्ति (Kinetic and Static - गतिमान एव स्थिर) परिपूर्ण विश्व का रहस्य एक सूत्र मे ही भरकर छोड दिया, जिसमे विज्ञान निरन्तर उलझा है और उलझा रहेगा।

''प्रकाश क्रियास्थिति शील भूतन्द्रियात्मक भोगा पवर्गाथ दृष्यम्।

हृदय के कार्य और कार्य प्रणाली

प्रो० वेणीमाधव अश्विनी कुमार शास्त्री

हृदय—

आयुर्वेदीय सख्या शारीर के अनुसार हृदय एक ह तथा चेतनाधिष्ठान ह। चेतना का हृदय वोध अहर्निश स्पदन से तो होता ही है, सूक्ष्म अवलोकन करने पर यावन्मात्र जीवन परिचायक के क्रियाओ मे हृदय का समवाय सबध है।

सूक्ष्म शरीर—

महर्षि सुश्रुत ने हृदय की सूक्ष्म रचना मे कहा है कि "शोणित कफ प्रसादज हृदयम्"

कफ प्रसाद भाग तथा शोणित प्रसाद भाग से हृदय का निमाण होता है। हृदय निर्माण मे भाग लेने वाली मासपेशी विशिष्ट रचना प्रकार की होने के कारण सुश्रुतोक्त मासधरा कला ही हो सकती हे। क्योकि सुश्रुत मासधरा कला क साथ सिराधमनी स्रोतस् का सबध मानते ह। यद्यपि मासधरा कला के प्रसग मे हृदय का स्पष्ट उल्लेख नहीं हे तथा शिराधमनी साहचर्य तथा प्रत्यक्ष सिद्ध होने से मासधराकला तथा शोणित प्रसाद भाग (ओज) तथा कफ प्रसाद भाग (ओज) ही हृदय की सूक्ष्म रचना (भ्रूणिकी) के तत्व है।

सामान्य क्रिया—

दिन रात सोते जागते, जन्म से मृत्यु पर्यन्त हृदय मे उन्मीलन (विकास) तथा सकोच (निमीलन) होता रहता है। हृदय क इस उन्मीलन के लिए प्राणवायु, उदानवायु ओर व्यानवायु कारण हे। इन्हीं स्वाधिष्ठानीय वातत्रयी के कारण हृदय का नियमित स्पदन व्यापार एक सुनिक्रम म होता ह। हृदय व्यापार का नियमन करने म जाग वाग के स्थानीय प्राणोदान व्यान हेतुभूत है वहीं नियमन म गुणवत्ता के लिए अवलम्बक कफ स्थानिक रूप स उत्तरदायी ह। इसी कफ के कारण अधिक गति का नियमन होता ह। आकस्मिक अवस्थाओ क्रोध, आवेश आदि क समय हृदय की क्रियाओ की परिस्थिति के अनुरूप अधिक ओर वलवान् करने का कार्य साधक पित्त नियन्त्रित करता है।

हृदय के विशेष कार्य—

हृदय यू तो शरीर के यावन्मात्र सूक्ष्म, स्थूल अशावयवो का पोषण अहर्निश विना विराम के करता ह किन्तु क्रिया विज्ञान की दृष्टि से रसवह स्रोतस तथा प्राणवह स्रोतस् दोनो का मूल स्थान है। इससे जहा एक ओर फुफ्फुस के सहकार से हृदय अशुद्ध रक्त को शुद्ध करने मे महत्त्वपूर्ण भाग लेता हे वहीं प्राणवायु का रक्त के साथ सर्वत्र वितरण भी हृदय के द्वारा ही सपादित होता ह।

शरीर के विभिन्न स्रोतस् जव कोई विशिष्ट कार्य सपादित करते हे तव हृदय धमनियो के द्वारा रक्तप्रवाह अन्य स्थानो की अपेक्षा उसी स्थान या अवयव की ओर वढा देता है। कर्म सम्पन्नता केवल पुन यथावत् कम करने लगता है। शरीर की ऊर्जा वल, काति श्रम सहिष्णुता का मूल आधार हृदय ही हे। पराक्रम तथा युद्ध कोशल तथा क्रीडा मे उत्कृष्टता का कारण भी हृदय क श्रेष्ट काय ही है। शरीर धारण के लिए प्रयुक्त आहार के पाचन क वाद

उत्पन्न रस को शरीर की सप्त धातुओ एव स्व स्व अशो के पोषणार्थ हृदय ही विविध धमनी मार्ग से प्रेषित करता ह तथा पोषण करने के बाद शरीर मे हृदय से दूरस्थ प्रदेशो मे एकत्रित अशुद्ध रक्त को सिराओ से वापिस प्राप्त करके शुद्ध होने के लिए फुफ्फुसो मे भज देता ह। हृदय के चारो कोष्ठ इस प्रकार एक अवयव होने पर भी अति विचित्र प्राकृतिक नियम से बहुआयामी कार्य सपादन करते ह। शीत प्रकोप से शरीर ग्रस्त हो तो रक्त प्रवाह बढ़ाकर परिसरीय शरीर रचनाओ की रक्षा करना तथा उन्हे उष्णता प्रदान करना तथा उष्ण प्रकोप मे रक्त मे स्थित द्रव भाग को जलाभाव की पूर्ति हेतु प्रदान करता ह। यद्यपि इन कार्यो म अन्य कई तन्त्र भाग लेते हे किन्तु हृदय ही मुख्य नियत्रक बनकर कार्य सम्पादन करता ह।

धमनी कार्य नियमन—

हृदय से निकलने वाली महाधमनी तथा उसकी शाखा प्रशाखाओ म निश्चित प्राकृतिक दवाव बनाकर रक्त सप्रेषण हृदय के नियत्रण मे ही होता ह। हृदय मे आकर सामान्य होने वाली महती शिराओ के कार्य को भी नियमित करता ह। हृत्कार्य मन्दता एव तीव्रता की दशा मे धमनियो, सिराओ तथा केशिकाओ तथा जालको मे भी रचना एव क्रिया मे परिवर्तन होने लगते ह। शोथ जेसी व्याधि तथा ब्लडप्रेशर सबधी अनेक विकृतिया हृदय धमनी नियमन मे विकृति के कारण होती हे।

हृदय का स्वपोषण कर्म—

हृदय का स्वपोषण तत्र शरीर के अन्य अवयवो से पूर्णत भिन्न एव स्वतत्र कर्म ह। इस पोषण के लिए हृदय के साथ सबधित तत्र को (कोरोनरी सर्कुलेशन) कहा जाता ह।

हृदय की विशिष्ट रचना स्थिति के अनुरूप ही कोरोनरी तत्र कार्य करता हे। इसमे विकृति होने पर मानव शरीर मे त्वरित क्रिया विघात होने लगता हे। हृदयशूल (एञ्जाइना) तथा श्वास फूलना तथा छाती मे दर्द होना, चलने मे थकान इसके साकेतिक लक्षण रूप मे प्रकट होते हे।

हृदय की स्वतत्र कार्यप्रणाली—

मानव शरीर धारक वात-पित्त कफ तीना ही हृदय की कार्य प्रणाली के प्रमुख अश ह। इनमे वात के प्राण, उदान, व्यान आदि हृदय के काय मे नियामक तत्त्व बनते हे। रचना का नियमन अवलम्बकफ करना ह तथा आकस्मिक काय कलाप को साधक पित्त नियत्रित करता हे। किन्तु अपानवायु एव पाचक पित्त भी समीपस्थ अन्नावाह और वह पुरीष स्रोतस क विकार की दशा मे हृदय मे पीडा एव कर्म बाधा उत्पन्न करत ह। इसीलिए आयुर्वेदज्ञो ने प्राणवह स्रोतस् दो मूल स्थानो मे एक महास्रोतस भी कहा हे। महास्रोतस मे थोडा सा भी अनियमित कार्य, वायु सचय पुरीष सचय अजीर्ण, अम्लता होने पर हृत्कार्य पर तुरन्त प्रभाव पडता ह।

चिकित्सा मे हृदय की कार्य प्रणाली का विचार—

उक्त सक्षिप्त किन्तु मौलिक हृदय सम्बन्धी दोषधातु मल क्रिया विज्ञान के अनुसार हृदय की विविध व्याधियो म हृदय की मासपेशी, सूक्ष्म रचना मे रक्त प्रसाद भाग (ओज) तथा कफ प्रसाद भाग (ओज) व्यानवायु, प्राणवायु उदानवायु अवलम्बक कफ, साधक पित्त का ही ध्यान रखकर हृदय रोगो का विनिश्चय एव चिकित्सा व्यवस्था तथा पथ्य का निर्णय करना चाहिए।
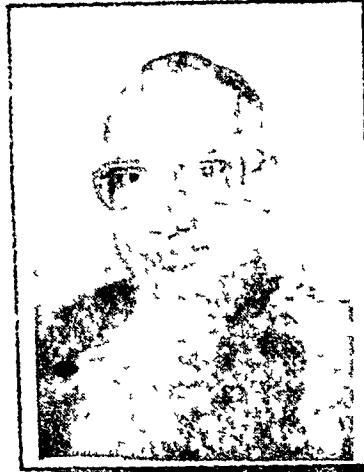
हृदय रोगाधिकार

कविराज डा० गिरिधारीलाल मिश्र
एम०डी० पी एच० डी० आयुर्वेद चक्रवर्ती [illegible]
प्रधान चिकित्सक [illegible] जयपुर [illegible]

कविराज डा० गिरिधारीलाल मिश्र से धन्वन्तरि के पाठक भलीभांति परिचित है। धन्वन्तरि [illegible] विशेषाको का आप लेखन सम्पादन कर चुके है जो कि आपकी [illegible] के द्योतक है। आप को श्री [illegible] आयुर्वेद चक्रवर्ती की उपाधि से विभूषित किया गया है। आपके [illegible] आप धन्वन्तरि" के परम हितैषी नवयुवक विद्वान है जो भारत के सुदूर [illegible] का ज्ञान प्रकाश फैला रहे है। आयुर्वेद जगत को आपसे अनेको अपेक्षाये है। आशा है धन्वन्तरि [illegible] सहयोग सदैव उपलब्ध रहेगा।
—[illegible]

दीवाल घडी के पण्डलुम के रुकने से घडी बन्द हो जाती है। उसी तरह हृदय के रुक जाने पर मानव देह का सञ्चालन भी बन्द हो जाता है। अत उसी को चेतना का स्थान माना गया है। हृदय चेतना स्थानम इसकी स्पदनशीलता ही जीवन का आधार है। आयुर्वेद सिद्धान्तानुसार त्रिदोष वात पित्त कफ का विशिष्ट स्थान है हृदय जो प्राणवायु साधक पित्त एव अवलम्बक कफ का भी अधिष्ठान है। हृदय ओज का स्थान चेतनाधिष्ठान प्राणवह एव रसवह स्रोतस का मूल, मुकुल कमल पुष्पवत हृदय वक्षस्थल मे दोनो स्तनो के मध्य मे उपस्थित होकर जीवन सम्बन्धी सभी क्रियाओ को प्रतिपादित करता एव भौतिक शरीर को जीवन प्रदान करता है। अत शरीर का महत्वपूर्ण अग है।

हृदय शब्द की निरुक्ति—

'हृञ हरणे' या 'दाने' और 'इण गतौ' इन तीनो धातुओ से हृदय शब्द बना है। हृदय जिस धमनी द्वारा रक्त संवहन की क्रिया करता है जिसकी तीन क्रियाये है—

[illegible] तु से आहरण क्रिया उत्तरा व अधरा महाशिरा से रक्त लेना।

(२) द-दा दाने धातु से दान की क्रिया [illegible] देना।

(३) [illegible] रक्त के लेने देने पर नियन्त्रण रखना। [illegible] गतौ के अनुसार निरन्तर सकोच और विकास [illegible] गतिशील रहकर देह को धारण करना। अत जो [illegible] शरीर से रक्त ले सर्वांग शरीर को रक्त दे तथा उस क्रिया पर नियन्त्रण रखे वह 'हृदय' है। इस [illegible] शब्द व्युत्पत्ति के आधार पर हम कह सकते है कि आयुर्वेद [illegible] पूत प्राणाचार्यों को हृदय की रचना और क्रिया का भली भाति ज्ञान था जिसे आधुनिक वैज्ञानिक कतिपय गवेषणाओ के बाद जानने मे समर्थ हुए है।

अष्टाग हृदय कार आचार्य वाग्भट्ट ने हृदय को मन का अधिष्ठान माना है। सगुण आत्मा और मन हृदय मे निवास करते है। भगवदगीता मे हृदय को आत्मा का स्थान माना है। हृदय स्थित आत्मा ज्ञानग्राही [illegible] ज्ञानेन्द्रियो के सहयोग से ज्ञान प्राप्त करता है। अत [illegible]

ेतना और ओज के साथ प्राण का भी स्थान माना गया । रस- रक्त वाहिनियों को हृदय से गति मिलती है अत रसवह तथा प्राणवह स्रोतों का मूल हृदय है। मस्तिष्क के ज्ञान तन्तु और चेतना के स्रोतों का हृदय ही रक्त निःशेष कर जीवित रखता है। अतः जीवन का मूल आधार हृदय ही है जो हमारे जीवन का ऐसा प्रहरी है कि यावज्जीवन धड़कता रहता है और सजग इतना कि शरीर को जरा भी खतरा हुआ कि उसका धड़कना बढ़ जाता है। निष्पक्ष और उदार इतना कि पहले सारे शरीर को खिलायगा तब स्वयं खायेगा। सम्पूर्ण शरीर को सिस्टोल के समय खाना मिलता है और हृदय को डायस्टोल के समय महाधमनी से बचा खुचा मिलता है अत उसका चलते रहना ही जीवन और रुक जाना ही मृत्यु है।

हृदय रोग हेतुकी (Etiology)-

आचार्य चरक के सारगर्भित शब्दों मे—

व्यायामतीक्ष्णातिविरेकवस्ति चिन्ताभयत्रासमदाति चारा ।
छद्यामसन्धानपकर्षणानि हृदरोग कृर्तृपि तथाभिघात ।।
(च० चि० अ० १५)

अत हृदय रोग के कारण शारीरिक भी तथा मानसिक भी है—

(१) अतिव्यायाम— अपनी शरीर क्षमता से अधिक व्यायाम करना। अपनी सामर्थ्य से अधिक शारीरिक श्रम, अधिक बोझा ढोना या अपनी ताकत से अधिक काम करके व दौड़कर आते ही ठंडा पानी व गर्म चाय के पीने से, सामर्थ्य से अधिक मानसिक व वाद्धिक कार्य करने से वात के अत्यधिक कुपित हो जाने से हृदय रोग से आक्रान्त हो जाता है।

(२) उष्ण पदार्थो का अति सेवन— अत्यन्त उष्ण भारी कषाय तिक्त कटु, रूक्ष, तीक्ष्ण पदार्थो के अति सेवन से अति लवण, अति सूक्ष्म, शुष्क भोजन से।

(3) अध्यशन— भोजन पर भोजन, पूर्व भोजन के हजम हुए बिना ही भोजन करने से।

(४) आघात— छाती पर किसी तरह की चोट लगने पर वृक्ष पर जल्दी मे चढते उतरते समय किसी तरह की टक्कर आदि से छाती पर (हृदय पर) आघात से।

(५) अति मैथुन— अति स्त्री प्रसंग द्वारा मैथुन या प्रकृति विरुद्ध मैथुन से शिथिलता आकर हृदय की धड़कन मे विषमता आकर हृदय रोग की उत्पत्ति हो जाती है।

(६) वाजीकरण स्तम्भक— औषधियों का सेवन करके दीर्घकाल तक (घण्टे दो घण्टे) मैथुन मे प्रवृत्त रहने से या किसी विशेष क्रिया द्वारा ऐसा करने से व सम्भोग मे सामर्थ्य से अधिक जोर आजमाइश करने से उत्तेजक आसनो मे सम्भोग करने से अति हर्ष मिलने पर अत्यन्त वेग या गति से परिरमण करने से हृदय फट जाता है या हृदयावरोध हो जाता है जो मृत्यु का कारण भी बन सकता है।

(७) अचानक भयभीत होने से— टेक्स की चोरी, चोरी के माल पर छापा पड जाने से, मुकद्दमे मे हार जाने पर, पुलिस की गिरफ्तारी से इज्जत चली जाने के भय से।

(८) अति चिन्ता— रोजी रोटी की चिन्ता गृह कलह की चिन्ता या मानसिक विषाद ग्रस्तता से।

(६) मल मूत्रादि वेग को रोकने से— मल मूत्र की प्रवृति होने पर इनका परित्याग करना चाहिए। क्रिकेट आदि लम्बे खेलो मे दर्शकों को मल मूत्र प्रवृति को बहुत देर तक रोके रखना।

(१०) तीक्ष्ण विरेचन— जयपाल आदि के तीक्ष्ण विरेचक द्रव्यो के प्रयोग से।

(११) तीक्ष्ण वस्ति कर्म— योग की शंख प्रक्षालन जैसी क्रियाओ व तीक्ष्ण वस्तिकर्म से।

(१२) वमन की अधिकता से— अम्लपित्त आदि मे दैनिक कुंजलक्रिया व तीव्र वामक औषधियो से।

(१३) मद्यादि के अत्यन्त सेवन से— शराब धूम्रपान व मादक द्रव्यो के सेवन से।

(१४) विशेष ·उन्मतत्ता— अधिक · क्रोध से उच्छृखलता मे मनमानी, उद्दण्डता से।

(१५) अभिचार कर्म से— ज़ादू टोना, टोटका आदि से।

(१६) मेदोवृद्धि— अधिक स्निग्ध पदार्थ, घी आदि व आण्डो के अति सेवन से।

(१७) प्राणायाम— मे जबरदस्ती कुम्भक करना भी हृदयगति अवरोध का कारण बन जाता है।

(१८) मानव दोष— काम, क्रोध, लोभ मोह, मद शोक का हृदय पर बुरा असर पडता है।

(१९) धातुक्षय— रक्त क्षय, धातुक्षय भी हृदय रोग के कारण बन जाते है।

(२०) विशेष उपवास आदि करने से— एकाएक अन्न जल का त्याग व लम्बे समय अनशन से।

(२१) धर्मानुकूल आचरण न करने से—

धर्मानुकूल आचरण न करने से भी हृदय और मन पर प्रभाव पडता है। पश्चिमी सभ्यता मे आसक्ति हो जाने से हमारे देश मे भी हृदयरोग गम्भीर समस्या के रूप मे उभर रहा है। अत भोजन का अतियोग, मिथ्या आहार विहार कुपथ्य अतिश्रम, चिन्ता वेगधारण अधिक विलासिता का हृदयरोगोत्पत्ति मे प्रमुख स्थान है।

हृद्रोगो की सम्प्राप्ति—

इयमित्वा रस दोषा विगुणा हृदयगता।
हृदिबाधा प्रकुर्वन्ति हृद्रोग त प्रचक्षते।।

हृदय रोगो के जो कारण ऊपर मे बताये गये है उससे वातादि दोष विकृति होकर रस धातु को दूषित करके हृदय मे [illegible] करने लगते हे और हृदय की क्रियाओ को [illegible] पहुचाते है। इस अवस्था को हृदयरोग कहते है।

प्राचीन आचार्यो ने हृदय को प्राणवाही और रसवाही स्रोतो का मूल माना है। प्राणवाही स्रोतो से प्राण की प्राप्ति और आक्सीजन की सप्लाइ समस्त शरीर मे होती है तथा रसवाही स्रोतो का मूल होने से रस का सवहन शरीर तक प्रत्येक भाग मे होता है। इस प्रकार हृदय समस्त शरीर का पोषक रस और आक्सीजन (प्राणवायु) दोनो की सप्लाई [illegible] का प्रमुख आधार है एतदर्थ हृदय के विकार युक्त [illegible] शरीर का पोषण और प्राणवायु दोनो गडबडा जाती [illegible] दृष्टिकोण से गुरु स्निग्ध कफज आहार हृदय [illegible] मे प्रमुख भूमिका निभाते है और आधुनिक [illegible] कोलेस्ट्राल भी माने है।

कोलेस्ट्रोल (Cholestrol)-

यह चर्बी (वसामय) पदार्थ हे जो रक्त मे पाया जाता है, रक्त मे इसकी प्राकृत मात्रा १४० से २०० मि० ग्रा० प्रतिशत मिली लीटर मे होती है। पर इसकी मात्रा बढ जाने से रक्त मे थक्का बन जाता है रक्त गाढा हो जाता है फलत हृदयगति मे अवरोध पैदा होकर हृदय रोग हो जाता है। कोलस्ट्रोल वनस्पति तेलो, मक्खन मलाई घी भैस का दूध, आण्डे, मासज चर्बी मछली वनस्पति व जमा तेल घी (डालडा) आदि मे यह सर्वाधिक पाया जाता है। अत इन सबके प्रयोग करने से शरीर मे इसकी मात्रा बढकर हृदयरोग हो जाता है।

हृदय रोग के लक्षण—

ववर्ण्य मूर्च्छा ज्वर कास हिक्काश्वासस्यवरस्य तृषा प्रमोहा।

छर्दि कफोत्क्लेशरुजोऽरुचिश्च हृदरोगजास्तुविधि धारस्तथान्ये।

ववर्ण्य (Discolouration)-

हृदय के कपाटो मे विविध विकृति होने से शरीर के वर्ण मे पाण्डुता और रक्ताल्पता पाई जाती है [illegible] का कारण हीमोग्लोबिन की कमी होती है [illegible] प्रतीत विशेषत ओष्ठ, नासाग्र तथा नखो मे देखी जाती है मूर्च्छा ज्वर, कास, हिक्का तथा श्वासावरोध के लक्षण अग्निविषमता आमाशय जन्य लक्षणो मे वमन उत्क्लेश मिलते है।

अत शरीर की विवर्णता, मूर्च्छा, हृकम्प कास और हिक्का, श्वास, आस्य वेरस्य (उबकाइ बार बार थूकना) प्यास, मोह, वमन, कफ का प्रकोप हृदय प्रदेश मे शूल अजीर्ण इत्यादि लक्षण हृदय रोग मे प्राय देखने को मिलते है। वातज हृदय मे खिचाव और चुभन तथा हृदय फट रहा हो या कोइ हृदय को चीर रहा हो एसी वदना होती है। त्रिदोषज हृदय मे वेदना, शरीर मे सूजन कृमिज हृदय रोगो मे तीव्र वेदना और खुजली होती है। शरीर मे सूजन कृमिज हृदय रोग के लक्षण है। इस प्रकार वात पित्त कफ आदि भेद से हृदय रोग मे दोष प्रधान विशिष्ट लक्षण पाये जाते है।

हृदय रोग परीक्षा—

हृदय रोगो पर आधुनिक चिकित्सा विज्ञान का निदान

शास्त्र तथा आयुर्वेदीय ओषधियो का चिकित्सा विज्ञा णि काचन योग कहा जा सकता है। अत आधुनिक यन्त्रो द्वारा सम्भव निदान कराकर आयुर्वेदीय चिकित्सा करना उत्तम है। एक्स-रे, ई० सी० जी० आदि का सहयोग निदानार्थ अवश्यमेव लेना चाहिए। आधुनिक युग मे जो वैज्ञानिक आविष्कार हुये है निःसन्देह किसी की बपौती नहीं है, बल्कि निरन्तर साधनारत वैज्ञानिकों की ही देन है जिसकी भरपूर सहायता एलापथी ले रही है। वस्तुत इन यन्त्रो के आविष्कारक डाक्टर नहीं थे तथा इन यन्त्रों के प्रयोक्ता भी डाक्टर नहीं है। उदाहरणार्थ डाक्टर रोगी के मल, मूत्र रक्त आदि परीक्षणार्थ रोगी को पथालाजिस्ट के पास तथा एक्स-रे कार्डियोलाजी आदि के लिए रेडियोलाजिस्ट के विशेषज्ञ के पास भेजते है और उनकी रिपोर्ट के आधार पर ही निश्चित निदान करते, चिकित्सा व्यवस्था करते है। अत आयुर्वेदज्ञो को भी इन यन्त्रो के परीक्षणो का ज्ञान प्राप्त करके निदान मे सहायता लेनी चाहिए।

किरण चित्र (X-Ray)—

हृदय विकार की सम्भावना होने पर उर का एक्स-रे अवश्य लेना चाहिए। इसके द्वारा हृदय के आकार आकृति स्थिति तथा मुख्य फुफ्फुसीय सिराओं धमनियो का आकार निश्चित हो जाता है। इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम हृदय रोग ई० सी० जी० की उपादेयता इतनी बढ गई है कि हृदय रोग निदान मे इसे प्रत्यक्ष दर्शन नामक परीक्षा का ही एक अग मान लिया गया है। हृदय के किसी भी भाग मे थोडी सी भी विकृति होती है तो यह यन्त्र हृदय की धडकन का ऐसा ऐसा चित्र ग्राफ पेपर पर अकित कर देता है जिससे हृदय रोग के निदान मे बेजोड सहायता मिलती है। चिकित्सा का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। बिना ई० सी० जी० के हृदय रोगो की जानकारी अपूर्ण ही रह जाती है।

रक्त दाब मापक (Sphygmomonometer)—

यत्र, देशकाल, वय अनुसार प्राकृत रक्तदाब मे भिन्नता पायी जाती है रक्तवाहिनियो का रक्त का भार या जोर व दबाव पडता है उसे रक्तभार, रक्तचाप व रक्तदाब कहते है। हृदयरोग मे यह अनियमित रहता है अत उस यन्त्र की पग पग पर आवश्यकता पडती है तथा रक्तभार को जानने मे सहायता मिलती है।

रक्त परीक्षा—

रक्त परीक्षा मे कोलेस्ट्रोल का प्रतिशत जानना हृदय रोगियो के लिए नितान्त आवश्यक हे। कारण इसकी वृद्धि ही हृदयावरोध का मूल कारण होती हे।

अत आयुर्वेदीय चरकीय दशविध परीक्षा प्रकृति, विकृति सार, सहनन, चिकित्सा विज्ञान, प्रमाण, सत्व, आहार, शक्ति, व्यायाम, वय, दशविधि परीक्षा, अनुमान, प्रश्न, नाडी गति, आदि विधियो द्वारा हृदय रोग का ज्ञान करके आधुनिक परीक्षण का भी सहयोग लेकर पहले निदान सुनिश्चित कर ले फिर चिकित्सक अपने चिकित्सा चातुर्य से चिकित्सा मे प्रवृत्त हो।

हृदयावरोध के भेद—

वातज, पित्तज कफज, सन्निपातज, कृमिज भेद से आयुर्वेद मे हृदय रोग पाच प्रकार का माना गया है। आयुर्वेद की आधारशिला त्रिदोष सिद्धान्त पर आधारित होने के कारण व्याधिया अपरिसख्य है पर दोष परिसख्य है तथा दोष ही मूल कारण होने से दोषानुसार ही रोग के भेद प्रतिपादित हे।

आधुनिक विज्ञानानुसार—

हृदय रोगो के कारण हृदय की रचना और क्रिया पर आधारित होने के कारण हृत्पेशी की निर्बलता व कपाटो की विकृति हृदयावरण की विकृति व हृदय एव रक्त वाहिनियो मे अवरोध धमनी काठिन्य जन्य विकृति इस प्रकार विभिन्न रोग, मे होने वाली विकृति के अनुसार हृदय रोगो की सख्या अगणित है और निरन्तर बढती जा रही है। यथा,

हृदयावरण मे सूजन आ जाए तो उसे पेरीकार्डाईटिस।

हृदय के अभ्यान्तरिक कपाट मे शोथ हो तो एण्डोकार्डाइटिस।

हृदय मे ही सूजन आ जाय तो मायोकार्डाइटिस (Myocarditis) कहते है। जबकि आयुर्वेदीय मत से इस वातज हृदय शोथ कह सकते है। इस प्रकार वातज हृदय रोग के अन्तर्गत ही हृदयशूल हृदय धमनी अवरोध को कोरोनरी थ्रोम्बोसिस तथा शोथयुक्त हृदयविपात कान्जेस्टिव हार्ट फेल्योर का समावेश हो जाता है। इसी प्रकार हृत्पेशी मे रक्त की कमी को इस्कीमिया (Ischemia) और

इस्कीमिया होकर हृत्पेशी को पोषण न मिलने के कारण से विलापन हो जाना या जीवन शून्य हो जाना ... अभिशोष को मायोकार्डियल इन्फार्कशन कहते हैं। ... पेक्टोरिस और इन्फार्कशन है। जानेतक के बीच की अवस्था को कारोनरी इनसफिशिएन्सी कहते हैं।

आयुर्वेद मतानुसार हृत्कम्प, हृदयशूल वेदना मूर्च्छा आदि लक्षणों की साम्यता उपर्युक्त वर्णित विकृतियों में मिलती है।

कफ मद के प्रकोप से उपद्रव से रस रक्तादि दूषित होकर प्राणवह धमनियों शिराओं तथा उसकी शाखाओं में स्रोतारोध के कारण बनते हैं। इसके कारण हृदय में रक्त की गति पर भी प्रभाव पड़ता है और समस्त शरीर में समान, व्यान अपान आदि वायु प्रकुपित हो जाती है। परिणाम स्वरूप हृदय रोगों की उत्पत्ति हो जाती है। भय आपादि भी हृदयरोगों को उत्पन्न करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

हृदय का सम्बन्ध प्राण और रस रक्त दोनों से होने के कारण आयुर्वेदज्ञों ने इनके रोगों का वर्णन उस प्रकार नहीं किया जैसा कि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में मिलता है। रस रक्त सम्बन्धी दोष व क्षयवृद्धि सम्बन्धी सभी कारण और प्राण अवरोधक सभी प्रकारान्तर से हृद्रोगों के उत्पादक कारण होते हैं।

अतः पित्तज कफज त्रिदोषज कृमिज हृदरोग के अतिरिक्त मधुमेह रक्ताल्पता उदावर्त जन्य मदारोग जन्य आमवात जन्य अति मैथुन जन्य पार्श्विक व गुल्म जन्य हृदय रोगों के भेद भी दृष्टिगोचर होते हैं।

वातज हृदय रोग—

इसमें हृत्कम्प और हृत्शूल अत्यधिक होता है उद्वेष्टन स्तम्भ, उग्रता वेदना मूर्च्छा आदि लक्षण होते हैं। हृदय में खिंचावट और सूचिका वेधनवत् पीड़ा होती है। आरा व कुल्हाड़ी से चीरने के समान अनुभूति होती है। शोक, उपवास व्यायाम रूक्ष, शुष्क और अम्ल भोजन करने से हृदय में वायु प्रविष्ट होकर तीव्र वेदना करती है। उसके बाद हाथ पर कांपना वेष्टन (बांधकर ऐंठने जैसी पीड़ा) स्तम्भ प्रमोह शून्यता आदि लक्षण, वायु पीड़ित हृदय के होते हैं। इसमें हृदयगति अवरोध के कारण इसमें ... हो या शौचालय में मल त्याग करते हुए या स्नानघर में स्नान करते हुए ही स्वर्गवासी होते देखे गये हैं।

चिकित्सा—

वातज हृदय रोग में हल्का वमन विरेचन कराकर शुद्धि चिकित्सा की जायेगी तो शीघ्र लाभ होगा। चरक का

(१) त्रिचेचर हिंग्वाष्टक चूर्ण— ... के कारण हृदय की घबराहट को रोकने में अद्वितीय है। इससे आनाह विसूचिका, गुल्म हृदय की वेदना और वायु की ऊर्ध्वगति होना (उदर की गैस का धक्का देना) पूर्णतः नष्ट हो जाता है।

(२) बिजौरा नीम्बू के रस के साथ हिंग्वाष्टक चूर्ण का प्रयोग भी अचूक उपचार है।

(३) सोंठ के क्वाथ में सेंधा नमक + हींग का प्रक्षेप देकर पीने से हृदय शूल का शमन होता है।

(४) विषवात चन्द्रोदय रस— यह आशुफलप्रद योग है हृदय की पीड़ा के वेग को शीघ्र दूर करता है जिह्वा पर रखते ही हृत्पेशी और वातज तन्तुओं को प्रभावित कर इन्जेक्शन की तरह तत्काल हृदयशूल का शमन करता है। हृदयशूल की वेदना तीव्र हो तो।

(५) गिरपार इंजेक्शन (मार्तण्ड) व पथोदीन का इंजेक्शन देते हैं। इससे तत्काल लाभ होता है।

(६) भोजनोत्तर— अर्जुनारिष्ट + अश्वगन्धारिष्ट + बराबर पानी से नियमित प्रयोग करना उत्तम है।

पित्तज हृदय रोग—

पित्तज हृदयरोग में लक्षणों का बाहुल्य पाया जाता है उष्ण, अम्ल, लवण, क्षार और रस प्रधान भोजन करने से अजीर्ण में भोजन करने से, अतिमद्यपान क्रोध के करने से आतप सेवन करने से शीघ्र ही हृदय में पित्त प्रकुपित होकर हृदयरोग उत्पन्न कर देता है।

चिकित्सा—

हल्का विरेचन देकर चिकित्सा करना उत्तम है। नागार्जुन भस्म कामदुधारस मुक्तापिष्टी प्रवाल पिष्टी की २ २ रत्ती की मात्रा आंवले के मुरब्बे या मधु के साथ देना उत्तम है। इस प्रयोग से शरीर का दाह अन्दर से गर्मी ज्यादा लगना पसीना अधिक आना छाती में जलन मुख में खट्टा व पानी पानी लगाना आदि लक्षण तत्काल शान्त होते हैं।

कर पाता, चीनी का प्रयोग एकदम वन्द कर देने से हृदयावसाद हो जाता है तथा [illegible] ने से मधुमेह वढता [illegible] इस रोग मे हमने शिवा गुटिका का प्रयोग अत्यन्त [illegible] पाया है, मधुमेह के रोगियो पर तो इसका प्रयोग सफलतापूर्वक करते ही है तथा मधुमेहज हृदयरोग मे—

(१) शिवागुटिका १-१ गोली सुवह-शाम दूध से तथा भोजनोत्तर।

(२) आरोग्यवर्धिनी वटी— २ २ गोली पानी से देने पर आशातीत लाभ होता है। शिवा गुटिका मे मिश्री और मधु होने से चीनी की मात्रा वढने भी नहीं देता तथा घटने की स्थिति भी नहीं आने देता जिससे हृदयावसाद नहीं होता। आरोग्यवर्धिनी वटी मे कुटकी का प्रयोग तो हृदय के लिए प्रशस्त है ही इसमे शिलाजीत निम्वपत्र मधुमेह नाशक भी है। यह हृदय की धडकन को तत्काल नियमित करती है तथा हृदय दीपन पाचन का कार्य भी करती है हृदय रोगियो और मधुमेहियो को अक्सर कब्ज की शिकायत रहती है जिसमे भी इसकी २ गोली रात मे सोते समय लेने से उत्तम लाभ होता है।

हृदयरोग हर स्वानुभूत पचब्रह्मास्त्र—

(१) हृदयवल्लभ कपर्दक—

[illegible] ५ ग्राम मोती पिष्टी ५ ग्राम [illegible] अकीक पिष्टी [illegible] भस्म १०-१० ग्राम [illegible] २० ग्राम को खरल मे [illegible] तरह घोटाई करके [illegible] कपर्दक भर ले या [illegible] रूप मे भी रख सकते [illegible] १-१ [illegible] सुवह शाम दूध से [illegible] भोजन [illegible] १ चम्मच चटाकर ऊपर से [illegible] पक [illegible] के साथ दे।

[illegible] नाम तथा गुण है हृदय रोगियो के लिए [illegible] गुणकारी है हृदय की धडकन मे [illegible] लाभप्रद है, दिल घवराना दिल [illegible] आदि मे इसका प्रयोग [illegible] हृदयशूल मे [illegible] एक मात्रा देने से तत्काल शूल [illegible] और विश्वास उत्पन्न होता है

की गिरी २०-२० ग्राम सचर नमक, मण्डूर भस्म १-१ ग्राम शुद्ध कुचला १० ग्राम घी मे भुनी शुद्ध हीरा हींग १५ ग्राम छोटी हरड एरण्ड तैल भृष्ट १२ ग्राम

निर्माण विधि— लहसुन को छीलकर उसकी फाक को वीच मे से चीरकर उसमे से हरी गिरी निकालकर रात मे मट्ठा मे भिगो दे। सुवह गर्म पानी से धोकर शुद्ध कर ले इस शुद्ध लहसुन को खरल मे डालकर खूब घोटे फिर उसमे पहले हींग डालकर घोटे फिर अन्य दवाओ का वारीक चूर्ण डालकर घृत कुमारी की एक भावना देकर ३ ३ रत्ती की गोलिया वना ले। मात्रा २-२ गोली पानी से निगल ले।

उपयोग— दिल की कमजोरी, घवराहट [illegible] हृदयशूल को दूर कर हृदय को ताकत प्रदान करता। कोलस्टोल को भी कम करने मे उत्तम है। हमारे [illegible] मे सहस्रो रोगियो पर अनुभूत वहुप्रचलित योग है। [illegible] हृदयरोग [illegible] व ऊर्ध्ववायु होकर हृदय पर धक्का मार [illegible] यह तत्काल फलप्रद है। वायु का अपान निस्सारण कर देता है।

(३) मन [illegible]—

मुक्तापिष्टी, जहरमोहरा पिष्टी, अकीक पिष्टी २० २० ग्राम, जटामासी, आमलकी, अश्वगधा २० २० ग्राम [illegible] शिलाजीत ५० ग्राम सर्पगन्धा १०० ग्राम का सूक्ष्म चूर्ण कर भृगराज शखपुष्पी जटामासी ब्राह्मी, सर्पगन्धा इन पाचो औषधियो के स्वरस व क्वाथ की १ १ मात्रा देकर चणकमान गोलिया वना ले। २ २ गोली सुवह शाम दूध से सेवन करावे। यह यथा नाम तथा गुण है। रोगी के मन को खुश रखती है मानसिक परेशानियो को दूर करके शान्त निद्रा लाती है रक्तदावाधिक्य मनोभ्रम, चित्तभ्रम तथा हृदय दौर्वल्य मे सेवनीय उत्तम आशुफलप्रद योग है।

(४) आशुफला—

अभ्रक भस्म (शतपुटी) को अर्जुन क्वाथ की [illegible] भावना देकर नागार्जुनाभ्र रस वाले इस नागार्जुन भस्म ५० ग्राम मे शृगभस्म ५० ग्राम ताम्र भस्म २० ग्राम इलायची छोटी पुष्करमूल चूर्ण २० २० ग्राम पिप्पली चूर्ण ३० ग्राम भीमसेनी कपूर १० ग्राम सवकी घुटाई कर दशमूल क्वाथ की एक भावना देकर चणकमान गोलिया वनाले। २ २ गोली सुवह शाम [illegible] भोजन के वाद अर्जुनारिष्ट + [illegible] जल से दे। यह हृदय की कमजोरी

हृदयशूल, धडकन व अनियमित स्नायुदोर्वल्य मे उत्तम फलप्रद हे।

(५) आरोग्यवर्धिनी वटी (र०र०स०)–

(क) हृदयरोग मे कोई भी औषधि चल रही हो हम इसका प्रयोग तो अवश्य ही करते हे। यह उत्तम दीपन, पाचन, स्रोतोरोधहर हृद्य ओषधि हे। हृदयरोगो मे पाचन सस्थान को नियतवान कर हृदयकम्प को दूर करती हे। आधुनिक एण्टीवायोटिक्स के दुष्प्रभावो मे उत्तम फलदायक हे।

(ख) अर्जुनारिष्ट + अश्वगधारिष्ट, हृदयरोगो मे अर्जुनारिष्ट का प्रयोग हे पर अश्वगधारिष्ट के साथ हो तो इसका मणिकाचन योग हे जो रक्तदाव, हृदयकम्प को नियमित कर हृदय को शक्ति प्रदान करता है।

हृदय रोगो की रक्षा के लिए ६ सर्वश्रेष्ठ उपाय–

(१) अथखल्वेक प्राणवर्धनानामुत्कृष्टतम्
प्राणवर्धन के लिए अहिसा का पालन

(२) एक बलवर्धनानानामुकृष्टतम्
बलवृद्धि के लिए वीर्य रक्षा एव वीर्यवर्धन।

(३) एक वृंहमानामुत्कृष्टतम्
वृहण के लिए विद्याभ्यास

(४) एक नन्दनानामुत्कृष्टतम्
नन्दन हेतु इन्द्रियो पर विजय प्राप्त करना।

(५) हर्षणानामेक उत्कृष्टतम्
हर्षण हेतु तत्वावबोध

(६) अयनानामेक उत्कृष्टतम्
स्रोतो के प्रसादनार्थ ब्रह्मचर्य पालन

कालजयी भारतीयो का हृदय कभी दुर्वल होता ही नहीं था। वे शत्रु का वार छाती पर झेलते थे उनका हृदय सदव मजवूत रहा ह। उनकी मजवूती के पीछे उपरोक्त ६ उपाय अहिसा, वीर्य रक्षा, विद्याभ्यास, इन्द्रियजय, तत्वावबोध ओर व्रह्मचर्य परायण जीवन का सदेव पालन मुख्य उत्तरदायी रहा हे।

हृदयरोगियो की स्वास्थ्य रक्षा के २० सूत्र

(१) निदान एव परीक्षा द्वारा हृदय रोग का निश्चय हो जाने पर उसकी उपेक्षा न करते हुए समुचित चिकित्सा की व्यवस्था करनी चाहिए। (२) हृदय मे घवराहट वचेनी ओर उद्विग्नता का अनुभव होने पर तत्काल चिकित्सक से जाच करवाकर चिकित्सा करवानी चाहिए। (३) इष्या, द्वेष, उद्विग्नता ओर प्रतिशोध की भावना से वचना चाहिए। (४) मानसिक तनाव उत्पन्न करने वाले भावो को हृदय मे उत्पन्न ही नहीं होने देना चाहिए। (५) अधिक शारीरिक ओर मानसिक श्रम न करे, शान्तिपूर्वक विश्राम करना उत्तम हे। (६) मासाहार का त्याग करे, अण्डो का सेवन न करे। (७) धूम्रपान, मदिरापान ओर अन्य नशीली वस्तुओ का प्रयोग न करे। (८) भरपेट भोजन न करे। बल्कि भूख से कुछ कम ही भोजन करना चाहिए। (९) शरीर का भार अधिक हो तो कम कर ले। हल्का व्यायाम करे। (१०) कब्ज न रहने दे तथा वायु विकारक पदार्थो का प्रयोग न करे। (११) फलाहार एव फलो का रस अधिक मात्रा मे सेवन करना हितकर हे। (१२) शरीर को आलसी व आरामतलव नहीं वनाना चाहिए वल्कि क्रियाशील वने रहने दे। (१३) सतुलित भोजन लेना हितकर ह। भोजन मे अधिक चिकनाई वाले पदार्थ, घी, वनस्पति घी, अण्डे, तले हुए पदार्था का प्रयोग विल्कुल नहीं करना चाहिए। (१४) प्रात काल सूर्योदय से पूर्व २-३ मील तक भ्रमण की आदत डाले। (१५) सामर्थ्य अनुसार हल्का व्यायाम तथा देनिक कार्य करने चाहिए। (१६) प्राणायाम का हल्का अभ्यास करे। अधिक समय तक श्वास रोके रखना हानिकारक हे। (१७) शीघ्र-शीघ्र चलना व शीघ्र शीघ्र सीढियो से स चढने से वचना चाहिए। (१८) रात्रि का भोजन हल्का होना चाहिए तथा अधिक देर से भोजन नहीं करना चाहिए। (१९) जीवन की गणित मे मित्रो को जोडे दुश्मनो को घटावे सुखो को गुणा करे एव दु खो का विभाजन करे। (२०) ईश्वरार्जित जीवन जीने वाला हृदय रोगी अपने जीवन की गाडी आराम से खींच लेता हे।

पथ्याहार–

आयुर्वेद मे जो द्रव्य हृदय के लिए लाभदायक हे उन्हे हृद्य कहा गया हे। हृदय ओज का स्थान ह अत हृदय मे स्थित ओज तथा नाडियो ओर नाडियो मे वहनशील वात पित्त, कफ ओर रक्त के प्रसादन करने वाले आहार विहार का सेवन हितावह ह।

हृद्य सेव्य प्रयत्नेन यदोजस्य स्रोतसा च प्रसादनम।
तत्तत सेव्य प्रयत्नेन प्रशभो ज्ञानमे व च।।
चरक सू० ३०/४०

अत सात्विक आहार हृद्य आहार है जो सादव स्वास्थ्यवर्धक है।

सेब— ये हृदय के लिए बहुत लाभप्रद है सेब के मुरब्बे का विशेषत प्रयोग किया जाता है। उबले हुए दूध मे भी सेब डालकर हृदयरोग के रोगियो का सेवन कराया जाता है। पर इस प्रकार जिनका अम्लपित एवं पेट मे गैस की शिकायत हो उन्हे अनुकूल पडने पर ही देना चाहिए।

मौसमी— इसके प्रयोग से रक्तवाहिनियां लचीली होती है तथा कोलेस्ट्रोल पर नियन्त्रण हो जाता है। इससे कमजोरी और हृदय मे बढी हुई धडकन मे भी लाभ मिलता है।

नीम्बू— अम्ल होते हुए भी क्षारीय है। इसके प्रयोग से भी रक्तवाहिनियो मे कोमलता आती है और वृद्धावस्था तक [illegible] शक्तिशाली बना रहता है।

[illegible] मधु के साथ खाने से हृदयशूल के [illegible] आराम मिलता है।

[illegible] का प्रयोग हृदय बल कारक है जब रक्त [illegible] के अभाव मे रोगी [illegible] होने लगे तथा [illegible] कमजोरी के कारण हृदय की [illegible] १ गिलास पानी मे [illegible] पीने से तत्काल लाभ मिलता [illegible]

[illegible] कोलेस्ट्रोल को मिटाने मे बडी उत्तम है। आधुनिक अनुसंधानो द्वारा भी यही सिद्ध किया गया है। [illegible] दोनो ही हृद्य द्रव्यो मे प्रशंसित है।

[illegible]— इसके २५ ग्राम रस मे ३ ग्राम अर्जुन चूर्ण [illegible] हृदय की धडकन मे आराम मिलता है।

द्राक्षा— [illegible] तथा इलायची छोटी एवं नारियल का प्रयोग हृदय रोगी के लिए उत्तम है। द्राक्षा (किशमिश) और [illegible] २५० ग्राम दूध मे १० ग्राम किशमिश डालकर उबाल [illegible] दूध पी ले। दूध मे मिश्री मिला ले। नित्य प्रात १५ दिन करने पर ही हृदय की धडकन और तेज नाडी चलने मे आराम मिलता है। हृदय शक्तिवर्धक उत्तम नाश्ता है।

चना पोष्टिक नाश्ता— चने २५-३० दाने तथा किशमिश ८-१० दाने भिगो दे। प्रात इन्हे खूब चबाकर खा ले। इनका बचा पानी भी पी ले। इससे हृदय पुष्टि होती है। रक्तचाप नियमित होता है तथा कोलेस्ट्रोल कम हो जाता है व [illegible] दूर हो जाती है।

लहसुन— उच्च रक्तदाब को घटाकर प्राणदा नाडियो के अवसादित करने मे लहसुन उत्तम है। लहसुन की ४-५ कलियो को या एक पोथिया लहसुन की एक कली को दूध मे डालकर उबालकर दिया जाता है इससे कोलेस्ट्रोल कम हो जाता है हृदय रोगियो एवं रक्तदाब रोगियो के लिए एक पोथिया लहसुन सर्वोत्तम है।

[illegible] - का क्वाथ लवण मिश्रित कर देने से हृदय की दुर्बलता मे लाभप्रद है।

सैधव लवण— हृदय रोगियो मे लवण अपथ्य है पर सैधव लवण का प्रयोग करना चाहिए।

अर्जुन सिद्ध क्षीर— अर्जुन छाल चूर्ण १० ग्राम को २५० ग्राम दूध तथा २५० मि०ग्रा० पानी मे मिलाकर पका ले। दूध शेष रह जाने पर उसे छानकर उसमे ५ छोटी इलायची के बीज। मिश्री मिलाकर पिलाना उत्तम है।

गोधूम ककुभावलेह— गेहूं का आटा २० ग्राम अर्जुन चूर्ण २० ग्राम बकरी का दूध १६० मि०ग्रा०, गाय घी ४० मि०ग्रा०, मधु १० मि० ग्रा०, शक्कर २० ग्राम को पकाकर सेवन करने से उग्र हृदय विकार भी दूर हो जाते है। उत्तम पथ्याहार है।

सब्जी— परवल, करेला पपीता बथुआ मेथी की सब्जी पथ्य है।

दालो मे— मूंग दाल कुलत्थ दाल

अनाजो मे— पुराने शाली चावल और गेहूं उपयोगी है।

आयुर्वेद पथ्यापथ्य का आहार विहार का पालन करते हुए हृदयरोगी सुखमय जीवन यापन कर सकता है।

*

हृदय तन्त्र की मीमांसा

वैद्य भानुदत्त शर्मा, जयपुर

आयुर्वेद जगत मे हृदय शब्द से उर स्थान मे स्थित हृदय तन्त्र जो जीवन के प्रारम्भ से जीवन पर्यन्त आकुचन प्रसारण के रूप मे धडकता रहता है। यो कहे तो अधिक युक्तियुक्त होगा कि गर्भावस्था मे डेढ मास पर्यन्त ही हृदय का धडकना प्रारम्भ हो जाता है और जन्म के पश्चात् मृत्यु पर्यन्त यह हृदय अनवरत रूप मे धडकता रहता है। प्राचीन महर्षियो ने इस हृदय के लिए इस प्रकार लिखा है—

सत्वाधिधाम हृदय स्तनोर कोष्ठमध्यगम्।

भाषाकारो ने इस सूत्र का अर्थ इस प्रकार लिखा है एक सत्व अर्थात् मन एसो उसके सहयोगी चित्त बुद्धि, आत्मा, ज्ञान, चेतना, विवेक, चिन्तन, विचार, ध्यान, धर्य, सकल्प आदि का मुख्य स्थान उरस्थान मे रहने वाला यही हृदय है। उनका तर्क यह है कि चिन्ता, शोक, भय आदि के समय यही हृदय धडकने लगता है अत उपर्युक्त मन, चित्त भावना आदि का मुख्य स्थान यही उरोहृदय होना चाहिए। और दर्शन शास्त्रो मे भी उरोहृदय को ही मन, बुद्धि चेतना आदि का मुख्य स्थान माना है। इस प्रकार उपर्युक्त मतो के अनुसार शरीर मे एक ही हृदय होना चाहिए। जो कि उरोभाग मे स्थित है। महर्षि अग्निवेश ने सूत्र स्थान के तीसवे ' अर्थेदशम् महामूलयम" अध्याय मे जिस हृदय का वर्णन किया है 'चरक सहिता' के मूर्धन्य भाषाकार श्री चक्रपाणि ने इस हृदय से उरोभाग मे स्थित रक्तसवाहक हृदय को ही स्वीकार किया है और उनके पश्चात के भाष्यकारो ने चक्रपाणि के मत को प्रमाण मानते हुए इस अध्याय का भाष्य चक्रपाणि के मतानुसार ही किया गया है। अब महर्षि सुश्रुत के मत पर विचार करे। उन्होने हृदय के लिए लिखा है—

पुण्डरीकेण सदृश हृदय स्यादधोमुखम।
जाग्रतस्तद्विकसति स्वपतश्च निमीलति।।

इस श्लोक का अर्थ डल्हणाचार्य ने भी उर स्थ हृदय मानकर ही किया है और डाक्टर घाणेकर जी ने भी अपने "घाणेकरी भाष्य" मे इस श्लोक का अर्थ उर स्थ हृदय ही किया है। ऊपर के कथन का निष्कर्ष यह निकला कि हमारे शरीर मे केवल एक ही हृदय है और वह है रक्त सवाहक उरोहृदय। यही मन, बुद्धि स्मृति, आत्मा, ध्यान ध्येय, सकल्प-विकल्प, भावना, चेतना आदि समस्त क्रियाओ का केन्द्र है। अब जरा महर्षि भेल के मत पर विचार करे जो कि अग्निवेश के गुरुभाई थे। ये दोनो महर्षि भगवान आत्रेय के परम शिष्य थे। महर्षि भेल उर स्थ हृदय को मन का मूल स्थान नहीं मानते। मन के विषय मे उन्होने इस प्रकार लिखा है—

"शिरस्ताल्वन्तरगत सर्वेन्द्रिय पर मन।
तत्रस्थ तद्धि विषयानिन्द्रियाणा रसादिकान।।
समीपस्थान विजानातित्रीनभावानश्चनियच्छति।
तन मन प्रभव ज्योति सर्वेन्द्रियभय जग।
(भेल सहिता)

अर्थात् ऊपर के सिर का बाहरी भाग और मुह के अन्दर तालू के मध्यस्थ भाग मे मन का स्थान है। यही मन इन्द्रियो को समीप से जानता है और समस्त इन्द्रिया मन के द्वारा ही बल ग्रहण करती हैं। महर्षि भेल ने इसी शिरस्ताल्वन्तरगत भाग को ऊर्ध्व नाम से सम्बोधन करते हुए इसी ऊर्ध्व भाग को उन्मादरण का मूल स्थान माना है।

'ऊर्ध्व प्रकुपिता दोषा शिरस्ताल्वन्तरास्थिता
मन सन्दूषयन्त्याशु वतश्चित्त विपद्यते
चित्तेव्यापदमापन्ने बुद्धिनाश नियच्छति।।
ततस्तुबुद्धिनाशान्तु कार्याकार्य न बुध्यते।
एव प्रवर्ततिव्याधि उन्मादानामदारुण।।
(भेल सहिता उन्माद प्रकरण)

इस प्रकार मन, चित्त आदि का स्थान शिरस्ताल्वन्तरगत भाग को माना है। जिस स्थान पर भेल ने उन्माद रोग की

घ्राणेन्द्रिय का अर्थ गन्ध और रसेन्द्रिय रस है जो हमे मस्तिष्क के अन्दर ही प्राप्त होता है।

(पारिषद्य शब्दार्थशारीरम् पृ० १४५)

इस अध्याय के तृतीय सूत्र—

"अर्थेदशमहामूला समासक्ता महाफला ।
महच्चार्यश्च हृदय पर्यायरुच्चतेत्युद्वै ।।

(च० सू० अ० ३०/३)

अर्थात्— अर्थ नामक अग मे महामूल वाली ज्ञानवहा एव कर्मवहा नाडिया समासवत हे। द्वितीय पक्ति मे महत्, अर्थ और हृदय इनको पर्याय माना है। किन्तु चक्रपाणि ने अर्थ ओर महत् को हृदय का पर्याय न मानकर महत् ओर अर्थ शब्द से हृदय का महत्व ओर अर्थमानत्व सिद्ध किया ह। किन्तु यह सही नहीं हो सकता, क्योकि महर्षि ने स्पष्ट रूप से इनको पर्याय माना ह। अत अर्थ और महत् हृदय शब्द के पर्याय तो नहीं हो सकते किन्तु हृदय शब्द महत् एव महत् अर्थ शब्द का पर्याय हे।

यथा—

"चित्त तु चेतो हृदय स्वान्त हृन् मानस मन"

(अमर कोष)

इसके पश्चात् चथुर्थ सूत्र—

"षडगमग विज्ञानमिन्द्रियर्थ्यपचकम्।
आत्मा च सगुणश्चैश्चिन्त्यच वृद्धि सश्रितम्।।

(च० सू० अ० ३०/४)

इस श्लोक का अभिप्राय यह है कि शरीर के वरावर के अग ओर आन्तरिक भाग के यकृत, प्लीहा, वृक्क, हृदय आदि अगो की चेतना व वेदना इत्यादि का विशेष ज्ञान इस हृदय मे समाश्रित ओर इन्द्रिया ओर उनके विषय शब्द, स्पर्श, रूप, गन्ध, रस इसी हृदय मे समाश्रित हे। ओर आत्मा अपनी इच्छा द्वेष, गुण, प्रयत्न, चेतना ओर वृति अपने इन गुणो सहित इसी हृदय मे समाश्रित हे और चेत अर्थात् मन अपने चिन्त्य, विचार, अद्वय, ध्येय, सकल्प आदि गुणो सहित इसी हृदय मे समाश्रित है। अत जिस हृदय म आत्मा अपने अर्थो सहित समाश्रित हो वह हृदय उरो हृदय नही हो सकता, अपितु मस्तिष्क ही होना चाहिए। अध्याय का सातवॉं श्लोक—

"यदि तद् स्पर्शविज्ञान धारि सश्रितम्।।"

(च० सू० अ० ३०/६)

सप्तम् सूत्र—

"तत्परस्योजत स्वान तत्र चेतन्यसग्रह ।"
हृदय महदर्यश्च तस्मादुक्त चिकित्सक ।।"

(च० सू० अ० ३०/७)

इस सूत्र मे महर्षि ने "शारीरेन्द्रिय सत्वात्मसयोग रूप धारि" जो स्पर्श के द्वारा शरीर के सुख, दु ख आदि का ज्ञान प्राप्त करता है वह धारि इसी हृदय मे निवास करता है। "सत्वरस्योजस स्थान" इस वाक्य का यह अभिप्राय हे कि पर ओज का भी स्थान यही हृदय हे। यहा पर ओज से अपरओज ग्रहण स्वत हो जाता हे। यहा तक महर्षि ने मस्तिष्क हृदय का वर्णन किया आगे आठवे सूत्र मे—

"तेन मूलेन महता महामूला मला दश।
ओजो वहा शरीरे स्मिन् विधम्यन्ते समन्तत ।।"

इस अष्टम सूत्र मे मस्तिष्क हृदय की सहायता से उरो (हृदय) का ओजो समवहन रूपी कार्य का वर्णन किया हे। ओज नामक पदार्थ समवहनशील पदार्थ होना चाहिए जो कि रक्त के साथ मिश्रित होकर सारे शरीर मे पहुचता है। जैसा कि वाग्भट्ट ने लिखा हे—

"दशमूलसिरा हृदयस्था ता सर्व सर्वतो वपु ।
रसात्मक वहन्त्योजस् तन्निबद्ध हि चेष्टितम्।।"

(अष्टोगलग्रह शरीरस्थान)

अत रक्त मिश्रित ओज उरो हृदय के द्वारा समस्त शरीर मे पहुचता हे। अत अष्टम श्लोक के द्वारा महर्षि ने उरो हृदय का रक्त परिभ्रमण सहित इस श्लोक मे वर्णन किया हे। रक्त सवहन की यह क्रिया किस प्रकार सम्पन्न होती हे, इसके लिए महर्षि ने (सूत्र अध्याय ३०/१२) के द्वारा बडे ही सुन्दर ढग से प्रतिपादित किया यह सूत्र हे—

"ध्यानाद् धमन्य स्रवणात् स्रोतसि सरणात् सिरा·।।

(चरक सूत्र अ० ३०/१२)

रक्त का सवहन चक्र हृदय से रक्त का प्रारम्भ होकर पुन हृदय तक पहुचने मे सम्पूर्ण होता है। इस सूत्र मे इसी का वर्णन बडे सुन्दर ढग से किया है, अर्थात् धमनियो मे रक्त का प्रभाव आकुचन प्रसारण रूप धमन क्रिया क द्वारा होती है और स्रोतो मे रक्त सवहन स्राव होते होता ह आर सिराओ मे रक्त प्रवाह स्रवण सरण के द्वारा सम्पन्न होता हे, अत धमन, सवण और सरण इन तीन प्रमुख क्रियाओ

शेषांश पृष्ठ 68 पर

हृदय विवेचन

डा० जी० पी० राव
एम डी०, पी एच० डी० (आयुर्वेद)
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

डा० दीपक शर्मा
बी०ए०एम०, डी० एस सी०
पकज रसायन शाला, दिल्ली

आचार्यो ने आयुर्वेद मे हृदय को प्रमुख अग माना है। हृदय की त्रिमर्म मे गणना कर उसके महत्व को अधिक दर्शाया है। हृदय शब्द का अर्थ अलग-अलग सदर्भो मे अलग-अलग अर्थो का वर्णन आचार्यो ने उल्लिखित किया हे। कुछ आचार्यो ने शिरोगत हृदय को मस्तिष्क और कुछ आचार्यो ने उरोगत हृदय को हृदय शब्द की सज्ञा दी है। आधुनिक मत से मस्तिष्क को ब्रेन तथा हृदय को हार्ट माना जाता है। अब प्रश्न है कि आयुर्वेद मे आचार्यो ने शिरोगत हृदय और उरोगत हृदय को प्रथक-प्रथक उल्लेख क्यो किया है। कुछ आचार्यो ने यह भी निर्देश किया है कि जहा आयुर्वेद मे हृदय शब्द का उल्लेख हो वहा उरोगत हृदय से अर्थ ग्रहण करना चाहिए। सहिताओ एव अन्य ग्रथो के विस्तृत अध्ययन के उपरान्त इस प्रश्न के निवारणार्थ कुछ अपना मत स्वबुद्धि के अनुसार इस पत्र मे प्रस्तुत इस नम्र निवेदन के साथ कर रहे हे कि आप इस प्रश्न के सशय के निवारणार्थ हमारा मार्गदर्शन करेगे।

हृदय शब्द में तीन धातु है। हृ (ञ), द और इण (य) जिसे यह ज्ञान है कि प्रथम अक्षर ह है उसके आगे स्वकीय की तथा परकीय जन अपनी बली धरते है। जो यह जानता है कि द यह दूसरा धातु हे उसे सब कोई इष्ट वस्तु देते है। तीसरी धातु इण (य) है यह जिसे विदित है वह स्वर्ग लोक को जाता है। तीन धातुओ से हृदय शब्द बनता है। हरण दान अयन (गति) तीन क्रियाओ को सूचित करता हे। अर्थात् हृदय रस, रक्त का आहरण, सर्वधातुओ को रस रक्त का प्रदान और सकोच विकासात्मक गतिया करता है। हृदय शब्द के इस विवेचन के ज्ञान का फल 'हृ', 'द' और 'य' इन धातुओ से ही बताया हे।

चरक चिकित्सा स्थान मे हृदय को रस, रक्त ओर वात के वहन करने वाले स्रोतो का स्थान कहा हे। उसी को मन, बुद्धि, इन्द्रियो ओर आत्मा का भी स्थान कहा है।

सामान्य विवेचन— हृदय

हृदय शोणित एव कफ के प्रसाद रूप से निर्मित है। इसके वाम भाग मे प्लीहा एव फुफ्फुस ओर दक्षिण भाग मे यकृत और क्लोम है। पुण्डरीक अर्थात् कमल जिसकी पखुडिया नीचे की ओर झुकी हुई, के समान सदृश हे, निरन्तर कार्य करने वाला है, आचार्य चरक के अनुसार हृदय मन, चित्त और ओज का स्थान हे।

मस्तिष्क—

चारो वेदो मे आयुर्वेद का मूल अथर्ववेद हे। अथर्व अर्थात् ईश्वर मे पुरुष के शिर और हृदय को परस्पर अनुस्यूत— सीया हुआ, गाठ सम्बन्ध युक्त किया हे। इसी सबध के कारण वायु शरीर मे स्थित मस्तिष्क के ऊपर रहता हुआ अर्थात् प्रत्येक अवयव को निज कर्म करने की प्रेरणा करता है।

चक्षु आदि ज्ञानेन्द्रिया शिर मे हे। परन्तु सूक्ष्म और शीघ्रगामी होने के कारण मन आवश्यकता होने पर तत्काल प्रत्येक इन्द्रिय के साथ सयुक्त हो जाता हे। अत मन का स्थान हृदय मे होते हुए भी उसको मस्तिष्क मे कहा जा सकता है।

मन की क्रिया वायु के ⸤धीन है इस वात का केन्द्र मस्तिष्क हे। वात की प्रेरणा से मन का इन्द्रियो से सम्बन्ध होता हे ओर इन्द्रिया अपने अपने विषय का ग्रहण

या अपना अपना प्रवृत्ति नियत कर्म करती है।

जिस प्रकार दूध और पानी का सम्बन्ध है उसी प्रकार मन और वायु का परस्पर सम्बन्ध है। दोनो की सम क्रियाये है। जिस क्रिया मे वायु प्रवृत्त होती है, उसमे मन की भी प्रवृत्ति होती हे दोनो मे से एक का नाश होने पर अन्य का भी नाश होता है। दोनो अक्षत हो तो इन्द्रियों की प्रवृत्ति अर्थात् परिणाम मे ससार होता है। दोनो ही नष्ट हो जाए तो पुरुष मोक्ष को प्राप्त होता है।

हृदय और मस्तिष्क की क्रियात्मक एवं रचनात्मक समानता—

	हृदय (HEART)	मस्तिष्क (BRAIN)
१	चतुष्कोष्ठीय होता है। **Right Ventricle** **Right Atrium** **Left Ventrical** **Left Atrium**	चतुष्कोष्ठीय होता है। **Lateral Ventricle** **2nd Lateral Ventricle** **3rd Ventricle** **4th Ventricle**
२	रक्त सवहन होता है। **Venous Sysrtem (Blood Organ to Heart)** **Arterial System (Blood Heart to Organs)** **Venous System = Afferent System** **Arterial System = Efferent System**	C S. F. सवहन होता है। **Efferent System =** मनोवह नाडी **(Brain to Organs)** **Afferent system =** सज्ञावह नाडी **(Organs to Brain)** **Afferent System = Venous System** **Efferent System = Arterial System**
३	मर्म	मर्म
४	मर्माभिघात के परिणामस्वरूप मृत्यु हो जाती है।	मर्माभिघात के परिणामस्वरूप मृत्यु हो जाती है।
५	हृदयावरण होता हे।	मस्तिष्कावरण होता है।
६	घर्षण के परिणाम को रोकने के लिए आवरण ओर हृदय के मध्य द्रव होता है।	घर्षण से बचाने के लिए आवरण और मस्तिष्क के मध्य द्रव होता है।

पूर्वकृत वर्णन का तथा आधुनिक अन्वेषणो से सिद्ध है कि शिर के अन्दर स्थित सावयव मस्तिष्क ही ज्ञानेन्द्रियो ओर कर्मेन्द्रियो का प्रवर्तक है। मस्तिष्क का अधिष्ठाता वायु है इसी मस्तिष्क का योग सहस्रार, कमल, पद्म आदि नामो से प्रचलित है। अत हृदय के समान मस्तिष्क विकसित कमल के तुल्य होता है।

शरीर एक विलक्षण अश्वत्थ वृक्ष है इसका मूल ऊपर है और शाखाये नीचे की ओर सारे शरीर में प्रसृत है। यही

मूल मस्तिष्क हे। इसमे ज्ञान ग्रहण करने वाली नाडिया प्रविष्ट होती है और अग प्रत्यगो की कर्म प्रेरणा देने वाली नाडिया निकलती है। ये ही मस्तिष्क रूप मूल की शाखाये है इनके अधीन शरीर की ज्ञानकर्म रूप समस्त क्रियाये हे ये क्रियाये वायु द्वारा सम्पादित होती हे यह वायु या प्राण शिर मे मस्तिष्क मे रहता है। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण ज्ञानेन्द्रियो का भी यही आश्रय हे अत शिर को उत्तमाग कहा जाता हे इसकी सर्वदा प्रमत्त होकर रक्षा करनी चाहिए। मूल की रक्षा ओर पुष्टि से सारे वृक्ष की रक्षा ओर पुष्टि होती हे। उसी प्रकार शिर की रक्षा ओर पुष्टि से सम्पूर्ण शरीर की रक्षा ओर पुष्टि होती हे।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि हृदय ओर मस्तिष्क का परस्पर गाढ सम्बन्ध हे। हृदय के द्वारा मस्तिष्क को रस, रक्त और प्राणवायु (आक्सीजन) की प्राप्ति होती हे। ज्ञान ओर कर्म के लिए मस्तिष्क की जो मन ओर आत्मा का सहकार चाहिए उसमे भी हृदय का सहकार होता हे। कारण, हृदय मन और आत्मा का आश्रय स्थान हे।

उधर मन ओर आत्मा के कर्म वायु के सहकार से होते है और इस वायु का केन्द्र स्थान मस्तिष्क है इस प्रकार शरीर के समस्त कर्म हृदय ओर मस्तिष्क के परस्पर सहकार से होते हे। निम्न श्लोक से स्पष्ट ह कि स्पर्श ज्ञान अर्थात् ज्ञानेन्द्रियो से होने वाला ज्ञान रक्त के सम्यक् सचार द्वारा ही होता हे।

धातुना पूरण वर्ण स्पर्शज्ञानमसशयम्।
स्वा शिरा सचरद्रवत कुर्याच्चान्यानगुणानापि।।

सु० शा० ७/१३

अर्थात् अपनी सिराओ मे सचार करता हुआ रक्त धातुओ का पोषण (शरीर का) वर्ण, स्पर्शज्ञान ओर अन्य गुणो को नि सशय करता हे।

इस वर्णन मे आयुर्वेद के एक ऐसे सिद्धान्त का निर्देश हे जो सहिताओ मे उल्लिखत नहीं हे। इस वर्णन के अनुसार आयुर्वेद के उन सिद्धान्तो का समाधान हो जाता ह। जिसमे कहीं हृदय को शरीर की जीवनी क्रियाओ का आदि मूल स्थान कहा हे ओर कहीं शिर को कहा ह।

आधुनिक चिकित्सा शास्त्र मे ओर प्राचीन उपनिषद आदि ग्रथो मे जो मस्तिष्क को ज्ञान कर्म का प्रधान मूल कहा जाता हे वह भी आयुर्वेदिक सम्मत ह। यह भी इस वर्णन से सिद्ध हो सकता हे।

■

हृदय तन्त्र की मीमांसा शेषांश पृष्ठ 65 का

के द्वारा रक्त का सवहन चक्र पूरा होता है। अत ८ वे ओर १२ वे श्लोक के द्वारा रक्त सवाहक उरो हृदय के कार्यो का बडा वैज्ञानिक रूप से वर्णन किया हे। इस प्रकार महर्षि अग्निवेश ने अर्थेदशमहामूलीयम् के अध्याय के सात सूत्रो तक मस्तिष्क हृदय का बडा सारगर्भित वर्णन किया हे ओर आठवे सूत्र से चतुर्दश सूत्र तक ओज की महिमा एव उरो हृदय के द्वारा उसके सवहन का वर्णन किया हे।

कथन का अभिप्राय यह हे कि शरीर मे मुख्य हृदय दो है– एक मस्तिष्क हृदय हे जो चेतना, वेदना, ज्ञान, विज्ञान भावना आदि का स्थान है ओर दूसरा उरो हृदय जो ओजोमिश्रित रक्त सवहन के कार्य को सम्पन्न करता ह।

अत शरीर मे दो हृदय होते हे–
एक शिरोहृदय (मस्तिष्क रूपी)
दूसरा रक्त सवाहक उरोहृदय

"चरक सहिता मे मस्तिष्क निरूपण" नामक पुस्तक अर्थेदशमहामूलीयम् नामक अध्याय की मस्तिष्क पराव्याख्या की गई है। उसमे दोनो हृदयो, ओज, नाडीतन्त्र आदि का विस्तृत विवेचन किया हे। इसे देखने का कष्ट करे।

✪
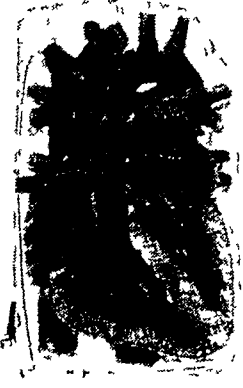
हृदय

डा० एस० एम० शफी
एम डी , ए आर एस एच (लन्दन)

दश जीवित धामानि शिरोरसनबन्धनम्।
कण्ठोऽस्र हृदय नाभिर्बस्ति शुक्रोजसी गुदम्।।१३।।
अ० ६ पृष्ठ १८५ अध्याय ३

जीवित (प्राण) के दस स्थान हे, यथा शिरोबन्धन, रसना, जीभ के वन्धन, कठ, रक्त, हृदय, नाभि, वस्ति, शुक्र, ओज ओर गुदा। ये दस जीवन के विशेष स्थान हे।

चरक मे शखो मर्मत्रय, कण्ठो रक्त शुक्रोजसी गुदम्। दश प्राणायतनानि तद्यथा मूर्धा, कण्ठ, हृदयम्, नाभि, गुदम् वस्ति, ओज, शुक्रम्, शोणितम्, मासमिति।
(चरक चि० शा० अ० ७/६)

मानव शरीर के दस प्राण स्थानो मे से एक हृदय रक्त परिभ्रमण सस्थान का मुख्य अग है। यह वक्ष स्थल मे दोनो फेफडो के वीच मे थोडा वार्यी ओर स्थित हे। हृदय का आकार एक मुट्ठी की तरह होता हे। यह अनेच्छिक पेशी का वना होता हे। हृदय जिस जगह पर स्थित हे उसे वृक्ष की मध्यास्थि कहते हे। जो एक झिल्ली के आवरण से ढका हुआ सुरक्षित हे। उसे **Pericardium** कहते हे। इसके अन्दर की दीवारे और कपाट एक विशेष मोटी झिल्ली के वने होते हे उसे **Endocardium** कहते हे।

मानव हृदय दो दीवारो द्वारा चार भागो मे वटा हुआ हे। एक दीवार इसे दाहिने व वाये भाग मे विभाजित करती हे, दूसरी दीवार हृदय को ऊपरी और नीचे के भागो मे विभाजित करती हे। इन्हीं भागो को कोप्ठ कहा जाता हे। ऊपरी दोनो कोष्ठो को ग्राहक कोप्ठ अलिन्द **(Auricle)** कहते हे ओर नीचे के दोनो कोष्ठो को निलय **(Ventricle)** कहते हे। अलिन्द के दो भाग दाहिना अलिन्द ओर वाया अलिन्द होते हे। ठीक इसी तरह क्षेपक कोष्ठ भी दो भागो मे पहला वाम निलय आर दूसरा दाहिना निलय होते हे। इसके अलावा इन चारो कोष्ठो मे छिद्र ओर छिद्रो पर कपाट होते है। यह भी दाहिना कपाट और बाया कपाट होते है। दाहिने अलिन्द मे स्थित हे जहा ऊर्ध्वमहाशिरा एव अधोमहाशिरा दाहिने अलिन्द मे प्रवेश करता है। यह कपाट, केवल अलिन्द मे प्रवेश करने मे मदद पहुचाते हे ओर रक्त को पुन शिराओ मे जाने से रोकते हे। **L S V** वाये अलिन्द मे है जहा पर फुफ्फुसीय शिराये खुलती हे तथा शुद्ध रक्त को फुफ्फुस शिराओ मे वापिस जाने से रोकती हे। इसके अतिरिक्त एक कपाट जिसे त्रिकपर्दीय कपाट कहते ह यह दाहिने अलिन्द और बाये निलय के बीच मे होता हे, जो कि निलय की ओर खुलता हे यह अशुद्ध रक्त को निलय मे अलिन्द मे वापिस जाने से रोकता हे। द्विकपर्दी कपाट वाये अलिन्द ओर वाये निलय के वीच मे स्थित ह तथा ठीक त्रिकपर्दी कपाट की भाति कार्य करता हे। अतर केवल इतना है कि **T V** द्वारा शुद्ध रक्त जाता हे। **P V** दाहिने क्षेपक कोष्ठ मे स्थित हे ओर फुफ्फुसीय धमनी की ओर खुलता हे। फुफ्फुसीय धमनी के नाम धमनी जरूर हे लेकिन कार्य शिरा का है। **A C Artic valve** यह वाये निलय मे स्थित हे ओर **Aorto** की ओर खुलता हे। यह रक्त को एक ही दिशा मे **Aorta** की ओर जाने देता ह, लेकिन वापिस नहीं होने देता।

हृदय के अन्दर छे नलियो का समावेश ह। इसमे तीन धमनिया ओर तीन शिराये धमनी हृदय से अशुद्ध रक्त को वाहर ले जाती हे यह **Pulmonery Artery** तथा **Aorta** हे। फुफ्फुसीय धमनी हृदय से शुद्ध रक्त साफ करने के लिए फेफडो मे ले जाती है तथा **Aorta** शुद्ध रक्त का सारे शरीर मे वाटने के लिए ले जाती ह। इसी तरह ऊर्ध्व महाशिरा, **(Superior Venava)** सिर गल आर शरीर के ऊपरी भाग से अशुद्ध रक्त तथा **Inferior Venacava** शरीर के निचले भाग से जिसमे आतो द्वारा चूसा गया आहार सभी

यकृत से होता हुआ सम्मिलित होता है, हृदय के अन्दर दाहिने अलिन्द मे ले जाती है और फुफ्फुसीय शिरा फेफडो से शुद्ध रक्त हृदय के बाये अलिन्द मे ले जाती है। स्वय हृदय को शुद्ध रक्त हृदय धमनी (Coronary Artery) के द्वारा मिलता है। जब तक यह हृदय धमनी (Coronary Artery) काम करती है मनुष्य जीवित रहता है।

हृदय का आन्तरिक भाग रचना
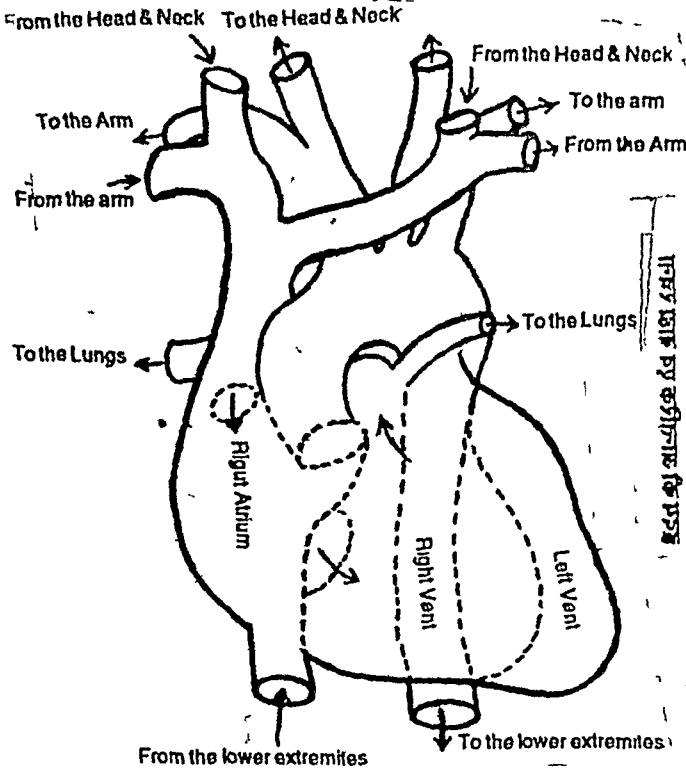
ससार मे अनेको रोग है, लेकिन उनमे हृदय रोग ही ऐसा है जिसमें जीवन का कोई विश्वास नहीं, निश्चय नहीं, जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं कब कहा अकस्मात् मौत हो जाय। चिकित्सा शास्त्र मे हृदयघात से मरने वालो की संख्या भारतवर्ष मे ही तकरीबन चौबीस लाख वार्षिक है। हृदयाघात का मुख्य कारण रक्तवाहिनी धमनियो का लचीलापन समाप्त होकर उसमें कडापन आ जाना और उनमें धीरे-धीरे चर्बी युक्त पदार्थ जिसे कोलेस्ट्रोल कहते है, का जमाव हो जाना। इसके अतिरिक्त हृदयरोग यथा– हृदय का दर्द, हृदय का भारीपन, हृदय की धडकन, हृदय का रक्तदाब, उच्चरक्तदाब, श्वसन क्रिया मे कष्ट (सास का फूलना) हृदय के ये सभी रोग प्राय रक्त मे विजातीय द्रव्यो के सग्रह होने से तथा हृदय की मासपेशियॉ कमजोर क्षीण, शिथिल होने से होते है। इन रोगो के लिए आधुनिक चिकित्सा हृदय को शक्तिशाली व रक्तसचार पद्धति को जारी रखने वाली औषधियो तक सीमित रखते है, जो एक निश्चित समय तक के लिए ही आरोग्यता प्रदान करती है। रक्त को सम्पूर्ण रूप से शुद्ध करके रोग ठीक करने का निदान तो आयुर्वेद पद्धति मे ही है, जो मानव प्रकृति के अनुकूल है ओर शरीर के लिए कोई हानि नहीं पहुचाती है। आधुनिक चिकित्सा का प्रभाव समाप्त होने पर हृदय ओर भी अधिक कमजोर हो जाता हे समय-समय मात्रा अधिक होती जाती है। लेकिन आयुर्वेद में ऐसा दुष्प्रभाव नहीं है। हा इस तरह के रोगियो को अपनी जीवन शली मे परिवर्तन करना जरूरी ही नहीं वल्कि अपरिहार्य है।

पथ्य मे वसारहित सुपाच्य भोज्यपदाथ (सतुलित आहार) शक्ति व व्यवसाय के अनुसार व्यायाम, याग आसन, प्राणायाम, ध्यान, मनोरजन, परिवार व समाज मे घुल मिलकर रहना, तनाव रहित जीवन, धूम्रपान, त्याग, सात्विक जीवन आदि मनुष्य को निरोग रखकर आयु को बढाने मे सहायक हे।

अत्युष्णगुर्वन्त कषाय त्रिक्ता श्रमाथिघाताध्यशन प्रसगे।
सञ्चिनाने वेगविधारणाच्च हृदामय पञ्चविध प्रदिष्ट।'

अर्थात् अधिक उष्ण, गुरु, कषाय, अन्न खाने से अधिक परिश्रम करने से, हृदय मे चोट आदि लगने से, भोजन पर भोजन करने से, अधिक स्त्री प्रसग करने से मल मूत्रादि वेग को रोकने से पाच प्रकार से हृदयरोग होता हे।

''दूषयित्वारस दोषा विगुणा हृदयगता ।
हृदिबाधा प्रकुर्वन्ति हृद्रोग त प्रचक्षसे।।''

अर्थात् प्रकुपित वातादि दोष हृदय मे अनेकानेक प्रकार की पीडा पैदा करते हे। उनको हृदयरोग कहते हे।

हृदयरोग को प्रोत्साहित करने वाले कारणो को समझना और उनका परित्याग करना ही हृदय रोग से निजात लेना है। लिखने का आशय दवाओ से अधिक परहेज करना ही, कब क्या खाना है ओर क्या नहीं, किस मोसम मे केसे रहना हे और कैसे नहीं, इन सब का पूर्ण उल्लेख आयुर्वेद मे समाहित है।

''हिताहित सुख दु खमायुस्तस्य हिताऽहितम्।
मान च तच्च यत्रोक्त आयुर्वेद स उच्यते।।''

चरक सूत्र ४०

"रुधिर परिसंचरण अंग हृदय"

डा० ब्रह्मदेव प्रसाद सिन्हा
मो० थालपोश, पोस्ट— भट्टा नवादा (जिला—बिहार)
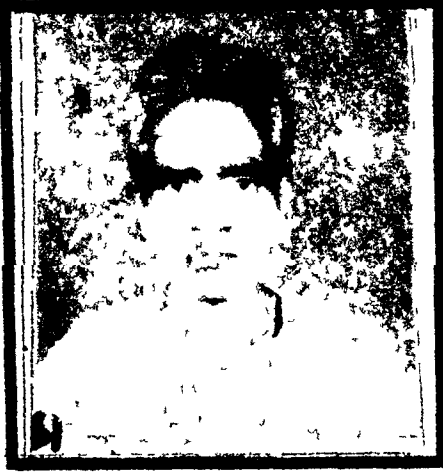
हृदय मनुष्य का केन्द्रीय पम्प अग होता है, जो सम्पूर्ण अग मे रुधिर का परिसचरण कराता हे। जिस प्रकार पानी चढाने वाला पम्प पानी को पाइप मे आगे की तरफ धकेलता है, जिससे पानी सरलता से आगे बढता जाता हे। ठीक उसी प्रकार हृदय भी रुधिर को रुधिर वाहिनियो मे आगे की ओर ठेलता हे जिससे रक्त, रुधिर वाहिनियो मे निरन्तर सुचारु रूप से वहता रहता हे।

हृदय की संरचना—

मनुष्य का हृदय मासल शख्वाकार अग होता हे। यह पसलियो के नीचे और फेफडो के वीच मे स्थित होता है। हृदय झिल्ली की वनी हुई एक थैली के अन्दर होता हे जिसे हृदयावरण या पेरीकार्डियम कहते है। यह छाती की मध्य रेखा के थोडा वार्यी ओर रहता हे। हृदय दो अर्द्धभाग दाये ओर दो अर्द्धभागों बाये मे बटा रहता हे, यह सभी मिलकर चार भागो मे विभक्त होता है। इसमे एक पतली भित्ति वाला वेश्म होता हे। पतली भित्ति वाला वेश्म अलिद और मोटी पेशीय भित्ति वाला वेश्म निलय कहलाता हे। इस प्रकार हृदय मे दो अलिद है (बाया और दाया) ओर दो निलय (बाया और दाया) होते है। दोनो अलिद हृदय मे रक्त ग्रहण करते है ओर दोनो अलिद एक साथ सुकडते है, जिसके फलस्वरूप उनमे भरा रक्त दोनो निलयो मे तेजी से धकेल दिया जाता हे। इसके बाद निलय सिकुडता हे जिसके फलस्वरूप रक्त महाधमनी मे धकेल दिया जाता है। ठेले गये रक्त पुन- वेश्मो मे न लोटें इसके लिए कपाट होते है जो रुधिर को वापिस लौटने नहीं देते।

हृदय के कार्य करने की दो अवस्थाये हे। प्रथम अवस्था को प्रकुचन या सिस्टोल कहते है जिसमे निलय सिकुडते हे और उनमे भरे रुधिर को महाधमनियो मे पम्प करते हे। द्वितीय अवस्था को अनुशिथिलन या प्रसार या डायस्टोल कहते है। जिसमे निलय फेलते है और अलिन्द से रुधिर प्राप्त करते है। एक वार प्रकुचन और एक वार अनुशिथिलन मिलाकर हृदय धडकन का निर्माण करते हे।

स्टेथस्कोप से हृदय धडकन, जो लव-डप, लवडप की आवाज सुनाई देती हे, यह लवडप की आवाज अनुशिथिलन अवस्था मे आती है। स्वस्थ मनुष्य का हृदय विश्राम की अवस्था मे ओसतन एक मिनट मे ७० बार धडकता हे। कसरत या मेहनत करने पर वह बढकर प्रति मिनट १८० बार तक हो सकती हे।

रुधिर वाहिनिया—

शरीर मे रुधिर वाहनियो की दो अलग-अलग नाडियॉ होती हे उन्हे धमनिया एव शिराये कहते है फिर दोनो की अलग-अलग रुधिर केशिकाए भी होते है, जो बाल से भी पतली पूरे शरीर मे फैली होती है। धमनिया जो रक्त को हृदय से शरीर के विभिन्न भागो मे कोशिकाओ तक ले जाती है, उनमे शुद्ध आक्सीजन रक्त बहता है। सिवाय फुफ्फुसीय धमनी के जिसमे अशुद्ध आक्सीजन रहित रक्त प्रवाहित होता है। इसकी दीवाल मोटी और लचीली होती है। इस कारण धमनिया सिकुड और फैल सकती है। इसमे काफी

दाव सहने की क्षमता होती है।

शिराये—

वे रुधिर वाहिनियां जो शरीर के विभिन्न अगो से रुधिर को हृदय की ओर वापिस लाती हे शिराये कहलाती है। इसकी शुरुआत केशिकाओ से होती है। इसकी दीवाल अपेक्षाकृत कम पेशीय होती है जिसमे यह काफी चोडी हो सकती है। लोटने वाला रुधिर पीछे न लोटे इसके लिए अधिकाश शिराओ मे नव चन्द्राकार कपाट होते है। इसमे अशुद्ध रक्त रहने के कारण नीले रग की प्रतीति होती है। नीले रग के कारण शरीर की कुछ शिराओ को स्पष्ट देख सकते ह।
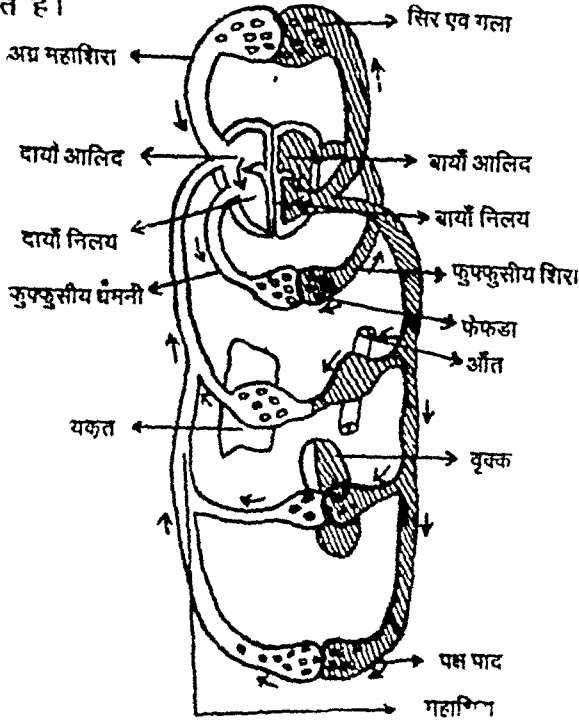
चित्र .
मानव शरीर के रुधिर परिसचरण की सामान्य परियोजना

शरीर मे रुधिर परिसंचरण—

हृदय की दायीं ओर अर्थात् दाया अलिद सम्पूर्ण शरीर से अशुद्ध रक्त को महाशिराओ के द्वारा प्राप्त कर लेता है। दाया अलिद इस अशुद्ध रक्त को दाये निलय मे पम्प करता है और दाया निलय फिर इस अशुद्ध रक्त को फेफडा महाधमनी द्वारा फेफडो मे शुद्ध होने के लिए पम्प करता है। फेफडो मे शुद्ध होने के बाद शिराओ द्वारा बाये अलिद मे आता है। बाया अलिद इस शुद्ध रुधिर को बाये निलय मे ठेलता है। बाया निलय फिर इस शुद्ध रक्त को शरीर की समस्त धमनियो मे पम्प करता है। इस प्रकार रुधिर हृदय से सम्पूर्ण शरीर मे पम्प किया जाता है और फिर सम्पूर्ण शरीर से वह लोटकर पुन हृदय मे पहुचता है। यही क्रम बार-बार दोहराया जाता है। जिसे आप ऊपर के चित्र के द्वारा आसानी से समझ सकते है। उनमे रुधिर परिसचरण क्रिया को पूर्ण रूप से दिखाया गया हे।

हृदय की पम्प क्रिया का अध्ययन—

यह निम्नलिखित प्रकार से किया जाता हे

(१) छाती से अपने कान को सटाकर

किसी साथी को चित्त लिटाकर अपने कान को उसकी छाती से सटाकर रखने पर जो लवडप, लवडप की आवाज सुनाई देती हे। यह हृदय धडकन हे जो पम्प क्रिया के फलस्वरूप होती हे।

(२) स्टेथोस्कोप (आला) से

इसे सीने पर बायी ओर लगाने से हृदय स्पन्दन धक-धक की आवाज मे सुनाई देता हे।

(३) नाडी स्पदन द्वारा

अपने दाये हाथ की अगुलियो को अपने बाइ कलाइ के अगूठा मूल के समानान्तर रखकर कुछ नीचे दबाये, आपको कुछ धडकता सा अनुभव होगा। यह धडकन आपकी कलाई की धमनी मे हो रही ह। यह हृदय एव धमनी के प्रकुचन दाव के फलस्वरूप होता हे। इसको नब्ज या पल्स भी कहते हे। इसकी धडकन की गति वही होती ह जो हृदय की गति की एव धडकन की। आप घडी देखकर इसकी गणना कर हृदय की गति का पता लगा सकते हे।

(४) रक्त भार मापक यत्र (स्फिग्मोमोनो मीटर) के द्वारा देखा जाता हे। यह रक्त भार दो प्रकार के होते हे। प्रथम प्रकुचन रक्तचाप हृदय के सकोच के समय ओर अनुशिथिलन रक्तचाप जो हृदय के प्रसार के समय होता हे। प्रकुचन दाव जो निलयो के प्रकुचन के फलस्वरूप उत्पन्न होता हे उसका दाव २० मि०ली० के बराबर होता हे। इसके ठीक उल्टा अनुशिथिलिन दाव जो निलय के

शेषांश पृष्ठ 78 पर
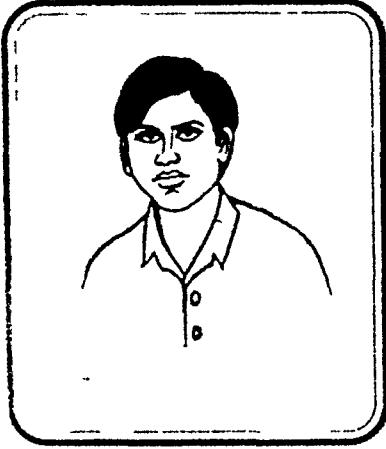
हमारे हृदय की रचना

वैद्य जलेश्वर प्रसाद आयुर्वेद रत्न
ग्रा० वहवलिया, पोस्ट- डोडा, विलासपुर (जिला- मध्यप्रदेश)

पर्याय—

हिन्दी — हृदय
उर्दू — दिल
अंग्रेजी — हार्ट (HEART)
लैटिन — कार्डियम (Cardium) आदि

पूरे शरीर के रक्त प्रवाह या रक्त सचार का केन्द्र यह हृदय रक्त पम्प करने वाला सचार का अद्वितीय यत्र हे।

यह एक विशेष प्रकार की मासपेशियो जिन्हे हृदयीय पेशिया कहते हे, से वना हुआ खोखला अग हे। हृदय मुट्‌ठी के आकार का मासपेशीय खोखली एव पेशीय भित्ति वाली तिकोनी रचना ह। जिसका ऊपर का चोडा भाग अलिद कहलाता हे। ये दो भागो मे वटा रहता हे दाया अलिद व वाया अलिद यह हृदय के आधार को वनाता हे।

हृदय का नुकीला भाग थोडा वायीं ओर होता हे व हृदय क शीष अर्थात् 'एपेक्स को वनाता हे यह नीचे का नुकीला भाग हृदय का निलय कहलाता हे।

हृदय एक झिल्लीनुमा पारदर्शी आवरण से आवृत रहता हे जिसे हृदयावरण या पेरिकार्डियम कहते हे। पेरिकार्डियम झिल्ली दो स्तरो की वनी होती हे तथा दोनो स्तरो के वीच की गुहा मे हृदयावरण द्रव भरा रहता हे। वह वाह्य आघात से हृदय की रक्षा करता हे ओर झिल्ली को चिपकने से राकता हे।

हृदय की अतरग मे स्थिति—

हृदय वक्ष गुहा के लगभग मध्य मे अधर तल पर दोनो फेफडो के वीच अग्रमध्यावकाश मे वडी वाहिका के रूप मे स्थित होता हे। इसका विस्तार ऊपर की ओर दूसरी पसली से लेकर नीचे की ओर पाचवी-छटी पसली तक हे।

हृदय का प्रमाण—

वयस्क पुरुषो मे सामान्य स्वरूप हृदय का वजन लगभग ३०० ग्राम होता हे। स्त्रियो मे ये सब माप कुछ कम होते हे। हृदय की लम्वाई लगभग १३ सेटीमीटर (साढे पाच इच) चोडाई लगभग ७ सेटीमीटर (तीन इच), मोटाई ६ सेटीमीटर (ढाई इच) होती हे।

हृदय स्पदन—

जव मा के गर्भ मे भ्रूणीय विकास हो रहा होता हे उसी समय हृदय स्पदन शुरू होता हे ओर जीवन भर चलता रहता हे।

(१) नवजात शिशु का हृदय एक मिनट मे १४० वार धडकता हे।

(२) प्रथम वर्ष के शिशु का हृदय एक मिनट म १२० वार धडकता हे।

(३) दूसरे वर्ष के शिशु का हृदय एक मिनट मे ११० वार धडकता हे।

(४) पाच वर्ष के शिशु का हृदय एक मिनट मे १०० से ६६ वार धडकता हे।

(५) दस वर्ष मे ६० से ८० वार धडकता हे।

(६) वयस्क व्यक्ति मे ७० से ८० वार धडकता हे।
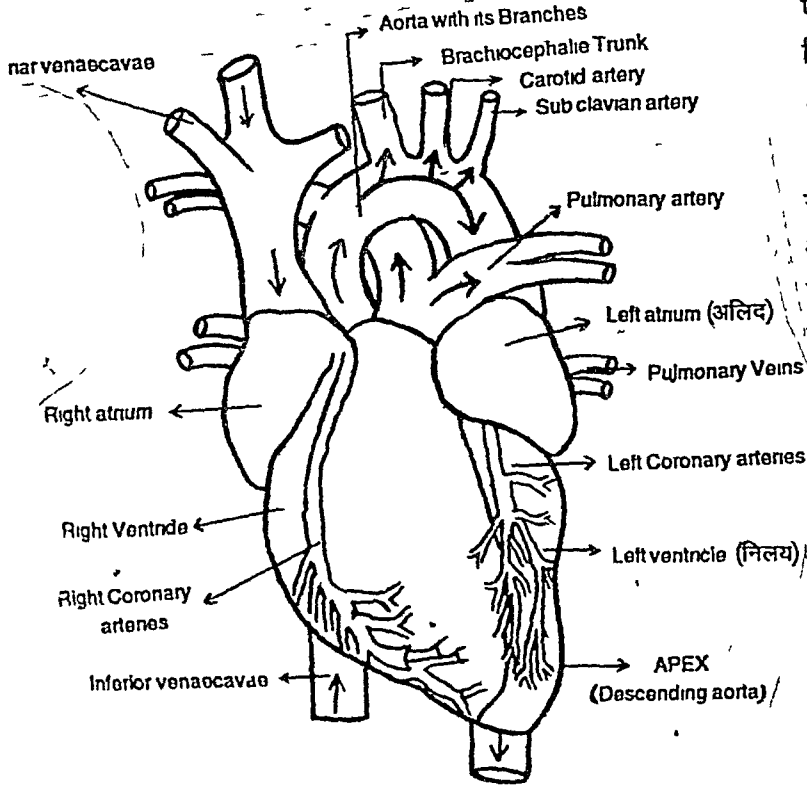
हृदय के अग्र भाग का दृश्य
Front View of Heart

बाया निलय दाहिने निलय की अपेक्षा अधिक बडा व अधिक पेशीय होता है। इसकी गुहा छोटी व लगभग गोल होती है। दाया निलय बाये निलय से अन्त निलय पट (Interventriccular Septum) द्वारा पृथक रहता है। यह पट मोटा व पेशीय होता है। निलय वितरक कक्ष या क्षेपक कोष्ठ ह। यह रक्त को अगो मे वितरित कर देता है।

विश्रामावस्था मे एक स्वस्थ मनुष्य का हृदय ७० से ८० बार धडकता है। हमारा हृदय सकोच विकास की यह क्रिया प्रति मिनट ७० बार करता ह। इस स्पदन दर को हृदय स्पन्दन दर कहते है। हृदय को विश्राम के नाम पर दो गतियो के बीच एक सेकेन्ड का लगभग अर्धाश ही विराम मिल पाता है।

प्रत्येक हृत्स्पन्द मे हृदय लगभग ७० एम एल / रुधिर शरीर मे पम्प करता ह। प्रत्येक मिनट मे लगभग ५ लीटर रुधिर पम्प करता है।

हृदय की आन्तरिक रचना—

मनुष्य का हृदय चार कक्षाओ का होता है। ऊपर दाये एव बाये दो अलिद तथा नीचे नुकीला भाग दाये एव बाये निलय होते है।

(१) अलिद —

अलिद हृदय का ऊपरी भाग बनाते है। इनका रग गहरा तथा दीवारे पतली होती है। दाये-बाये आलिद एक अनुलम्ब पट द्वारा एक दूसरे से पूर्णत अलग होते है। इस पट को अन्त अलिद (Interauricular Septum) पट कहते है।

२ निलय—

यह हृदय का निचला भाग बनाते है। ये हल्के रग के होते है ओर इनकी दीवार अलिद की अपेक्षा मोटी तथा पेशीय होती है।

(२) ग्राही प्रकोष्ठ (Receiving Chamber)—

(क) दाया अलिद—

जो वाहिनिया शरीर का रक्त वापस हृदय मे लाती है उन्हे शिरा कहते है। इस शिरा रक्त मे आक्सीजन की मात्रा कम होती है, क्योकि शरीर उसे सोख लेता है।

हृदय के दाये अलिद मे दो महाशिराओ द्वारा शरीर का अशुद्ध रक्त पहुचता है। (१) ऊर्ध्व महा शिरा (Superior Venacauee) शरीर के ऊपरी भागो मे से रक्त लाता हे और अधो महाशिरा (Inferior Venacavae) शरीर के नीचे के भागो मे से अलग-अलग छिद्रो द्वारा हृदय के दायें अलिद मे अशुद्ध रक्त पहुचाता है व कोरोनरी सायनस के द्वारा भी पहुचाया जाता हे।

अलिद के सिकुडने पर यह अशुद्ध रक्त दाहिने अलिद मे एक छिद्र के द्वारा जाता है, जिसमे एक कपाट लगा होता हे जिसे ट्राइकस्पिड वाल्व या त्रिकपर्दी कपाट अर्थात् तीन पत्रो वाले कपाट कहते है। यह रक्त को एक ही दिशा मे अर्थात् सिर्फ अलिद से निलय मे जाने देता है।

(ख) दाया निलय—

हृदय का दाया निलय अलिद की अपेक्षा मोटा होता है। इसमे अशुद्ध रक्त दाहिने अलिद से आता हं व इसमे सिकुडन होने पर रक्त फेफडो मे फुफ्फुसीय धमनी के द्वारा पहुचता ह। फेफडो से रक्त वापस दाया निलय मे नहीं आता क्योकि निलय और फुफ्फुसीय धमनी के बीच में एक फुफ्फुसी वाल्व लगा रहता है।

अशुद्ध रक्त फेफडो मे कार्वन डाई आक्साइड को मुक्त कर देता है और आक्सीजन ग्रहण कर लेता हे। रक्त शुद्ध हो जाता है। आक्सीजन युक्त शुद्ध रक्त अपेक्षाकृत अधिक लाल होता है। तव इसे धमनी रक्त कहते हे। शिराओ वाले अशुद्ध रक्त मे आक्सीजन की कमी होती हे इसलिए नीलापन होता हे उसे सिरारक्त कहते है।

(ग) वाया अलिद—

हृदय का वाया अलिद दाया अलिद की अपेक्षाकृत छोटा होता है इसमे दो जोडे अर्थात् चार फुफ्फुसीय शिराये फेफडो से शुद्ध रक्त इसमें पहुचाती हे। अलिद के सिकुडने पर शुद्ध रक्त बाये निलय मे एक छिद्र के द्वारा पहुचता हे, जिसमे एक वाल्व लगा होता हे। जिसे माइट्रल वाल्व या द्विकपर्दी कपाट कहते है। यह वाया ग्राहक कोष्ठ हे।

(ड) वाया निलय—

हृदय का वाया निलय दाहिने निलय से वडा होता ह। आर हृदय का निचला सिरा वनाता हे। जिसे एपेक्स कहत ह इसमे शुद्ध रक्त बाये अलिद से आता हे व इसमे सकुचन होने पर शुद्ध रक्त एक वडी धमनी मे जाता हे जिसे एओटा कहते है। इसके द्वारा रक्त पूरे शरीर मे फैल जाता ह। एओर्टिक वाल्व बाये निलय ओर महाधमनी के वीच एक वाल्व होता है जिसे **Aortic Valve** कहते है। यह अर्द्ध चन्द्राकार होता है। महाधमनी आगे जाकर अगो मे छोटी-छोटी धमनियो मे वटा रहता हे और केश जैसे सूक्ष्म रक्त वाहिका का जाल वनता है जिसे केशिका कहते ह। ऊतको को आक्सीजन देने के बाद रक्त ऊतको से कार्वनडाईआक्साइड ग्रहण कर लेता है व अशुद्ध हो जाता हे। यह अशुद्ध रक्त शिराओ द्वारा वापिस दाहिने आलिद मे पुन पहुचा दिया जाता है।

हृदय पेशी का पोषण—

.. हार्दिक धमनियां (Coronary Artery).

हृदय की मासपेशी को कुछ विशेष धमनियो द्वारा रक्त पहुचता है इन्हे हृद्धमनिया कहते हे। ये धमनिया हृदय से जुडी हुई मुख्य धमनी, जिसे एओरटा कहते है, निकलती हे। ये धमनियां हृदय की मासपेशी तथा हृदय के वाह्य भाग मे होती हुई अन्तत बहुत छोटी हो जाती हे। सारा रक्त हृद्धमनियो द्वारा इकट्ठा होता है। यह सारी धमनिया एक वडी धमनी मे मिल जाती है, जिसे हृद् शिरानाल कहते है। यह हृदय के दाये भाग मे खुलती है।
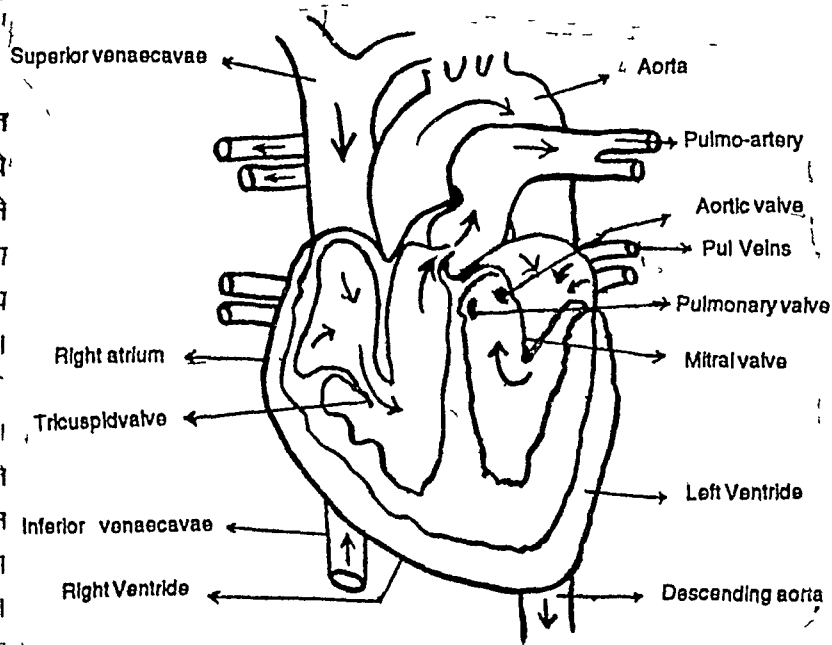
Section of the Heart (L S)
हृदग का अर्द्ध भाग का दृश्य

हृदय तन्त्रिका—

Sinoauricular node or Sinus node (S A Node) शिरा अलिद गाठ- ऊर्ध्व महाशिरा के समाप्त होने तथा दाये अलिद के पास वाले कुछ चोडापन होता हे वहीं की हृदय पेशी की दीवार मे एक गाठ जैसी रचना स्थित हे। यहा से विद्युत आवेग उत्पन्न होता हे। इस गाठ से विदयुत आवेग ग्राहक कोष्ठ की पेशियो को सिकोडता हुआ आगे **Auriculo Ventricular node (A V Node)** अलिद निलय गाठ मे जाता हे। **Sinus node** की तरह **A V node** भी एक दाये अलिद मे **S A node** के नीचे गाठ जेसी रचना हे। इससे आवेग अलिद से निलय तक थोडी देर मे पहुचता हे।

*

हृदय रोग नाशक वायु सेवन

वेद में वायु का महत्व

ब्रह्मर्षि ज्योतिषाचार्य, वैद्य रत्न कविराज प० शकरलाल गोड "शभुकवि"
दूरा, आगरा (उत्तर प्रदेश)

शुद्ध वायु का सेवन ही हृदय के रोगो का शमन करने मे पूर्ण सहायक ह तथा सुखदायक भी। वेद का वचन है—

वात अवातु भेषज ऽ शभुमयो भुनो हृदे।
प्रन आयूऽषित तारिषत्।। (सामवेद)

अर्थ स्पष्ट है- हे राजन् ! हमारे हृदय के लिए रोगनाशक, सुखदायक औषधि को वायु वहावे ओर हमारी (आयूषी) आयु को वढावे।

मनुष्यो को यह ध्यान रखना आवश्यक हे कि उत्तम स्वास्थ्य के लिए ओर आयुवृद्धि के लिए वायु सेवनार्थ जगलो, पर्वतो और वगीचो मे अवश्य जावे। सूर्योदय से पूर्व ऊषाकाल ब्राह्म मुहूर्त मे (सूर्योदय से ४ घडी पूर्व) वायु सेवनार्थ जाना विशेष लाभप्रद हे। राज वल्लभ निघण्टु मे स्पष्ट हे—

ब्राह्मे मुहूर्ते उत्तिष्ठेत् स्वस्थो रक्षार्थमायुष ।
शरीर चिन्ता निवृत्य मेत्रं कर्म समाचरेत्।।

गाव नगर से एक दो मील जगल मे जहा स्वच्छ वायु मिलती हो सेवनार्थ जाना चाहिए। दीर्घायु चाहने वाले लोग नित्य नियम करके लगभग पाच मील वायु सेवनार्थ गाव से वाहर जाना चाहिये। इस काल को वेद मे उत्तम समय कहा गया हे। यथाह —

यदद्यसूरउदिते नागा मित्रोअर्यमा।
सुवाति सविता भग । (सामवेद)

अर्थात् सूर्योदय होने तक ही मित्र, अर्यमा, सविता भग नामक आकाशस्य वायु भेद निर्दोप रहते ह। आर देखिये—

सुप्रावीरस्तु सक्षय प्रनुयामन्त्सुदानव ।
येनोअ होतिपिप्रति। (सामवेद)

उपरोक्त वायु हमारा आलस्य आदि पाप दूर करते ह। ऋग्वेद के वायु सूक्त मे देखिये—

वात आवातु भेषज शभु मयो भुवाहृदे।
प्रणआयूषि तारिपत्।।
उतवातपिताऽसिनउत भ्रातोत न सखा।
सनोजीवातवे कृधि।। (ऋग्वेद १०/१८६/१/२/३)
यददोवात ते गृहेऽमृतस्य निधिर्हित ।
ततोनोदेहिजीवसे।। (ऋग्वेद)

विशेष—

(१) वात भेषज आवातु।।

May Vata Oreathe his healing balm on us

वायु अपने रोग नाशक गुणो को हमे प्रदान करे।

(२) हृदेमयो भुव

Filling our heart with health and joy

वायु हमारे ह्रदयो को आरोग्य प्रसन्नता ओर से परिपूर्ण करे।

(३) न आयूषि प्रतारिषत्

May the prolong our days of life

वायु हम सब की आयु दीर्घ बनावे।

(४) हे वात ! न उतंपिताऽसि

O Vata Thou art our protector

हे वायु ! तू हमारा रक्षक, पालनकर्ता है।

(५) उत भ्राता उतन सखा

Indeed Thou art a Brother and friend

वास्तव मे तू हमारा भाई ओर मित्र हे।

(६) स न जीवातवेकृधि

(So give us strength that we may live long)

वह वायु हमे ऐसी शक्ति प्रदान करे कि जिससे हम दीर्घायु प्राप्त कर सके।

(७) सत् अद ते गृहे अमृतम्य निधि हित । तत् न जीवसे देहि।

(O Vata ! the store Immortality is there in Thy home, give us there of that we may live long)

हे वायो ! तेरे घर मे ही अमरत्व का कोष हे। उसमे से थोडा हमको प्रदान करो, जिससे हम दीर्घायु प्राप्त कर सके।

वेद मे वायु का महत्व विशुद्ध रूप मे उत्तम रीति से वर्ण न मे आया हे। इससे सिद्ध हे कि परमात्मा ने हमारे लिए अमृत का समुद्र प्रदान किया हे। शुद्ध वायु ही अमृत हे। शुद्ध वायु के सेवन से दीर्घायु उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होती हे। अथर्ववेद का कथन –

अग्निर्मागोप्ता परिपातु विश्वत उद्यन्त्सूर्योनुदता मृत्यु पाशान्।

व्युच्छप्तीरुषस पर्वताध्रुवा सहस्र प्राणा मप्या यतताम्।।"

(१७/६/३०)

अर्थ स्पष्ट हे कि अग्नि सब प्रकार की मेरी रक्षा करे, उदय होने वाला सूर्य मृत्यु के पाशो को दूर करे। उष काल ओर स्थिर पर्वत सहस्रो प्रकार से मेरे अन्दर प्राणो की वृद्धि करे। पहाडो के शुद्ध वायु से दीर्घायु होता हे। यह ध्वनि इस मत्र से निकल रही है। यह विशेष अनुभव से सिद्ध हे कि पहाडो पर घूमने फिरने वाले दीर्घजीवी होते हे। अत. पहाडो तथा जगलो मे नित्य प्रात जाना चाहिए। सुगन्धित पदार्थ (वनौषधि) जलाकर वायु शुद्ध करना चाहिए। प्राचीनकाल मे गन्दी हवा नहीं थी, प्रदूषण को कोई नहीं जानता था। प्राचीनकाल मे हमारे पूर्वज प्रात साय अग्नि होत्र अपने अपने स्थानो पर शुद्ध वायु के लिए करते थे। शुद्ध वायु के लिए हम यहा यज्ञ चिकित्सा विधान ऋतु अनुसार लिख रहे है जिससे लाभ उठावे।

(१) वसन्त ऋतु (चैत्र, वैशाख)–

यज्ञ से अनेको रोगो का सहार होता हे। इस वसन्त ऋतु मे निम्न वनोषधियो से अग्निहोत्र करावे। छरीला, तालीसपत्र, पत्रज, दाख, लज्जावती, शीतलचीनी, कर्पूर, चीड, देवदारु, गिलोय, अगर, तगर, केसर इन्द्रजा गुग्गुल, कस्तूरी, तीनो चन्दन, जावित्री, जायफल, धूप, सरसो, पुष्करमूल, कमलगट्टा, मजीठ, वनकचूर, दालचीनी, गूलर की छाल, तेजपत्र, शखपुष्पी, चिरायता, खस, गोखरू, खाड, गोघृत, ऋतुफल, भात या मोहन भोग, जाड की समिधा।

(२) ग्रीष्म ऋतु (ज्येष्ठ, आषाढ)–

ग्रीष्म ऋतु मे मुरा, वायविडग, कर्पूर, चिरोजी, नागरमोथा, पीला चन्दन, छरीला, निर्मली, शतावर, खस, गिलोय, धूप, दालचीनी, लवग, कस्तूरी, चन्दन, मजीठ, शिलारस, केसर, जटामासी, नेत्रवाला, इलायची बडी, उन्नाव, आवले, मूग के लड्डू, ऋतुफल, चन्दन चूरा आदि।

(३)वर्षा ऋतु (श्रावण, भाद्रपद)–

वर्षा ऋतु मे काला अगर, पीला अगर, जो, चीड, धूप, तगर, देवदारु, गुग्गुल, नकछिकनी, राल, जायफल, मुण्डी, गोला, निर्मली, कस्तूरी, मखाने, तेजपात, कर्पूर, वनकचूर, बेल, जटामासी, छोटी इलायची, वच, गिलोय, तुलसी के बीज, वायविडग, कमल मुण्डी, शहद, चन्दन श्वेत का चूरा, ऋतु फल, नाग केशर, ब्राह्मी, चिरायता, उडद के लड्डू, छुहारे, शखाहुली, मोचरस, विष्णुक्रान्ता, ढाक की समिधा, गोघृत, खाड, भात, ऋग्वेद के दशवे मडल के १०१ वे सूत्र मे १ से ५ तक राजयक्ष्मा, फुफ्फुस विकार सम्वन्धी मत्र है। इनका हवन करने से इस रोग से छुटकारा पाया जा सकता है। एक मत्र यहा दिया जा रहा

नहीं जा रहा है कि रक्त मे मिश्रित इन तीनो गुणो के द्वारा हृदय म होकर वुद्धि पर प्रभाव डालने से जो विचार मन से सपृक्त होकर मस्तिष्क मे जाते हे, उससे पाचो ज्ञानेन्द्रियाँ मन वुद्धि से प्रभावित होती ह, जिनका कि वर्णन चरक सूत्र स्थान अध्याय मे किया गया हे और जिसको हम पम्प वतला रहे हे, वहा रक्त का प्रपात होने से वनने वाली विद्युत शक्ति के द्वारा यह सभव होता ह। वसे हृदय के साथ जुडने वाली धमनियो का स्पष्ट वर्णन करने पर तथा दोनो दोप यह धमनिया शिराओ का वर्णन करने के कारण हम हृदय के वास्तविक परिचय को नकारते ह, यह युक्ति सगत नहीं होगा।

इस सम्वन्ध मे चरक चिकित्सा स्थान के अध्याय ६ के ५ वे श्लोक की टीका मे चक्रपाणि का निम्न कथन हे—

"स्रोतासि च मनोवहानीत्यनेन हृदय देश सवधि धमन्यो विशेपेण मनोवहा दर्शयति" इससे धमनियो का प्रकरण आने से स्पष्ट ही हे। 'अतत्वाभिनिवेश' नामक रोग के उन्माद प्रकरण मे ही चरक द्वारा वर्णित निम्न कथन इसकी आर पुष्टि करता ह—

रजस्तमो मा युद्धाभ्या वुद्धा मनसि चावृते।
हृदये व्याकुले दोपैरथ मूढोऽल्प चेतन ।।
विपमा कुरुते वुद्धि नित्यानित्ये हिताहिते।
अतत्त्वाभिनिवेश तमाहु राप्ता महागदम्।।

तथा उन्माद प्रकरण मे ही चरक चि० ६ श्लोक ८ देखे तो स्पष्ट हो सकता ह जो निम्न हे—

धमनीभि श्रिता दोषा हृदय पीड्यन्ति।
सपीड्यमानो व्यथिते मूढो भ्रातेन चेतसा।।

चरक शारीर अध्याय ६ मे पूर्व मे किसी अग का निर्माण हुआ इस विचार विमर्श मे शिर को कुमारशिरा भारद्वाज ने स्वीकार किया हे और हृदय को काकायन वाह्लीक ऋषि ने इससे यह साबित होता ह कि शिर के अतिरिक्त हृदय ह आर उसी को चेतना स्थान वताया गया ह।

वास्तव मे हम आधुनिक विज्ञान का अनुकरण करके अपने शरीर सम्वन्धी आध्यात्मिक तत्वो से अनभिज्ञ होते जा रहे ह।

"रक्त जीव इति स्थिति" से रक्त के माध्यम से सत्व, रज, तम की परिणिति से अनभिज्ञ होने से स्पर्शेन्द्रिय द्वारा सपार्श होने पर ज्ञान की स्थिति होने पर भी तत्व अवयवो को ज्ञान का कारण मान वैठत ह। इसका अभिप्राय यह नहीं हे कि योगियो के द्वारा शरीर के चिन्तन मे की जाने वाली योगिक क्रियाये व्यर्थ हे यह भिन्न मार्ग ह। मूलत मस्तिष्क को इसका उत्पत्ति स्थान नहीं मान सकत जसा कि प्राकृत कर्मो के विषय मे चरक ने लिखा ह—

दर्शन पक्ति रूप्मा च क्षुत्तृष्णा देह मार्दवम।
प्रभा प्रसादो मेधा च पित्त कर्माऽविकारणम्।। चरक

पाण्डुरोग की समृद्धि मे भी कामादि से उपहत चित्त वाले के हृदयस्थ पित्त कुपित होकर रोग उत्पन्न करता ह, वहा काम "जेसा खावे अन्न वसा हो मन" की लाकिक कहावत भी अन्न की परिणिति रक्त रूप से होन पर उसम सपृक्त सत्व रज तम के परिणाम स्वरूप होने वाली क्रियाये ही मानसिक क्रियाए वहा रज आर तम को मानसिक दोष माने हे। भावमिश्र ने लिखा हे—

धमन्यो नाभितो जाता चतुर्विंशति सख्यया।
देशोर्ध्वगा दशाधोगा शेषास्तिर्म गाता मता ।।

तत्रोर्ध्वगा शव्द स्पर्श रूप रस गन्ध प्रश्वासोच्छ्वास जृम्भित श्रुत हसित कथित रुदित गीतादि विशेषानभिवहन्तय शरीर धारयन्ति तास्तु हृदय गतास्त्रिधा विभप्यन्ते। आदि तथा वात पित्त कफ वह शिराये इस विपय पर विचार करना चाहिए। मदात्यय प्रकरण में इस प्रसग को निम्न रूप मे कर दिया हे—

रस वातादि मार्गाणा सत्त्व वुद्धीन्द्रियानाम्
प्रधानस्योजस श्चेव हृदय स्थान् मुच्यते।।
अतिवीतेन्न मद्येन विहतेनोजसा च तत्।
हृदय याति विकृति तमस्या ये च धातव ।।

(चरक २४/३१/३६)

अस्तु परमपूज्य गुरु जी श्री सुरजन दास जी महाराज द्वारा "हृ" से आहरण करने वाले तथा "द" से देने वाले अवयव का वोध होने से "ऊर्ध्व हृदय" तथा वक्षःस्थ हृदय दोनो का वोध हो सकता हे, वहा मस्तिष्कगत का सज्ञा को लेना व चेष्टाओ को देना हे तथा वक्ष स्थ का रक्त लेना व देना ही यह पूर्व मे ही स्पष्ट कर दिया गया हे कि जो भी विचार वनेगे रक्त सयुक्त रज, तम से ही वनेगे। चूकि रोगो के प्रकरण मे हमारा चिन्तन विपय वक्ष स्थल ही ह, अत उसकी विकृति के वारे म विचार किया जा रहा हे।

हृद्रोगो का जो निदान वतलाया गया है उसम सर्वज्ञात

अति द्रव, अतिरिक्त स्निग्ध, अहृद्य, अतिलवण, अकाल भोजन, अति भोजन, असात्म्य भोजन, श्रम, भय, उद्वेग, अजीर्ण व कृमियो को समाविष्ट किया है। इन कारणो मे अहृद्य निम्बादि द्रव्य होगे तथा अकाल भोजन से रस पर असर पडेगा, याम मध्ये न भोक्तव्यम्, याम मध्ये न लघयेतु'' वाली स्थिति ही वनेगी, समय से पूर्व रसोत्पत्ति दोषपूर्ण होगी, कारणातिक्रमण से रक्त क्षय होगा। अति भोजन से गुरुत्व होगा तथा विसूचिका अलसक आदि रोगो की उत्पत्ति आम सचयपूर्वक होगी। आम को विष की सज्ञा दी हे यह विष सीधा हृदय पर असर डालता हे। इसकी सम्प्राप्ति वमन विरेचन द्रव्यो की कार्मुकता के वारे मे जो वनती है, वह ही वन सकती हे, जेसा कि निम्न रूप से वतलाया गया हे

''तयोष्णतीक्ष्ण सूक्ष्म व्यवायि विकाशीन्यापधानि स्वदीर्येण हृदयमुपेत्य धमनी रनुसृत्य'' आदि चरक कल्प स्था० ५। विसूचिका मे हृदय की पीडा वतलाई गई हे। यथा—
मूर्च्छाति सारो वमथु पिपासा शूलो भ्रमोद्वेष्टन जृम्भ दाहा वेवर्ण्य कम्पो हृदय रुजश्च भवन्तितस्मा शिरश्च मद कोष्टाश्रित वात से तथा आमाशय स्थित वात से हृद्रोग होगा। च० चि० २८/१४ व १७

असात्म्य भोजन—

यहा भोजन उपलक्षण मात्र है सब प्रकार का आहार इसमे समाविष्ट हे अत पान भी आवेगा जो कि उदाहरण स्वरूप निम्न हो सकते है। पानी के शीतोष्ण व आश्रय भेद से एक प्रकार के पानी पर दूसरा पानी जेसा कि कहा है—

''पानीय नतु पानीये पानीये न्य प्रदेशजे'' आदि मासो मे गोमास, घृतो में भेड का घी वैसे ही भेड का दूध, मधु व उष्ण पदार्थ, दूध व अम्ल एक साथ दूध व मछली एक साथ आदि।

श्रम, भय आदि वात प्रकोप करने के कारण बनेगे। वेसे ही उद्वेग जो निम्न रोगो मे आसानी से देखा जा सकता हे।

मदात्यय से तात्पर्य है यथा—

''शरीर दु ख वलवत् समोहो हृदय व्यवस्या आदि चरक चि० २४/१०१

छर्दि— वातज़ छर्दि मे हृदय व्यथा, व छर्दि के उपद्रवो मे हृद्रोग की उत्पत्ति होती है।

अजीर्ण से आम की उत्पत्ति होकर आम के विष सज्ञक होने के कारण विषवत् हृदय पर भी असर डालेगा। जैसा कि चरक ने विमान स्थान मे बतलाया हे—

''विरुद्धाध्यशनअजीर्णाशनशीलिन पुनरामदोषमामविषमाक्षते भिषग् विष सदृश लिगत्वात्'' चरक विमान २/१२

अजीर्ण के कारण रस का जो आचूषण होगा, उसके लिए यान्त्रिक इक्षु रस का उदाहरण हो जैसे उसमे प्रथम रस स्वच्छ रहता है और बाद मे वह सान्द्र हो जाता है। उसी प्रकार अजीर्ण से सचित मल से जो सान्द्र रस आवेगा, उससे कोलस्ट्रोल की वृद्धि होगी, शक्कर आदि इसके उदाहरण् अनायास उपलब्ध है। अतिस्नेह से भी ऐसा होगा।

हृद्रोग की सख्या जो वताई गई है उसके अलावा भी उक्त वर्णित रोगो मे हृदय सम्बन्धित विकृतिया सम्भव है जैसे—

तृष्णा मे रसाभाव के कारण हृद्विकृति यथा—

देहोरसज़ोऽम्बुभवो रसश्च तस्य क्षमाच्च तृष्येद्धि दीन स्वर प्रताम्यन सशुष्क हृदय गल तालु। चरक चि० २२/१६ वायु के क्षीण होने पर कफ ओर पित्त के द्वारा भी हृद्रोग हो सकता है— यथा

समीरणे परिक्षीणे कफ पित्त समत्त्वगम्
कुर्वीत सन्निरुन्धानो मृद्वग्नित्व शिरोग्रहम्
निद्रा तन्द्रा प्रलापच हृद्रोग गात्र गौरवम्।।
च० चि० सू० १७/५१-५२

जेसा कि तृष्णा के प्रकरण मे बताया जा चुका हे रस क्षय से हृद्रोग का चरक ने निम्न वर्णन भी किया है।

सहते शव्द नौच्चेर्द्रवति शूल्यते।
हृदय ताम्यति स्वल्पचेष्टस्यापि रस क्षये।।
चरक सूक्त १७/४४

कृमिज ग्रन्थि के अलावा हृदय मे विद्रधि भी हो सकती है जैसा चरक ने वर्णन किया है—

अम्ल शरीरे मासासृगाविशन्ति यदा मला।
तदासजायते ग्रन्थि गम्भीरथ सुदारुण।।
हृदये क्लोम्नि यकृति प्लीहि कुक्षो च वृक्कयो।।
चरक सूत्र १७/१३-१४

अकेले कषाय रस के अति भोजन से हृदय पीडा होगी यथा- स एव गुणा प्येक एवात्यर्थमुपयुज्यमान आस्य

शोपयति हृदय पीडयति। चरक सू० २६/४३

रोहिणी के सर्पप तेल भ्रष्ट करके सेवन से धमनी प्रतिचय भी कारण ह। यथा—

रोहिणी शाक कपोतान् वा सर्पप तेलभ्रष्टान् मधुपमोभ्याम् सहाय्यवहत्" आदि हन्मोह व हृद्दव, जिनका वर्णन चरक सूत्र स्थान अ० २४/११ मे किया गया है उन पर भी विचार आवश्यक ह।

हृदय म वात प्रकोप म जो अशुमती शालपर्णी का प्रयाग वतलाया गया ह वह केवल वातज हे—

हृदिप्रकुपिते सिद्धमशुमत्या पयोहितम्" चरक चि० वात व्याधि ६६ उदावर्त मे जसा कि चरक ने वताया ह—

क्रमादुदावर्तमत गुधोरम्

रुग्वस्ति हृत कुक्षक्ष्युदरेष्वमीक्ष्ण आदि चरक चि० २६ जिसका कि वर्णन सि० स्थान म ६/१२-१५ मे ह।

हृद्रोगो की सक्षिप्त चिकित्सा—

चरक सिद्ध स्थान के त्रिमर्मीय स्थान म हृदय वस्ति व शिर की विशेषत वायु से रक्षा करनी चाहिए। यथा—

किन्त्वेतानि विशेषताऽनिलाद्रक्ष्माणि अनिला पित्तकफ समुदीरणे हेतु प्राणमूल च स वस्ति कर्मसाध्य तम तस्मान्न वस्तितरम किञ्चित् मर्म पहिपालनमास्ति। वात व्याधि चिकित्सा च / चि० सि० ६/७

अत वात व्याधि की चिकित्सा विशेषकर वस्ति चिकित्सा करनी चाहिए। त्रिमर्मीय की वतलाई हुई चिकित्सा विशेष लाभप्रद हे। "अम्ल हृद्यानाम्' सिद्धान्त के अनुसार मातुलुग रस के साथ या अन्य अम्ल के साथ [illegible] हिरुत्तर चूर्ण जिसका कि विधान त्रिमर्मीय चिकित्सा म ह।

हृदयगत वात की शालपर्णी को दूध मे शृत करके देने का जो उल्लेख ह वह एकाषध योग मे सफल सावित हुआ ह। [illegible] दशमूल क्वाथ भी इसमे लाभदायक हे। विश्वेश्वर [illegible] लाभ हुआ ह + नागार्जुनाभ्र लाभप्रद ह। मुक्ता आदि के प्रयोगो म लोगो की भ्रान्ति निर्माजित होने की ह, [illegible] रूप से प्रयोग न करके मिश्रित योगो मे उपयोग करना चाहिए।

सकोचावस्था म प्रसारणी का उपयोग करना चाहिए। अर्जुन इसके लिए निर्विवाद ह एक उक्ति ह कि—

अर्जुनस्य प्रतिज्ञ द्वे न दन्य न च पलायनम"

जिस प्रकार पाडव अर्जुन की प्रतिज्ञा न दीनता का प्राप्त होना तथा मेदान न छोडना वसे ही अर्जुन वनस्पति के द्वारा न हृदय को पलायन (हार्ट फेल नहीं होता ह)

पचकाल का उपयोग लाभदायक हे। चरक मे दश हृद्य वस्तुए वतलाई ह जो निम्न ह।

आम्राम्रातक निकुच करमर्द वृक्षाम्ल[illegible] वेतस कुवल वदर मातुलुगानी तिदर्शमानि हृद्यानि। चरक सूत्र अ ४/[illegible]

एरण्ड तेल— एरण्ड तलम् वातासृग गुल्म हृद्रोग हर परम्। सा० — सस्नेह दीपन वृष्यम विपाके मधुर हृद्य रोचन विश्वभेषजम् ।

इसी प्रकार अजवायन, नारगी, दाडिम, गहू आदि'

हृद्रोग मे अपथ्य—

शोक, चिन्ता इससे हृदयस्थ रस की कमी होकर शाथ तक हो सकता ह। यथा—

यदा पुरुषो शोक चिन्ता परिगतहृदयो भवति तदा तस्य हृदयस्था रस क्षयमुपति स तस्योपक्षयात शोष प्राप्नोति।। चरक नि० ६ श्लोक ७ के नीचे गधाश

वातज रोग मे निम्न कारणो का त्याग करना चाहिए। यथा—

शाकोपवास व्यायाम रूक्ष शुष्काल्प भोजनं।

चरक सूत्र [illegible]

वायुराविश्य हृदय जनयत्युत्तमा रुजम।।

पित्तज मे उष्णाम्ल लवणक्षार कटुकाजीर्ण भोजन मद्य क्रोधातपश्चाशु हृदि पित्त प्रकुप्यति।।

कफज में अत्यादान गुरु स्निग्धमचिन्तन मचेष्टनम निद्रासुख चाभ्यधिक कफ हृद्रोग कारणम।।

चरक सूत्र १७

अपथ्य— मे इसके अलावा भेड का दूध व घी, सरसों शाक, आलू, गोमास त्याग दे।

*

आधुनिक जीवन पद्धति और हृदय रोग

डा० हरजिंदरमीत सिंह एम० डी०
राविया आयुर्वेदिक सेंटर, डोगर बस्ती-८, (लेफ्ट),
फरीदकोट - १५१२०३ पंजाब

चिकित्सा विज्ञान और कवि धारा मे उपयोग किये जाने वाले दिल शब्द के अर्थो मे बहुत अन्तर है। चिकित्सा विज्ञान के पदार्थ तक सीमित होने के कारण दिल शब्द का उपयोग एक सीमित अर्थ तक शरीर मे स्थित उस अंग से होता है जो शरीर मे रक्त का संचार करता है।

लोक कवि धारा में दिल का अर्थ किसी अंग विशेष की बजाय मनुष्य के पूरे अस्तित्व के तौर पर किया गया है। लोक कवि धारा का दिल शब्द किसी अंग विशेष की बजाय चेतना को रूपमान करता है। आयुर्वेद मे भी हृदय को चेतना का स्थान माना गया है। इसी कारण लोक कवि धारा का दिल आयुर्वेद चिकित्सा सिद्धान्तों के ज्यादा करीब है।

पंजाबी शायर सुरजीत पात्र ने अपने एक गीत म कहा है कि 'दिल ही उदास है बाकी सब खैर है बाकी खैर किस बात की है' यह तो पात्र ही जाने। पर मेरी समझ के अनुसार जब दिल ही उदास हो गया हो तो बाकी खैर किसी बात की रहेगी ही नहीं। कहने का भाव है कि दिल व्यक्ति की सम्पूर्णता को प्रगटाने वाला शब्द है। चिकित्सा विज्ञान मे हृदय रोगो की बात करते हुए अगर हम डाक्टर लोग इस बात को ध्यान मे रखे तो निश्चित ही बहुत से हृदय रोगो का इलाज बहुत आसान हो जाता है। जैसे पहले लिखा गया है कि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान मे दिल की बात सिर्फ मास के उस अंग तक सीमित होती है जो शरीर मे रक्त का संचार करता है। दिल सिर्फ मास का लोथड़ा या पम्पिंग मशीन ही नहीं है यह मनुष्य की सम्पूर्ण चेतना के बहाव को प्रकट करने वाला एक जीता जागता माध्यम है। इसी कारण ही आधुनिक चिकित्सा विज्ञान से सम्बन्धित हृदय रोगो के विशेषज्ञो द्वारा घोषित किये गये हृदय रोग आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान की गहरी समझ रखने वाले वैद्यों के द्वारा हृदयरोग न होकर और कोई छोटी सी शारीरिक सामाजिक या मनोवैज्ञानिक बीमारी बन जाती है।

यहा एक मिसाल देना उचित होगा। कुछ महीने पहले की बात है पंजाब के जिला मोगा के शहर [illegible] विजय कुमार और उनकी पत्नी मेरी [illegible] न होने की समस्या के समाधान के लिए आ[illegible]

१२ साल हो चुके थे। पहले साल मे दो वार गर्भपात हो जाने के वाद फिर गर्भ नहीं रहा। आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान पर मेरी पुस्तको मे रोग निदान का आधार आयुर्वेद के मूल सिद्धातो के अनुसार मनोशारीरिक होने के कारण इन पुस्तको की पजाव के साहित्यिक क्षेत्रो मे काफी चर्चा हुई है। यह सज्जन भी मेरी पुस्तको के इस पक्ष से प्रभावित होकर ही इलाज के लिए आये थे। उनकी वीर्य टेस्ट रिपोर्ट नार्मल थी। पत्नी को माहवारी ठीक आ रही थी। डाक्टरो ने गर्भ ना रहने का कारण वीज वाहिनी का वद होना वताकर आपरेशन की सलाह दी थी।

मेने पहले उसके साथ सिटिग ली। इस सिटिग के दोरान मैने उसके ओर उसकी पत्नी के सेक्स सम्वन्धो के वारे मे कुछ सवाल पूछे। मेरे सवालो के जवाव मे उसने वताया कि शादी के कुछ महीने के वाद पत्नी सभोग के शिखर सुख तक पहुचती थी पर जव से दो वार गर्भपात हो जानें के वाद उसको सभोग के समय किसी तरह का कोई आनन्द या शिखर सुख प्राप्त नहीं होता हे।

इसके वाद मेने उसकी पत्नी को वुलाकर उसके साथ सिटिग ली। वह देखने मे सुन्दर और स्वस्थ दिखाई दे रही थी। पढी लिखी होने के कारण मने उससे स्पष्ट शव्दो मे कह दिया कि गर्भ का सीधा सम्वन्ध सेक्स से होता हे। मेरे प्रश्नो के जवाव सहज होकर देना। मेने उससे पहली वार हुए गर्भपात के समय खाये किसी विशेष भोजन या किसी ओर घटना के वारे मे पूछा तो उसने वताया कि शादी के वाद जव मुझे पहली वार गर्भ रहा तो मेरी तवीयत एकदम विगड गयी। कभी उल्टिया आने लगती तो कभी काम करने को मन नहीं करता, सारा मेरा यह हाल देखकर यह (पति) मुझे गाली देना शुरू कर देते कि तेरे को अनोखा गर्भ ठहरा हे। सारा दिन मरे कुत्ते की तरह पडी रहती हो। रोटी तेरी मा गर्म करके देगी। एक रात इन्होने मुझे गाली दी तो रात को खून आना शुरू हो गया। डाक्टर के पास गये तो उसने गर्भ गिरा दिया। दो महीने वाद मुझे फिर गर्भ रहा तो हालात फिर पहले वाली हो गयी। रोज-रोज इनकी गाली सुनकर मेरे मन मे आता कि इससे तो अच्छा हे कि मुझे गर्भ ही ना ठहरे। दो महीने वाद मुझे फिर गर्भपात हो गया। उसके वाद फिर मुझे कभी गर्भ नहीं ठहरा। माहवारी के दिन छोडकर हम तकरीवन हर रोज संभोग करते हे। सभो के समय मुझे कुछ भी प्रतीत नहीं होता न कोई आन न कोई शिखर सुख। पिछले ११ साल से अग्रेजी डाक्ट का इलाज चल रहा है। पर गर्भ नही रह रहा ह।

रोग का निदान हो चुका था। मैने दोनो को इकट्ठा विठाकर समस्या के वारे मे वताया और ओषधि चिकित् के साथ मनोचिकित्सा शुरु कर दी। पति को कहा कि आ के वाद सभोग तव करना जव पत्नी खुद सभोग के लि कहे।

दो महीने वाद ओषधि और मनोचिकित्सा के नती प्राप्त थे। सभोग के समय पत्नी को आनन्द की पूर्ण अनुभू प्राप्त होनी शुरू हो गयी। तीसरे महीने उसे गर्भ ठहर ग था। मेरी मनोचिकित्सा की विधिया वहुत ही प्रेक्टिकल होत है। मै सचेत रूप मे रोगी के चल रहे जीवन मे जानबू कर ऐसी अवस्था पैदा कर देता हूँ जो उसकी वन चुक आदतो के विरोध मे हो।

मिसाल के तौर पर गर्भ न ठहरने की समस्या के इला के लिए आये रोगियो के लिए मेरी मनोचिकित्सा ऐसी होत हे। जेसे अगर पति पत्नी रोज संभोग की आदत का शिका हो तो उनको तीन महीने सेक्स से विल्कुल परहेज कर की सलाह देता हूँ। महीने दो महीने वाद सभोग कर वाले पति पत्नी को हर रोज सभोग करने को क देता हूँ।

आधुनिक दौर मे फैले पेट गेस, माहवारी, गर्भाश शोथ, मधुमेह, श्वास और हृदय रोगो का इलाज ओषधि और मनोचिकित्सा की विभिन्न विभिन्न विधियो द्वा करता हूँ।

आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान मे रोगो को समझने की स दिशाओ मे काम किया गया है। देश, काल, प्रकृति औ सत्व (मन) आदि को समझने की जितनी जरूरत है उत पहले कभी नहीं थी। मोटे तौर पर हम आयुर्वेदिक चिकित् सिद्धान्तों के अनुसार रोगो को दो भागो मे वाट सकते है पहिला शरीर क्रिया प्रणाली का विगाड और दूसरा उ विगाड के कारणो के पीछे काम करने वाले शारीरि मानसिक ओर सामाजिक कारण। जेसे आजकल वावू लो का गेस रोग उतना शारीरिक नहीं जितना मानसिक पा

गता है। क्योकि चाहते न चाहते हुए देर रात तक दफ्तरी ाम करते रहना, न कबूल की जाने वाली स्थितियो मे ाम करते रहना, मन नाम की मशीन को इस तरह प्रभावित रता है कि व्यक्ति मानसिक ओर सामाजिक परिस्थितियो ; कारण पैदा हो रहे तनाव को शारीरिक बीमारी मानकर ाक्टरो के चक्कर मे फस जाता हे। कभी गेस ट्रबल है, भी ब्लड प्रैशर कम है, कभी ज्यादा हे, कभी यूरिक् ऐसिड नता है और कभी दर्द की शिकायत है।

आजकल सच मे ही कामयाब डाक्टर बनने के लिए ागर मनुष्य को तदुरुस्त बनाना है तो चिकित्सा विज्ञान े साथ मनोविज्ञान और सामाजिक विज्ञान की समझ भी ारूरी है।

मन, शरीर और समाज तीनो एक ही कडी के हिस्से ; जो अलग-अलग दिखाई देते हुए भी एक होते हे और क दिखाई देते हुए भी अलग-अलग होते हे। शरीर तो ेतना के प्रकट कारण का माध्यम है। अगर चेतना का ाभाव निर्मल नहीं हे तो शरीर निर्मल नहीं रह सकता।

जन्म के बाद व्यक्ति जिस परिस्थिति मे विचरता हे ह परिस्थिति व्यक्ति के मन और शरीर दोनो को प्रभावित रती है। अगर बाहरी परिस्थिति पर काबिज हुआ विचार ोर आहार व्यवहार हमारी चेतना के अनुकूल नहीं है तो मारे शरीर की कुदरती क्रिया प्रणाली का सतुलन बिगड ाता हे। ओर मनुष्य तरह-तरह की शारीरिक और ानसिक समस्याओ मे फस जाता हे।

मनुष्य ओर समाज के आपसी रिश्ते का अब तक जो ाध्ययन हुआ हे उससे दो धाराये उभर कर सामने आयीं । एक धारा हे मनोविज्ञान और दूसरी समाज विज्ञान।

दोनो धाराओ से सम्बन्धित वेज्ञानिको ने अपने अपने सेद्धान्तो के अनुसार अपने अपने विज्ञान को दुरुस्त ठहराने ा प्रयत्न किया हे। मनोविज्ञान से सम्बन्धित वैज्ञानिक सले की जड मनुष्य के मन मे तलाशते हे ओर सामाजिक ज्ञानिक समाज मे।

व्यापक नजरिये से देखना हो तो ये दोनो धाराये ही धूरी हे क्योकि मनुष्य ओर समाज का आपसी रिश्ता नख ोर मास जैसा हे। मनोवेज्ञानिक यहा मसले के सोमाजिक पक्ष से आखे बद कर जाते है वहीं सामाजिक वेज्ञानिक मनुष्य को सामाजिक परिस्थितियो की कठपुतली समझकर मनुष्य की सहज प्रवृत्तियो को भूल जाते हे। इस सिद्धान्त की अस्पष्टता के कारण चिकित्सा विज्ञानी अपने आप को शरीर क्रिया प्रणाली तक समेट कर रह जाते हे।

असल मे मनुष्य अपना जीवन का सामाजिक धरातल पर जीता है और व्यक्तिगत धरातल पर भोगता हे। यह भोगना ही असल मे बीमारी की जड होता है। इस कारण इन दोनो विज्ञानो मे एक सजीव तालमेल की जरूरत जितनी आज हे उतनी पहले कभी भी नहीं थी। क्योकि शिक्षा के प्रसार से आज मनुष्य की सवेदनशीलता पहले के मुकाबले अत्यत विकसित हो चुकी हे।

जिस युग ओर जिस समाज मे मनुष्य पेदा होता हे उस युग और उस समाज ने मनुष्य को अपनी चाल चलाने के लिए अपने नियम ओर कानून वनाये होते ह। अपनी अलग-अलग सस्थाओ के जरिये समाज मनुष्य को कदम कदम पर अपने अनुसार वनाने का जो यत्न करता हे वह मनुष्य के जीवन का सामाजिक पक्ष है। इस धरातल पर जीते हुए मनुष्य पर जो गुजरती है जिस तरह प्राप्त सामाजिक परिस्थितियो मे मनुष्य अपनी सामाजिक मानसिक ओर शारीरिक जरूरतो की पूर्ति या अभाव महसूस करता हे। वह उसके जीवन का व्यक्तिगत पक्ष होता हे।

भोगी जाने वाली स्थिति के वारे मे सवेदनशीलता ही मनुष्य की चेतना होती हे। यह चेतना ही उसके सामाजिक परिस्थितियो के वारे मे रवैया निर्धारित करवाती हे। इस रवैये से ही उसके जीवन की चाल पहचानी जाती ह। इस चेतना के अनुसार ही वह अपने सामाजिक रिश्ते का विस्तार करता हे।

आधुनिक जीवन ने सम्बन्धित सभी क्षेत्रा मे जितनी तरक्की की है उसका सामाजिक परिस्थितियो आर मनुष्य के मन पर केसा प्रभाव आया है, इसका अध्ययन किया जाय तो हैरान करने वाले तथ्य प्राप्त होते है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान मे हुई खोजो ने जिन नये विचारो को जन्म दिया हे, उस कारण सदियो पुराने विचारो पर आधारित हमारा

सामाजिक ढाचा बुरी तरह प्रभावित हुआ हे। मिसाल के तौर पर आधुनिक चिकित्सा विज्ञान द्वारा खोजे गये गर्भनिरोधक साधनो के कारण सेक्स के वारे मे नई पीढी का रवेया पिछली पीढी जेसा नहीं रहा हे। इन साधनो के प्रचलन ने सभोग को वच्चा पेदा करने की वजाय आनद लेने का साधन मात्र वना दिया हे। इन साधनो ने सभोग को डर रहित वना दिया हे। पर सेक्स के प्रति हमारा रवया अभी भी मर्यादाओ मे वधा हुआ ह। इस तरह सामाजिक परिस्थिति आर वज्ञानिक विचार मे पेदा हुये विरोधाभास ने हर मनुष्य के शरीर के भीतर एक अजीव तरह के तनाव को पेदा कर दिया हे।

इस सदी क आरम्भ मे फ्रायड द्वारा मनोविज्ञान के ऊपर किये गये काम से चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र मे एक नइ क्रान्ति शुरू हुइ। फ्रायड से लेकर आज तक मनोविज्ञान पर जो काम हुआ ह उसने मनुष्य आर मानवीय जीवन को ठीक तरह समझने के वहु आयामी अध्ययन की इतनी जरूरत पदा कर दी हे कि मनुष्य के स्वास्थ्य को सही समझने के लिए विज्ञान का एक क्षेत्र छोटा रह जाता हे।

भारत का समूचा अध्यात्मवादी दर्शन शास्त्र चाहे मनुष्य क वहुत गहरे मनोविज्ञान से ही सम्वन्धित है पर इसकी पहुच मन के पार होने के कारण वहुत सारे अधकचरे अध्यात्मवादियो ने इसके मूल स्रोत को पूरी तरह समझे वगर इसमे जो पडिताई भरी व्याख्याये जोडी, उसके साथ भारतीय दर्शन शास्त्र एक विज्ञान की जगह गोरखधधा वनकर आज आदमी की समझ से दूर की वात वन गया ह। यह खुशी की वात हे कि आज विदेशो मे भारतीय दर्शन शास्त्र म छुपे गहरे रहस्यो के वारे मे आधुनिक विज्ञान के आधार खोज कर रहे हे।

फ्रायड द्वारा शुरू की गई इस तरह की अध्ययन पद्धति से मनोविज्ञान एक विज्ञान की तरह स्थापित हो चुका हे इस विज्ञान ने मानव के जीवन के साथ सम्वन्धित सभी विज्ञानो क आगे वहुत सारे प्रश्न खडे कर दिये हे। इन प्रश्नो म प्रमुख प्रश्न चिकित्सा विज्ञान आर सामाजिक आर्थिक सदभ मे मनुष्य के अध्ययन के वारे मे हे।

चिकित्सा विज्ञान से सम्वन्धित वज्ञानिक पहले मनुष्य को जविक पक्ष तक सीमित रखकर अध्ययन करते थे आर सामाजिक विज्ञान से सम्वन्धित वज्ञानिक सामाजिक आर्थिक स्थितियो को अध्ययन का क्षेत्र वनाकर काम चला लेते थे। पर अव अध्ययन की परिस्थितिया विल्कुल अलग नहीं रही ह। अव मनुष्य के जीवन के वारे मे एक तरफा अध्ययन से काम नहीं चलता। इस कारण अव मनुष्य को उसके शारीरिक, मनोवज्ञानिक, सामाजिक आर आध्यात्मिक सदर्भो मे समझे वगेर न तो अध्ययनकता की तृप्ति होती हे ओर न ही विचारवान पाठको की। क्योकि मनुष्य सिर्फ शारीरिक ही नहीं, मानसिक भी ह। मानसिक ही नहीं आध्यात्मिक भी हे। आध्यात्मिक ही नहीं सामाजिक भी ह, इसलिए मनुष्य को पूरी तरह तदुरुस्त करने क लिए उसको असली सम्पूर्णता मे समझने के लिए इन सभी पक्षो के अध्ययन की जरूरत होती ह।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के सारे सिद्धान्त आर सारी खोजे मनुष्य के जेविक पक्ष के आस पास घूमनी दानो क कारण प्राप्त हुए नये तथ्यो से सामाजिक विचारो आर सस्कृति मे एक उथल पुथल मच जाती ह।

किसी भी समाज मे जव यान्त्रिक विकास को ही सामाजिक विकास समझ लिया जाता ह तो सवस वडा दुखात शुरू होता हे यह दुखात होता हे कि मनुष्य क स्वभाव को समझे वगर उसको एक अतहीन दोड मे दाल दिया जाता हे। इस अन्धी दोड के कारण पूरे समाज म सव कुछ उल्टा पुल्टा हो जाता हे। इस दोड मे आकर ओरत आर मर्द दोनो ही अपने कुदरती स्वभाव को छोडकर एक एसा वहाव मे वह जाते ह जो उनके ही स्वभाव के विरोधी होता है। अपने ही स्वभाव के विरोध मे खडा मनुष्य कभी भी स्वस्थ नहीं होता।

भारत की पुरातन आश्रम सस्कृति से लेकर गाव तक फेली आज की महानगरी सस्कृति ने मनुष्य के मन आर शरीर पर किस तरह के प्रभाव पाये हे इस का अदाजा नयी पीढी के रहने सहने आर आहार व्यवहार स सहज ही लगाया जा सकता हे। मेरी समझ के अनुसार यान्त्रिक विकास का सामाजिक विकास के तोर पर प्रचार करना समस्याओ के प्रति वेईमानी भरी पहुच हे। यान्त्रिक विकास क साथ साथ अगर मन का विकास नहीं होता तो समाज का सभी मानवीय मान सम्मान नष्ट होकर हर तरफ एक आपा धापी फैल

जाती ह। ऐसी सामाजिक परिस्थितियो मे जीने वाला संवेदनशील मनुष्य अपने आप को एक ऐसे भवर मे फसा पाता हे जो न तो उसके पार होता हे ओर न ही उससे पीछे मुडा जाता हे।

भारतीय समाज मे मानवीय मान-सम्मान के इस विनाश से मनुष्य के मन ओर शरीर को इतनी वुरी तरह प्रभावित किया हे कि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के मोजूदा सिद्धान्त ओर आपधियो मे उनका हल दिखाई नहीं देता। आज के दार मे फेले हृदय रोगो मे मकेनीकल पहुच रखने वाले आधुनिक डाक्टरो ने मनोशारीरिक रोगो को शारीरिक रोग होने का भ्रम पेदा करके मसले को ओर भी उलझा दिया हे।

आजकल मिलने वाले हृदय रोगो को मे शरीर के साथ साथ रोगी की जीवन शेली मे भी देखता हूँ। व्लड प्रेशर से लेकर हार्ट अटेक तक के रोगियो को ओपधि चिकित्सा के साथ साथ ध्यान की अलग-अलग विधिया देकर स्वस्थ करने के अनेक अनुभव ह।

ओपधि चिकित्सा मे हृदय रोगो पर मेने चार आपधियो के अनुभव साधारण अवस्था से लेकर सकटकालीन समय मे प्राप्त करके आधुनिक डाक्टर मित्रो को आयुर्वेद की तरफ प्रेरित किया हे। मेरी यह चार आपधिया ह अभ्रक भस्म सहस्र पुटी, सिद्ध मकरध्वज, दवाउलमुश्क विशेप ओर जवाहरमोहरा।

मन की निर्वलता मे अभ्रक भस्म ओर जवाहरमोहरा। शरीर की निर्वलता के समय सिद्ध मकरध्वज ओर हार्ट अटेक के समय दवाऊलमुश्क विशेष का उपयोग सेकडो रोगियो पर किया ह। यह चारो ओपधिया ही चमत्कार की तरह काम करती हे। वस शर्त एक ही हे कि इनका निर्माण खुद किया हो या किसी विश्वास योग्य फार्मेसी की हो।

नगरपालिका फरीदकोट मे काम करने वाले मेरे एक मित्र शमशेर सिह को हार्ट अटेक हुआ। हम उसके दूसरे दिन जव उसके घर पता लेने गये तो उसकी पत्नी रोने लगी। मेने उससे कहा कि आयुर्वेदिक ओषधि शुरू कर दो। आगे आने वाला खतरा टल जायेगा। मेने उसे जवाहरमोहरा ओर खमीरा गाऊजुवा वाजार से लेने के लिए लिख दिया।

पन्द्रह वीस दिन वाद रोगी मुझे मिला। मेने उसका हाल चाल पूछा तो कहने लगा, आपने तो इतनी महगी दवा लिख कर दी थी। यह देखा दो रुपये की गोली ले ली ह, जव मुझे दिक्कत महसूस होती हे तो मुह मे रख लेता ह। उसने जेव से एक शीशी निकाल कर मुझे दिखाइ जिसम ऐलोपेथी की गोलिया थीं।

दो महीने के वाद रात को ११ वजे के करीव उसकी पत्नी आई आर उसने मुझसे कहा कि उसको फिर दिल का दारा पडा ह। आप उसको देखे। मने दवाउल मुश्क सिद्ध मकरध्वजवटी ओर जवाहरमोहरा की शीशिया साथ ले लीं। घर जाकर देखा तो रोगी असहनीय पीडा स तडप रहा था। मेने ४ रत्ती दवाउलमुश्क रोगी को चूसान क लिए द दी। दवाई मुह मे घुलते ही रोगी का दद कम होन लगा। तीन मिनट वाद रोगी का दर्द गायव हो गया तो मने जवाहरमोहरा एक रत्ती ओर सिद्ध मकरध्वज आधा रत्ती लोंग के साथ दे दी। पन्दह वीस मिनट वाद रोगी की हालत नार्मल थी। रोगी की हालत मे सुधार देखकर मेने हसकर पूछा किं तेरी दो रुपये की गोलिया का क्या हुआ ?

इस दूसरे अटेक के वाद रोगी ने ४ शीशिया जवाहरमोहरा की सेवन की। इस वात को आज ६ साल वीत चुके हे। उसे आज तक फिर दिल का दारा नहीं पडा।

यह चारो योग रस तत्रसार व सिद्ध प्रयाग सग्रह क हे। हम इनमे थोडी सी तव्दीली करके योग का निमाण करते हे।

जवाहरमोहरा—

माणिक्य, पन्ना ओर मोती पिष्टी २० २० ग्राम प्रवालपिष्टी, शृगभस्म ओर सगेयशव पिष्टी ४०-४० ग्राम कहरवा पिष्टी २० ग्राम, स्वर्ण भस्म आर चादी भस्म ५-५ ग्राम, दरियाई नारियल का चूर्ण ४० ग्राम, आवरेशम ओर जदवार का चूर्ण २०-२० ग्राम, अम्वर ओर कस्तूरी १०-१० ग्राम।

पिष्टियो ओर भस्मो को मिलाकर फिर अम्वर तक

सब ओषधियो का सूक्ष्म चूर्ण मिलाकर १४ दिन गुलाब जल मे खरल करे। सारी दवाई जब मलाई की तरह मुलायम होकर जब गोली बनने के योग्य हो जाय तो अन्तिम दिन कस्तूरी मिलाकर एक एक रत्ती की गोली बनाकर रख ले।

कस्तूरी के बिना तैयार किया गया योग उतना प्रभावशाली नहीं होता कि हार्ट अटक को रोक सके। हार्ट अटक के संकटकाल मे सिर्फ और सिर्फ कस्तूरी वाले योग ही प्रभावशाली सिद्ध होते है। जवाहर मोहरा मे माणिक्य पन्ना आदि पिष्टिया खरड की बजाय रत्न के बुरादे या छोटे टुकडो, जो रत्न बेचने वाले और तराशने वालो की दुकान मे मिल जाते है, की बनाकर उपयोग मे लनी चाहिए।

यह जवाहरमोहरा मानसिक परेशानी और शारीरिक क्रिया प्रणाली की विकृति के कारण पैदा हुये हृदय पर रामबाण की तरह काम करता है। इसके सेवन से हृदय की घबराहट, हृदय की कमजोरी से थोडा चलने पर दम का भर जाना, दिल की धडकन बढना, स्मरण शक्ति का कम हो जाना, कुविचार आते रहना, थोडा सा विरोध होने पर गुस्सा आ जाना आदि विकार कुछ दिनो मे दूर हो जाते है।

हार्ट अटक के बाद जवाहरमोहरा का सेवन अगर महीना दो महीना करा दिया जाय तो आगे आने वाले खतरे टल जाते है। ऐसा सैकडो रोगियो पर अनुभव लेकर कह रहा हू।

हार्ट अटेक के साथ दवाउलमुश्क और बाद मे जवाहर मोहरा का सेवन निराश से निराश हृदय को जीवन प्रदान कर देता है। जरूरत के अनुसार इसमे अभ्रक भस्म सहस्र पुटी और सिद्धमकरध्वज मिलाकर दी जा सकती है।

दवाउलमुश्क विशेष—

नरकचूर, दरुनज अकरबी, मोती पिष्टी, कहरवा पिष्टी, प्रवाल पिष्टी ३५-३५ ग्राम, आबरेशम, बहमन सुर्ख और सफेद, जटामासी, छोटी इलायची १८-१८ ग्राम छरीला, पीपल और सोठ १५-१५ ग्राम, कस्तूरी ३० ग्राम और अम्बर १५ ग्राम।

सबको कपडछन चूर्ण करके अच्छी तरह मिलाकर चाटने योग्य शहद मिलाकर माजूम बना दे।

इस योग मे दवाउलमुश्क के प्रचलित योग से चार गुना ज्यादा कस्तूरी मिलाकर तैयार किया जाता है और यह तुरन्त प्रभाव दिखाने वाला बनता है। हार्ट अटक के समय इसकी चार रत्ती की मात्रा तुरन्त प्रभाव दिखाकर आधुनिक हृदय रोगो के माहिर डाक्टरो को मुह मे अगुलिया लने को मजबूर कर देती है।

मानसिक तौर पर निर्बल हृदय रोगियो की मनोअवस्था को सुधारने के लिए अभ्रक भस्म अवश्य ही उपयोग मे लनी चाहिए। अभ्रक भस्म के साथ दिल और दिमाग की कमजोरी कुछ दिनो मे ही दूर हो जाती है।

इन ओषधियो के बारे मे विस्तार से जानने के लिए रस तन्त्रसागर व सिद्ध प्रयोग सग्रह का अवलोकन कर सकते है।

हृदय विकार

✍ वैद्य ओकारमणि पाणिग्रही आयुर्वेद रत्न
सक्ति (विलासपुर) मध्यप्रदेश

आयुर्वेद मे १०७ मर्म माने गये है। इनमे तीन प्रमुख ह।

(१) हृदय
(२) शिर
(३) वस्ति

क्योकि ये विशेप रूप से प्राण के अधिष्टान हे। आचार्य चरक ने इसे भी मर्म कहकर इनका विशेष महत्त्व प्रतिपादित किया हे। इन तीनो मे भी हृदय सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हे। यह कोष्ठागो मे स्थित हे इसके विकास मे माता का विशेष योगदान हे अत यह मातृज भावो मे परिगणित हे इस कारण इसकी कोमलता सहज हे।

हृदय रस का स्थान हे अत रस की दुष्टि होने पर हृदय रोग होते हे। क्योकि इसके द्वारा उत्तरोत्तर दोष धातुओ मे विकृति पेदा होती हे।

विकार उत्पन्न होने के कारण आचार्य माधव के अनुसार—

अत्युष्ण गुर्वन्त कषाय पञ्चविध प्रविष्ट ।।
मा० नि० २६/१

आचार्य चरक मतानुसार च०चि०अ० २६/७६

"व्यायाम तीक्ष्णाति विरेक बस्ति... हृद्रोगकर्तृणि तथाभिघात्"

आचार्य सुश्रुत मतानुसार सु०उ०अ० ५३/३
वेगाघातोष्ण रूक्षान्न रसात्म्येश्चापिभोजने

(१) व्यायाम—

अपनी शारीरिक क्षमता से अधिक व्यायाम करना, अधिक शारीरिक श्रम, पसीना निकलते रहने पर भी ठण्डा पानी या फ्रीज का पानी या कूलर के सामने वेठना, सामर्थ्य से ज्यादा मानसिक या वौद्धिक कार्य करने से वात के अत्यधिक कुपित हो जाने से हृदय विकार ग्रस्त हो जाता है।

(२) वेग विधारण—

अधारणीय वेगो को रोकना एव अति मथुन इन कारणो से भी हृदय विकार ग्रस्त हो जाता हे।

(३) उष्ण पदार्थो का अतिसेवन—

अत्यन्त उष्ण पदार्थ, भारी कषाय, तिक्त, कटु रूक्ष व तीक्ष्ण पदार्थो का निरन्तर सेवन, शुष्क, वासी भोजन, विरुद्ध भोजन, काल देश प्रकृति सात्म्य ओर सयोग के विपरीत किये भोजन को विरुद्धाशन यथा दुग्ध, मछली, लवण, दुग्ध, समपरिमाण मे घी-मधु ये सव सयाग विरुद्ध द्रव्य हे, पूर्व भोजन के हजम हुये विना ही भोजन करना, मद्यादि का अतिसेवन, घी-तेल अण्डा आदि का अतिसेवन इन सब कारणो से भी धातु क्षय जेसे रस, रक्त, धातुक्षय होकर हृदय रोग के कारण वनते हे।

(४) मानसिक—

यकायक भयभीत होना, अति चिन्ता सदमा मानसिक विषाद ग्रस्तता, अति क्रोध, अभिचार कम (विद्वेषण उच्चाटन, मारण) आदि कारणो से भी हृदय पर वुरा असर पडता है।

(५) आगन्तुक—

आघात यथा, वक्ष मे किसी प्रकार की आकस्मिक चोट,

वस (मोटर), गाडी (रेल) आदि मे उतरते या चढते समय किसी तरह की टक्कर आदि भी हृदय रोग के कारण होते हे।

(६) औषधापचार जन्य—

किसी रोग का ठीक से उपचार न होना।

सम्प्राप्ति—

आचार्य सुश्रुत मतानुसार— सु० अ० ४३/४

दूषयित्वा रस दोषा हृद्रोगत प्रचक्षते''

जव अपने अपने कारणो से प्रकुपित हुए दोष (वातादि) हृदय मे जाकर वहाँ रस, रक्त को दूषित करके हृदय मे विकार उत्पन्न करते हे तव इसे हृद्रोग कहते हे।

हृदय रोग मे दूषित या विकृत होने वाली धातु ''रस'' हे, अत वही विकृत होती ह तथा उत्तरोत्तर धातुओ को भी प्रभावित करती हे। यद्यपि यह आवश्यक नहीं हे क्योकि यह रस की विकृति की स्थिति पर निर्भर हे कि वात, पित्त, कफ इनमे से किसी एक या तीनो द. । द्वारा रस धातु के दूषित किये जाने पर जिस सम्प्राप्ति का निर्माण होता हे वह हृदय रोग को उत्पन्न करती हे। दोष, दूष्य, सम्मूर्च्छना के परिणाम स्वरूप सम्प्राप्ति का निर्माण निम्न प्रकार से होता हे।

उद्भव् स्थान = आमाशय प्रसर = रसायनी स्थान सश्रय = रसवहस्रोत व्यथित = हृदय दोष = वात-पित्त-कफ (कोई एक या दो या तीन) दूष्य = रस स्रोत - रसवह

रसधातु मे मुख्यतया दो प्रकार से विकृति सम्भव ह। (१) रसक्षय (२) रसवृद्धि क्योकि ये दोनो स्थिति मे हृदय मे विकृति के लक्षण स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हे। जेसे—

(१) रसक्षये हृत्पीडा कम्प शून्यता स्तृष्णा च।। सु०सू० १५/१३१ चरक मतानुसार—

घट्टते सहते शव्द नोच्चद्रवति शूल्यते

हृदय ताम्यति स्वल्प चेष्टस्यापि रसक्षये।।

च० सू० १७/६३

यदि रस क्षय होने पर समुचित उपचार नहीं किया जायगा तो इसका प्रभाव सम्पूर्ण शरीर मे दिखाई देने लगता ह। रसक्षय से न केवल हृदय ही प्रभावित होता हे वल्कि उत्तरोत्तर धातुये भी प्रभावित होती है। जिससे उत्तरोत्तर धातुओ के निर्माण मे व्यवधान आ जाता ह जिसके कारण रोगी क्षीणकाय, निस्तेज, निर्वल, कान्तिहीन एव मलिन मुख वाला हो जाता ह और वह मृत्यु के निकट पहुच जाता ह।

(२) रसोऽति वृद्धो हृदयोत्क्लेद प्रराक चापादयति।।

सु० सू० १५/१८

'रसोऽपि श्लेष्मवत्'' अ० ह० सू० ११ ८

उपरोक्त उदाहरणो से स्पष्ट ह कि रस की क्षय आर वृद्धि दोनो ही हृदयरोग का कारण होता ह अत हृदयराग की परीक्षा करते समय यह वात हमेशा ध्यान रखनी चाहिए।

सामान्य विकार आचार्य चरकानुसार—

ववर्ण्य मूर्च्छा विविधारतधान्य।

च० चि० अ० २६-७७

(१) विवर्णता—

इसके अन्तर्गत पाण्डुता, श्यावता तथा कपोलारुण्य इन तीनो का समावेश होता हे।

(अ) पाण्डुता— रक्ताल्पता का दर्शक हे जा हृदय के विविध कपाटो की विकृति होती हे।

(व) श्यावता— इसका प्रमुख कारण रक्त मे लाल रक्त कणिका की कमी हे इसकी प्रतीति ओष्ठ, नासाग्र तथा नख सदृश स्थानो मे होती हे जहा की कोशिकाये उत्तान रहती हे।

इसका कारण सिरागत रक्तावरोध हे।

(स) कपोलारुण्य— इसका प्रमुख कारण सकोच ह।

(२) मूर्च्छा—

यह हृदयजन्य श्वास **Cardiac Asthma** ह।

(३) ज्वर—

आमवात जन्य या ओपसर्गिक हृदन्त कलाशोथ **Rheumatic or septic endocarditis** मे यह लक्षण प्रधान होता हे।

(४) कास, हिक्का तथा श्वास ये अवरोध जन्य लक्षण **Pressure symptoms** कहलाते ह। ये द्विपत्रक प्रत्युद्गिरण (**Mitral regurgitation**) मे तथा विशषतया द्विपत्रक सकोच (**Mitral stenosis**) मे पाये जात ह।

द्विपत्रक सकोच मे रक्त का वमन भी हाता ह। हृदय रक्त वाहिनी की घनास्रता (**Coronary thrombosis**) मे वमन, अरुचि तथा श्वास कृच्छ्रता के लक्षण मिलते हे।

प्रकार—

आचार्य सुश्रुतानुसार—

चतुर्विध सदोष चिकित्सिमनन्तरम।।

सु० उ० ४३-५

वात पित्त, कफ एव कृमिज ऐसा चार प्रकार के माने ह।

किन्तु आचार्य माधवकर ने ५ हृद्रोग माने हे। वात, पित्त, कफज, सन्निपातज एव कृमिज।

आचार्य चरकाचार्य ने भी हृदरोग ५ प्रकार के माने हे।

आचार्य सुश्रुत ने सन्निपातिक हृदयरोग की चिकित्सा न करने से तथा उपचार (मिथ्या आहार विहारादि) से उत्तरावस्था मे किसी राग्मूर्च्छन हो जाने से कृमिजन्य हृदयरोग कहाता हे। ऐसा मानकर सान्निपानिक हृदयरोग की गणना नहीं की हे। अतएव इन्होने चार भेद ही उल्लेख किया हे। आचार्य चरक ने भी सुश्रुतमत का ही प्रतिपादन किया हे। यथा त्रिदोषजे तु हृद्रोगे भवन्त्यु पहतात्मन ।। च० सू० १७-३६-३७।।

आयुर्वेदाचार्यो ने अपने समय मे हृदयरोग के रोगी कम पाये जाने के कारण विशुद्ध रूप से वर्णन न करके सक्षिप्त रूप मे ही वर्णन किया ह फिर भी अनेक रोग प्रकरणो मे कहीं लक्षण रूप मे, कहीं स्वरूप, कहीं सम्प्राप्ति तथा कहीं उपद्रव रूप मे अनेक प्रकार के हृद्ररोगा की विकृति का उल्लेख किया हे। यथा—

(१)	हृद्गोरव	कफ दोष
(२)	हृद्तिम	कफ दोष
(३)	हृन्मोह	कफ + रज
(४)	हृदयोपशोषण	वात
(५)	हृद्ग्रह	वात
(६)	हृद्पीडा	वात
(७)	हृद्रक्त	वात
(८)	हृदयोपताप	पित्त
(९)	हृदयापकर्तित	पित्त + वात
(१०)	हृद्दाह	पित्त + वात
(११)	हृत् चन्दन	पित्त + वात
(१२)	हृदशूल	पित्त + वात
(१३)	हृद्द्रव	पित्त + वात
(१४)	हृदयोपलेप	कफ

उपर्युक्त हृदय सम्बन्धी विकृति निर्देश से यह स्पष्ट होता हे कि मात्र ५ प्रकार के हृदयरोगो का वर्णन उपद्रव परक हृदय सम्बन्धी विकृतियो का ज्ञान भी आवश्यक ह।

आधुनिक चिकित्साको के मतानुसार—

हृदयरोगो को पाच भागो मे बाटा गया ह।

(१) ज्वर के साथ रहने वाली विकृति।
- (अ) हृदयावरण शोथ (Pericarditis)
- (ब) अन्त हृदयावरण शोथ (Endocarditis)

(२) दर्द के कारण—
- (अ) श्रमजनित हृदयशूल A Fort of Angina
- (ब) आक्षेपजन्य हृदय शूल Spasmodic Angina
- (स) हृदय धमनी अवरोध Coronary Thrombosis
- (द) भ्रमजन्य हृद्शूल Angina Ennosionce
- (ड) हृदयावरण शोथ Pericarditis

(३) क्षेत्र का बढना या हृदय की मद ध्वनियो का बढना—
- (अ) हृदय की अतिवृद्धि Cardiac hypertrophiy
- (ब) हृदय का विस्तार Cardiac Dilation
- (स) चिरकालीन हृदयावरण शोथ Acufe pericardites
- (द) हृदयावरण का जुडाव Adherent Pericardites

(४) हृदय शब्द आर मरमर शब्द का बदलना—
- (अ) हृदय मासपेशियो की अवनति Myocordial Degeneration
- (ब) अन्त हृद्शोथ Endocardaitis
- (स) सहज हृदयरोग (जन्मजात) Congenital Heart disease
- (द) हृदयावरण शोथ Pericarditis

(५) नाडी की गति का बदलना (रिद्म)-
- (अ) साइनस एरिद्मिया
- (ब) अपूर्णस्पन्दन (एक्सट्रा सिस्टली)

अन्य आचार्यो के मतानुसार—

हृदय व्याधि के निम्नलिखित भेद ह जिनके लक्षण एव चिकित्सा उपर्युक्त आयुर्वेदमतानुसार भेद के अनुसार—

१ हृदय दाह Heart Burm

२ हृदयावरण शोथजशूल
Pain due to pericarditis
३ धमनी काठिन्यजन्य Arteriosclerotic
४ जन्मजात हृदयरोग Congenital Heart Disease
५. अतिरक्तदावी हृदयरोग
Hypertensive Heart Disease
६ चयापचयी हृदयरोग Metabolic Heart Disease
७ आमवातज हृदयरोग
Rheumatic Heart Disease
८ अवटु विपज हृदय रोग
Thyrotoxi Heart Disease
६ विषाणुजन्य हृदय रोग Virus Heart Disease
१० हृद्पात Heart Failure
११ हृदरोध Heart Block
१२ हृदयशूल Angina Pectoris
१३ हृत्पेशीरोधगलन
Myocardial infarction
१४ हृदजन्य श्वास Cardiac Asthma
१५ अर्न्तहृद्कलाशोथ Endocarditis
१६ हृदय वाहिनी घनास्रता Coronary thrombosis
१७ हृद् द्विपत्रक प्रत्युद्गिररण
Mitral regurgitatation

इसके अतिरिक्त हृदयरोग के भेदो की कल्पना विविध शोध प्रयासो के द्वारा की जा सकती हे। क्योकि पाश्चात्य चिकित्सा सिद्धान्तो की भित्ति की नींव एक शाध रूपी ठोस आधार शिला पर खडी होकर नित्य परिवर्तनशील एव भगुर आधार भूमि पर खडी ह। यह किसी व्याधि के मूल कारण को दूर न करके व्याधि कष्ट को दवा तथा छिपा देता ह तथा अपनी विपली प्रतिक्रिया से रोगी का विविध उपद्रवो से युक्त एव जर्जर वना देता ह।

(१) वातिक हृद्रोग (Angina Pectoris)-

निदान— शोकोपवास व्यायाम शुष्क
जनयत्युत्तमा रुजम् शोक, उपवास, अतिव्यायाम
चo सूo १७-२६।

रूक्ष तथा शुष्क भोजन, रूक्ष भोजन तथा मात्रा से अल्प भाजन करन से (प्रवृद्ध हुआ) वायु हृदय मे जाकर अत्यधिक वेदना का उत्पन्न करता ह।

साधारणत यह ४० वर्ष के ऊपर की आयु के पुरुषो को होता ह व्यान वायु हमारे सारे शरीर मे भ्रमण करत हुए रस रक्त सवहन की क्रिया करती रहती ह, जिससे हृदय को निश्चित मात्रा मे रस रक्त पहुचता रहता ह, पर जव यह वायु अपने कारणो से प्रकुपित हो जाता हे, तव उपरोक्त कर्म मे वाधा आती हे, जिससे हृदय को उचित मात्रा मे रक्त नहीं मिलता, क्योकि प्रकुपित व्यानवायु सिराओ मे शूल तथा सिराओ का आकुञ्चन कुटिलता तथा शिरा विस्तृति पेदा करती हे एव स्नायुगत कुपित वात शरीर का स्तम्भ (जकडाहट) शरीर कम्प, शूल, आक्षेप पदा करती हे।

सहायक कारण—

(१) हृदपेशी का तान्त्विक व्यपजनन (Fibroid degeneration of myocardium)
(२) हृदधमनी कठोरता
(Coronary ateriosclerosis)
(३) आनुवाशिकता (Heredity)
(४) तन्त्रिकाओ का अधिक सवेदनशील होना।
दूसरे रोगो के द्वारा यथा—
(क) हृत्स्पदन (Paroxysmal Tachycardia)
(ख) अवटु अतिक्रियता (Hyperthyroidism)
माधुर्यहीनता (Hypoglycaemia) रक्त म ग्लूकोज की कमी
(घ) अतिरक्तदाव (Hypertension)
(च) वात रक्त Gout चिरकारी वृक्कशोथ (Chronic Nephritis)
(छ) महाधमनी सकीर्णता (Aeortic stenosis)

उपरोक्त कारणो से हृदय मे उचित मात्रानुसार रस रक्त जव नहीं पहुच पाता तव हृदयपेशी म सापेक्ष रक्तहीनता की स्थिति उत्पन्न हो जाती ह। जिससे हृदय मे पीडा उत्पन्न होती ह।

लक्षण—

वेपथुर्वेष्टन स्तम्भ चात्यर्थ वेदना चूo सूo १७-३०

जव एक हृत्कोष्ट से दूसरे हृत्कोष्ट मे रक्त जाकर पुन कपाटियो के वधन होने से रक्त का वापिस उसी कोष्ट मे आ जाना प्रत्युद्गिरण (Regurgitation) इसी वात का

आचार्य चक्रपाणि ने दरदिका शव्द से कहा प्रतीत होता है। इसमे भोजन के पच जाने पर अत्यधिक वेदना होती हे।

हृदय के वात से पीडित होने पर हृत्कम्प (Palpitation) होता है, हृदय मे उद्वेष्टन होते है। हृदय स्तम्भ (हृदय का गति न करना, रुक जाना) "हृदय की जडता" आखो के आगे अधेरा छा जाना, शून्यता, डर लगना आदि।

आचार्य सुश्रुत के मतानुसार—

आयभ्यते मारुतजे पाट्यतेऽपि च"
सु० उ० अ० ४३-६

वातिक हृदय रोग मे हृदय मे खिचावट, सूई चुभोने की सी पीडा या डण्डे के मथने जेसी पीडा या आरे से चीरने के समान जैसी पीडा या हृदय फट रहा हो या कुठार से काट रहे के समान पीडा होती है।

यह दर्द उरोरिथ के ठीक पीछे तीव्र पीडा होती हे, यह एकाएक होती है यह निश्चित मात्रा से अधिक परिश्रम करने पर एव परिश्रम वन्द कर देने से प्राय शान्त हो जाती है। यह पीडा कुछ सैकेन्ड से १-२ मिनट तक रहती हे। पीडा एकाएक वहुत जोर से पेदा होती हे। रोगी मूर्तिवत् भयभीत मुद्रा मे निश्चिल खडा हो जाता हे, छाती पर भारी दवाव सा प्रतीत होता है, यह दर्द प्राय वाये हाथ की ओर बढकर छोटी अगुलि तक पहुच जाती हे कभी-कभी दाहिने हाथ की ओर ऊपर गले की ओर अथवा पेट की ओर फेल सकती हे। पीडा प्राय स्थिर प्रकार की होती हे।

हृदय शूल का सापेक्ष निदान—

हृदय शूल—

(१) परिश्रम भावावेश या भोजनोपरान्त आक्रमण होता हे।

(२) रोगी निश्चल खडा रहता है, हिलने से डरता हे, चेहरा पीला पड जाता हे, पसीना आना और शीतानुभव करना।

(३) कुछ मिनटो मे आवेग समाप्त हो जाता हे।

(४) शूल का प्रचलन अनिवार्य रूप से वाम वाहु तथा कभी कभी दोनो वाहुओ की ओर होता है।

(५) रक्तवाहिनी प्रसारक औपधियो से शूल शान्त होता हे।

(६) धमनीगत रक्त का दवाव बढ जाता है।

(७) ज्वर नहीं रहता है।

(८) रक्तगत घनता साधारण रहती है।

(६) श्वेत कायाणुत्कर्ष रहता है।

मिथ्या हृदय शूल—

(१) इसमे दर्द परिश्रम के वाद बढता हे परिश्रम के समय नहीं।

(२) इसमे धडकन वढ जाती हे जो वास्तविक हृदय शूल मे नहीं होती।

(३) चक्कर ओर मूर्च्छा के आक्रमण होते हे जो हृदय शूल मे नहीं होते।

(४) पुरोहृद प्रदेश मे छूने पर पीडा होती हे जो हृदयशूल मे नहीं होती।

(५) इसमे अस्थिर तत्रिका तत्र (Unstable Nervous System) के लक्षण मिलते हे।

(६) हृदय की वृद्धि या हृदय के रोगो का लक्षण ई० सी० जी० एव एक्स-रे आदि मे नहीं मिलते।

(७) परन्तु द्विकपर्दी सकीर्णता मे उपर्युक्त लक्षण मिल सकते हे।

हृदय वाहिनी रक्तघनता—

(१) रात्रि मे आराम के समय आक्रमण होता है।

(२) रोगी वेचैन रहता है जिससे इधर उधर गतिया करता है। शरीर उष्ण तथा चेहरे पर श्यावता।

हृदय पेशी का रोधगलन—

(१) दर्द प्राय रात्रि मे होता है। पसीने से लथपथ होता हे।

(२) दर्द के कारण रोगी करवट वदलता रहता ह। वेचैन रहता हे।

(३) आवेग कम से कम १ या दो घण्टे मे शान्त होता

(३) आवेग कुछ घण्टो तक भी रह सकता हे।

(४) शूल का ऐसा प्रचलन नहीं होता। यह उर फलक के पीछे ओर कुछ नीचे तक रहता हे।

(५) नाइट्राइट जेसी ओषधियो का प्रभाव होता ह।

(६) धमनीगत रक्तदाव कम किन्तु सिरागत रक्तदाव वढता हे।

(७) अल्प ज्वर रहता हे।

(८) रक्त की घनता वढ जाती हे।

(९) रक्त मं श्वेत कणोत्कर्ष रहता ह।

हे। परन्तु तीव्र प्रकार मे कई घन्टो से कई दिना तक रह सकता हे।

(४) पीडा वाये- दाहिने पेट की ओर ऊपर अथवा हाथा की ओर फंलती हे।

(५) नाइट्राइटो का कोई प्रभाव नहीं होता।

(६) रक्तदाव कम होता ह।

(७) आक्रमण के कुछ घन्टे वाद १०० डिग्री फारेन्हाइट तक ज्वर रहता ह।

(८) (हृद) धमनी की कटोरता ही इसका मुख्य कारण होता हे।

(९) श्वेत कोशिकाओ की सख्या वढ जाती ह।

चिकित्सा सूत्र—

(१) रोग होन के कारणो को ध्यान मे रखकर उनका त्याग करना चाहिए।

(२) शारीरिक एव मानसिक दोनो प्रकार से विश्राम करवाना चाहिए।

(३) वात कारक आहार-विहार का परित्याग करवाना चाहिए।

उपक्रम—

सशाधन— इसमे रोगी के आयु, वल, काल व दोषो को ध्यान मे रखकर वमन विरेचन द्वारा रोग क मूल कारण को दूर करना चाहिए।

हृदय श्लेष्मा का स्थान ह तथा श्लेष्म रोगो म वमन प्रशस्त माना गया ह। कहा भी ह—

कफस्य च विनाशार्थ वमन शस्यते बुध ।
स्थानि स्थानगत दोष स्थानिवत समुपाचरेत।।
अतएव प्रथम स्नेहन करावे वमन कराना चाहिए।
वातापसृष्टे हृदये वामयेत स्निग्ध मातुरम।
द्वि पञ्चमली क्वाथिन स्नेह लवणन च।।

दशमूल क्वाथ मे घृत एव सन्धव लवण मिलाकर आकण्ठ पान करके अगुलियो की सहायता से वमन कराना चाहिए। सु० उ० ४३ ११

विशेष—

(१) हृद्रोग मे घृत ही सर्वश्रेष्ठ हे एव तेल ओज की अल्पता करने वाला हे। अतएव घृत का ही प्रयाग कराना चाहिए। (२) अथवा दशमूल क्वाथ मे मदनफल चूर्ण डालकर भी वमन कराया जा सकता ह। (३) धाति कर्म द्वारा भी वमन कराना उपयोगी पाया गया ह।

विरेचन—

उदरकोष्ठ दोषा के अनुसार मृदु मध्यम, तीव्र विरचन आषधियो का प्रयोग किया जा सकता ह। यथा- मृदु- रात्रि भाजन के २ घटे वाद गम मीठा दूध या अमलतास का गूदा स्वरस, मुनक्का क्वाथ आदि। मध्यम शुद्ध एरण्ड तल या पचसकार चूर्ण आदि। तीव्र— इच्छाभदी रस अश्वकचुकी रस, नाराचरस किसी एक आषधि का प्रयाग प्रशस्त ह।

सशमन चिकित्सा—

(१) उपरोक्त प्रकार से शरीर शुद्ध किये हुए ह्रास रोगी को इस चूर्ण का गाय का शुद्ध घी अथवा गम [illegible] पानी से प्रयोग करे।

पिपल्यादि चूर्ण— छोटी पीपल, इलायची वचा शुद्ध हींग यवक्षार सधव लवण सावचल लवण सोठ और अजमोद इन्हे समप्रमाण ले चूर्ण क समान [illegible]

चूर्ण (मिश्री) मिलाकर सेवन कराना चाहिए।

अनुपान— फलो के रस, काजी, कुलथी क्वाथ, दही, मद्य ओर आसव आदि के साथ देना चाहिए। रोगानुसार

मृगश्रृग प्रयोग— शुद्ध गाय घी के साथ मृगश्रृग को घिसकर वक्ष मे लेपकर मृदु स्वेदन कराना चाहिए।

मृगश्रृग भस्म २ से ४ रत्ती को १ तोला गाय घी मे मिलाकर पिलाने से यथेष्ट लाभ होता हे।

श्रृगभस्म २ रत्ती, अभ्रक भस्म २ रत्ती रस सिन्दूर आधी रत्ती, वृहद कस्तूरी भेरव या केवल कस्तूरी आधा रत्ती ऐसी १ मात्रा दिन मे दो या तीन वार अनुपान मधु से देने पर तत्काल लाभ हो जाता है।

स्वानुभूत योग—

कुष्ठाद्य गुग्गुल -

घटक— कुष्ठ (कूट) +शोधित गुग्गुल सम परिमाण। उपयुक्त रूप स मर्दन करके आधा ग्राम (५०० मि ग्रा) की गोली वना घूप मे सुखाकर सुरक्षित रखे।

अनुपान— अर्जुनत्वक चूर्ण या सिद्धक्षीर पाक के साथ दोष देशकाल वय अनुसार १ से २ गोली प्रति ३-३ घटे मे रोगानुसार।

दव्य गुण— कुष्ठ कार्यकारी तत्व— सासुरिन क्षार इसकी क्रिया सुपुम्नाशीर्ष (Medulla) स्थित प्राणदा नाडी केन्द्र पर, श्वसनिका एव पाचन सस्थान की अनेच्छिक मासपेशी तन्तुओ पर अवसादक होती हे, जिससे श्वसनिकाओ का विस्फार होता हे। इससे रक्तचाप की कुछ वृद्धि होती ह जो लगातार बनी रहती हे। इससे हृदय विशेषकर उसक निलय के सकोच तथा विस्फार की शक्ति वढती ह, जिससे हृदय मे रक्तसचार की क्रिया मे काफी सुधार होता ह। साथ ही इस द्रव्य मे उपस्थित उडनशील तेल (Volatile Oil) विशेषकर स्तवक तथा माला गोलाणु (Staphilo & Streptococcus) के लिए प्रतिजीवी (Antibiotic) प्रतिदूषिक (Antiseptic) एव उपसर्ग नाशक (Dismfectant) हे। इससे भी हृदय सुरक्षित रहता हे। उपरोक्त दोनो कार्यकारी तत्वो के कारण यह हृदयरोग के लिए विशेष लाभदायक सिद्ध हुआ हे।

गुग्गुल— गुग्गुल उष्ण होने से वात शमन, रूक्ष, विशद होने से मेदोहर अत मेद से आवृतवात मे विशेष लाभकर तीक्ष्णता एव उष्णता के कारण कफ का शामक हे। यह हृद्य रक्तकणवर्धक, श्वेतकणवर्धक तथा रक्त प्रसादन हे। शोथहर हे, कफघ्न, कृमिघ्न हे। इससे शरीर के सभी सस्थानो को उत्तेजना तथा शक्ति मिलती ह।

गुग्गुल हृद्रोग मे विशेषत हृदयावरोध (Coronary-Thromblosis) तथा पाण्डु मे विशेष उपयोगी हे। इससे शिरा व धमनी मे अवरोध स्थिति मे विशेष कार्यकारी ह।

शास्त्रोक्त औषधिया—

पिपल्यादि चूर्ण, पुष्करादि चूर्ण, क्वाथ, पचकोलादि क्वाथ।

शुण्ठयादि घृत, सोवर्चलादिघृत, पुष्करादि घृत, अर्जुन घृत, हरितक्यादि घृत, पथ्यादि कल्क, त्र्यूषणाद्य घृत दशमूलारिष्ट, अर्जुनारिष्ट।

हृदयार्णव रस, नागार्जुनाभ्र रस चिन्तामणि रस, विश्वेश्वर रस,

प्रभाकर वटी—

महानारायण तेल, महाविषगर्भ तल, लाक्षादि तल, कर्पूरादि तल, किसी एक का हल्के हाथ से मालिश करना चाहिए। पश्चात् गर्म जल की बोतल या गर्म पानी की थेली से सेक करना चाहिए।

हृद्रोग—वातज

प्रो० वैद्य हरिद्रभाई के० द्विवेदी
डी०ए०वी० (आयुर्वेद विशारद) साराष्ट्र
एच०पी०एस०ए० (आयुर्वेद भूषण) गुजरात
७८, अजिनगर सोसायटी, अकोटा विस्तार, वडादा (गुजरात)

सन् १६६३ नवम्बर मे शासकीय आयुर्वेद कालिज भावनगर मे लेक्चरर के रूप मे सर्विस शुरू की ओर वाद म सहायक असिस्टेट प्रोफेसर ओर वाद मे शासकीय आयुर्वेद कालेज, अहमदावाद मे सन १६६५ मे प्रोफेसर वने, १६७० मे शासकीय आयुर्वेद कालिज जूनागढ वाद मे फिर से भावनगर ओर अन्त मे १६८६ मे शासकीय आयुर्वेद कालिज वडोदा आया, वडोदा मे १६६७ तक प्रोफेसर रहा। ओर १६६७ सितम्वर मे सेवा निवृत्त हुआ।

विशेप योग्यता— (१) वेद्य पचकर्म वर्ग १ की लोकसेवा परीक्षा पास।
(२) प्रोफेसर वर्ग १ की लोकसेवा परीक्षा पास।
(३) प्रिसीपल वर्ग १ की लोकसेवा परीक्षा पास।

परीक्षक— (१) आयुर्वेद यूनीवर्सिटी, जामनगर (गुजरात) के वी० ए० एम० एस० ओर एम० डी० (आयुर्वेद) के काय चिकित्सा के विषय के परीक्षक।
(२) यूनीवर्सिटी ऑफ राजस्थान, जयपुर के द्रव्यगुण विषय के परीक्षक।
(३) यूनीवर्सिटी ऑफ हिमाचल प्रदेश के 'चरक सहिता' के परीक्षक।

साहित्यिक कार्य— (१) दोप धातु मल विज्ञान (गुजराती) (२) द्रव्यगुण सिद्धान्त (गुजराती)
(३) निदान चिकित्सा सिद्धान्त (गुजराती) (४) वालरोग चिकित्सा (गुजराती)

निरामय (गुजराती), धन्वन्तरि (हिन्दी), सुधानिधि (हिन्दी), आयुर्वेद विकास (हिन्दी), सचित्र आयुर्वेद (हिन्दी), आयु (हिन्दी), शुचि (हिन्दी), सदेश (गुजराती) मे हर वुधवार की मूर्ति मे ''पहला सुख जाने नयो' विभाग मे लेख प्रकाशित होता हे ओर हेल्थकोर मे लेख प्रकाशित होते हैं। अव निवृत्ति काल मे आयुर्वेदीय चिकित्सा ओर आयुर्वेद का लेखन कार्य शुरू किया हे।

मनुष्य जीवन मे सुख प्राप्ति के लिए हरेक की प्रवृत्ति होती हे, इसलिए शरीर का स्वास्थ्य अच्छा होना चाहिए। शरीर स्वास्थ्य का आधार मन पर ही हे। आयुर्वेद मे मन के स्वास्थ्य की महत्ता वताई गई है। जिस तरह शारीरिक व्याधियो के होने से वात-पित्त ओर कफ का दूपित होना कारणभूत ह इस तरह हृदय मन का स्थान होने से हृद्रोग मे मन के दोप रज आर तम का दूपित होना कारणभूत है।

''सकल्प विकल्पात्मक मन '' अर्थात् सकल्प विकल्प करना मन का स्वभाव अर्थात् कर्म हे। मन की इच्छा की पूर्ति होती हे सव सुख होता हे जव मन की इच्छा की पूर्ति होती हे तव दु ख होता हे। मन की विकृतियो मे शारीरिक अतिश्रम, अनशन, भय, चिन्ता, क्रोध, लोभ, मोह, काम, मद एव मत्सर भी हतु हे। साम्प्रत काल मे मनोविकार की

सख्या दिन प्रतिदिन बढती जा रही है। उसका प्रधान हेतु मोलिक पदार्थो की प्राप्ति के लिए मन सतत् व्यग्र व चितित रहता ह। व्यग्रता से मन दुर्वल हो जाता हे मनोदोर्वल्य से अरति आदि भाव उत्पन्न होते हे ओर अरुचि, आहार का अपचन आदि लक्षण उत्पन्न होते हे।

मन दुष्टि होने से इन्द्रियॉ दूषित होती हे ओर इन्द्रियो के दूषित होने से उसका नाथ मरुत किंवा वायु दूषित होता है। कहा हे कि– ''इन्द्रियार्थ मनोनाथ मनोनाथस्तु मारुत।'' इन्द्रियो का अधिपति वायु दूषित हान से आज का स्थान हृदय को दूषित करता है। ओज का क्षय होता है अत वातिक हृद्रोग मे ओजक्षय प्रधान रूप से हे।

हृद्रोग मे ओजक्षय एक महत्वपूर्ण हेतु–

हृदय पर (उत्तम) आज का स्थान हे। हृदय मे ही चेतना के आश्रयभूत भावो का स्थान ह। यह हृदयरूपी मूल के कारण दश रस वाहिनियो को महामूल कहा ह। यह दश रस वाहिनियो के द्वारा सर्वशरीर मे ओज का वहन होता है। उनके द्वारा ही शरीर मे रस का चारो आर धमन अथात् प्रसारण होता ह।

हृदय स्थित पर ओज सव शरीर स्थित अपर आज को पुष्ट करता हे ओर वल प्रदान करता ह। इसी कारण से सभी प्राणी अपने जीवन का निवाह करते ह अथात् ओज से ही जीवित रहते हे। जो ओज गर्भ के प्रारम्भ मे शुक्र-शोणित सार रूप मे वर्तमान रहता ह आर ओज कललावस्था मे रस के सार रूप म रहता ह। जब गभ मे हृदय की उत्पत्ति होती ह तव रस का सार रूप ओज हृदय मे प्रविष्ट होता हे। आज का नाश होने पर शरीर का नाश होता ह। ओज हृदय मे आश्रित रहकर धारि (आयु) को धारण करता ह। इसके स्नेहरूप आर प्राण जिसमे प्रतिष्ठित ह ऐसा ओज शरीर मे हृदय से निकलकर चारो आर धमन होता ह।

ओजस्तु तेजो धातूना शुक्रान्ताना पर स्मृतम्।
हृदयस्थमपि व्याधि देहस्थिति निवन्धनम्।
यन्नाशे नियतोनाश यस्मिन् तिष्ठति तिष्ठति।
निष्पद्यन्ते यतोभावा विविधा देह सश्रया ।।

(अ० ह० सूत्र ११/३७ ३८)

ओज प्राणायतनमुत्तमम् (सु० सू० १५/२१)

महर्षि वाग्भट्ट ने ओज को ही शरीर का अस्तित्व कहा ह ओर ''निष्पधन्ते यतो भावा '' का अर्थ कायिक, वाचिक, मानसिक एव समस्त व्यापार ओज के कारण अप्रतिहत रूप मे होते है। कर्मेन्द्रियो, ज्ञानेन्द्रियो तथा मन, वुद्धि ओर अहकार इन भावो का अपना अपना कर्म आज से होता ह। ओज ही रोग तथा उनके कारणभूत दोषो का प्रतिवधक ह। सक्षेप मे ओज प्राणो का आधार हे। अत आज की रक्षा अत्यावश्यक हे। हृदय पर आघात होने से उसका प्रभाव ओज पर पडता हे।

वातिक हृद्रोग के हेतुओ भय, चिन्ता, क्रोध, लाभ, माह श्रम आर अनशन का उल्लेख किया ह।
अभिघातात् क्षयात् कोपात् शाकात् ध्यानात् शमात् क्षुध आज सक्षीयते ह्येभ्यो धातुग्रहण नि सृतम्। (सु० सू० १५ २२) ओजक्षय के लक्षण अन्यत्र इस प्रकार निर्दिष्ट ह।

विभति दुर्वलोऽभीक्ष्ण ध्यायति व्यथितेन्द्रिय
दुश्छायो दुर्मना रूक्ष क्षामश्चवाजस क्षय।।

(च० सू० १७/७३)

अर्थात् ओज क्षीण मनुष्य सदा भयभीत रहता ह, शरीर ओर मन के वल से क्षीण होता ह। उसकी इन्द्रिया सदव व्यथित रहती ह। रोगी प्रभावहीन मनोवसाद युक्त आर रूक्ष दिखाई देता हे।

वातिक हृद्रोग के लक्षण–

हृच्छून्य भाव द्रवशोषभदेस्तम्भा समोहा पवनाद्विशेष।
हृत्शून्यता, द्रवता (हृत्स्पदनाधिक्य) शुष्कता का अनुभव, भेदनवत् पीडा, स्तभ ओर मोह लक्षण वातिक हृद्रोग मे ह।

वातिक हृद्रोग को हम आधुनिक विज्ञान के **Angina Pectris** के अन्तर्गत ले सकते ह। इसमे शूल लक्षण देखने को मिलता हे। हृद्रोग मे हृत्शूल ओर पार्श्वशूल का भेद करना आवश्यक ह।

चिकित्सा–

चिकित्सा की दृष्टि से दोष प्रत्यनीक, शूल प्रशमन आर ओजोवर्धक चिकित्सा करनी चाहिए। हमारे चिकित्सा के अनुभव मे निम्न योगो का अच्छा प्रभाव देखा गया है।

(१) शृग भस्म गाघृत के साथ।
(२) शृग भस्म + जहरमोहरा पिष्टी गौघृत के साथ
(३) चोसठ प्रहरी पिप्पली शहद के साथ।
(४) पचगुण तेल का उर प्रदेश मे अभ्यग।

शेषांश पृष्ठ 105 पर

अदरक रस मे दो घण्टे खरल करके गोलिया बना ले। (र०त०सा०)

(२) वेदनान्तक रस— शुद्ध अहिफेन ३ ग्राम, खुरासानी अजवायन ६ ग्राम, रस सिन्दूर ६ ग्राम खरलकर वटी बना ले। यथा मात्रा प्रयोग करे। इस रस का हृदय पर प्रभावशाली बनाने के लिए रस सिन्दूर क स्थान पर स्वर्ण मकरध्वज वटी डाल सकत है। (र० त०)

(३) अमर सुन्दरी वटी— (नि० र०, रस तन्त्र सार) गोलिया बार-बार चुसाते रहना चाहिए। शूल वग धीरे धीरे कम पड जायेगा। (नि० र०)

(४) मृगश्रृंग भस्म + लक्ष्मी विलास रस + पुष्करमूल चूर्ण के मिश्रण का प्रयोग चाय या दुग्ध से किया जा सकता है।

(५) दशमूलारिष्ट (कस्तूरी युक्त) अथवा दशमूल क्वाथ प्रयोज्य है।

(६) वृहत् वात चिन्तामणि रस— शूल शामक औषधियो का यदि एक बार प्रयोग करने से लाभ न हो तो इनकी पुनरावृत्ति भी की जा सकती है।

अनन्तरकालीन चिकित्सा—

(१) चन्द्रामृत गुग्गुल— शुण्ठी, चित्रकमूल की छाल, पुष्करमूल ५० ५० ग्राम, शु० गुग्गुल २०० ग्राम विधिवत् कूटकर गोलिया बना लेवे। यथा मात्रा प्रयोग रोगी के बलाबल अनुसार।

(२) पञ्चामृत लोह गुग्गुल— शुद्ध पारद शुद्ध गन्धक का समभाग कज्जली बना ले। रौप्य भस्म, अभ्रक भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म सभी ५० ५० ग्राम लोह भस्म १०० ग्राम, शुद्ध गुग्गुल सब के समान यथा विधि कूटकर गोलिया बना ले।

(३) अमर सुन्दरी वटी (सियोस)

(४) सिद्ध मकरध्वज + चिन्तामणि रस (हृद्य) भ०र०

(५) वृ० वातचिन्तामणि रस (भ० र०)

(६) योगेन्द्र रस (भ० र०)

(७) त्रैलोक्य चिन्तामणि रस (या० र०)

(८) नागार्जुनाभ्र रस (र०चि०)

(९) हृदयात वातशूलहर चूर्ण अर्जुन चूर्ण २० ग्राम अभ्रक भस्म ३ ग्राम रस सिन्दूर ३ ग्राम अश्वगन्धा २० ग्राम विभीतक २० ग्राम

(१०) पार्थाद्यारिष्ट— (भ० र०) गुड २० ग्राम

आयुर्वेद चिकित्सको को हृदय रोग चिकित्सा करते समय शोधन चिकित्सा (पञ्चकर्म चिकित्सा) को नहीं भूलना चाहिए। रोगी के बलाबल के अनुसार ही यह कार्य सुलभ हो सकता है।

शोधन कर्म—

वमन— दशमूल क्वाथ + सैधव + घृत मिश्रित कर रोगी को पिलाने पर मृदु वमन होता है और कष्ट नहीं होता है।

वातानुलामन— हरीतकी चूर्ण + कुटकी + मुलहठी + शर्करा मिश्रण वायु का अनुलोमन कर मृदु विरेचन कर कोष्ठ शुद्धि करता है।

हिग्वाष्टक चूर्ण मात्रानुसार प्रयोग करे।

गुदा मार्ग से रामठ की वर्ति बनाकर प्रयोग करे।

अन्य हृद् पुष्टिकर योग—

वातज हृदयाघात की चिकित्सा करते समय हृदय बल दायक तथा पुष्टिकर योगो को भूला नहीं जा सकता। अत उनका यहा नामांकन करना उचित है।

(१) अर्जुन चूर्ण, अर्जुन घृत अथवा अर्जुन सिद्ध घृत

(२) रुद्राक्ष + चन्दन का गुलाब जल मे घिसकर पीना।

(३) श्रृंग भस्म + मुक्तापिष्टी + अकीक पिष्टी का सेवन मधु के साथ अथवा सेव, आवला के मुरब्बे के साथ लेना चाहिए।

(४) यूनानी औषधियो जो इस रोग मे अति उपयोगी है, अवश्य ही परीक्षणीय है।

जवाहरमोहरा याकूती खमीरा आबरेशम खमीरा अरशद वाला दवाउलमिश्क मोतीदल जवाहरवाली, खमीरा गावजुबा अम्बरी जवाहरवाली।

(५) बसन्त कुसुमाकर रस

(६) मुक्तापिष्टी प्रवाल पिष्टी अकीक पिष्टी १० १० ग्राम अम्बर १ ग्राम, चादी के वर्क ५ ग्राम खरल मे डालकर गुलाबजल मे मर्दन करे। सूख पिस जाने पर १ ग्राम की मात्रा मे आवला सेव या पेठ के मुरब्बे मे लेवे।

हृदय फल (चरक मतानुसार)

आमलकी अम्लरास अनार, आम आम्रातक (अम्बाडा) करमद (करौदा) बदर (बेर), राज बदर (उन्नाब) ...

(बडहर) वृक्षाम्ल (कोकम)

धन्वन्तरि निघन्टु मतानुसार– अश्वत्थ (पीपल), आम्र, आम्रतक, अरुपक, इमली, उदुम्बर, पपीता, काकोदुम्बर काल, खर्जुर, जम्बीर, मासम्मी जम्बु, बेलपत्र, तिन्दुक, नारगी, नारिकेल निम्बुपुष्प।

राजनिघन्टु मतानुसार– प्रियाल, पीलू, प्लक्ष, बीजपूरक, भव्य भाद्र मधुशर्करा चकोतरा, मधृक, वट शमी, श्लेष्मक क्षीरणी।

आचार्यो क अनुसार ये सभी फल हृदय को लाभदायक ह जो परीक्षणीय भी ह।

पथ्यापथ्य–

पथ्य–

लाल चावल गेहूं, यव, जा, मूग कुलथी, जगली पशुआ का मास रस करेली, टमाटर, गाय या बकरे का दूध पुरान गुड, पतली मूली, चीनी, गुलकन्द, वर्षा जल, लहसुन, चन्दन का शबत तथा अन्य शर्बत, इलायची, कालीमिरच कशर मुरब्व।

अपथ्य–

परस्पर विरुद्ध भोजन गरिष्ट भोजन, उष्ण कटु, कषाय पाक वाले पदाथ तीक्ष्ण खटाई, तीक्ष्ण मसाले खट्टी चीज क्षार का प्रयोग, दूषित जल, पत्तो के शाक मथुन, चिन्ता शाक, क्रोध, श्रम, अति धूप सेवन, आग क पास रहना वेगावरोध तेज बोलना, सहसा चलना, उठना, ऊपर नीच चढना, उतरना आदि हृद्रोगी क लिए अपरिहार्य ह।

वातज हृदय रोग एक शूल प्रधान रोग ह, जिसका एक बार ता तत्काल शमन आवश्यक ह। कालान्तर मे वातानुलोमन तथा हृद्य द्रव्यो तथा पथ्यो द्वारा अधिकार मे लिया जा सकता ह। हृदय सस्थान की महत्ता को स्वीकार करते हुए इसका समय पर उपचार होना अति आवश्यक है।

व्यायाम- तीक्ष्णाति विरेक बस्ति चिन्ता व त्रास गदाति चारा

कदर्यम् सचारण कर्षनानि हृद्। [illegible]

(चरक चिकित्सा अध्याय २६)

वेगाघातोष्ण रूक्षान्नऽरति मात्रापस[illegible] ।
विरुद्ध च नाजीर्ण रसातयश्चपि भोजन
दूषयित्वा रस दोपा विगुणा हृदय गता
कुर्वन्ति हृदय बाधा हृदरोग त प्रचक्षत।

(सु० [illegible] अ० [illegible])

अर्थात् उपरोक्त कारणो स विगुणित हुए दाष जब हृदय मे पहुचकर इसको दूषित करक हृदय मे स्थित काय मे बाधा उत्पन्न कर दते ह। इसी को हृदय राग कहा गया ह।

शोकोपवास व्यायाम रूक्ष शुष्काल्प भाजन ।
वायुराविष्य हृदय जनयत्युत्तता रुजम।
वेपथुवष्टन स्तम्भ प्रमोह शून्यतादव ।
हृदि वातातुरं रूक्ष जीर्ण चात्यथ वदना

(च० सू० अ० १७)

हृद्शून्यगात द्रव शोष भेद स्तम्भा सम्मोहा पवनाद्विप

(च० चि० अ० २६)

वातन शूल्यते इत्यथ तुद्यपत स्फुटतीव च।
म्रियत शुष्यति स्तब्ध हृदय शून्यता द्रव ।।
अकस्मादीनता शोकोभय शब्दासहिष्णुता।
वेपथुर्वेष्टन मोह श्वासावराधाऽल्प निद्रता।।

(अष्टाग ग्रह निदान अ० [illegible])

वातोपसृष्टे वध्य वामयत स्निग्ध मातुरम।
द्विपञ्चमूली क्वाथन सस्नेह लवणन च।।

(चक्रदत्त)

हृदयाभिघात

डा० उषा गौतम
एम० डी०, पीएच० डी० (आयुर्वेद ...)
७/२८ गौतम मार्ग, ज्वाला नगर शाह... (दिल्ली)

आयुर्वेद के शास्त्र के अनुसार अपथ्यतमत्वेन आयास का और रोगवर्धनत्वेन विषाद का तथा स्वास्थ्यलक्षणत्वेन अनिर्वेद का निरूपण किया गया है।

आचार्य चरक ने निर्देश दिया है—

''आयास सर्वापथ्यानाम् विषादोरोगवर्धनाम्।''

' अनिर्वेदोवार्ताकलक्षणानाम्। '

इस प्रकार निर्वेद अस्वस्थ का लक्षण है और मन प्रसाद स्वास्थ्य का लक्षण है। अपथ्यो मे श्रेष्ठ आयास को बताया है। शारीरिक और मानसिक तनाव व्यक्ति के स्वास्थ्य को विनाश करने मे अपनी भूमिका का निर्वाह करता है। मानसिक तनाव निरन्तर बना रहे तो उससे पाचन प्रक्रिया प्रभावित होकर अनेक जटिल रोगो की उत्पत्ति कर देती है। स्वास्थ्य के लिए मन प्रसाद आवश्यक है या यह कहना उचित है कि मन प्रसाद की अवस्था स्वास्थ्य का निर्दुष्ट लक्षण है।

आयुर्वेद मे प्राण शब्द से प्राणवायु अर्थ के साथ अग्नि, सोम वायु सत्व, रज तम, पचेन्द्रियो और भूतात्मा की भी प्राण सज्ञा है। इन प्राणो की स्थान गणना मे हृदय को भी प्राणायतन कहा गया है। आयुर्वेद की दृष्टि से हृदय आधुनिको के समान केवल रक्त फेकने वाला एक पम्प मात्र नहीं है अपितु हृदय अन्तमुख एव वहिर्मुख स्रोत समेत हृदय के अर्थ मे प्रयुक्त समझना चाहिए। इस कारण हृद्रोग शब्द से हृदय एव अन्तर्मुखी एव बहिर्मुखी स्रोतो की विकृति का ग्रहण करना उचित है।

हृदय के महत्व को दृष्टिगत करके ही आचार्य चरक ने हृदय को सतत् रोगो से बचाने का उपदेश दिया है। साथ ही हृदय को षडगो, इन्द्रियो, सगुण आत्मा आदि का आश्रय बताया है। इसका कारण है कि 'रक्तजीव इति स्थिति '' के अनुसार रक्त जीव सज्ञा दी गई है। रक्त का आधार हृदय है यदि हृदय की गति मे अवरोध हो जावे तो शरीर के सम्पूर्ण कार्यादि समाप्त हो जाते है ... इसलिए शरीर सरक्षण की दृष्टि से हृदय का महत्व स्वत ... हो जाता है। जीवन के लिए हृदय का स्वास्थ्य अनिवार्य माना गया है। हृदय को मर्म माना गया है हृदय का अभिघात सद्य मरण का कारण होता है। आचार्य चरक ने हृदय के अभिघात होने पर लक्षणो का निर्देश किया है। ... श्वास बलक्षय, कण्ठशोष क्लोम के अधोभाग मे ... जिह्वा का बाहर निकलना मुख ... उन्माद, प्रलाप, सज्ञानाश आदि रोग होते

आयुर्वेदानुसार त्रिदोष को आधार मानकर शरीर तथा अवयवो, तदुपकारी और अपकारी द्रव्यो का निरूपण किया गया है। हृदय के रोगो का कारण त्रिदोष को माना गया है। अत वात से हृदय की रक्षा का विशेष निर्देश किया गया है। वायु ही पित्त और कफ के समुदीरण मे कारणभूत है। इस प्रकार त्रिदोष कोप होकर हृदय का आश्रय लेने पर विविध लक्षण उत्पन्न होते है।

हृदय रक्तसचार और मन दोनो का स्थान माना गया है। ''रसधात्वादि मार्गाणा सत्वबुद्धिन्द्रियात्मना प्रधानस्योजश्चेव हृदय स्थानमुच्यते' यह आचार्य चरक ने मदात्यय प्रकरण मे निर्देश किया है और मद्य की कामुकता हृदय को उत्तेजित करके और मन को प्रसन्न करके करने की बताई गई है।

हृदयाभिघात के ऊपर लक्षण समूह या उससे उत्पन्न रोगो का निर्देश किया गया है। इस लक्षण समूह को अधुना शाक (**Shock**) सज्ञा से अभिहित किया जाता है। हृदयाभिघात से मानस दृष्टि का निर्देश किया गया है। इसी

प्रकार मानस दोषो से भी हृदय की दुष्टि होती है। आश्रय के नाश से आश्रयी का नाश देखा जाता है। एक दूसरे का प्रभाव दोनो आश्रय आश्रयी पर होता है। इस कारण हृदयाभिघात के लिए मानसिकाभिघात भी कारण होता है।

पूर्व मे निर्देश किया जा चुका है कि हृदय मे पर प्रधान ओज का स्थान है। हृदय के स्वास्थ्य के लिए मन और ओज का ठीक रहना आवश्यक है। इसके लिए विशेष रूप से वात से रक्षा आवश्यक है।

वात का कोप धातुक्षय एवं आवरण से माना गया है। वही काम, शोक, भय से भी वायु का कोप बताया गया है। इन मानसभावो से वायु का कोप हृदय को अधिक हानि पहुचा सकता है, क्योंकि उनका अधिष्ठान मन है। इसलिए आचार्यों ने वायु के कोप से हृदय की रक्षा को विशेष महत्त्व दिया है। मानस भावो से भी भय का अत्यधिक वात कोप के प्रति कारण है।

भयजन्य वात प्रकोप—

आयुर्वेदानुसार भय पचविध वायु मे क्षोभ उत्पन्न करता है। वात के क्षोभ से पित्त और कफ के हीन योग की परिस्थिति बनती है। इस कारण ओजस और मेधा का ह्रास होता है। और हर्षक्षय (ग्लानि) उत्पन्न होता है। ओज क्षय से भय की उत्पत्ति होती है, इस प्रकार दोनो मे परस्पर कार्य कारण भाव की अवस्था है। व्यानवायु के प्रकोप से भ्राजक पित्त का क्षय होता है जिससे मुख मण्डल की त्वक प्रभाशून्य हो जाती है। काण्ठस्थवात का प्रभाव ओज क्षय की परिस्थिति उत्पन्न करता है। ओजक्षय के लक्षणो मे आचार्य चरक ने भय का सर्व प्रथम उल्लेख किया है। ओज क्षय के जो कारण दिये गये है वह सब वातकोप के भी कारण है। ओजः क्षीयते कोपक्षुत् ध्यानशोक श्रमादिभिः। ये सभी कारण वात के भी कोपक है।

यही कारण है कि आयुर्वेदाचार्यो ने आचार रसायन का निर्देश किया है। इसमे विधि और समाज की मर्यादाओ के अनुपालन आचरण का विधान किया गया है जो मानसिक सतुलन करके मन प्रसाद की अवस्था उत्पन्न करता है तथा अस्वास्थ्यकर भावो से बचने तथा पथ्यतम आहार विहारो का विधान करता है। सक्षेप मे सद्वृत्त एव स्वस्थवृत्त के उन उपयोगी विधानो का पालन करने का उपदेश किया है। भगवान श्रीकृष्ण ने भी मन प्रसाद की उत्कृष्टता प्रतिपादित की है।

"प्रसादे सर्वदुःखाना हानिरस्योपजायते" इसलिए हृदय मर्म पर किसी प्रकार का शारीरिक एव मानसिक अभिघात नहीं होना चाहिए। तभी सुवायु की प्राप्ति सभव है। [illegible] (आचार) का [illegible] आवश्यक है। [illegible] जीवन रहने पर दीर्घ जीवन की प्राप्ति सभव है। [illegible] ने तनाव समानवायु का अतियोग पाचकपित्त का [illegible] मे लाकर अग्निमांद्य उत्पन्न करता है। अपान का अतियोग कफ के मिथ्यायोग से कोष्ठबद्धता या अतिसार को उत्पन्न करता है। उदानवायुवृद्ध होकर बोधक कफ की हीनावस्था उत्पन्न कर [illegible] तथा अरुचि करता है।

प्राकृतिक नियम, विधि तथा सामाजिक मर्यादाओ के विपरीत आचरण से भय की उत्पत्ति होती है जो वायु के क्षोभ का कारण होता है। समान वायु का प्राणवायु से संयोग होता है। साधक पित्त का हीनयोग एव अवलम्बक कफ का मिथ्यायोग होता है। उदान एव प्राणवायु के प्रकोप [illegible] मे आघात होता है जिससे हृत्स्पन्दन की वृद्धि [illegible] श्वासकृच्छ्ता या दीर्घता मे न्यूनता [illegible] आकुलता [illegible] है साधक पित्त की निबलता से आजालस्य [illegible] का भाव बढ जाता है। उदान वायु के कोप से [illegible] का शोषण होकर उच्चारण मे असमर्थता [illegible] के प्रकोप से भ्राजक पित्त का हीनयोग होकर [illegible] के मिथ्यायोग से शरीर कम्प की स्थिति तथा [illegible] हो जाती है।

इस प्रकार मानस भावो से प्रकुपित [illegible] विभिन्न विकृतियो का जनक हो [illegible] है। [illegible] के लिए त्रिकाल सध्या का विधान [illegible] जीवन सभव है। त्रिकालसध्या [illegible] कहा गया है। उसका मूल आशय [illegible] है।

हृदय पर अभिघात का कारण वात प्रकोप [illegible] होता है। इसलिए उसका साम्यावस्था मे रहना आवश्यक है इन्द्रियो का मन स्वामी है और मन का [illegible] बताया है। "इन्द्रियाणा मनोनाथः मनोनाथस्तु मारुतः" यह वाक्य भी वायु के प्रभाव अतिशय का यथोचित करता है। आचार्यो का निर्देश है-

> नगरी नगरस्येव रथस्येव रथी यथा।
> स्वशरीरस्य मेधावी कृत्येष्ववहितो भवेत।।

प्रकुर्वति।। आयम्यतेमारुतज हृदय तुद्यते तथा। निर्मथ्यते दीर्घते स्फोट्यते पासतऽप च।। तृष्णोष्णदाह चोषास्यु। पत्तिके हृदय क्लम धूमायते च मूर्च्छा स्वेद ।।

इस लेख मे ऊर्ध्ववातज (गेसो से उत्पन्न) हृदयरोगो का वर्णन निदान सम्प्राप्ति सहित सक्षेप से प्रकट किया ह। आगे इस रोग की चिकित्सा समासत लिखी जा रही ह।

चिकित्सा और अनुभूत प्रयोग—

व्याधियो की चिकित्सा का सर्वप्रथम ओर सर्वश्रेष्ठ उपाय ''निदान परिवर्जनम्'' अर्थात् जिन कारणो से रोग उत्पन्न हुआ ह उस विकृति विपरीत, दूषित आहार विहार एव अशुद्ध ओषध का परित्याग करना ह।

उदरशुद्धि—

हृदय रोगी को कभी भी तीव्र विरेचन नहीं देना चाहिए। मल शुद्धि के लिए हृद्य ओर सोम्य वस्तुओ का उपयोग करना श्रेयकर हे। निम्न प्रकार रेचन करावे।

(क) मुनक्का लाल या काली ११ नग, सोफ नई १ तोला, पानी २० तोले मे भिगोकर पकाकर आधा शेष रहने पर छान कर उष्ण पिलावे। एक वार मे पेट साफ नहीं तो दूसरी, तीसरी वार भी पिलावे।

(ख) गुलकन्द गुलाव ढाई तोले से १ छटाक तक ठण्डे पानी या दूध से मृदुरेचन होगा।

(ग) ईसबगोल की भुसी ६ माशे से १ तोला तक एक समय कदोष्ण दूध अथवा ग्लूकोन डी मिले पानी से या साधारण जल से भी ले सकते हे।

(घ) तुरजबीन (यवास शकरा) १ तोला सोफ या गुलाव के अर्क मे भिगोकर छानकर पीवे। इसके सेवन से सुखपूर्वक रेचन होता हे। हृद्रोग और निर्वलता भी नहीं होती हे।

(ड) गुलाव फूल देशी ६ माशे, सोफ नई ६ माशे २ कप दूध मे पकाकर एक कप दूध १ कप पानी मिलाना विशेष लाभकारी ह।

औषधि व्यवस्था—

हींग हडडा १ तोला (घी मे भुनी), सफेद जीरा भुना २ तोला, काश्मीरी जीरा २ तोला, कालीमिर्च १ तोला, अजवायन वम्बई २ तोला, छोटी पीपल २ तोला, सोठ २ ताला सभी चीजो को कूट छान कर वाद मे हींग भुनी पीसकर मिलावे, यह चूर्ण मूढवात गेस आदि का शमन व जठराग्नि को प्रदीप्त करता ह, आम दोषो का पाचन।

मात्रा— वयस्को व वृद्धो के लिए आध छटाक चम्मच से १ चम्मच तक तीन वार पानी से दे। हींग भुनी [illegible] तोला मटठे मे शुद्ध रसोन ५ तोला, जीरा भुना ढाई तोला कालीमिर्च ढाई तोला, छोटी पीपल ढाई ताला। [illegible] तोला, शुद्ध गन्धक ढाई तोला, काला नमक [illegible] तोला सेधा नमक १ तोला सवको मिलाकर वारीक पीसकर नींबू के स्वरस की तीन भावनाये देकर छोटे वेर के वराव गालिया वनाकर छाया मे सुखा ले। मात्रा— वालक १ गोली से ३ गोली तक, वयस्क को २ गोली से ८ गोली तक ४ वार मे पानी से दे। इसके सेवन से सभी प्रकार से ऊर्ध्ववात, गस पीडा, मूढवात, मन्दाग्नि आदि नष्ट हो गस से उत्पन्न हृदयरोग दूर होते हे। पथ्यपूर्वक रहने से रोगी ऊर्ध्ववात रोग से मुक्त हो जाता हे।

सावित्री संधानम्—

जमीरी नींवू या कागजी नींबू का रस ५ सेर, किसी चीनी या प्लास्टिक के अमृतवान मे भरे। इस रस मे हींग भुनी ढाई तोला, काला नमक ५ तोला, पाचो नमक ५ छटाक, कालीमिर्च भुनी ५ तोला, जीरा भुना ५ तोला पीपल छोटी भुनी ५ तोला, सोठ भुनी ५ तोला अजवायन देशी १ छटाक, मकडाराई भुनी ५ तोला, सवको कूट छानकर स्वरस मे मिला दे। किसी लकडी के चम्मच से हिलाकर १० दिन तक धूप मे रखे। मात्रा ३ माशे से १ तोला तक दो वार दे।

गुण एव उपयोगिता—

इस सधान के पीने से उदरशूल, वात गुल्म अजीर्ण, ऊर्ध्ववात मन्दाग्नि विषूचिका, आमदोष, गस, कृमि, अरुचि, मूत्ररोध वृक्क शोथ आदि विकार दूर होकर ऊर्ध्ववात से उत्पन्न हृदय रोग दूर होता हे।

आरोग्य हरीतकी (स्वकृत) —

छोटी काली हरड (जगी हरड) १ सेर, गोमूत्र ४ सेर ४ दिन तक भिगोकर धूप मे रखे। पाचवे दिन गोमूत्र निकालकर धूप मे सुखा दे। स्मरण रहे गोमूत्र मे हरड भिगोने के समय काला नमक ५ तोला पीसकर पहले ही मिला दे।

हरडो को शुष्क होने पर भाड मे अथवा कढाई मे भून ले, पुन शीतल होने पर २ सेर वाले अमृतवान मे नींबू का स्वरस निचोड दे, जिसमे हरड डूब, जाया प्रक्षेप- पीपल छोटी कालीमिर्च, सोठ, अजवायन देशी, कालानमक, सेधानमक, हींग भुनी, हींग सहित सभी ओषधियो को पीसकर अमृतवान मे डालकर हिलाते रहे। धूप मे प्रतिदिन ६, ७ घण्टे अवश्य रखे। १० दिन पश्चात् प्रयोग करे। मात्रा— एक हर से दो हर्र तक दिन मे व रात सेवन करे। इसके सेवन से सभी प्रकार के ऊर्ध्ववात शान्त होते हे ओर हृदय का गुरुत्व, शूल, निर्बलता आदि ठीक होते हे।

ऊर्ध्ववात (गस) की चिकित्सा के लिए अन्य ओषधो की सहायता भी ले सकते हे यथा— हिग्वाष्टक चूर्ण, द्राक्षारिष्ट, पिप्पल्यासव, अर्जुनारिष्ट, अभयारिष्ट आदि शास्त्रीय आषधो का प्रयोग भी उपयोग कर सकते हे। यदि उक्त भेषजो क सेवन के लिए किसी वद्यराज की सम्मति लेनी पडे तो अवश्य ही व्यवस्था व अनुपान परिवर्तित करवा सकते ह।

ऊर्ध्ववात जन्य हृदय रोगो मे उदर शूद्धि, गैस निवारक चिकित्सा के साथ हृदय रोगो की चिकित्सा भी चलानी चाहिए।

मुक्ताभस्म, मुक्तापिष्टी, प्रवालपिष्टी, प्रवालभस्म, जवाहरमोहरा, जहरमोहरा पिष्टी, अकीक भस्म आदि उत्तम हृद्य भेषजो को १-१ रत्ती मधु अथवा अर्जुनावलेह के साथ देते रहे।

अर्जुनावलेह के घटक— अर्जुनछाल नवीन का सूक्ष्म कपडछन चूर्ण ५ तोले, मुक्तापिष्टी, प्रवाल पिष्टी, मुक्ताशुक्तिपिष्टी, छोटी इलायची, जदवार (निर्विषी) सभी १-१ तोले मिलाकर खरल मे घोटे ओर अर्क गुलाब ओर अर्क वेद मुष्क १-१ छटाक मिलाकर मिश्री ४० तोले की गाढी चाशनी बनाकर उक्त दवाये मिलाकर ५० चादी के असली वर्क डाले ओर सुरक्षित रक्खे। मात्रा— १ १ छोटा चम्मच तीन बार सेवन करे। इससे हृदय को वल मिलेगा रोगो की निवृत्ति होगी।

हृद्रोग-वातज शेषांश पृष्ठ 97 का

चरक सहिता मे यद्यपि पचलवण काजी, गोमूत्र आदि से सिद्ध तल (तिल तेल) का पान वताया हे।

शूल इत्यादि लक्षण आर वातदोष को ध्यान मे रखते हुए लहसुन का प्रयोग भी अच्छा हे। वातानुलोमन के लिए हिग्वाष्टक चूर्ण को चावल ओर घृत मे साथ देना चाहिए।

रसायन प्रयोगो से ओज की वृद्धि होती हे, अत पिप्पली रसायन का प्रयोग अच्छा हे।

अन्य चिकित्सा इस प्रकार है—

एरण्डमूल क्वाथ, यवक्षार प्रक्षेप मे डालकर पीना।

दशमूल क्वाथ।

अर्जुन + बलाबीज सिद्ध क्षीर का पान।

हृदयार्णवरस २ गोली २ बार दूध से।

प्रभाकर वटी २ गोली २ बार दूध से।

नागार्जुनाभ्र रस २ रत्ती २ वार।

अरति, शूल, तनाव अधिक हो तो अजवायन, सोफ या पुदीना का अर्क २-३ बूद देना चाहिए। साथ मे गुलाव जल १ चम्मच देना चाहिए।

जवाहर मोहरा नामक प्रसिद्ध योग २ रत्ती २ वार मधु के साथ देने से उच्छा परिणाम मिलता हे। इस योग मे माणिक्य पिष्टी, पन्ना पिष्टी मुक्ता पिष्टी प्रवाल पिष्टि, कहरवा पिष्टि, चादी का वरख, सोने का वरख, दरियाई नारियल का चूर्ण, आवरेशम, मृगश्रृग भस्म जद्वार कस्तूरी और अवर आता हे।

पथ्यापथ्य— पथ्य—

गोधूम, यव, केला खजुर, एला, पटोल, कार्वेल्लक, नई मूली, द्राक्ष शर्करा पुराण गुड, रसान शुठी अजमोदा।

अपथ्य—

अधिक परिश्रम, अधिक कार्यभार, तनाव अधिक दौडना अधिक स्त्री प्रसग, क्रोध, चिन्ता अधिक भाषण।

गुरु स्निग्ध आहार, अध्यशन, वेग विधारण अधिक कषाय, तिक्त रस का सेवन इत्यादि।

एक आनुभविक विवरण

हृच्छूल

(ANGINA PECTORIS)

वैद्य हरिशंकर शाण्डिल्य "भिषगाचार्य डी० एस० सी० ए०
चिकित्साधिकारी/प्रभारी— राजस्थान आयुर्वेद चिकित्सालय, करणवा (पाली) राजस्थान

पर्याय नाम— हृच्छूल, हृदयोद्वेष्टन दिल का दर्द, हार्ट पेन, एंजायना पक्टोरिस आदि।

'यह चिकित्सा विज्ञानीय उस अवस्था विशेष का नाम है। जिसमे हृदय प्रदेश मे समय-समय पर पीडा के वेग आते है।यह पीडा रुग्ण के बाये कन्धे से होती हुई बाई बाहु की ओर जाती प्रतीत होती है। इस काल मे रोगी की छाती मे घुटन की अनुभूति के साथ स्वेदागम एव मृत्यु सम्मुख खडी नाचती प्रतीत होती है। तथा रोगी यथाशीघ्र, येन,केन प्रकारेण इस शूल पाश से मुक्ति का प्रयास करता है।'

कारण—

आयुर्वेद शास्त्र के महान चिन्तक महर्षि सुश्रुत अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सुश्रुत संहिता मे वातज हृद्रोग मे हृच्छूल का होना वर्णित करते है कि—

कफ पित्तावरुद्धस्तु मारुतो रस मूर्च्छित ।
हृदिस्थ कुरुतेशूलमुच्छ्वासावरोधक परम् ।।
स हृच्छूल इति ख्यातो रस मारुत सम्भव ।
(सु० उ० ४२)

मिथ्या आहार विहार (तले हुए पकवान तीक्ष्ण, चटपटे पदार्थो का अतिसेवन) के द्वारा प्रकुपित कफ एव पित्त से अवरुद्ध हुआ वात रस धातु (आहार रस) मे सम्मिश्रित होकर रस स्थान हृदय मे जाकर वहा शूल की उत्पत्ति करता है। तथा शूल की कष्टानुभूति के फल स्वरुप उच्छ्वास रुकता हुआ सा अनुभव होता है। उसे हृच्छूल कहते है तथा यह आहार रस एव वायु दोष के संयोग से पैदा होता है।

आधुनिक मतानुसार अभी तक इसका वास्तविक कारण ज्ञात नहीं हो सकता है। अनुभव मे देखा गया है कि पैतृक प्रवृति इस रोग मे विशेष प्रभाव रखती है,एक ही कुल के अनेक व्यक्तियो को यह रोग पीडित करता है। महिलाओ की अपेक्षा पुरुषो मे अधिक पाया जाता है तथा प्राय मध्यमायु (३० ४० वर्ष) के बाद देखा गया है।

जिन लोगो का जीवन, चिन्ता, मनोविकल्पयुक्त, शारीरिक एव मानसिक परिश्रम शील रहा हो। आमवात वातरक्त उपदश और आन्त्रिक ज्वर का अन्तर्विष भी इस रोग की उत्पत्ति मे सहायक होता है।

यह अग्निमाद्य युक्त अनियमित आहार विहार शील अधिक वसायुक्त (वनस्पति घी, आदि) भोजन करने वाले मेदस्वी पुरुषो मे कदाचित महिलाओ मे भी अधिक पाया जाता है।

प्राय तेज दौडना, पहाड पर चढना तीव्र गति से घरो मे सीढिया चढना आदि शारीरिक श्रम ही इस रोग के कारक बन जाते है। कभी कभी विरल रूप से वस्तुओ को झुक कर उठाना, या जूतो के फीते बाधना भी रोगी का शूल उत्पन्न करने का माध्यम बन जाते है। अकस्मात शीत का लगना और मानसिक सन्ताप या तीव्र आघात भी रोगोत्पत्ति का कारण बन जाते है।

आधुनिक चिकित्सा शास्त्रियो के मतानुसार हृच्छूल के आक्रमण का तात्कालिक कारण हृदय की मासपेशियो मे आक्सीजन की भी कमी (एनोक्सिया) का होना है।

मृत्यूत्तर परीक्षणो के समय निम्न तीन अवस्थाओ मे से एक स्थिति मिल सकती है।

(1) [illegible] स्वय अस्वस्थ हो।

(2) हृदय [illegible] मे स्वस्थ दीखता है परन्तु महाधमनी मे विकार मौजूद मिलते है।

(3) हृदय और रक्तवाहिनी दोनो ही रुग्ण हो।

सम्प्राप्ति --

हृच्छूल मे हृदय की पेशियो को रक्त आपूर्ति करने वाली सूक्ष्म धमनियो तथा बृहद्धमनी के प्रारम्भिक भाग मे सकोच या अवरोध हो जाने से हृदयस्थ मासपेशियो की क्षीणता दुर्बलता हो जाती है। फलस्वरूप हृदय प्रदेश मे [illegible] होती है।

शूलोत्पत्ति विषयक सभावनाए (एक अनुमान)—

(1) जिस प्रकार [illegible] मे अति श्रम के उपरान्त [illegible] रक्त सवहन के दूषित होने के कारण मासपेशीगत [illegible] होने लगती है उसी प्रकार [illegible] के विकृत होने से हृदय मे रक्तसचार भली भाति नही होता और उससे [illegible] सम पीडा होने लगती है।

(2) [illegible] की [illegible] की पीडा को ही [illegible] [illegible] जाता है

(3) [illegible] अपनी दीवार की दुर्बलता के कारण विस्तृत हो जाते है और [illegible] नाडियो पर दबाव डालकर हृच्छूल की उत्पत्ति करते है।

[illegible] उपरोक्त मे से प्रथम कारण ही अधिकतर हृच्छूल के उत्तरदायी माने जाते है।

[illegible] हृच्छूल को हृदय के थक जाने और उसकी वातनाडियो की मृदुता का सूचक जानना चाहिए। यह भी स्मरणीय है कि हृच्छूल मे प्राय धमनियो मे रक्तभार अधिक होता है अत रक्त को आगे धकेलने हेतु हृदय को अधिक श्रम करना पडता है जिससे हृदय परिश्रान्त हो जाता है और उससे [illegible] पीडा होने लग जाती है।

कभी ऐसा भी होता है कि धमनीगत रक्तभार तो कम होता है लेकिन हृदय की मासपेशिया ही दुर्बल होने से शीघ्र थक जाती है। यही कारण है कि कभी तो अतिश्रम के उपरान्त ही शूल की अनुभूति होने लगती है और कई बार श्रम तो अल्प होता है परन्तु हृदयपेशियो के दौर्बल्य के कारण वही अल्प श्रम ही शूलोत्पत्ति का कारण बन जाता है।

हृच्छूल के इस प्रकार को आधुनिक परिभाषा मे श्रम जनित हृच्छूल (एन्जायना आफ एफर्ट) कहा जाता है।

हृच्छूल का द्वितीय प्रकार "स्पाज्मोडिक एन्जायना" अर्थात् आकुञ्चन जन्य हृच्छूल नाम से जाना जाता है। यह शूल हार्दिक धमनी के अकस्मात् सकोच होने के कारण होता है। इसमे हृदय की धमनियो मे रक्त सवहन मे कमी हो जाती है।

लक्षण—

प्राय इस प्रकार का हृच्छूल ५० वर्ष से अधिक आयु वाले पुरुषो मे देखने को मिलता है इसमे शूलोत्पत्ति अचानक और तीव्र पीडा के साथ होती है। शूल कुछ मिनट तक ही रहता है। रोगी शूल के उठते ही एकदम स्थिर हो जाते है और महसूस करता है कि अगर उसने एक भी शारीरिक प्रतिक्रिया सम्पादित की तो मृत्यु होना निश्चित है।

नाडी की गति मे तीव्रता रक्तचाप मे वृद्धि एव हृदयगति मे वृद्धि, चेहरे पर पीलापन पसीना आना, श्वास लेने मे कष्टानुभूति छाती मे खिचाव अनुभव होना रोगी के हिलने डुलने पर शूल मे वृद्धि होना आदि लक्षण मिलते है।

हृच्छूल आक्रमण के समय शीघ्रातिशीघ्र हृदय की इलक्ट्रोकार्डियोग्राम जाच करा। [illegible] स्पन्दनात्मक विकृति मिलती है।

हृदय मे थोडा विस्तार मिलता है और [illegible] कपाटिकाओ मे कुछ विकार [illegible] शूल का आक्रमण होने के बाद मूत्रराशि [illegible] जाती है।

[illegible] प्रकृति के रोगियो मे उपरोक्त [illegible]

हृच्छूल ही प्राय देखने में आते है।

चिकित्सा—

इस रोग की चिकित्सा के दो भाग होते है—

(१) शूल के आवेग की (शूलोत्पत्तिकाल मे) शान्ति हेतु प्रयास करना।

(२) वेग के उपरान्त शूल की पुनरुत्पत्ति निरोधार्थ व हृदय को सवल बनाने हेतु प्रयत्न करना।

आवेगकालिक चिकित्सा—

(१) वेग के समय 'एमाइल नाइट्रेट' का सुघाना अत्युपयोगी सिद्ध हुआ हे। इसे सुघाने से तत्काल रोगी को लाभ मिल जाता हे। इसकी पाच वूद दवा भरे हुए केपसूल आते ह इन को प्रयोग करते समय ताडकर दवा को रूमाल पर छिडक कर सुघाने के लिए काम लिया जाता ह। इसे रोगी को सदव अपने पास रखना चाहिए या ट्राइनाट्रिाइट १ टेवलेट देवे।

(२) गरम किया मद्य या गरम पानी म कर्पूरधारा (अमृत धारा प्रचलित नाम) ? ? वूद डालकर थोडी थोडी दर म ४ ५ वार देना लाभ करता ह।

(३) कमरे का सदा गरम रखने का उपाय करना चाहिए। विस्तर का भी गरम रखना चाहिए।

(४) यथाशीघ्र (उपलब्धता के अनुसार) प्राणवायु (आक्सीजन) देने की समुचित व्यवस्था करनी चाहिए।

(५) वेदना शान्ति हेतु तुरन्त अहिफेन (मार्फीन या पथाडीन) का सूचीवेध करे तथा आयुर्वेदीय कल्प अहिफेनासव १० १० वूद ३-४ वार दिन मे द। रात का सान क समय निद्रोदय रस २५० मि० ग्राम सपगन्धा चूण ७५० मि० गाम० रस सिन्दूर १२५ मि० ग्राम। मिश्रित मात्रा दूध से या पानी स दे।

(६) रोगी को पूर्ण विश्राम हेतु निर्देश करे।

शूलोत्पत्ति के उपरान्तकालीन चिकित्सा या विश्रान्ति कालिक चिकित्सा—

इस प्रकरण मे हृदय को सवल वनान हेतु एव धमनी अवरोध को विगलनार्थ उपाय करने चाहिए।

(१) सुश्रुतोक्त मतानुसार हृच्छूल मे वात कफ प्रकोप नाश रस दृष्टि का दृष्टि मध्य रस सर्वप्रथम रोगी को दशमूल क्वाथ मे तिल तल या पटपल घृत तथा सन्धव लवण, पिप्पली एव मनफल सयुक्त कर पिलाकर वमन कराना चाहिए।

तदनन्तर निम्नोक्त कल्पनाओ का प्रयाग करे।

(२) अभ्रक भस्म सहस्त्रपुटी ६२ मि०ग्रा० कस्तूरी भरव रस ६२ मि० ग्रा० विषाण भस्म २५० मि०ग्रा० पूर्ण चन्द्रोदय रस ६२ मि० ग्रा०। १ मात्रा तीन वार मधु पान स्वरस के साथ ३-३ घटे पर सेवन कराव।

(३) हिमालय ड्रग क० की 'अवाना' टेवलेट २ गोली + आरोग्यवर्धिनी २ गोली + महालक्ष्मी विलास रस १२५ मि० ग्रा० का मिश्रण दिन मे २-३ वार अर्जुनारिष्ट २० एम० एल० + आर्द्रक स्वरस।

(४) हृदय प्रदेश पर चन्दनवला लाक्षादि तल, पंचगुण तल या वलातल की मृदु दवाव से मालिश कर दशमूल क्वाथ से वाष्प स्वेद दे।

(५) हृदय वल सरक्षणाथ— जवाहर मोहरा ३० एम० जी० + मुक्ता पचामृत १२५ मि० ग्रा० + याकूती .. मि० ग्रा० + वृ० वात चिन्तामणि रस १२५ मि० ग्रा० + पुष्करमूल चूर्ण ५०० मि० ग्रा० मिश्रित एक मात्रा दिन मे एक वार अर्जुन घृत १ चम्मच अर्जुन के सिद्ध क्षीर पाक २५० ग्राम के साथ दे। ५ से ३ सप्ताह तक दे।

(६) भोजन के वाद ... को महाशख वटी २ गोली + शूलवज्रिणी वटी २ गोली + गरान्तक वटी २ गोली + हिग्वादि वटी २ गोली का मिश्रण आर्क सौफ २० एम० एल० के साथ प्रात साय दे। अग्निमाद्य का नाश होकर वात का शमन करता हे व शूल की निवृत्ति मे सहायता मिलती ह।

(७) यथाशक्ति वलनाथ रोगी को अपने वल का ध्यान रखते हुए यागिक प्राणायाम विधि के अनुसार पूरक कुम्भक व रेचक क्रमानुसार प्रात ब्रह्म मुहूर्त म शीत से वचाव करते हुए, मकान की छत पर या किसी उद्यान म अभ्यास करना चाहिए।

इससे हृदय को अधिकाधिक आक्सीजन मिलने से एव रक्तसचार क्रिया सुव्यवस्थित होने से हृच्छूल पुनरावत्तन का भय दूर होने मे सहायता मिलती ह।

(८) भोजनोत्तर— अश्वगधारिष्ट १० एम० एल० + द्राक्षासव १० एम० एल० + अर्जुनारिष्ट १० एम० एल० को

अर्क वेदमुश्क १० एम० एल० मिलाकर व समभाग जल मिलाकर पीना अत्यन्त लाभप्रद हे।

(६) स्वर्ण योगराज गुग्गुल या रूमायोग विद गोल्ड टेव (मण्डू) को प्रथम आठ दिन २-२ गोली दिन मे दो वार दे, द्वितीय आठ दिन १ १ गोली दिन मे तीन वार दे, तृतीय आठ दिन १ १ गोली दिन मे दो वार दे।

इस प्रकार से ३ सप्ताह प्रयोग करके १५ दिन तक गोली सेवन वन्द रखे तथा पुन यही क्रम दोहरावे।

रोग सम्प्राप्ति भग को दृष्टिमध्य रख उपरोक्त गुग्गुल के योग का प्रयोग अत्युपयोगी प्रमाणित हुआ है। कोयम्वटूर के इन्टरनेशनल इन्सटीटयूट आफ आयुर्वेद द्वारा प्रकाशित "जर्नल ऑफ एन्शियेन्ट साइन्स आफ लाइफ" मे डा० शर्मा ने वताया है कि हृद्य वनापधि युक्त गुग्गुल योग के सेवन से एजायना तथा सम्वद्ध लक्षणो मे लाभ होता हे। गुग्गुल प्रयोग से मद तथा रक्तगत कोलेस्ट्रोल नष्ट होते ह तथा रोगी के ई० सी० जी० मे सुधार होता है।

इसी परिप्रेक्ष्य मे वनारस हिन्दू यूनीवर्सिटी के चिकित्सा विज्ञान सस्थान के आयुर्वेद विभाग के अनुसन्धानकर्त्ताओ ने "पुष्कर गुग्गुल" नामक योग विकसित किया ह। इस योग मे पुष्करमूल चूर्ण आर शुद्ध गुग्गुल समभाग लेकर ब्राह्मी के रस या क्वाथ की भावना देकर खरल किया जाता हे आर ५०० मि० ग्रा० मात्रा की गोलिया वनाई जाती हे।

सेवन विधि— इन गोलियो को ४ गोली की मात्रा को तीन वार गर्म पानी से दिया जाता हे। इस प्रकार नियमित ६ माह तक प्रयोग कराके आतुरालयीय परीक्षण किया गया जिसके परिणाम —

(१) ५० रोगियो मे से ६ रोगी पूर्ण स्वस्थ

(२) ५० रोगियो मे से ३० रोगी का हृच्छूल मे लाभ एव ई० सी० जी० मे सुधार।

(३) ५० रोगियो मे से ७ रोगियो के हृच्छूल मे लाभ।

(४) ५० रोगियो मे से ४ रोगियो मे कोई लाभ नहीं।

इस प्रकार रहे जो पर्याप्त उत्साहवर्धक थे। (स्वा० जौलाई से उदधृत के अश)

अन्य उपयोगी कल्प—

(१) कारस्कर कल्प (चिकि० प्रदीप)—

शुद्ध कुचला १० ग्राम, रक्त करवीर मूल चूर्ण १० ग्राम, शृग भस्म ४० ग्राम, पिप्पली चूर्ण ४० ग्राम।

निर्माण विधि— सभी द्रव्यो को प्रथक-प्रथक सूक्ष्म चूर्णित करे फिर चलनी मे ३ बार सम्मिश्रण को छान ले। तयार चूर्ण को सुरक्षित रखे।

गुण— वात कफज हृद्रोग एव कफज हृद्रोग मे अत्युपयोगी हे।

मात्रा— २५० से ५०० मि० ग्रा० १ मात्रा को ३ वार मधु या अर्जुनत्वक सिद्ध क्षीरपाक के साथ सेवन करावे।

(२) हृदय पुष्टिकर मिश्रण (स्वानुभूत व निर्मित)—

सगेयशव पिष्टी १० ग्राम, अकीक पिष्टी १० ग्राम नागार्जुनाभ्र १० ग्राम रूमी मस्तगी (असली) १० ग्राम विषाण भस्म १० ग्राम, पुष्करमूल चूर्ण ४० ग्राम, गिलोय सत्व १० ग्राम, सितोपलादि चूर्ण ३०० ग्राम।

निर्माण विधि— उपरोक्त सभी दव्यो को यथोक्त मान मे लेकर खरल मे मिश्रित करे। सुरक्षित रख ले।

सेवन विधि— ३ से ५ ग्राम मिश्रण का २ चम्मच अर्जुन घृत + १ चम्मच शु० मधु के साथ मिलाकर चाटे। प्रात साय इसके ऊपर से २५० मि० ली० दूध पी ले या च्यवनप्राश का सेवन करे।

गुण— हृदय की दुर्वलता को मिटाता ह हृदय की धडकन मे एव हृच्छूल मे लाभप्रद ह, बुढ़ाप म दिल घवराना, सास फूलना आदि मे जनरल टानिक क रूप म सेवनीय उत्तम कल्प हे।

४— उदुम्बरादि लेह ६ से १० ग्राम तक उष्णोदक जल मे मिलाकर प्रात ८ वजे पिये। इसके स्थान पर च्यवनप्राश भी ले सकते है।

५— पिप्पल्यादि चूर्ण ३ ग्राम मात्रा मे एक घूट गर्म जल के साथ दिन में दो समय भोजनोत्तर ले।

६— प्रभाकर वटी १२० मि० ग्रा० + मकरध्वज वटी ६० मि० ग्रा० + माणिक्यादि योग (सि० यो० स०) १२० मि० ग्रा० + अर्जुन चूर्ण ४८० मि० ग्रा० + पुष्करमूल चूर्ण ४८० मि० ग्रा० मिलाकर मधु के साथ मध्याह्न २ वजे ले।

७— निशोथ, कचूर, खरेटी की जड, रास्ना, सोट, छोटी हरड ओर पुष्करमूल सब आपस मे समभाग लेकर वस्त्रपूत चूर्ण वनाये।

उष्णोदक के साथ रात मे सोते समय सेवन कराना लिपान कंप्रसूल 'वान' १ आर डिजिट कपसूल 'वासु' १ साथ म लेना।

त्रिदोषज हृदयरोग
(Viral pericarditis)-

त्रिदोषज हृदोग मे तीनों दोपो के मिश्रित्त लक्षणो के साथ विवर्णता, मूर्च्छा, ज्वर, खासी, हिचकी, दम का फूलना हाफ चढना, मुख का स्वाद विगडना, प्यास की अधिकता, विषय भ्रान्ति, क, जी का मिचलान से उभडे हुए कफ के निकालने की इच्छा शूल, अरुचि तथा अन्य विविध प्रकार क कष्ट त्रिदोपज हृद्रोग मे होते हे।

चिकित्सा—

१— त्रिदापज हृदय रोगो मे पहले लघन कराना चाहिए। फिर तीनो दोपो मे हितकर अन्न खिलाना चाहिए। दोपो की हीन, अति आर मध्य उष्णता के लक्षणो को जानकर तदनुसार त्रिदोपशामक चिकित्सा करनी चाहिए।

२— हृद्रोगी को भोजन के वाद ही शूल या कफाधिक यदि हा तो पच्यामानावस्था मे अल्प हो आर जीर्ण हो पच जाने पर यदि वन्द हो जाय तो लोध्र, सेधानमक, वायविडग, अतीस सभी के समभाग चूर्ण को ६ ग्राम मात्रा मे उष्णोदक अनुपान स पिलाना चाहिए। भोजन के जीण हो जाने पर यदि वाताधिक अधिक हा तो एरण्ड तलादि से विरेचन करावे। पच्यमानावस्था मे यदि पित्ताधिक्य अधिक शूल हो ता फलस्वरूप आपधि जस हरीतकी आदि से विरेचन करावे। आर तीनो समयो म शूल अधिक त्रिदोपज हो तो मूलरूप ओषधि निशोथ आदि तीक्ष्ण द्रव्य मिलाकर विरेचन कराना चाहिए।

३— हृद्रोग रत्नाकर रस २४० मि०ग्रा० + विश्वेश्वर रस १२० मि०ग्रा० + सिद्ध मकरध्वज १२० मि० ग्रा० + नागार्जुनाभ्र २४० मि० ग्रा० + अर्जुनछाल चूर्ण ४८० मि० ग्रा० + पुष्करमूल चूर्ण ४८० मि० ग्रा० + वलामूल चूर्ण ४८० मि० ग्रा० सबको मिलाकर तीन मात्रा बनावे। ६ ग्राम अर्जुनघृत और ६ ग्राम मधु मिलाकर इसके साथ प्रात ६ वजे, दिन मे १-२ वजे, शाम को ६ वजे सेवन करावे।

४— माणिक्यादि योग (सि यो० स०) १२० मि० ग्रा० + रत्नाकर रस १२० मि० ग्रा० + हृदयचिन्तामणि रस २४० मि० ग्रा० + हृद्यचूर्ण ३६० मि० ग्रा० + श्रृगभस्म ३६० मि० ग्रा० + अर्जुन छाल चूर्ण १ ग्राम + रुद्राक्ष का चदन जरा घृष्ट १ ग्राम मिलाकर तीन मात्रा वनावे। दिन म ३ [illegible] मध्यान्ह १ वजे, शाम ४ वजे आर रात म १० [illegible] मधु के साथ लवे।

५— अर्जुनारिष्ट २० ग्राम मात्रा मे भोजनोत्तर समभाग जल मिलाकर दिन मे दो समय पिये। लिपान कपसूल (वान) १ तथा डिजिट कंपसूल (वासु) १ साथ म लना चाहिए।

क्रिमिज हृदय रोग
(Worminous carditis)-

कृमिज हृदयरोग म आमाशय मे वायु प्रायः आवृत होकर प्रकुपित होता ह। अत आमाशय का सशोधन वमन द्वारा कराना चाहिए। लघन, पाचन भी कराना चाहिए तथा कृमिप्रकरणोक्त कृमि नाशक सव चिकित्सा करनी चाहिए। सामान्यतया प्रतिदिन क होने की भ्रान्ति, वार-वार थूक का आना, भेदनवत् पीडा, अरुचि आर जी मिचलाना अधेरा छा जाना, आखो मे श्यामलता आना ओर [illegible] भी हो जाना ऐसे लक्षण कृमिज हृद्रोग मे होते ह।

चिकित्सा—

१— प्रथम घृत के साथ भात दही तथा तिल कल्क गुड आदि तीन दिन तक खिलाने स कृमि उत्क्लिष्ट होते हे। वाद मे सुगन्धित द्रव्य जेसे इलायची बीज दालचीनी, तेजपात आदि तथा भुना जीरा, सधव आर चीनी सब एक साथ मिलाकर इनके चूर्ण के साथ कोई विरेचन योग देकर विरेचन करावे।

२— विडग चूर्ण ६ ग्राम काजी के साथ मिलाकर प्रतिदिन प्रात साय पीवे। अथवा विडग ३ ग्राम + कूट चूर्ण ३ ग्राम मिलाकर गोमूत्र के साथ प्रात साय पीना प्रारम्भ करे इससे कृमि गिर जाते हे।

३— कफज हृद्रोग की ओपधि सवन लाभप्रद हे।

४— वायविडग, चीता, नागरमोथा, पिप्पलीमूल, देवदारू, दालचीनी, चव, जीरा, वहेडा, सोठ, खेरसार, कत्था, मेढासिगी, पीपल, भारगी, काकडासिगी, सोफ, कचूर आर कालीमिर्च समानभाग चूर्ण वनावे। ३ ग्राम उष्णोदक क साथ प्रात साय ८ वजे पीये।

५— हृद्रागार रस (र० का० ध०) १ ग्राम + हृदयाणवरस २४० मि०ग्रा० मिलाकर २ मात्रा वनावे। मकोय के फल १५ ग्राम + त्रिफला चूण ५० ग्राम + ४०० ग्राम पानी म अष्टमाश क्वाथ वनाकर दो मात्रा वनाकर प्रात आर साय ८ वजे इस क्वाथ के साथ पिलावे।

६— पुष्करमूल, कागजी नींवू की छाल पलाश वीज, वायविडग करज वृक्ष का फल कचूर, देवदार, सोठ, जीरा, इन सभी समभाग लेकर १० ग्राम चूर्ण + १६० ग्राम जल म चतुर्थाश क्वाथ वनाव। १ ग्राम यवक्षार + १ ग्राम साधव मिलाकर प्रात ६ वज पीन स विशप लाभ हाता ह।

७— भाजन म जौ की रोटी जौ का पानी जौ का खाना कृमिज राग म श्रेयष्कर होता ह। लिपान (वान) तथा डिजिट (वास) कपसूल १ १ साथ मे दिन मे ३ वार ल।

आमज हृदयराग (Rheumatic endocarditis)-

सधिक ज्वर ५ स ५० वष क वालका आर युवाओ म हान वाला एक राग ह जिसक उपद्रव स्वरूप मे आधे या तीन चौथाइ रागिया मे हृदय अन्त शाथ या आमज हृदाग हो जाता ह। कण्ठ स्थित दोना ग्रन्थियो के रक्तलयी कद गालाणु (Beta-Haemolytic-Streptococcus) के प्रति शरीर क स्नायुतन्तु या सयोजो ऊतको म असात्म्या या एलर्जी क कारण शोथ हो जाने स ही सधिक ज्वर उत्पन्न होता ह। इस रोग म शरीर का सारा स्नायुतन्तु ही ग्रस्त होता ह पर सधियो तथा हृदय मास का स्नायुतन्तु अधिक ग्रस्त होता हे। आर हृदय मे भी (Mitral) द्विकपदी तथा महाधमनी (Aortic) सम्वन्धी कपाट अधिक ग्ररत होते ह। कतिपय रोगियो मे यह तीव्र रोग के अच्छा हो जाने के वाद भी आधे से अधिक हृत्कपाट सम्बन्धी हृदय अन्त शोथ का रोग चिरस्थायी रूप मे रह जाता हे। हृत्प्रदेश हृत्कम्प, स्वल्प श्रम से श्वासकृच्छ्रता का होना, क्षुधानाश पाण्डुता आदि लक्षण होते हे। जितनी आयु छोटी होती ह इतना ही सधिक ज्वर का दुष्प्रभाव हृदय पर अधिक स्थायी हाता ह।

चिकित्सा—

१— लघन, मृदु विरेचन रोगी को कराना चाहिए।

२— स्वर्ण मकर मुष्टि— मकरध्वज १ भाग, स्वर्ण भस्म १/४ भाग, लोह भस्म १ भाग, शुद्ध कुपीलु १ भाग खरल मे खूव घोटकर रखे। मात्रा १२० मि०ग्रा० मधु के साथ दिन से आमवातिक हृद्रोग मे लाभप्रद होता हे।

३— स्वर्णमकर पुष्टि २४० मि०ग्रा० + हृदयचिन्तामणि रस २४० मि० ग्रा० + नागार्जुनाभ्र १२० मि० ग्रा० + चन्द्रोदय रस १२० मि० ग्रा० + पिपरामूल चूण १ ग्राम + पुष्करमूल चूर्ण १ ग्राम सवको मिलाकर ३ मात्रा वनाव। मधु के साथ प्रात ६ वजे दिन मे १२ वजे आर साय ६ वजे सेवन करे।

४— आमवातारि रस ३६० मि० ग्रा० + अग्नितुण्डी वटी १२० मि० ग्रा० + महायोगराज गुग्गुल ३६० मि० ग्रा० + प्रभाकर वटी २४० मि० ग्रा० + कल्याण सुन्दर रस २५० मि० ग्रा० + पुष्करमूलादि चूण १ ग्राम + ककुभादि चूण १ ग्राम सवको मिलाकर ३ मात्रा वनाव। सुवह १० वजे दिन मे ३ वजे आर साय ६ वजे मधु के साथ ले।

५— पिप्पल्यादि चूर्ण ३ ग्राम उष्णोदक के साथ भाजनोत्तर दिन म दो समय ले। लिपान (वान) कपसूल १-१ साथ म ले।

६— तृवृच्छट्यादि चूण (यो० र०) निसोथ कचूर वरियारा की जड, रास्ना, सोठ, छोटी हरड तथा पुष्करमूल सव समानभाग लकर वारीक चूर्ण कर। ६ ग्राम चूर्ण उष्णादक के साथ रात मे सात समय लेना।

७— आमज हृद्रोग की चिकित्सा कफज-वातज हृदय रोग के समान ह। अत इसमे अन्न न देकर पचकाल आर अर्जुन की छाल से पकाया हुआ केवल गोदुग्ध ही देना श्रेयष्कर होता ह।

पथ्यापथ्य का समझकर उपरोक्त हृद्रोग चिकित्सा करने से यथोचित लाभदायक होता हे। यह अनुभूत चिकित्सा ह।

हृच्छूल

डा० अयोध्या प्रसाद अचल एम०ए० (...) पी एच० डी० आयुर्वेद वृहस्पति
योग आयुर्वेद नेचर केयर सेन्टर आनन्द कुंज सी०-30,
गोविन्दपुरी मोदीनगर (उ० प्र०) 201201

हृदय मे उठने वाले शूल को हृच्छूल कहते हैं। इसकी अनुभूति छाती के बीचो बीच उरोरिथ (स्टर्नम) मे ठीक नीच होती ह। यहाँ से आरम्भ होकर यह ग्रीवा या हलक तक जाता हे या फिर वाई भुजा/कोहनी वाए हाथ तथा उगलियो तक भी प्रसारित हो सकता हे। इन अगो मे प्रसारित शूल को प्राय निर्दिष्ट शूल (रेफर्ड पेन) की सज्ञा दी जाती हे। हृच्छूल कभी भी/किसी भी अवस्था मे यथा दिन रात सोते जागते, खाते पीते, उठते वेठते, चलते फिरते यहा तक कि आराम करते समय भी उठ सकता ह।

हृच्छूल स्वतत्र रूप मे या फिर अन्य रोगो के लक्षणो के रूप मे भी प्रकट हो सकता हे। यह सहसा प्रकट होता हे ओर कुछ सेकन्डो से लेकर दो तीन मिनट तक रहता हे। फिर स्वत ठीक हो जाता है। यदि किसी तीव्र सवेगात्मक विकृति या भावावेश के फलस्वरूप उत्पन्न होता हे ओर रोगी शीघ्र अपने को शिथिल नहीं कर पाता तो यह ८-१० मिनट या उससे अधिक समय वना रह सकता ह।

हृच्छूल सामान्यतया वहुत ही उग्र या तीव्र स्वरूप का नहीं होता। रोगी को ऐसा लगता हे जेसे उसके हृदय पर कोई भार रख दिया गया हो, उसे कोई दवा रहा हो, निचोड रहा हो, ऐठ रहा हो, चीर रहा हो या उसमे कोई चीज चुभाइ या भोकी जा रही हो। रोगी को पीडा से कहीं अधिक भय व्याप्त हो जाता है, वह घवडा जाता हे, मोत उसके सामने नाचने लगती है, हृदयाघात (हार्टअटैक), हृदयपात (हार्ट फेल्योर) की आशका से वह काप उठता हे।

हृच्छूल का कारण—

हृदय को अपने पोपण और कार्य सुचारु रूप से सचालन के लिए रक्त की आवश्यकता होती हे। यह रक्त उसे हृद्-धमनियो के द्वारा प्राप्त होता रहता ह। जव तक इसकी आपूर्ति निर्वाध रूप से होती रहती ह हृदय अपना काम सुचारू रूप से करता रहता है। हृद्पशिया नियमित रूप से धडकती रहती है। जव किसी कारणवश रक्त की आपूर्ति मे वाधा उत्पन्न हो जाती ह आर हृदपशी सूत्रो को आवश्यक मात्रा म रक्त नहीं मिल पाता तो ठीक अत्यधिक क्षुधा पीडित व्यक्ति की तरह व्याकुल हाकर हृदय रक्त के लिए गुहार करने लगता हे। उसकी यह गुहार ही हृच्छूल के रूप म व्यक्त होती ह।

हृद्पेशी सूत्रो मे रक्ताल्पता की यह स्थिति प्राय हृद धमनी काठिन्य से आक्रान्त धमनियो के अन्दरूनी भागो मे सिकुडन उत्पन्न हो जाने से पदा होती हे। हृत्पात हृदय तथा रक्त सचरण मे उत्पन्न अन्य विकृतियो क कारण भी ऐसा हो सकता है।

हृच्छूल के केसो क निदान मे वडी सावधानी ओर सतर्कता की आवश्यकता होती है। छाती मे उठने वाला प्रत्येक शूल (चाहे वह वाये भाग मे ही क्यो न हो) हृच्छूल नहीं होता। वह अनेक कारणो से भी उत्पन्न हो सकता ह। यथा— विकृति सवेग, सवेगात्मक तनाव, सामथ्य से अधिक परिश्रम जनित थकान, छाती की पेशियो मे तनाव पसलियो एव उनसे सलग्न पेशियो मे खिचाव तनाव, फेफडो के रोग (यथा सूखी खासी) तन्त्रिकाशोथ, पाण्डु एव कामला आदि। कभी-कभी यह मेरुदण्डीय चक्रिकाओ की विकृति, आमाशय-व्रण, अजीर्ण आध्मान हार्निया आदि एसे रोगो के फलस्वरूप (जिनका हृदय स कोई सीधा सम्बन्ध नहीं होता) भी निर्दिष्ट या साकेतिक शूल के रूप मे भी व्यक्त हो सकता हे।

वास्तविक हृच्छूल प्राय अत्यधिक शारीरिक थकान या मानसिक तनाव की स्थिति मे उत्पन्न होता हे आर आराम करने पर शरीर या मन के शिथिल हो जाने पर स्वत दूर

हो जाता हे।

यद्यपि हृच्छूल के रोगी की औसत जीवनावधि कम हो जाती हे पर यदि सुरक्षात्मक उपायो ओर उपचार पर समुचित ध्यान दिया जाए तो वह भी सामान्य व्यक्तियो के समान ओसत और स्वस्थ जीवन जी सकता है।

सुरक्षात्मक उपाय—

१— सामर्थ्य से अधिक परिश्रम न करे। अपनी आयु, स्वास्थ्य ओर वलावल का विचार करके ही काम या मनोरजन के साधनो मे लिप्त हो। अति साहसिक कार्यो से वचे। यथासाध्य थकान न आने दे। शरीर मे रक्त सचार की क्रिया सुचारु रूप से होती रहे इसके लिए हल्का व्यायाम या योगासन करे। प्रात काल खुली हवा मे टहलते समय गहरी सासे ले।

२— मानसिक तनावो, द्वन्द्वो से वचे। अनावश्यक रूप से सवेगो को उत्पन्न करने वाली परिस्थितियो से अपने को दूर रखे। व्यर्थ के मामलो मे न उलझे। ध्यान रखे अप्रत्याशित शोक के समान ही अप्रत्याशित आर अत्यधिक मात्रा मे हर्ष भी घातक सिद्ध हो सकता है।

३— शारीरिक भार की सीमा के अन्दर रखने की कोशिश करे। घी, तेल, चीनी, घी की वनी मिठाईया, तली हुई चीजे, चर्वी युक्त मास आदि का कम सेवन करे।

४— भोजन सुपाच्य ओर समय पर ले। भूख लगने पर ही खाये। भूख से कुछ कम ही खाये। रात का भोजन सोने से कम से कम दो घन्टे पूर्व करे। फल, हरी सब्जियो, मेवो, मक्खन निकाले हुए दूध, मट्ठे आदि का सेवन करे।

५— अजीर्ण और मलावरोध न होने दे।

६— आगत वेगो को न तो रोके ओर न ही उन्हे निकालने के लिए अनावश्यक जोर लगाये। सभी क्रियाओ को स्वाभाविक रूप से घटित होने दे।

७— मादक द्रव्यो का सेवन नहीं करे। हृच्छूल के रोगी के लिए तम्वाकू का सेवन किसी भी रूप मे घातक सिद्ध हो सकता है। इसमे वर्तमान निकोटीन नामक विष हृदय की गति ओर रक्तचाप दोनो को बढा देता है। हृद्-धमनियो मे सिकुडन पेदा करता है। फलत हृच्छूल की सम्भावना कई गुना अधिक वढ जाती हे।

८— हृच्छूल के रोगी को लिए हृच्छूल का भय अधिक हानिकारक सिद्ध हो सकता हे। इस सम्वन्ध मे उसे आश्वस्त करना आवश्यक हे।

९— रोगी को नींद अच्छी आये इस बात का ध्यान रखना चाहिए। आवश्यक ओर स्वाभाविक ओषधिया ही उपयोग मे लायी जा सकती हे।

१०— सर्वाधिक हृच्छूल का रोगी स्वय जानता हे, नहीं जानता हे तो उसे जानने का प्रयास करना चाहिए कि कोन सा शारीरिक या मानसिक कारण उसमे हृच्छूल के आक्रमण की सम्भावना को बढाता हे। इससे उसे बचना चाहिए।

उपचार—

हृच्छूल के उपचार के दो पक्ष है— तात्कालिक ओर स्थायी।

हृच्छूल के उठ जाने पर उसे निरस्त करने के लिए किये जाने वाले उपाय तात्कालिक के अन्तर्गत आते है। इनमे आराम या शिथिलन तथा हृच्छूल को कम करने वाली औषधि प्रमुख है। शूल के आरम्भ होते ही रोगी को निस्पन्द भाव से खडे या वैठ जाना चाहिए। लेटने से शूल बढता है। आपने देखा होगा कि लेटी हुई हालात मे शूल उठने पर रोगी स्वत उठकर वेठ जाता है। पैर चारपाई के नीचे लट का लेता ह। इससे उसे राहत मिलती मालूम होती है।

हृच्छूल को तात्कालिक रूप से रोकने मे एलोपैथिक की ''नाइट्रो ग्लाइसेरीन'' नामक टेबलेट चमत्कारिक लाभ करती हे। इसकी कुछ टिकिया रोगी को बराबर अपने साथ रखनी चाहिए। हृच्छूल के आरम्भ होते ही इसकी एक टिकिया जबान के नीचे रखकर चूसना चाहिए। तत्काल आराम आ जायेगा। आराम न आये तो तीन मिनट बाद एक ओर टिकिया इसी प्रकार सेवन करनी चाहिए। पर किसी भी हालात मे दो टिकियो से ज्यादा नहीं लेना चाहिए। रोगी को मादक वस्तुओ का सेवन कर रखा हो या ठूस ठूस कर खाया हो अथवा निम्न रक्तचाप से पीडित हो तो उसे इस टेबलेट को लेने के बाद किंचित् बेहोशी आ सकती है। अत इस मामले मे सतर्क रहना चाहिए।

आयुर्वेदीय ओषधियो मे वातविध्वसन रस को दशमूल के क्वाथ से अथवा बारहसिगा के सींग की भस्म (अभाव मे श्रृग भस्म) और मकरध्वज को अर्जुनघृत से देने पर भी अच्छा लाभ करते हे।

स्थायी उपचार के लिए मूल कारण को ध्यान मे रखकर चिकित्सा क्रम अपनाना चाहिए। रक्ताल्पता आर हृदय रोगो को दूर करने के लिए आयुर्वेद मे एक से एक चमत्कारिक योग उपलब्ध हे। इन्हे आप यथास्थान इसी अक मे देखेगे।

(Ischaemic Dissease of the Heart, Coronary Heart Disease, Myocardial Ischaemia)

होकर आभ्यन्तर स्तर वटन सदृश कठोर हो जाता हे।

(५) सूक्ष्म धमनियो (Vasavasorum) के कठोर व भगुर होने के कारण वे रक्तभार वृद्धि होने पर शीघ्र फट जाती ह ओर इनसे रक्तस्राव हाने लगता हे। रक्त के इन ढरो के कारण उभार होकर हृदय पोषक धमनी का मार्ग आर भी तग हो जाता ह। श्रम के कारण अथवा जव कभी हृदय मास को रक्त कम मिलता है तो हृदयशूल या Angina हा जाता ह।

(६) Atthroma के फट जाने से व्रण भाव होकर इनके स्निग्ध पदार्थ रक्तकण आदि वेठने लगते हे जिससे धमनी का स्रोत पूर्णतया वन्द हो सकता हे इसी को हृदय धमनी रोध कहते हे।

(७) हृदय पोषक धमनी रोग के अतिरिक्त मानसिक आवेश अथवा सहसा शीत लगने के कारण हृदय पोषक धमनियो मे उद्वेष्टन (Spasm) होकर भी हृदय शूल सभावित हे। विशेषत धमनी काठिन्य से युक्त हो।

अन्य कारण—

- जेतून, तेल, सोयावीन, वादाम, आदि तेल की अपेक्षा जान्तव स्नेह या वनस्पति घी के अत्यधिक मात्रा मे सेवन से भी सभावित हे अर्थात् अधिक मात्रा मे निरन्तर स्नेह का प्रयोग अग्नि को मद कर हृदय पोषक धमनी रोध की सभावना वढाता ह।
- शारीरिक श्रम व व्यायाम न करने वाले ३०-३५ वर्ष की आयु मे यदि रक्त मे कोलेस्ट्रोल की मात्रा सामान्य से अधिक हो तो इस रोग की सभावना अधिक रहती हे।
- अन्त स्रावी ग्रंथि "थायराइड" की मन्दता, मधुमेह, मेदोवृद्धि, वातरक्त रोग तथा इन रोगो को उत्पन्न करने वाले आहार-विहार से भी हृच्छूल व्याधि सभव हे।
- तम्वाकू सेवन, मासाहारी, रक्तभार वृद्धि, अत्यधिक शया सुख भोगने वाले व्यक्तियो मे इस रोग की सभावना अधिक होती हे। तम्वाकू इस रोग का एक प्रधान कारण ह। २० सिगरेट प्रतिदिन पीने वाले व्यक्तियो मे इस रोग की सभावना ४-५ गुणा अधिक होती हे।
- माता पिता मे से किसी को यह रोग हो तो सतान मे इस रोग की सभावना दो गुणा वढ जाती हे। मधुमेह, मेदोवृद्धि या अन्य सहायक व्याधि हो तो इस रोग की सभावना आर प्रवल होती हे।

अस्थायी हृदय शूल (Angina Pectoris)-

- यह शूल ५० ७० वर्ष के पुरुषो मे घवराहट, व्याकुलता, अत्यधिक परिश्रम अथवा भोजनोपरान्त शीघ्रता पूर्वक गमन, सीढी चढना आदि स्थिति मे विशषत शीतकाल मे अचानक तीव्र शूल की उत्पत्ति होती है। रोगी को श्वास-प्रश्वास मे कठिनाई, चेहरा चिन्ताग्रस्त, निस्तेज व शीत स्वेद युक्त होता हे। कभी कभी आमाशय प्रदेश पर तीव्र शूल की अनुभूति, अरुचि व वमन के लक्षण भी सभावित ह।
- शूल के वेग के पश्चात् परीक्षा करने पर हृदय की अतिवृद्धि या रक्तचाप वृद्धि के लक्षण मिलते हे, अधिकतर हृदय पोषक धमनी मे ही अपूर्ण अवरोध होता हे। हृदय मे कोई विकृति सामान्यत नहीं मिलती ह किन्तु रक्तचाप वृद्धि, वाम क्षेपक कोष्ठ की वृद्धि, मधुमेह मेदोवृद्धि, पेतृक परम्परागत हृदय रोग आदि सहायक लक्षण भी हो तो यह रोग शीघ्र घातक हो सकता हे।

दीर्घ हृदय शूल—

Coronory Thrombosis, Myocardial Infarction-

हृदय मासपेशी के एक भाग को स्रोतोरोध के कारण रक्त अथवा आक्सीजन मिलना वन्द हो जाय ओर वह मृत हो जाये तो उसे दीर्घ हृदय शूल (Cardiac Infarction) कहते हे।

हृदय पोषक धमनियो की किसी वडी शाखा मे Clot, Thrombu या उसकी झिल्ली के नीचे रक्तस्रव से उत्पन्न Thrombus के कारण पूर्ण अवरोध होकर हृदयपेशी को विशेषत वामक्षेपक के एक भाग को रक्त अथवा आक्सीजन का मिलना सहसा वन्द हो जाय तो उस भाग के पेशी सूत्रा मे मृत्यु की प्रक्रिया (Coagulation Necrosis) प्रारम्भ हो जाती हे। इस मृदु या मृत भाग को Infarct कहते ह।

मनुष्य को होने वाले सव शूलो मे यह प्रवलतम शूल है जो क्रमश वढकर निरन्तर मिनटो या घण्टा तक जव तक कि हृदय के रक्तहीन प्रदेश की सज्ञावाहिनिया जीवित रहती हे, वना रहता ह। आधे घण्टे लगभग निराप रहता है ओर अत्यन्त वेदनाजनक होता हे। रोगी का वमन श्वासकृच्छ्रता, शीतस्वेद, शूल, सवाग शत्य के लक्षण होते हे। रोगी की नाडी तीव्र, अस्पष्ट, अति निर्वल विषम तथा गति लगभग १०० प्र० मि० होती ह। हृदय स्पन्दन की निर्बलता से रक्तचाप भी गिरकर १०० एम एम पारजी अथवा

...रे भी कम हो जाता है। शरीर का तापमान भी सामान्य कम हो जाता हे। किन्तु वाद मे ज्वरानुभूति भी हो सकती ...। आचार्य चरक ने उपरोक्त समस्त लक्षणो को पूर्ण ...ज्ञानिक दृष्टिकोण से निम्न प्रकार से सूत्रवद्ध किया हे—
...र्यमूर्च्छाज्वरकासहिक्काश्वासास्य वेरस्य तृषा प्रमोहा। ...र्दि कफोत्क्लेशरुजोऽरुचिश्चहृद्रोगजाः स्युर्विवि ...त्तथाऽन्ये।। (च० चि० २६/७८)

...चाव एव उपचार—

हृच्छूल की चिकित्सा हेतु आयुर्वेद के मूल-मत्र ''सक्षेपत क्रियायोगो निदानपरिवर्जनम्'' के सिद्धान्त को दृष्टिगत रखना चाहिए। सम्यक् भूख लगने पर भोजन करना, मल-मूत्र स्वेद आदि मलो को शरीर से समय पर यथोचित प्रवृत्त करना, उचित मात्रा मे निद्रा एव विश्राम, अति शारीरिक श्रम से वचते हुए मृदु व्यायाम करना, काम-हिसा आदि मानसिक आवेशो से बचाव, सदा शान्त-चित्त एव सयमित दिनचर्या आयुवर्धक हे। प्रात काल नित्य अभ्यग एव खुली हवा मे व्यायाम भी हृच्छूल के वेग को मन्द करता है।

आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान मे रसायन चिकित्सा का विस्तृत उल्लेख हे। रसायन औषधियो का सेवन दीर्घ आयु, स्मरण शक्ति, मेधा, आरोग्य, तरुणावस्था, प्रभा, वर्ण, स्वर, देह एव इन्द्रियो मे उत्तम वल प्राप्ति, वाक्-सिद्धि, प्रणति, कान्ति जेसे गुणो की वृद्धि मे सहायक हे। इसे कायस्थापक, निद्रा-तन्द्रा-श्रम-क्लम-आलस्य ओर दुर्वलता नाशक कहा गया है। वात, पित्त, कफ को सम करके शरीर मे स्थिरता उत्पन्न करता हे तथा शिथिल मासपेशियो को सुगठित करता हे। इस रसायन के सेवन द्वारा महर्षि च्यवन ऋषि आदि को पुन योवन प्राप्ति का उल्लेख भी प्रमाण स्वरूप मिलता हे। यथा—''अनेन च्यवनादयो महर्षय पुनर्युवत्वमापुर्नारीणा चेष्टतमा वभूवु।'' (च० चि० १/१-२ रसायन पाद २)

चिकित्सा हेतु निम्नाकित ओषधिया, योग्य चिकित्सक के परामर्श व देखरेख मे प्रयोग करना हितकर हे।

जटामासी, शखपुष्पी, व्राह्मी, वचा, अर्जुनछाल समान भाग मात्रा मे लेकर जो कुट करे लगभग दो चम्मच आपधि को २ ३ कप पानी मे लेकर भिगोवे। वारह घण्टे पश्चात् इसे हाथ से मसलकर छान लेवे तथा पी लेवे। यह हृदयशूल, अनिद्रा, व्याकुलता, मानसिक तनाव आदि मे लाभप्रद हे।

हरीतकी चूर्ण २-३ माशा मात्रा मे शरद् ऋतु म खाड हेमन्त मे साठ, शिशिर मे पीपल, वसन्त म मधु, गर्मी मे गुड, वर्षा मे सेधा नमक के साथ प्रतिदिन सेवन करना आयुवर्धक, स्रातोशोधक, अग्निवर्धक व रसायन ह।

आवला, गिलोय, गोखरू की समान मात्रा से वनावे २-३ माशा मात्रा मे घृत मिश्री के प्रयोग हृद्य, यकृतशोधक मूत्रल, वल्य व रसायन हे।

आवले के चूर्ण को आवले के रस की २१ भावना देकर सुखावे। १-२ माशा को घी, शहद, खाण्ड के साथ देवे।

गिलोय, विडग, शखपुष्पी, वच, हरड, साठ शतावरी वरावर मात्रा मे लेकर चूर्ण करे। २-३ माशा मात्रा मे घृत के साथ सेवन करे। यह शोधक, अग्निवर्धक, वल, वुद्धि, स्मृति तथा मानसिक शक्ति वढाता हे।

विडग, त्रिफला, पिप्पली, लोह भस्म समान भाग ... लेकर चूर्ण वनावे। २-३ माशा मे खाण्ड मधु के साथ चटावे इससे जरावस्था का नाश होता हे।

हरीतक्यादि घृत— हरड, सोठ, पुष्करमूल गुरुच आवला, सेधानमक, हींग का कल्क वनाकर घृत व विधिपूर्वक पकाकर पीना चाहिए। (चरक- च०चि० २६/८३

पुष्करमूल का चूर्ण मधु के साथ चटाना चाहिए। इस... हृदयशूल, श्वास, कास तथा हिचकी रोग शान्त होते ह (चक्रदत्त)

पुट मे पकाया गया मृगश्रग भस्म को घी के साथ सेव... करने से हृदयशूल, पृष्ठशूल दूर होते ह। (चक्रदत्त)

रक्तचाप (वृद्धि) को नियन्त्रण हेतु—

सर्पगन्धा के घनसत्व मे व्राह्मी शखपुष्पी वचा जटामासी, मालकागनी का समान मात्रा मे चूर्ण मिलाक... गोलिया वनावे तथा सुवह, दोपहर एव साय देवे।

शिलाजीत को ६ गुना सर्पगन्धा चूर्ण मे मिलाकर २... रत्ती की गोलिया वनावे। दिन मे ३ वार प्रयोग करे।

त्रिफला, सर्पगन्धा चूर्ण मे मिलाकर २-२ रत्ती की गोलिया वनावे। दिन मे ३ वार प्रयोग करे।

त्रिफला, सर्पगन्धा समान मात्रा मे लेकर विल्व पत्र स्वरस से मर्दन कर चूर्ण वनावे। मात्रा ५०० मि० ग्रा० सुवह-शाम।

*

जीर्ण वाम हृदयकपाटीय रोग - कुछ रोगी

(Chronic Left Valulvar Disease)

वैद्य प्रोफेसर पी० एस० अशुमान, एच० पी० ए०
प्रोफेसर मो० सि० प्रभारी प्राचार्य
शेठ जी० प्र० सरकारी आयुर्वेद कालेज, भावनगर

निवास १४६७, ए० २/१ कृष्णनगर, रूपाणि सर्कल
भावनगर (गुजरात) ३६४ ००१

प्रोफेसर श्री अशुमान जी से 'धन्वन्तरि' के पाठक सुपरिचित है। 'धन्वन्तरि' के साधारण अको मे आपके लेख प्राय प्रकाशित होते रहते हे तथा ''कास निदान चिकित्सा'' का आपने सफल सम्पादन लेखन किया है जो कि आपकी विद्वत्ता का द्योतक है। यह विशेषाक अभी उपलब्ध हे। माननीय श्री अशुमान जी से व्यापक अपेक्षाये हे। भगवान धन्वन्तरि आपको शत वर्षायु करे तथा आप ''धन्वन्तरि'' को सदेव ही सहयोग प्रदान करते रहे।

वैद्य हरिमोहन शर्मा भिषगाचार्य

हृद्रोग मे हृदय के अवयव विशेष की विकृति से सम्वद्ध रोगो की श्रेणी मे हृदय कपाटीय विकृतियो का समावेश किया जाता हे। हृदय स्थित विभिन्न कपाटो मे प्राप्त विकृतिया कई स्वरूपो मे मिलती हे। तथापि इनमे सकीर्णता एव प्रत्यावर्तन सम्वन्धी विकृतिया प्रमुख ह।

वामहृदय सम्वद्ध माइट्रल एव महाधमनी एरोटिक तथा दक्षिण हृदय सम्वद्ध ट्राईकस्पिड एव (पल्मोनरी) फुफ्फुसीय कपाटो मे उत्पन्न सकीर्णता या असमर्थता विभिन्न लक्षणो को उत्पन्न करते ह।

उन कपाटो मे उत्पन्न सकीर्णता के कारण मार्ग स्रोतोरोधपूर्वक उत्पन्न रक्तप्रवाहावरोधजन्य लक्षण उत्पन्न होते ह जवकि कपाटो की असमर्थता या ठीक से वद नहीं हो पाने के कारण रक्त के वापस लोट आने से उत्पन्न स्थितिजन्य लक्षण उत्पन्न होते ह।

वाम ग्राहक एव क्षेपक या दक्षिण ग्राहक एव दक्षिण क्षेपक सम्वद्ध कपाटो की विकृतियुक्त कुछ रागियो की चिकित्सा यहा दी जा रही ह।

द्विपत्रक कपाटी विकृतिया—

द्विपत्रक कपाटी सकीर्णता या सकोच्य (Stenosis) म जुडकर कपाट छिद्र को सिकोड देते हे, अत रक्त के ५ से० मी० से घटकर २ से० मी० हो जाता हे अत रक्तमार्ग १/२ कम हो जाता हे। कपाट पख किनारे परस्पर वाम ग्राहक से वाम क्षेपक मे जाने मे वाधा पडती हे। परिणामत वाम ग्राहक स्थूल हो आकार मे वढ जाता ह आर अन्तरावस्था ३०-४० सी० सी० से ५०० सी० सी० तक वढ जाता हे। वाम ग्राहक मे रक्तभार १२० एम० एम एच० जी० हो जाता हे।

द्विपत्रक कपाटी प्रत्यावर्तन मे (Regurgitation) छिद्र वढने से वाम ग्राहक मे फुफ्फुस से रक्त आता ह साथ ही वाम क्षेपक से भी कुछ रक्त आ जाता हे। परिणामत वाम

ग्राहक वडा हो जाता हे उसका निचला किनारा वामपार्श्व की ओर खिसक जाता है। कालान्तर मे वाम ग्राहक एव क्षेपक दोनो वढ जाते हे।

महाधमनी कपाटी विकृतिया—

महाधमनी कपाट सकीर्णता की उत्पत्ति मे धमनीकाठिन्य (Arterio-Selerosis), (Atheroma) एव केल्सी काठिन्य एव केल्सीफिकेशन को कारण माना जाता हे। इस मे महाधमनी कपाट के पखे कठोर हो परस्पर जुड कर मार्ग सकीर्णता करते है। अत धमनी मे रक्त कम आता ह। वाम क्षेपक वडा हो जाता हे। रक्तदाव प्राय १००/८० रहता ह।

महाधमनी कपाटी प्रत्यावर्तन फिरग, स्थानिक चिरस्थायी शोथ एव स्क्लेरोसिस कारणभूत होते हे। कपाट के पख सिकुड कर छोटे हो जाते हे अत वे पूरी तरह से वद नहीं हो पाते ह आर छिद्र खुला रह जाता हे या चोडा हो जाता ह। अत कपाट वद होते समय महाधमनी मे से कुछ रक्त वापस वाम क्षेपक मे चला जाता हे। वाम क्षेपक वढ जाता हे। रक्तचाप प्राय १६०/६० रहता है।

(१) हृदय कपाटो की मरमर ध्वनिया—

(१) द्विपत्रक सकीर्णता या साकोच्य (Mitral-Stenosis) इसमे मरमर ध्वनि हृद्याग्र पर पूर्व साकोचिक (Presystol) या विस्फारक समय पर मिलती हे। विस्फारक (Diostolic) मर्मर द्वितीय शव्द के ठीक पश्चात् प्रारम्भ होती ह आर हृत्कपाट के मध्य मे इसकी तीव्रता कम हो जाती ह। प्रथम शव्द के पूर्व पुन तीव्र हो जाती ह। द्वितीय शव्द का प्रतिद्विगुणन होता ह जव विस्फारक मर्मर का अन्तिम भाग ही जव सुनाई देता ह तव वह पूर्व साकोचिक मर्मर कहलाती ह जो प्राय ककश होती हे। यह उत्तानावस्था मे स्पष्ट सुनी जा सकती हे। खासकर वाये करवट लेटने पर जव कि साकेतिक मर्मर की तीव्रता श्रम स वढती ह।

(२) द्विपत्रक प्रत्युद्गिरण—

(Mitral Regurgitation)

यह मरमर हृदयाग्र पर साकोचिक (Systolic-Time) काल पर सुनी जा सकती ह। यह मृदु एव प्रवाही हाती ह तथा प्रथम शव्द को लुप्त कर देने वाले तथा वामकक्षा या वाम असफलक की ओर प्रचरणशील होती ह। इसम क्षेत्रीय या गुणकर्मीय स्फुरण मिल सकते ह।

(३) महाधमनी साकोच्य (Aortic Stenosis)—

इसकी मर्मर महाधमनी स्थान पर साकोचिक काल म कर्कश रूप मे सुनी जा सकती ह जा ग्रीवा की रक्त वाहिनिया मे प्रचरण शील होती ह।

(४) महाधमनी प्रत्युदिग्रण

(Aortic-Regurgitation)—

इसकी मर्मर ध्वनि उर फलक के मध्य म या महाधमनी स्थान पर विस्फारक मे मृदु एव प्रवाही स्वरूप म सुनी जा सकती ह यह द्वितीय शव्द मे प्रारम्भ होकर प्रथम शव्द से कुछ समय पूर्व समाप्त हो जाती हे पूरे समय एक जसी वनी रहती हे। उसका प्रचरण उर फलक के नीचे की आर हृदयाग्र (Apex) तक होता ह। यह रोगी के स्वास रोक कर आगे झुककर वठन पर स्पष्ट सुनी जाती ह। इसम स्फुरण (थ्रिल) क्षेत्रीय एव नियतन शील होती ह।

वाय-हृदय कपाटी कुछ प्रमुख विकृतियां—

कपाटी द्विपत्रक सकीर्णता Mitral Stenosis	द्विपत्रक कपाटी प्रत्यावर्तन Mitral Regurgitation (Incompetence)	महाधमनी कपाट सकीणता Aortic Stenosis	महाधमनी कपाट प्रत्यावर्तन Aortic Regurgitation
२० ४० वप समूह म ६० प्रतिशत प्राप्त स्त्रियो मे अधिक	२० वर्ष समूह म २० प्रतिशत प्राप्त	४० वर्षीय समूह मे पुरुषो मे अधिक	२० से ४० वर्ष समूह

		मार्ग सकीर्णता	मार्ग खुला रहना
वाल्व छिद्र सकीर्ण होना रक्त के वाम ग्राहक से वाम क्षेपक जाने मे बाधा आना अतः वाम ग्राहक मे रक्त जमा होना।	वाल्व छिद्र खुला रहना रक्त का वाम ग्राहक मे फुफ्फुस के अतिरिक्त वाम क्षेपक से भी आना वाम ग्राहक मे रक्त वढना	महाधमनी मे रक्त कम आना वाम क्षेपक मे रक्त भरा रहना	महाधमनी से वापस कुछ रक्त वाम क्षेपक मे आना
वाम ग्राहक स्थूल एव परितृप्त होना	वाम ग्राहक वृद्धि	वाम क्षेपक वृद्धि वाम क्षेपक फेलना	वाम क्षेपक वृद्धि ऐरोटा का फेलना (फिरगज मे)
	वाद मे दोनो की वृद्धि	रक्तचाप न्यूनता १००/८०	रक्तचाप वृद्धि द्वारा (१४०/४० से १६०/६०)
एक्स किरण द्वारा वाम ग्राहक वृद्धि एव फुफ्फुस शोथ प्रतीति होना शुरु मे भ्रम या लक्षण नहीं	वाम ग्राहक/क्षेपक वृद्धि प्रतीति शुरू मे कोई लक्षण नहीं वाद मे श्वास	वाम क्षेपक वृद्धि चेहरा पीला पडना (रक्त न्यूनता से)	वाम क्षपक वृद्धि पीत मुखाकृति ओष्ठ/नख दबाने पर प्रथम रक्त फिर पीत
श्वासकृच्छ्रता, श्रम क्रोध /कामादि से श्वास वृद्धि, रात्रि मे वृद्धि	श्रम से वृद्धि काम प्रभूतता हृदयस्पदन	श्वास चढना श्रम से हृच्छूल शिरोभ्रम	श्वासकृच्छ्रता रात्रिश्वास [illegible] सहसाश्रम
वाद मे हृदय निष्फलता (हार्ट फेल्योर) के लक्षण होना (दक्षिण क्षेपक नि० पूर्वक त्वचागत रक्त सचय यकृत वृद्धि गुल्फ शोथ क्षुधा हानि कास्य रक्तवमन मस्तिष्क स्थलशिरासजन्य पक्षाघात	वाद मे हृदय निष्फलता के लक्षण होना पूर्ववत्	सहसाश्रम या खडे होने पर गिरना मूर्च्छा होना	सहसा खडे होने पर गिरना मूर्च्छा

चिकित्सा सूत्र—

१ श्रम, मद्य, तम्बाकू त्याग वही तथा
२ जीवरक्षक, लक्षण चिकित्सा श्वास, शोथ एव
३ हृत्पत्री, मूत्रल चिकित्सा रक्तपित्त शामक

चिकित्सा सूत्र—

१ निदान त्याग, लवण त्याग
२ जीवरक्षक/लक्षण शामक/ हृत्यत्री, शूलघ्न
३ मूत्रल, वातनुलोमन, श्वासकासघ्न

चिकित्सा—

हृदय कपाटीय विकृतियो की चिकित्सा मे निम्नलिखित वात महत्वपूर्ण ह—

(क) निदान परिवर्जन—

१ मद्य तम्बाकू जेस व्यसनो को छोडना तथा श्रम का त्याग किया जाना आवश्यक होने पर लवण त्याग।

२ सम्बद्ध सक्रमण नियन्त्रण के लिए जीवरक्षक या एन्टीवायोटिक्स् का उपयोग

(ख) हृद्य एव मूत्रल आषध प्रयोग, (माइट्रलस्टेनोसिस विकृतिया) श्वासनाशक, शोथ एव रक्तपित्त कल्प प्रयोग (माइट्रल रिगर्गीटशन) मे कास श्वासघ्न एव शूलघ्न उपचार एव कल्प, वातानुलोमक, रक्तचाप को नियन्त्रण करने क लिए आवश्यकता के अनुसार वृद्धि एव हास कारक कल्पा का प्रयोग (धमनी सकीर्णता एव प्रत्यावर्तन मे)

(ग) अवस्था अनुसार—

यकतादर— उदर रोग हर उपचार

मूर्च्छा शमनार्थ उपचार

(घ) कुछ उपयोगी कल्प

सक्रमण शमनार्थ— स्वण कल्प, रसोन कल्क

हृद्य/हृद्रोगहर— नागार्जुनाभ्र, प्रभाकर वटी, हृदयार्णव रस।

कासघ्न— कास चिन्तामणि

श्वासघ्न— वासाघन, भारगीमूल, शुण्ठी

रक्तपित्तघ्न— शोणितार्गल, चन्द्रकला

शूलाघ्न— निद्रोदय रस

मूत्रल— चन्द्रप्रभावटी, गोक्षुरादि, वरुणादि क्वाथ

शोथल— दशमूल क्वाथ, पुनर्नवामण्डूर

वातानुलोमक— हिग्वाष्टिक, शिवाक्षार पाचन हिंगुकपूर वटी

रक्तदाववर्धक— नवजीवन रस, लवणभास्कर

रक्तचाप हासक— सर्पगधा घन वटी

यकृतोदर— आरोग्यवर्धिनी वटी

मूर्च्छा— हेमगर्भ अर्जुनारिष्ट, दशमूलारिष्ट

:: कुछ आतुर वत्त :

माइट्रल वाल्व विकृतिया—

[illegible]	३८३८	१६२६५	२०६४१	१२०५७
[illegible]	पुरुप	स्त्री	स्त्री	स्त्री
[illegible]	३०	३५	२८	७
[illegible]	+	+	+	+
[illegible]	+	+	+	+
[illegible]	कास	+	+	+

पादशोथ	+	+	+	+
श्रम	+	+	+	+
मूत्रकृच्छ्र	-	+	+	+
- -	-	सधिशूल	-	-
माईट्रल	+	+	+	+
स्टेनोसिस	-	-	-	
दृष्टि ++	+++	++वा०हृ०	+/++द०वा०हृ०	
(पादाकृत)		++/+		
वी वी एम				
ई सी जी	आर एच बी ब्लोक	-	-	-
टी०सी०	४४००	-	-	८०००
डी०सी०				
पी०'	५४	-		
एल	३५	-		
ई	२	-		
एम०	६	-		
वी०	६	-	-	-
एचवी	-	-	-	१० ८

इन रुग्णो को हृद्रोग निदानपूर्वक यापन चिकित्सा प्रयुक्त करने के निश्चय के साथ निम्नलिखित घटको को ध्यान मे रखकर चिकित्सा का निर्णय लिया—

१— विश्राम एव लघु, सुपाच्य, स्वल्प लवण युक्त एफ डी या एलडी।

२— रोग प्रतिकार, शक्तिवर्धन

३— श्वास शोथ, शूलघ्न कल्पो द्वारा चिकित्सा।

४— मूत्रल एव रक्तपित्तघ्न कल्पो का योग (केवल आवश्यकता पडने पर

माईट्रलवाल्व विकृति चिकित्सा—

माईट्रल वाल्व विकृति युक्त रुग्णो मे प्रयुक्त की गई ओपधि योजना निम्नानुसार थी—

१— दशमूल क्वाथ/पुननवादि क्वाथ २ तोला प्रात साय।

२— आरोग्यवर्धिनी, पुनर्नवा माण्डूर, चन्द्रप्रभा १-१ गोली + हृदयार्णव १ गोली दिन मे दो वार जल स।

एल०	२२	२१	५	१०	२६
इ०	—६	३	६	१	४
एम	—४	५	४	०	१
बी०	—०	०	१	०	०
ग्नवी	८ ५	१० ५	७ ५	८ २	८ ६
मूत्र	—	—	—	के०आ०	—
पुरीष	—	—	—	—	—

धमनी विकार चिकित्सा—

महाधमनी विकार ग्रस्त रुग्णो को निम्नलिखित ओषधि योजना दी गई—

१— दशमूल क्वाथ / वरुणादि क्वाथ २ तोला २ वार।

२— (क) आरोग्यवर्धिनी, पुनर्नवा माण्डूर, चन्द्रप्रभा १-१ गोली (सभी रुग्णो मे) + हृदयार्णव १ गोली

(ख) कास / श्वास ग्रस्तो म चन्द्रामृत रस २ गोली २ वार।

(ग) कुष्ठ मे प्रभाकर वटी १ गोली शिलाजीत वटी १ गोली भी दी गइ

३— (क) सितोपलादि चूर्ण यष्टिचूर्ण, चतु पटी, पीपरामूल तथा

(ख) अर्जुन, अभ्रक, शृगभस्म, यवक्षार मिश्रण १ माशा २ वार

(ग) हेमगर्भ, अकीक मिश्रण २ २ रत्ती मधु से २ वार।

४— लशुनादि वटी, नवजीवन वटी १ १ गोली भोजनोत्तर या अर्जुनारिष्ट १ तोला आवश्यकतानुसार।

५— हरड चूर्ण या पचसकार सुविधानुसार कोष्ठ शुद्धि के लिए।

इस औषधि से निम्नलिखित लाभ देखे गये—

१ श्वासकृच्छ्रता एव श्रम मे पर्याप्त सुधार हुआ।

२ शोथ एव मूत्रकृच्छ्रता ॰ लाभ हुआ।

३ देहवल एव स्वास्थ्य सुधरा।

४ हृच्छूल मे भी लाभ देखा गया।

कुल मिलाकर योजना यापन कार्य करती ॰, प्रतीत हुई
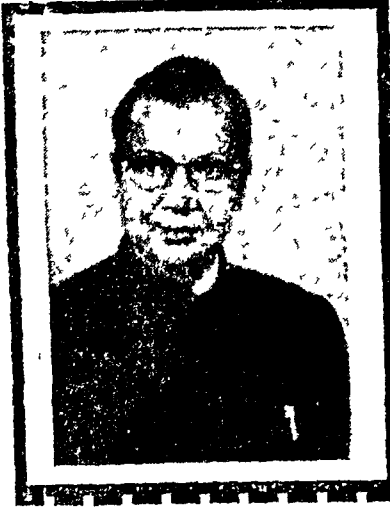
आमोद्भूत हृद्रोग

डा० रतन कुमार पारीक आयुर्वेद वाचस्पति
४६, अभिषेक भवन, शकर नगर, आमर रोड, जयपुर

सामान्यतया आम का अर्थ कच्चा, अपचित, अविकसित तथा भली प्रकार से नहीं पकाया गया, न भूना गया हे। आयुर्वेद मनीषियो द्वारा आम एक पारिभाषिक शव्द के रूप मे व्यवहृत किया गया हे जो कि आम दोष या आमविष के रूप मे परिज्ञात हे। वस्तुत 'आम' आहार पाक की वह अवस्था हे जिसमे अग्नि की विकृति के परिणाम स्वरूप आहार अपरिपक्व अवस्था मे रह जाता हे यह अपरिपक्व स्वरूप ही आम ह।

आचार्य वाग्भट्ट के अनुसार अग्नि की मदता के कारण प्रथम रस धातु ठीक प्रकार से नहीं वन पाता अत आम ही रह जाता हे। इसे यो भी कहा जा सकता हे कि अन्नरस मे किण्वन तथा पूतिभवन अर्थात् सडने की क्रिया होकर अग्नि स्थान मे रोक लिया जाता हे। इस अवस्था विशेप को ही आम कहते हे।

जेसा कि आचार्य वाग्भट्ट के द्वारा स्पष्ट है—

ऊष्मणोऽल्प वलत्वेन धातुमाद्यमापाचितम्।
दुष्टमामाशयगत रसमाम प्रचक्षते।।

वा० सू० १३/२५।।

चूकि आम की उत्पत्ति का मूल कारण अग्नि की दुष्टि के परिणाम स्वरूप अत्यल्प मात्रा मे किया गया आहार का सम्यक् पाचन न होकर अपक्व आहार रस मे परिणमन ही ह। इस प्रकार दूषित अग्नि अर्थात् विकृताग्नि से अपाचित आहार द्रव्य ही शुक्त भाव का तथा विषरूपता को भी प्राप्त करता ह जो कि आम दोष या आम विष कहलाता ह। यथा—

अभोजनाद् जीर्णाति भोजनाद्विपमाशनात्।
असात्म्य गुरु शीताति रूक्ष सदुष्ट भोजनात।।
विरेक वमन स्नेह विभ्रमाद् व्याधिकर्षणात्।
देशकालर्तु वेपम्याद् वेगाना च विधारणात्।।
दुष्यत्यग्नि सदुष्टोऽन्न न तत्पचति लघ्वपि।
अपच्यमान शुक्तत्व यात्यन्न विपरूपताम।।

च० चि० १५/४२-४४

इस प्रकार अपक्व आहार रस आमदोष या आम विप मे परिवर्तित होकर हृदय को प्रभावित करता हुआ विभिन्न हृद्रोगो का कारण वनता हे।

हृदय पर आमदोष का प्रभाव—

हृदय चिकित्सा शास्त्र का ही नही अपितु मानव जीवन का समवाय सम्वन्ध स्थापित करने वाला एक महत्वपूर्ण यत्र भी हे। हृदय आयुर्वेद मे एक वडा ही विवाद का विषय हे। क्योकि शरीर स्रोतोमय हे, इसमे हृदय दो स्रोतो का मूल हे। यथा—

(अ) प्राणवह स्रोतस् (व) रसवह स्रोतस्
जेसा कि विभिन्न आचार्यो का मत हे।

(अ) (१) प्राणवहना स्रोतसा हृदय मूल महास्रोतश्च।

च० वि० ५/७

(२) प्राणवहे द्वे तयोर्मूल हृदय रसवाहिन्यश्च धमन्य

सु० शा० ६/१२

(व) रसवह स्रोतस्

(१) रसवहाना स्रोतसा हृदय मूल दश धमन्य ।
च० वि० ५/६

(२) रसवहे द्वे तयोमूल हृदय रसवाहिन्यश्च धमन्य
सु० शा० ६/१२

प्राणवह स्रोतस का सम्बन्ध रसवाहिनी धमनियो एव महास्रोतस से होने से हृदय का सीधा सम्बन्ध कोष्ठाश्रित रसचूपक धमनियो के साथ-साथ रसवाही धमनियो से ह।

रसवह स्रोतस मे हृदय से निकलने वाली रसवाही धमनियो का सम्बन्ध रसवह स्रोतस से हे। रस वह स्रोतस म हृदय से निकलने वाली दस महाधमनियो के द्वारा होने स सतत सवहन का नियता रूप (नियत्रक) हृदय ह।

अस्तु इस व्यापार जन्य क्रिया से ये सिद्ध हे कि हृदय मे जो अध्याहार परिणाम धातु जन्य आमरस प्राप्त होकर सवहन कर रहा हे, इसका साक्षात् प्रभाव हृदय पर आवश्यक रूप से होता हे।

चूकि हृदय का साक्षात् सम्बन्ध रस सवहन से ह शरीर के जीवनीय रस, प्राण, मनोवह स्रोतस् का हृदय से समन्वित सम्बन्ध हे। जब आम रस के दूषित होने पर प्रभाव होता हे तब हृदय की क्रिया मे बाधा उत्पन्न होती ह। यथा—

''दूषयित्वा रस दोषा हृद्रोग त प्रचक्षते।।
सु० उ० ४/३।।

अत हृदय का सीधा सम्बन्ध आहार रस से स्पष्ट प्रमाणित ह। आर क्रियाये भी साक्षात् प्रभावित होती ह। विरुद्धाहार चेष्टा, स्निग्धभुक्तान्न एव मन्दाग्नि से विदग्ध आम रस धमनियो द्वारा हृदय से सवहन होकर हृदय रस वाह्याभ्यान्तर अवलम्यक हृदय कलाओ मे आमरस का सचय होकर हृदय मे गोरवता उत्पन्न कर देता हे। हृदय रस वाहिनियो मे सचित आम के अवशिष्ट का अभिप्राय लिपिड्स आदि से हे।

इस प्रकार हृदय आमदोष के प्रभाव से दूषित होकर हृदय बाधा को प्राप्त होता हुआ, वातिक हृद्रोग पत्तिक हृद्रोग, श्लेष्मिक हृद्रोग एव आमवातिक हृदय अत शोथ जेसी भयावह जेसी स्थिति उत्पन्न कर देता ह। यथा—

वातिक हृद्रोग—

मन्दाग्नि के कारण आहार रस से उत्पन्न आम विष से प्रभावित एव पोषण के कम हो जाने से हृदय की सहज प्राणशक्ति हीन हो जाय तथा उसके मास मे क्षीणता आ जाये और इस कारण हृदय नेर्बल्य, हृच्छूल, हृत्कम्प, मूर्च्छा आदि लक्षण हो तो इससे उत्पन्न हृद्रोग को वातिक हृद्रोग कहा गया हे। च० चि० २६

आचार्य सुश्रुत के अनुसार जब हृदय मे तीव्रशूल लक्षण विशेष हो तो उसे वातिक हृद्रोग कहते हे।

२. पैत्तिक हृद्रोग—
(Subacute Bacterial Endocarditis)

हृदय के एण्डोकेन्डीयम मे पहले आम वातिक शोफ हो चुका हो तो कभी-कभी (Mitral) मिट्रल आर एरोटिक कपाटियो मे विशेषत शरीर के किसी अन्य भाग से जसे फुफ्फुस मे से पूयजनक जीवाणु का (Streptcoceus-Viridens) सक्रमण होकर उनमे शोफ आर अधिक बढ जाता हे जिसमे एक नवयुवक रोगी मे स्वल्प श्रम स श्वास

चढ़ जाने, कृश हो जाने, नाडी की तीव्रता (१०० १२०) मन्दज्वर, पाण्डुता, पीतभाव, रात्रिस्वेद आदि लक्षण होते है। इसे पैत्तिक हृद्रोग कहते है।

३ श्लैष्मिक हृद्रोग—

अध्यशन आदि से शरीर मे आमदोष की वृद्धि के परिणाम स्वरूप हृद्रय के अन्तराक्रमण मासमय भाग या वाह्य आवरण मे श्लेष्मिक शोथ हो जाने से उत्पन्न होने वाले हृद्रोग को जिसके कारण कि मन्दज्वर शरीर मे थकान, हृदय मे गारवता अग्निमा। कास आदि लक्षण हो श्लेष्मिक हृद्रोग कहते है। च० चि० २६

४ आमवातिक हृदय अन्त शोथ (Rheumatic Endocarditis)

सधिक ज्वर (Rheumatic Fever) ५ १५ वर्ष तक की अवस्था वाले बच्चो म होने वाला अत्यन्त दारुण रोग है। जिसके उग्र रूप ... तीन साथ मे ... हृदय अन्त शोथ (Rheumatic Endocarditis) हो जाता है। रौन्स्लिस (Beta-Haemolytic-Endocarditis) के प्रति शरीर के स्नायु तन्तु मे असात्म्यता के लक्षण ... हो जाने से सधिक ज्वर उत्पन्न होता है। ... इस रोग मे शरीर का सारा स्नायु तन्तु ही गर्भित होता है किन्तु सधिया तथा हृदपेशी का स्नायु तन्तु अधिक ग्रस्त होता है आर हृदय मे भी तथा अधिक ग्रसित होता है। तीव्र रोग के अच्छा होने के बाद भी प्राय रोगियो म (Valvular Endocarditis) रोग चिरस्थाइ रूप म रह जाता है।

लक्षण

Rheumatic Endocarditis हो जाने पर हृद प्रदेश ... हृत्कम्प स्वल्प श्रम से श्वास कृच्छ्रता का होना ... पाण्डुता आदि लक्षण होन ह। आयु जितनी छोटी होगी उतना ही अधिक सधिक ज्वर का दुष्प्रभाव हृदय पर अधिक स्थायी होता ह।

हृद्रोग चिकित्सा—

ज्वर जब तक रह रोगी को पूर्ण विश्राम देना चाहिए। सोडियम सैलिसिलट १५ २० ग्राम मात्रा म जल म मिलाकर ३ ३ घण्टे तक देना चाहिए। 'Dig' देना उत्तम रहेगा साथ ही Pre 10 M L मात्रा मे ६-६ घण्टे म जल से देना चाहिए। सप्ताह बाद उसकी मात्रा ५ ML 6-6 घण्टे से कर देना ठीक रहता है। आर इस प्रकार यह चिकित्सा ... मास तक चलनी चाहिए।

इसके अलावा सामान्यत आमाशय ... मे श्लेष्मिक या आमवातिक हृद्रोग के लिए ... मृदुविरेचन तथा आमवातनाशक ... क्वाथ, रास्नादि क्वाथ महायोगराज गुग्गुल आदि ... गुग्गुल या यवक्षार युक्त दशमूल क्वाथ ... उत्तम लाभदायक ह। वातिक हृद्रोग अथात् हृदय की ... प्रकार की निबलता के लिए अति व्यायाम तथा मानसिक विक्षोभो स बचते हुए रात्रि म पयाप्त निद्रा ... उचित विश्राम करते हुए मुक्ता पञ्चामृत ... प्रवाल व सितोपलादि का सेवन लाभदायक ... योगेन्द्र रस वृहत्‌ चिन्तामणि रस ... चिन्तामणि रस कस्तूरी पिष्टि, ... चूर्ण ... एव खमीरा गाजवान आदि भी ... का बल देन के लिए तथा हृदय नवल्य ... श्वास आदि उपद्रवो के लिए ... क्वाथ, दशमूल क्वाथ व अगस्त्य ... चाहिए। च्यवनप्राश अजुनारिष्ट भी हृद्रोग ... लाभकारी ह।

हृद्रोगो मे पथ्यापथ्य—

चावल मूग गेहूं परवल करेला गम्भीर आदि पथ्य है।

तेल, खटाइ, गुरु स्निग्ध अन्न श्रम ... क्रोध, चिन्तादि मानस आवेश तथा उच्चस्वर म भाषण अपथ्य हे।

मधुमेह के उपद्रव स्वरूप हृदयविकृति

वैद्य लोकनाथ शर्मा
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर विकृतिविज्ञान विभाग
राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर

वैद्य सोमनाथ घोगडे
स्नातकोत्तर अध्येता
स्नातकोत्तर विकृतिविज्ञान विभाग
राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर

आयुर्वेद मे प्रमेह व्याधि 'अष्टामहागद' के अतगत गिना ह। इसम जो आठ व्याधि ह वह दु श्चिकित्स्य हे। अत्यधिक या वार-वार और आविल मूत्र का त्याग ही प्रमेह कहलाता ह। सभी प्रमेहो मे मूत्रवह सस्थान की विकृति होना स्वाभाविक ह। विकृति की विभिन्नता के अनुसार प्रमेहो म लक्षणो मे भद पाय जात ह। कफज १० पित्तज ६, और वातज ४ इस प्रकार २० प्रमह वर्णित ह। समय पर उचित उपचार न करने से भी प्रमेह मधुमह मे परिणित होकर असाध्य कोटि मे पहुच जाते ह।

मधुर यच्च मेहेपु प्रायो माध्वर्य महति।
सर्वेऽपि मधुमेहाख्या माधुर्याच्च तनोरत ।।
वा० नि० १०/२६

मधुमेह मे रोगी मधु के समान मधुर मूत्र का त्याग करता हे और शरीर मे भी माधुर्य रहता ह, अत इसे और इन विकारो से युक्त होने पर सभी प्रमेहो को मधुमेह कहते ह।

मधुमेह को आजकल **Diabetes Mellitus** कहते ह। मधुमह का मुख्य कारण कुछ अन्त स्रावी ग्रन्थियो क स्रावो की विकृति ह। अग्न्याशय **(Pancreas)**, चुल्लिकाग्रन्थि **(Thyroid)**, अधिवृक्क **(Suprarenal)** तथा पीयूषग्रन्थि **(Pitutry)** ये चार ग्रथिया प्रागोदीय समवर्त **(Carbohydrate-Metabolism)** का नियन्त्रण करती हे।

अग्न्याशय का यह अन्त स्राव मधुनिषूदिनी **(Insulin)** ह। यह पशिया द्वारा शर्करा का उपयोग तथा यकृत के द्वारा इसका सचय करता ह। इसका अभाव या कमी होने पर पेशिया शर्करा का उपयोग नहीं कर सकतीं और न यकृत मे इसका सचय हो सकता हे। परिणाम स्वरूप रक्तगत शर्करा वढकर वृक्क- देहली मर्यादा का अतिक्रमण करके मूत्र द्वारा उत्सृष्ट होन लगती हे। शर्करा समवर्त का प्रभाव वसा और प्रोटीन समवर्त पर भी पडता हे। वसा समवर्त मे विकृति होने से अम्लोत्कर्ष होता **(Ketosis)** हे।

लक्षण—

वार-वार और अधिक मूत्र त्याग, क्षुधावृद्धि तृष्णाधिक्य, दार्वल्य, शरीर भार कम होना यह मधुमेह के प्रमुख लक्षण ह।

हृद् विकृति मधुमेह के उपद्रवो मे एक प्रमुख उपद्रव हे। मधुमेह के रोगियो मे मृत्यु का सवसे प्रमुख कारण **Coronary Artery** मे धमनीप्रतिचय **(Atherosclerosis)** से उत्पन्न **Myocardial infarction** हे। जिसमे हृदय के मासपेशियो के रक्त सचार मे बाधा आने से हृत्पेशी मृत हो जाती ह।

आचार्य वाग्भट्ट ने वातज प्रमेहो के उपद्रवो मे हृदग्रह को स्पष्ट कहा ह—

वातजानामुदावर्त कम्पहृद्ग्रहलोलता।
शूलमुन्निद्रता शोप कास श्वासश्च जायते।।
वा० नि० १०/२०

उदावर्त, शरीर म कम्पन्न, हृदय प्रदश म जकड़ाहट

सव रसो को सेवन करने की इच्छा, शूल, निद्रानाश, शोप, कास तथा श्वास ये वातिक प्रमेहो के उपद्रव हे।

मधुमेह के रोगियो मे उपद्रवो की तीव्रता तथा घातकता के लिए निम्न तीन घटक प्रमुख हे।

१ व्याधि की प्रवृद्धावस्था।

२ समवर्त की विकृति पर नियत्रण न हो पाना।

३ सहज कारण **(Genetic factor)**

मधुमेह के दो प्रमुख प्रकार हे—

१ प्राथमिक मधुमेह

२ द्वेतीयक मधुमेह

प्राथमिक मधुमेह के पुन दो प्रकार हे—

1- Type I (Insulin dependant diabetes mellitus)

2- Type II (Non-insulin dependant diabetes mellitus)

रक्तवाहिनियो **(Blood Vassels)** की विकृति इन दोनो प्रकार के मधुमेहो के उपद्रव स्वरूप हो सकती हे। तथापि टाइप १ मधुमेह मे लघु रक्तवाहिनिया विकृति **(Micro Angiopathy)** ओर टाइप २ मधुमेह मे उपद्रव स्वरूप वृहद् रक्तवाहिनियो **(Macro-Angiopatty)** की विकृति अधिक होती हे। वृहद् रक्तवाहिनियो की विकृतियो मे धमनी प्रतिचय **(Atheroselerosis)** प्रमुख हे। मधुमेह के लगभग ७० प्रतिशत रोगियो मे मृत्यु का कारण धमनी प्रतिचय हे।

१०-१५ साल से मधुमेह से पीडित अधिकतर रुग्णो मे रक्तवाहिनी विकृति पाई जाती हे। महाधमनी, वृहद् तथा मध्यम आकार की धमनियो मे तीव्रता से धमनी प्रतिचय हो जाता हे। कम उम्र मे धमनी प्रतिचय होना तथा तीव्र गति से होना ये दो लक्षण ही मधुमेहेतर रोगियो मे पाये जाने वाले धमनी प्रतिचय से भिन्न है।

तीव्र गति से होने वाले इस धमनी प्रतिचय का निश्चित कारण अभी तक ज्ञात नहीं हे। तथापि तिहाई से आधे रुग्णो मे रक्तगत स्नेह **(Lipids)** की मात्रा वढी हुइ मिलती ह। जिन रुग्णो मे स्नेह की मात्रा वढी हुइ नहीं मिलती हे, उनमे भी धमनी प्रतिचय की अधिक सभावना रहती ह। **Non Enzymatic Glycosylation** की अधिकता के कारण **Lipoproteins** म गुणात्मक परिवर्तन होकर सचय की प्रवृत्ति वढ जाती ह। टाइप २ मधुमेह मे **High density lipids (HDL)** की मात्रा कम पाई गई, जोकि धमनी प्रतिचय रोकने मे सहायक ह। मधुमेह के रोगियो मे **Platelets** की रक्तवाहिनी के भित्तियो मे जमने की प्रवृत्ति पायी जाती ह। इन सव कारणो के अलावा मधुमेह के रोगियो म उच्च रक्तदाव **(Hyppertension)** होने की सभावना अधिक रहती ह।

हृदय की मासपेशियो को रक्तसचार करने वाली **Conary Artery** मे धमनी प्रतिचय होने से मायोकार्डियल इन्फार्क्शन मधुमेह क रोगियो म उत्पन्न हो जाता ह।

मायोकार्डियल इन्फार्कशन मे निम्न लक्षण मुख्य रूप मे पाये जाते ह—

उर प्रदेश मे तीव्र शूल होता हे। यह उर फलक क पीछे ओर कुछ नीचे तक रहता ह। शूल का प्रचलन वाम वाहू तथा कभी-कभी दोनो वाहू की ओर रहता ह। रोगी वेचन रहता, स्वेदप्रवृत्ति होती हे।, चेहरे पर पाण्डुता रहती ह। कभी-कभी छर्दि हो जाती हे। हृद्गति तीव्र हो जाती ह तथा कभी-कभी हृदय गति मे मदता ओर अनियमितता भी आ जाती हे। ज्वर अल्प मात्रा मे रहता ह रक्तभार म कमी आ जाती है। इसका आवेग कुछ घण्टो तक भी रह सकता हे।

इन उपद्रवो से वचने के लिए समय रहते मधुमेह का निदान तथा चिकित्सा आवश्यक ह आर खान पान पर भी नियमित रूप से नियत्रण रखना जरूरी ह।

"रक्तदाब (ब्लडप्रेशर) विवेचना" एवं स्वानुभूत चिकित्सा

वैद्यराज डा० रणवीर सिह शास्त्री
विद्याभास्कर, एम० ए०, पी० एचडी०, आयुर्वेदाचार्य, आगरा

क्तभार का परिचय—

रक्तभार, रक्तचाप, रक्तदाव, ब्लडप्रेशर आदि र्यायवाचक शब्दो से इस रोग का वोध होता हे। यह ाधि प्राय जनसाधारण तक अपना प्रभाव दिखा रही है। र्थात् सर्वत्र मानवमात्र मे यह व्याप्त हो चुकी हे, रोगी चिकित्सक के पास रोग मुक्त होने जाता हे, सवसे पूर्व सका रक्तदाब का परीक्षण होता हे। इसके लिए पारद रक्तदाव मापक यत्रो का आविष्कार वहुत वर्ष पूर्व ही चुका हे। जापानी घडी के आकार की सूचिका वाली यु के दबाव से दाव भार को निर्देशित करने वाले रक्तदाव ापक यत्र भी उपयोग मे आ रहे है। वर्तमान मे यह सभी त्र भारत मे निर्मित हो रहे हे जो सुविधा पूर्वक रक्तदाव ी वृद्धि और हास को प्रत्यक्ष मे प्रकट कर देते हे।

ाडी से एवं दैहिक लक्षण से भी ज्ञान—

प्राचीन समय मे ओर वर्तमान समय मे भी योग्य अनुभवी वैद्यराज नाडी की गति का स्पर्श करते ही रक्तदाव का अधिक ओर न्यूनता की जानकारी कर लेते थे। उक्त यत्रो की सहायता भी भार के अशाश वोध की सुगमता के लिए स्वीकार कर लेते है। ये मापक यत्र इस विज्ञान युग के अनुसधान की देन हे। विविध यत्रो की सहायता लेना सभी प्रकार के चिकित्सको का समान अधिकार हे। कुछ वेद्य महानुभाव लाक्षणिक परीक्षा से भी इस रोग की गति विधि को सरलता से जान लेते हे। आयुर्वेद के ''दर्शन स्पर्शन प्रश्ने परीक्षयेत् रोगिणाम्'' इस सर्व तन्त्र सिद्ध सिद्धान्त से देखना स्पर्शन और पूछना इन तीनो प्रकार से सरलता से ही रोग का अववोध होता हे। होमियोपेथी का निदान इसी दिग्दर्शन पर आधारित हे।

रक्तदाब (ब्लडप्रेशर) का उपचय और अपचय—

रक्तदाव मापक यत्र से रक्तभार का सही ज्ञान हो जाता हे साधारण तथा वयस्क व्यक्ति का रक्तदाव १२० तथा निम्न दाव ८० रहना चाहिए। यह स्वस्थ निरोग व्यक्ति स्त्री पुरुष का रक्तदाव मध्यम स्थिति मे रहता हे।

जन साधारण को अपने रक्तदाव को जानने के लिए अपनी आयु मे ६० अको को मिलाने से रक्तदाव की स्थिति का वोध यन्त्र द्वारा कर लेना चाहिए। अपनी आयु से १० अक कम करने पर भी अपने रक्तदाव की मर्यादा, मापक यत्र से सही जानकारी लेनी चाहिए। आयुवृद्धि के अनुसार रक्तदाव भी वढता हे। यदि परीक्षण मे दाव अधिक हे तो रक्तदाबोपचय हे, इसकी चिकित्सा किसी योग्य चिकित्सक से करानी चाहिए। यदि उक्त लिखित अको की गणना से न्यून हे तो इसको रक्तदाब का अपचय माना जायेगा, रक्तदाब का उपचय (वृद्धि) और अपचय (हास) दोनो ही रुग्णता की अभिव्यक्ति करते हे।

निम्न रक्तदाब मे वृद्धि—

वयस्क व्यक्ति का रक्तभार १२०/८० सामान्य हे, इसमे ८० अको मे निम्न रक्तभार की वृद्धि हो, यह भी विशेष ध्यान देने की स्थिति है, निम्न रक्तभार का अधिक नीचे गिरना ओर १०० या इससे अधिक वढना भी रोग हे। इस निम्नभार की वृद्धि भी अनेक व्याधियो व मानव शरीर की अस्वस्थता का लक्षण हे।

रक्तदाव वृद्धि के कारण—

वर्तमान युग मे मानव अपने स्वास्थ्य नियमो को और धार्मिक अनुष्ठानो को भूलता जा रहा है। प्राचीन ऋषि मुनियो एव आयुर्वेद के आचार्यो ने स्वस्थ वृत्त प्रकरण मे स्वास्थ्य रक्षा के उपाय का विस्तार से वर्णन किया है। स्मृति ग्रन्थो मे भी इस आचार विचार विषयक उपदेश प्रदान किये है। इनका पालन न करते हुए स्वेच्छाचारिता, मनमानी करना, रक्तदाब आदि अनेक रोगो की उत्पत्ति होती है। मनुस्मृति मे लिखा है।

वेदानामनभ्यासाद आचारस्य च वर्जनात्।
आलस्यादन्न दोषाच्च मृत्यु विप्रान जिघांसति।।

जो व्यक्ति धार्मिक विचारो या ईश्वर भक्ति का परित्याग कर स्वच्छन्दता से अनेक प्रकार के मद्य नाना प्रकार के मास, विदाही अत्युष्ण, पेय व खाद्य पदार्थो का प्रचुर मात्रा मे सेवन करते है विरुद्ध भोजन, शारीरिक वेगो का रोकना, तम्बाकू के विभिन्न उत्पादो का नस्य धूम्रपान, नम्बरी तीव्र एसेन्स से निर्मित तम्बाकू, सुर्ति, कीमा, कार्बन नशीली दवाओ का सेवन केशर, अम्बर आदि उष्ण पदार्थो का सेवन कामोत्तेजक पदार्थो का अति प्रयोग विषय वासना मे विशेष आसक्ति, सामर्थ्य से अधिक कार्य करना, दूषित वासी भोजन व अण्डा मास की प्रचुरता धनजन की हानि की गम्भीर चिन्ता, अग्निकर्म, अध्यशन शाकातिरेक आदि से रक्तचाप की वृद्धि होती है।

रक्तदावाधिक्य के उपद्रव—

जिसका ब्लडप्रेशर बढता है, उस रोगी को घबराहट, धमनी शिरा भ्रम मस्तिष्क मे सताप, अस्थिर विचार, रक्तवाहिनी धमनी व हृदय की धडकन का तीव्र होना, अशान्ति उद्विग्नता, श्वास की तीव्रता, हस्तपाद तलो का दाह नाडी स्पदन बढना क्रोध आना, देह मे गुरुत्व व सामर्थ्य हीनता आदि उपद्रव हो जाते है। अधिक रक्तदाव बढने से हृदय व मस्तिष्क की व्याधिया भी उत्पन्न हो जाती है मस्तिष्कगत रक्तस्राव और पक्षाघात एकागघात भी उत्पन्न हो जाता है हृदयावरोध होने का भय भी बना रहता है रक्तदाव की अति वृद्धि और अति न्यूनता (अवसाद) भी प्राण घातक हो सकते है।

सावधानी और उपचार (चिकित्सा)—

यदि रोगी व्यक्ति को अथवा साधारण पुरुष व महिला को उक्त उपद्रवो का आभास हो तो तत्काल रक्तदाब का परीक्षण कराकर उपचार योग्य वैद्य से प्रारम्भ कराना चाहिए। इसमे अपथ्य मिथ्याहार विहार का तथा शोक चिन्ता आदि प्रमुख कारणो का परित्याग, नमक, लालमिर्च, गर्म मसाले, शराब, तम्बाकू, चाय, कॉफी, उष्णपान व शुष्क और उष्णवीर्य मेवाओ का परित्याग प्रारम्भ से ही कर देना चाहिए। पूर्ण विश्राम भी अपेक्षित है।

औषधि प्रयोग—

(क) मुक्तापिष्टी (बसराई) १-१ रत्ती शर्बत अनार अथवा मीठे अनार के स्वरस मे प्रात साय दे। तत्काल पानी भोजन पेय पदार्थो का सेवन नहीं करना चाहिए। इन सभी पदार्थो का सेवन एक घण्टे पश्चात् ही करना उचित है। इस मध्य मे अनार, सेब मौसमी आदि हृदफल रस का सेवन करना उचित है।

(ख) श्लेष्म प्रकृति व शीताधिकार वाले व्यक्तियो को मुक्ताभस्म १ १ रत्ती रोगन प्रात, साय शुद्ध मधु के साथ करना उपयुक्त है।

(ग) मध्यकाल मे अन्य औषधो का प्रयोग भी करना हितकर है। सितोपलादि चूर्ण १ माशे, प्रवाल शाखा पिष्टी १ रत्ती, मुक्ताशुक्ति पिष्टी १ रत्ती, अकीक भस्म १ रत्ती का मिश्रण दो बार मुक्तावलेह १ चम्मच अथवा अर्जुनावलेह मे मिलाकर दे।

(घ) जहरमोहरा पिष्टी डेढ रत्ती, हृदयार्णव रस १ रत्ती ऐसी दो मात्राये प्रात साय दो बार शर्बत नीलोफर मे मिलाकर सेवन कराना चाहिए।

(ङ) रक्तदाव का हृदय द्वारा (मस्तिष्क स्थित चेतनाहृदय तथा रक्तसवाहक हृदयज) पर विशेष प्रभाव होता है। प्रात हृदय की रक्षा अत्यन्त आवश्यक है। हृद्य औषधि व उपचार रक्तचाप मे लाभकारी होता है।

(च) रक्तभार वृद्धि से यदि निद्रानाश हो तो ऐसी स्थिति मे ब्रेण्टो टेवलेट १ से २ तक सोते समय १ बार पानी से लेवे। ब्लडप्रेशर को भी लाभ होगा और निद्रा भी आ जायेगी।

(छ) की सर्पगन्धा वटी १-१ गोली प्रात साय देने से लाभ होता है। हिमालय ड्रग्स क० की सर्पीना भी लाभ दिलाती है। वैद्यनाथ की सर्पगन्धा घनवटी भी १ १ गोली प्रात साय देने से रक्तदाव को कम करती है किन्तु इन

दवाओ का सेवन रोग के आक्रमण मे ही करे। वहुत दिनो तक सवन नहीं करना चाहिए।

पथ्य— (अ) सुपाच्य, ऋतु अनुकूल, सौम्य भोजन, दलिया, मूग की दाल, सावुदाना, रोटी गेहू की, लोकी, परवल, शलजम, टिण्डा, वन्दगोभी, सलाद आदि पथ्य पदार्थो का सेवन हितावह हे। शाली व साठी चावल, पुराने चावल, समा व कगुनी के चावल, ताजा मट्ठा विना नमक मिलाये सेवन करा सकते हे।

(ञ) जठर स्थित आमदोष से भी गेस एवं तेजाव उद्रित होकर रक्तदाव को वढाता ह। रोगी को ऐसी स्थिति मे अर्क सोफ, अर्क गुलाव मिलाकर ३-४ वार ३-३ घण्टे वाद दे, यह योग हृद्य आमपाचक ओर रक्तभार न्यून करता हे।

(त्र) रक्तदाव का रोगी अशक्त व वचेन हो तो उसे ग्लूकोन डी १ १ छोटा चम्मच पानी मे मिलाकर ३ वार या अधिक सेवन करा सकते हे। रक्त मे कोलेस्ट्रोल (थक्के दूषित कणो की वृद्धि) रक्तदाव वढने पर १-१ माशे मुक्तावलेह अर्जुन के ताजे वाष्पित अर्क ढाई तोले से दे। ज्वर और सताप की अवस्था मे शिर मे पुष्पतल मर्दन करे, ओर सुदर्शन वाष्पित अर्क गावजवा १ तोला मिलाकर ३-४ वार पिलावे।

निम्न रक्तदाब (लो ब्लड प्रेशर) का कारण व निवारण—

रक्तदाव के विषय मे पूर्व लिखित मध्यमदाव १२०/८० सामान्य वयस्क स्वस्थ पुरुष स्त्री का माना जाता हे। इस भार मे यदि न्यूनता आती हे तो इसका तात्विक वोध दाव मापक यत्र से कर लेना चाहिए। नाडी की गति भी मन्द हो, निर्वल हो इससे भी रक्तदाव जानी जा सकती हे।

रक्तदाबाल्पता के कारण—

शरीर मे रक्ताल्पता, हृदयदोर्वल्य, शुक्रक्षीणता, नारियो का प्रदर रोग, दीर्घ कालीन मन्दाग्नि, पाण्डुरोग, अतिसार, ग्रहणी आदि रोग, रक्तस्राव, तीव्र ज्वर को वार-वार कालपोल जेसी दवाओ से वार-वार उतारना, शीतल वस्तुओ का निरन्तर सेवन, क्षय, रक्त पित्त, प्रमेह आदि दीर्घकालीन रोगो से क्षीण, ओज क्षय, एड्स आदि प्रतिलोम क्षय से आक्रान्त, दीर्घकालीन उपवास, हृदयावसाद औषधि आदि का सेवन, अति व्यायाम, अहिफेनादि का व्यसन, तिरस्कार, ग्लानि से रक्तदाव न्यून होता हे।

रक्तदाबाल्पता के उपद्रव—

लो ब्लड प्रेशर से रोगी, उत्साहहीन, निर्वल, चलने फिरने से श्वास फूलना, कार्य करने मे अशक्ति, हाथ परो की वल हानि, शिर पीडा, भ्रम, विचार शक्ति की क्षीणता, मन्दाग्नि, अजीर्ण, आलस्य, अरुचि, चिढना, सदा हताश रहना, कामशक्ति का ह्रास, किसी कार्य मे मन न लगना आदि लक्षण उत्पन्न हो जाते हे।

चिकित्सा व्यवस्था और पथ्य—

रोगी के आरोग्य सम्पादन के लिए रक्तदाव का नियत्रण आवश्यक हे।

(अ) चन्द्रोदय १/२ रत्ती, अभ्रक भस्म १/२ रत्ती, मुक्ताभस्म १/२ रत्ती मिलाकर १-१ मात्रा प्रात साय पान स्वरस ओर शुद्ध मधु मिलाकर दे। वेद्य जी की सम्मति से अधिक भी दे सकते हे। पथ्य मे चाय, दूध, काफी ओर मासरस का प्रयोग कर सकते ह। भोजन मे सेन्धा लवण, कालीमिर्च, गर्ममसाले का अधिक प्रयोग करना हित हे।

(आ) रस सिन्दूर १ रत्ती, शृगभस्म १ रत्ती, ऐसी दो मात्राये शुद्ध मधु से प्रात साय अथवा विशेष अवस्था मे सेवन करावे।

(इ) वृहत्कस्तूरी भेरवरस १/२ रत्ती से १ रत्ती तक २ या ३ वार अदरक के रस व शहद मे दे।

(ई) कुकुभादि वटी १ रत्ती, कस्तूरी भेरव रस १/२ रत्ती ऐसी दो मात्राये मुक्तावलेह मे दे।

(उ) कस्तूर्यावलेह (दवा ए उलमिस्क) १ १ माशा चार वार चटावे, अनुपान चाय दे।

(ऊ) दशमूलारिष्ट, अश्वगन्धारिष्ट अथवा मधुकास्व २-२ तोला कुछ खाने के वाद पिलावे।

(ए) मृगमदासव ३-३ बूद ३ वार उष्ण जल मे दे। [illegible] पेरो पर नारायण तेल अथवा शतावरी तल की मालिश करे।

अपथ्य— शीतल पेय एव खाद्य पदार्थ, वर्फ आइसक्रीम सिरका व नींवू व ठण्डे फलो का स्वरस व शवत शीतल जल से स्नान, शीत मे भ्रमण आदि त्याग दे। जिन कारणो से रोग की उत्पत्ति हो उन्हे त्यागना ही "निदान परिवर्जनम्" श्रेयस्कर हे। वर्तमान समय मे विश्व मे सभी देशो मे प्राय रक्तदाव के रोगियो का वाहुल्य ह। अतएव इस व्याधि की सक्षिप्त विवेचना सभी व्यक्तियो के लिए पठनीय होगी।

:: मन अन्योन्य सम्बन्ध ::

डा० दिनेश कुमार एन० श्रीवास्तव, एम० डी० आयुर्वेद
आयुर्वेदोपचार केन्द्र, २०२ श्रीदत्त हाउस, वादामडी वाग के सामने, शकर टेकरी,
दाडिया वाजार, वडोदरा (गुजरात)

सृष्टि की उत्पत्ति विकास एव हास, यही क्रम हे। परन्तु आयुर्वेद शाश्वत हे। युग युगान्तर के वाद भी आयुर्वेद के सिद्धान्त यथावत् हे। आधुनिक विज्ञान मे शरीर से मात्र स्थूल शरीर (काया) का ही समावेश किया गया हे, जव कि आयुर्वेद मे पडधातु, पुरुप को पूर्ण शरीर कहा गया हे। अत शरीर के साथ आत्मा, मन का सयोग स्वत स्पष्ट हो जाता हे। शरीर तथा मन दोनो के स्वस्थ रहने का उपदेश मात्र आयुर्वेद ने दिया है। दोपो का समान रहना अग्नि सम्यक् रहना, धातुये समान अवस्था मे रहना, मूल मूत्र की प्रवृत्ति सम्यक रूप से होना, स्वस्थ व्यक्ति का लक्षण हे। साथ ही आत्मा, इन्द्रिया तथा मन का भी प्रसन्न रहना स्वस्थता के लिए आवश्यक हे। स्वस्थता के लिए जिन नियमो का पालन करना चाहिए, उनका विस्तार से स्वस्थवृत्त मे वर्णन किया गया हे। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान आज उच्च शिखरो को प्राप्त करता जा रहा हे, जिसमे कोई सशय नहीं हे परन्तु सर्वोत्तम उप्लब्धियो के वाद भी कोई भी चिकित्सा स्थायित्व को प्रदान नहीं कर सकती। शरीर एक मात्र प्रयोगशाला वनकर रह गई ह। जिसपर नित नये अनुसधान होते रहते हे ओर नई-नइ आषधिया अस्तित्व मे आती रहती हे। इन सव के वावजूद शरीर मात्र (स्थूल शरीर) की ही चिकित्सा से सतोष करना पडता हे। अव धीरे-धीर मनोविज्ञान का अस्तित्व वढने लगा हे आर साथ ही योग साधना का विचार भी आधुनिक लोग करने लगे ह। आहार का इतना विस्तृत वर्णन आयुर्वेद मे दिया ह जिसे आहार विज्ञान के नाम से प्रचलित किया जा रहा है "मात्रा त्रिस्यात्" जेसे सूक्ष्म सूत्र म ही आयुर्वेद मे आहार का मूल्य कह दिया हे।

वर्तमान स्थिति मे मानव आधुनिक विकास के चरम सीमा पर पहुच चुका ह। असभव को सभव वनाने का प्रयत्न कर रहा हे इस आपाधापी मे मानव अपने नित्य क्रम से विरुद्ध जा रहा हे। जिससे शरीर की रोग प्रतिकारक शक्ति का हास होता ह आर व्याधि की उत्पत्ति होती हे। श्रम रहित जीवन, विलासपूर्ण जीवन, टी० वी० सिनेमा का चलन, अनियमित असतुलित खान-पान प्रकृति के विरुद्ध आचरण दौड़-भाग, तनावपूर्ण जीवन आदि कारणो से शरीर के साथ साथ मन एव हृदय पर भी असर होता ह। जिसकी परिणिति हृदयरोग मे होती ह। "हार्ट अटैक" आज सामान्य हो गया हे। हृदयरोगियो की सख्या दिन प्रतिदिन वढती जा रही हे। जिससे हृदयरोग निवारण

(कार्डियोलोजिस्ट) की सख्या भी वढती जा रही हे। इ० सी० जी० सामान्य हो गया हे। इससे यह स्पष्ट हो जाता ह कि मन के तनावग्रस्त होने पर हृदय पर इसका प्रभाव पढने से हृदय विकार ग्रस्त होता हे ओर कमजोर होता ह।

समय से सोना, उठना, भोजन लेना, काम करना आज के व्यस्त जीवन मे कठिन हो गया हे। व्यवसाय के कारण अथवा नोकरी के कारण दिनचर्या, रात्रिचर्या जेसी व्यवस्था का हास हो गया हे। अनुकूलता के आधार पर कभी भी भोजन लेना, शयन करना, जागना ये शरीर की अग्नि प्रभावित होती हे जिससे मन्दाग्नि की उत्पत्ति होती हे ओर ''रोगा सर्वेऽपि मन्दाग्नि'' सूत्र चरितार्थ होता हे।

मानसिक अस्वस्थता, धर्य, सहनशीलता, प्रसन्नता, द्वेष रहितता आदि का हास होने अथवा अभाव होने से इसका प्रभाव सम्पूर्ण शरीर पर पडता हे। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान मे अन्त स्रावी ग्रन्थियो की क्रिया पर मानसिक स्थिति का प्रभाव स्पष्ट रूप से वताया गया हे। अत्यधिक तनाव की स्थिति मे व्यक्ति क्या कुछ नहीं कर डालता हे ? हत्या, आत्महत्या, दूसरो को या स्वय को हानि पहुचाना, छोटी-छोटी वातो पर लडाई, झगडा इन सभी के मूल मे वर्तमान परिस्थिति कारणमूल ह। आज कितने लोग मुक्त मन से हस पाते हे ? हास्य से शारीरिक मानसिक तनाव कम होता हे, इस सत्य को अन्य देशो मे भी स्वीकार किया जा रहा हे परिणाम स्वरूप कई जगहो पर लाफिंग क्लव की स्थापना तक की गई हे। वाग-वगीचा अथवा कहीं भी खुले वातावरण मे मुक्त मन से हस लेने से भी शरीर, मन का वोझ हल्का हो जाने से स्वस्थता आती हे। अमेरिका जेसे विकसित देश मे इसीलिए कार्य दिवस पाच दिन का ह। जिससे शेप दो दिन मनुष्य समुद्र के किनारे, पहाडो पर अथवा पिकनिक स्थलो पर जाकर तनाव कम कर सके ओर नई स्फूर्ति, नई चेतना के साथ आकर पुन अधिक काम कर सके। **"Laughing is the best medicine"** सूत्र आज के आपाधापी वाले जीवन प्रकाश पुज समान हे। तदुपरान्त प्रात कुछ समय याग, प्राणायाम, सूर्य नमस्कार, आसन आदि का भी विदशो मे वहुत प्रचार हो रहा हे। इन सभी अर्वाचीन प्रक्रिया से व्यक्ति का हृदय-मन सदा के लिए स्वस्थ रह सकता हे। हार्ट फेल की अथवा हार्ट अटेक की जो दर वढती जा रही हे उसमे निश्चित रूप से अन्तर आ सकता ह। ग्रामीण एव शहरी जनो मे इसका अन्तर स्पष्ट दिखाई पडता हे। भोतिक सुख, सुविधा आप वनती जा रही हे।

दृढ मनोवल से शरीर के अन्दर स्थित चेतना शक्ति जिसे चमत्कारिक शक्ति भी कह सकते हे, असाध्य व्याधियो मे भी विजय पायी जा सकती हे। न्यूयाक क डा० एन्ड्रयु वेल की पुस्तक **Spontaneous Healing** आज **Best Seller** की श्रेणी मे हे।

डा० वेल ने अपनी पत्नी से लेकर कई एसे रोगिगा का उदाहरण इस पुस्तक मे दिया हे जिन्हे आधुनिक चिकित्सा पद्धति से कोई लाभ नहीं हो पाया आर अन्तत उन रोगियो को उनके भाग्य पर छोड दिया गया। जिस अपने शरीर के अन्दर स्थित दृढ मन से चमत्कार रूप से अच्छे होते देखा गया ओर आज भी ऐसे रोगी पूर्ण स्वस्थ जीवन व्यतीत कर रहे हे। यहा पर आयुर्वेद का सिद्धान्त ही निहित है कि मन, आत्मा, इन्द्रियो के सहयोग से सुषुप्तमन निरन्तर प्रयास करने से चमत्कारिक फल प्राप्त कर सकता हे।

मन के आनन्दित होने, एकाग्र होने, दृढ होने से हृदय के रोगियो मे आशातीत लाभ मिल सकता हे। हृदयजन्य श्वास कृच्छ्रता, विषम श्वास, रात्रि श्वास, हृतशूल, हृदय दोर्वल्य आदि व्याधियो मे चिरकालिक लाभ हो सकता हे। तनाव मुक्त जीवन, सुखायु, हितायु की चावी ह। इति।

जीर्ण दक्षिण हृदयकपाटीय विकार—कुछ रोगी (CHRONIC RIGHT VALVULAR DISEASE)

वैद्य पी० एस० अशुमान, एच० पी० ए०
प्रोफेसर— मौ० सि० प्रभारी प्रचार्य, शेठ जी० प्र० सरकारी आयुर्वेद कालेज, भावनगर,
निवास— १४६७, ए २/१ कृष्णनगर, रूपाणि सर्कल, भावनगर-३६४००१ (गुजरात)

दक्षिण हृदय कोष्ठो मे सम्बन्धित कपाटो की विकृति के कारण जो विकार उत्पन्न होते है, उनका यहा ग्रहण किया गया है। वाम हृदय की ही तरह दक्षिण हृदय से सम्वद्ध कपाटो मे भी सकीर्णता (Stenosis) एव प्रत्यावर्तन (Regurgitation) या Incompetece सम्बन्धी विकृतियॉ मुख्य ह।

दक्षिण हृदय कोष्टो से सम्वन्धित ट्राईकस्पिड वाल्व या त्रिपत्रक कपाट एव पल्मोनरी वाल्व या फुफ्फुसीय कपाटो की विकृतिया विभिन्न लक्षणो को उत्पन्न करती है।

इन विकृतियो मे सकीर्णता के कारण मार्गरोधजन्य लक्षणो की उत्पत्ति होती हे। जवकि प्रत्यावर्तन से रक्त पुनरावर्तन जन्य लक्षणो की उत्पत्ति प्रमुख घटना होती ह।

यहा पर त्रिपत्रक कपाट एव पल्मोनरी वाल्व (फुफ्फुसीय) कपाट विकृति जन्य विकारो पर सक्षिप्त विचार आतुरो मे की गई चिकित्सा सदर्भ मे दी जा रही है।

त्रिपत्रक कपाट विकृति

त्रिपत्रक प्रत्यावर्तन (Tricuspid Regurgitation)-

यह विकृति मुख्यतया जीर्ण कासानुवेध के साथ सम्वद्ध मानी जाती है। इसके चिरकाल तक वने रहने से दक्षिण हृदय चौडा (Dilated) हो सकता ह। परन्तु यह आवश्यक नहीं कि दक्षिण हृदय चाडे होने पर त्रिपत्रक कपाट विकृति विद्यमान हो ही।

इस विकृति म मरमर ध्वनि मिलना ध्वनि का त्रिपत्रक क्षेत्र मे सुना जाना ध्वनि दक्षिण स्तन क्षेत्र तक मिलना, नाडी का तनावयुक्त एव विषम होना इसकी कुछ मुख्य विशेषताए ह। आकोटन (Auscultation) द्वारा वक्षकास्थि के दक्षिण तक मद ध्वनि मिलती ह। मरमर ध्वनि त्रिपत्रक क्षेत्र मे सकोचकालिक (Systol) समय तक सुनी जी सकती है।

इसमे दक्षिण हृदय निष्फलता (फेल्योर) के समान लक्षण मिलते हे। यथा—

१ त्रिपत्रकीय क्षेत्र मे ब्रूट (Bruit) मिलता है।
२ ग्रीवा सिरा भारी एव तनावपूर्ण होना (रक्तसचय के कारण)
३ जल सचय जन्य शोथ (Dropsy) के लक्षण मिलना जो समस्त सिरा सस्थान कजेशन के कारण उत्पन्न होता है।
४ शोथ प्राय पेर एव पीठ मे मिलता हे जिसम त्वचा तनी हुई मिलती है।
५ कभी-कभी Cellulitis भी विद्यमान।
६ यकृत शोथ पूर्वक कामला होना। यकृत नाभि तक वढ सकता ह। स्पर्श सहत्व मिलता ह।
७ अग्निमाद्य, अविपाक, क्षुधाहानि, भोजनोत्तर, उदर गोरव तथा अरुचि उत्क्लेश वमन जसे लक्षण मिलते ह।
८ श्यावता Cyanosis मिलना।
९ मूत्र म आत्कुचित एव रक्त का आना।
१० अन्त म जलोदर की उत्पत्ति होना।

त्रिपत्रक साकोच्य (Tricuspid Stenosis)-

इसम मरमर ध्वनि उर फलक क नीचे वाले भाग म हृदय विस्फारित (Dilated) मे सुनी जा सकती है। इसका

प्रचरण नहीं होता है।

फुफ्फुसीय कपाट विकृति—

अन्य कपाटीय विकृतियो की ही तरह फुफ्फुसीय कपाट मे भी साकोच्य (Stenosis) एव प्रत्यावर्तन जेसी विकृतिया सभव है।

सहज फुफ्फुसीय साकोच्य (Congenital Pulmonary Stenosis) एक विशिष्ट विकृति भी मिलती है। इस विकृति मे श्वासकृच्छ्रता श्यावता (Cynosis), मुद्गरवत् अगुलिया (क्लवड फिगर) के साथ लाउडसिस्टोलिक मर्मर तथा फुफ्फुसीय तल पर थ्रिल मिलना भी मिलते हे। दक्षिण क्षेपक उपचय से भी उसका सम्वन्ध माना जाता हे।

जातोत्तर फुफ्फुसीय साकोच्य (Pulmonary Valular Stenosis) के कारण दक्षिण हृदयक्षेपक' पात (Right Vantricular Failure) के लक्षण उत्पन्न हो जाते हे, क्योकि इस विकृति म दक्षिण क्षेपक से रक्त वाहर आने/निकलने मे अवरोध हो जाता हे।

फुफ्फुसीय कपाट प्रत्यावर्तन (Regurgitation) के कारण भी दक्षिण हृदय विकृति के लक्षण उत्पन्न होते हे।

अत दक्षिण निलय पाद या क्षेपक विकृति के कारण पादशोथ, यकृतवृद्धि, अरुचि, कण्ठ शिरापूरण, हृदयवृद्धि, शिर शूल जसे लक्षण प्राप्त होते हे।

पल्योनरी विकृति—

१ आ० क्र०- १००२८, लिग- पुरुष, वय- ४५ वर्ष
२ आ० क्र०- १३७५, लिग- पुरुष, वय- ५० वर्ष

यह रुग्ण निम्न प्रकार चिकित्सार्थ आये थे।

१ हृदय एव हृच्छूल
२ श्रम एव दार्वल्यता
३ श्वास कप्ट

४ फुफ्फुसीय हृदय विकृति मे पल्मोनरी आव्स्ट्रक्शन निदान किया गया था। न० २ का रोगी आर वी एच, वी वी एम एच्च तथा जलोदर ग्रस्त था।

इसको निम्नलिखित आपधि भोजन पर रखा गया था—

१ दशमूल क्वाथ २ तोला प्रात साय।

२ आरोग्यवर्धिनी पुनर्नवा माण्डूर चन्द्रप्रभा, हृदयार्णव १-१ गोली दो वार।

३ सितापलादि चूर्ण, यष्टि चूर्ण, चतुष्षष्टि चूर्ण शृग भस्म, अर्जुन, अभ्रक, प्रवाल मिश्रण १ मा० २ वार।

४ लशुनादि, हिंगुकर्पूर १-१ गोली भोजनोत्तर साथ मे अर्जुनारिष्ट १ तोला।

५ हरडे चूर्ण १ ग्राम, कोष्ठ शुद्धि के लिए। १ निद्रोदय रस आवश्यकतानुसार।

परिणाम—

१ यापन मात्र पाया गया।
२ लक्षणोपशमन देखा गगा।

टिप्पणी— न० २ के रोगी को जलोदर की चिकित्सा भी की गई थी।

त्रिपत्रक (Tricuspid) विकृति—

५६४२	१०१७०	१४४६५
पुरुष	स्त्री	पुरुष
६० वर्ष	६० वर्ष	५२ वर्ष
हृच्छूल	हृद्व/शूल	हृद्व/शूल
अविपाक	अविपाक	श्वासकृच्छ्रता
यकृतवृद्धि (++)	यकृत (++)	यकृत (+++)
कजस्टिव हार्ट	हृदय विस्तृति	आरवी ++ मायोकार्डियल इस्कीमिया सायनस टकी कार्डिया

टिप्पणी— यह सभी रोगी एकाधिक हृदय विकृति युक्त थे।

औपधि—

१ वरुणादि / दशमूल क्वाथ २ तोला प्रात
२ आरोग्यवर्धिनी, पुनर्नवा, चन्द्रप्रभा, हृदयार्णव १ १ गोली २ वार जल से।
३ सितापलादि यष्टि, चतुष्षष्टि शृग, अर्जुन प्रवाल, अभ्रक मिश्रण १ मा० २ वार मधु से।
४ शरा [illegible] २ गोली भोजनोत्तर।
५ शिवाक्षार पाचन २ मा० रात्रि मे।
निद्रोदय रस आवश्यकतानुसार।

परिणाम—

सभी रुग्णो म भली भांति [illegible] पाया गया।

*

हृस्व / अस्थायी हृच्छूल

(ANGINA PECTORIS)

वैद्य पी० एस० अशुमान, एच० पी० ए०
प्रोफेसर— मो० सि० प्रभारी प्राचार्य, शेठ जी० प्र० सरकारी आयुर्वेद कालेज, भावनगर,
निवास— १४६७, ए २/१ए कृष्णनगर, रूपाणि सर्कल, भावनगर-३६४००१ (गुजरात)

हृच्छूल एक चिरपरिचित रोग हे। प्राचीनो द्वारा इसको अनेक सदर्भो मे कहा गया है। आधुनिको द्वारा इसको इस्किमिक डिसीज आफ हार्ट, मायॉकार्डियल इस्चीमिया, कोरोनोरी हार्ट डिसीज या फिर एन्जाईना पेक्टोरिस जेसे शीर्पको द्वारा वर्णन किया मिलता हे। यह एक थोडे समय (१-२ मिनट) के लिए उत्पन्न अस्थायी हृदय शूल प्रकार हे।

यहा पर हृदय की विचित्र विकृति युक्त कुछ रुग्णो की चिकित्सा का विवरण हृच्छूल की दृष्टि से दिया है। ओपधि योजना को यथासभव एक सा रखने का प्रयास किया हे। तथापि लक्षणानुसार थोडा वहुत विवरण उपयोगी रहेगा। (यहा दिये आतुर विवरण नवीन जीणशूलयुक्तो का हे)

अस्थायी हृच्छूल (Angina Pectoris)-

किसी श्रम से उत्पन्न छाती के मध्य भाग से वाम वाहु की ओर गतिशील शूल को हृच्छूल के नाम से जाना जाता हे। हृदय को स्वल्प समय तक रक्त न मिलने को हृच्छूल या उर शूल कहते हे। इसमे हृदय मास अविकृत होता हे परन्तु कुछ समय के लिए रक्त अपर्याप्तता मिलती हे।

हेतु—

(क) मूलभूत हेतु—

१ मधुर रसातिरेक यथा अतिशर्करा सेवन।

२ गुरु, स्निग्ध, दुर्जर अन्नपान सेवन। यथा-प्राणिजवसा, घी मासाहारी मे अधिक मिलना।

३ ४० से ५० वर्प उम्र के पुरुप तथा ६० वर्प से अधिक की स्त्रियो मे यह प्राय अधिक मिलता हे। इसमे कम वय मे कम मिलता हे। विक्षोभी, स्थूल एव नाटे लोगो मे अधिक मिलता हे जवकि शात, सुसहत, दीर्घ लोगो मे कम मिलता हे।

४ श्रमहीन (या भारीपन भी), वेठे रहने वाले, मानसिक काम मात्र करने वालो मे अधिक मिलता ह। ग्राम की अपेक्षा शहरो के लोगो मे अधिक मिलता हं।

५ तम्वाकू सेवन सिगरेट (किसी भी रूप मे यथा वीडी सिगरेट) शीलता।

६ तीव्र मानसिक आवेश, काम, क्रोध, चिन्ताग्रस्तता।

७ मेदोरोग (स्थोल्य), प्रमेह एव मधुमेह, वातरक्त तथा मिक्सीडीमा जसे रोगी।

(ख) शूलाक्रमण हेतु—

१ शारीरिक अतिश्रम यथा— सीढी चढना, भारी वोझ उठाना, तीव्रावेशात्मक भापण (वोलचाल), शीघ्र गतिपूर्वक चलना।

२ मानसिक आवेश, काम क्रोध वेगग्रस्तता, घवराहट, वादविवाद आदि।

३ भोजन के तुरन्त वाद श्रम करना।

विकृति—

(क) सामान्य विकृति

१ स्वय हृदय की धमनियो मे कठोरता या सकोच होने से हृदय का रक्त पर्याप्त मात्रा मे नहीं मिलता। अत

हृदय मे स्थानिक रूप से पोषणस्राव (आक्सीजन) न मिलना यही (Angina) कहलाता हे।

२ हृदय मासपेशी पोषक धमनी मे (स्पाज्म) होना।

३ धमनियो मे स्रोतो मे सकीर्णता होना (धमनियो के अन्दर के स्तर पर स्क्लेरोसिस द्वारा छोटे-छोटे वटन से उभार बनना।

४ धमनी काठिन्य के कारण हृदय को कम रक्त मिलना। (महाधमनी कम लचीली होने से) धमनी नलिकावत कठिन हो जाना।

हृदय वाहिनियो मे कोलेस्ट्रोल, फोस्फोलिपिड, नेक्ट्रलफेट जमा होने से स्रोतो मे सकीर्णता होना।

सयोजक तन्तु वृद्धि एव केलशीयम जमा होना हृदय रक्त वाहिनियो मे पीत नोड्यूल बनना।

(ख) विकृति भेद—

१ धमनी काठिन्य जन्य दीर्घ हृच्छूल Occlusion का रोग Athersclerosis से हृच्छूल होता है।

२ Infarction रूप हृच्छूल रक्तभाव जन्य मास क्षति से उत्पन्न हृदय शूल हे। इसका वर्णन अलग से दीर्घ हृच्छूल के रूप में किया जाता है।

(ग) स्वरूप प्रकार—

१ अस्थायी हृदय शूल (Angina Pectoris) कई प्रकार का संभव है। यथा—

(१) श्रमज हृच्छूल (Angina Effort)

(२) उदरीय शूल हृच्छूल (Ab dominal Angina) या Spasmodic Angina

(३) स्थायी हृच्छूल Status Anginsus

(४) मिथ्या या अन्य विकृति सम्बद्ध हृच्छूल Angina Innocens (Psuedo Angina)

हृच्छूल क्षेत्र—

(क) क्षेत्र—

१ वाम बाहु- अग्रबाहु के अन्त पृष्ठ

२ वाम ऊर्ध्वबाहु अन्त पृष्ठ

३ उरोस्थि मध्य से वाम स्कध (कधे) तक

४ बाये हाथ मे पीछे के अन्दर के पृष्ठ तथा अन्दर की दो अगुली

५ वाम ग्रीवा एव स्कध की पीछे की ओर

६ प्राणदा नाडी एव पृष्ठ नाडी क्षेत्र।
आमाशय शूल, आमाशय से ग्रीवा तक।

७ कभी-कभी दाये बाहु, दक्षिण हस्तागुल मे भी

८ कभी-कभी नीचे की हन्वस्थि के नीचे के भाग मे या दात मे भी।

९ बाहु पीठ एपीगेस्ट्रीयम गतशूल।

(ख)

१ वक्ष पञ्जर किसी शिकजे मे दबाई जा रही हो जैसी प्रतीती।

२ ग्रीवा- छाती मे गले घुटने जेसी शूल।

३ उर मध्य बाई ओर (श्रमजन्य शूल) वेदना रूप मे।

(ग) शूलानुबधी लक्षण—

१ श्वास प्रश्वास उथला चलना एव हल्का पड जाना।

२ चेहरा पीला-फीका, चिन्ताग्रस्त रखना, चेहरे पर पसीना अना।

३ आमाशय शूल होना (ग्रीवा तक जाना)
अरुचि-, हल्लास एव वमन होना।
वायु एव अजीर्ण होना।

४ रक्तचाप वृद्धि मिलना, धमनीरोध हृदय विकृतिया

(घ) अन्य

१ इ० सी० जी० प्राकृत।

२ यह १० प्रतिशत मे घातक मे शेष मे यापनीय हे। ८-१० वर्ष रोगी जी सकता हे।

३ आमाशय, पित्ताशय शूल कार्डियोस्पाज्म स तुलना भेद

हृच्छूल (Angina Pectoris) प्रकार

श्रम हृच्छूल Angina of Effort	वातिक हृच्छूल Spasmodic Angina	दीर्घ हृच्छूल Status Angina (Cornary thrombus)	अन्यत्र हृच्छूल Angina Innoecens (Pseudo Angina)
(क) शूल मद खिचाव या सकोच जेसा शूल	तीव्रातितीव्रशूल (मृत्यु प्रतीतिवत्)	तीव्रशूलाक्रमण बेचेनीयुक्त	तीव्रशूल, मृत्यु आई जसा लगना
उर से वाम भुजा की ओर गतिशील	उर से बाहु तक गति युक्त शूल	उर से उदर की ओर गतिशूल	हृदय से वाहु की ओर गतिशीलता
विश्रामावस्था मे नहीं	अचानक दर्द शुरू	अचानक दर्द शुरू	अचानक दर्द शुरू
श्रमजन्य तथा श्रम सापेक्ष शूल भोजनोत्तर श्रमजन्य	श्रम सम्बन्ध नहीं, ठडी एव भावावेश से सम्बन्धित होना	------------------	श्रम के बाद शुरू होना (श्रम के समय नहीं)
कुछ सेकेड या मिनट ही	वही कुछ मिनट	कुछ घण्टो से कुछ दिनो तक	-------------------------
कोरोनरी वासो डायलेटर से लाभ	वासो डायलेटर से लाभ	---------------	----------------------------
(ख) विकृति / लक्षण हृदय धमनी रक्ताल्पता प्राणवायु की न्यूनता धमनी से उत्पन्न	हृदय धमनी मे वासो स्पाज्म से उत्पन्न	हृदयधमनी रोध थ्रोम्यस रक्त का थक्का अटकने से उत्पन्न	हृदयावरण हृदय विकार आर्गेनिक मेद होने से
इ०सी०जी० प्राकृत	अनियमित प्रीमेच्योर वीट	हृदय विकार	हृदय विकार

चिन्तायुक्त	चितित पीत चेहरा, स्वेदयुक्त, स्थिर, भीत शात होना	बेचैनी, स्वेद, ज्वरयुक्त	चेहरा पीला हृद्द्रय
(ग) उपचार			
विश्राम	विश्राम	विश्राम	विश्राम
कोरोनरी वासो डायलेटर्स द्वारा वातानुलोमक	कारोनरी वासोडायलेटर एव वातानुलोमक	रक्तग्रथि नाशक शूल शामक	सक्रमण हर शूलशामक —
(ग्लाइसलट्राइनाईट्रेट)	ग्लाइसलट्राईनाइट्रेट मद्य, निद्राजनन, उष्णोपचार, प्राणवायु	(मोरफीया), मूत्रल, दूसरे सप्ताह मे मानसिक उपचार, प्राणवायु	शूलघ्न निद्राजनन मानसिक उपचार
हिंगुकर्पूर वटी हिंग्वादि चूर्ण	जम्बीर हिंग्वादि चूर्ण दशमूलारिष्ट	निद्रोदय रस (सर्पगधा घनवटी)	शूलवज्रिणीवटी (सर्पगन्धाघन वटी)

अस्थायी हृच्छूल चिकित्सा—

(क) वेगकालीन

१ वेग आने पर चलते हो तो खडे रहे, बैठे हो तो लेट जाये अगर लेटे हो तो निश्चेष्ट ही सोते रहे।

२ दर्द शान्त होने पर भी कुछ समय आराम से रहे।

३ वेग यदि तीव्र हो या वार-वार आते हो तो ३-४ सप्ताह सम्पूर्ण शैय्या विश्राम करे। वाद मे हल्के व्यायाम का अभ्यास करे।

४ शूल शमनार्थ हृदय धमनी प्रसादक एव वातानुलोमक औषधि देवे।

५ आषधि के अभाव मे एल्कोहल, ब्राडी, व्हिस्की या आसव अरिष्टादि का उपयोग किया जा सकता है।

६ दीपन पाचन वातानुलोमक एव शूलशामक कल्पो का उपयोग करे। यथा— हिंगु कर्पूर वटी, हिंग्वादि चूर्ण, निद्रोदय रस।

(ख) वेगान्तरित चिकित्सा—

१ हृद्रोग या हृच्छूलकारक निदान त्याग करे। यथा— गुरु-स्निग्धाहार, अतिश्रम, तम्बाकू आदि व्यसन, क्रोधादि।

२ पथ्य सेवन करे यथा— लघु सुपाच्य आहार, सम्यक् निद्रा, सम्यक् विश्राम, शात सयमित जीवन, मृदु व्यायाम

३ मानसिक विक्षोभ दूर करने के लिए उपयोगी ओषधि दे। हर्षण ओषधि यथा दशमूलारिष्ट

४ हृच्छूल शामक ओपधि सेवन करे। यदि आवश्यकता हो तो कोलेस्ट्रोल कम करे।

५ छाती को गरम वस्त्र से ढके, मृदु स्वेदन, अभ्यग करे। यथा— पचगुण तैल अभ्यग।

६ रक्त स्कदनावरोधी ओषधि सेवन कराये यथा शुण्ठी।

हृच्छूल युक्त कुछ रोगी

अ०क्र० ६२६०	१६२५८	१७३१४
पुरुष	पुरुष	पुरुष
५५	४२	६५
हृच्छूल	+	+
श्रम	+	+
अरति	+	+
श्वासकृच्छ्रता	+	+

ई०सी०जी०प्राकृत	हॉ	हॉ
क्ष० किरण उर		
प्राकृत	---	---
टी०सी० ८७००	---	---
डी०सी०		
५४,३७,८,१	---	---
एचबी०१०	---	---

इन रुग्णो को निम्नलिखित ओषधि दी गई थी।

औषधि—

१ दशमूल क्वाथ/गुडुच्यादि २ तोला २ वार

२ आरोग्यवर्धिनी, पुनर्नवामाण्डूर, चन्द्रप्रभा वटी, हृदयार्णव १ रस-१ गोली २ वार जल से

३ सितोपलादि चूर्ण, यष्टि, चतुषष्टि, श्रृग, अर्जुन, अभ्रक, प्रवाल, मिश्रण १ मा० २ बार मधु या जल से।

४ हिंगुकर्पूर/शखवटी २-२ गोली जल से भोजनोत्तर या शूल होने पर।

५ शिवाक्षार पाचन २ ग्राम रात्रि मे

परिणाम—

सभी रुग्णो में सम्यक् यापन हुआ।

हृच्छूल (इस्चीमिया ओल्ड)

आ० क्र०	१४१५	१०१५०	१४४६५	१७३५५	१३५८७
लिग	स्त्री	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष
वय	५१	३६	५२	७०	३७
लक्षण	हृच्छूल	+	+ हृद्द्रव	+	+
	ग्रहणी	--	--	--	--
	उदररुजा	+	--	+	--
		मूत्रकृच्छ्र	+	+	--
			शोथ	+	--
			कासश्वास	+	--
क्ष- किरण	वृहत् अन्त्र म्युकसकोलाइटिस				
ईसीजी	मायोकार्डियलक + ईस्चीमिया		सायनस टेकीकार्डिया RV+ मायोकार्डियल इस्चीमिया कार्डि-मेगो०	हृदय ++	
बी० पी०	१४०/६०	--	१५०/६०		१६४/६०

कोलेस्ट्रोल	२६६	१७०	२०६	--	३१८
रक्तशर्करा	--	--	११२(पी०पी०)	--	--
टी०सी०	७४००	८०००	८७००	६७००	--
डी० सी०					
	६६	६७	६१	६४	--
	२५	२५	३२	३६	३६
	४	४	५	०	
	५	४	१	०	
	०	०	०	०	
एचवी	१०.५	१२ ०	१३ ६	६ ५	--
मूत्र	--	एल्बु+	--	--	--
	--	पूय ३०-४०	रक्त ६-८	--	--
	--	केल०ओ०	+		
पुरीष	म्युकस	--	--	--	--

हृच्छूल चिकित्सा—

हृच्छूल एव इस्चीमिक रुग्णो को निम्नलिखित ओषधियो के आधार पर रखा गया।

१ दशमूल क्वाथ/वरुणादि क्वाथ २ तोला, २ वार

२ आरोग्यवर्धिनी, पुनर्नवामण्डूर, चन्द्रप्रभा वटी, शिलाजीत वटी, हृदयार्णव १-१ गोली २ वार

३ सितोपलादि चूर्ण, यष्टि, चतुषष्टि, श्रृगभस्म, अर्जुन, अभ्रक, प्रवाल मिश्रण १ मा०, २ वार

रक्तदावाधिक्य मे— शखपुष्पी, रसायन, कामदुधा, चन्द्रकला मिश्रण १ मा० जल से २ वार

४ भोजनोत्तर लशुनादि २ गोली जल से कुछ मे अर्जुनारिष्ट भी दिया गया।

५ हरडेचूर्ण २ ग्राम कोष्ठ शुद्धि के लिये रात्रि मे आवश्यकतानुसार।

अन्य कल्प निम्नानुसार थे

१ द्रव मल प्रवृत्ति मे सजीवनी कुटजघन वटी

२ हृच्छूल होने पर हिगुकर्पूर २ गोली अर्जुनारिष्ट दशमूलारिष्ट के साथ

३ हृदय दुर्बलता वढने पर होमगर्भ पोट्टली अकीक भस्म हृद्पत्री चूर्ण ४ रत्ती प्रभाकर वटी १ गोली २-३ वार आवश्यकतानुसार अर्जुनारिष्ट दशमूलारिष्ट से दिया गया।

परिणाम—

१ हृच्छूल के वेग एव तीव्रता मे हास देखा गया।

२ सम्बद्ध लक्षण शमन पाया गया।

३ श्रम दुर्बलता कम हुई

✡

हृदय और रक्तदाब : समीक्षात्मक अध्ययन

वैद्य नरेन्द्र कुमार शर्मा एम० डी० आयुर्वेद
विवेचक— राजकीय आयुर्वेद नर्स/कम्पा प्रशिक्षण केन्द्र, अजमेर (राजस्थान)

हृदय एक महत्त्वपूर्ण अग हे, हृदय को प्राण कहा गया हे, चेतनास्थान कहा गया हे। हृदय गति जीवन रहने तक प्रतिक्षण होती रहती हे। अन्य अवयवो की अपेक्षा हृदय अत्यन्त सवेदनशील होता हे। भोजन मे उत्तेजक तत्वो का ग्रहण हो या भय, शोक, ईर्ष्या, क्रोध आदि मानसिक विकार, इन सभी का प्रभाव हृदय की सामान्य गति पर पडता ह। जव प्राणी का आहार-विहार तथा आचार-विचार सामान्य रहता हे तो उसका मन एव शारीरिक क्रियाये शान्त रहती हे। तथा उसका हृदय भी शान्ति के साथ नियमित गति से धडकता हे। इस कारण नाडी स्वाभाविक गति से चलती रहती हे ओर रक्त का दबाव भी सामान्य वना रहता हे। फलस्वरूप शरीर मे सम्पूर्ण अवयवो को रक्त की आपूर्ति भी सामान्य ढग से होती रहती ह। इसके विपरीत प्रक्रिया मे प्राणी का मन अशान्त हो जाता ह ओर समस्त शारीरिक गतिविधिया तथा सार्वदैहिक सामान्य रक्त सचरण प्रणाली मे विकृति उत्पन्न हो जाती हे। इस सम्पूर्ण गतिविधि के सचालन मे एक महत्त्वपूर्ण सूत्र काम करता ह, जिसे हम 'सवेग' कहते हे। सवेग मानव जीवन का महत्त्वपूर्ण अभिन्न अग ह। हम सभी अपने जीवन मे सवेगो को अनुभव करते हे। कोई कम करता हे तो कोई अधिक करता हे। किसी मे सवेग स्थिर होते हे तो किसी मे अस्थिर। इनमे अस्थिर सवेगो वाला व्यक्ति जरा सी बात से ही उत्तेजित हो जाता हे ओर हृदय की धडकन वढ जाती हे। फलत नाडी की गति भी वढ जाती है। पुन जव परिस्थितिया सामान्य हो जाती हे तो सवेगात्मक आवेग घटने लगते हे तथा शरीर की अन्य क्रियाओ के साथ-साथ नाडी गति भी सामान्य हो जाती हे। नाडी की यह परिवर्तित गति 'रक्तदाव' या 'रक्तचाप' कहलाती हे।

वर्तमान मे दिन प्रतिदिन वढ रही पाश्चात्य सभ्यता भोतिकवादी दृष्टिकोण, घट रही सामाजिक परम्पराए एव मर्यादाए तथा लुप्त हो रही प्राचीन सस्कृति इन सभी का ही मिला जुला परिणाम ह कि हृदय स्पन्दन से उत्पन्न इस रक्तदाव ने विकृत स्वरूप धारण कर लिया ह आर एक घातक व्याधि के रूप मे समाज मे व्यापक स्तर पर देखने को मिल रही ह। वस्तुत यह हृदय की मुख्य व्याधि नहीं हे। विभिन्न व्याधियो का लक्षण हे। जिसका हृदयगति पर सीधा प्रभाव पडता हे। हृदय की सामान्य कार्यप्रणाली पर दृष्टिपात करे तो रक्त को लेना, रक्त को देना आर रक्त का फेकना ये तीन क्रियाये मुख्य रूप से होती ह। इस क्रिया मे हृदय निरन्तर धडकता रहता हे। जिसे 'स्पदन' कहते हे। 'स्पदन' गति का द्योतक हे ओर गति मे चल गुण का महत्व हे। ओर 'चल' गुण वायु का हे। वायु मे भी मुख्य रूप से प्राण व व्यान वायु इसमे विशेष भाग लेती ह। इसके साथ ही साधक पित्त व अवलम्बक कफ य सभी जव समावस्था मे रहते ह तव हृद् स्पन्दन सम्यक् प्रभाग मे वना रहता ह। किन्तु जव धातुओ मे क्षयावस्था या क्षीणावस्था आ जाती हे तव धातु क्षयात् वायु प्रकुपित के आयुर्वेद सिद्धान्तानुसार वायु की वृद्धि हो जाती ह। वात वृद्धि मे भी चल गुण अधिक वढ जाता हे। जिसकी वपम्यावस्था मे हृदय स्पन्दनाधिक्य हो रक्तदाव वढ जाता ह। इसका स्थाई एव चिरकालिक स्वरूप उच्च रक्तदाव **(Hypertension or High Blood Presure)** नामक व्याधि के नाम से जाना जाता हे। इस व्याधि मे रक्त वाहिनियो के अन्दर के रक्त की वाहिनियो की दीवारो पर डाला गया अधिक दवाव ही उच्च रक्तचाप कहलाता हे। जवकि इसके विपरीत कम रक्तदाव कहलाता हे।

आधुनिक क्रिया शारीर के अनुसार रक्त वाहिकाओ मे परिसंचरित होते समय वाहिकाओ की भित्ति पर रक्त जितना पार्श्विक दाब डालना हे उसे रक्तदाव कहते है।

हृदय से रक्त धमनियो मे एक समान गति से नही जाता। हृत्कार्य चक्र पर दृष्टिपात करे तो निलय प्रकुचन (Ventricle Systole) के समय ही रक्त फुफ्फुस धमनी तथा महाधमनी (Aorta) मे प्रवेश करता हे ओर निलय-अनुशिथिलन (Ventricle Diastole) के समय इन धमनियो मे रक्त का प्रवेश नही होता हे अत धमनियो की भित्ति पर रक्त का पार्श्विक दबाब एक समान नहीं पडता है। निलय प्रकुचन के समय रक्त अधिक तेजी से और अधिक मात्रा मे धमनियो में प्रवेश करता हे अत निलय प्रकुचन के समय के रक्तदाव को (१) प्रकुचन दाब (Systolic pressure) कहते है। निलय अनुशिथिलन के समय रक्त का प्रवाह धमनियो मे मन्द हो जाता है इस समय के रक्तदाव को (२) अनुशिथिलन दाव (Diastolic pressure) कहते है। प्रकुचन दाब तथा अनुशिथिलन दाव के अन्तर को (३) नाडी दाब (Pulse pressure) कहते ह। वयस्को की स्वस्थावस्था मे इन दाबो मे ३ २ १ का सामान्यत अनुपात रहता है।

प्रकुचन दाव की सीमा प्राय १५० मि० मी० अथवा अधिक तथा अनुशिथिलन दाव १०० मि०मी० या अधिक लगातार बना रहता है तो उसे अतिरिक्त दाव (High Blood Pressure या Hypertention) कहते है। इसी प्रकार प्रकुचन दाव १०० मि० मी० अथवा कम तथा अनुशिथिलन दाव ५० मि० मी० अथवा कम निरन्तर रहता हे तो उसे अल्प रक्तदाव (Low Blood Pressure) या (Hypotention) कहते हे। रक्तदाब को अप्रत्यक्ष रूप मे रक्तदाव मापी उपकरण (Sphygmomanometer) के द्वारा नापा जाता है। रक्तदाब मे प्राकृतिक परिवर्तन होते रहते है, यथा— उत्तेजना के समय, खाना खाने के वाद, व्यायाम के समय व खडी अवस्था मे प्रकुचन दाब सामान्य से अधिक हो जाता है जबकि सोते समय तथा विश्रामकाल मे यह दाव कम हो जाता हे। अनुशिथिलन दाव पर सामान्य परिस्थितियो का प्रभाव बहुत कम पडता हे अत रोग निदान मे अनुशिथिलन दाब के परिवर्तनो पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

उच्चरक्तचाप मे प्रमुखत धमनियो की विकृति होती है। धमनी की मासपेशियो तथा रक्तधरा कला मे सौत्रिकततु बढ जाते ह, जिससे धमनियो की स्थिति स्थापकता मे विकृति होने से धमनिया कठोर हो जाती है परिणाम स्वरूप रक्त प्रवाह (सचरण) प्रभावित होता है और रक्तभार अधिक होने लगता है, जिससे हृदय तो उपचित होता ही है अपितु हृदय के साथ-साथ वृक्क एव मस्तिष्क मे रचनात्मक परिवर्तन होने लगता है यहा ऐसा प्रतीत होता है कि आचार्य चरक ने वस्ति, हृदय और शिर इन तीनो मे प्रधान रूप से प्राण का आश्रय मानते हुए इन तीनो का एक साथ उल्लेख प्रधान मर्म (सद्य प्राणहर मर्म) के रूप मे इस प्रकार किया है—

'मर्माणि वस्ति हृदय शिरश्च प्रधान भूतानि वदन्ति तज्ज्ञाप्राणाश्रयान् . (च०चि० २६/३-४)

यही कारण है कि रक्तदाब वृद्धि को घातक स्वरूप की व्याधि (लक्षण) माना जाता है।

उक्त वर्णन के आधार पर रक्तदाब विकृति के आयुर्वेदीय स्वरूप का निर्धारण निम्न प्रकार से किया जा सकता है—

(१) अधिष्ठान— धमनी, शिराये व हृदय। (२) सचार— रस एव रक्त वाहिनियाँ। (३) दोष स्थिति—१ व्यानवायु क्षय निम्न रक्तदाव। २ व्यानवायु वैषम्य (वृद्धि) उच्चरक्तदाव। (४) अवस्था— साम। (५) स्वरूप— चिरकालीन।

सामान्य चिकित्सा क्रम—

(१) उच्च रक्तचाप की आत्ययिक स्थिति मे रक्तावसेचन (रक्त का निकालना) का क्रम करना चाहिये। सामान्यत १० से ४० मि० ली० रक्त का अवसेचन किया जाता हे।

(२) रोगी को सर्वप्रथम विश्रामावस्था दे। शैय्या पर लिटाकर आराम एव आश्वासन द्वारा तनाव कम करे। इसके साथ-साथ पादतल सवहन, दुग्ध- तक्र या नारायण तैल की शिरोधारा देना भी लाभकारी हो सकता है।

(३) वायु के अनुलोमनार्थ मृदु विरेचन देवे। इसके लिए हरीतकी चूर्ण, त्रिफला चूर्ण आदि का प्रयोग किया जा सकता है।

(४) लाक्षणिक चिकित्सा हेतु स्वविवेक से उपलब्ध औषधि का तदनुरूप प्रयोग करावे।

(५) आत्ययिक अवस्था होने पर आत्ययिक चिकित्सा उपलब्ध कराये।

हृदयरोगोपयोगी वनौषधियाँ

गोपीनाथ पारीक "गोपेश" भिषगाचार्य

मृत्यु के जो प्रमुख तीन कारण कहे गये ह उनमे एक यह भी ह कि हृदय का कार्य बद कर देना। तभी तो आयुर्वेद के आचार्यो ने प्रमुख तीन मर्मो के अन्तर्गत हृदय की गणना की है।

प्राचीनकाल मे विद्याभ्यास, इन्द्रिय जय, तत्वाववोध, ब्रह्मचर्य, अहिसा आदि का सदा पालन करते रहने के कारण हृदय सदा मजबूत रहता था उस समय हृदयगत व्याधियाँ बहुत कम होती थी, अत. इन पर इतना विस्तृत वर्णन नहीं किया गया ह, जितना आज के चिकित्सा साहित्य म इस व्याधि का वर्णन मिलता है। आयुर्वेद का जो सक्षिप्त सहित्य इस विषय का मिलता हे वह सूत्ररूप म होने पर भी पर्याप्त है क्योकि इन निर्दिष्ट नियमो का पालन करने वाला हृदय रोगी शीघ्र ही स्वस्थ हो जाता है—

१ हृद्य पदार्थो का सेवन करे।
२ ओजस् द्रव्यो का सेवन करे।
३ स्रोतो का प्रसादन करने वाले द्रव्यो का सेवन करे।
४ रोगो का प्रशमन करने वाले द्रव्यो का सेवन करे।
५ प्रशामक तत्वज्ञान का भी उपयोग करे।

आयुर्वेद चिकित्सा क्रम मे हृदयरोगो से बचने के लि[illegible] जितनी ओषधियो की आवश्यकता है उतनी ही शान्तिदा[illegible] तत्व ज्ञान की भी आवश्यकता है। दैवयपाश्रित, यु[illegible] व्यपाश्रित एव सत्वावजय तीना ही चिकित्साओ का सम[illegible] यहॉ परम उपकारक माना गया है।

रोगो का प्रशमन करने वाल द्रव्यो मे वनौषधिया प्रमु[illegible] हैं क्योकि वनोपधिया मे जीवन शक्ति होने से इनमे रो[illegible] को दूर करने की पूर्ण क्षमता ह। किसी भी स्रोतस [illegible] रचनात्मक या क्रियात्मक विकृति होने से पूर्व पाञ्चभौति[illegible] वषम्य होता हे, क्योकि दोषो की रचना मे पचभूत ही भा[illegible] लेते हे। पाञ्चभौतिक शरीर को स्वस्थ करने के लि[illegible] पाञ्चभौतिक वेषम्य समाप्त करना आवश्यक ह। पाञ्चभौति[illegible] वनोपधिया सजातीय होने से रोगो को नष्ट करने [illegible] अधिक लाभदायक सिद्ध हो सकती ह। अत यहा पर हृद[illegible] रोगो के लिए उपयुक्त वनोपधियो का वर्णन किया जा र[illegible] हे।

क्र०	नाम द्रव्य	प्रयोगाग एव मात्रा	वीर्य	दोषकर्म	प्रयोगात्मक विवरण
१	अर्जुन (टर्मिनेलिया अर्जुन)	त्वक् ३-६ ग्राम	शीत	कफपित्त शामक	यह हृदय रोगो की प्रसिद्ध ओपधि ह। हृद्द्रव, न्यून रक्तभार, हृदय दौर्बल्य, हृदय विकारजन्य शोथ आदि हृदय विकारो मे इसका उपयोग किया जाता हे। इसकी त्वक् (छाल) से सिद्ध क्षीरपाक विशेप लाभदायक हे। क्षीरपाक के प्रयोग से अर्जुन का रूक्ष गुण एव् दूध का कफकारित्व कम हो जाता ह।

२	कर्पूर (सिनेमोमम् कैम्फरा)	सत्त्व १२५ मि.ग्रा. -३७५ मि ग्राम	शीत	त्रिदोष शामक	हृद्य, हृदय सरक्षक, उत्तेजक, रक्तदाबवर्धक एव रक्तवाहिनी सकोचक होने से हृदय की शिथिलता मे तथा अन्य रोगो मे हृदय की रक्षा हेतु इसका उपयोग किया जाता हे।
३.	ताम्बूल (पाइपरबेट्ल)	पत्र स्वरस ५-१० मि लि	उष्ण	कफवात शामक	हृदय दौर्बल्य एव हृदयावसाद मे उपयोग मे लाया जाता है। हृदय की कार्यक्षमता को सही करता है एव गति को नियमित करता है। रक्तदाब को कम करता है। यह पित्त प्रकोपक होने से पित्त प्रकृति के व्यक्तियो के लिए उपयोगी नहीं होता है। कहा गया हे ''ताम्बूल पत्र तीक्ष्णोष्ण कटु पित्तप्रकोपणम्''
४	गुलाब (रोजा सेण्टी-फोलिया)	पुष्प क्वाथ २५-५० मि०लि० चूर्ण ३-६ ग्राम अर्क २०-४० मि०लि०	शीत	वातपित्त शामक	यह उत्तम हृद्य होने से हृदय रोगो मे व्यवहृत होता है। शास्त्रो का कथन है ''शतपत्री हिमा हृद्या''। दीपन पाचन एव अनुलोमन होने से कोष्ठ वात वृद्धि (जिसके कारण हृदय रोगी अधिक व्यथित होता है) का शमन करता हे।
	रुद्राक्ष	गुठली चूर्ण ३-५ ग्राम	शीत	वातपित्त शामक	रक्तभारवृद्धि की यह प्रशस्त औशधि है। आचार्य प्रियव्रत ने लिखा है ''अपस्मारे तथोन्मादे रक्त भारेऽधिके हितम्'' सामान्यत इसका हिम बनाकर सेवन कराया जाता हे।
	विल्व (ईगल मार्मेलस)	त्वक् चूर्ण ३-६ ग्राम क्वाथ १०-२० मि०लि०	उष्ण	कफवात शामक	हृद्य होने से हृदयदौर्बल्य एव हृत्कप आदि में प्रयुक्त किया जाता है। यह हृदय विकार जनित शोथ को भी मिटाता है। हृदय रोगी के लिए इसके मूल की छाल ही उपयोगी होने से दश-मूल के घटक के रूप मे इसकी उपादेयता प्रसिद्ध है।
७	अग्निमन्थ (प्रेम्ना मुक्रोनेटा)	मूलत्वक् चूर्ण १-३ ग्राम	उष्ण	कफवात शामक	हृदयदौर्वल्य एव शोथ मे हृदयोत्तेजक व शोथहर होने से उपयोग मे लाया जाता ह।

	क्वाथ- ५०-१०० मि०लि०			
श्योनाक (ओरोक्सिलम इण्डिकम्)	मूलत्वक् स्वरस- १०-२० मि०लि० चूर्ण- ३-६ ग्राम क्वाथ- ५०-१०० मि०लि०	उष्ण श्योनाक और अरलू को प्राय एक माना गया है यह उपयुक्त नहीं क्योकि श्योनाक का वीर्य उष्ण है जवकि अरलू का शीत	कफवात शामक	कफज या वातज हृदयरोगो मे उपयोगी हे। कृमिजन्य हृदयरोग मे तथा शोथ मे भी लाभप्रद होने से प्रयुक्त होता हे। पाचन की विकृति मे भी यह सुधार कर हृदयरोगो को नष्ट करने मे सहायक वनता हे।
९ पाटला (स्टिरिओ-स्पर्मम् स्वै-विओलेन्स)	मूलत्वक् पुष्प क्वाथ- ५०-१०० मि०लि०	उष्ण पुष्प का वीर्यशीत	कफवात शामक	दशमूल के घटक के रूप मे यह हृदय रोगो मे उपयोगी सिद्ध हुई है। वस्तुत इसकी छाल शोथहर है। हृदयरोगो मे इसके पुष्प अधिक उपयोगी सिद्ध हुए हे। कहा गया हे— "हृद्य ह्यमोघासुमनानि सन्ति"।
१० गम्भारी (मेलिना आर्वोरिया)	मूलत्वक् एवं फल त्वक् क्वाथ ५०-१०० मि०लि०	उष्ण फल शीतवीर्य	त्रिदोष शामक	मूल हृदयरोगी के शोथ मे एव फल वातपित्त जन्य हृदय रोग मे दिया जाता हे। रक्तरोधक द्रव्यो मे इसके फल को श्रेष्ठ कहा गया हे।
११ कण्टकारी (सोलेनम सुराटेन्स)	पचाग क्वाथ ४०-८० मि०लि०	उष्ण	कफवात शामक	शोथ मे तथा रक्तभार वृद्धि मे इसका उपयोग लाभप्रद है। कृमिज हृदयरोग मे भी लाभप्रद हे।
१२ वृहती वडी कटेरी (सोलेनम इण्डिकम)	मूल क्वाथ ४०-८० मि०लि०	उष्ण	कफवात शामक	हृदयोत्तेजक होने से हृदय दौर्वल्य मे एव शोथ हर होने से तज्जनित शोथ मे उपयोगी हे।

शालपर्णी (डेस्मोडियम गगेटिकम्)	पचांग क्वाथ ५०-१०० मि०लि०	उष्ण	त्रिदोष शामक	हृद्य एव शोथहर होने से हृदय रोगो मे उपयोगी हे। हृदयशूल मे इसका क्षीरपाक लाभप्रद कहा गया हे। यह कृमिहर एव अगमर्द प्रशमन भी कही गई हे। आचार्य चरक ने सर्वदोपहर द्रव्यो मे इसे श्रेष्ठ कहा हे।
पृश्निपर्णी (युरेरियापिक्टा) पतली एव लम्बी पत्तिया होने से इसे पृश्निपर्णी कहते है।	दशमूल मे इसका मूल ही ग्रहण किया जाता हे	उष्ण	त्रिदोष शामक	कोष्ठवात, हृदयरोग, शोथरोग, अगमर्द, दाह आदि मे उपयोगी कही गई हे। शालपर्णी ओर पृश्निपर्णी लोक मे सरिविन पिठवन के नाम से जानी जाती है।
१५ गोक्षुर (ट्रिबुलस ट्रेरेस्ट्रिस)	पचांग मूलरस, मूल क्वाथ ५०-१०० मि० लि०	शीत	वात पित्त शामक	सभी दशमूल के द्रव्य हृद्य एव शोथहर हे, अत यह भी हृदयरोग हर शोथहर कहा गया हे। यह रक्तपित्त शामक भी हे। दशमूल के द्रव्यो मे यह विशेष तथा पैत्तिक हृदय रोगो मे लाभप्रद पाया गया है। यह मूत्रल होने से अधिक उपयोगी कहा गया हे। भावप्रकाश मे ''कृच्छ्रहृद्रोगवातनुत् तथा चरक सहिता मे ''मूत्रकृच्छ्रानिलहराणाम्'' कहा गया है।
१६ कमल (नेलम्बो न्यूसीफेरा)	पचाग मूल स्वरस १०-२० मि०लि० बीज चूर्ण ३-६ ग्राम	शीत	कफ पित्त शामक	हृदयरोगी के तथा तीव्र व्याधिग्रस्त रोगी के हृदय को आघात से बचाने के लिए यह अधिक उपयोगी है। श्वेत कमल को पुण्डरीक तथा रक्त कमल को कोकनद कहा गया है। नीलकमल कमल का भेद न होकर कुमुद का भेद है। कमल के बीजो को ही लोक मे कमलगट्टा कहा गया है।
१७ शतावरी (ऐस्पेरेगस रेसिमोसस)	कन्द स्वरस १०-२० क्वाथ ५०-१०० मि०लि० चूर्ण ३-६ ग्राम	शीत	वातपित्त शामक	यह रक्तदाब को कम करने मे श्रेष्ठ हे। हृदय, वेदनास्थापन, मूत्रल एव रसायन होने से हृदय रोगो मे विशेषत उपयोगी है। रसायन द्रव्य प्राय रक्तभार वृद्धि मे लाभप्रद कहे गये हे।

१८ काकमाची (मकोय) (सोनेलम (नाइग्रम)	पचाग स्वरस १०-२० मि०लि० अर्क २०-५० मि०लि०	अनुष्ण	त्रिदोष हर	यह भी रक्तभार को कम करता हे। आमवातज हृदय विकृति मे यह लाभप्रद हे। मूत्रल, कफघ्न, शोथहर, हृद्य एव विषघ्न होने से इसकी उपादेयता प्रसिद्ध हे। इसके फलो की अधिक मात्रा घातक होती हे।
१६ पुनर्नवा (वोर्हेविया डिफ्युजा)	------------	उष्ण	त्रिदोष शामक	यह पाण्डु शोथ की प्रसिद्ध ओषधि हे। हृद्य होने से हृदयरोगो मे उपयुक्त हे। इससे हृदय की क्रिया तीव्र होती हे ओर रक्तदाब वढता हे। रक्तदाब वढने से मूत्र निर्माण अधिक होता हे। तव ही तो यह मूत्रजनन हे।
२० कूष्माण्ड (बेनिनकासा टिस्पिडा)	फल १०-२० ग्राम	शीत	वातपित्त शामक	हृद्य होने से यह हृदयदोर्वल्य मे हितावह हे। सधानीय एव रक्तस्तम्भन होने से उर क्षत रक्तपित्त मे भी यह उपयोगी हे।
२१ उस्तूखुदूस (लेवेण्डुला स्टीकस)	पत्रपुष्प ३-६ ग्राम	उष्ण	कफवात शामक	रक्तसवहन को उत्तेजित करने वाला होने से हृदय मे उत्तेजना एव शक्ति उत्पन्न करता है। अत कफ वातजन्य हृदयरोगो मे यह लाभप्रद है। हृदय विकृतिजन्य शोथ को भी दूर करता हे। इसके लेप से भी शोथ मिटता हे।
२२ जटामासी (नार्डोस्टेकिस जटामासी)	मूल २ से ४ ग्राम	शीत	त्रिदोष शामक	रक्तभाराधिक्य की श्रेष्ठ ओषधि होने के साथ हृद्द्रव (हृदय की धडकन मे वृद्धि) की भी उत्तम ओषधि है। इसको दस ग्राम की मात्रा मे लेकर ५० ग्राम मि०लि० गरम जल मे भिगोकर ४-५ घटो तक भिगोने के पश्चात् सेवन करने से हृदय की अनियमितता दूर होकर धडकन मे कमी आती हे। यह निद्राजनक एव शामक हे।
२३ सर्पगन्धा (रावोल्फिया, सर्पेण्टिना)	मूल १-२ ग्राम	उष्ण	कफवात शामक	विश्व मे रक्तदाबाधिक्य की यह सर्वश्रेष्ठ औषधि हे। भ्रम, अनिद्रा आदि मानसिक विकारो को भी यह मिटाती है। कहा गया हे— ''सर्पगन्धातितिक्तोष्ण रूक्षा कटुविपाकिनी। कफवात हरा निद्राप्रदा हृदयवसादिनी।''

	गुग्गुल (कॅमिफोरा मुकुल)	निर्यास २-४ ग्राम	उष्ण	कफवात शामक	हृदयावरोध, रक्ताल्पता, कृमि, वेदनाधिक्य मे गुग्गुल वहुत उपयोगी हे। कोई भी गुग्गुल का योग अर्जुन छाल से श्रृत दुग्ध के साथ हृदयोपयोगी हे।
	रसोन (एलियम सेटावि)	कन्द कल्क ३-६ ग्राम	उष्ण	कफवात	उत्तेजक होने से हृदयरोगो को तथा शोथहर होने से हृदयरोगजन्य शोथ को मिटाता ह। ''अरुचिकृमिहृद्रोग शोफघ्नश्च रसायन '' रा०नि०
६	कुचला (स्ट्रिकनस नक्सवो-मिका)	वीज मज्जा ६०-२५० मि० ग्रा०	उष्ण	कफवात शामक	हृदयशैथिल्य, रक्तभार न्यूनता, हृदय कपाट विकृति, हृदयोदर आदि रोगो मे उत्तेजक होने से लाभप्रद है। कफशामक होने से शोथ मे भी इसको प्रयोग मे लाया जाता है।
७	वत्सनाभ	--------------	उष्ण	कफवात शामक	गोदुग्ध मे शुद्ध किया वत्सनाभ हृदय को वल देता है, रक्तभार को बढाता है और रक्तवह स्रोतस शोथ को मिटाता है।
८	लवग (मिजीगियम एरोमेटिकम)	पुष्पकलिका १-२ ग्राम	शीत	कफपित्त शामक	हृदयोत्तेजक होने से हृदय दोर्वल्य मे लाभप्रद है। रक्तभार न्यूनता मे इसको उपयोग मे लाया जाता हे।
९	गोजिह्वा (ओनोस्मा व्रोक्टिएटम)	पत्र, पुष्प ३-६ ग्राम	शीत	वातपित्त शामक	हृदयदौर्बल्य एव हृद्द्रव मे उपयोगी होने से वहुतायत से व्यवहृत होता हे।
०	पुस्करमूल (इन्युला रेसिमोसा)	मूल १-३ ग्राम	उष्ण	कफवात शामक	हृदय के लिए वलप्रद होने से हृदयशूल मे इसे प्रयुक्त किया जाता हे।
१	हिंगु (फेरुला नार्थेक्स)	निर्यास २५-५० मिलीग्राम	उष्ण	कफवात शामक	हृद्य एव वात शामक होने से वातज हृद्रोग, हृद्द्रव, हृदयशूल, आध्मान आदि मे उपयोगी ह

३२	एरण्ड कर्कटी (केरिका लोगम)	पत्र पत्रफाण्ट ४०-८० मि० लि०	उष्ण	कफवात शामक	हृदयरोगो मे (कफवातजन्य) इसके पत्रा का फाण्ट पिलाया जाता हे। हृदय दार्वल्य जन्य उदररोग एव शोथ मे भी यह फाण्ट उपयोगी है
३३	पिप्पली (पाइपर लोगम)	फल, मूल ५०० मिग्रा १ ग्राम	अनुष्ण शीत	कफवात शामक	उत्तेजक होने से हृदय की दुर्वलता को मिटाती हे। यह अकेली या अधिक मात्रा मे सेवन करने पर त्रिदोप को वढाती है अत अन्य द्रव्यो के साथ ही इसका सेवन हितावह हे। अग्निवर्धन एव आनाह को मिटाने के लिए पिप्पली चूर्ण अधिक उपयोगी हे।
३४	सोठ (जिञ्जिबर आफिसिनेल)	कन्द आर्द्रक स्वरस ५-१० मि०लि० सोठ चूर्ण १-२ ग्राम	उष्ण	कफवात शामक	हृदयशूल एव हृदय की दुर्वलता को मिटाने मे श्रेष्ठ है। यह शोथ का भी शमन करती ह। वृन्द ने लिखा है– "नागर वा पिवेदुष्ण कषाय चाग्निवर्धनम्। कासश्वासानिलहर शूलहृद्रोग नाशनम्"।
३५	चव्य (पाइपर रेट्रोफ्रेक्टम)	मूल चूर्ण १-२ ग्राम	उष्ण	कफवात शामक	यह पञ्चकोल का घटक द्रव्य हे। इसके गुणो मे एव पिप्पली मूल के गुणो मे प्राय समानता ह।
३६	चित्रक (प्लम्वेगो जिलेनिका)	मूलत्वक् १-२ ग्राम	उष्ण	कफवात शामक	यह दीपन पाचन एव शोथहर होने से कफ वातज हृदयरोगो मे उपयोगी हे।
३७	आयापान (युपेटोरियम ट्रिप्लिनर्व)	पचाग स्वरस ५-१० मि०लि०	उष्ण	कफपित्त शामक	"कफपित्तहर हृद्य ज्वरघ्न रक्तरोधकम्' के अनुसार हृदय दोर्वल्य, हृदयावसाद एव रक्तपित्त की प्रशस्त ओषधि हे।
३८	खजूर (फिनिक्स सिल्वेस्ट्रिस)	फल मात्रा उपयुक्त	शीत	वातपित्त शामक	हृद्य होने से हृदय की दुर्वलता को दूर करने के लिए उपयोग मे लाया जाता हे।
३९	इलायची (एलिटेरिआ कार्डेमोमम्)	वीज ५०० मि०ग्रा० १ ग्राम	शीत	त्रिदोष शामक	हृदय की दुर्वलता को मिटाने मे लाभदायक हे। पिप्पलीचूर्ण के साथ इसका उपयोग हृदय रोगो मे लाभप्रद हे। सूक्ष्मेलामागधीमूल प्रलीढ सर्पिषा सह। नाश्यत्याशु हृद्रोग गुल्मानपि विशेषत "

४० बडी इलायची (एमोमम् सबुलेटम)	वीज १-३ ग्राम	उष्ण	कफवात शामक	यह भी हृद्य होने से हृदय दोर्बल्य मे हितावह हे। बडी इलायची, पुष्करमूल और सौठ का चूर्ण कफ वातज हृदय रोगो को मिटाने मे श्रेष्ठ है।
४१ दरियाई नारियल लोडायसिया मालडिविका)	मज्जा ५-१० ग्राम	उष्ण	कफवात शामक	हृदय की दुर्बलता मे इसे जहरमोहरा खताई के साथ दिया जाता हे। जवाहरमोहरा का यह घटक है। जो हृदय रोगो की प्रसिद्ध ओषधि हे
४२ आमलकी (एम्बिलका आफिसि-नेलिस)	फल स्वरस १०-२० मि०लि० चूर्ण ३-६ ग्राम	शीत	त्रिदोष हर	हृदव एव शोणितस्थापन होने से हृदयरोगो मे तथा रक्तपित्त मे हितकारी हे। आमलकी चूर्ण को मकोय स्वरस के साथ देने से हृदय रोगो मे लाभ होता हे।
४३ हरीतकी (टर्मिनेलिया चेबुला)	फल ३-६ ग्राम	उष्ण	त्रिदोष हर	हृद्य एव शोथहर हे। स्रोत शोधन मे श्रेष्ट होने से हरीतकी की बहुत महिमा गाई गई है। योग वाही एव रसायनी होने से पथ्य द्रव्यो मे इसे श्रेष्ठ कहा है।
४४ अमृता (टिनोस्पोरा कार्डिफोलिया)	काण्ड क्वाथ ५०-१०० मि०लि० चूर्ण ३-६ ग्राम सत्व १-२ ग्राम	उष्ण	त्रिदोष हर	हृद्य एव रक्तवर्धक है। तब ही तो ''सर्वोपधी-नाममृता प्रधाना'' कह कर इसकी प्रशस्ति की गई है। यह विशेशत वातिक हृदय रोगो मे उपयोगी हे। कोष्टाश्रित प्रकुपित वातजनित हृदयरोग मे इसके साथ मरिच का मिश्रण लाभप्रद है।
४५ अश्वगधा (विथेनिया साम्निफेरा)	मूल ३-६ ग्राम	उष्ण	कफवात शामक	रक्तदाबाधिक्य मे लाभप्रद हे तथा शोथ को भी मिटाती हे। बहेडा चूर्ण के साथ गुड मिलाकर देने से हृदयशूल मिटता हे। न्यून रक्तभार मे इसे पिप्पली चूर्ण के साथ दिया जा सकता हे।

✦

हृद्रोग नाशक सिद्धौषधियाँ

डा० शिवकान्त शर्मा

वी० ए० एम० एस० (जीवाजी वि० वि० ग्वालियर) म० प्र०
एम० डी० (शास्त्र एव भेपज्य कल्पना)
(राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर) राज०
पी० एच डी० (रसशास्त्र- स्कालर) राजस्थान वि० वि०, जयपुर
प्रभारी चिकित्सा अधिकारी, राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय,
देलवाडा, जिला- वासवाडा (राजस्थान)
डा० शिवकान्त शर्मा द्वारा श्री महिपाल जोदावत
पोस्ट आफिस चोराहे के पास, गनोडा रोड
ग्राम व पत्रालय घाटोल, जिला— वासवाडा
(राजस्थान) पिन- ३२७०२३

डा० शिवकान्त शर्मा, पुत्र श्री भरोसीलाल शर्मा मूलत ग्राम/पोस्ट विलोआ, जिला- ग्वालियर (म० प्र०) के निवासी हे। आपने देश की प्रतिष्ठित आयुर्वेद फार्मेसियो यथा— कालेडा कृष्णगोपाल धमार्थ ट्रस्ट अजमेर, सिद्धि आयुर्वेद फार्मेसी ललितपुर (उत्तर प्रदेश), वेद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० झॉसी (उ०प्र०), एव दीनदयाल ओपधालय प्रा० लि० ग्वालियर मे अपनी सेवाये दी हे।

वर्तमान मे आप राजस्थान राज्य मे शासकीय सेवा मे रहकर आयुर्वेद जटिलतम विपयो का समुचित अध्ययन कर शोध कार्य कर रहे हे।

आयुर्वेद विज्ञान अपने आप मे अनूठा व अलाकिक विज्ञान ह। यह हमे, रोगो को किस प्रकार समूल नष्ट किया जा सकता हे, इसकी शिक्षा देने के साथ साथ रोग पेदा ही नही हो इसकी भी शिक्षा देता हे।

आयुर्वेद विज्ञान का एक विशिष्ट विषय है। रसशास्त्र एव भेपज्य कल्पना विज्ञान इस विषय मे रोग निवारण हेतु काप्ठोपधियो, खनिज द्रव्यो, प्राणिज द्रव्यो आदि को विभिन्न कल्पनाओ द्वारा रूपान्तरित कर उन्हे रोगनाशक वनाना ही इस रसशास्त्र व भेषज्य कल्पना विषय का कार्य हे।

चूकि लेखक रसशास्त्र विषय में स्नातकोत्तर उपाधिधारी हे अत लेखक हृदय फुफ्फुस निदान चिकित्सा विशेषाक हेतु हृद्रोग नाशक सिद्धोपधिया (कुछ विशिष्ट सिद्धौषधियो) के घटक द्रव्यो निर्माण विधि व उपयोग आदि के विषय मे उल्लेख करना चाह रहा हे। आशा हे आयुर्वेद के मनीषी विद्वान इस लेख को पढकर आयुर्वेद की उन्नति हेतु अग्रसर होगे।

✦ हृद्रोगनाशक योग—

(१) नागार्जुनाभ्र रस
(२) शकर वटी
(३) चिन्तामणि रस
(४) जवाहर मोहरा
(५) याकूती
(६) आरोग्यवर्धनी

(७) प्रभाकर वटी (८) बलाद्य घृत
(६) दशमूल क्वाथ (१०) अर्जुनारिष्ट
(११) मकरध्वज (१२) हेमगर्भ पोटली
(१३) अकीक पिष्टी (१४) मुक्ता पिष्टी
(१५) मुक्ता भस्म (१६) प्रवाल पिष्टी
(१७) सगेयशब पिष्टी

✦ नागार्जुनभ्र रस (रस चिन्तामणि)—

● मुख्यद्रव्य— सहस्त्र पुटी अभ्रक भस्म, अर्जुन की छाल-भावना हेतु यथा आवश्यक।

● योग निर्माण विधि— सहस्त्र पुटी अभ्रक भस्म को लेकर अर्जुन की छाल यथा आवश्यक लेकर विधिवत उसका क्वाथ बनाकर क्वाथ के साथ सात दिन तक घोटकर १-१ रत्ती (१२१ मिली ग्राम) की गोलिया बना लेवे।

● मात्रा— १ गोली से २ गोली तक प्रतिदिन प्रात सॉय अर्जुन की छाल से सिद्ध किये हुए दूध से अथवा कोष्ण जल से।

● उपयोग— इसके सेवन से हृद्रोग एव हृदय रोग से उत्पन्न हृल्लास, छर्दि, शोथ आदि विकारो का भी शमन होता हे। इसके सेवन से वलवीर्य की वृद्धि होती हे। यह उत्तम रसायन है। विशेष कर हृदय रोगी इसका सेवन रसायन के रूप मे कर सकते हे।

✦ शंकर वटी (भै० र०)—

● मुरव्य द्रव्य— शुद्ध पारद- ४ तोले, शुद्ध गन्धक ८ तोले, लोहा भस्म ३ तोले व शतपुटी नाग भस्म २ ताले ले।

● सहायक द्रव्य— मकोय, चित्रकमूल अदरक, जयन्ती, अरणी, वासा, वेल छाल आर अर्जुन छाल सभी द्रव्य यथा आवश्यक।

● निर्माण विधि— सर्व प्रथम पारद व गधक की कज्जली करे। उसके पश्चात् उसमे शेष भस्म मिलाकर सहायक द्रव्यो यथा— मकोय, चित्रकमूल, अदरक, जयन्ती, अरणी, वासा, वेल की छाल व अर्जुन की छाल इन द्रव्यो के स्वरस या क्वाथ से एक-एक दिन खरल कर एक-एक रत्ती की गोलिया बना ले।

● मात्रा— १ से दो गोली प्रात व साय दिन मे दो बार मधु, दुग्ध अथवा जल से ले।

● उपयोग— फुफ्फुस की व्याधियॉ, जीर्णज्वर, प्रमेह, आमवात, सग्रहणी आदि रोग नाशक है।

हृदय रोग मे यह लोह प्रधान होने से रक्त का प्रसादन व वृद्धि करती है। हृदय की रक्ताभिसरण प्रक्रिया को व्यवस्थित रखती है। इसमे नाग भस्म मिली होने से यह वटी रस, रक्त आदि धातुओ को शने शने पुष्ट करती हे। इस वटी के सेवन से रस, रक्त व मास की पुष्टि होने से यह हृदय विकारो को. दूर करती ह।

✦ चिन्तामणि रस (भै० र०)—

● मुख्य द्रव्य—शुद्ध पारद १ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला, वगभस्म १ तोला, अभ्रक भस्म १ तोला, लोह भस्म १ तोला, शिलाजीत १ तोला, स्वर्ण वर्क ३ माशे, चादी वर्क ६ माशे ले।

● सहायक द्रव्य— चित्रकमूल, भृगराज, अर्जुन छाल यथा आवश्यक।

● निर्माण विधि— प्रथम पारद गन्धक की कज्जली कर पश्चात् उसमे शेष भस्मे व शिलाजीत मिलाकर चित्रकमूल क्वाथ व भृगराज स्वरस की एक-एक भावना देकर एक-एक रत्ती की गोलिया वना ले। इस रस मे विशेष गुणो की वृद्धि हेतु एक तोला मोती पिष्टी भी मिलाई जा सकती हे।

● मात्रा— एक से दो रत्ती तक सुवह शाम को अर्जुन क्षीरबला घृत, गेहूँ के क्वाथ, च्यवनप्राश अवलेह या खरेटी मूल के क्वाथ से सेवन करे।

● उपयोग— यह समस्त हृदय रोग नाशक ह। यह हृदय की निर्वलता से उत्पन्न हृदय स्पन्दन वृद्धि हृदय के पर्दे की विकृति, धमनी- सिरा की विक्रियासह हृदय वेपन (Fibrilliation) हृद् खण्ड प्रसारण (Cardiac dilatation) हृदय की मासपेशी की वृद्धि (Cardiac Hypetrophy) हृदय वृद्धि से उत्पन्न श्वास आदि सभी हृदय विकृतियो मे यह योग लाभ करता ह। इसके अतिरिक्त फुफ्फुस विकार प्रमेह आदि मे भी लाभकारी ह।

✦ जवाहर मोहरा (स्व० प० श्री यादवजी त्रिक्रमजी आचार्य)—

● मुख्य द्रव्य— माणिक्य पिष्टी २ तोला, पन्ना पिष्टी

२ तोला, मोती पिष्टी २ तोला, कहरवा पिष्टी २ तोला, प्रवाल पिष्टी ४ तोला, सगेयशव पिष्टी ४ तोला, श्रृगभस्म ४ तोला, स्वर्ण वर्क ६ माशे व रजत वर्क ६ माशे।

● सहायक द्रव्य— दरियाई नारियल का चूर्ण ४ तोला, आवरेशम कतरा हुआ २ तोला, जदवार का चूर्ण २ तोला, कस्तूरी १ तोला व अम्वर १ तोला व गुलाव जल यथाआवश्यक।

● निर्माण विधि— पहले सभी पिष्टियो एव भस्मो को मिला लेवे। तत्पश्चात् उसमे स्वर्ण वर्क व रजत वर्क मिलाने के बाद मे उसमे दरियाई नारियल का चूर्ण आवरेशम कतरा हुआ व जदवार का कपडछन चूर्ण मिलाकर चोदह दिन गुलाब जल मे घोटे। पन्द्रहवे दिन कस्तूरी व अम्वर गुलाबजल मे ६ घण्टे घोटकर आधा-आधा रत्ती की गोलिया वना लेवे।

● मात्रा— १ गोली से २ गोली तक दिन मे दो या तीन वार शहद तथा खमीरे गावजवा अम्वरी ४ माशे के साथ दे। ऊपर से दूध पिलावे।

● उपयोग— यह हृदय व मस्तिष्क दोनो को पुष्ट करता हे, हृदय की घबराहट, हृदय की कमजोरी से होने वाले अन्य सभी विकारो का शमन इसके सेवन से होता हे।

✦ याकूती (स्व० वैद्य तिलक चन्द्र तारा चन्द्र)—

● मुख्य द्रव्य— माणिक्य पिष्टी २ तोला, पन्ना पिष्टी २ तोला, मुक्ता पिष्टी २ तोला, प्रवाल पिष्टी २ तोला, कहरवा पिष्टी २ तोला, पूर्ण चन्द्रोदय २ तोला, स्वर्ण वर्क २ तोला, अम्वर २ तोला, कस्तूरी २ तोला, आबरेशम कतरा हुआ २ तोला, केसर २ तोला।

● सहायक द्रव्य— वहमन सफेद १ तोला, वहमन लाल १ तोला, लोग १ तोला, सफेद मिर्च १ तोला ले।

● निर्माण विधि— प्रथम चन्द्रोदय के साथ स्वर्ण वर्क को खरल करे। सभी पिष्टियो को मिलावे, बाद मे अन्य द्रव्यो का कपडछन चूर्ण मिलावे। पश्चात् गुलाबजल मे २१ दिन खरल करे। २२ वे दिन अम्वर कस्तूरी मिलाकर गुलावजल मे ६ घण्टे खरल कर आधा - आधा रत्ती की गोलिया वना ले।

● मात्रा— १ से २ गोली पोदीना स्वरस या रोगानुसार अनुपान से दे।

● उपयोग— हृदय की दुर्वलता, सन्निपात ज्वर मे नाडी क्षीण होना, शरीर ठडा होना, घवराहट आदि दूर करता है। हृदय क्रिया अव्यवस्थित (Cardiac neurosis), हृदयवेपन (Heart palpitaion), हृदय स्पदन के ताल मे अनियमितता (Tachycardia) या अस्वाभाविक हृदय स्पदन वृद्धि (Arrhythmia) आदि रोगो मे इसका प्रयोग करना चाहिये।

✦ आरोग्यवर्धिनी वटी (र० र० स०)—

● मुख्य द्रव्य— शुद्ध पारद १ तोला, शुद्ध गधक १ तोला, लोह भस्म २ तोला, अभ्रक भस्म १ तोला, ताम्र भस्म २ तोला, त्रिफला ६ तोला, शुद्ध शिलाजीत ३ तोला, शुद्ध गुग्गुल ४ तोला, कुटकी २२ तोला।

● सहायक द्रव्य— नीम के पत्ते यथावश्यक।

● निर्माण विधि— प्रथम पारद एव गन्धक की कज्जली कर उसमे सभी भस्मे मिलाले। उसके वाद उसको त्रिफला, चित्रकमूल छाल व कुटकी का कपडछन चूर्ण मिलावे। उसके उपरान्त शिलाजीत व गुग्गुल मिलावे।

सभी द्रव्यो को मिलाने के पश्चात् उसमे नीम के पत्तो के रस तीन दिन भावना देकर १-१ रत्ती की गोलिया वना ले।

● मात्रा— १ रत्ती से ४ रत्ती तक प्रात साय दुग्ध, जल या त्रिफला हिम से देवे। विशेष रोगो मे यथा— शोथ रोग मे पुनर्नवादि क्वाथ से, कब्ज युक्त रक्त विकारो मे स्वादिष्ट विरेचन आदि के साथ दे।

● उपयोग— हृदय रोग, त्वचा रोग तथा ज्वरनाशक, मेदोहर, मल शोधक, उदर रोग, हृदय विकार से उत्पन्न शोथ यकृत विकृति, जलोदर, दन्त पुप्पुटक नाशक, पाचन, दीपन, पाण्डु रोग, फुफ्फुस रोग आदि नाशक हे।

✦ प्रभाकर वटी (आ० ग्र० भै० र०)—

● मुख्य द्रव्य— स्वर्णमाक्षिक भस्म २ तोला, लोह भस्म २ तोला, अभ्रक भस्म २ तोला, वशलोचन २ तोला, शुद्ध शिलाजीत २ तोला।

● सहायक द्रव्य— अर्जुन छाल यथा आवश्यक।

● निर्माण विधि— प्रथम सभी भस्मो को मिलावे।

पश्चात् उसमे शिलाजीत व वशलोचन अच्छी प्रकार पिसा हुआ मिलाकर अर्जुन छाल के क्वाथ मे तीन दिन खरल करे। दो-दो रत्ती की गोलिया बना ले।

● मात्रा— १ से २ गोली तक प्रात साय मधु से ले। पश्चात् दुग्ध या अर्जुन छाल क्वाथ देवे।

● उपयोग— हृदयजन्य समस्त व्याधिया यथा— हृदय शूल, हृदय की धडकन बढना (Palpitation) हृदयावरोध, हृदय पेशी वेष्टन (Fibrilation) हृदय के आवरण का दाह आदि विकारो का शमन इसके सेवन से होता है। इसके अतिरिक्त पित्तज कास, दाह, मन्दाग्नि, भ्रम, अग्निमाद्य, रक्त की न्यूनता, रक्त की निर्वलता, वात वाहिनियो की विकृति, मानसिक आघात, वृक्क विकार आदि विकारो से हृदय निर्वल हो जाता है आदि सभी मे यह कार्य करता है।

✦ दशमूल क्वाथ—

● मुख्य द्रव्य— गभारी छाल, वेल छाल, पाढल छाल, अरलू छाल, अरणी छाल, गोखरू पचाग, छोटी कटेली पचाग, बडी कटेली पचाग, पृश्निपर्णी पचाग, शालपर्णी पचाग ये सभी समभाग ले।

● निर्माण विधि— सभी द्रव्यो को अच्छी प्रकार सुखाकर व साफ करके यवकुट कर ले। फिर क्वाथ निर्माण विधि से क्वाथ बनाकर रोगी को दे।

● मात्रा— २ से ४ तोला तक सुबह शाम पीपल चूर्ण या घृत मिलाकर देवे या रोगानुसार अनुपान से दे।

● अनुपान— हृदयावरोध मे इसे जवाखार व सैधव नमक के साथ दे। हृदयकम्प मे कल्याण घृत से इस क्वाथ का उपयोग विभिन्न अनुपानो के साथ वात श्लेष्मज्वर सन्निपात के लक्षण, कण्ठावरोध, तन्द्रा वात प्रकोप शो, कफवृद्धि, श्वास, विभिन्न प्रसूता जन्य विकारो मे लाभप्रद है।

✦ अर्जुनारिष्ट (भै० र०)—

● मुख्य द्रव्य— अर्जुन की छाल ४०० तोला, द्राक्षा २०० तोला, महुये के फूल ३० तोला।

● सहायक द्रव्य— गुड ४०० तोला, धाय के फूल ८० तोला।

● निर्माण विधि— अर्जुन की छाल जौकुट करके उसमे उसके मात्रानुसार द्राक्षा व महुये के फूल डालकर ४०९६ तोले जल मिलाकर क्वाथ करे। चतुर्थांश जल शेष रहने पर उतार ले। उसके बाद उसमे मात्रानुसार गुड मिलाकर लकडी की टकी मे धाय के फूल डालकर, पश्चात् उसमे गुड युक्त काढा मिलाकर सधान होने हेतु रख दे। आठ या दस दिन तक उसको चलावे, पश्चात् एक मास के लिए टकी का ढक्कन बन्द करके छोड दे। एक मास पश्चात् तैयार आसव को छानकर रख ले।

● मात्रा— १० मि० ली० से २० मि० ली० तक प्रात साय। भोजन के पश्चात् बराबर जल मिलाकर देवे।

● उपयोग— यह अरिष्ट समस्त हृदय रोगो मे लाभकारी है। यह अरिष्ट फुफ्फुस के विकारो मे भी लाभकारी है।

✦ हेम गर्भ पोटली रस (आ० ग्र० वै० चि० सा०)—

● मुख्य द्रव्य— शुद्ध पारद १ तोला, ताम्र भस्म १ तोला, शुद्ध गन्धक २ तोला, स्वर्ण भस्म ६ माशे, रजत भस्म ६ माशे, लौह भस्म ६ माशे, रस सिन्दूर ६ माशे।

● सहायक द्रव्य— भेड का दूध यथा आवश्यक, शुद्ध गन्धक यथा आवश्यक।

● निर्माण विधि— शुद्ध पारद, ताम्र भस्म, शुद्ध गन्धक, स्वर्ण भस्म, रजत भस्म, लोह भस्म, रस सिन्दूर सबको मिलाकर इसमे भेड के दूध की तीन भावना देवे फिर सोगठी (शिखर वाली गोली) बाधकर सुखावे, इसके बाद इन गोलियो को अलग-अलग रेशमी कपडे मे बाधकर फिर सबको एक समान गुच्छे मे रख, कपडे मे बाधकर, कपडे को डोरी से बाधकर इसे गन्धक से भरी हुई हाडी मे लटकावे। हाडी के नीचे से थोडी सी अग्नि देवे जिससे गधक पिघल जावे व पोटली उसमे डूबी रहे, लगभग ३० मिनट मे गन्धक पिघलने पर औषधि पचन होने लगती है। फिर आधा या एक घण्टे मे पाक हो जाता है। पोटली निकालकर शीतल होने देवे, पश्चात् गोलियो को गर्म पानी से धोकर और ऊपर लगी हुई गन्धक चाकू से छीलकर साफ कर लेवे।

● मात्रा— आधा से १ रत्ती तक जल या अदरक के रस मे घिसकर देवे। दिन मे २ से ४ वार २-२ घण्टे से दे।

● उपयोग— हृदय रोगो मे लाभकारी है इसके अतिरिक्त यह त्रिदोष मूर्च्छा, शीताग, श्वास-कास, श्वसनक ज्वर, श्वास वेग क्षीण, नाडी वेग क्षीण, कफ विकार आदि मे लाभकारी हे।

✦ अकीक पिष्टी—

● मुख्य द्रव्य— अकीक यथा आवश्यक (जितनी पिष्टी वनाना हो)

● सहायक द्रव्य— गुलाव जल यथा आवश्यक।

● निर्माण विधि— अकीक का अति सूक्ष्म चूर्ण वनाकर छानकर खरल मे डाले। पश्चात् गुलावजल मे तर करके घुटाई करे। प्रत्येक दिन गुलावजल डालते रहे। इस प्रकार दस दिन तक घुटाई करे, वाद मे छाया मे सुखाकर पुन घोटकर छान ले।

● मात्रा— १ से ३ रत्ती तक प्रात साय मक्खन, मलाई या खमीरे गावजवा के साथ।

● उपयोग— हृदय रोगो मे हृदय के लिए वल्य। इसके अतिरिक्त शीत सोम्य व वलप्रद।

✦ मुक्ता भस्म—

● मुख्य द्रव्य— शुद्ध मोती २ तोला।

● सहायक, द्रव्य— घृत कुमारी स्वरस, गाय का दूध यथा आवश्यक।

● निर्माण विधि— मोती को सीमाक खरल मे अच्छी प्रकार घोटकर सूक्ष्म चूर्ण करे। फिर पत्थर के खरल या चीनी मिट्टी के खरल मे १२ घटे घृतकुमारी स्वरस मे घोटकर टिकिया वनाकर धूप मे सुखावें। पश्चात् सपुटकर २ सेर गोवरी की आच देवे। दूसरी वार गाय के दूध मे खरल कर टिकिया वाध सराव सपुट करके २ सेर अरण्य कण्डो की अग्नि देने से श्वेत वर्ण की मुलायम भस्म तेयार होती हे।

● मात्रा— आधा से १ रत्ती प्रात साय दूध, मिश्री, मलाई, मक्खन, गुलकन्द, आवले का मुरब्बा, च्यवनप्राश अवलेह या रोगानुसार अनुपान से दे सकते ह।

● उपयोग— यह कफ, पित्त, कास, श्वास, दाह, अग्निमाध, उन्माद, वातरोग, नपुंसकतानाशक व हृदय के लिए वल्य हे।

✦ मुक्ता पिष्टी—

● मुख्य द्रव्य— मुक्ता (मोती) यथाआवश्यक।

● सहायक द्रव्य— गुलाव जल यथाआवश्यक।

● निर्माण विधि— मोती को सीमाक पत्थर मे अच्छी प्रकार महीन पीसकर फिर गुलावजल डालकर २१ दिन तक खरल करके फिर छाया मे सुखाकर पीसकर रख ले।

● मात्रा— आधा रत्ती से १ रत्ती दूध, गुलकन्द, चन्दन, शर्वत, गुलाव का शर्वत या सितोपलादि चूर्ण, चादी के वर्क और शहद के साथ सेवन करावे।

● उपयोग— यह हृदय की निर्वलता, धातु क्षीणता, नेत्र रोग, क्षय, उर क्षत, कास, जीर्णज्वर, हिक्का, भ्रम, नाक मे से रक्त गिरना, मस्तिष्क निर्वलता, नेत्रदाह, शिरदर्द, पित्तवृद्धि, दाह, प्रमेह, मूत्रकृच्छ आदि रोगनाशक हे।

✦ प्रवाल भस्म (चि० च०)—

● मुख्य द्रव्य— प्रवाल शाखा १६ तोला कज्जली ४ तोला।

● सहायक द्रव्य— घृतकुमारी स्वरस यथावश्यक।

● निर्माण विधि— प्रथम प्रवाल शाखा का सूक्ष्म चूर्ण करने के पश्चात् उसमे कज्जली मिलावे। वाद मे घृतकुमारी स्वरस मे १२ घटे अच्छी प्रकार घुटाइ करके छोटी-छोटी टिकिया वनावे। फिर धूप म सुखाकर सम्पुट मे वन्द करक राजपुट मे फूक देने से गुलावी झाई वाली सफद भस्म वन जाती हे।

● मात्रा— १ रत्ती से २ रत्ती प्रात साय सितोपलादि चूर्ण ओर शहद से, गिलोय सत्व आर शहद, मिश्री, मलाई, गुलकन्द, मक्खन, मिश्री या रोगानुसार अनुपान से।

● उपयोग— यह रक्तपित्त, क्षय, कास, धातुदोष, मूत्र विकार, विष विकार, भूतवाधा, शिरोरोग, नेत्रदाह, रक्तार्श, कामला, यकृत विकार, हृदय विकार आदि रोगो का शमन करती है।

✦ संगेयशव वटी—

● मुख्य द्रव्य— शुद्ध सगेयशव यथावश्यक।

● सहायक द्रव्य— अर्क गावजवां, अर्क केवडा यथावश्यक।

● निर्माण विधि— शुद्ध संगेयशव को गावजवा के क्वाथ मे १४ बार बुझाकर, पश्चात् अर्क गावजवा के या अर्क केवडा के साथ ७ दिन खरल करके पिष्टी वना लेवे।

● मात्रा— १ से ३ रत्ती तक प्रात साय शहद के साथ।

यह हृदय की धडकन एव उष्णता को दूर कर हृदय को बलवान बनाती हे। हृदय निर्वल हो जाने पर हृदय की धडकन वढ जाती हे। मुख मण्डल निस्तेज हो जाता है। पाचन क्रिया मन्द हो जाती हे। थोडे श्रम से श्वास चलने लगता है। आदि विकारो मे यह लाभप्रद है। इसके अतिरिक्त निद्रानाश, हिस्टीरिया, मूर्च्छा, वातवाहिनी निर्वलता, मस्तिष्क की उष्णता, स्वेदाधिक्य, आमाशय की अशक्ति, धातुक्षीणता व स्मरण शक्ति वर्धक हे।

✦ बलाद्य घृत (भै० र०)—

● मुख्य द्रव्य— खरैटी का मूल २ सेर, गगेरन की छाल २ सेर एव अर्जुन छाल २ सेर।

● सहायक द्रव्य— गौघृत ३ सेर, मुलैठी कल्क ६० तोले।

● निर्माण विधि— खरेटी मूल, गगेरन की छाल, अर्जुन छाल इनका जौकुट चूर्ण करके १६ गुने जल मे क्वाथ करे। चतुर्थाश अवशेष रहने पर छान ले। क्वाथ को कलई किये हुए वरतन मे डालकर अग्नि पर पाक करे उसमे गोघृत एव मुलैठी कल्क डाले एव मन्दाग्नि मे पाक करे, घृत पाक होने के पश्चात् छानकर रख ले।

● मात्रा— १ से २ तोले प्रात साय मिश्री के साथ ऊपर से दुग्ध पिलावे।

● उपयोग— यह हृदय शूल, हृदय मे क्षत आदि समस्त हृदय रोगो मे लाभ करती हे। इसके अतिरिक्त यह उर क्षत, रक्तपित्त, वातज शुष्क कास, वातरक्त व पित्तज प्रकोप आदि रोगों मे लाभकारी है।

✦ मकरध्वज—

(Red Sulphide of Gold with Mercury)-

● मुख्य द्रव्य— शुद्ध पारद एक भाग, शुद्ध गन्धक दो भाग, शुद्ध स्वर्णपत्र आठवा भाग।

● सहायक द्रव्य— घृत कुमारी स्वरस, अकोल वृक्ष मूल स्वरस एव लाल कपास के पुष्प स्वरस यथावश्यक।

● निर्माण विधि— सर्व प्रथम शुद्ध पारद के साथ स्वर्ण पत्रो को लेकर अच्छी प्रकार मर्दन करे, जब स्वर्ण पत्र पारद मे अच्छी मिल जावे तब इसमें शुद्ध गन्धक मिलाकर खूव मर्दन कर कज्जली बनावे। इस कज्जली मे घृत कुमारी स्वरस अकोल वृक्ष स्वरस तथा लाल कपास के पुष्प स्वरस की दो दिन तक भावना देकर सुखा ले। अव इस कज्जली को सात कपड मिट्टी की हुई शीशी मे एक तिहाई भाग तक भर दे।

इसके पश्चात् आतशी शीशी को बालुका यन्त्र के वीच मे रखे तथा अग्नि दे अग्नि क्रमश ६ घटे तक मद ६ घटे तक मध्यम तथा अन्त मे तीव्र अग्नि दे। अग्नि देने पर शीशी के मुख से गन्धक जारण होने पर पीले रग का धुआ निकलने लगेगा। जब यह धुआ निकलना बन्द हो जाये तब शीशी के मुख को डाट लगाकर वन्द कर दे। बाद मे यन्त्र के स्वाग शीत होने पर शीशी को बाहर निकालकर सावधानी से तोडकर इसकी गर्दन मे लगे मकरध्वज को निकाल ले।

यह मकरध्वज निर्माण की बहिर्धूम विधि है। इसमे स्वर्ण शीशी के तल प्रदेश मे पडा हुआ पाया जाता है। यह स्वर्ण पूर्ण रूप से भस्म नहीं हो पाता। अत इसे पुन भस्म निर्माण की विधि द्वारा भस्म कर लेना चाहिए।

● मात्रा— आधा रत्ती से १ रत्ती तक प्रात साय मधु, मक्खन, मलाई, दुग्ध के साथ या रोगानुसार अनुपान से दे।

● उपयोग— यह अत्यन्त वलकारक, शान्तिदायक, कान्तिवर्धक व समस्त रोगो का नाशक हे। यह रसायन रोगाधिकार का है अत हृदयरोग, क्षय रोग एव अन्य रोगो से आयी हुई निर्वलता को नष्ट करता ह।

*

हृदय रोग निवारक आहार + विहार

डा० शिवकान्त शर्मा
बी० ए० एम० एस० (जीवाजी वि० वि० ग्वालियर (म० प्र०)
एम० डी० (आयु०) (राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज०)
पीएच डी० (स्कालर) राजस्थान वि० वि०, जयपुर
प्रभारी चिकित्सा अधिकारी राजकीय, आयुर्वेद चिकित्सालय, देलवाडा, जिला- बॉसवाडा (राजस्थान)

वर्तमान में आपाधापी भरा जीवन है। प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे से आगे निकलने या बढने के चक्कर में इतना व्यस्त हो गया हे कि न तो अपने स्वास्थ्य के बारे में ध्यान रहता है ओर न ही अपने खान-पान, आचार विचार का ध्यान रहता है। असम्यक् दिनचर्या, असमय मे ली गई ऐलोपेथिक ओषधियॉ शरीर की स्वाभाविक शक्ति को क्षीण करती जाती ह और व्यक्ति किसी भी गम्भीर बीमारी से ग्रस्त हो जाता हे।

हृदय रोग के भी निदान कुछ इसी प्रकार के हे अगर व्यक्ति व्यवस्थित दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या व उचित आहार विहार को अपनाल तो वह पूर्ण स्वस्थ व सुखी रह सकता हे।

हृदयरोग न हो इस हेतु क्या आहार+विहार व्यक्ति को करना चाहिए। इसको यह उद्धृत किया जा रहा है—

हृदय रोग निवारक विहार—

१— प्रत्येक ऋतु मे प्रात काल उठना चाहिए, उठकर कुल्ला करके रात्रि को तावे के पात्र मे भरकर रखा हुआ जल पीजियगा। उसके पश्चात् शोच आदि से निवृत्त होकर भ्रमण को जावे व योगासन व हल्का व्यायाम करे। २— सप्ताह मे कम से कम एक या दो वार पूरे शरीर पर स्नान से पूर्व तैल की मालिश करे। ३— शीघ्रतापूर्वक कोई कार्य न करे, शान्तिपूर्वक अपने दनिक कार्य करे। ४— काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या आदि मानसिक विकारो को जहा तक सम्भव हो अपने मन मे न आने दे। यथा सभव इनसे बचने की कोशिश अपने देनिक जीवन में अवश्य करे। ५—ज्यादा टी० वी० देखना भी स्वास्थ्य के प्रतिकूल हे। अत टी० वी० पर कम से कम प्रोग्राम देखे। ६— मल+मूत्र आदि वेगो को न रोके। इनका वेग आने पर इन क्रियाओ से तुरन्त निवृत्त हो लेना चाहिए। ७— रात्रि को १० वजे तक सो जाना चाहिए। जिससे निद्रा भी उचित मात्रा मे मिल जाती हे एव भोजन का पाचन भी सम्यक् हो जाता हे। ८— अत्यधिक शीतल जल या अत्यधिक उष्ण जल से स्नान न करे। ६—ईश्वर ध्यान अवश्य करे, इससे आत्मिक शान्ति मिलती है। १०— ब्रह्मचर्य का पालन उचित मात्रा मे अवश्य करे।

हृदयरोग नाशक आहार—

१—सादा व पौष्टिक भोजन का समावेश अपने देनिक आहार मे अवश्य करे। तला हुआ, गरिष्ठ, मसालेदार भोजन का त्याग करे। २— भोजन के समय मे नियमितता अवश्य लावे, रात्रि का भोजन सोने से तीन घटे पूर्व करे, अच्छी पाचन क्रिया हेतु भोजन के १ घटे पूर्व व पश्चात् जल का सेवन करे। ३—परिश्रम या विश्राम करने के वाद भोजन या कोई भी पेय पदार्थ सेवन करे। ४— मासाहारी भोजन से शाकाहारी भोजन शीघ्र पचता हे। ५— भोजन मे हमेशा हाथ से छटे चावल विना छना आटा ही सेवन करे क्योकि इनमे सभी विटामिन रहते ह। ६— चीनी के स्थान पर मधु या गुड का सेवन करना चाहिए। क्योकि गुड मे अनेको प्रकार के लवण रहते है जो चीनी में नहीं होते ह। ७—कॉफी, चाय, धूम्रपान, पान मसाले गुटका आदि पदार्थ यथा सभव कम से कम सेवन करे। ८— रक्तभार अधिक होने पर ज्यादा नमक, घृत, तैल, मेदे के वने पदार्थ गरिष्ट भोजन वर्ज्य हे। रक्तभार कम होने पर अधिक नमक का सेवन करना चाहिए। ६—भोजन में विभिन्न मौसमी फलो आम सन्तरा, मोसमी, पपीता, अनार आदि फल विशेष लाभकारी ह। १०— सलाद के रूप मे गाजर, टमाटर खीरा, मूली वन्दगोभी आदि का सेवन अत्यन्त लाभदायक हे। ११— मद्यपान का सर्वथा त्याग करना चाहिए अगर मद्यपान करना ही हो तो दवा के रूप मे कभी-कभी लेना चाहिए। वेसे उचित यही है कि इसका त्याग किया जावे। १२— भोजन ताजा व स्वस्थतापूर्वक धीरे-धीरे शान्ति से करना चाहिए।

हृद्रोगनाशक सिद्धौषधियाँ

डा० शिव पूजन शास्त्री एम० ए० साहित्यालकार, वैदिक गवेषक, प्राध्यापक
श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय, ११८ गौतम नगर, नई दिल्ली- ४६

मानव शरीर मे हृदय सवसे अधिक महत्वपूर्ण तथा विशेष कठोर श्रम करने वाला अग है। आजकल हृदय रेगो का बहुत जोर है इसका कारण गलत खान-पान, धूम्रपान, मद्यपान आदि है। हर प्रकार अति जैसे अतिक्रोध, अतिलोभ, अति सभोग, अति वोलना और बडे अधिकारी द्वारा दी गई डाट फटकार हृदय धडकन (हार्ट अटेक) का बहुत वडा कारण है। मोटापा अखिल भारतीय हृदय सरथान के तत्वाधान मे हुए सम्मेलन मे भाषण देते हुए आस्ट्रेलिया के हृदय विशेषज्ञ डा० रेल्फ रीडर ने कहा कि— मोटापा शरीर का अधिक भार ओर उच्च रक्तचाप के कारण हृदय की धडकन की वीमारी होती है।

नैसर्गिक उपचार—

सादा भोजन, पूर्ण विश्राम तथा सूर्य नमस्कार। हृदय के तीन शत्रु हे— हडवडी (Hurry), चिन्ता (Worry), गरिष्ठ भोजन, इन्हे जो परित्याग करेगा उसे हृदय रोग नहीं होगा।

आयुर्वेद उपचार—

(१) गिलोय एव कालीमिर्च दोनो समभाग लेकर कूट पीसकर कपडछन कर ले। प्रतिदिन ३-३ ग्राम चूर्ण जल के साथ दे। (२) आवला सूखा, मिश्री ५०-५० ग्राम लेकर कूट पीस छान कर सुरक्षित रख ले। प्रतिदिन ८ ग्राम औषधि पानी के साथ सेवन करने से हृदय रोग दूर होता है। (३) अर्जुन की छाल १० ग्राम, गुड १० ग्राम, दूध ५०० ग्राम। अर्जुन की छाल का चूर्ण बना ले। पुन चूर्ण को दूध मे उबालकर पकाये। पीने योग्य होने पर छान ले तथा गुड मिलाकर रोगी को पिला दें। इससे हृदय की शिथिलता तथा सूजन बढ जाना आदि रोग दूर हो जाते है। (४) एक चम्मच शहद प्रतिदिन प्रयोग करने से हृदय सबल तथा सशक्त बनता है। एक चम्मच शहद से-२०० कैलोरी शक्ति प्राप्त होती है। (५) अगर का चूर्ण शहद के साथ चाटने से हृदय की शक्ति बढती है। (६) एक ग्राम पीपलामूल का चूर्ण शहद के साथ चटाने से बच्चो का हृदय रोग ठीक होता है। (७) ६ ग्राम मैथी के क्वाथ (काढे) मे शहद मिलाकर पीने से पुराना हृदय रोग मिटता है। (८) मृगश्रृग भस्म ३ माशा, शुद्ध गर्म घृत मे मिलाकर सेवन करने से हृदय शूल मे लाभ हाता है। (९) मुनक्के मे से गुठली निकालकर उसमे १ रत्ती हीरा हींग की गोली बनाकर रख दे तथा गुनगुने पानी से खिला दे। यह हृदयशूल मे लाभ करती है। (१०) सेव का मुरब्बा या गाजर का मुरब्बा २ तोला लेकर चादी के वर्क मे लपेटकर खाने से हृदय धडकन मे लाभ जाती है।

होमियोपैथिक उपचार—

डाईकोर्ड (जर्मनी) का ३ से ४ बूद देने से हृदय धडकन मे लाभ होता है।

कई विद्वानो का विचार है कि 'शख ध्वनि' से हृदय धडकन का रोग नहीं होता है। मेरी आयु ७६ वर्ष की है। मे पूजा के साथ अत मे शख ध्वनि करता हूँ। आजतक मुझे हृदय धडकन की शिकायत नहीं हुई। महाभारत मे सभी योद्धा शख ध्वनि करते थे। पौराणिक आज भी शखध्वनि करते है।

ऐलोपैथिक उपचार—

(१) तत्काल कोरामीन १५-२० बूद जल मे मिलाकर पिला दे। (२) डेरीफायलीन डिजाकिसन (जर्मन रेमेडीज) १ टिकिया दिन मे ३ बार तक दे। तत्पश्चात् १ गोली दिन मे २ बार दे। (३) निफेड्रीन टेबलेट (एस० जी० फार्मा) एक-दो टिकिया दिन मे ३ बार दे। (४) सेडोनाल (ईष्ट इडिया) एक दो गोली दिन मे ३ बार। (५) बीटाकार्ड (टोरेण्ट) ५० मि०ग्रा० दिन मे केवल १ बार दे। (६) कोरामिड (स्टैण्डर्ड) १०-२० बूद रोगानुसार दे। (७) कोरामिन इजेक्शन (सीवा) २-५ मि० लि० मास या नस मे दिन मे दो बार आवश्यकतानुसार दे।

प्रभाकर वटी

वैद्य सुनील कुमार, आयुर्वेदाचार्य
ईस्ट निमचा कोलियारी
पोस्ट— विधानवाग ७१३३३७
जिला— वर्दवान (पश्चिम वगाल)

हृदयरोग नाशक ओषधियो मे प्रभाकर वटी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह सस्ती होने के साथ-साथ कारगर भी है। यह वटी हृदय तथा फुफ्फुसो को वल पहुचाती है। हृदय की अनियमित गति, धडकन, हौलदिल, वैचेनी, थोडे से परिश्रम से श्वास फूलना, हृद्शूल, रक्ताल्पता, रक्तदाब, स्नायविक तथा मानसिक दुर्वलता आदि विकारो मे उपयोगी है। इसके सेवन से सभी हृदय रोग दूर होते है, परन्तु वृक्क विकार युक्त हृदयरोगो मे यह विशेष उपयोगी है।

विनेसर सिह नामक ५५ वर्षीय रोगी मार्च ६६ मे मेरी चिकित्सा मे आया। वह पिछले १५ वर्षो से उच्चरक्तदाब तथा हृदयरोग हेतु आधुनिक दवा खाता आ रहा था। लेकिन अपने को स्वस्थ कभी अनुभव नहीं करता था। पिछले कुछ दिनो से पैट मे गेस तथा जलन तथा दुर्वलता के कारण परेशान रहता था। मलमूत्र भी खुलकर साफ नहीं होता था। ४ न० निमचा कोलियारी निवासी श्री रामधारी सिह जी जिनकी धर्मपत्नी को गर्भाशय शोथ तथा रक्ताल्पता का मैने सफलतापूर्वक इलाज किया था उसे मुझसे इलाज करवाने को कहा। जब रोगी मेरे पास आया उस समय निम्नलिखित लक्षणो से पीडित था। रक्तचाप १८०/१०० एम० एम० आफ एच० जी०, भ्रम, चक्कर आना, बहुत अधिक कमजोरी महसूस होना, सिर भारी रहना, चीजे घूमती हुई नजर आना, नींद ठीक से नहीं आना, भूख नहीं लगना, मल-मूत्र साफ नहीं आना, पेट मे गैस तथा जलन अनुभव होना, निराशा, सुस्ती एव आलस्य, दिल घबराना, हमेशा भय बना रहना, चिन्ता बना रहना, कभी-कभी हृदय के पास भारीपन महसूस होना। ऊँचाई पर चढने पर श्वास फूलने लगना तथा चक्कर आने लगना।

मेने भगवान धन्वन्तरि को स्मरण कर निम्नलिखित ओषधियो को १५ दिन के लिए दिया।

(१) प्रभाकर वटी १-१ गोली सुबह शाम आवला मुरब्बा को पानी से धोकर उसके साथ खाकर ऊपर से एक-एक कप गाय का सुखोष्ण दूध पीने को कहा।

(२) अवाना (हिमालया) १-१ गोली ३ वार पानी के साथ।

(३) रसायन चूर्ण १-१ छोटा चम्मच २ वार पानी के साथ।

(४) लिव-५२ २-२ छोटा चम्मच २ वार खाली पेट।

(५) अर्जिन (एलार्सिन) २-२ गोली २ वार पानी के साथ।

(६) गेस्ट्रौडैप १-१ गोली २ वार भोजन के वाद।

(७) अविपत्तिकर चूर्ण १ चम्मच रात मे सोते समय पानी के साथ।

रोगी को सदा सादा शाकाहार लेने को कहा। सात्वना दी। १५ दिनो के बाद रोगी आया तो बोला फायदा ह। भूख लग रही है। पायखाना, पेशाव साफ आ रहा ह। गेस तथा जलन नहीं है। मैने रक्त कोलेस्ट्रोल तथा रक्त शर्करा की जाच करवाने को कहा था। दोनो रिपोर्ट सामान्य थे। मूत्र परीक्षा करवायी गई थी। वह भी सामान्य था। मेने रक्तचाप नापा तो १४०/१०० एम० एम० आफ एच० जी० हुआ। मेने वही दवाये पुन १५ दिनो के लिए दीं।

इस बार रोगी आया तो बोला कि दुर्वलता भी कुछ दूर हुई है। अब नींद भी ठीक आ रही हे। भूख खूब लग रही है। दस्त भी साफ आ रहा है। अब विश्वास होने लगा है कि ठीक हो जाऊँगा। क्योकि जब अग्रेजी दवा इतने दिनो से खा रहे थे तब भी इतना स्वस्थ नहीं अनुभव किये थे। मैने रक्तदाब नापा तो १३५/६० एम० एम० आफ एच० जी० हुआ। रोगी के साथ-साथ मुझे भी प्रसन्नता हुई मेने दवाओ मे परिवर्तन किया।

(१) प्रभाकर वटी १-१ गोली पूर्ववत्।

(२) अवाना १-१ गोली २ बार पानी के साथ।

(३) अश्वगन्धारिष्ट २ चम्मच।

अर्जुनारिष्ट २ चम्मच।

(४) लहसुनामला— लहसुनादि वटी, शख भस्म तथा आवला चूर्ण से निर्मित पेटेन्ट योग १-१ गोली २ वार भोजन के बाद।

एक साथ बराबर पानी मिलाकर दोनो वक्त भोजन के बाद।

ये दवाये लगातार तीन माह तक चलीं। इस दोरान प्रत्येक १५ दिनो के अन्तराल पर रक्तदाव नापा गया जो कि कभी १३५/६० तो कभी १४०/६० तो कभी १३०/६० मिला। अन्त मे १३५/६० पर रक्तचाप स्थिर होगया जो कि सामान्य हे। रोगी के अन्य विकार जाते रहे। चक्कर आना, सुस्ती लगना, दिल घवराना, आदि सभी विकार दूर हो गये। रोगी ने वढिया टॉनिक की माग की तथा यह आशका व्यक्त की कि दवा वन्द करने के वाद कहीं रोग दुबारा न हो जाय। मैने उसको ढाढस वधाया, समझाया तथा निम्नलिखित ओषधिया दीं।

१— प्रवाल पचामृत रस मुक्ता युक्त— १-१ रत्ती सुवह शाम आवला मुरब्बा के साथ खाकर दूध पीने को कहा।

२— अवाना १-१ गोली २ वार लेते रहने को कहा।

३— रसायन चूर्ण १-१ चम्मच २ वार पानी के साथ लेने को कहा।

४— अश्वगन्धारिष्ट तथा अर्जुनारिष्ट का सेवन पूर्ववत् जारी रखने को कहा।

यह चिकित्सा ४० दिनो तक चली अव रोगी को पर्याप्त वल अनुभव होने लगा था। रक्तदाव नापा तो १४०/६० एम० एम० ऑफ एच० जी० निकला। अवाना तथा रसायन चूर्ण सेवन जारी रखने को कहा गया।

आज भी रोगी उन दोनो दवाओ का सेवन कर रहा हे। हर १५ दिनो के वाद १ वार रक्तचाप नाप हेतु मेरे पास आता हे। जबकि उसे कोई तकलीफ़ नहीं है। आयुर्वेद सार सग्रहकार के अनुसार प्रभाकर वटी का प्रयोग करने से समस्त प्रकार के हृदय रोगो का नाश होता है तथा हृदय और फुफ्फुसो को अपूर्व वल मिलता हे। इसके अलावा हृदय की अनियमित गति, धडकन, थोडे ही परिश्रम से श्वास फूलना रक्ताल्पता, पाण्डु, कामला, हलीमक, शोथजन्य एव यकृत विकारजन्य हृदय रोग, पार्श्वशूल, हृदयशूल, इनको शीघ्र नष्ट करती हे। श्वास और कास नष्ट होकर शरीर मे बल वीर्य की वृद्धि होती है। यह उत्तम पुष्टि का एव श्रेष्ठ रसायन हे। इस वटी का प्रधान कार्य हृदय को वल पहुचाना हे। इस वटी के प्रयोग से हृदय एव फुफ्फुस की मासपेशियो तथा वात नाडियो को अपूर्व बल मिलता है। कई रोगियो को हृदय की दुर्वलता के कारण दाहिनी नाडियो मे क्षोभ उत्पन्न होकर रक्तदाब की वृद्धि हो जाती हे। रोगी के मुख मण्डल का कपोल भाग उभरा हुआ सा, आखे लाल रहना, मस्तिष्क मे भ्रम, चक्कर आना, सारी चीजे घूमती हुई नजर आना, अत्यधिक कमजोरी मालूम पडना, नींद न आना आदि लक्षण होते हे। ऐसी स्थिति मे इस प्रभाकर वटी के सेवन से बडा उत्तम लाभ होता हे। रोगी का हृदय बलवान हो जाता हे एव मस्तिष्क क्षोभ दूर होकर नींद भी अच्छी आने लगती है।

मुहम्मद आलम नामक एक २३ वर्षीय युवक मेरी चिकित्सा मे आया। डॉक्टर ने उसे कह दिया था कि तुम्हारा हृदय कमजोर हे। उसे बहुत ज्यादा डर लगता था। हमेशा चिन्तित रहता था। हृदय की धडकन अधिक थी। थोडा सा परिश्रम करने पर सास फूलने लगता था, चक्कर आने लगता था। याददाश्त कमजोर हो गयी थी। हडबडाहट ज्यादा होती थी। शादी हो गयी थी। पत्नी के साथ सफल समोग नही कर पाता था। शीघ्र वीर्चपात हो जाता था तथा उसके वाद दुर्बलता लगती थी दिल घडकने लगता था। वचपन मे बहुत ज्यादा हस्तमैथुन किया था। दुबला पतला था। थोडी रक्ताल्पता थी। किसी काम मे मन नही लगता था हमेशा विन्तित रहता था। मैने एक्सरे करवाया तो हृदय मे कोई विकार नही मिला। ई० सी० ज़ी तथा टी० एम० टी० रिपोर्ट सामान्य थे। रक्त मे हेमोग्लोबिन की मात्रा १० प्रतिशत थी। मुझे लगा कि रोगी को थोडी दुर्बलता है तथा वहम् हे और कुछ नहीं। वह उल्टा-पुल्टा सोचता रहता हे सब उसी का नतीजा है। उसके इस रोग को आधुनिक चिकित्सक **ANXIETY NUROSIS** कहते हे। मेने रोगी को बहुत समझाया तथा निम्नलिखित औषधिया दी—

(१) प्रभाकर वटी १-१ गोली सुबह-शाम आवला मुरब्बा के साथ खाकर सुखोष्ण दूध पीना।

(२) अश्वगधारिष्ट ४-४ चम्मच दोनो वक्त भोजन के बाद बराबर मात्रा मे जल मिलाकर।

उपरोक्त चिकित्सा साढे ५ माह तक चली। रोगी ठीक

हो गया। इस घटना को बीते करीब दो वर्ष हो गये हैं। उसे प्रभाकर वटी मैंने अपने ही हाथो से बनाकर दी थी।

प्रभाकर वटी की निर्माण विधि इस प्रकार हे। स्वर्ण माक्षिक भस्म, लौह भस्म, अभ्रक भस्म, वशलोचन चूर्ण तथा शुद्ध शिलाजीत सबको समान भाग लेकर एक दिन अर्जुन की छाल के रस मे या क्वाथ मे घोटकर २-२ रत्ती (२५० मिग्रा०) की गोली बनाकर छाया मे सुखा ले। इसकी मात्रा एक-एक गोली सुबह-शाम है। अनुपान मे अर्जुनत्वक् क्वाथ या आवला मुरब्बा या आवला चूर्ण लेकर गौदुग्ध पीना चाहिए। वृक्क विकार जन्य हृदयरोग मे गौक्षुरादि क्वाथ या पचतृणमूल क्वाथ के साथ लेने की सलाह वैद्यगण देते है।

एक बार वृक्क विकार, उच्चरक्तदाब वाला रोगी मेरी चिकित्सा मे आया। उसे प्रभाकर वटी १-१ गोली सुबह-शाम पचतृणमूल क्वाथ के साथ, चन्द्रप्रभा वटी १-१ गोली २ बार तथा आरोग्यवर्धिनी वटी १ गोली रात्रि मे लेने के लिए कहा गया। रोगी १ सप्ताह की दवा लेकर चला गया। दूसरे सप्ताह आया लेकिन उसके बाद नहीं आया। अत कोई परिणाम नहीं मिल सका।

अगर हम प्रभाकर वटी के घटक द्रव्यो पर नजर डाले तो स्वर्ण माक्षिक भस्म लौह, गधक तथा अल्पाश मे ताम्बे का मिश्रण हे। यह लोह का सौम्य कल्प हे। यह मधुर, विपाक, तिक्त, वृष्य, रसायन, योगवाही, शक्तिवर्धक, पित्तशामक, शीतवीर्य, स्तम्भक तथा रक्त प्रसादक है। यह मूत्ररोग, जलोदर, पाण्डु, कामला, जीर्ण ज्वर, निद्रानाश, दिमाग की गर्मी, पित्त विकार, नेत्र रोग, वमन, अम्लपित्त, रक्तपित्त, शिर शूल, विष विकार आदि रोगो मे विशेष उपयोगी हे। इसके सेवन से रक्त का प्रसादन होता है। रक्तकण सुदृढ बनते है तथा रक्तवृद्धि होती है।

लोहभस्म रक्ताणुवर्धक तथा पाण्डु रोग नाशक है। सामान्य टॉनिक के रूप मे यह शरीर के सभी अगो को सक्रिय (Stimulate) करता हे।

अभ्रक एक खनिज हे जिससे अभ्रक भस्म तैयार होती है। यह अल्युमिनियम का सिलीकेट है जिसमे अल्कलीज तथा बेसिक हाइड्रोजन भी पाया जाता है। अभ्रक भस्म को योगवाही रसायन कहा गया है। इसके सेवन से हृदय की दुर्बलता दूर होती है। हृदय को उत्तेजना प्राप्त होती हे तथा हृदय के स्नायु मण्डल सबल होते है। उनमे स्फूर्ति उत्पन्न होती है। हृदय पुष्टि के लिए प्रसिद्ध नागार्जुनाभ्र मे अभ्रक भस्म की ही प्रधानता है।

वशलोचन एक अत्यन्त ही गुणकारी आयुर्वेद औषधि है। यह रूखा, कसेला, मधुर, रक्त को शुद्ध करने वाला, शीतल, ग्राही, वीर्यवर्धक, कामोद्दीपक ओर क्षय, श्वास, खासी, रक्तविकार, मन्दाग्नि, रक्तपित्त, ज्वर, कुष्ठ, कामला, दाह, तृषा, पाण्डु, मूत्रकृच्छ्र तथा वात को नष्ट करता है। इसमे ७० प्रतिशत सेलेसिक एसिड, ३० प्रतिशत पोटास तथा चूना रहता है। डा० देसाई के मतानुसार इसमे ६० ५ प्रतिशत सेलिसिक एसिड, १ ७५ प्रतिशत यवक्षार, ३ ४ प्रतिशम मण्डूर का अश रहता है।

शिलाजीत योगवाही रसायन हे। यह नाइट्रोजन मिश्रित तत्व, चूना, अभ्रक तथा धातुओ जैसे— फास्फोरस, सोडियम, कैल्शियम, आयोडीन, लौह, पोटास आदि के अणुओ का मिश्रण है। इसमे हारमोन्स् एन्जाइम्स तथा विटामिन्स भी पाये जाते है। विधिपूर्वक सेवन करने से यह सभी रोगो को नष्ट करता हे। मेधा, स्मृति ओर बल बढाता है। भावमिश्र के अनुसार शिलाजीत, कटु, तिक्त, गर्म, कटुविपाकी, रसायन, मलभेदन करने वाला, योगवाही तथा कफ, मेद, अश्मरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र, श्वास, वात, बवासीर, पाण्डु, मृगी, उन्माद, सूजन, कुष्ठ, उदर कृमि का नाश करने वाला होता है।

अर्जुन हृदयरोग की प्रसिद्ध वनस्पति है। प्राय प्रत्येक चिकित्सक हृदयरोगों मे इसका सेवन करवाते हे। इसमे अर्जनिनन $C_{11}H_{12}O_4$ लैक्टोन एव टैनिन तथा जल मे घुलनशील कैल्शियम साल्ट तथा अल्प मात्रा मे मैग्नीशियम साल्ट है। यह रक्त स्तम्भक, रक्तपित्त, प्रमेह नाशक तथा हृद्पौष्टिक है। इसकी छाल मे केल्शियम कार्बोनेट ३४ प्रतिशत, कैल्शियम के अन्य लवण, टैनिन (कषाय द्रव्य) १६ प्रतिशत तथा अल्युमिनियम, मैगनीशियम, एक सेन्द्रिय अम्ल, रजक द्रव्य, शर्करा आदि होते है। अत वैद्यगण इसकी छाल का काढा रोगियो को देते हे।

प्रभाकर वटी के द्रव्यो मे थोडा परिवर्तन करके यानी शिलाजीत, अभ्रक भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म, लौह भस्म तथा वशलोचन प्रत्येक, ६५-६५ मि० ग्रा० तथा अर्जुन छाल ओर मकरध्वज प्रत्येक ४०-४० मि० ग्रा० मिलाकर गेम्बर्स

लेबोरेटरी कैरियोटोन एक नामक पेटेण्ट योग का निर्माण करता है। जोकि हृद्शोथ, हृच्छूल, धडकन, श्वासकष्ट, मूर्च्छा, चक्कर, रक्त सवहन ठीक से नहीं होने के कारण होने वाले रोगो मे उपयोगी हे।

प्रभाकर वटी के साथ उसका एक तिहाई हिस्सा नागार्जुनाभ्र रस मिलाकर यानी प्रभाकर वटी १८७ ५ मिग्रा० + नागार्जुनाभ्र रस ६२ ५ मिग्रा० तक अर्जुन स्वरस की भावना देकर श्री धन्वन्तरि आयुर्वेदिक फार्मेसी प्रभाकर मिश्रण नामक पेटेण्ट योग का निर्माण करता है जो सभी प्रकार के हृदय रोगो में यथा अनियमित गति धडकन थोडे परिश्रम से सास फूलना, यकृत वृद्धि जन्य हृदय रोग एव हृदय शूल को दूरकर हृदय को बल देता है। लगातार प्रयोग से रक्तदाब की अधिकता से उत्पन्न विकारो यथा चक्कर आना, मस्तिष्क भ्रम, नींद न आना आदि को ठीक कर रक्तचाप को सामान्य बनाकर स्थायी स्वस्थता प्रदान करता हे।

एक बार एक सज्जन अपनी स्त्री की चिकित्सा हेतु आये थे। मैथुन के समय उसकी धडकने बढ जाती थी। माथा घूमने लगता था और मूर्च्छित हो जाती थी। रक्तचाप सामान्य था। अन्य कोई विकार नहीं थे। मैंने प्रभाकर वटी तथा अश्वगधारिष्ट के सेवन का परामर्श दिया था जिससे कालान्तर मे रुग्णा ठीक हो गई। ▲

हृदय रोग में कुछ सिद्ध योग

आचार्य वेदव्रत शास्त्री, कासगज (एटा)

द्राक्षावलेह— मुनक्का १ किलो चौगुने जल मे पकाओ, फिर बीज निकालकर ५०० ग्राम शर्करा डालकर चाशनी करो। चाशनी दो तार की आने पर शखपुष्पी, गाजवा, ब्राह्मी इलायची दोनो के बीज जटामासी, मुलेठी, गुलाब के फूल, चन्दन श्वेत, मिर्च काली प्रत्येक १०-१० ग्राम लेकर सभी को कपडछन कर मिलावे। पश्चात् केसर, मोतीपिष्टी, स्वर्ण भस्म, रजत भस्म ५-५ ग्राम प्रत्येक मिलाकर रखे। मात्रा— १ ग्राम, दुग्ध के साथ प्रात साय प्रयोग करे। गुण— हृदयरोगो मे अति उपयोगी है। योषापस्मार एव अपस्मार मे भी लाभदायक है।

इसके अतिरिक्त शास्त्रीय हृदयार्णवरस, हृदयेश्वर रस, माणिक्य पिष्टी, रत्नाकर रस, प्रवाल पिष्टी भी रोगानुकूल प्रयोग की जा सकती है।

खमीरा जहरमोहरा— जहरमोहरा खताई १० ग्राम लेकर उसमे वशलोचन ५ ग्राम मिलाकर अर्क गुलाब मे घोटे। जब सुरमा सा बन जाये तब २५० ग्राम मिश्री की चाशनी करो अर्क केवडा डालकर। और इसमे कुटी दवा मिलाकर सेवन करे। मात्रा— ५ ग्राम अर्क गाजवा के साथ गुण दिल मे बल आता है।

हृदय बलदावटी— जदवार, सोने के वर्क ५-५ ग्राम, कस्तूरी, अम्बर, केसर, रजत पत्र ३-३ ग्राम, अर्क गुलाब एव केवडे मे घोटकर गोली बनाकर छाया मे सुखा लो। मात्रा— १-१ गोली दोनो समय ५० ग्राम अर्क गाजवा के साथ ले। गुण हृदय, मस्तिष्क को शक्ति देती है।

चन्दनावलेह— श्वेत चन्दन चूरा ५०० ग्राम गुलाब जल मे रात को भिगो दो प्रात ओटाओ आधा रहने पर उतार छानकर १ किलो मिश्री की चाशनी करो। जब चाशनी हो जाये तब वशलोचन, सत गिलोय, छोटी एला के दाने ६-६ ग्राम पीसकर मिला दो। १०-१० ग्राम दोनो समय सेवन करे। गुण— उष्ण स्वभाव वाले हृदय रोगियो को बलदायक है। पिपासा, दिल का धडकना आदि व्याधिया दूर होती हे। ग्रीष्म ऋतु मे सभी को लाभ देता है।

कासीसादि वटी— कसीस भस्म, सेधानमक, अभ्रक भस्म समभाग लेकर गेहू और अर्जुन क्वाथ की ३-३ भावना देकर चना के बराबर की गोलिया बनाओ छाया मे सुखाकर रखो। मात्रा— १-१ गोली अनुपान गेहू या अर्जुन का क्वाथ। गुण— हृदयरोग मे अति लाभदायक औषधि है। यह रक्त सचार कर हृदय को बलिष्ठ बनाती है। इसके अतिरिक्त रत्नप्रभा वटी भी विशेष लाभदायक हे।

*

हृद्रोग नाशक परीक्षित दो सिद्धौषधियाँ

इजीनियर एव वैद्य चन्द्रभूषण पाठक

वी०एस०सी० (इजी०), एम०वी०ए०, आयुर्वेद वृहस्पति, सस्थापक– श्री नारायण आयुर्वेदिक प्रतिष्ठान, २६ कोकर ओद्योगिक क्षेत्र, रॉची - ८३४००१ (विहार)

उपाध्यक्ष- झारखण्ड आयुर्वेद चिकित्सक सघ, रॉची

सदस्य– अखिल भारतीय आयुर्वेद सम्मेलन

डा० श्रीमती विभा पाठक,

आयुर्वेद वी०एस०सी०, वी०ए० आनर्स (सस्कृत) वी०ए०एम०एस०, आयुर्वेदीय चिकित्साधिकारी- मारवाडी सहायक समिति, रॉची

लेखक का जन्म ५ जुलाई १६४०, विहार राज्य के पटना जिलान्तर्गत देवकली ग्राम म। दादा वद्य शिरोमणि प० राम नारायण पाठक। पिता आयुर्वेदाचार्य वैद्य प० रामदेवन पाठक एव माता विन्दा देवी पाठक। आयुर्वेद को समर्पित परम साध्वी महिला।

लेखक की शिक्षा-दीक्षा वचपन से ही आयुर्वेद एव सस्कृत की शिक्षा। साथ ही स्कूली शिक्षा भी चलती रही। १६६१ म विहार इस्टीटयूट आफ टक्नोलाजी सिन्द्री (राची विश्वविद्यालय) इजीनियर की उपाधि प्राप्त की। साथ ही सस्कृत आर आयुर्वेद की परीक्षा चलती रही। छुट्टियो मे तथा समय निकालकर वाद मे कलकत्ता विश्वविद्यालय से प्रवन्धन विज्ञान मे मास्टर आफ विजनिस ऐडमिस्ट्रेशन की उपाधि प्राप्त की। अखिल भारतीय आयुर्वेद विद्यापीठ विक्रमशिला ने आयुर्वेद वृहस्पति की उपाधि से विभूपित किया।

कार्यक्षेत्र– विहार इलेक्ट्रिसिटी वोर्ड भारत हेवी इलक्ट्रीकल्स (भोपाल), हवी इजीनियरिंग कारपोरेशन (राची) मशीनरी मन्युफक्चरर्स कारपोरेशन (कलकत्ता) आदि महत्वपूर्ण इजीनियरिंग सस्थानो मे उच्च पदो पर काम किया। इस वीच आयुर्वद तथा आयुर्वेद द्वारा जन सेवा का काम करता रहा। १६६० के दशक मे भोपाल प्रवास के दारान निवर्तमान राष्ट्रपति शकरदयाल शर्मा के पिता आयुर्वेद के मूर्धन्य विद्वान वद्य खुशीराम शर्मा से सम्पर्क हुआ। उनसे से भी आयुर्वेद सेवा की प्ररणा मिली।

वर्तमान का कार्य कलाप १६८१ से पूर्ण रूपेण आयुर्वेद सेवा मे समर्पित। स्थानीय पत्रो मे आयुर्वेद के विभिन्न विपया पर लिखता रहता हूँ। नि शुल्क चिकित्सा द्वारा जन सेवा करता हूँ।

लेखिका का जन्म मध्यप्रदेश के भोपाल स्थित भारत हवी इलक्ट्रिकल्स के टाउन शिप म १६ नवम्वर १६६७ का।

शिक्षा दीक्षा राची विश्वविद्यालय से वी० एस० सी० एव वी० ए० आनर्स (सस्कृत)। कामेश्वर सिह दरभगा सस्कृत विश्वविद्यालय स वी० ए० एम० एस० की परीक्षा पास।

पारिवारिक परिवेश पिता वद्य चन्द्रभूषण पाठक, मॉ वेद्या श्रीमती जानकी पाठक वद्य विशारद। पिताजी ने आयुर्वेद सवा क लिए इजीनियर की नाकरी को त्याग कर आयुर्वेद के प्रसार प्रचार के काम को अपना लिया।

वर्तमान कार्य - आयुर्वेदीय चिकित्सा पदाधिकारी मारवाडी सहायक समिति अपर वाजार राची (विहार)

हृदयरोग की चिकित्सा मे अनेक प्रकार की औषधिया तथा उपचार उपयुक्त पाये गये है। उदाहरणार्थ चूर्ण, क्वाथ, आसवारिष्ट, तेल, घृत, भस्म, पिष्टी, रस, कूपीपक्व रसायन इत्यादि। यहा कुछ दो ऐसे रसो के वर्णन प्रस्तुत किये जा रहे हे जिन्हे हमने देनिक चिकित्सा क्रम मे अधिक उपयोगी पाया गया हे।

(१) नागार्जुनाभ्र रस—

नागार्जुनाभ्र रस मे अभ्रक भस्म ही मुख्य द्रव्य है। जिनमे अर्जुन की छाल के क्वाथ की अनेक भावनाये देकर तथा सात दिनो तक घोटकर इस रस का निर्माण किया जाता हे। अभ्रक भस्म और अर्जुन दोनो ही हृदय की शक्ति को बढाने मे अति उत्तम है। अत यह रस हृदय रोगो के लिए वडी अच्छी दवा है तथा विभिन्न प्रकार के हृदय रोगो मे इसका व्यापक उपयोग हे।

हृदय रोगों में नागार्जुनाभ्र रस की उपयोगिता—

नागार्जुनाभ्र रस का नियमित सेवन करने से हृदय सम्बन्धी विभिन्न रोगो मे आशातीत लाभ होता है। जिससे हृदय की कमजोरी दूर होती हे। हृदय की धडकन दूर होती हे। हृदय की धडकन तथा हृदय के दर्द को भी यह रस दूर करता हे। हृदय की अनियमित गति को नियमित करने मे भी यह अत्यन्त उपयोगी है।

अन्य रोगो मे नागार्जुनाभ्र रस की उपयोगिता—

हृदय रोगो के अतिरिक्त अन्य रोगो मे इस रस का बहुत उपयोग हे। यह मन्दाग्नि, कामला, पाण्डु, सूजन, अम्लपित्त, रक्तपित्त, विपमज्वर (मलेरिया), अर्श, जी मिचलाना, वमन, अरुचि, अतिसार, क्षत, क्षय तथा उदर रोगो को नाश करता हे।

निर्माण विधि—

नागार्जुनाभ्र रस के निर्माण मे सहस्र पुटित वज्राभ्रक भस्म का प्रयोग किया जाता हे। इस भस्म को अर्जुन की छाल के क्वाथ के साथ सात दिनो तक घोटा जाता हे। फिर १२५ मि० ग्रा० की गोलिया बनाकर छाया मे सुखा लेना चाहिए। रस रत्न समुच्चय के १४वे अध्याय के श्लोक ६ से ८ तक मे इसका वर्णन किया गया हे। लिखा हे —

''सहस्त्रपुटनै शुद्ध वज्राभमर्जुनत्वच ।
सत्चे विमर्दित सप्तदिन खल्वे विशोषितम्।।
छाया शुष्का वटी कार्या नाम्नेदमर्जुनाह्वयम्।
हृद्रोग सर्वशूलार्शो हल्लासच्छर्द्यरोचकान्।।''

मात्रा एव अनुपान— इस रस की एक-एक गोली सुबह-शाम मधु मे अच्छी तरह मिलाकर खाना चाहिए।

सहयोगी औषधियां एवं उपचार—

नागार्जुनाभ्र रस के साथ प्रवाल पिष्टी तथा जहरमोहरा पिष्टी का योग देने से और भी अच्छा लाभ पहुचाता हे। ऊपर से अर्जुन की छाल का क्वाथ या चूर्ण को दूध मे मिलाकर पीना विशेष रूप से हितकर है। अर्जुन की छाल का चूर्ण या क्वाथ अथवा अर्जुनारिष्ट भी भोजनोपरान्त देना चाहिए।

हृदयार्णव रस—

श्री वाग्भट्टाचार्य विरचित रस रत्न समुच्चय मे तथा भैषज्य रत्नावली मे भी इसका वर्णन आया है। रस रत्न समुच्चय के रचनाकार ने यद्यपि इसको कफज हृदय रोगो मे विशेष उपयोगी बतलाया है लेकिन विभिन्न सहयोगी ओषधियो, उपचारो एव अनुपान के साथ यह सभी प्रकार के हृदयरोगो मे लाभदायक साबित हुआ हे।

हृदयरोगो मे हृदयार्णव रस की उपयोगिता—

हृदयार्णव रस का हृदय रोगो पर वहुत अच्छा प्रभाव होता है। यह हृदय की कमजोरी, हृदय की अधिक ओर तेज धडकन तथा हृदय दर्द मे बहुत लाभ पहुचाता हे। हृदय की अनियमित गति को नियमित कर यह रस हृदय को सवल बनाता हे।

जब थोडा सा परिश्रम करने मात्र से हृदय की धडकन वहुत बढ जाती हो, मन चचल होता हो, मृत्यु का भय वना रहता है, नींद नहीं आती है, मूर्च्छा के लक्षण वने रहते हे, पसली और छाती मे दर्द रहता हे तथा नाडी की गति तेज रहती है तब इन अवस्थाओ मे हृदयार्णव रस का प्रयोग करने से बहुत लाभ पहुचता हे।

जब अधिक परिश्रम, भय, शोक या अत्यन्त गर्मी के कारण हृदय प्रभावित होकर हृदय की गति वद होने की अवस्था पहुच जाती हे तो इस हालात मे हृदयार्णव रस मृगश्रृग भस्म के साथ देने से अच्छा लाभ होता हे। हृदय मे तीव्र वेदना के कारण रोगी वेचेन हो गया हो ओर रोगी मृत्यु के समीप पहुचता मालूम पडे तो ऐसी अवस्था मे

भी हृदयार्णव रस मृगश्रृग भस्म के साथ दिया जाता है।

पित्तज हृदयरोगों में हृदयार्णव रस का उपयोग—

हृदयार्णव रस मे ताम्र भस्म होने के कारण यह कुछ उग्र होता है। इसलिए पित्तज हृद्रोगो में हृदयार्णव रस के साथ प्रवाल पिष्टी, मोती पिष्टी जैसी सौम्य औषधियो का उपयोग करना उत्तम पाया गया हे। साथ ही अनुपान में आवले या सेव का मुरब्बा देना चाहिए।

हृदय की कमजोरी में हृदयार्णव रस का उपयोग—

हृदय की कमजोरी मे तथा नाडी के क्षीण हो जाने की अवस्था मे हृदयार्णव रस के साथ ही साथ मुक्ता पिष्टी, मकरध्वज, सोना भस्म जैसी औषधियो का भी प्रयोग करना चाहिए। बहुत अच्छा काम करता है।

निर्माण विधि— रसरत्न समुच्चय के रचनाकार ने इसका निर्माण विधि का वर्णन करते हुए लिखा है—

"शुद्धसूत सम गध मृत्तताम्र तयो समम्।
मर्दयेत् त्रिफलाक्वाथै काकमाची द्रवैर्दिनम्।।"

अर्थात् शुद्ध पारा और शुद्ध गधक बराबर -बराबर लेकर दोनो की कज्जली बनाना चाहिए। फिर उन दोनो की मात्रा के योग के बराबर या यो कहे कि कज्जली के बराबर ताम्रभस्म मिलाकर सबको पीसकर त्रिफला के क्वाथ के साथ १ दिन तक घोटना चाहिए। फिर मकोय के स्वरस के साथ १ दिन तक घोटना चाहिए। तन्त्रकार ने फिर एक चने के बराबर की गोलिया बनाने का निर्देश दिया है। "चणकमात्रा वटी " किन्तु अब की नाप तोल से मेल खाते हुए १२५ मिलीग्राम की गोलिया बनानी चाहिए।

मात्रा एव अनुपान— रसरत्न समुच्चय के रचनाकार ने प्रतिदिन १ गोली प्रतिदिन प्रात काल मे खाने का निर्देश दिया है। किन्तु आजकल के विषाक्त पर्यावरण मे हृदय रोगो की भयकरता को ध्यान मे रखते हुए एक-एक गोली सुवह-शाम त्रिफला और मकोय के फल के क्वाथ के साथ देना ज्यादा उपयोगी पाया गया है। अनुपान के लिए क्वाथ वनाने हेतु १५ ग्राम त्रिफला चूर्ण और १० ग्राम मकोय फल मिलाकर २०० ग्राम पानी मे उबालना चाहिए। ५० ग्राम जलीयाश वचने पर उतारकर ओपधि द्रव्य को मिलाकर द्रव को छान लेना चाहिए। यही क्वाथ अनुपान मे देना चाहिए।

सहयोगी औषधियॉ— पित्तज हृद्रोगो में प्रवाल पिष्टी, मोती पिष्टी तथा जहरमोहरा पिष्टी ओर ऊपर से आवले या सेव का मुरव्वा, गुलाव जल आदि सौम्य ओषधि ाया एव पेय। हृदय की कमजोरी मे मुक्तापिष्टी, मकरध्वज, स्वर्णभस्म जेसी ताकत पहुचाने वाली ओषधिया भी देनी चाहिए। अर्जुन की छाल का चूर्ण क्वाथ या अर्जुनारिष्ट सामान्य रूप से सहयोगी औषधि के रूप मे प्रयोग करना चाहिए।

हृदय रोगों में सामान्य उपचार एवं औषधियां—

विश्राम— हृदयरोग से पीडित व्यक्ति को विश्राम की अधिक आवश्यकता होती हे। इसलिए परिश्रम वद कर विश्राम करना चाहिए। अगर कमजोरी वहुत ज्यादा हो तो चलना - फिरना कम कर देना चाहिए।

खरेटी की जड का चूर्ण या अर्जुन की छाल का चूर्ण दूध के साथ पीने से हृदय रोग मे लाभ मिलता हे।

हरड की छाल, वच, रास्ना, पिप्पली, सोठ, कचूर ओर पोहकरमूल को समभाग लेकर सभी का चूर्ण वनाकर १-१ चम्मच की मात्रा से खाने से हृदय रोगी को लाभ होता है।

पोहकरमूल, विजौरे की जड, सौट, कचूर, हरड की छाल, इन सबके कल्क मे क्षार, खटाई, घृत और लवण मिलाकर पीने से हृदय रोग मे लाभ होता हे।

हृदय रोग में पथ्यापथ्य—

हृदयरोग से ग्रसित व्यक्ति को खान-पान, रहन-सहन तथा व्यवहार मे सावधानी रखने की जरूरत हे। सामान्य पथ्य एव आचरणीय आहार व्यवहार तथा अपथ्य ओर त्याज्य आहार-व्यवहार इस प्रकार है।

पथ्य— शाली चावल, मूग, जो, जगली जीवो का मास, कालीमिर्च, पटोलपत्र, करेला।

अपथ्य— तैल, खटाई, छाछ, भारी अन्न, कषेले पदार्थ, धूप, क्रोध, परिश्रम, सभोग, चिन्ता, जोर से बोलना, अधिक मार्ग चलना।

हृद्रोग नाशक सिद्धौषधियाँ

लेखक - वैद्य पं. मोतीलाल शर्मा,
पिपलिया स्टेशन (म प्र) ४५८ ६६४

ईश्वर सर्वभूताना हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन, सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।।

स्वय कृष्ण भगवान ने अर्जुन से कहा सब जीवो के हृदयस्थान मे विराजमान है, यह समस्त तीर्थो से बडा तीर्थ हे, क्योकि चेतन शक्ति परब्रह्म परमात्मा के रूप मे हम सबके हृदय मे उसी प्रकार विद्यमान है, जिस प्रकार दूध के प्रत्येक भाग मे घृत की विद्यमानता होती है। वही उद्‌भव, स्थिति, प्रलयकर्ता ईश्वर जिस हृदय मे विराजमान हे, हमारे जीवन रूपी ससार का सचालन करता हे। उस हृदय की उपेक्षा करना या अनैसर्गिक गतिविधियो द्वारा हृदय के कार्यो मे बाधा पहुचना अनुचित है। हमे सदेव आयुर्वेद की आज्ञानुसार ही अपना आहार विहार, दिनचर्या, ऋतुचर्या एव सदाचार पूर्ण व्यवहार करके स्वस्थ एव प्रसन्न रहना चाहिए। तभी हृदय अपना कार्य चोबीसो घटे व्यवस्थित करते हुए हमे आत्म शुद्धि, आत्मसिद्धि, आत्मानुभूति, आत्मविश्वास, आत्मविज्ञान् एव अध्यात्मविज्ञान के साथ-साथ स्वास्थ्य लाभ वित्तलाभ एव चातुर्य लाभो से युक्त बनाये रखता हे, क्योकि यथा कर्म तथा फलम् एव यथा बीज तथा अकुर का विधान हमे न्याय एव अतीन्द्रिय क्षमताओ से युक्त बनाये रखता है तभी हमे उस हमारे अन्दर ही प्रत्यक्ष परब्रह्म परमात्मा की कृपा से देहसिद्धि ही नहीं लोह सिद्धि और आत्मसिद्धि तथा लोकेषणा के साथ परलोकेणाषा की सिद्धि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के रूप मे सम्यक् प्राप्ति उपलब्धि सम्भव है, वरना जीवन व्यर्थ एव भार स्वरूप हो जाता है। ऐसी ही सिद्धियो से युक्त भगवान् श्री नागार्जुन ने आयुर्वेद को रससिद्धि एव देहसिद्धि की कल्पनाओ को साकार करके सारे विश्व को विस्मित चमत्कृत कर दिया है। इस लेख मे उन्हीं नागार्जुन, रसशास्त्र के आद्याचार्य द्वारा प्रस्तुत सिद्धौषधियो मे से कुछ की बानगी, इस लेख मे हृद्रोगनाशक सिद्धौषधियो के रूप मे पाठको एव वैद्य बन्धुओ के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहा हूँ। आशा है सभी वर्ग के जिज्ञासु जन इससे लाभान्वित होगे।

१. *हेमामृतरस*— (आ० नि० हृद्रोग)

शोधित पारद १ भाग शोधित गन्धक १ भाग, स्वर्णभस्म अथवा स्वर्ण के वर्क चतुर्थ भाग, और रजत भस्म १ भाग, बग भस्म १ भाग, मिश्रित कर खरल मे डालकर कज्जली बनाकर १-१ रत्ती की गोलिया बनाकर स्वच्छ शीशी मे सुरक्षित रख ले। मात्रा १-१ गोली प्रात साय या आवश्यकतानुसार शर्करा तथा घी ओर मधु के साथ सेवन कराने से समस्त हृदय रोग सूर्योदय से अन्धकारवत् नष्ट होते है।

२. *हृद्रोगहरवटी*— (यो म हृद्रोगाधिकारात्)

शु पारद, रजत भस्म, ताम्र भस्म सम परिमाण मे लेकर खरल मे मर्दनकर पिष्टी का निर्माण का समभाग अभ्रक भस्म, पञ्चमाश शोधित गन्धक, ओर षोडशाश शु वत्सनाभ एव २ भाग शु पारद पिस्ती मे मिश्रित कर जम्बीरी के नींबू रस से १ दिन मर्दनकर मृत्तिकापात्र मे रख, त्रिफला, दशमूल एव शतावर के क्वाथो से ४-६ प्रहर पाककर, ३-३ रत्ती की गोलिया निर्माण कर छाया मे परिशुष्क करके, स्वच्छ शीशी मे भरकर ढक्कन लगाकर सुरक्षित रख ले। मात्र १-१ गोली। यथारोग तथाऽनुपान के साथ सेवन कराने से हृद्रोगो एव गुल्म को यह निवृत्त करती हे।

३. *सूर्यप्रभागुटिका*— (र सु हृद्रोगे)

उपयोग—

हृद्रोग शूलमुत्कम्प विषमज्वर नाशनम्।

कफरोगाश्च ये केचिद्द्वन्द्वजा सान्निपातिकी।।
ते सर्वे प्रशम यान्ति भास्करेण समो यथा।
रोग विद्राविणी कार्या गुटिका सूर्यवल्लभा।।

चित्रकमूल, त्रिफला, नीम की छाल, परवल, मुलहटी, तज, नागकेसर, अजवायन, अम्लवेत, चिरायता, दारुहरिद्रा, इलायची, नागरमोथा, पित्तपापडा, शुद्ध तूतिया, कुटकी, भारगी, चव्य, पद्मकाष्ठ, मयूरशिखा, पीपल, मरिच, जीरा देवदारू, पत्रज, कुडा की छाल, रास्ना, जवासा, गिलोय, निसोत, मजीठ, भिलावा, तालीसपत्र, कोकम, तीनो नमक धनिया, अजमोद, कारवी (मराटी) स्वर्णमाक्षिक, जायफल, वशलोचन, असगन्ध, अनारदाना, शीतलचीनी, खस, दोनो क्षार, रेणुका प्रत्येक १-१ पल, शिलाजीत ८ पल, शुद्ध गुग्गुल दो पल, मिश्री १ प्रस्थ, घी ४ पल, लोह भस्म ८ पल ओर मधु ८ पल लेकर, काष्ठौषधियो का वस्त्रपूत चूर्ण बनाकर, शिलाजीत और गूगल को एक प्राण करके, शर्करा, घृत एव मधु मिलाकर, घृत स्निग्ध पात्र मे सुरक्षित रख ले।

मात्रा— १-१ तोला समय अथवा यथोचित अनुपान के साथ सेवन करे।

उपयोग— इसे विधिवत् सेवन कराने से उरुस्तम्भ, वातरोग, लकवा, गृध्रसी, विद्रधि, श्लीपद, गुल्म, पीलिया, हलीमक पचकास, दारुण, मूत्रकृच्छ्र, गलग्रह, आनाह, पथरी, अण्डवृद्धि, ग्रहणी, अपबाहुक, अरुचि, पार्श्ववेदना, उदरशूल व रोग, भगन्दर, हृद्रोग, शूल, हृद्दोर्बल्य, उत्कट, कम्प, विषमज्वर उर क्षत, दुस्तरमुख रोग, प्रमेह, रक्तपित्त, वातरक्त, कामला, मन्दाग्नि, वातरोग, पित्तरोग, समस्त कफ रोग, द्वन्द्वज एव सन्निपातक समस्त रोगो को यह निवृत्त करती हे तथा आयु ओर पुष्टि की वृद्धि करती हे।

सूर्य चन्द्रप्रभा वटी— (ग० नि० सर्वरोगो)

हृद्रोग मूत्रकृच्छ्रञ्चश्वयथु ग्रहणी गदम्।
अतिस्थल्य अतिकार्श्यञ्चणाव्रणान्नाडीव्रणानपि।
विशति श्लेष्मकाश्चेव ससृष्टान्सान्निपातिकान्।
तास्रान्प्रशमयेत्येष वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा।
मेधास्मृतिकान्ति मनामयत्व मायु प्रकर्ष पवनानुलोम्यम्।
स्त्रीपुप्रहर्ष वलमिन्द्रियाणामग्नेश्च कुर्याद्विधिनोपयुक्ता।

सोठ, मिर्च, पीपल, हरड, बहेडा, आवला, तज, पत्रज, इलायची, हल्दी, दारुहल्दी, कुटकी, चिरायता, कचूर, वच, विडग, चित्रकमूल, तालीसपत्र, भारगीमूल, पद्मकाष्ठ, जीरा, सज्जी, यवक्षार, पिप्पलीमूल, सेधानमक, सोवर्चल, समुद्र नमक, चिरफल, देवदारु, वला, चव्य, धनिया, गजपीपल, कुडा की छाल, अतीस, दन्तीमूल, निसोत, पोहकरमृल, गिलोय, प्रत्येक १-१ तोला स्वर्णमाक्षिक भस्म, वशलोचन ६-६ माशे, अभ्रक भस्म १ तोला, लोह भस्म २ तोले, शिलाजीत ३ तोले, गूगल ४ तोले लेकर सबका श्लक्षण चूर्ण कर गूगल ओर शिलाजीत के साथ कूटकर।

अनुमानत मधु डालकर १-२ माशे की गोलिया निर्माण करके सुरक्षित रख ले।

मात्रा— १-१ गोली मधु मे मिलाकर सेवन करावे।ऊपर से मीठी तक्र, दूध, वेर का क्वाथ, शर्वत, घृत, गोमूत्र, खट्टा मीठा अनार का रस किसी के भी साथ सेवन कराने से निम्न लाभ होते हे।

उपयोग— कास, श्वास, शोष, अरुचि, पार्श्ववेदना, अर्श, कामला, प्रमेह पीलिया, हलीमक, हृद्रोग, मूत्रकृच्छ, शोथ, ग्रहणी, यकृतप्लीहावृद्धि कृमि, ग्रन्थि, भगन्दर, श्लीपद, गण्डमाला, व्रण, नाडी व्रण, अति स्थाल्य आर अति कार्श्य, विर्द्राधि, प्रमेह पिडिका, नासिका, नेत्र, शिर मुख के दुस्तर रोग, रक्तपित्तदाव स्वरभग, ज्वर सान्निापातिक, विषमज्वर, पित्तज्वर, द्वन्द्वज ओर सान्निपातिक ज्वर, वीस प्रकार के, श्लेष्मरोग, प्राकृत्र-वेकृत समस्त रोगो को नष्ट कर, मेधा, स्मृति, कान्ति, आयु, पुरुषत्व एव इन्द्रियो को सबलता प्रदान करता हे। यह वायु का अनुलोमक हे।

सूत भस्म योग— (भे सा हृद्रोगे)

हींग, सोठ, यवक्षार, हरड पिप्पली, विडनमक चित्रक, कूठ, अरणी, सोवर्च, पुष्करमूल, कुडा की छाल, इनके क्वाथ के साथ, १-१ रत्ती सूतभस्म का प्रयोग करने से हृद्रोग ओर मन्दाग्नि निवृत होते हे।

सुवर्णसमकम्— (ग नि) उपयोग—

सुवर्ण समक चूर्ण सर्वरोगार्ति भेषजम्।
सर्वोदरे प्लीहाशोष गुल्म हृद्रोगनाशनम्।।

स्वर्णभस्म, मरिच, सुहागा, यवक्षार त्रिफला, वच देसी एव खुरासानी अजवायन, खरजवाइन, काली जीरी, भुनी हींग, डासरिया, (शमाक) अम्लवेत, धनिया ववइ

त्रायमाण, अनारदाना, हरड, इन्द्रयव, सोठ, कटुजीरी, सेन्धानमक, प्रत्येक १-१ भाग, निसोत, अगुलिया थूहर, दन्तीमूल, कमीला, कालादाना, हरड, सत्यानाशी मूल, प्रत्येक २-२ भाग लेकर, सूक्ष्म चूर्णित कर, बकरी या गव्य मूत्र से भावितकर दुगुनी शर्करा मिलाकर सुरक्षित रख ले।

मात्रा— २-३ माशे गौमूत्र, त्रिफलाक्षार, मासरस, मद्य अथवा कोष्णजल किसी के भी साथ पान कराने से निम्न लाभ होते हे।

उपयोग— हृद्रोग, उदर, प्लीहा, शोथ, गुल्म, वाताष्ठीला, आनाह, सर्वागशोथ, हलीमक, कामला, पीलिया, प्रमेह, ज्वर, गुल्म प्रभृति रोगो को नष्ट करता हे।

सुधासार रस— (र०र०)

दीपनो पाचनो ग्राही हृद्योरुचिकर स्तथा।

शुद्ध गन्धक १ पल ओर शुद्ध पारद की कज्जली वनाकर घृत स्निग्ध कडाही मे वेर के कोयलो पर गलाकर १ पल निश्चन्द्र अभ्रक भस्म डालकर लकडी से मिलाकर एक प्राण कर, गोवर पर रखे हुए कुरेया के पत्तो पर डालकर पर्पटी वना ले। स्वत ठण्डा हो जाने पर निकालकर तेद के कोमल फल, गूलर का दूध, सोनापाठा की छाल, दूधी, अनार का पुटपाक, काली कोम्वाई की मूल, कुडे की छाल के स्वरसो अथवा क्वाथ से, १-१ वार भावित करके सोठ आर कुकरोधे की जड का चूर्ण १-२ पल मिलावे। फिर नागरमोथा, इन्द्रजो, अजवायन, चित्रक, मोचरस, जीरा ओर शुद्ध वत्सनाग १-१ कर्ष मिलाकर सोठ के क्वाथ से ७ बार भावित कर ३-३ रत्ती की गोलिया वनाकर सुरक्षित रख ले।

मात्रा— १-१ गोली सोठ ओर नागरमोथा के साथ (पुटपाक से) सेवन कराने से हृद्रोग, मन्दाग्नि, अरुचि, दु साध्य, त्रिदोपातिसार, आमातिसार, ज्वरातिसार, अतिसार युक्त विशूचिका, ग्रहणी, हिचकी, आनाह आदि को निवृत्त करता हे। वालक ओर वृद्धो को धनिया वीज के वरावर मात्रा मे दे। गोतक्र अथवा दधि के साथ पथ्य दे। कच्चा केला, वेल, सुपारी, अमचूर, मुलहठी ओर वेगन ये हितकर ह।

हृदयेश्वर रस—

(आ० वि० हृद्रोगे (पार्थम्मसारसर्पिषाचन्दद्यात् हृद्रोगे शान्तये)

शोधित पारद ओर गन्धक, लोहभस्म, अभ्रक भस्म ओर प्रवाल भस्म ओर मुक्तापिष्टी, सम परिमाण मे लेकर कज्जली वनाकर घृत कुमारी के रस से एक दिन खरलकर २-२ रत्ती की गोलिया वनाकर सुरक्षित रखे। मात्रा— १-१ गोली घी डालकर सफेद अर्जुन के क्वाथ से साथ सेवन कराने से यह हृद्रोग को नष्ट करता हे।

सूतराज रस—

(र० हृद्रोगे) (हृद्व्याधिवातान्निहन्ति)

शुद्ध पारद ओर गन्धक, मुक्तापिष्टी सब समाश मे लेकर विजोरे के रस मे मर्दन कर गोलक बनाकर शराव सम्पुट मे बन्द करके एक प्रहर पर्यन्त लवण यन्त्र मे पाक करे। स्वत शीतल हो जाने पर निकालकर सुरक्षित रख ले।

मात्रा— ३-३ रत्ती।

अनुपान— मधु।

उपयोग— इसके सेवन कराने से हृद्रोग, यक्ष्मा, पीलिया, अर्श, खासी, धातरोग प्रभृति रोग निवृत्त होते हे।

सालमपाक—

(रसायन स० (प्रमेह वातरोगञ्च हृद्रोग मपिनाशयेत्)

सालम के चूर्ण को १ प्रस्थ लेकर १६ सेर दूध मे डालकर पकावे। अधओटा दूध हो जाने पर ४ सेर मिश्री पीसकर चाशनी तेयार कर ले। तत्पश्चात् निम्न द्रव्यो का चूर्ण वनावे।

जावित्री, लोग, मुलहठी २-२ कर्ष पिप्पली, पिप्पली मूल, नागकेशर, सोफ, गोखरू, मरिच, द्राक्षा, असगन्ध, शतावर, लोहभस्म, अभ्रक भस्म, वग भस्म, दोनो जीरे, धनिया, नागरमोथा, १ १ कर्ष, इलायची ३ कर्ष अखरोट ओर मुसली १-१ पल, लालचन्दन ५ माशे शुद्ध कपूर २ माशे, कस्तूरी ३ माशे, जटामासी ५ माशे केशर ६ माशे तज ५ माशे, कालाअगर ५ माशे, सवको श्लक्ष्ण चूर्णित करके मिश्रित कर उतारकर जमा दे।

मात्रा— अग्निबल देखकर १ तोले से ५ तोले तक सेवन करावे। दुग्धपान करावे। यह अत्यन्त वाजीकरण ह। कान्ति ओर पुष्टि की वृद्धि करता हे। इससे प्रमेह वातरोग आर हृद्रोग नष्ट होते हे। प्रतिदिन सेवन से अनेक स्त्रियो के

साथ रमण कर सकता हे।

सप्तायसम—

(लो०प०) हरति शोथ हृदयामयपाण्डुताक्सन मेहमथ ग्रहणीगदम्

शुद्ध गन्धक और शुद्ध पारद, ताम्र भस्म, लोह भस्म, अभ्रक भस्म, रजत भस्म, शुद्ध शिलाजीत समभाग लेकर पारद गन्धक की कज्जली मे मिश्रित कर वरुणादिगण ओर त्रिफला के क्वाथो से धूप मे ३-३ अथवा ७-७ वार भावित कर समभाग मधु मे मिलाकर सुरक्षित रख ले।

मात्रा— ३-३ रत्ती यथारोग तथा अनुपान के साथ सेवन कराने से हृद्रोग, सोपद्रव, राजयक्ष्मा, श्वास, शोथ, पीलिया, खासी, प्रमेह, ग्रहणी आदि रोगो को नष्ट करता हे।

सम्मोह लोहम—

(र० च०) कामलापाण्डु रोगञ्च हृद्रोग शोथमेवच।
तान्सर्वान्नाशयेदाशुवलवर्णाग्निवर्धन

त्रिकटु, त्रिफला, चित्रक, विडग, लोह भस्म और अभ्रक भस्म तुल्याश मे लेकर सूक्ष्म चूर्ण कर सुरक्षित रख ले।

मात्रा— १-१ माशा।

अनुपान— घृत

उपयोग— हृद्रोग, कामला, पीलिया,शोथ, भगन्दर, कुष्ठ, कृमि, मन्दाग्नि, अरुचि, वलवर्णीग्नि का हास आदि रोगो को निवृत करता हे।

सप्ताविंशिति गुग्गुल— (ग० नि० हृद्शूले)

हृत्पृष्ठ कोष्ठ कटिवक्षण कुक्षिकक्षा
शूलानि नाशयति कुष्ठकिलास रोगान्।

सज्जी, सुहागा, सोठ, मिर्च, पिप्पली, हरड, वहेडा, आवला, हल्दी, दारुहल्दी, तीनो नमक, तुम्वरु, इलायची, चित्रक, पिप्पलीमूल, शुद्ध भिलावा, चव्य, कूठ, शुद्ध, स्वर्णमाक्षिक, पोहकरमूल, विडग, अतीस, प्रत्येक सम परिमाण मे ले ओर सवके समान गज पीपल का चूर्ण लेकर सवको चूर्णित कर मिश्रित कर सवके वरावर शुद्ध गुग्गुल को घृत के योग से कूटकर गुग्गल का द्रव वनाकर धीरे-धीरे समस्त चूर्ण इसमे मिलावे ओर ३-३ माशे की गोलिया वनाकर सुरक्षित रख ले।

मात्रा— १-१ गोली।

अनुपान— जल, दूध, काजी ओर मूग के यूप से या यथा रोग तथा अनुपान के साथ सेवन करावे।

उपयोग— यह हृदयशूल, पृष्ठशूल, कोष्ठ, कटि, वक्षण, कुक्षि के शूल, पीलिया, क्षय, अपस्मार, ऊर्ध्ववात, उन्माद, आमवात, विकार, शोथ, प्रमेह कुष्ठ एव क्षत को नष्ट करता हे।

शंकरभैरव रस— (वै० चि० हृद्रोगे)

(हृद्दाह हन्ति शेध्येण रस शकरभेरव)

ताम्रभस्म, फोलाद भस्म ओर पारद भस्म, सज्जी, सुहागा और यवक्षार प्रत्येक सम परिमाण मे लेकर पञ्चकोल के क्वाथ से १ प्रहर स्वेदन कर कुक्कुट के पित्त से १ वार भावित कर १-२ माशे की गोलिया वनाकर सुरक्षित रख लो। इनमे से १-१ गोली मधु ओर पीपल के साथ सेवन कराने से यह हृद्दाह को शीघ्र नष्ट करता हे।

षण्मुख रस—

(र० को० सर्वरोगे)

श्वासकासादि हृद्रोग पीनसादि प्रशान्तये।
दिव्यदेह भवेन्मर्त्य व्याधि विनाशन ।

नाग भस्म, वग भस्म, अभ्रक भस्म, लौह भस्म ओर ताम्र भस्म अथवा इन सवका सिदूर या रस सिदूर समभाग लेकर १-२ दिन मर्दन करके सुरक्षित रखे।

मात्रा— १-१ रत्ती।

अनुपान— काले केले के फल मे रखकर खिलावे ओर मधुर अन्नपान सेवन करावे। इस प्रकार १ वर्ष के निरन्तर सेवन से वुढापे और समस्त व्याधियो से मुक्त होकर दिव्य देह हो जाता हे। क्षय मे काली गाय का दूध ओर श्वास कास पीनस इनकी निवृति हेतु बिजोरे के रस से आधे मण्डल तक सेवन करावे। इस प्रकार यह रस अनुपान भेद से समस्त रोगो को नष्ट करता हे।

षण्मुख लोहम्—

(लो० प० सर्वरोगे)

हरतिहृज्जठरामय कामला ग्रहणि कामयमाग समीरणम्

ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, स्वर्ण भस्म, लोह भस्म, शुद्ध पारद ओर शोधित गन्धक समानाश मे लेकर नीलवर्ण कज्जली वनाकर घृत चुपडकर वेर के कोयलो पर रखी

हुई कडाही मे गलाकर बनाले।

मात्रा— १-२ रत्ती तक।

अनुपान— घृत और मधु के साथ सेवन कराने से हृदय ओर उदर के रोग, कामला, ग्रहणी, आमवात, अर्श, प्रमेह, मन्दाग्नि, रक्तपित्त और रक्तप्रदर को नष्ट करता है।

शूलध्वंसी रस— (र० शूलाधिकारे)

शुण्ठ्याम्बुनोऽनुपातव्य हृत्पार्श्वजठरञ्जयेत्)

पारद भस्म, लोह भस्म, ताम्र भस्म, बग भस्म, समभाग लेकर नागरमोथा ओर त्रिफला के क्वाथ से ३-३ दिन मर्दन कर ६-६ रत्ती की गोलिया बनाकर सुरक्षित रख ले। इनमे से १ गोली एरण्डमूल, मरिच, एव तीनो नमक के साथ अथवा नींबू क्षार के अथवा सहजने के क्वाथ, समुद्र नमक, घृत अथवा मरिच और घी के साथ देने से कफज, द्वन्दज ओर त्रिदोषज शूल नष्ट होता है। कफरोग मे पचकोल से पेया पथ्य हे। विदारी और अनार के रस से त्रिकटु और नमक मिलाकर देने से अथवा घी ओर सैधव के साथ, बेल, एरण्डमूल के क्वाथ के साथ सोठ ओर चित्रक और भुनी हींग देने से द्वन्द्वज ओर त्रिदोषज शूल नष्ट होता है अथवा गोमूत्र के साथ सिद्ध किये हुए मण्डूर को त्रिफला ओर मधु के साथ देने से समस्त दोषज शूल निवृत्त होते हे।

भुनी हींग, त्रिकटु ओर शख भस्म समभाग लेकर एक कर्ष की मात्रा गरम जल के साथ देने से त्रिदोषज शूल नष्ट होता हे। कफ शूल के लिए जो कर्तव्य है, उसका आमशूल मे अनुष्ठान करने से लाभ होता है। भटकटैया, वनभण्टा, गोखरू, एरण्डमूल, मुसली, ईख की गाठ का क्वाथ मधु मिलाकर देने से पित्तज एव वातशूल नष्ट होता हे। त्रिफला, नीम छाल और कुटकी का क्वाथ मधु मिलाकर पान कराने से दाह ओर वमन युक्त श्लेष्म पित्तज शूल नष्ट होते हे। सोठ, भुनी हींग और सोचर्चल के साथ वात श्लेष्म शूल को दूर करता हे। हृदय, पार्श्व आर जठरशूल को सोठ के क्वाथ के साथ देने से नष्ट करता है। वात प्रधान मे निरूह वस्ति, पित्त मे क्षीरपान और रेचन कराना, कफ मे वमन ओर तिक्त कषाय का सेवन कराना चाहिए।

शंखवटी— (र० क०) अग्निमाद्य

शु० पारद और गन्धक १-१ भाग, शुद्ध वत्सनाभ २ भाग, भुनी हींग, मरिच ४-४ भाग, पीपल, सोठ १२-१२ भाग, शख भस्म ओर सज्जी ५-५ भाग लेकर सूक्ष्म चूर्ण कर नींबू के रस से ६-७ बार भावित कर बेर की गुठली के समान गोलिया बनाकर छाया मे शुष्क कर सुरक्षित रख ले।

मात्रा— १-१ गोली यथोचित अनुपान के साथ सेवन कराने से सब प्रकार के अजीर्ण, शूल, अर्श, ग्रहणी, गुल्म, उदावर्त, हृदय की जकडन, आनाह, अष्ठीला, प्रभृति समस्त रोगो को निवृत कर कान्ति ओर अग्नि की वृद्धि करती है।

शूल दावानल रस— (व० रा० हृद्शूले)

हृच्छूल पार्श्वशूलञ्चाऽजीर्ण शूलञ्च गुल्मजम्।
पथ्य नित्य प्रयुञ्जीत सर्वशूल निवर्हणम्।।

इमली का क्षार, बग भस्म, पाचो नमक, पाचो क्षार (सज्जी, सुहागा, यवक्षार, नोसादर और शोरा) २-२ कर्ष , मरिच, पीपल, सोठ और भुनी हींग २-२ पल, शुद्ध पारद, गन्धक और शुद्ध वत्सनाभ, ताम्रभस्म २-२ कर्ष लेकर सबको सूक्ष्म चूर्ण करके पारद, गन्धक की कज्जली मे मिलाकर जमीरी के रस मे ३ दिन मर्दन कर बेर के समान गोलिया बनाकर सुरक्षित रख ले।

मात्रा— १-१ गोली पञ्चगव्य और घृत के साथ सेवन करने से सब प्रकार के शूल शान्त हो जाते हे। भोजनमे घी और रोटी दे अथवा लहसुन डालकर ओटाया हुआ गव्य दुग्ध या बकरी का दूध पान करावे। इसके सेवन करने से तथा यथार्थ पथ्य पालन करने से हृदयशूल, पार्श्वशूल, अजीर्णशूल, गुल्मशूल, आनाह, प्लीहा, उदर, पथरी, शक्कर, क्षय, प्रभृति को नष्ट करता है।

शंखवटी— (भै० र० अग्निमान्द्ये)

हृद्रोग पाण्डुरोगञ्च विबन्धानुदरे स्थिताम्।
तान्सर्वान्नाशयत्याशु भास्करस्तिमिरो यथा।।

पीपल, चित्रक, दन्तीमूल, शुद्ध पारद, ओर शुद्ध गन्धक, पीपल, सज्जी, सुहागा, यवक्षार, पाचो नमक, मरिच, सोठ, शुद्ध वत्सनाभ, अजमोद, गिलोय, भुनी हींग, इमली का क्षार, प्रत्येक समाश मे लेकर, सबसे दुगनी शख भस्म लेकर, सबको सूक्ष्म चूर्णित करके पारद, गन्धक की कज्जली मे मिश्रित कर नींबू के रस की ६-७ भावना देकर बेर की गुठली के बराबर गोलिया बनाकर सुरक्षित रखो।

मात्रा— १-१ गोली

अनुपान— अमलतास या अनार के रस के साथ या छाछ, दही का पानी, मद्य, नाडी, काजी, गरम जल, खरगोश हरिण आदि का मास आदि अनुपानो के साथ दे।

उपयोग— हृद्रोग, पाण्डु, विवन्ध, मन्दाग्नि, अर्श, ग्रहणी, कुष्ठ, प्रमेह, भगन्दर, प्लीहा, पथरी, श्वास, खासी, जलोदर ओर कृमि को नष्ट करता हे।

शंखवटी— (भै० र०) (हृद्रोगे)

जयेदिय फुफ्फुसजान्रोगान्हृदयसम्भवान्।
वटी श्री शकर प्रोक्ता बलपुष्टि विवर्धिनी।।

शुद्ध पारद ४ भाग, शुद्ध गन्धक ८ भाग, लोह भस्म ३ भाग, नागभस्म २ भाग लेकर नीलवर्ण कज्जली वनाकर, मकोय, चित्रक, अदरक, जयन्ती, अडूसा, वेलगिरी ओर अर्जुन के रसो या क्वाथो से १-१ दिन मर्दन कर २-२ रत्ती की गोलिया बनाकर छाया मे परिशुष्क कर सुरक्षित रख ले।

मात्रा— १-१ गोली

अनुपान— कोष्ण जल।

उपयोग— इससे फुफ्फुस और हृदय के रोग, भयकर जीर्ण ज्वर, बीसो प्रमेह, कास, श्वास, आमवात, दुस्तर सग्रहणी, कृशता, निर्वलता आदि नष्ट होते हे।

आरोग्धवर्धिनी— (र० र० स० कुष्ठाधिकारे)

पाचनी दीपनी पथ्याह हृद्या मेदो विनाशिनी।
सर्वरोग प्रशमनी श्री नागार्जुन चोदिता।।

शुद्ध पारद, गन्धक, लोह भस्म, अभ्रक भस्म और ताम्र भस्म प्रत्येक १-१ भाग, त्रिफला २ भाग, शिलाजीत ३ भाग, गूगल, चित्रकमूल ४ भाग, कुटकी सबके वरावर लेकर, सबका शलक्ष्ण चूर्ण करके २ दिन पर्यन्त नीमपत्र रस मे मर्दन करके फिर जगली वेर के समान गोलिया वनाकर सुरक्षित रख लो।

४० दिन तक इसका निरन्तर सेवन करने से यह कुष्ठो को मूलत नष्ट करती है। पित्त वात एव कफज सभी प्रकार के ज्वरो को यह निवृत कर देती है। यह पाचन ओर दीपन हे। मनोहर हे। मेद को कम करती है। मल शुद्धि करती हे ओर क्षुधा वृद्धि करती हे। यह हृद्य हे तथा समस्त रोगो को नष्ट करती है। इसे भगवान नागार्जुन ने निर्माण किया हे।

चिन्तामणि रस— (भै० र०) हृद्रोगे

हृद्रोगान्निखिलान्हन्ति व्याधी फुफ्फुसजानापि।
वलपुष्टि करो हृद्यो रसचिन्तामणि स्मृत ।।

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, लोह भस्म, वग भस्म, शिलाजीत प्रत्येक समभाग, स्वर्ण भस्म, पारद से चौथाई भाग, स्वर्ण से द्विगुण रजत भस्म लेकर पारद गन्धक की कज्जली वनाकर सवको एकत्र मिश्रित कर, चित्रक, भागरा, अर्जुन प्रत्येक के रस से ७ ७ वार भावित करके १-१ रत्ती की गोलिया वनाकर छाया मे परिशुष्क कर ले।

मात्रा— १-१ गोली।

अनुपान— गेहूँ का क्वाथ।

उपयोग— इससे सेवन करने से समस्त हृद्रोग, वातव्याधि, फुफ्फुस व्याधि, वीसो प्रमेहो, श्वास कासादि दुस्तर रोग नष्ट होकर पुरुष सवल होता हे।

नागार्जुनाभ्रम्— (र०चि०हृद्रोग)

हृद्रोग सर्वशूलर्शोहल्लासच्छद्यरोचकान्।
हन्त्यन्यानपि रोगाश्च वल्य वृष्य रसायनम्।।

सहस्रपुटी वज्र अभ्रक को अर्जुन छाल के द्रव्य से सात दिनो तक मर्दन करके ३-३ रत्ती की गोलिया वनाकर छायाशुष्क कर सुरक्षित रख ले। मात्रा— १-१ गोली, यथारोग तथा अनुपान के साथ सेवन से हृद्रोग, समस्त शूल, जी का मिचलाना, वमन, अरुचि, अतिसार, मन्दाग्नि, रक्तपित्त, क्षत, क्षय, शोथ, उदर रोग, अम्लपित्त, विषमज्वर, बलवीर्य का अभाव आदि को नष्ट कर आयु की वृद्धि करती हे।

विश्वेश्वर रस— (भै० र० हृद्रोगाधिकरो)

अय विश्वेश्वरो नामरस फुफ्फुसजान्गदान्।
हृद्रोगाश्च जयेत्र्वान्- सशयोऽत्रनविद्यते।।

स्वर्ण भस्म, अभ्रक भस्म, लोह भस्म, वग भस्म, मे शुद्ध पारद ओर गन्धक, वैक्रान्त भस्म, प्रत्येक १-१ तोला लेकर नीलवर्ण कज्जली निर्माण कर, कर्पूर जल से २-३ वार भावित करके १-१ रत्ती की गोलिया बनाकर सुरक्षित रख ले।

मात्रा— १-१ गोली समय अथवा रोगोचित अनुपानो के साथ सेवन कराने से हृदय ओर फुफ्फुस के समस्त रोगो

को यह शान्त करता है।

हृदयार्णव रस— (भै० र० सम्पूर्ण हृदयरोगा)

हृदयार्णवन्वरामाद्य हृदगदमनोरस ।।

शु० पारद, ताम्र भस्म, गन्धक, समाश मे एकल मिश्रित कर त्रिफला के क्वाथ तथा मकोय के रस मे मर्दन करके १ १ रत्ती की वटी निर्माण कर सुरक्षित रख ले। इसके सेवन से सम्पूर्ण हृदयरोग नष्ट होते है। यह योग विशेषत मेदोवृद्धि जन्य हृद्रोग के लिए अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुआ हे। अनुपान— यथा रोग तथा अनुपान से दे।

त्रिनेत्रो रस— (भै० र०) (हृद्रोगे)

वातज पित्तज श्लेष्म सम्भूत वा त्रिदोषजम्।
कृमिज चापि हृद्रोग निहन्त्येव न सशय ।।

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म तीनो को समभाग मिश्रित करके अर्जुन की छाल के क्वाथ के साथ २१ बार भावित करके १-१ रत्ती की गोलिया बनाकर सुरक्षित रख ले।

मात्रा— १-१ गोली।

अनुपान— मधु के साथ।

उपयोग— इसके सेवन से वातिक, पैत्तिक, श्लेष्मिक, त्रिदोषज एव कृमिजनित हृद्रोग शान्त होते है।

कल्याण सुन्दरो रस— (भै० र०)

उरस्तोय हृद्रोग वक्षो वातमुरोऽभ्रकम्।
फौफ्फुसान्हन्ति रोगाश्च रस कल्याणसुन्दर ।।

रस सिन्दूर, अभ्रक भस्म, रौप्य भस्म, ताम्र भस्म, स्वर्ण भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, प्रत्येक समाश मे लेकर एकल मिश्रित करके १ दिन चित्रक क्वाथ से मर्दन करके हस्तिशुण्ठी के रस से सात बार भावित कर १-१ रत्ती की गोलिया बनाकर छाया मे सुखाकर सुरक्षित रखे।

मात्रा— १-१ गोली।

अनुपान— कोष्ण जल से।

उपयोग— इसके सेवन से हृद्रोग, उरस्त्रोय, वक्षोवात एव वक्ष में हुआ रक्तसञ्चय प्रभृति रोग एव अन्यान्य फुफ्फुसीय व्याधिया नष्ट होती है। यह जीर्ण हृदय रोगो मे तथा श्वास जन्य हृद्रोग मे प्रशस्त है। यह हृदय का वायु तथा रक्त हृदय से रक्त निकाल कर दूर करता है।

रत्नाकर रस— (आ० नि०)

वातिक पैत्तिक चापि श्लेष्मक सन्निपातिकम्।
कृमिज हृद्गदचापि कौष्ठिक पृथक तथा।
हन्त्यय निखिलान् रोगान् वृक्ष वृक्षामिन्द्राशनिर्यथा।।

स्वर्ण भस्म, हीरक भस्म, वेकान्त भस्म, बग भस्म, अभ्रक भस्म, पारद, गन्धक की कज्जली निर्माण करके सबको उसमे एक मिश्रित कर सबके सम परिमाण मे लोह भस्म मिलाकर अर्जुन की छाल के द्रव से ३ बार भावित करके ओर पिण्ड बनाकर लाल चावलो की राशि मे दबा दे। १ सप्ताह पश्चात् इसे निकालकर मटर के बरावर गोलिया बनाकर छाया मे सुखाकर सुरक्षित रख ले।

मात्रा— १-१ गोली।

अनुपान— अर्जुन क्वाथ, अर्जुनारिष्ट, गेहू का क्वाथ, जौ का क्वाथ, घृत अथवा यथा रोग तथा अनुपानो के साथ सेवन करावे।

उपयोग— इसके सेवन से सभी प्रकार के हृद्रोग, हृदयावरण जन्य विकृति, हृदयाक्षेप, हृदय पर मेदस का सचय एव हृद् मासपेशी का क्षय, हृदयायाम या तनाव, राजयक्ष्मा, वातपित्तकफ जन्य विकार नष्ट होते ह। यह हृद्रोगो मे अनुभूत ओषधि हे।

पञ्चानन रस— (भै० र०) (पेत्तिक हृद्रोग)

शुद्ध पारद एव गन्धक की समभाग कज्जली वनाकर आवला, द्राक्षा, मुलहठी तथा खजूर प्रत्येक के क्वाथ से एक दिन मर्दन कर वटी बनाकर सुरक्षित रख ले।

मात्रा— १-१ रत्ती ।

अनुपान— आवले का चूर्ण शर्करा युक्त। यह पेत्तिक हृद्रोग मे आशु लाभ करता हे।

पार्थाद्यारिष्ट— (भै० र०) (हृत्फुफ्फुसीय रोगे)

हृत्फुफ्फुसगदान् सर्वान् हन्त्यत्यय भवेत्पार्थाद्याष्टक ।

अर्जुन की छाल १० सेर, द्राक्षा ५ सेर, महुआ पुष्प २ सेर, इन्हे एकत्र मिश्रित कर ८ द्रोण जल मे पाक करे। २ द्रोण शेष रहने पर उतार छानकर इसमे १० सेर गुड घोलकर २ सेर धायपुष्प का प्रक्षेप दे। फिर इसे १ मास पर्यन्त मृत्तिकापात्र मे विधिपूर्वक वन्द कर रखे।

मात्रा— ढाई तोले से चार तोले तक।

उपयोग— इसके सेवन से हृदय ओर फुफ्फुस रोगो की निवृति होती हे तथा बल एव वीर्य की वृद्धि होती ह।

प्रभाकर वटी— (भै० र०) (हृद्रोगान् निखिलाञ्जयेत्,

स्वर्णमाक्षिक भस्म, लोह भस्म, अभ्रक भस्म, वशलोचन, शिलाजीत इन्हे समान परिमाण मे एकल मिश्रित कर अर्जुन के क्वाथ से भावित कर २ रत्ती की गोलिया छाया शुष्क कर सुरक्षित रखे। यह वृक्कविकार वाले हृद्रोग मे प्रशस्त हे।

प्रवाल पञ्चामृतो रस— (यो० र०)

अजीर्ण मुद्गार हृदामयघ्न योगोत्तम सर्वगदोपहारी।।

मूगा भस्म २ भाग, मोती भस्म, शख भस्म, मुक्ताशुक्ति भस्म, पीत कपर्द भस्म १-१ भाग, प्रत्येक लेकर सवके तुल्य अर्क दुग्ध डालकर मिट्टी के पात्र मे भर, मुखमुद्राकर गजपुट की आच दे। स्वत शीतल हो जाने पर निकालकर ढक्कन वाली शीशी मे सुरक्षित रख ले।

मात्रा— तीन-तीन रत्ती सुवह- शाम।

अनुपान— मधु अथवा यथारोग अनुपानो के साथ सेवन करावे।

उपयोग— हृद्रोग, गुल्म, उदर, प्लीहा, वद्धोदर, कास, श्वास, मन्दाग्नि, कफवात जन्य रोग, अजीर्ण, उद्‌गार, ग्रहोपद्रक, प्रमेह, मूत्र रोग, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, प्रभृति रोगो को निवृत करता ह। रोगोचित पथ्य पालन करावे। यह यथोचित अनुपानो से सव रोगो को नष्ट करती हे।

योगेन्द्र रस— (वातपित्त विकारे)

रस सिन्दूर, स्वर्ण भस्म, मुक्तापिष्टी, वग भस्म, अभ्रक भस्म आदि के मिश्रण से निर्मित योगेन्द्र रस मात्रा १-२ गोली उचित अनुपान मुक्तापिष्टी, गोमेद मणि पिष्टी, पन्ना पिष्टी, पन्ना भस्म, वेक्रान्त भस्म अथवा यथा रोग तथा अनुपानो के साथ सेवन कराने से हृदय की धडकन वृद्धि घवराहट, मस्तिष्क की शिथिलता, पक्षाघात आदि मे अत्युपयोगी एव अनुभूत प्रयोग हे।

हृदय रोगों में प्रभावशाली औषधियां एवं पथ्यापथ्य

अधोमुख कमल सदृश अद्भुत पेशियो से निर्मित है। यह देह मे चेतना केन्द्र माना गया हे। दु ख सुखो का प्रकाशक हृदय ही है। यह युवावस्था मे साढे चार इच लम्वा, साढे तीन इच चौडा तथा ढाई इच मोटा, पार्श्वो से घिरा हुआ, वक्ष गुहा मे जीवन भर कार्य करता रहता है। इसके चारो ओर एक झिल्ली होती है, जिसको हृदयावरण कहते हे। इसके नीचे तरल पदार्थ भरा रहता हे। जो हृदयाघातो से वचाव करता हे। स्त्रियो का हृदय पुरुषो से कुछ छोटे आकार का होता है। हृदय को अस्वस्थता से वचाव हेतु प्रात साय खुली हवा मे भ्रमण और प्राणायाम करना, कम खाना तथा सदेव चिन्ता मुक्त एव प्रसन्न रहना अनिवार्य हे। अधिक शयन, रात्रि जागरण, अति मेथुन करना, गरिष्ठ, स्निग्ध शर्करा युक्त भोजन अहितकर है। नित्य अभ्यग, देनिक व्यायाम, आसन, सन्ध्या प्राणायाम, मनन, चिन्तन स्वाध्याय हमारा मनोवर्धन, वुद्धिवर्धन एव आत्मवल की वृद्धि करती हे। मनोवल एव सहिष्णुता स्वाभाविक वढ जाती हे। चिन्ता, शोक, भय, क्लेश, ईर्ष्या आदि का सीधे हृदय पर प्रभाव पडता हे। अतएव इनसे प्रत्येक व्यक्ति को वचना चाहिए। प्राणायाम करने वाले व्यक्ति को हृदय रोग कदापि नहीं होते।

हृदयरोगी हेतु हितकारी पदार्थ—

हृद्यवर्ग— आम्र, आम्रतक, दाडिम, कट्‌फल, द्राक्षा, राजदाना, कतकफल, करमर्द, शाकफल, त्रिफला, वृक्षाम्ल, अम्लवेतस, कुवल, वदर, मातुलुग, वृहती, कण्टकारी, कुरजफल, पाठा, मधुक, उत्पल, रसोत्पल, कुमुद, सौगन्धिक, कुवलय, पुण्डरीक, मधुक, त्रपु, सीसा, ताम्र, रजत, स्वर्ण, कान्तलोह, लोह, लोहमल।

फल— विही, दाडिम, नारियल, खजूर, किशमिश, आडू, आम, सीताफल आदि।

द्रव्य— मुक्ता, प्रवाल, गोजिह्वा, रसोन, मृगशृग, शतपत्री, आरग्वध, सहिजन, गूगल, कलम्वा, पाठा, दमनक, धनिया, अजवायन, सोठ, हींग, अर्जुन, हरीतकी, पाषाणभेद, गोजिह्वा, सौफ, कुट्‌ज, आर्द्रक, कालकन्द,

शेषांश पृष्ठ 183 पर

हृदयरोगों में अर्जुन के अनुभूत प्रयोग

श्रीमती सावित्री शास्त्री
आयुर्वेद चिकित्सक, आगरा (उत्तर प्रदेश)

आयुर्वेद निघण्टुओ मे अर्जुन वृक्ष के नाम का वर्णन निम्न प्रकार से मिलता हे—

ककुभो र्जुनऽनामा स्यान्नदीसर्जश्च कीर्तित ।
इन्द्रद्रुवीरवृक्षश्चवीरश्च धवल स्मृत ।।
भा० नि० वटवर्ग

यह वृक्ष अर्जुन के अन्य प्रचलित धन्वी, धनञ्जय आदि नामो से भी अन्य ग्रन्थो मे प्रतिपादित ह। इसके अर्जुन, ककुभ, वीरवृक्ष, इन्द्रवृक्ष आदि नाम प्रसिद्ध हे।

अर्जुन पादप का परिचय—

यह वृक्ष हिमालय, विन्ध्याचल की पर्वतमालाओ ओर वना, उपवनो मे प्राप्त होता ह। उद्यानो म भी यह वृक्ष लगाया जाता है। अन्य वृक्षो के समान मध्यम ऊँचाई वाला उन्नत हरा भरा वृक्ष हे। आदि काल से ही इसकी छाल पत्ते, मूल आदि विभिन्न व्याधियो को नष्ट करने के लिए प्रयुक्त होते रहे है। विशेषत प्राचीनकाल से ही इसकी छाल का उपयोग हृदय रोगो मे अधिक होता रहा हे। आज भी आयुर्वेद विज्ञान की चिकित्सा प्रणाली के अतिरिक्त पाश्चात्य चिकित्सा विज्ञान की विभिन्न पद्धतियो मे भी अर्जुन का व्यापक प्रयोग हो रहा हे। हृद्रोगो की यह उत्तम औषधि मानी जाती हे। वेद्यक चिकित्सक ग्रन्थो मे अर्जुन की आषधि कल्पना, चूर्ण, गुटिका, अर्कवाष्पित, क्वाथ, फाण्ट, हिम, घृत, शर्बत आदि के रूप मे प्रतिपादित हे। अर्जुनारिष्ट, पार्थाद्यारिष्ट का सन्धानपूर्वक निर्माण होता है। ये आसवारिष्ट शीघ्र गुणकारी एव प्रभावकारी होते हे।

अर्जुन की त्वचा (छाल) से निर्मित औषधों की उपादेयता—

उच्चरक्तचाप, हृच्छूल, धडकन का बढना अथवा अनियमित होना, हृदय पेशीशूल, आकस्मिक पीडा, रह-रह कर शूल होना, रक्त मे थक्के पडना तथा गाढा होना, शिरा एव धमनियो का आकुचन व मात्रा से अधिक प्रसारण, ओर कठोरता, अलिन्द ओर प्रकोष्ट तथा हृत्कपाटो मे शून्यता शोथ व अवसाद, अशुद्ध रक्त, रोग विशेष से दूषित व विषेले व्यसनो के अनवरत अभ्यास से विकृत रक्त आर रक्ताल्पता से हृदय मे झटके से तीव्रशूल, दाह, शेत्य, शिथिलताओ मे उपयोगी व विशेष हितावह ह।

हृदय रोगो के प्रमुख कारण—

वातपित्त कफवर्धक मिथ्याहार विहार, दूषित अन्नपान, तीव्र विषेले व्यसन, अतिमद्यपान, बिषयासक्ति, कोकीन, मदक, गाजा, भाग, चरस, नशीली दवाओ का निरन्तर मात्रा से अधिक सेवन, गहरी चिन्ता आकस्मिक शोक, धनधान्य की हानि, प्रियजनो का वियोग, दुर्घटना शुक्र आर ओज क्षय एड्स, कसर आदि असाध्य रोगो की विभीषिका, महर्षियो, योगियो एव गुरुजनो का श्राप (आक्रोश) सद्य मृत्यु का भय, प्रभृति कारणो से हृदय आर मस्तिष्क की व्याधिया उत्पन्न होती हे।

दोनो हृदयो का रोगाक्रान्त होना—

१— प्रथम समय फुफ्फुसो के मध्यवर्ती हृदय यन्त्र जो देह मे रक्त का आदान-प्रदान करता हे। द्वितीय मस्तिष्क स्थित चेतनास्थान हृदय दोनो ही रोगाक्रान्त होते ह।

अर्जुन छाल से परिकल्पित औषधि—

व्याधिग्रस्त व्यक्ति को आरोग्य प्रदान करने के लिए अनुभूत सिद्ध [illegible] [illegible] रचना या निर्माण [illegible] चिकित्सक [illegible] [illegible] आराम [illegible] है। [illegible]

उसी प्रकार हृदय रोगी को भी रुचि अनुकूल भेषज मात्रा भी सेवन कराई जाती है। इसमे से कुछ अनूभूत प्रयोग निम्न स्थान पर दिये जा रहे है।

हृदयरोगों पर अर्जुन वल्कल निर्मित अनुभूत औषधि—

धनञ्जय चूर्ण—

नवीन शुष्क अर्जुन छाल का सूक्ष्म चूर्ण वनाकर सुरक्षित शीशी मे वन्द करके रखे। मात्रा- वालको को २ रत्ती से ६ रत्ती तक प्रात साय पानी अथवा गोदुग्ध से दे। वयस्को को १ माशे से २ माशे तक प्रात साय गोदुग्ध अथवा ताजे पानी से दे। चिकित्सक की अनुमति से तीन वार भी दे सकते है।

धनञ्जय क्वाथ—

अर्जुन की नवीन छाल का जौकुट चूर्ण ६ माशे शुद्ध जल मे ३ घण्टे भिगो कर (२ छटाक) जल मे भी छाल को मन्दाग्नि से पकावे। आधा शेष रहने पर छानकर सुखोष्ण सेवन करे। फोक (छूछा) को पुन भिगोकर साय पकाकर पूर्ववत् पीवे। यह क्वाथ छोटे वालको को एक छोटे चम्मच से लेकर तीन चार वार दे सकते है।

धनञ्जय हिम—

अर्जुन की छाल के कल्क १ तोला को २ छटाक ठण्डे पानी मे १०-१२ घण्टे भिगोकर मसलकर छान ले। इसे भी गर्मियो मे दो वार पिलावे।

धनञ्जय फाण्ट—

कोष्ण जल मे भिगोकर विना पका मसलकर छान ले ओर हिमवत् दो वार सेवन करे। यह हिम से कुछ उष्ण प्रकृति है।

धनञ्जय शार्कर—

नवीन अर्जुन छाल के छोटे-छोटे टुकडे कर ५०० ग्राम, गुलाव फूल देशी ५० ग्राम, मुनक्का १५० ग्राम, कमलपुष्प ५० ग्राम मिलाकर स्वच्छ साढे तीन लीटर जल मे पकावे। आधा शेष रहने पर छान ले। डेढ किलो मिश्री डालकर चाशनी करे, ठण्डा हो जाने पर १० ग्राम छोटी इलायची, २५ ग्राम वशलोचन असली, १० ग्राम प्रवाल भस्म, १० ग्राम मुक्ताशुक्ति भस्म, भस्मो के अभाव मे इनकी पिष्टी भी इतनी मात्रा मे मिला सकते हे। इस पक्की चाशनी वाले धनञ्जय शार्कर मे उपरिलिखित प्रक्षेप को सूक्ष्मचूर्ण कर मिलाकर १-१ छोटा चम्मच हृदयरोगी को तीन चार वार चटावे। इस शार्कर से उष्णकाल मे घवराहट, दिल की धडकन, दाह, हृदयशूल आदि दूर होते हे।

पार्थादिघृत—

"पार्थस्य कल्क स्वरसेन सिद्ध, शात्त शृत सर्व हृदामयेषु" अर्जुन की छाल का स्वरस, अथवा अर्जुन क्वाथ (भेषज्य रत्नावली हृद्रोग) अष्टगुणा जल, अर्जुन छाल १ किलो, क्वथित करने पर शेष ३ लीटर मे १ किलो शुद्ध गोघृत पकावे, मन्दाग्नि से शने शने पकाव, घृत शेप रहने पर छानकर सुरक्षित रखे, मात्रा- ६ माशे (१ टेवुल स्पून) से १ तोला तक प्रात साय गोदुग्ध या मिश्री मिलाकर सेवन करावे। अग्निवलानुसार सेवन करने से प्रत्येक हृदय रोग मे लाभ करता है। पैत्तिक हृद्रोग मे गर्मी, वर्षा एव शरत्काल मे विशेष उपयोगी हे। इस घृत के सेवन काल मे मुनक्का या गुलकन्द गुलाय का सेवन कर मलशुद्धि अवश्य करते रहे।

धनञ्जय अर्क वाष्पित—

अर्जुन की नई उत्तम छाल १ किलो, पानी १० लीटर मे १२ घण्टे भिगो दे। छाल को जोकुट कर वाष्पयन्त्र मे ही ढक कर रखना चाहिए। अर्क निकालने के लिए यन्त्र को चूल्हे पर चढाकर अर्क वोतलो मे सग्रहीत करे, गर्म अर्क से बोतलो के चटक जाने का भय रहता हे, अत किसी स्टील या कलई के स्वच्छ वर्तन मे निकालकर वोतलो मे भरे। मात्रा— छोटे वालको को १ छोटे चम्मच से तीन चम्मच तक दिन रात मे पिलावे। वयस्को के लिए १ तोला से २ तोला तक दिन रात मे तीन बार दे। गुण— सभी प्रकार के हृदय रोगो मे सभी ऋतुओ मे समान रूप से देना चाहिये पुराने व नवीन हृदय रोगो मे विशेष उपयागी ह।

ककुभादि गुटिका—

उत्तम अर्जुन की छाल के वल्कल को कपडछन चूर्ण कर अर्जुन के क्वाथ की ओर मीठे अनार के रस की ३-३ भावनाये देकर मटर या चने के बराबर गोलिया बना सुखा ले। मात्रा— १ गोली से ४ गोली तक पानी अर्जुन का अर्क और अनार का स्वरस से ले। गुण— सभी प्रकार के हृद्रोगो

हर मौसम मे समान रूप से सेवन कर सकते है।

र्थाद्यरिष्ट (अर्जुनारिष्ट)— (भैषज्य रत्नावली)

अर्जुन की नवीन छाल ५ किलो, मुनक्का लाल ढाई ग्रा, महुये के फूल १ किलो सबको कुचल कर ५२ लीटर मे १२ घण्टे भिगोकर पकावे। १३ लीटर शेष रहने छान ले और शुद्ध चिकने मटके मे भरकर धाय के फूल १ किलो, गुड ५ किलो मिलाकर घोल दे और १ मास मुख बन्द कर सुरक्षित रखे। पुन सावधानी से खोल व छानकर स्वच्छ बोतलो मे भरे और सुदृढ कार्को से करे। मात्रा— १५ एम० एल० से ३० एम० एल० तक खाने के पश्चात् पीवे। उपादेयता— इस अरिष्ट के से हृदय की शिथिलता, निर्वलता, शूल, अवसाद, रोगजनित, शोकोत्पन्न, काम-क्रोध भय आदि से उत्पन्न रोग ठीक होते है। ४० दिन तक कुछ खाने के पश्चात् सेवन करे।

आवश्यक कर्तव्य—

हृदय रोगी को सभी प्रकार के मादक पदार्थ, तम्बाकू प्रयोग, अति विषय भोग, तमोगुणी की वस्तुओ का अतिसेवन, सामर्थ्य से अधिक कार्य, मानसिक चिन्ताये, सभी, प्रकार की हीन भावनाये, अशुद्ध और तीव्र मादक ओषधियो का सेवन सर्वथा त्याग देना चाहिए। आहार-विहार सतुलित, हितावह, सुपाच्य और अनुकूल करना चाहिए। हृदय रोगी को आशावान्, धैर्यशाली, विचारशील ओर ईश्वर विश्वासी होना चाहिए। निराशामय जीवन श्रेयस्कर और सफल नहीं होता, इस लेख को अपने अनुभव के अनुसार लिखा है। आशा हे चिकित्सक और रोगी एव पाठक लाभ उठायेगे।

"हृदय रोगों में मुक्ता प्रयोग"

मुक्ता का नाम व परिचय—

मोक्तिक शौक्तिक मुक्ता मुक्ताफल च तत्।
(भावप्रकाश निघण्टु) (रत्नोपरत्न)

मुक्ता, मौक्तिक, शौक्तिक, मुक्ताफल, मोती आदि नाम से प्रसिद्ध है। निघण्टु ग्रन्थो मे मोती के अनेक भेद उत्पत्ति भेद से प्रतिपादित किये गये है। इनमे शुक्ति, मोक्तिक, गजमोक्तिक, वाराह मोक्तिक, सर्पमोक्तिक मत्स्य मोक्तिक, दर्दुर मौक्तिक एव वेणु मोक्तिक प्रसिद्ध हे। इस लेख मे शोक्तिक मोती का ही प्रयोग लिखा जा रहा है। हृदय सम्बन्धी व्याधियो मे मोती की सीप से उत्पन्न मोती (मुक्ता) का विविध उपयोग वर्णित हे। अन्य प्राणिज मुक्तांये रोग निवृत्ति के लिए सेवन नहीं किये जाते हे। तान्त्रिक कार्यो एव विशेष शोभा वढाने के लिए धारण किये जाते है।

मोतियो की उत्पत्ति—

ओषधि कार्यो मे प्रयुक्त होने वाले मोती की सीप से प्राप्त होता हे। ओषधि कार्यो मे बारीक मोती की पिष्टी या भस्म बनाई जाती है। इसका विशेषत हृदय रोगो मे प्रयोग होता हे। यह मोती सर्वोत्तम बसरा खाडी मे समुद्र मे वर्तमान "मुक्ताशुक्तियो" के अन्त स्थल मे उत्पन्न होता है। मोती की उत्पत्ति बसरा खाडी, चूना खाडी, आस्ट्रेलिया, सुमात्रा, जावा, जापान आदि अनेक देशो के समुद्रो मे मोती की सीप पाली जाती है। ओर उन्हे साधारण सामुद्रिक सीप के टुकडे खिलाकर "त्वरितवर्धित" मोती पेदा किया जाता है जो परिपक्व नहीं होता, बसरा खाडी का मोती परिपक्व, चमकदार, प्रभावोत्पादक एव विशेष गुणकारी होता हे। पर मुक्ताफल उज्जवल पीली छाप वाला गोल सुडाल वारीक होता है।

मुक्ताफल (गुण और उपयोगिता)—

मौक्तिक शीतल वृष्य चक्षुष्य वलपुष्टिदम्।
भावप्रकाश निघण्टु- रत्नवर्ग

मोती सामुद्रिक होने से स्वभावत शीतल नेत्र हितकारी, वृष्य आर देह मे खटिक चूना आदि तत्वो को पुष्टकर अस्थिया आर मासपेशियो को सुदृढ करता ह

हृदय व मस्तिष्क को बल प्रदान करता है।

निघण्टु रत्नाकर मे— मोती के गुणो का विशेष वर्णन हे, सच्चा पक्का मोती बल्य, वीर्यवर्धक, आयुवर्धक हे। मधुर, शीतल, दाहशमन, वक्षरोगहर, जीर्ण ज्वरहर, अस्थि एव दातो के रोगो को दूर करने वाला, हृदय रेग नाशक, मेधावर्धक, प्रमेहहर, वालको के दन्तोद्भेदज ज्वरो का नाशक, क्षय, श्वास कास की तीव्रता को दूर करती है। विषनाशक, अस्थिशोथहर एव राजयक्ष्मा, रक्तपित्त, कफपित्त विकारो को दूर करता है। मोती (उत्तम) की भस्म अथवा पिष्टी का वयस्क व्यक्ति के लिए शुद्ध मधु अथवा अनुपान भेद से अनेक रोगो को दूर करके स्वास्थ्यवर्धन करता हे। मोती की माला निरन्तर धारण करने से भी कान्ति, ओजस्विता, प्रसन्नता और हृदयरोगो की विस्तृति होती है। हृदय दाह, अवसाद, बैचेनी, धडकन वढना, नेत्रदाह आदि नष्ट होते है।

फेफडो की निर्बलता एव हिक्का नाशक—

मुक्ता पिष्टी या भस्म १ रत्ती से २ रत्ती, नियमित च्यवनप्राश १-१ तोला मे मिलाकर सेवन करने से फेफडो के रोग, निर्वलता और सभी प्रकार की दारुण हिक्काये शान्त हो जाती है। (निवन्ध रत्नाकर मुक्तागुणवर्णन)

शुद्ध उत्तम मुक्ता भस्म का चमत्कार—

मन्थर ज्वर (मोतीझरा) की प्रारम्भिक अवस्था मे भी वालको को आधा-आधा रत्ती मुक्ताभस्म मधु के साथ सेवन कराने से तथा वयस्क स्त्री पुरुषो को एक-एक रत्ती मुक्ताभस्म प्रात मे मधु से सेवन कराने स मुक्ताज्वर अपनी मर्यादा मे ही शान्त हो जाता है। इसमे पथ्यपूर्वक रोगी को रखना चाहिए। यदि चिकित्सक की उपेक्षा ओर रोगी का आहार-विहार विगडने से मन्थर ज्वर की भयकर स्थिति हो जाय और इसी दशा मे रोगी को २-३ माह तक उपद्रव सहित रोगी को तीव्र या अन्तर्ज्वर रहने लगे, रोगी अत्यन्त ही जीर्ण शीर्ण हो जाय। ऐसी स्थिति मे भी रोगी को १-१ रत्ती मुक्ता भस्म दो या तीन बार मधु से सेवन कराई जाय और शृतशीत जल पिलाया जाय पूर्ण पथ्यपूर्वक रखा जाय तो निश्चित ही बिगडा हुआ मोतीझरा ठीक हो जाता है। ऐसी स्थिति मे रोगी को स्नान सर्वथा वर्जित हे। अन्य गरिष्ठ वस्तुये एव शीतल वस्तुये नहीं सेवन करनी चाहिए। रोगी को आशावान वनाना चाहिए।

मुक्ताभस्म के अन्य सिद्धयोग—

प्रवाल पचामृत रस यह योग योगरत्नाकर, रत्नावली आदि ग्रन्थो मे लिखा ह। इसक घटक द्रव्य भस्म १ तोला, प्रवालशाखा भस्म १ तोला, मुक्ताशक्ति १ तोला, वराटिका भस्म १ तोला, शखभस्म १ तोला, पाचो भस्मो को उत्तम पत्थर मे डालकर असली गुलाब की पाच भावनाये देवे। निरन्तर घोटते रहे। शुष्क हो जा पर नीली या हरी काच की शीशी मे सुरक्षित रखे। मात्रा १ रत्ती से २ रत्ती तक दिन मे व रात म तीन वार मधु चटावे। ऊपर से तत्काल पानी या दूध न पिलावे।

गुण व लाभ— सभी प्रकार मुक्ता ज्वर मे मुक्ताभ का प्रयोग अनुपान भेद से देश, काल, ऋतु, आयु, और रोगी के वलावल को जानकर ओपध प्रयोग मुक्तापि अथवा मुक्ताभस्म के रूप मे करना श्रेयस्कर ह। इन दो मुक्ता योगो का उपयोग हृदयरोग एव मन्थरज्वर मे प्र मात्रा मे किया जाता है।

मुक्तापिष्टी एवं मुक्ताभस्म निर्माण—

उत्तम वसरा मोती १ तोला को कर्छी मे तपाकर शु गुलाय के ५ तोला अर्क मे बुझाकर (तीन बार) पत्थर क्सौटी के खरल मे अर्क वेदमुश्क ओर अर्क गुलाव मे शनै शनै घोटे प्रतिदिन तीन व चार घण्टे घुटाई करे। ७८ दिन उक्त अर्कों की भावना देकर छाया शुष्क करे और पूर्णशुष्क होने पर सूक्ष्म कर नीली या हरी शीशी मे सुरक्षित रखे।

भस्म निर्माण—

शुद्ध मोतियो को शराव सपुट कर १० कण्ड की आंच देकर खरल मे अर्क गुलाब मे घोटकर टिकिया बनाकर शुष्क कर तीन बार हल्की कण्डो की आच देकर भस्म बना ले। और खूब घोटकर सुरक्षित रखे।

मात्रा— १-१ रत्ती शुद्ध मधु या गोदुग्ध मे दे।

मुक्ता (मोती) के अन्य योग—

शास्त्र प्रसिद्ध स्वर्ण मालतीबसन्त, मुक्तापचामृत रस, मुक्तावलेह, नवरत्नराज मृगाक, अपूर्व मालिनी बसन्त लघुमालिनी बसन्त आदि मे मुक्ता मिश्रण से आशातीत लाभ होता है। इसी प्रकार अनेक स्वानुभूत प्रयोगो मे भी मुक्ताफल की महत्ता है।

अर्जुन

वैद्य मोहरसिह आर्य
मिसरी, पोस्ट- चरिखदादरी, जिला- भिवानी (हरियाना)

र्याय— (स०) अर्जुन, पार्थ, ककुभ (हिं०) अर्जुन, ह, फौह (प०) जुमरा (म०) अर्जुन सादडा, (ब०) र्जुन (गु०) अर्जुन, साजदान (मल०) नीमरुतु (ता०) तै (ति०) तैल्लसद्धि (ले०) टर्मिनेलियाअर्जुन erminalia Arjuna) वर्ग— हरीतक्यादि वर्ग .D Combretaceae)

वैद्यो को अर्जुन का ज्ञान वेदकाल से ही है। थर्ववेद काण्ड २ सूक्त ८ मन्त्र ३ मे माता पिता से ये हुए अथवा जन्म के क्षेत्रिय रोग को नष्ट करता तथा क्षेत्र- खेत के अनुपज दोष को इसकी भस्म ख नष्ट करती हे। चरक, सुश्रुत तथा वाग्भट्ट आदि प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रन्थो मे इसके प्रयोग का पर्याप्त र्णन उपलब्ध हे। यूनानी हकीम इससे अनभिज्ञ है। लोपेथिक मेटेरिया मेडिका मे भी उल्लेख नहीं हे। द्यो मे इसकी प्रसिद्धि से प्रभावित होकर ऐलोपेथिक क्टर भी लिक्विड एक्स्ट्रेक्ट आफ अर्जुना तेयार करने गे हे।

ानस्पतिक वर्णन—

अर्जुन का वडा वृक्ष होता है। इसकी ऊँचाई १० से ० मीटर होती हे।

मूल— साधारण, गहरी भूमि मे धसी हुई होती है।

तना— पर्याप्त मोटा होता हे। तेरह-चोदह मीटर ढ जाने के पश्चात् इसमे शाखे फूटती हे। गोल होता ।

छाल— इसकी छाल समतल या तनिक सी झुकी हुई ोती है। चार से ७५ मिलीमीटर मोटी होती है। बाह्य लभाग गहरा भूरा सा अकिचन वर्ण का होता है। इस पर छोटे अनियमित गहरे धूलि वर्ण के भकुर ओर अनियमित भूरी लम्बाई मे लकीरे होती है।

अन्तस्त्वक मोटी कोमल तथा रक्ताभ होती है।

पत्र— सयुक्त दल, एक पर्ण मे १०-१५ जोडे एक सिरे पर होता है। अमरूद पत्र, सदृश, दोनो ओर से चिकने होते है। पतझड मे पत्ते गिर जाते हे। कुछ नहीं गिरते है।

पुष्प— वैशाख तथा जेठ मे नन्हे-नन्हे श्वेत तथा पीत वर्ण के फूल आते है।

फल— १ से ढेड इच लम्बे, गहरे हरित वर्ण ओर कमरक के फल की भाति पहलूदार होते है। प्रत्येक फल की लम्बाई केवल पाच विशेष उभरे हुए पहलू बाजू होते है। ये फल काष्ठवत् कठिन तथा तन्तु युक्त होते हैं शरद ऋतु मे पकते है।

निर्यास— स्वच्छ पारदर्शक होता है।

प्राप्ति स्थान— हिमालय की तलहटी, वर्मा, वगाल, उत्तर प्रदेश ओर दिल्ली की सडको पर मिलता है।

उपयोगी अग— त्वक् तथा पत्र।

गुण कर्म— "उदर्दप्रशमन महाकषाय" (च०सू०४)

"सालसारादिगणेन्यग्रोधादिगणे" (सुश्रुत सू०अ०३८)

ककुभ शीतलोहृद्य क्षतक्षयविषास्रजित्।

मेदोमेहव्रणान् हन्तितुवर कफपित्तहृत" (भा०प्र०)

अर्जुनायत्वचा सिद्धक्षीर योज्य हृदामये (च०द०)

अर्जुन कषाय शीतवीर्य, उदर्दप्रशमन, हृद्य तथा कफपित्त, क्षतक्षय,विष, रक्तविकार, मेदोवृद्धि, प्रमेह ओर व्रण को दूर करने वाला हे।

अर्जुन की छाल क्षीरपाक करके देने से हृद्रोग मे लाभ होता है।

नव्यमतानुसार—

अर्जुन की छाल मे ४३ प्रतिशत चुन के क्षार उनमे ३४ प्रतिशत शुद्ध चूने ओर १६ प्रतिशत कषाय द्रव्य (Trin) हे। अर्जुन की क्रिया चूने तथा कषायम्ल जेसी होती हे। इससे रक्तवाहिनियो का सकोचन होता हे। बारीक रक्तवाहिनियो का सकोचन होने से रक्ताभिसरण का दवाव वढता हे, हृदय की पोषक क्रिया अच्छी होती है। हृदय का विश्राम काल दीर्घ होता हे। इससे हृदय को वल मिलता हे। हृदय का स्तम्भन ठीक ओर शक्तिशाली होता हे तथा उसकी सख्या कम होती हे। रक्तवाहिनियो से रक्त का जल भाग शरीर मे रमता हे। वह इससे कम होता हे और हृदय को उत्तेजना मिलती हे। रुधिराभिसरण के चक्र मे जितना हृदय का महत्व है उतना ही रक्तवाहिनियो का भी हे। रक्तवाहिनियो का ठीक सकोचन न हो या उनमे शिथिलता आई हो तो हृदय अपना काम ठीक से नहीं कर पाता। अर्जुन से रक्त भी शुद्ध होता है। रक्तपित्त ओर जीर्ण ज्वर दूषित होता है तव अर्जुन देते हे। इससे रक्तस्राव वन्द होता है। इसमे पुष्कल चूना होने से इससे भग्न अस्थि का शीघ्र सधान होता हे। अर्जुन हृदयोत्तेजक, हृदयवल्य, रक्तसग्राहिक, शोणितस्थानम्, शोथघ्न, सधान, ओर व्रण रोपक हे। मात्रा छाल का चूर्ण ६ ग्राम से १२ ग्राम तक दूध के साथ क्षीरपाक विधि से पकाकर दे। (डा० वा० डा० देसाई)

शास्त्रीय योग—

१— अर्जुनारिष्ट (भै० र०) हृद्रोगो मे विशेष लाभप्रद हे।

२— अर्जुन घृत (भै० र०) हृदय रोगो मे लाभप्रद है।

३— नागार्जुनाभ्र (भै० र०) हृद्रोग, जीर्ण ज्वर तथा क्षय मे उपयोगी हे।

४— इन्द्रवटी (भै० र०) वाल मूत्रशेया तथा वृद्धावस्था मे वार-वार मूत्र विसर्जन मे विशेष लाभप्रद हे।

आपबीती—

मुझे २४-४-८८ को प्रात ५ वजे दिल का दोरा पडा। सहसा स्वेद आया, वचेनी हो गई, घवराहट उत्पन्न हो गई। वेद्य श्री दयानन्द विशारद ने मुक्ताभस्म १२५ मिलीग्राम की मात्रा मे अर्जुनारिष्ट २० मि० लि० समभाग जल मिलाकर १५-१५ मिनट के वाद ३ ... दी साथ मे हृदय चिन्तामणि रस (भै० र०) ११ ... दी।

दिनाक ५-५-८८ को मूर्च्छित हो गया। रात्रि वजे सेन्य चिकित्सालय मे भर्ती करा दिया गया। दिन ७-५-८८ तक मूर्च्छा दूर नहीं हुई, तव दिनाक ७-५- को गगाराम अस्पताल मे दाखिल किया। दिनाक ८-५- को मूर्च्छा दूर हुई। जव मेरी मूर्च्छा दूर हुई तो जाने ७३ किलो वजन कहा गया। केवल ५० कि वजन रह गया। दिनाक १६-५-८८ को स्वस्थ प्रमाणि कर घर भेज दिया। चलना- फिरना उठना स्वप्न गया।

वेद्य श्री दयानन्द विशारद ने हृदय चिन्तामणि रस मुक्ताभस्म + अर्जुनारिष्ट के साथ देना आरम्भ किया प्रात काल निराहार अर्जुन की छाल का वस्त्रपूत चूर्ण ... ग्राम, खाण्ड २४ ग्राम, गोदुग्ध ५०० मि०ली०। तीनो ... एकत्र कर ओटावे और शने शने पी ले। वह अर्जुन त्वक् सिद्ध क्षीर एक वर्ष पर्यन्त पिलाया गया। अव स्वस्थ हृद्रोग की कोई शिकायत नही हे।

अनुभूत प्रयोग—

१— जो व्यक्ति अर्जुन के छाल के चूर्ण को घृ दुग्ध अथवा शर्वत गुड के साथ प्रयोग करते ह, वे हृद रोग, जीर्ण ज्वर तथा रक्तपित्त से सुरक्षित रहकर दीर्घ आयु पाते हे।

२— तेल व घृत मे भुने हुए गेहू के आटे मे गुड और अर्जुन छाल का चूर्ण मिलाकर दूध के साथ लेने से समस्त प्रकार के हृदय रोग दूर हो जाते है। (शोढल)

३— अर्जुन छाल से सिद्ध किया हुआ दूध हृद्रोग मे प्रयोग करे (वृन्दमाधव)

४—अर्जुन की छाल हृद्रोगो मे दी जाती है। (डा०खेरी)

५— अर्जुन की मोटी छाल ६ ग्राम, चीनी २४ ग्राम, गाय का खोलता हुआ दूध २४० मिग्रा अर्जुन की छाल का वस्त्रपूत चूर्ण कर दूध एव चीनी के साथ मिलाकर प्रतिदिन निराहार सेवन करे।

विशेष— इसकी छाल से खाकी रग वनाया जाता ह तथा इसके पत्ते टसर सिल्क को कीडो से वचाते ह।

आयुर्वेद में अर्जुनत्वक् का उपयोग—

आयुर्वेद चिकित्सक अर्जुन की छाल को हृदय के लिए बल्य बताते है। साधारणत इसी लिए हृदय रोगो के लिए अधिकतर प्रयोज्य हे। इसी प्रयोजन के लिए इसे विशेष प्रसिद्धि हे। परन्तु यह स्पष्ट हे कि यद्यपि चरक तथा सुश्रुत मे अर्जुन के प्रयोग का अनेक स्थानो मे वर्णन पाया जाता हे, किन्तु हृदय रोगो के लिए इसके सेवन का कोई वृतान्त नहीं मिलता हे। इस लक्ष्य के लिए वाग्भट्ट मे ही सर्वप्रथम इसके उपयोग का वर्णन मिलता है। आचार्य वाग्भट्ट ने कफज हृद्रोगो के लिए अर्जुन छाल के क्वाथ को सेवन करने को सक्षिप्त मे लिखा है।

चक्रदत्त मे हृदय रोगो मे अर्जुन का सेवन लिखा हे— अर्जुन की छाल १२ ग्राम लेकर यवखण्ड कर १६२ मि०ली० गोदुग्ध तथा १६२ मि० ली० जल मे मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावे। जब पानी जल जाय ओर दूध शेष रह जाय तब छानकर इच्छानुसार खाण्ड मिलाकर प्रतिदिन प्रात निराहार पिलावे।

आयुर्वेदिक चिकित्सक अर्जुन की छाल को समस्त प्रकार के हृदय रोगो मे सफलता के साथ प्रयोग करते है। ●

हृदय रोगों में प्रभावशाली औषधियां एवं पथ्यापथ्य शेषांश पृष्ठ 176 से

श्वेत चन्दन, दालचीनी, जायफल, कालीमिर्च, गोखरू, पुनर्नवा, एरण्ड, आवला, पाटला, डिजिटेलस, कुटकी, दोनो कटेरी, कुलजन, पंचकोल, शुद्ध वत्सनाभ आदि तथा महादुग्ध, यवक्षार, गोमूत्र, अमरूद, वेल और गाजर का मुरब्बा, आवला का मुरब्बा, मधु मिलाकर सेवन करने से हृदय की बलवृद्धि होती है।

हृदय रोगों में हितकर पथ्यापथ्य—

हृद्रोगे पथ्यानि—

शालिमुद्गा यवा मास जागल मरिचान्वितम्।
पटोल कारवेल्लञ्च पथ्य प्रोक्त हृदयामये।।

स्वेदो विरेको वमन व लघन बस्तिर्विलेपो चिररक्तशालय।
मृगद्विजा जागलसज्ञयान्वितायूषा रसा मुद्गकुलत्थ सम्भवा ।।
रागा खडा कम्बलिकाश्च षाडवाभय पटोल कदली फलाभ्यपि।
पुराणकूष्माण्डरसालादाडिमसम्पाशाक नवमूल कान्यपि।
एरण्डतैल गगनाम्बु सैन्धव द्राक्षापितक्रच पुरातनो गुड ।
सौवीरशुक्तवारुणीरस करतूरिकाचन्दनक कृष्णमार्द्रकम।।
ताम्बूलमायेष गण सखाभवेन्मर्त्यस्य हृद्रोगनिपीडितस्य।।

अपथ्यानि—

तृटछर्दिमूत्राकनिलशुक्रकासोद्गार श्रम श्वास विडश्रुवेगान्।
सह्याद्रिविन्ध्याद्रि नदीजलानिमेषीपयो दुष्टजल कषायम्।
विरुद्धमुष्ण गुरुतिक्तमम्ल पत्रोत्थशाका निचिरन्तानि।
क्षार मधूकानि च दन्तकाष्ठ रक्तसुति हृद्गदवान् परित्यजेत्।।

वैलाम्ल तक्र गुर्वन्न कषाय श्रम मातपम्।
रोष स्त्रीनम चिन्ता वा भाष्य हृद्रौगवारत्यजेत्।। ▲

हृदय रोगों में प्रभावशाली वनौषधियाँ एवं पिष्टियाँ, खनिज एवं रत्न

वैद्य प० मोतीलाल शर्मा
एम० ए० संस्कृत, आयुर्वेद रत्न (भिषगाचार्य, साहित्याचार्य)
कमलेश भवन, गायत्री चिकित्सालय (रिटायर्ड यू० डी० टी०)
फाटक मोहल्ला, पिपलिया स्टेशन (मन्दसार) म०प्र०

(१) अर्जुन (ककुभ)

(१) अर्जुन शीतलो हृद्य –

तदनुसार यह अमृतोपम वनौषधि समस्त हृदय रोगो मे अनुपम लाभ करती है। इसके हृद्य अनेको प्रयोगो मे से कतिपय अनुभूत प्रयोग निम्नानुसार है—

अर्जुन की छाल का चूर्ण प्रात साय १-१ चम्मच दूध से। अथवा अभ्रक भस्म १ १ रत्ती का सेवन अर्जुन क्वाथ से करावे। अथवा अर्जुन छाल के चूर्ण को १० ग्राम लेकर २५० ग्राम दूध मे समाश मे जल मिलाकर औटावे। जल जल जाने पर मिश्री मिलाकर तथा इलायची पीसकर डाले। ओर पान करावे। इससे समस्त हृदयरोगो मे लाभ होता है। अथवा अर्जुनारिष्ट २५ एम० एल० समभाग जल मिलाकर प्रात साय भोजनोपरान्त पान करावे। हृदयरोगो मे अवश्य लाभ होगा।

(२) अर्जुन चूर्ण—

अर्जुन की छाल का चूर्ण, कटेरी मूल तथा मधुयष्टी समभाग का चूर्ण वनाकर मधु से चटाने से कफज हृदयरोग मे तुरन्त लाभ होता है।

(३) पार्थाद्यरिष्ट (भै० र०)—

अर्जुन छाल १० सेर, द्राक्षा ५ सेर, महुए का पुष्प २ सेर। इन्हे एकत्र कर ८ द्रोण जल मे पाक करे। जव २ द्रोण शेष रहे तव उतार छानकर उसमे १० सेर गुड घोलकर २ सेर धाय पुष्प का प्रक्षेप डाल दे। एक मास [illegible] मृत्पात्र मे वन्द कर रख दे। निर्माण हो जाने पर प्रयोग मे ले। मात्रा ढाइ तोले से ४ तोले [illegible] मिलाकर पान करावे। इसके सेवन से हृदय [illegible] फुफ्फुस के समस्त रोग नष्ट होकर वल एव वीर्य की [illegible] होती है।

(४) अर्जुन घृतम् (भ० र०)—

अर्जुनत्वक् के क्वाथ तथा कल्क से यथाविधि घृत का मन्दाग्नि पर सिद्ध कर सुरक्षित रख ले। इसे हृदयरोगी को सेवन कराने से तुरन्त लाभ होता है। मात्रा— [illegible] आधा तोला।

(५) ककुभादि चूणम—

अर्जुनत्वक, वच रास्ना वला, नागवला [illegible] पुष्करमूल, पिप्पली साठ इन्हे एकत्र [illegible] साय घृत के साथ सेवन कराव। इसके सेवन से [illegible] हृदय रोगो मे शीघ्र ही शान्ति मिलती है। मात्रा [illegible]

(६) अर्जुनत्वक् चूर्ण—

गोघृत, गोदुग्ध अथवा गुड के शर्वत के साथ जो रोगी अर्जुन की छाल का चूर्ण सेवन करता है, वह हृदयरोग, जीर्णज्वर, रक्तपित्त, प्रभृति रोगो से रहित होकर दीर्घायु पर्यन्त जीवित रहता है। मात्रा १ माशे से ४ माशे तक इसे १ मास पर्यन्त सेवन से कास श्वास नष्ट होकर शरीर म

पुष्टि बढती है।

(२) पुष्करमूल (पोहकरमूल)

इसका प्रयोग श्वास, कास, पार्श्वशूल, अरुचि तथा पित्तशमिक व्याधियो मे किया जाता है। यूनानी हकीम इसे विरेचन एव मूत्रल तथा यकृत विकारो मे प्रयोग करते है। अनेक गुणो मे से हृदयरोग नाशक गुणो का ही यहा वर्णन कर रहा हूँ।

(१) हृद्रोग मे—

पुष्करमूल, बिजारा मूल, सोठ, कचूर एव हरड समभाग का कल्क बना उसमे जवाखार अनार का रस घृत एव सेधा नमक मिलाकर सेवन कराने से वातज हृदरोग शान्त होता है। कल्क की मात्रा दो माशा (चरक सू०)

अथवा पोहकरमूल छाल ढाक की छाल का चूण, अर्जुन की छाल का चूण, कचूर, देवदारु, इनको मिलित [illegible] तोले ले। क्वाथार्थ जल ३२ तोले अवशिष्ट क्वाथ ८ तोले। छानकर उसमे सोठ काला जीरा अजवायन, जवाखार और सेधा नमक का प्रक्षेप देकर (४-४ रत्ती) गुनगुना पान कराने से हृद्रोग शान्त होता है।

कफप्रधान हृद्रोग मे—

पोहकरमूल सोठ कायफल भारगी एव पिप्पली का क्वाथ बना, पान करानेसे हृदोग मे लाभ होताहै। अथवा पोहकरमूल, हरड, सोठ कचूर, रास्ना एव पिप्पली का चूण तप्त जल से पान कराने से श्वास कास की निवृत्ति होती है।

(३) हिचकी नाशार्थ—

पुष्करमूलचूण ओर लघुपञ्चमूल से निर्मित क्षीर पाक हिचकी की अव्यर्थ औषधि है। इससे क्षयज कास भी नष्ट होती है। अथवा इसका चूण मधु मे मिलाकर दिन मे तीन बार चटावे। इसमे यदि यवक्षार मिलाकर तप्त जल से सेवन करावे तो हिचकी भी बद होती है। मात्रा ३ माशे तक।

(४) पार्श्वशूल निवारणार्थ—

पुष्करमूल चूर्ण आर लघु पचमूल चूर्ण का क्षीरपाक भारगी अडूसा आर मुलहठी का चूण मिलाकर बकरी के दूध के साथ देने से शीघ्र लाभ होताहै। अथवा इसका चूण मधु मे ३ बार चटावे। शूल स्थान पर गरम घृत अथवा गरम [illegible] की पोटली उबोकर १० २० मिनट सेक करावे पार्श्व शूल शान्त हो जायेगा।

(५) कासश्वास नाशार्थ—

रस सिन्दूर आधी रत्ती के साथ पुष्कर मूल की चूण ३ माशे मिलाकर मधु मे मिलाकर चटावे। इससे जीर्ण कास भी निवृत्त हो जाती है। अथवा पुष्करमूल तथा पीपल का चूर्ण मधु मे मिश्रित कर दिन मे कई बार चटावे। इससे कफ शीघ्र ही निकल जाता है ओर व्याकुलता दूर होकर श्वास दूर होकर क्षुधा जाग्रत होती है।

(३) शुण्ठी सोठ (नागर)

जिस पदार्थ या द्रव्य मे आग्नेय गुण विशेष होने से जो जल शोषण करके मलरोधन करता है उसे ग्राही कहते है जैसा सोठ। इसमे मल तोडने की शक्ति है परन्तु मल को निकालने की शक्ति नहीं होती। यह हृदय रोग, आधाशीशी एव मन्दाग्नि, हिचकी, कटिशूल, श्लीपद अतिसार आदि रोगो को नष्ट करती है।

(१) शुण्ठयादिचूर्ण —

(ग नि) सोठ, सचल लवण चित्रक मूल, हरड, भुनी हींग, अनारदाना, और सेन्धानमक सम भाग लेकर श्लक्ष्ण चूर्णित कर सुरक्षित रख ले। मात्रा २ माशे तक। यह उष्ण जल से देय है। उपयोग यह अग्निमांद्य दूरकर जठराग्नि को प्रदीप्त करता है।

(२) शुण्ठी खाण्ड (हृद्रोग)—

सोठ का चूर्ण २० तोले, को १ सेर घी मे भून ले। फिर उसमे ४ सेर दूध तथा १ सेर शर्करा मिलाकर मन्दाग्नि पर पाक करे। जब अवलेह बन जाय तब चूल्हे से नीचे उतार कर उसमे आँवला धनिया नागरमोथा, पीपल, वशलोचन, दालचीनी, तेजपात इलायची कालाजीरा आर हरड का चूर्ण सवा ग्यारह माशे प्रत्येक तथा कालीमिर्च ओर नागकेशर का चूर्ण प्रत्येक साढे सात माशे प्रत्येक मिला ले। तत्पश्चात जब वह शीतल हो जाय तब उसमे १५ तोले मधु मिलाकर रख ले। इसके सेवन से हृद्रोग [illegible] शूल वमन ओर आमवात की निवृत्ति होती है। मात्रा ६ माशे तक। अनुपान दूध।

(३) लेप—

जायफल चूण २५ ग्राम सोठ चूर्ण २५ ग्राम पीपल चूर्ण २५ ग्राम प्याज का रस १०० ग्राम रेक्टीफाइड स्पीट या देशी शराब १०० ग्राम। सबको किसी पात्र मे [illegible]

की देह पर इसका लेप कर किसी मृदु ब्रुश से १ घटे तक मर्दन करे। इससे हृदयावसाद निवृत्त होता हे। नाडी की गति मे सुधार आता हे। यह लेप सन्निपानिक तथा हैजे के हृदयावसाद मे लाभकारी हे।

(४) पञ्चकोल

पिप्पली पिप्पलीमूल चव्य चित्रक नागरे ।
पञ्चभि कोलमात्र त्रकोल तदुच्यते।।
पञ्चकोल रसे पाके कटुके रुचिकृन्मतम्।
तीक्ष्णोष्ण पाचन श्रेष्ठ दीपन कफवातनुत्।।
गुल्म प्लीहोदरानाह शूलघ्न पित्तकोपनम्।।

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक ओर सोठ। इन पॉचो द्रव्यो का २-२ तोला मिलाकर एकत्र चूर्णित किया जाय तो वह पचकोल चूर्ण कहलाता हे।

यह स्वाद तथा पाक मे कटु रसयुक्त, रुचिकारक, तीक्ष्ण, तथा उष्णवीर्य होता हे। यह पाचक, अत्यन्त अग्निदीपक, कफ वातनाशक, गुल्म, प्लीहा उदर सम्बन्धी रोगो को नष्ट करता हे। यह आनाह ओर शूल को निवृत्त करता हे। यह पित्त को कुपित करता हे। मात्र ५ से १५ रत्ती तक। प्रात साय यथा योग्य तथा अनुपान के साथ सेवन कराते हे।

(५) गावजबान (गोजिह्वा)

गुण ओर प्रयोग—

यह वल्य, मूत्रल, रसायन, लेहन एव सोमनस्य जनन ह। इसका प्रयोग - फिरग, आमवात, हृदय की धडकन वृद्धि मूत्रकृच्छ,आमाशय एव वस्ति प्रक्षोभ एव ज्वर निवारणार्थ होता हे।

हृदय की धडकन तथा मूत्रकृच्छ हेतु—

इसका फाण्ट वनाकर पान कराने से लाभ होता हे। मात्रा ४ से ६ रत्ती तक दुग्धानुपान से। पुष्पचूर्ण ३-६ माशा तक। गावजवा का अर्क सेवन कराने से भी हृदविकारो मे यथेष्ट लाभ होता हे। अर्क हेतु २११ किलो पत्र लेकर रात्रि को किसी पात्र मे जल डालकर भिगो दे प्रात भवका यन्त्र से अर्क खींच ले। मात्र ३० ग्राम। इसे प्रात साय सेवन कराने से हृद्रोगो मे अवश्य लाभ होता ह।

(६) पिप्पली

गुणधर्म—

पिप्पली लधु, तीक्ष्ण, कटु, मधुर, विपाक म अनुष्ण, शीतवीर्य, रसायन, कफवातनाशक, दीपन, पाचन, अरुचिकर, वातानुलोमक शूल प्रशमन, मुदुरेचन, यक्रदुत्तेजक, मेध्य, रक्तशोधक, मूत्रल, शिरोविरेचक, ज्वरघ्न, विशेषत यह नियतकालिक ज्वर, जीर्णज्वर प्रसूतिज्वर प्रतिवन्धक, वृष्य, अग्निमान्द्य, प्लीहा वृद्धि, अजीर्ण विवन्ध, गुल्म, उदरशूल, उदररोग, यकृत विकारहर, अर्श, हृद्दोर्वल्यहर, पाण्डु, मधुमेह, आमवात, गृध्रसी, कटिवात, अगघात, रक्तविकार, कास, श्वास, हिचकी, क्षय मूत्रविकारहर ओर कुष्ठ प्रभृति रोगो मे प्रयुक्त होती हे।

शुद्धि—

रसायनार्थ ओषधियो मे प्रयोग के पूर्व पिप्पली को चित्रक के क्वाथ मे डालकर आतप मे शुष्ककर सुरक्षित रख लेना चाहिए। ऐसा योगरत्नाकर का मत हे।

त्रिकटु—

सोठ, मिर्च, पीपल को समान भाग मिलाने से त्रिकटु बनता हे। इसके सेवन से शीघ्र ही पाचनशक्ति प्रवल होकर रसोत्पत्ति के साथ ही साथ यह स्तन्योत्पत्ति एव उसकी वृद्धि भी करता है।

हृद्रोग नाशार्थ—

पिप्पली चूर्ण मे विजोरा नीबू की छाल का चूर्ण मिलाकर मक्खन के साथ सेवन कराने से हृद्शूल एव दुस्तर हृद्रोग नष्ट होता हे।

अथवा—

गोदुग्ध ६ तोला लेकर मन्दाग्नि पर पाक करे। आधा दूध शेष रहने पर पिप्पली चूर्ण १ तोला उसमे मिलावे। मधु एव घृत २-२ तोला मिलावे। इसे दिन रात म ३-४ वार पान करावे। इसके प्रभाव से हृद्रोग, ज्वर, कास ओर क्षय नष्ट होता हे। प्रतिदिन इसे ताजा बनाकर सेवन कराना उचित है।

हृद्रोग नाशार्थ—

पिप्पली मूल ओर छोटी इलायची समभाग को चूर्णित कर मात्रा ३ माशा तक घृत मे मिश्रित कर चटाने से शीघ्र ही हृद्रोग शात हो जाता हे।

खण्डपिप्पली—

का प्रयोग यथाविधि कराने से हृद्रोगो की निवृत्ति आशु होती हे। मात्र - ६ माशा से २ तोला तक, प्रात साय दे।

पिप्पल्यादि लेह—

पिप्पली, मुलहठी एव मिश्री का १-१ तोला का चूर्ण गव्यदुग्ध, बकरी का दुग्ध एव ईख का रस प्रत्येक १२८ तोला तथा गेहूँ का आटा, जो का आटा, मुनक्के का कल्क, ऑवलो का रस एव तिल तेल, प्रत्येक ८ तोला एकत्र मिश्रित कर मन्दाग्नि पर लेह सिद्ध कर चटाने योग्य होने पर उतारकर शीतल हो जाने पर मधु १६ तोला ओर घृत ८ तोला मिलाकर सुरक्षित रख ले। इसे अग्निवलानुसार यथोचित मात्रा मे सेवन कराने से हृद्रोग एव कृशता निवृत्त होती हे। यह वृद्धो तथा अल्पशुक्र वालो हेतु विशेष हितकर हे। इससे श्वास एव क्षतज कास भी दूर होते हे।

पचसार पेय—

पिप्पली चूर्ण, ओटाया दूध, शर्करा, मधु एव ताजा घृत इन्हे यथोचित प्रमाण मे एकत्र मिश्रित कर मथानी से मथकर नित्य पान कराने से हृद्रोग, विपमज्वर, धातुक्षीणता तथा श्वास, कास ओर क्षय रोग मे लाभ होता हे।

अथवा—

दूध २० तो , शक्कर २ तो , पिप्पली चूर्ण २ रत्ती, मधु १ तो , ताजा घृत २ तोला, मथकर पान करावे। इससे वल पुष्टि एव वीर्य की वृद्धि होती हे तथा हृद्रोग मे लाभ होता हे।

पिप्पली रसायन—

पिप्पली चूर्ण ५० ग्राम नोसादर देशी २५ ग्राम एकत्र सूक्ष्म चूर्णित कर १ बोतल नीबू के रस मे डालकर रख ले। मात्र १-२ वून्दे। जल के साथ दे। यह हृद्शूल, वक्षशूल, प्लीहावृद्धि, यकृत तथा मन्दज्वर, कफवृद्धि, अरुचि, आध्मान आदि को निवृत्त करता हे। इसे वालको की कमजोरी तथा उदर विकारो पर १-२ वूद जल मे मिलाकर दने से लाभ होता ह। प्रात साय नित्य दे।

पिपल्यादिघृत—

पिप्पली, पिप्पलीमूल, चित्रक, सोठ, धनिया। वच रास्ना, मुलेठी, यवक्षार एव हींग १-१ तोला जल मिलाकर वनावे। क्वाथार्थ - दशमूल मिलित २५६ तोला जा कुट कर अप्टगुण जल मिलाकर, चतुर्थांश क्वाथ वना, उक्त कल्क तथा गोघृत २५६ तोला मिलाकर यथाविधि घृत सिद्ध कर रख ले।

मात्रा आधा तोला से १ तोला तक पान कराके ऊपर से पेया अथवा मण्ड पान करावे। यह हृद्रोग के साथ साथ श्वास कास, पार्श्व शूलादि एव गुल्म मे हितकर हे। (चरक चिकि)

(७) हृत्पत्री (डिजीटेलिस)

हृत्पत्री का चूर्ण १ भाग मृग श्रृग २ भाग दोनो को एकत्र मिश्रित कर १ प्रहर पर्यन्त शुष्क खरल कराके सुरक्षित रख ले। मात्रा १-१ रत्ती अनुपान- जल या अर्जुन छाल का क्वाथ।

उपयोग—

इसके सेवन से हृद्दोर्बल्य, हृदय की वढी हुई धडकन, नाडी की तीव्र गति आदि दूर होते हे।

यदि हृदय के रोगी उक्त उपद्रवो से परेशान हे ओर सर्वागशोथ या जलोदर की बीमारी से दु खी हे तो डिजिटेलिस पत्र के चूर्ण के साथ मूगा पिष्टी, अकीक पिष्टी का मिश्रण कर इसे मधु के अनुपान से प्रतिदिन १-१ रत्ती, मधु के साथ चटावे। यदि आवश्यक हो तो दिन मे ३-४ बार भी इसका प्रयोग कर सकते हे।

डिजीटेलिस का हृद्विकारो तथा समवह सस्थान पर उत्तम प्रभाव पडता हे। इससे हृदय की धमनी तथा अन्य शरीरस्थ धमनियो का सकोचन होता हे जिससे हृदय को विश्राम तथा पुष्टि प्राप्त होती हे।

नाडी गति की तीव्रता मे भी इससे धीरे-धीरे समता आकर नाडी स्वस्थ चलने लगती हे। इसका प्रभाव मूत्रल होने से आतो को भी शाति प्राप्त होती हे, क्योकि मूत्र अधिक मात्रा मे आता हे।

इस प्रकार डिजिटेलिस चूर्ण से हृदयोदर तथा मूत्रपिण्डोदर की अवस्था मे मूत्रल एव स्वेदनोपधियो के साथ प्रयोग करने से ओर रोगी को शया पर पूर्ण विश्राम कराने से तथा पथ्यसेवन कराने से तुरन्त राहत एव शाति की अनुभूति होती हे। निद्रा भी आने लगती ह तथा हृदय का भारीपन कम होने लगता हे। क्योकि शोथ जलोदर आदि मे अधिक मूत्र लाने से मानसिक एव सस्थानिक शाति प्राप्त होती हे। इसे निरन्तर सेवन कराने के वजाय एक सप्ताह सेवन करके एक सप्ताह यदि वन्द रखकर पुन १ सप्ताह सेवन कराया जाय तो यह हृदय के लिए सहायक तथा रक्ताभिसरण क्रिया पर अच्छा प्रभाव दिखता ह।

यदि अन्य वनापधियो के साथ इसका उपयोग किया जाय तो निश्चय ही इससे हृदय की वढी हुइ धडकन को

नियमित करने मे सहायता प्राप्त हो सकती हे। परन्तु इसके साथ अकीक पिष्टी, मुक्तापिष्टी, प्रवाल पिष्टी अथवा तृण कान्तामणि पिष्टी का प्रयोग रोगी को अच्छी शाति प्रदान करता हे। मात्रा १-१ रत्ती मधु के साथ प्रात या यथावश्यक दे सकते हे।

(८) द्राक्षा

द्राक्षा—

यह हृदय के लिए बल्य एव रक्त प्रसादन होने से हृद्दौर्बाल्य एव वातरक्तादि रक्त विकारो मे उपयोगी हे। यह तृष्णा, दाह, रक्तपित्त तथा पित्तज हृद्रोगो मे लाभप्रद ह। यह हृच्छूल मे भी लाभकारी हे। (यो र) अति मधुर होने से यह मूत्रल भी है। यह ओषधि के साथ ही पथ्य भी हे। यह शरीर मे व्याधि प्रतिषेधक शक्ति की वृद्धि कर रोगाक्रान्त व्यक्तियो के स्वास्थ्य की रक्षा करती हे। इसके सेवन से शिर शूल, श्वानविष, अण्डवृद्धि, पित्तज्वर, तृष्णा, वातज्वर, श्वास, स्वरभेद, गुल्म, भ्रम, कास, मूत्रकृच्छ, सर्वसर, विषमज्वर, अन्येद्युष्कज्वर, मसूरिका, जिह्वाजाड्य, गर्भिणी ज्वर, अम्लपित्त, प्रमेह, विबन्ध, अजीर्ण, स्तन्याभाव, धत्तूर विषहर, हरताल विषहर, भाग का नशा उतारने वाली, मूर्च्छाहर, मुखदोर्गन्ध्य क्षर्दि, मदात्यय, उदावर्त, दार्बल्य आदि को दूर कर शूल एव कृमि आदि मे हितकर ह। विविध द्रव्यो के मिश्रण से यह उपरोक्त रोगो का नष्ट करती हे।

हृद्रोगो मे प्रयोग

(१) द्राक्षा,बडी हरड की वक्कल का चूर्ण ओर शर्करा तीनो समभाग लेकर घोटकर ३-६ ग्राम को शीतल जल से सेवन कराने से पित्तजन्य हृदयावरोध को निवृत करती ह।

(२) शिला पर पिसी हुई मुनक्का १ भाग, ऑवला १ भाग, मधु २ भाग, घृत १ भाग, इनको मिलाकर सेवन कराने से वातजन्य हृद्रोग एव हृद्शूल मे लाभ होता हे।

(३) दार्बल्य नाशाथ—

पचने योग्य मात्रा मे मुनक्का खाकर ऊपर से जल या दुग्धपान करने से दुर्बलता दूर होकर धीरे-धीरे भार वृद्धि होने लगती ह।

(४) हृद्‌वलवर्धनाथ—

हरी किशमिश बडी-बडी चुनकर ४० नग ले। उनके तिनको को तोडकर १२० ग्राम उत्तम गुलाब ओर अर्क वेदमुश्क मे रात को चॉदी या कलईदार छाटी कटोरी म भिगो दे तथा कटोरी को छत पर या वाहरखुल म रख दे। प्रात शोचादि से निवृत्ति के पश्चात् एक एक किशमिश को सुई की नोक से उठा उठाकर खा ले आर ऊपर से सारा अर्क पान कर ले। इसी प्रकार कुछ दिन निरन्तर यह प्रयोग करने से १ सप्ताह म हृदय बल एव तज की वृद्धि हाती हे तथा धडकन की वृद्धि होकर शान्ति प्राप्त हाती ह।

(९) लवग (लोंग)

लोग सुगन्धित, पाचक वातानुलोमन, उत्तेजक, अग्नि दीपन, उद्वेष्टन विरोधी, कफघ्न, मूत्रजनन रुचिवधक, दुर्गन्धहर, श्वेतकणवर्धक होता ह। यह उदरशूल, आध्मान, अजीर्ण, खासी, तृष्णा, वमन, विशूचिका, क्षय तथा दन्तवेदना निवारक होता ह।

इसका तेल अनेक आषधियो एव विरेचनाषधियो मे मरोड आदि रोकने हेतु इसका उपयोग होता ह। सोते समय खुले अगो पर इसे लगाने से मच्छर नहीं काटते ह। दान्त दाढ मे उत्पन्न वेदना के लिए इसका फाहा लगाने स दन्तवेदना शात होती हे तथा दन्त व मुख की दुर्गन्ध दूर होती हे। यह सिरदर्द, खॉसी, नासूर, हिचकी तृषाधिक्य, जी मिचलाना, पेट फूलना खसरा श्वास राग उर क्षत आदि रोगो म विविध आषधिया के मिश्रण स दूर करता ह। इसका प्रतिनिधि दाल चीनी हे। यह पाचन क्रिया पर सीधा प्रभाव डालकर, क्षुधावृद्धि करता हे। इसस रुचि की वृद्धि होती ह आर मानसिक प्रसन्नता की प्राप्ति होती ह। यह चेतनाशक्ति को जाग्रत करता हे जिसका स्पष्ट प्रभाव हृदय एव रक्त सचार ओर श्वासोच्छ्‌वास पर दृष्टिगोचर होता हे। यही कारण हे यह त्रिदोष तथा सन्निपात एव हृद्रोग हर ओषधियो मे मिश्रित किया जाता ह।

लवगाद्यचूर्ण (यो चि) (हृद्य)—

लवग इलायची, दालचीनी, तेजपात नीलोत्पल खस, जटामासी, तगर, सुगन्धवाला, ककोल पिप्पली, अगर, नागकेसर, जायफल, श्वेतचन्दन जावित्री सफेद एव कालाजीरा, सोठ कालीमिच पीपल पोहकरमूल, कचूर, हरड बहेडा, आवला, कूठ, वायविडग, चित्रक तालीसपत्र, देवदारु, धनिया अजवायन मुलहठी खरसार अम्लवेत, वशलोचन, अजमाद, कपूर अभ्रक भस्म काकडासिगी, अडूसा, पिप्पलीमूल, अरणी, पुष्पप्रियगु

नागरमोथा, अतीस, शतावर का सत्त्व, निसोत और धमासा - प्रत्येक समभाग तथा मिश्री सबके बराबर लेकर यथा विधि चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख ले।

मात्रा— डेढ तोला पुरानी। आधुनिक मात्रा ४-६ माशे।

उपयोग - यह चूर्ण हृद्य, कण्ठ्य, और जिह्वाशोधक है। यह बलवीर्यवर्धक, पोष्टिक एव अग्नि दीपक, वातनाशक तथा चक्षुष्य है। इसके सेवन से प्रमेह, खासी, अरुचि, राजयक्ष्मा, पीनस, क्षय, अर्श, ग्रहणी, त्रिदोष, हिचकी, अतिसार, प्रदर, गलग्रह, पीलिया, स्वरभेद और अश्मरी प्रभृति रोगो को नष्ट करता है।

(२) लवगादि अर्क—

(हृदय को बलदाता एव वातहर (यू चि स)

साफ-रूमी, अजवायन, लाग, साफ देशी प्रत्येक ६ माशे। कस्तूरी, केशर, बाबूना पुष्प, करफस बीज, साढे तीन माशे प्रत्येक दालचीनी १४ माशे। कस्तूरी, केशर को छोडकर शेष द्रव्यो को १६ गुने जल मे रात को भिगो दे। प्रात अर्क निकाल ले। अर्क निकालते समय पोटली मे रखकर परिस्रावी नलकी के मुखपर बाध दे। मात्रा ४ तोला। भोजनोपरान्त। गुण- यह हृदय का बल देता तथा वायु को नष्ट करता है।

(१०) इलायची (एला) लेसरकार्डेमम्

गुणधर्म -

सूक्ष्मला शीतला स्वादु हृद्या रोचनीदीपनी (र र नि)
सूक्ष्मला मागधीमूल प्रलीढ सर्पिषा सह। (वगसेन)
नाशयात्शु हृद्रोग गुल्मानापि विशेषत ।
अजीर्ण रोग जनित हृदयस्पन्दन हरेत्।। (पू त)

हृदय रोग मे -

१ वशलोचन, गावजवा पुष्प का चूर्ण घृत के साथ सवन कराने से हृदय रोग शात होता है। इससे गुल्म मे भी लाभ होता है।

२ इलायची पिप्पली मूल, अतीस समभाग का चूर्ण बनाकर मधु के साथ चटाने से कफज हृदय रोग निवृत्त होता है।

३ एला एव वशलोचन का समभाग चूर्ण बनाकर उन्नाव के पानक के साथ सेवन कराने से हृदय की बढती हुइ धडकन सम हो जाती है।

४ एला कमलगट्टागिरी (जीभी रहित) को शबत आवरेशम के साथ अथवा गव्यदुग्ध के साथ सेवन कराने से हृदय की बढती धडकन घटकर सम हो जाती है।

५ एला, पिप्पलीमूल और पटोल के समभाग चूर्ण को घृत के साथ चटाने से सोपद्रव हृद्रोग शात होता है।

६ एला सेक करके मुख मे चबाने से हिचकी बद हो जाती है।

७ एला बीज को तुलसी रस मे पीसकर पान कराने से हिचकी शात होती है।

८ एला, चन्दन, पिप्पली, नागरमोथा और लवग के चूर्ण को मधु मिलाकर चटाने से हिचकी शात होती है।

९ एलादि पाक विधिवत बनावे यह हृद्य होता है। इसके सेवन से हृदय के रोग नष्ट होते है।

(११) दशमूल

यह त्रिदोषहर, श्वासकास, शिर शूल, तन्द्रा, शोथ, ज्वर, आनाह, पार्श्वशूल एव अरुचिहर इसका क्वाथ या दशमूलारिष्ट हृद्रोग तथा अर्श (रक्तार्श) को नष्ट करता है।

वृहत्पञ्चमूल के द्रव्य— (१) बेल (२) गम्भारी (३) पाटल (४) अरणी (५) सोनापाठा।

इन पाचो के मूलो को वृहत्पञ्चमूल कहते है। यह तिक्त, कषाय तथा मधुर रसयुक्त, कफवातनाशक, श्वास कासनिवारक होती है। यह उष्णवीर्य लघु तथा अग्निदीपक होती है।

लघुपञ्चमूल— (१) सरिवन (२) पिठवन (३) बडी कटेरी (४) छोटी कटेरी (५) गोखरू

इन पाचो के मूलो को एकत्र करने से लघु पञ्चमूल होती है। यह लघु, स्वादिष्ट, बल्य, वातपित्तहर, वृहण, ग्राही एव ज्वर, श्वास अश्मरी को निवृत्त करता है। यह अत्यन्त उष्णवीर्य नहीं होता है।

दशमूलारिष्ट— प्रात साय २५ एम० एल० दुगन जल के साथ पान कराने से तथा साथ मे आरोग्यवर्धिनी १ गोली और कृमिकुठार रस की १ गोली नित्य प्रात साय सवन कराने से समस्त हृद्रोग नियमित १ २ मास पर्याप्त लाभ होन तक सेवन कराना अत्यन्त लाभकारी अनुभूत [illegible]

दशमूलार्क— १५ २५ मि० ली० दिन मे [illegible] कराने से वातज हृद्रोग मे लाभ होता।

अथवा गोजिह्वार्क— २५ ३० [illegible] पान कराने से कफज हृद्रोग मे लाभ होता।

अथवा विडगार्क २५-१०० मि०ली० दिन मे १-२ वार पान कराने से कृमिजन्य हृद्रोग नष्ट होता हे।

दशमूल क्वाथ— दशमूल का क्वाथ, सेधानमक तथा यवक्षार प्रत्येक १-१ माशा मिश्रित कर सेवन कराने से हृद्रोग, श्वासकास, गुल्म एव शूल नष्ट होते हे।

(१२) सर्पगन्धा Reuwalifa Serpentina-

गुणधर्म— रस मे तिक्त, वीर्य- उष्ण, विपाक- कटु। यह उष्ण। कफवातहर। कर्म निद्राजनन, कृमिघ्न, दीपन, पाचन, रोचक, शूल प्रशमन, कामातिशय अवसादक, मानसिक विक्षोभशामक, हृदयावसादक, स्वेदजन्य, आर्तवजनन, आमपाचन, ज्वरघ्न, अनिद्राहर, रक्तशोधक, उन्मादहर, वातप्रशमन, अवसादहर, मानसिक भय, अग्निमाद्यहर एव विषनाशक हे। इसका वातनाडी सस्थान पर सीधा प्रभाव पडता हे। इसी मे प्रशस्त हे। यह शान्तिकर तथा मस्तिष्क उत्तेजना को शान्त करता हे।

(१) हृद् धडकन वृद्धि, तीव्र वेदना एव वात काठिन्य नाशार्थ— इसका १५ रत्ती चूर्ण देने से अवश्य लाभ होता ह। यह पोटेशियम ब्रोमाइड से भी उत्कृष्ट कार्य करता ह।

(२) हिचकी नाशार्थ— अजवायन का सत्व जल मे हल कर उसके साथ सर्पगन्धा का चूर्ण १०-१५ रत्ती इसकी रामवाण ओषधि है।

(३) निद्राजननार्थ — सर्पगन्धा चूर्ण ७ रत्ती से १० रत्ती तक की मात्रा मे सेवन कराने से गहरी निद्रा आ जाती हे। रोगी का मन सस्थान शान्ति एव स्वास्थ्य प्राप्त करता हे।

(४) श्वास काठिन्य शमनार्थ— सर्पगन्धा चूर्ण १५ रत्ती सेवन कराने से रोगी को आराम आ जाता हे। श्वास का दोरा आरम्भ होते ही इसे मधु के साथ चटाने से तत्काल आराम होता हे। श्वासोच्छ्वास विना कष्ट के एव विना वेदना के होने लगती हे।

(५) सर्पगन्धा चूर्ण— का अतिश्लक्षण चूर्ण रस सिन्दूर डेढ माशा आर सर्पगन्धा चूर्ण ढाई तोला मिश्रित कर खरल मे डालकर १ घण्टा मर्दन कर सुरक्षित रख ले। मात्रा— २-२ रत्ती प्रात साय १-१ मात्रा जल से या दूध से या गुलाव के अर्क से अथवा गुलकन्द के साथ सेवन करावे। इससे समस्त मानसिक रोग नष्ट होते हे।

(६) सर्पगन्धा घन वटी (सि० यो० स०)—

सपगन्धा घनसत्व १ भाग पिप्पलामूल चूर्ण आधा भाग मिलाकर मात्रा— ३-३ रत्ती की गोलिया वना ले। फिर २ ३ गोलियॉ रात मे शयन से पूर्व जल या दूध से दे। इससे सुखी निद्रा आती ह एव रक्तदाव सामान्य रहता ह। इससे हृच्छूल तथा आन्त्रपुच्छ शूल भी शान्त होता ह। इसके लिए थोडी अफीम १ गोली तथा मधु म मिलाकर चटाव। शीघ्र आन्त्रपुच्छ शूल निवृत्त होगा।

(१३) शंखपुष्पी (शखाहुली) विष्णुकान्ता

गुणधर्म— शखपुष्पी मध्या या, रसायनी ह्द्य, अपस्मार एव भूतादि दोषा की निवारक ह। यह कषाय आर शीतवीय होती हे। यह मेध्य होने से मस्तिष्क तथा ह्द्य होने से हृदय के लिए हितकर एव वलप्रद होती ह। मस्तिष्क तथा हृदय के रोगो को नष्ट करती ह।

शखपुष्पी एव सपगन्धा सर्वश्रेष्ठ रक्तचाप नियामक वनोषधिया विश्व भर के विद्वानो को मान्य भी ह।

प्रयोग— (१) रक्तदाव (ब्लड प्रेशर) हेतु— ताजा शखपुष्पी का रस प्रात दोपहर एव सायकाल पान करान से हमेशा के लिए रक्तदाव सामान्य रहने लगता ह। मस्तिष्क को शीतलता प्रदान करने वाली वनापधिया म शखपुष्पी, ब्राह्मी एव वचा, शिरोमणि ह। चरक मे इसके ब्राह्म रसायन, ऐन्द्र रसायन (घृतकल्पना) एव मेध्य रसायनी (कल्क कल्पना) प्रसिद्ध है। सुश्रुत मे भी अगस्त्य रसायन प्रसिद्ध योग हे।

रसायनार्थ इसको घृत, मधु एव शर्करा क साथ सेवन करने से वृद्धत्व एव झुर्रियॉ नष्ट होती हे एव वल्य, स्मृति, बुद्धि की सम्पन्नता प्राप्त होती ह।

यह शिरोरोग, उन्माद अपस्मार, रक्तचाप वृद्धि वर्धन, रक्तस्राव, मस्तिष्क दार्वल्य, योषापस्मार आदि नाश करती ह।

शखपुष्पी का सीरप या शर्वत हृद्य तथा स्मृति वुद्धि वर्धनार्थ सर्वत्र प्रयोग मे लिया जाता ह।

हृदय एव मस्तिष्क दार्वल्य निवारणार्थ- [illegible] पचाग, ब्राह्मी पचाग, शतावरी, गिलाय १-१ भाग [illegible] चन्दन गुलाव पुष्प आधा-आधा भाग [illegible] जल मे क्वथित करे। चतुथाश अवशेष रहने पर [illegible] भाग मिलाकर एक तार की चाशनी वनाकर रख [illegible] २ से ५ तोला तक दूध मे या जल म मिलाकर पान [illegible] इससे हृदय एव मस्तिष्क की दुर्वलता [illegible]

वलवान बनता हे। यदि इसके साथ १ रत्ती तृणकान्तमणि पिष्टी सेवन कराई जाय तो हृदय के सव रोग नष्ट होते हे।

(१४) जटामासी या बालछड (Nardo Stachys Jatamunsi DC)

यह त्रिदोषहर हे। उपयोग— योषापस्मार उच्चरक्तदाव, अनिद्रा, हृद्रोग ओर उन्माद आदि नाशक हे।

यह अन्य ओपधियो के मिश्रण से अर्श, त्वग्दोष, व्रणशोथ, शिर शूल, हृदयरोग, नासास्रावाधिक्य, मूर्च्छा, पित्तज्वर, स्वेदाधिक्य, विस्फोट, व्रण, दन्तरोग, प्रतिश्याय, शिश्न स्थूलीकरण, अपस्मार, योषापस्मार, कष्टार्त्तव, मक्कलशूल, श्वेतप्रदर, उन्माद, अनिद्रा, हृदयरोग (हृच्छूल), उच्चरक्तदाव, अर्श, आक्षेप, रक्तविकार, यक्ष्मा, पिपासा, रक्तातिसार, छर्दि, आध्मान, अग्निमाद्य, उदरशूल, वस्तिशोथ, कासश्वास एव नपुसकता आदि रोगो को नष्ट करती हे।

(१) हृदयशूल प्रलेप— जटामासी, वच, नागरमोथा, दालचीनी, लवग, गुलाव पुष्प, वच, समभाग लेकर तुलसी स्वरस मे पीसकर प्रात ६ वजे ओर साय ४ वजे जहा वक्षवेदना होती हो वहा चन्दनवत् लेपकर कागज या लिण्ट चिपका कर १५-२० मिनट सेक करे तथा पट्टी वन्धन कर दे। हृद्शूल शीघ्र शान्त होता हे।

(२) मास्यादि फाण्ट— जटामासी, द्राक्षा ओर रुद्राक्ष के १२ ग्राम चूर्ण को मिट्टी के पात्र मे खोलते हुए ५० मि० ली० जल मे डालकर ढककर रख दे। कुछ शीतल होने पर छानकर पान करावे। इससे रक्तचाप नियमित होकर सुखनिद्रा आती हे।

(३) अथवा इसका फाण्ट वनाकर पिलावे- जटामासी, व्राह्मी ओर कुलजन का चूर्ण मधु से चटावे।

(४) अनिद्रा मे— जटामासी, खुरासानी अजवायन ओर भागरे का चूर्ण भेस के दूध के साथ सेवन कराने से नींद अच्छी आती हे।

(५) हृद्द्रव हेतु— अर्जुन छाल, जटामासी, वला, राहितक की छाल का क्वाथ वनाकर पान करावे। धडकन नियमित होगी। अथवा जटामासी का वेदनास्थान पर लेप करे।

(६) वेदनाहर प्रयोग— जटामासी के घनसत्व का कोष्ण लेप हृद्शूल तथा अनेक सभी शूलो को दूर करता ह।

(७) जटामासी का क्वाथ या फाण्ट ४-५ घन्टो के अन्तर से पान करावे।

(८) उच्चरक्तचाप मे— जटामासी, खुरासानी अजवायन, सर्पगन्धा ओर मिश्री समभाग का चूर्ण १-१ ग्राम दिन मे २-३ बार सेवन करावे। ऊपर से दुग्धपान करावे।

(१५) अश्वत्थ (पीपल वृक्ष)

गुणधर्म— रूक्ष, कषाय, कटु विपाक शीतवीय कफपित्त शामक, वर्ण्य, व्रणरोपक, वेदनास्थापन शोथहर रक्तशोधक, रक्त एव पित्त शामक, मूत्र सग्रहणीय योनिशोधक तथा पित्त कफादि विकारहर।

इसकी छाल स्तम्भक, सकोचक, रक्त सग्राहक कफघ्न, गर्भस्थापन, बाजीकरण, क्षय, सुजाक, व्रण पिपासा, शोथ, भगन्दर, मुखपाक, वमन अतिसार, प्रवाहिका, रक्तविकार, प्रमेह, वातरक्त, प्रभृति रोगो को नष्ट करती हे। यह स्वप्नदोष एव मूत्र रोगो को नष्ट करती हे। यह हिचकी, प्लीहावृद्धि, श्वास, हनुग्रह, पीलिया, प्रमेह कण्ठमाला, अग्नि दग्धव्रण हर, खाज-खुजली, छाजन आदि चर्मरोग हर हे। इसका स्मृति भ्रशपर उपयोगी प्रभाव पडता हे, यह विविध द्रव्यो के मिलाप से रोगो मे लाभ करती ह।

(१) वृक्कशूल नाशार्थ— पीपल की शुष्क जटा का चूण हुक्के मे भरकर धूम्रपान करने से शीघ्र ही लाभ होता हे।

(२) रक्तस्राव पर— इसकी ताजा लाक्षा या सूखी लाक्षा ३ माशे के साथ सफेद जीरा पीसकर १ तोला गुलकन्द म मिलाकर शर्बत अनार से तरकर ४-४ घण्टे पर पान कराने से रक्तस्राव होना निस्सन्देह बन्द होता हे।

(३) हृद्दौर्बल्यजन्य मूर्च्छा मे— पीपल के दूध मे समभाग उत्तम मधु मिलाकर मस्तक पर लेप करने से हृद्दोर्वल्यजन्य सन्निपातज एव अपस्मारजन्य मूर्च्छा मे लाभ होता ह।

(४) हिचकी मे— लाक्षा का चूर्ण १ १ माशा मधु म मिलाकर थोडी-थोडी देर मे चटाने से एव दूध म मिलाकर नस्य देने से हिचकी मे लाभ होता हे।

(५) निद्रानाश होने पर— रात्रि के समय लाक्षा चूण १-२ माशा शर्करा मिलाकर भेस के दूध क साथ पिलान से शात निद्रा आती ह।

(६) पीपल पचाग का घनसत्व प्रयोग- पीपल पचाग का घनसत्व वना १-१ रत्ती की गोलिया वना क [illegible] करान स हदय [illegible] मस्तिष्क दार्वल्य दूर हाती ह। [illegible]

दुग्ध से सेवन कराने से नपुसकता, शीघ्रपतन एव उर क्षत नष्ट होता हे। यह यक्ष्मा मे भी १-२ गोली गावजवान के अर्क के साथ सेवन कराने से लाभ करती हे।

(७) पीपल के पत्रो का अर्क ५ तोला तक दिन मे ३ वार पान कराने से हृद्दौर्बल्य एव शिरोभ्रम मे लाभ होता ह।

(८) उक्त अर्क मे २ भाग मिश्री मिलाकर शर्वत वनाकर १-२ तोला पान कराने से अथवा गुलाव अर्क डेढ तोला मिलाकर पान कराने से हृद्दोर्बल्य शान्त होता हे।

(१६) शालपर्णी (सरिवन)
(Desmodiun Gangeticum)

गुणधर्म— पृश्निपर्णी त्रिदोषघ्नी वृष्योष्णा मधुरा सरा।
हन्ति दाहज्वर श्वास रक्तातिसार तृड्वमी।।
शालपर्णी स्थिरा सोम्या त्रिपर्णी पिवरीगुहा।
विदारी गन्धा दीर्घांगी दीर्घ पत्रामशुत्यपि।।
शालपर्णी गुरुश्छर्दिज्वर श्वासातिसारजित्।।
शोपदोषत्रयहरी वृहण्युक्ता रसायनी।
तिक्ता विपहरी स्वादु क्षतकास कृमि प्रणुत्।

सरिवन पाक मे गुरु ओर वान्ति, ज्वरा, श्वास, खारी, अतिसार, शोष, त्रिदोष निवारक होती हे एव वृहण रसायन, तिक्त तथा मधुर रसयुक्त ओर विप क्षतकास एव कृमियो का नष्ट करती ह।

शालपर्णी उष्णज्वरघ्न शाथहर मूत्रजनन, वल्य, रसायन, वय स्थापन वृहण सवदापनाशक अगमर्द प्रशामक तथा विपघ्न ह। इससे मूत्राशय की जलन कम होती ह। इसका प्रयोग ज्वर, वातराग अतिसार, वमन शोथ प्रमेह अर्श, कृमि ओर राजयक्ष्मा तथा क्षतकास म किया जाता ह। श्वासकासरोध फुफ्फुस शाथ मे इससे विशेष लाभ हाता ह। इसक पचाग क क्वाथ म कालीमिच का प्रक्षेप दकर पान करा। से रक्तशुद्धि होती ह। मात्रा-- चूर्ण की आधा ताला तक।

(१७) आवला

आवला क नाम तथा गुण--
वयस्थामलकी वृष्या जातीफल रस शिवम।
धात्रीफल श्रीफल च तथा अमृत फल स्मृतम।
त्रिष्वाम कमारव्यात धात्रीतिष्य फलाऽमृता।।
ऽमलकीफल राम धात्रीफल किन्तु विशपत।
रक्तपित्त प्रमेहघ्न पर वृष्य रसायनम्।।
हन्ति वात तदम्लत्त्वात्पित्त माधुर्य शत्यत।
कफ रूक्ष कषायत्वात्फल धात्र्यात्रिदोषजित।
यस्ययस्य फलस्येहवीर्य भवति याहशम।
तस्यतस्येव वीर्येण–मज्जानमपिनिर्दिशत।

(१) आवले के सूखे चूर्ण को आवल क रस स २१ बार भावित कर शुष्क होने पर सेवन करने से रसायन क सभी गुण प्राप्त होते ह।

(२) च्यवनप्राशावलेह का मुख्य घटक आवला ही ह। इसके सेवन से देह की झुर्रिया निवृत्त होकर दाहक सभी क्रियाये सुधर कर देह पुष्टि एव वलवधक हाती ह। इसक सेवन से स्मृति, मेधा एव कान्ति की वृद्धि होती ह। यह श्वास, खासी, पीलिया क्षय, अग्निमाद्य वीय विकारादि निवृत्त होते हे।

(३) इसका सवन करने स रक्तपित्त पित्तशूल, कामला, हिचकी, वमन, जीर्ण, विवन्धादि दूर हाते ह। रक्ववीं रोग मे भी यह लाभकरी ह। यह अर्श अतिसार सग्रहणी, अत्यात्तव एव प्रतिश्याय म भी लाभ करती ह।

(४) लोहभस्म के साथ प्रयोग करन से यह पीलिया एव कामला दूर करता ह। इसक आमलकी रसायन धात्री लोह, त्रिफला चूर्ण वनते ह। इसकी मात्रा ३ माशे से १ तोला तक प्रयोज्य हे।

(५) हृद्दावल्य मे— शुष्क व्राह्मी पचाग आवला वहेड़ा एव हरड २० २० ग्राम प्रत्येक कालीमिच ६ ग्राम सवका वस्त्रपूत कर सवक समभाग मिश्री मिलाकर रख ल। मात्रा— ६ ग्राम। अनुपान— जल या गोदुग्ध क साथ प्रात साय प्रयोग कराव। इससे हृद्दावल्य म लाभ हाता ह।

(६) हृदयावलेह (र०सा०) — काल मुनक्का १० ग्राम वीज रहित आवला तथा हरड मुरब्वे गुठली रहित १०-१० ग्राम निकाल कर पीस ल। गाजवा १० ग्राम, मलयगिरि चन्दन चूण १० ग्राम गुलावपुष्प २० ग्राम रामतुलसी गाजवा पुष्प १० १० ग्राम सवती का गुलकन्द ४० ग्राम एव काल मुनक्का ५० ग्राम सवको पीसकर एकत्र मिश्रित कर हिलाकर एक तार की चाशनी ५०० ग्राम शक्कर की वनाकर सभी मिलाकर पाक कर। मात्रा— १० १० ग्राम प्रा। साय। ऊपर स शीतल जल पान कराव। यह धड़कन का नियमित करने मे प्रशस्त ह। अन्य हृद् विकारो म भी लाभकारी ह।

(१८) गुडूची (गिलोय)

उत्पत्ति— जब अभिमानी दशशीश रावण ने कामातुर होकर जगज्जननी सीताजी का वलात् हरण किया तव शक्ति पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने उस राक्षसाध्यक्ष लकापति का विनाश करने हेतु हनुमान सुग्रीव आदि वानरो की सहायता से रावण को मार डाला। तव युद्ध मे मृत वानरो को, राम ने इस शुभ कार्य से प्रसन्न होकर पुनर्जीवित किया था। यह कार्य इन्द्र ने अमृतवृष्टि के सिचन द्वारा किया था। उन वानरो की पुनर्जीवित काया से अमृत की कुछ वूदे पृथ्वी पर गिर गई। इन अमृत विन्दुओ से ही गिलोय की उत्पत्ति हुई।

नाम तथा गुण—

गुडूची मधुपर्णी स्यादऽमृता मृतवल्लरी।
छिन्ना छिन्न रुहा छिन्नोद्भवावत्सादनीतिन्व।।
जीवन्ती तन्त्रिका सोमा सोमवल्ली च कुण्डली।
चक्र लक्षणिका धीरा विशल्या च रसायनी।
सग्राहिणी कषायोष्णा लघ्वी वल्याऽग्निप्रदीपनी।
दोषत्रयामतृड् दाहमेहकासाश्च पाण्डुताम्।
कामलाकुष्ठ वातास्र ज्वरकृमि वमिन्हरेत्।
प्रमेहश्वासकासार्श कृच्छ्र हृद्रोग वातनुत्।।

प्रयोग हृदयवल्लभ वटी— गिलोय सत्व १० ग्राम, सर्ज का घनसत्व २० ग्राम, स्वर्णमाक्षिक भस्म १० ग्राम, प्रवालपिष्टी १० ग्राम, भागरा पुष्प १० ग्राम, मदन करके आवला स्वरस तथा वेदाना अनार के रस से भावित कर २ २ रत्ती की गोलिया जल के साथ दिन मे ३-४ वार प्रयोग कराने से हृदय की दुर्वलता, धडकनवृद्धि, घवराहट, वेचनी, मे यह उत्कृष्ट लाभ करती ह। प्रथम मात्रा मे ही जादू सा प्रभाव दिखाती ह। पुरातन रोग मे निरन्तर १ २ माह दे।

हृदयरोगान्तक वटी— गिलोय सत्व, लोह भस्म, मकरध्वज १०-१० ग्राम, मुलहठी, इलायची, पिप्पली, त्रिफला, वशलोचन प्रत्येक २०-२० ग्राम, अर्जुन छाल ४० ग्राम, दशमूल चूर्ण ६० ग्राम, गोमेद भस्म, मुक्ता भस्म, माणिक्य भस्म, अकीक भस्म, सगेयशब १०-१० ग्राम प्रत्येक। सबको वस्त्रपूत कर खरल मे डालकर ३ दिन रसोत को स्वरस मे मर्दन करे ओर पश्चात् ३ दिन अर्जुन के क्वाथ से मदन करके २-२ रत्ती की गोलिया बनाकर छाया मे शुष्क कर सुरक्षित रख ले।

उपयोग— यह वटी समस्त हृद्रोगो मे प्रयोज्य हे। हृदय शोष मे प्रशस्त हे।

पेत्तिक हृद्रोग *अम्लपित्त के लक्षण हाने पर* वशलोचन, गुडूची सत्व, सोनागेरू, छोटी इलायची, गुलाव पुष्प केवडा पुष्प, निर्विषी, कत्तलफल, कमलगट्टागिरी आर धनिया प्रत्येक का वस्त्रपूत चूर्ण २० २० ग्राम सहस्रपुष्टी, अभ्रक भस्म ६ माशे, प्रवाल पिष्टी, जह्रमोहरा खताई मुक्तापिष्टी और अकीक भस्म प्रत्येक ३-३ माशा, सबको गुलाव क अर्क मे ७२ घण्टे मर्दन करक शुष्क कर सुरक्षित रख। मात्रा— १ से ४ रत्ती तक। अनुपान— जल, दूध या अर्क गुलाव। यह विकलतायुक्त पत्तिक हृद्रोग मे प्रशस्त ह। इससे पिपासा, दाह एव वचनी मे भी लाभ होता ह।

हृद्शूल निवारणाथ— कटेरीमूल एव गिलाय १०-१० ग्राम, जल आधा किलो मे डालकर मृतप्रात्र म चतुर्थाशावशेष क्वाथ वनाकर वस्त्रपूत कर रुग्ण का पान करान से शूल की शीघ्र निवृति होती हे।

हृद्पोषक अवलेह— गिलाय सत्व, रुमीमस्तगी, मृगशृग भस्म १० १० ग्राम प्रत्यक वशलाचन ८० ग्राम, मिश्री १६० ग्राम, पिप्पली ४० ग्राम, लघुइलायचीदाना २० ग्राम, दालचीनी प्रत्येक १० १० ग्राम, चादी के वक २१ नग, रास्ना, स्वर्ण वर्क ११ नग, किसमिश ५० ग्राम, चूर्ण तयार कर मधु २५० ग्राम आर अर्जुन घृत ५०० ग्राम म मिश्रित कर अन्त मे वर्क मिश्रित कर, अवलेह निर्माण कर सुरक्षित रख ले।

मात्रा— ६ से १० ग्राम। अनुपान— बकरी का दूध। समय— प्रात साय।

उपयोग— यह हृद्दार्वल्य हेतु चमत्कारिक *अवलह* ह। कुछ दिनो के नियमित प्रयोग से धडकन वृद्धि, हृद्शूल वेचनी आदि निवृत्त होते ह।

(१६) अश्वगन्धा (असगन्ध)

अथाश्वगन्धा तस्यनामगुणानाह—
गान्धातावाजिनामादिरश्वगन्धा हयाह्वया।
वाराहीकर्णी वरदा बलदाकुष्ट गन्धिनी।।
अश्वगन्धाऽनिलश्लेष्मश्वित्र शोथक्षयापहा।
वल्यारसायनी तिक्तकषायोष्णाऽतिशुक्रला।

उपयोग— न्यून रक्तदावहर चूर्ण—

असगन्ध, ५० ग्राम, शतावरी, श्वेतमूसली प्रत्येक ५० ग्राम, जीवन्ती ६० ग्राम, अतिबला, नागवला ६०-६० ग्राम, महावला ७० ग्राम, ववूरी ८० ग्राम, तालमखाना ५ ग्राम, कोच वीज १० ग्राम, गेहू का चोकर २० ग्राम, विदारीकन्द ४० ग्राम, मिश्री सवके समान भाग।

चूर्ण कर एकत्र मिश्रित कर मिश्री मिलाकर सुरक्षित रख ले। मात्रा— ३-४ ग्राम। समय प्रात साय। अनुपान- दूध से अथवा १० ग्राम मलाई या मक्खन मे मिलाकर चटावे।

उपयोग— न्यून रक्तचाप मे प्रशस्त हे। अनुभूत ह।

मन:स्विनी वटी—

अश्वगन्धा २० ग्राम, मुक्तापिष्टी २० ग्राम, जवाहरमोहरा पिष्टी, अकीक पिष्टी २०-२० ग्राम, जटामासी, आमलकी, २० २० ग्राम, शुद्ध शिलाजीत ५० ग्राम, सर्पगन्धा का वस्त्रपूत चूर्ण १०० ग्राम। वस्त्रपूत कर सवको खरल मे डालकर शखपुष्पी, भागरा, जटामासी, ब्राह्मी, सर्पगन्धा इनके स्वरस तथा क्वाथ १-१ वार भावित करके चने के समान वटी का निर्माण कर छाया मे शुष्क कर सुरक्षित रख ले। मात्रा १-२ गोली। समय- प्रात साय जल या दुग्ध के साथ प्रयोग करे।

उपयोग— रक्तदावाधिक्य मे यह प्रशस्त हे। चित्तभ्रम, मानसिक दार्वल्य अनिद्रा मे भी प्रशस्त हे।

सारस्वत चूर्ण— असगन्ध, सेधानमक, अजमोद, जीरा, कालाजीरा, सोठ, कालीमिर्च, पिप्पली, पाठा एव शखपुष्पी, मीठी वच। सबको समभाग वस्त्रपूत चूर्णित कर मण्डूकपर्णी के स्वरस मे सात भावना देकर शुष्क कर सुरक्षित रख ले। मात्रा— ३ ग्राम। अनुपान— जल। समय— प्रात साय। उपयोग— रक्तदाव वृद्धि को न्यून करता ह। अनिद्रा को दूर कर स्मृतिवृद्धि मन प्रसादक हे।

(२०) ताम्बूल (पान) नागरबेलपत्र (नागवल्ली) (Piper Bette)

नाम एव गुण—

ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागिनी नागवल्लरी।
ताम्बूल विशद रुच्य तीक्ष्णोष्ण तुवर सरम्।
वश्य तीक्ष्ण कटु क्षार रक्तपित्तकर लघु।।
वल्य श्लेष्मास्य दोर्गन्ध्य मलवात श्रमापहम्।।

पान खाने की आदत वाला का पान खाने पर मन प्रसादन होता ह। थकावट निवृत्त होती ह। पिपासा तथा क्षुधा प्रतीत होती ह एव कुछ कामोत्तेजना होती ह। यह तीव्र मादक नहीं होती ह। शयनोपरान्त उठने पर, स्नानोपरान्त भोजनोपरान्तेपु ताम्बूल सेवन हितकर भवति।

रोगोपयोग— हृद्रोग, रक्तचापाधिक्य ध्वजभग ज्वर, प्रतिश्याय अग्निमाद्यादि ।

गुणधर्म विवेचनम—

(१) ताम्बूल कटुतीक्ष्णोष्ण रक्तपित्तकर सरम्।
तीक्ष्ण वातकफध्वसी हृद्य वृष्य च कृमिजित्।।
(प्र० नि०)

(२) ताम्बूल मुखशुध्यर्थ प्रयुज्यते तु तिक्त कटुर्यामम।
वात कफामय शमन हृद्य वृष्य च जन्तुध्नम।।
(षोडशागहृदयम्)

(३) ताम्बूलासव एषरस्त्वनुभूता हृद्य भवेषु रोगषु।
हृद्दार्वल्य पादस्थित शोथेअतीव प्रशस्त ।।

गुण-१— हृदय की अनियमितता को निवृत्त कर गतिन्यून करके उसका वलवर्धन करता ह।

गुण-२— यह हृदयगति को सम करके प्रसार काल एव विश्रान्तिकाल की वृद्धि करके हृदय गति को नियमित करता हे।

गुण-३ इसके सुगन्धित तेल से रक्तदाव हृदय की गति एव सकोच मे न्यूनता आती हे।

गुण-४ कर्पूर जाती ककोल लवग कटटकाह्वये।
सुचूर्णपूगे अहित ताम्बूलज शुभम्।।
मुखवशद्य सागन्ध्य कान्ति सोष्ठयकारकम्।
हनुदन्त स्वरभग जिह्वेन्द्रिय विशोधनम्।
प्रसेक शमन हृद्य गलामय विनाशनम।।
(शा० स० - ३)

(५) हृदय रोग मे ताम्बूल के स्वरस मे दुगनी शक्कर मिलाकर पान करावे।

(६) अथवा पान मे इलायची एव कस्तूरी रखकर खिलावे।

(७) ताम्बूलपानक— ताम्बूल पानक वना सवन कराने से हृदय वल की वृद्धि होती हे।

(८) ताम्वूलासव— (षोडशागहृदयम) पान कराने स हृदयरोग तथा हृदयरोगजन्य पादशोथ निवारक ह।

(२१) गावजवां (गोजिह्वा)

नाम एव गुण —

गोजिह्वा गोजिका गोभी दार्विका खरपर्णिनी।
गोजिह्वा वातला शीता ग्राहिणी कफ पित्तनुत्।।
हृद्या प्रमेह कासास्रव्रणज्वहरी लघु
कोमला तुवरातिक्ता स्वादु पाक रसा स्मृता।।

गोजिह्वा हेतु विद्वानो मे मतभेद व्याप्त हे। कुछ ने एलीफण्टोपस स्केबर **Elephanto Scaber** को गोजिह्वा माना हे। जवकि ठा वलवन्त सिह जी ने स्थानिक नामो के आधार पर इसे गोजिह्वा मान्य न कर 'मयूरशिखा' मान्य किया हे। कतिपयो ने यूनानी मे प्रचलित 'गावजवान' द्रव्य इसे मान्य किया हैं, जिसका लेटिन नाम ओनोस्मा ब्रेल्टिएटम हे। कुछ इसे गावजवा से भिन्न मानते है। कुछ ने ककसीनिया गर्माका को गावजवान मान्य किया जो ब्लूचिस्तान मे होता हे तथा गुणो मे वल्य मूत्रल, स्नेहन हे तथा आमवात एव फिरग मे प्रयोग होता है।

गावजवान के गुण —

यह वल्य, हृद्य, भूत्रल, रसायन, स्नेहन एव सोमनस्यजनन हैं। इसका उपयोग फिरग, आमवात, हृदय की धडकन वृद्धि, मूत्रकृच्छ, आमाशय एव वस्तिप्रक्षोभ और ज्वर मे किया जाता है।

हृदय की धडकन हेतु— इसके फाण्ट का प्रयोग किया जाता हे। मात्रा ४-६ माशा दुग्ध के साथ। पुष्प ३ से ६ माशा। गावजवा का अर्क सेवन करने से हृद्विकारो मे लाभ होता हे। अर्क निष्कासनार्थ इसके पत्रो को रात्रि मे जल मे भिगो दे। प्रात भवकायन्त्र से अर्क खींच ले। मात्रा प्रात साय ३०-३० ग्राम पान करावे।

पानक - इसका पानक वना सेवन कराने से भी हृद् विकारो मे लाभ होता हे।

पानक की निर्माण विधि—

गावजवा ५० ग्राम, नीलोफर ४० ग्राम, उस्तखुद्दू, गुलाव के पुष्प, धनिया, कासनी, सफेद चन्दन और इलायची २०-२० ग्राम का काढा बनाकर उसमे १ किलो मिश्री मिला चाशनी वना ले।

जहर मोहरा प्रयोग—

जहर मोहरा खताई का प्रयोग मात्रा २-२ चावल भर, खमीरा गावजवा के साथ लेने से हृदौर्बल्य, धडकन आदि मे प्रभाव पडता है।

हृदयरोगादि चूर्ण —

गावजवान पत्र २० ग्राम, कपूर भीमसेनी, प्रवालमूल, मुक्तापिष्टी, आवरेशम कच्चा कतरा हुआ, सूखा धनिया प्रत्येक १०-१० ग्राम, निर्गुण्डी बीज, मोथा, वशलोचन प्रत्येक ७-७ ग्राम, गिलेइरमनी मिट्टी १५ ग्राम, फिटकरी पुष्प १० ग्राम।

प्रथम प्रवालमूल और मुक्ता को अर्क गुलाब मे ४ दिन मर्दन कर ले। कर्पूर, आबरेशम, गिलेइरमनी वशलोचन को एकत्र पीसकर पूर्व घुटित मुक्ता मूगा को मिश्रित कर ले। फिर शेष का वस्त्रपूत चूर्ण मिला एकत्र मिश्रित घोट ले। मात्रा ५-१० ग्राम दिन मे ३-४ वार। अनुपान मिश्री की चाशनी। उपयोग हृद्रोगो मे रामबाण। हृद्बलदाता और बढी हुई हृद्धडकन का नियामक हे।

खमीरे आबरेशम— कच्चा आबरेशम ५०० ग्राम, अगर, जटामासी नारगी का छिलका, रूमीमस्तगी, लवग लघुएला, तेजपत्र, सफेद चन्दन प्रत्येक ५-५ ग्राम। अर्क गाजुवान, अर्क वेदमुश्क, अर्क गुलाब, सेव का रस, अनार स्वरस, विही का रस प्रत्येक २०० ग्राम वर्षा जल या डिस्टिल्ड वाटर २ किलो, मिश्री १ किलो, मधु २५० ग्राम, अम्बर ५ ग्राम, सोने के वर्क ५ ग्राम, मुक्तापिष्टी, माणिक्यपिष्टी, सगेयशब पिष्टी, प्रवाल पिष्टी, प्रत्येक १०-१० ग्राम, कस्तूरी केशर प्रत्येक ५-५ ग्राम।

सर्वप्रथम आवरेशम को कैंची से कतर कर उसमे के कीट को फैक दे। इसे वर्षा जल मे भिगोकर रख ले। फिर द्रव्यो का चूर्ण बना मिलाकर उबालें। २ किलो जल शेष रहने पर। मिश्री मिला पकावे। नीचे उतार शीतल होने पर मधु मिश्रित कर रख ले। अत मे पिष्टियॉ मिलाकर रख कर केशर, कस्तूरी, अम्बर मिला खूब घोटकर, वर्क १-१ कर मिला धीरे-धीरे मर्दन करे। खमीरा बन जाने पर काच या चीनी के एयर टाइट पात्र मे सुरक्षित रख ले।

मात्रा— १ से ३ ग्राम तक चाटकर ऊपर से अर्क गावजवान, अर्क गाजर क्रमश ७० तथा ५० ग्राम पान करावे।

उपयोग - यह सर्वाग बलवर्धक, मस्तिष्क के तनाव को निवृत्त करता है। दिल डूबने वातिक हृद्रोगो पर, पित्तज हृद्रोगो मे शीतल अनुपानो से दे या अनार के रस से दे।

हृद्रोगो मे इसे हिंगुकर्पूर कस्तूर्यादि वटी से सेवन करावे। सान्निपातिक हृद्रोगो मे कस्तूरी भेरव, जवाहर मोहरा के साथ दे। यह हृद्रोगो मे अमृतोपम है।

(२२) खर्जूर: (Pheonix Sylvestris)

पिण्डखर्जूर (Pheonix Dactylifera)

गुण धर्म -

खर्जूरीत्रितय शीत मधुर रसपाकयो.।
स्निग्ध रुचिकर हृद्य क्षतक्षयहर गुरु।।
तर्पण रक्तपित्तघ्न पुष्टि विष्टम्भशुक्रदम्।
कोष्ठ मारुत हृद्बल्य वान्ति वात कफापहम्।।
वन्हेर्मान्द्य करी गुरुर्विषहरा हृद्या च दत्तेवल-
स्निग्धा वीर्यविवर्धनी च कथिता पिण्डाख्याखर्जूरिका।।

यह हृद्दौर्बल्य नाशक है। एव तज्जन्य मद् मूर्च्छा, भ्रम उपद्रवो को शमन करता है।

रस - मधुर गुण - स्निग्ध, गुरु

मधुर स्कन्ध के द्रव्य प्राय वृहण होते है और वृहण द्रव्य स्निग्ध, गुरु आदि गुणो से युक्त होते है। कथन हे कि—

गुरु शीत मधुर स्निग्ध वहल स्थूल पिच्छिलम्।
प्रायोमन्दस्थिर श्लक्ष्ण द्रव्य वृहणमुच्यते।।

वीर्य - शीत। साधारणतया सभी इसे गरम मानते है, यह भ्रम मात्र है। सभी शास्त्रकारो ने इसे शीत कहा है। यह अरब देश के लोगो का मुख्य आहार है। यह उष्ण होता तो इन उष्णतम देशो मे इसका उपयोग कदापि नहीं होता। विपाक - मधुर, दोषकर्म - यह वात पित्त शामक हे। वातपित्तघ्न, कफ निस्सारक होने से यह कास, श्वास मे हितकर है। पैत्तिककास मे पतला कफ होने पर खर्जूरादि लेह प्रशस्त है।

उर क्षत, क्षय आदि मे भी यह प्रयोज्य है।

श्वास रोग मे - खर्जूर, मुनक्का, सिता, घृत, मधु मिला सेवन करावे।

अथवा खर्जूर, पिप्पली, मुनक्का, सिता, घृत, मधु मिला सेवन करावे।

अथवा - खर्जूर एव सोठ का चूर्ण बना पान मे रख प्रयोग करावे।

(२३) श्वेत एवं रक्त पुनर्नवा (सांठ)

नामानिगुणानिश्चाह - श्वेतपुनर्नवा

पुनर्नवा श्वेतमूलाशोथघ्नी दीर्घपत्रिका।
कटु कपायरसानुरसा पाण्डुघ्नी दीपनी परा।
शोफानिल गर श्लेष्महरी वघ्नोदर प्रणुत्।।

रक्तपुनर्नवा - पुनर्नवाऽपरा रक्ता रक्तपुष्पा शिलाटिका।
शोथघ्नी क्षुद्रवर्पाभूवर्पकेतु कठिल्लक ।।
पुनर्नवा ऽरुणातिक्ता कटुपाका हिमालघु ।
वातलाग्राहिणी श्लेष्मपित्तरक्त विनाशिनी।।

इसका उपयोग हृद्रोग, श्वास,उर क्षत, सुजाक, विषविकार,सर्वागशोथ, नेत्रविकारो, उदर, कामला, पीलिया आदि मे किया जाता है।

१ हृद्रोग मे - कुटकी, चिरायता एव सोठ क्वाथ के साथ किया जाता हे। हृदय पर इसकी क्रिया डिजिटेलिस के समान होती है। यह श्वास, कास जलोदर एव पाद-शोथ हेतु भी उपयोगी हे।

२ हृद्दौर्बल्यनिवारणार्थ - हृद्दोर्बल्यजन्यशोथ निवारणार्थ इसे सेवन कराने से हृदयाकुचन होताह। तथा शोथ व जलोदर मे मूत्रल प्रभाव से लाभ होते ह।

३ अजीर्णजन्य हृद्शोथहेतु - पुनर्नवा पत्रो का शाक सेवन करना लाभप्रद है। साथ ही कुटकी,चिरायता एव सोठ का क्वाथ सेवन कराते है। इससे शीघ्र लाभ होता ह।

४ कफयुक्त श्वास रोग मे इसे प्रयोग कराने से श्वास नलिका के शोथ मे इसे बच के साथ प्रयोग कराने से कफ ढीला होकर निकल जाता है। शुष्क कास मे इसके मूल चूर्ण मे शर्करा मिश्रित कर सेवन कराते हे। श्वासरोग मे मूलचूर्ण की मात्रा ३ माशा मे हल्दी चूर्ण ४ रत्ती मिलाकर मधु के साथ चटाते है। ऐठन या वाइटे आने पर मूल का क्वाथ ५ तोले तक पान कराते हे।

५ फुफ्फुसावरण शोथ मे (फुफ्फुसो मे जल भर जाने पर) श्वेत पुनर्नवा इसके मूल के चूर्ण को ३ से ६ माशा तक नवसादर चूर्ण ४ रत्ती मिला फकाकर गरम जल पान करावे। ऐसी दिन मे २-३ मात्राये तथा इसकी मूल को सोठ के साथ पीसकर उष्ण कर वक्ष पर लेप कराने से श्वास का दौरा तथा शुष्क कास मे लाभ होता है अथवा इसकी साफ की हुई ताजा जड को स्वच्छ खरल मे घोट रस निकालकर (निचोडकर) उसमे १/२ भाग रेक्टिफाइड स्प्रिट मिलाकर शीशी मे रख ले। मात्रा ४ बूद से आधा

ड्राम तक दे। फुफ्फुसशोथ प्रतिश्याय एव खासी मे इससे लाभ होता है।

(१) गोदुग्ध के गुण

गव्य दुग्ध विशेषेण मधुर रसपाकयो ।
दोषधातुमलस्रोत किञ्चदक्लेदकर गुरु।।
शीतल दुग्धवर्धक स्निग्ध वातपित्तास्य नाशनम्।
जरासमस्तरोगाणा शान्तिकृत सेविना सदा।।

देशविशेषेण गोदुग्धगुणानाह जागलदेशीय, पर्वत प्रदेशीय तथा आनूपदेशीय गायो का दूध उत्तरोत्तर एक दूसरे से अधिक भारी होता है, क्योकि आहारानुसार ही दूध मे स्नेह रहता है और उसी के न्यूनाधिक्य से न्यून एव अधिक गुण दुग्ध होता हे। कम घृत वाला कम गुरु तथा अधिक घृत वाला दूध अधिक गुरु होता है।

जो गाये घास के साथ थोडा आहार भी खाती है उनसे जो दूध प्राप्त होता है वह भारी, कफकारी, बलदायक तथा अत्यन्त वीर्यवृद्धि करने वाला होता है। जो गायें भूसा, तृण तथा कपासिये खाकर दुग्ध देती है उनका दुध रोगियो हेतु हितकर होता है।

धारोष्ण गोदुग्ध बलवर्धक, लघु, शीतल, अमृतोपम, अग्निदीपक एव त्रिदोषनाशक होता है। परन्तु यदि दुहने के पश्चात् शीतल हो गया हो तो देर तक रखा रहने से परित्याज्य है। यदि पान करना ही हो तो उसे उष्ण करके पान करना चाहिए। धारोष्ण दुग्ध उत्तम स्वास्थ्यवर्धक रसायन है।

पीयूष, किलाट, क्षीरशाक तथा तक्रपिण्ड वीर्यवर्धक, रसरक्तादिवर्धक बल वृद्धिकारक, गुरु, कफोत्पादक, हृदय, वातपित्त तथा पित्तनाशक, दीप्राग्नि वालो विद्रधि वालो हेतु स्वास्थ्यवर्धक होते है। यदि मोरट चूर्णित हो तो वह लघु बलकारक, रुचिवर्धक, एव मुखशोष, पिपासा, दाह, रक्तपित्त तथा ज्वरघ्न होता है। शर्करा मिश्रित दूध कफवर्धक तथा वातघ्न है। बूरा या मिश्री मिश्रित दुग्ध शुक्रवर्धक तथा त्रिदोषघ्न होता हे।

प्रात कालीन दुग्ध प्राय सायकालीन दुग्ध से अपेक्षाकृत अधिक भारी एव शीतल होता है। क्योकि रात्रि मे चन्द्र गुणो की विशेषता रहती है एव व्यायाम नहीं होता है अतएव सायकालीन दुग्ध प्रात कालीन दुग्ध की अपेक्षा लघु तथा वातकफघ्न होता है, क्योकि दिन मे दिवाकर रश्मियो का प्रभाव रहता है।

प्रात १० बजे तक दुग्धपान करने से वीर्यवृद्धि, रसरक्तादि की वृद्धि तथा अग्निवृद्धिकारी होता है। मध्याह्न कालीन दुग्धपान बलवर्धक , कफपित्तहर एव अग्नि प्रदीपक होता है। बाल्यावस्था मे दुग्धपान शरीर की वृद्धिकारक तथा क्षयादिनाशक होता है। वृद्धो के दुग्धपान से वीर्य वृद्धि होकर शुक्र रक्षण करता है। रात्रि मे दुग्धपान करने से पथ्य एव अनेक दोष शामक होता है एव चक्षुष्य होता है। मनीषियो के मतानुसार रात्रि मे केवल दुग्धपान ही करना चाहिए। उसके साथ साथ भात आदि नहीं लेना चाहिए, क्योकि इससे अजीर्ण हो जाता है एव अनिद्रा भी होती है। दिन मे खाए विदाही पदार्थो के सेवन से उत्पन्न दाह शाति रात्रि मे दुग्धपान से हो जाती है, अतएव रात्रि मे दुग्धपान हितकर है। वृद्धो एव दुग्धपान मे रुचि रखने वालो को दुग्धपान अमृतोपम लाभ करता है क्योकि दुग्धपान तुरन्त बल एव शुक्र की वृद्धि करता है। कमजोर एव रुग्ण व्यक्तियो हेतु दुग्धपानके समान स्वास्थ्यरक्षक कोई पदार्थ नहीं है।

मथानी से मथित जो दुग्ध किञ्चिदुष्ण रहते ही पान करने से वह लघु वीर्यवर्धक एव ज्वर, वात तथा पित्त एव कफ निवारक होता है। दुग्धफेन (झाग युक्त दुग्ध) के गुण -

गोदुग्धप्रभव किवा छागीदुग्ध समुद्भवम्
भवेत् फेन त्रिदोषघ्न रोचन बलवर्धनम्।।
वह्निवृद्धिकर वृष्य सद्यस्तृप्तिकरलघु।
अतीसारे ऽग्निमान्द्ये च ज्वरे जीर्णे प्रशस्यते।।

त्याज्य दुग्धस्य लक्षण -

विवर्ण विरस चाम्ल दुर्गन्धि ग्रथित पय ।
वर्जयेत्अम्ल लवणयुक्त कुष्ठादिकृत् यत ।।

२—गोघृतस्य नाम गुणानाह

घृतमाज्य हवि सर्पि कथ्यन्ते तद्गुणा अथ।
घृतरसायन स्वादु चक्षुष्यवृष्यमग्निकृत्।
स्वादुपाककर शीत वातपित्त कफापहम्।।
मेधा लावण्य कान्तेजस्योजो वृद्धि कर परम्।
अलक्ष्मीपापरक्षोघ्न पयस स्थापक गुरु।
बल्य पवित्रमायुष्य सुमगल्य रसायनम्।
सुगन्ध रोचनं चारु सर्वाज्येषु गुणाधिकम्।

दूध से निकले हुए घृत के गुण— दूध से निकला हुआ घृत ग्राही, शीतल, नेत्ररोग निवारक, तथा पित्त, दाह,

रक्तदोष, मद, मूर्च्छा, भ्रम एव वातघ्न होता हे।

एक दिन पहले के दुग्ध से निकाले घृत को हेयगवीन कहते हे। इसके गुण यह घृत नेत्र्य, अग्निदीपक, अत्यन्त रोचक, वल्य एव स्वास्थ्यवर्धक तथा वीर्यवृद्धि करने वाला एव ज्वरघ्न होता हे।

पुराने घृत के गुण— १ वर्ष से अधिक समय से रखा हुआ घृत पुराना कहलाता है। यह त्रिदोषनाशक, मूर्च्छा, कुष्ठ, उन्माद, मृगी, तिमिरादि रोगो को नष्ट करता है।, घृत जितना पुराना होता है उतना ही गुणो मे बढ जाता है।

नवीन घृत के गुण— यह भोजन, तर्पण, परिश्रम, बलक्षय, पीलिया, कामला तथा चक्षुष्य रोगो को निवृत करने मे उपयोगी हे। लेकिन बालक, वृद्धो, राजयक्ष्मा से पीडित कफज रोगो, आमयुत रोगो, विशूचिका, गलवन्ध, ज्वर तथा अग्निमाद्य के रोग मे घृत देना मान्य नहीं हे।

३ तक्रस्य नामानि गुणाश्चाह

घोला तु मथित तक्रमुदधिच्छच्छिकाऽपिच।
ससर निर्जल घोलमथित त्वसवरोदकम्।
तक्र पाद जल प्रोक्तमुदश्वित्त्वर्द्धवारिकम्।
छच्छिका सारहीना स्यात्स्वच्छा प्रचुरवारिका।
घोल तु शर्करा युक्तगुणैर्ज्ञेय रसालवत्।।

घोल के गुण— यदि घोल मे शर्करा मिश्रित हो तो वह शिखरनवत् होता है। यह वात एव पित्तहर और आनन्दप्रद होता है।

मथित— कफ तथा पित्तघ्न होता हे।

तक्र— कषाय तथा मधुर रस युक्त विपाक मे मधुर रस युक्त, ग्राही, हल्का, उष्णवीर्य, अग्निदीपक, वीर्यवर्धक, तृप्तिदाता तथा वातघ्न होता है। यह ग्रहणी आदि के रोगियो को अमृतोपम लाभ देता हे। क्योकि लघु एव मलग्राही होता है। और पाक मे मधुर रसयुक्त होने के कारण, उष्णवीर्य, अग्नि प्रदीपक, वीर्यवर्धक तथा तृप्तिदाता होने से वातघ्न होता हे। कषाय रस से युक्त, उष्णवीर्य विकासी तथा रूक्ष होने की वजह से कफघ्न होता हे।

तक्रसेवी कभी रुग्ण नहीं होता। तक्र के प्रभाव से नष्ट रोग पुन कभी उत्पन्न नहीं होते हे। अरस्तु यथा देवो हेतु अमृत सुखद होती हे तथा मृत्युलोक निवासियो हेतु तक्र को आयुर्वेद मनीषियो ने सुखदाई वताया हे। छाछ, लघु, शीतल एव पित्त, श्रम तथा पिपासाहर, वातहर तथा कफोत्पादक होती है। यदि तक्र मे सेधानमक डालकर पान किया जाय तो वह अग्नि प्रदीपक कहा हे।

दोषानुसार तक्र सेवन की विधि एव गुण— वात दोषाधिक्य मे अम्ल युक्त सोठ तथा सोठ, सेधानमक, मिश्रितकर, तक्र पान करना उत्तम होता हे। पित्ताधिक्य मे मधुर रसयुक्त तथा शर्करा मिश्रित कर पान करंना श्रेष्ट होता है। कफाधिक्य वालो को त्रिकटु चूर्ण मिश्रित कर तक्र पान कराना हितकर होता हे।

भुनी हुई हींग, जीरा एव सेधानमक से युक्त घोल अत्यन्त वातहर अर्श तथा अतिसारनाशक, रुचिवर्धक, पुष्टिदाता, वलवर्धक एव वस्तिशूलघ्न होता ह।

गुड मिश्रित घोल मूत्रकृच्छ्र निवारक होता ह। चित्रक चूर्ण मिश्रित घोल पीलिया रोग निवारक होता ह।

गव्यादीना विशिष्ट तक्राणा गुणानाह —

गोदधि के गुण— गव्यदधि तक्र विशेष रूप स मधुर तथा अम्लरस युक्त, रुचिवर्धक पवित्र, अग्निदीपक, हृद्य पुष्टिदाता एव वातघ्न होता ह। सभी दही या तक्रो मे गोतक्र अधिक गुणो वाला कहा जाता हे। अतिसार, सग्रहणी, प्रवाहिका आदि मे पर्पटियो के साथ गोतक्र सेवन कराने से स्थायी लाभ होकर रोग निवारण होता हे तथा ररायन के लाभ प्राप्त होते हे।

४ कस्तूरी तस्य नाम भेद गुणानाह (मृगमद)

मृगनाभिर्मृगमद कथिरस्तु सहस्रभित्।
कस्तूरिका च कस्तूरी वेधमुख्या चस्मृता।।
कामरूपोद्‌भवा श्रेष्ठा नेपाली नीलवर्णयुक्त।
काशमीरी कपिलाच्छाया कस्तूरी विविधास्मृता।।
कामरूपोद्‌भवा कृष्णा नैपाली मध्यमा भवेत्।
काशमीरदेशसम्भूत कस्तूरी ह्यमामता।
कस्तूरिका कटुस्तिक्ता क्षारोष्णा शुक्ला गुरु
कफवातविषच्छर्दि शीतदोर्गन्ध्य शोषणम्।।

भेद— (१) रूस की कस्तूरी (२) आसामी कस्तूरी (३) चीन की कस्तूरी। यह सबसे महगी होती है। एक अन्य तीक्ष्ण अप्रियगन्धा कस्तूरी कवडाइन नामक होती हे जो मगोलिया और मचूरिया के उत्तरी भाग तथा साइबेरिया से आती हे।

उत्तम कस्तूरी— रक्ताभश्यामरग की, गोल वडे दाने

वाली, तीक्ष्णगन्धा, स्वादु, तिक्त, लघु एव मृदु कस्तूरी उत्कृष्ट होती है।

पहिचान— कस्तूरी के दानो को जल मे डालने से यदि दाने यथावत् रहे तो वे असली ओर यदि घुल जाये तो वह नकली समझे। राजनिघण्टु के अनुसार '' याऽप्सुन्यस्तानेव ववर्ण्यमियात्कस्तूरी सा राजभोग्या प्रशस्ता।

जलती लकडी के अगारो पर कस्तूरी डालने से यदि वह पिघलकर उसमे से बुदबुदे निकले आर वह एकदम कोयला बन जाय तो वह नकली कहलाती है। राजनिघण्टु के अनुसार—

दाह या नेति वह्नो शिमिशिमिति चिर चर्मगन्धा हुताशे,
साकस्तूरी प्रशस्ता वरमृग तनुजाराजते राजयोग्या।

(३) असली कस्तूरी को गाड दे तो भी उसकी गन्ध परिवर्तित नहीं होती।

(४) असली कस्तूरी मृदु होती हे तथा नकली सख्त होती हे।

(५) हींग मे एक धागे को निकालते है यदि नाभि मे डालने पर यदि हींग की गन्ध उस धागे मे आये तो कस्तूरी नकली होती हे।

(६) कागज मे रखने पर कागज मे पीला दाग पड जाना तथा जलने पर उसमे मूत्रवत् गन्ध आती हे।

(७) कर्पूर, ह्वलेरियन, लहसुन, हाइड्रोसाइनिक एसिड एव अर्गट का चूर्ण आदि से सम्पर्कित होने पर, कस्तूरी की गन्ध नष्ट हो जाती हे।

उपयोग—योषापस्मार, हिचकी, उद्वेष्टन, वाततमक, श्वास, हृदय एव मस्तिष्क की कमजोरी, हृदय धडकन वृद्धि, वातोंन्माद, अपस्मार, सन्यास, विस्मृति, पक्षाघात, अर्दित, शून्यता, कम्पवात, कुकुरकास, शूल, वाताक्षेप आदि वातिक श्लेष्मिक विकारो तथा उत्तेजक एव हृद्योषधि के रूप मे आन्त्रिक ज्वर, फुफ्फुसपाक, श्वसनिक शोथ प्लेग एव मस्तिष्कावरण शोथ प्रभृति मे किया जाता हे। हृद्दोर्बल्य, चन्द्रोदय, वृ० कस्तूरी भेरव का उपयोग बलामूल के साथ सद्य लाभकारी रहता हे। बाजीकरणार्थ भी इसका उपयोग होता है। बाल आक्षेप मे दक्षिण वाले अफीम के साथ कस्तूरी का प्रयोग करते हे। भगन्दर, जीर्णकास, दोर्बल्य, वातरक्त एव हजा मे यह उपयोगी हे। इसका उपयोग मधु के साथ अथवा मृगमदासव (भै० र०) के रूप मे तथा मकरध्वज के साथ होता है। गरम पित्त प्रकृति वालो हेतु यह हानिकारक है तथा शिर शूल जनक होती है तथा इसके दुष्परिणाम निवारणार्थ गुलाबजल एव वशलोचन का प्रयोग किया जाता हे। मात्रा— १-४ रत्ती या अर्क १०-३० बूदे।

विशेष प्रयोग—

कस्तूर्यादि स्तम्भन वटी— मृगनाभ्यादि वटी, चूर्णमृग मदासव (भे० र०), वृहत् कस्तूरी भेरव रस, हिगुकर्पूर वटी, केसरादि वटी (ज्वर) नागवल्लभ रस (यो० र०) हृदयपौष्टिक चूर्ण (र० सा० स०) हृदय पोष्टिक चूर्ण (र० सि० सा०) भागर, समीर वटी, केशरादि वटी (सि० यो० स०) आदि के रूप मे प्रयोग मे आती है।

५ अम्बर (अग्निजार) Ambergris

नाम— स० अग्निजार, तुन्दामया। हि० अम्बर। अ० अम्बर। फा० शहद शाह। अ० अम्बरग्रिस।

उत्पत्ति— यह एक अन्त्र मे उत्पन्न विकार ग्रन्थि हे जो स्पर्महवेल नामक मत्स्य से उत्पन्न होती है। एक शृग के आकार की वनस्पति खा लेने से उत्तम ग्रन्थि बनती हे। जिससे मत्स्य मर जाती हे। तब यह समुद्र मे तेरती हुई तट पर आ लगती हे। तब इसे ग्रहण कर लिया जाता हे। वह मछली की आखो से निकलकर गिर जाती हे। इसे ही अम्बर कहा जाता हे। आजकल शिकारी मत्स्य का आखेट कर आन्त्र के नीचे से ही इसे प्राप्त कर लेते हे। रसरत्न समुच्चयकार ने इसे अग्निवक्र नामक समुद्री प्राणी का जरायु बताया है।

स्वरूप— यह बाहर से धूसर ऐव श्याम, भीतर से किंचिदश्वेत तथा दानेदार होता हे। यह लघु होता हे। ताजा अम्बर मे विट वत् गन्ध आती हे परन्तु धूप मे शुष्क करने पर हल्की भीनी सुगन्ध हो जाती हे। उष्ण करने पर मोम के सदृश पिघल जाता है। जल मे अविलेय हे परन्तु गरम तेल, अलकोहल एव ईथर मे विलेय हे।

गुण— रूक्ष, लघु, रस कटु, विपाक कटु और वीर्य उष्ण। यह त्रिदोषघ्न, कफवात मे प्रशस्त हे। मस्तिष्क ज्ञानेन्द्रियो एव नारियो हेतु बल्य और आक्षेप शामक हे। यह दीपन, पाचन, अनुलोमन एव ग्राही है। यह हृद्य, बाजीकरण, शीतप्रशमन, बल्य हे। मात्रा- १ से ३ रत्ती तक।

उपयोग—

(१) शक्तिवर्धक गुटिका— शुद्ध कुचला २ तोला, जावित्री, जायफल, लवग और अहिफेन ४-४ माशे, केशर ३ माशे, सफेद मिर्च डेढ माशे। कस्तूरी १ माशा ओर अम्बर ४ रत्ती सबको वस्त्रपूत कर एकत्र कर मिश्रित कर पान के रस मे दो प्रहर मर्दन कर १-१ रत्ती की गोलियॉ वना कर सुरक्षित रख ले। मात्रा— १-१ गोली दिन मे दो बार। अनुपान— दूध

उपयोग— उत्तम बलवर्धक, पाचनशक्ति वृद्धिकर, वात पीडित तथा क्षीणवीर्य हेतु हितकर है यह धातुपुष्टि कर कामोत्तेजना की वृद्धि करती है।

(२) चन्द्रोदय वटी— स्वर्ण चन्द्रोदय ओर कर्पूर ४-४ तोले, बग भस्म, लोह भस्म, लोग, जायफल, जावित्री, केसर और अकरकरा। प्रत्येक १-१ तोला, कुचला सत्व १ माशा, मृगमद और अम्बर ६-६ माशा।

प्रथम चन्द्रोदय और कर्पूर मिश्रित करे। पश्चात् केसर, कस्तूरी और अम्बर मिश्रण कर, ताम्बूल केसर मे ३ घण्टे खरल करे। फिर भस्मे और भस्मे मिला मर्दन करे। शेष का वस्त्रपूत चूर्ण मिला पान के स्वरस मे दो प्रहर घोटकर आधी-आधी रत्ती की गोलियॉ बनाकर स्वर्ण के वर्क पर डालते जावे। मात्रा— १ से २ गोली शीतल मलाई मे प्रात साय सेवन करावे। ऊपर से दूध पान करावे।

यह अत्यन्त बाजीकरण, नपुसकता, निर्बलता नाशक देह को सुदृढ व सबल बनाती हे। इससे कामदेव सा सौन्दर्य प्राप्त होता है। सेवनकाल मे गुड, तेल, अम्बर, लालमिर्च अधिक नमक और असात्म्य पदार्थ परित्याज्य है।

(३) मदन मञ्जरी गुटिका—

रस सिन्दूर, अभ्रक भस्म, बग भस्म, प्रवाल पिष्टी, केसर, जायफल, जावित्री, लघु इलायची, १-१ तोला। स्वर्ण भस्म, ६ माशा, कर्पूर ६ माशा, कस्तूरी एव अम्बर ३-३ माशा, सर्वाषध मिलाकर ३ दिन तक पान के स्वरस मे मर्दन करे और अन्त मे केशर कपूर प्रभृति मिलाकर रख ले। १-१ रत्ती की गोलिया बनाकर सुरक्षित रख ले। मात्रा— १ से २ गोली दिन मे २ बार मीठे दूध से दे। यह कामोत्तेजक, वीर्यवर्धक, बल्य, वीर्यपुष्टिकर है। यह निरापद एव सर्दियो मे स्वास्थ्यवर्धनार्थ सेव्य है।

(४) मदनकान्ता गुटिका—

रस सिन्दूर ४ तोला, स्वर्ण वर्क १ तोला, रजत वर्क २ तोला, शुद्ध वत्सनाभ १ तोला, शुद्ध शिलाजीत, कर्पूर और मीठा कूठ २ तोला, अफीम १ तोला, जायफल, लवग, पिप्पली, अकरकरा, जावित्री, केशर, अगर, दालचीनी, श्वेतमूसली, कौच के वीज और गिलोय सत्व १-१ तोला तथा अम्वर कस्तूरी ६-६ माशे ले।

प्रथम रस सिन्दूर, रजत और वत्सनाभ मिलावे। पश्चात् केसर, कस्तूरी और अम्वर छोड शेष का वस्त्रपूत चूर्ण मिलावे। शिलाजीत को धतूरे के रस मे मिलाकर मिश्रित करे। अगले दिन अद्रक रस मे मर्दन करे। तीसरे दिन केसर, कस्तूरी एव अम्बर मिलाकर पान के स्वरस मे मिला दोप्रहर खरलकर १-१ रत्ती की गोलिया वना ले। छाया मे सुखाकर सुरक्षित रखे। मात्रा— १-१ गोली मीठे दूध के साथ। यह अत्यन्त वल्य, वीर्यवर्धक, कामोत्तेजक तथा कान्तिवृद्धि हेतु अनुपम है। उसे रोगानुसार अनुपानो के साथ देने से जीर्ण ज्वर, प्रतिश्याय, जीर्णवात रोग, धनुर्वात, खजवात, अर्धागवात, अपस्मार, श्वास, क्षय, मूर्च्छा, अग्निमाद्य, प्रमेह पीडिका, प्रभृति रोग निवृत्त करती है। सेवन काल मे खटाई एव लालमिर्च परित्याज्य है। सयमित जीवन अनिवार्य है।

(५) अर्क लोकेश्वररस—

पारद से मारित ताम्र भस्म ओर शुद्ध सोमल को समभाग कन्या रस मे मर्दन कर, लघुपुट मे आच दे। पुन सोमल मिला आच दे। इस प्रकार निर्मित भस्म २ तोले, रस सिन्दूर २ तोले, अभ्रक भस्म १ तोला, स्वर्ण भस्म १ तोला, लौह भस्म आधा तोला, मृगमद और अम्बर १-१ तोला और केसर २ तोले ले। सवको नागरबेल पत्र और अद्रक के रस मे १-१ दिन मे मर्दन कर १-१ रत्ती की गोलिया बनाकर सुरक्षित रख ले। मात्रा— १-१ गोली दिन मे २ बार पान के या तुलसी पत्र के स्वरस के साथ दे।

उपयोग— यह फ्लू, सन्निपात मे चमत्कारी प्रभाव दिखाती है। श्वसनक ज्वर मे कफ प्रकोप होने पर सद्य लाभ करती है। उदर यकृतप्लीहा वृद्धि मे यह लाभ करती है।

६ रजत या रौप्य (चांदी)

उत्पत्ति का इतिहास—

त्रिपुरासुर के वध हेतु क्रोधित होकर शिवजी एक ही

दृष्टि से उसे देखने लगे, तब उनके एक नेत्र से अग्नि निकली और अग्नि स्वरूप रुद्रदेव प्रज्वलित हो गये और दूसरे नेत्र से अश्रुपात के बिन्दु निकले। उन्हीं अश्रु बिन्दुओ से रजत की उत्पत्ति हुई जिसका सभी कार्य मे प्रयोग होता है।

नाम— रौप्य, रजत, तार, चन्द्रकान्ति तथा सितप्रभ ये सस्कृत नाम है।

उत्तमता के लक्षण— जो रजत तौल मे गुरु, स्निग्ध, कोमल, तपाने तथा काटने मे श्वेत, घनाघात सहने वाली, खण्ड-खण्ड न होने वाली, उत्तम वर्ण, चन्द्र समस्वच्छ कान्तिमान होती है। वह उत्तम कही जाती है।

चादी भस्म के गुण—

रौप्य शीत कषायाम्ल स्वादु पाकरस सरम्।
वयस स्थापन स्निग्ध लेखन वातपित्तजित्।
प्रमेहादिक रोगाश्चि नाशयत्यचिरायु ध्रुवम्।।

अशुद्ध रौप्य भस्म के दोष—

तार शरीरस्य करोति ताप विध्वसन यच्छति शुक्रनाशनम्।
वीर्य बलंहन्तितनोश्च सृष्टिमहागदान् पोषयति ह्यशुद्धम्।

उपयोगिता की दृष्टि से स्वर्ण के पश्चात् चादी का ही स्थान है। यह ओषधि मे प्रयोग के साथ आभूषण निर्माण मे प्रयोग की जाती है। प्रस्वेदस्य कलेवर के स्पर्श से धारित आभूषण शरीर मे जाकर अपने गुणो से देह मे समाहित हो जाते है। ईटो की चादी उत्कृष्ट मानी जाती है।

रजत भस्म— शोधित रजत के कण्टकवेधी पत्र और शोधित पारद दोनो १०-१० तोले लेकर नीबू के रस मे खरल करे। पारद के मिश्रित हो जाने पर १० तोला शुद्ध गन्धक मिलाकर कज्जली बना ले। पश्चात् १० तोले शुद्ध हरिताल मिलाकर नींबू के रस मे मर्दन कर गोला बना गोले पर लेप हेतु १० तोला गन्धक के नींबू के रस मे खरलकर गोली पर लेप कर दे। लेप शुष्क हो जाने पर कपरौटी की हुई छोटी हडिया मे मजबूती से बन्द कर ५ सेर कण्डो की आच मे फूक दे। अधिक कण्डो की आच न दे। इसी प्रकार दशमाश हरिताल मिलाकर २०-३० पुट दे। हल्का गुलाबी रग आ जाने पर कन्या के रस मे मर्दन कर १ बार गजपुट की आच मे पकावे। वैसे ३ पुट मे भस्म होने का वर्णन आता है परन्तु इतने से पुट से रजत भस्म निरुत्थ नहीं होती है। अतएव भस्मार्थ उपरोक्तानुसार पुटी भस्म का निर्माण करना श्रेष्ठ होता है।

मात्रा— १ से २ रत्ती तक १ से २ बार प्रात साय। अनुपान- मधु, मलाई, गोदुग्ध, मिश्री, सितोपलादि चूर्ण, नागकेशर और मक्खन, त्रिफला, आवले का मुरब्बा अथवा रोगानुसार अनुपानो से सेवन कराने से सर्व रोग नष्ट होते है।

उपयोग— रौप्य भस्म चक्षुष्य, नेत्ररोग हर, गुदा के रोग, पित्तज, खासी, जीर्ण प्रमेह, पीलिया, प्लीहावृद्धि, यकृतवृद्धि, अपस्मार, धातुक्षीणता, हिस्टीरिया और वात पित्त प्रधान रोगो की निवारक है।

रजतादि लौह— हरितालमारित।

रजत भस्म और अभ्रक भस्म १-१ तोला, त्रिकटु, त्रिफला और लोहा भस्म तीनो २-२ तोले लेकर सबको खरल कर एकत्र मिश्रित करके सुरक्षित रखे। मात्रा— २ से ४ रत्ती। दिन मे दो बार। अनुपान— मधु, घृत। उपयोग— यह रस अतिवृद्धि मान, क्षय, पीलिया, उदररोग ओर अर्श, श्वास, कास, नेत्ररोग तथा सर्वविध पित्त प्रकोपजन्य रोगो को निवृत करती है। राजयक्ष्मा की द्वितीय अवस्था मे भी यह हितकर है। इससे ज्वर का ह्रास होता है। पार्श्वशूल वेदना शान्त होती है। प्रसाद की प्राप्ति होती हे। आक्षेप, या स्थानिक शूल हो तो उद्गार खट्टे आत्र हे। मूत्र मे दाह होता है। नेत्रज्योति मद हो गई हो तो यह समस्त लक्षणो को निवृत्त करती है।

स्वर्ण (सोना)—

स्वर्ण की उत्पत्ति—

पुरातन काल मे सप्तर्षिगण स्वाश्रम मे विराजमान थे। उसी समय लावण्य पूर्ण यौवन वाली उनकी पत्नियो को देख वासना पीडित होने से अग्नि देव का जो वीर्य स्खलित हुआ और धरातल पर गिर गया। वही अग्नि वीर्य स्वर्ण बन गया। पारद वेघ से कृत्रिम स्वर्ण भी बनता है।

स्वर्ण के सस्कृत नाम—

स्वर्ण सुवर्ण कनक हिरण्य हेम हाटकम्।
तपनीय च मागेय कलधौतञ्च काञ्चनम्।
चामीकर शान्तकुम्भ तथा कार्तस्वर च तत्।।
जाम्बूनद जातरूप महारजतमित्यपि।।

उत्तम स्वर्ण के लक्षण—

दाहेरक्त सितछेदे निकषे कुकुमप्रभम्।

तारशुल्वोज्झित स्निग्ध कोमल गुरुहेमसत्।। (उत्तम)

शुद्ध स्वर्ण भस्म के गुण—

शुद्ध शोधित स्वर्ण भस्म मधुर, तिक्त, कषाय रसयुक्त, विपाक काल मधुर, पिच्छिल, रसरक्तादिवर्धक, चक्षुष्य, शीतल, वीर्यवर्धक, वलकारक, गुरु, रसायन, हृद्य, धारणाशक्ति, स्मृति, वुद्धि, आयु, कान्ति, वाणीशुद्धि तथा स्थिरता को करने वाला स्थावर, जगम विष, क्षय, उन्माद, त्रिदोष, ज्वर तथा शोष को नष्ट करता हे।

अशुद्ध स्वर्ण भस्म के दोष—

वल स्वर्ण हरेत नराणा रोगव्रजान पोषयतीव कोप।

असोख्य कृच्छ्रापि सदा सुवर्णमशुद्ध मेतन्मरणञ्च कुर्यात्।।

असम्यग्मारित स्वर्ण वता वीर्यञ्च नाशयेत्।

करोति रोगान् मृत्यु च तद्धयाद्यत्नततस्तत ।।

स्वर्ण, रजत या ताम्र इनमे से किसी एक की भस्म को घृत के साथ सेवन कराने से गर्भाशय शुद्ध होकर गर्भ स्थापन होता हे।

हृदयरक्षक रस—

स्वर्ण भस्म, जहरमोहरा, वसन्त कुसुमाकर रस, पूर्ण चन्द्रोदय रस प्रत्येक डेढ ग्राम, लक्ष्मीविलास रस, लोह भस्म ३-३ ग्राम, अकीक पिष्टी, प्रवाल पिष्टी प्रत्येक ६-६ ग्राम आर वेक्रान्त भस्म २० ग्राम। प्रथम लक्ष्मीविलास रस मर्दन कर फिर शेष १-१ करके डालते जावे ओर मर्दन करते जावे। ४ प्रहर की उत्तम घुटाई के पश्चात् इसे शीशी मे सुरक्षित रखे। मात्रा— १ रत्ती से २ रत्ती तक। गुलकन्द या सेव के मुरब्वे के साथ प्रात साय मध्याह्न सेवन करे। उपयोग— यह प्रयोग हृद्दोर्वल्य मे रामवाण हे। जिनको थोडे से श्रम से ही धडकन वृद्धि होकर प्रस्वेद आने लगता हे। उनके लिए यह प्रशस्त हे।

स्वर्ण सिन्दूर रस—

स्वर्ण सिन्दूर ६ ग्राम, अकीक भस्म ३ ग्राम, जहरमोहरा भस्म ३ ग्राम, अभ्रक भस्म ३ ग्राम, अर्जुन छाल चूर्ण ६ ग्राम, जटामासी ६ ग्राम, कूठ असली ६ ग्राम। खरसी रस से ४ वार भावित कर १०० गोलिया वना रख ले। अनुपान मधु। मात्रा— १-१ गोली ८-८ घण्टे पश्चात् दे। हृदय विकार हृदयावरोध एव हृदसरक्षणार्थ प्रशस्त हे।

८— मृगशृंग भस्म के विविध अनुभूत प्रयोग—

शोधन विधि—

शृग के लघु खण्ड करके मट्ठे मे डाल दे। फिर धूप वाले स्थान मे इसे तीन दिन तक रखा रहने द। पश्चात् जल मे घोलकर धूप मे परिशुष्क कर ले। इससे शृग की उत्तम शुद्धि हो जाती हे।

भस्म निर्माण विधि—

भस्म निर्माणार्थ साम्भर मृग का शृग जो मोटा निमन ओर भारी हो, आरी से काटकर टुकडे कर ले। उसे हडिया मे घृतकुमारी के गूदे के साथ रखकर मुख मुद्रा करके गजपुट मे फूक दे। पश्चात् स्वत शीतल हो जाने पर निकालकर चूर्णित कर आक के दुग्ध में या स्वरस मे खरल कर टिकिया वना शुष्क कर सम्पुट मे पुन पुट दे। इससे श्वेत वर्ण की उत्तम भस्म वनेगी। जिसे पीसकर सुरक्षित रख ले।

उपयोग— शृग भस्म, श्वास, कास, पार्श्वशूल, फुफ्फुस सन्निपात, वाल पार्श्व वेदना (व्रोकोनिमोनिया) तथा फुफ्फुसावरण शोथ तथा श्लेष्म ज्वर, जीर्ण ज्वर, निद्रानाश, सेन्द्रिय विपजनित अस्थि विकृति, राजयक्ष्मा मे ज्वर, प्रतिश्याय, हृदय शोथ, मन्दाग्नि, वृक्कव्रण, दन्तपूय आर वालको की अस्थि वक्रता प्रभृति निवृत्त करती ह।

क्षय रोग होने की सम्भावना पर—

मृगशृग भस्म ओर मूगा भस्म को मिलाकर देते रहने से क्षय नहीं होता। रोगी क्षय होने से वच जाता ह। मात्रा— १-१ रत्ती से वृद्धि क्रमानुसार ६ रत्ती तक वढाकर दे।

फुफ्फुससन्निपात मे—

शृगभस्म ओर रस सिन्दूर मिश्रित कर अडूसा, मधुयष्टी, वहेडा आर मिश्री के क्वाथ के साथ दिन मे तीन वार सेवन कराना चाहिए। गरम जल से वक्ष पर अभ्यग करावे।

हृद्शूल निवारणार्थ—

हृदयशूल के जीर्ण हो जाने पर सामान्य निर्वलता होते शृग भस्म देने से लाभ होता ह। इससे हृद्दावल्य, हृदयरोग घवराहट, हृद्वेगगति, कर्णनाद तथा नाडियो की गति लुप्त होना आदि मे मृगशृग ओर स्वर्ण माक्षिक भस्म का प्रयोग करना चाहिए।

बालशोष जिसमे अस्थि दौर्वल्यता, हस्तपाद शुष्कता एव उदरवृद्धि घटवत होने पर—

शृग भस्म का प्रयोग प्रवालपिष्टी के मिश्रित योग से सेवन कराने से रोग मे आम लाभ होता हे।

नवीन प्रतिश्याय हेतु—

शृगभस्म १ रत्ती ओर नवसादर ४ रत्ती गुनगुने जल के साथ देने से कफस्राव आशु होकर थोडे समय मे प्रतिश्याय एव तज्जन्य शिरोवेदना शान्त होती हे।

श्वास, कास हो कफ कठिनाई से पुन पुन खासने पर नहीं गिरने मे—

शृगभस्म दो रत्ती के साथ रससिन्दूर १ रत्ती मिलाकर तुलसी के रस और मधु के साथ दिन मे २ वार देने से धीरे-धीरे श्वास कास निवारण हो जाता है।

श्वास रोग मे कफ सञ्चित होने से अतित्रास होना हो तो—

शृगभस्म ओर मल्लसिन्दूर ओर त्रिकटु चूर्ण मिलाकर ४ ४ घण्टे मे मधु से चटाने से ओर चायपान कराते रहने से हृदय की घवराहट निवृत्त होती हे।

पार्श्वशूलहर प्रयोग—

रससिन्दूर १ तोला, अभ्रक भस्म २ तोला ओर शृगभस्म ६ तोला, मिलाकर खरल कर रख ले। मात्रा- ४-४ रत्ती गाय के घृत के साथ २-२ घण्टे पर देने से तीव्र पार्श्व वेदना, हृद्शूल ओर वक्षशूल वेदना शान्त हो जाती हे।

कुकरकास नाशार्थ—

प्रवालपिष्टी ओर शृगभस्म १०-१० तोले, गोदन्ती भस्म, वशलोचन ओर गिलोय सत्व ५-५ तोले, लघु एलाबीज ढाई तोले, सवको चूर्णित कर मात्रा- १-२ रत्ती दिन मे ३ वार या ४ वार मधु या वनफसा के पानक के रूप मे दे।

हृद्रोग नाशक वटी—

पूर्ण चन्द्रोदय, स्वर्ण भस्म, मुक्तापिष्टी, प्रवालपिष्टी, अकीक भस्म, रजत भस्म, शृगभस्म ओर सगेयशव भस्म, १-१ तोला प्रत्येक। खरल कर अर्जुन वृक्ष की छाल के ८ तोला स्वरस मे या क्वाथ मे भली भाति खरल कर रात्रि मे स्वच्छ वस्त्र से ढक कर चादनी मे रख दे। ऐसा तीन दिन करे। पश्चात् शुद्ध कर्पूर १ तोला, अम्वर ३ माशा, मिलाकर खरल कर सुरक्षित रख ले। चाहे तो गुलाव के अर्क मे मर्दन कर १-१ रत्ती की गोलिया वनाकर रख ले। मात्रा— १ रत्ती प्रात साय मध्याह्न मे दे। अनुपान— मधु, जल या गोदुग्ध।

उपयोग— इससे सम्पूर्ण हृद्रोग, हृत्कम्प प्रभृति आशु निवृत होते हे।

६ अभ्रक भस्म

अभ्रक भस्म के गुण—

अभ्र कषाय मधुर सुशीतमायुष्यकर धातुविवर्द्धन च।
हन्यात्रिदोष व्रणमेह कुष्ठप्लीहोदर ग्रन्थि विषकृमिश्च।
रोगान्हन्ति द्रढ्यतिवपु वीर्यवृद्धि विधत्ते।
ताराणाढ्य रमयतिशत योषिता नित्यमेव।
दीर्घायुष्यकाञ्चनयति सिहतुल्यान।
मृतोर्भीति हरित सततसेव्यमान मृताभ्रम्।।

गुण एव कर्म— गुण मधुर, स्निग्ध, रस, मधुर, कषाय, विपाक, मधुर, वीर्य, शीत। अभ्रक त्रिदोषहर हे। बल्य ओर रसायन हे यह मेध्या नाडी बल्य, दीपन, अनुलोमन, शोणितरथापन, शोथघ्न, कफघ्न, वृष्य, प्रमेहघ्न, ज्वरघ्न और रसायन हे।

अभ्रक भस्म का अमृतीकरण—

अमृतीकरण से अभ्रक भस्म के गुणो की वृद्धि हो जाती है। अच्छी प्रकार वनाई भस्म दशभाग, त्रिफला कषाय १६ भाग, गोघृत ६ भाग, तीनो को लोहे की कढाई मे एक मिश्रित कर पकाने से अभ्रक भस्म का अमृतीकरण हो जाता हे।

उपयोग—

जीर्ण ज्वर मे— पिप्पली चूर्ण व मधु के साथ मिलाकर चटावे।

ग्रहणी मे— त्रिकटु चूर्ण व घृत के साथ मिलाकर सेवन करावे।

रक्तपित्त मे— इलायची चूर्ण या वासा स्वरस के साथ सेवन करावे।

नेत्र ज्योति वृद्धि हेतु— त्रिफला चूर्ण मे मिला मधु के साथ चटावे।

अर्श, पाण्डु, हलीमक क्षयरोग मे— त्रिकटु चातुर्जात चूर्ण के साथ मधु मे मिलाकर सेवन करावे।

सन्तानोत्पत्ति हेतु— रजत भस्म एव स्वर्ण भस्म मे मिलाकर सेवन करावे।

शुक्र स्तम्भानार्थ— अभ्रक भस्म मे जायफल एव भाग

मिलाकर सेवन करावे।

मूत्राघात एव मूत्रकृच्छ्र में— अष्टक्षारो के साथ सेवन करावे।

अर्श नाशार्थ— शुद्ध भल्लातक घृत के साथ सेवन करावे।

वातरोग नाशार्थ— वशलोचन, भारगी, सोठ, पुष्करमूल के साथ अभ्रक भस्म मिलाकर सेवन करावे।

कफजरोग नाशार्थ— अभ्रक भस्म, पिप्पली चूर्ण कायफल चूर्ण से सेवन करावे।

रसायन फलप्राप्त्यर्थ— क्षीरकाकोली चूर्ण, असगन्ध चूर्ण एव शतावर चूर्ण के साथ प्रयोग कराने से विस्मयकारी लाभ होता है।

धातुवृद्ध्यर्थ— लोगो के चूर्ण मे अभ्रक भस्म मधु मिलाकर चटावे।

सामान्य ज्वर मे— अभ्रक भस्म मे रस सिन्दूर के साथ प्रयोग करावे।

६ मास तक निरन्तर सेवन करने से दिव्यदृष्टि, सूर्य सम तेज तथा कन्दर्प सम सौन्दर्य प्राप्त होता है।

१० जवाहर मोहरा तथा जहरमोहरा खताई का हृदय रोगों मे प्रयोग

कतिपय अनुभूत सफल सिद्ध प्रयोग-रत्न

(१) हृद्वृद्धि—

पर सफल सिद्ध योग अनुभूत जवाहर मोहरा १२५ मि०ग्रा०, मुक्तापिष्टी १२५ मि०ग्रा०, अकीक पिष्टी २५० मि०ग्रा०, शृग भस्म १२५ मि०ग्रा०, अर्जुन चूर्ण १ ग्राम। सबकी एक मात्रा बनाकर प्रात साय मधु से चटावे। साथ मे आरोग्यवर्धिनी वटी २-२ गोली प्रात साय मधु के साथ प्रयोग करावे। अर्जुनारिष्ट १० एम० एल०, अश्वगन्धारिष्ट १० एम० एल०, पुनर्नवासव १० एम० एल०, मिश्रितकर भोजनोत्तर समजल मिलाकर पान करावे। सोते समय प्रभाकर वटी दूध से दे।

(२) हृद्शूल मे—

जवाहर मोहरा, मुक्तापिष्टी, त्रिनेत्ररस, अकीक पिष्टी चारो १२५ कि० ग्राम, श्रृग भस्म २५० मि० ग्रा० मिश्रित मात्रा मधु से चटा ऊपर से दुग्ध पान करावे। साथ मे हृदयार्णवरस २-२ गोली दिन मे दो बार खमीरा गावजवा के साथ दे। अर्जुनारिष्ट १० एम०एल० अश्वगन्धारिष्ट १० एम०एल० मिलाकर कर भोजनोपरान्त समजल मिलाकर पान करावे। प्रभाकरवटी २ गोली शयन समय रात मे अर्जुन क्वाथ से सिद्ध किये दूध से दे।

(३) हृदयाघात मे—

जवाहर मोहरा, मुक्तापिष्टी, अकीक पिष्टी, त्रिनेत्र रस प्रत्येक १२५ मि० ग्रा० की सयुक्त मात्रा प्रात साय मक्खन के साथ दे ऊपर से दुग्ध पान करावे। शकरवटी २-२ गोली दिन मे दो बार दुग्ध के साथ दे।

अर्जुनारिष्ट, अश्वगन्धारिष्ट, १०-१० एम० एल० मिला के भोजनोपरान्त करावे।

हृदयार्णव रस १ गोली, प्रभाकर वटी १ गोली, अर्जुन छाल चूर्ण १ ग्राम की सयुक्त मात्रा बना मधु से चटावे ओर ऊपर से दुग्धपान करावे।

जवाहर मोहरा ३ माशा तथा शृगभस्म १-१ गोली मिलाकर हृद्दोर्बल्यनाशार्थ देने से हृदय का बलवर्धन होता है।

(४) जवाहरमोहरा वटी (आ० सा० स०)—

१-२ गोली दिन मे २ बार गोजिह्वादि लेह के साथ लेने से सभी प्रकार के हृद्रोगो मे लाभ होता हे।

(५) पित्तज हृदय रोगो मे—

जवाहरमोहरा पिष्टी (सि० यो० स०) २५० मिलीग्राम से १ ग्राम तक, चन्दनादि अर्क के साथ सेवन कराने से आशुलाभ होता हे।

(६) पित्तज हृद्रोग मे—

जहरमोहरा खताई भस्म (आ० सा० स०) २५० मिलीग्राम दिन मे २ बार गुलकन्द के साथ सेवन कराने से पित्तज हृद्रोग निवृत्त होते हे।

(७) जवाहरमोहरा—

माणिक्यवटी, पन्नापिष्टी, मुक्तापिष्टी, २०-२० ग्राम, प्रवाल पिष्टी शृगभस्म ओर सगेयशब ४०-४० ग्राम, कहरवापिष्टी २० ग्राम, स्वर्ण एव चादी के वर्क ५-५ ग्राम, दरियाई नारियल का चूर्ण ४० ग्राम, आबरेशम सूक्ष्मकृत २० ग्राम, जदवार चूर्ण २० ग्राम, मृगमद १० ग्राम और अग्निजार (अम्बर) १० ग्राम। पिष्टियो को एकत्र मिलाकर मर्दन कर स्वर्ण रौप्य वर्क १-१ कर मिश्रित कर खरल करे। पश्चात् अन्य ओषधियो का श्लक्षण चूर्ण मिलाते हुए मर्दन

करते जाय। १४ दिन गुलाबो के अर्क मे मर्दन कर १५वे दिन मृगमद तथा अग्निजार मिलाकर गुलाब जल मे दोपहर मर्दन कर आधी-आधी रत्ती की गोलिया बनाकर छाया मे शुष्ककर सुरक्षित रख ले। उपयोग— हृदय एव मस्तिष्कीय दौर्बल्य मे, धडकन वृद्धि, घबराहट मे रामबाण एव जीवनदाता का कार्य करता है। दौरे के समय से मुख मे रखकर चूसते रहने से हृदय का दौरा रुक जाता है।

(८) स्वर्ण सिन्दूर रस—

स्वर्णसिन्दूर ६ ग्राम, अकीक भस्म ३ ग्राम, जवाहरमोहरा भस्म ३ ग्राम, अभ्रकभस्म ३ ग्राम, अर्जुन छाल का चूर्ण ६ ग्राम, जटामासी ६ ग्राम, कूठ असली ६ ग्राम, खस्सी के हृदय के रस से ४ बार भावित कर १०० गोलिया समप्रमाण मे बनाकर रख ले। मात्रा— १-१ गोली। अनुपान— मधु। समय प्रति ८-८ घण्टे पर प्रयोग करावे।

हृदसरक्षणार्थ प्रत्येक अवस्था मे यह प्रयोज्य है। हृद् विकार मे अवरोध प्रभृति मे यह आशु लाभकारी है।

(९) जवाहरमोहरा स्पेशल—

जहरमोहरा खताई १५ ग्राम, मुक्ता, कहरवा शमई, प्रवाल पिष्टी, लाजवर्द, मस्तूल धुला हुआ। रक्तवर्ण माणिक, नीलवर्ण माणिक, पीतवर्ण माणिक, यशद, पन्ना, अकीक रक्तवर्ण, रौप्यवर्क, मस्तगी प्रत्येक ७-७ ग्राम। स्वर्ण वर्क, जदवार खताई, दरियाई नारियल, मकोय, मृगमद, शिलाजीत सत्व प्रत्येक ३-३ ग्राम, अर्क गुलाब मे १५ दिन मर्दन कर शुष्क कर सुरक्षित रख ले।

मात्रा— २ चावल। अनुपान— ४ ग्राम खमीरा गावजवा के साथ प्रयोग करावे। उपयोग— हृद्दौर्बल्यहर, धडकन, नियामक, घबराहट, बेचैनी, प्रभृति मे प्रशस्त है।

(१०) हृदयावरोधहर मिश्रण—

सिद्ध मकरध्वज आधा रत्ती, जवाहरमोहरा १ रत्ती, शृगभस्म २ रत्ती, याकूती रस आधा रत्ती, सजीवनी वटी २ रत्ती, हेमगर्भ रस (पोटली चौथाई रत्ती) सबको एकत्र मिश्रित कर सुरक्षित रख ले। उपयोग— हृदयशूल, नाडी मदता, स्वेदाधिक्य प्रभृति मे आशुलाभकारी।

(११) हृदय रक्षक रस—

जवाहर मोहरा, स्वर्ण भस्म, बसन्तकुसुमाकर रस, पूर्ण चन्द्रोदय प्रत्येक डेढ ग्राम, लक्ष्मी विलास रस, लोह भस्म ३-३ ग्राम, अकीक पिष्टी, प्रवाल पिष्टी ६-६ ग्राम, वैक्रान्त भस्म २० ग्राम। विधि— प्रथम लक्ष्मी विलास रस को मर्दन कर फिर शेष १-१ करके मिलाकर मर्दन करते जावे। एक आत्मा हो जाने पर शीशी मे सुरक्षित रख ले। मात्रा— १-२ रत्ती। अनुपान— गुलकन्द मे मिला प्रात साय मध्याह्न मे चटावे। उपयोग— हृद्दौर्बल्य मे चमत्कारिक लाभकारी है। इसके प्रयोग से थोडे श्रम से धडकन वृद्धि हो जाती है, ऐसे रुग्ण हेतु प्रशस्त है अर्थात् तुरन्त लाभ करता है।

११ अकीक का हृद्रोगों में चमत्कारिक प्रभाव

कतिपय अकीक के अनुभूत प्रयोग

(१) हृद्वृद्धि मे—

जवाहरमोहरा १ भाग, मुक्तापिष्टी, १ भाग, अकीकपिष्टी २ भाग, शृगभस्म १ भाग, अर्जुन चूर्ण १ ग्राम मिलाकर सयुक्त मात्रा मधु के साथ चटाने से हृदयवृद्धि मे अनुपम लाभ होता है।

(२) हृदयाघात मे—

अकीक पिष्टी १ भाग, जवाहरमोहरा पिष्टी १ भाग, मुक्तापिष्टी १ भाग, त्रिनेत्ररस १ भाग ऐसी सयुक्त मात्रा प्रात साय मक्खन से दे।

(३) हृदयशूल निवृत्यर्थ—

अकीक पिष्टी १ भाग, त्रिनेत्र रस १ भाग, मुक्ता पिष्टी १ भाग, जवाहरमोहरा १ भाग, शृगभस्म २ भाग, ऐसी सयुक्त मात्रा बना ले। प्रात साय मधु के साथ चटाकर ऊपर से दुग्ध पान करावे।

(४) पित्त हृदय रोगो मे अकीक भस्म (आ० सा० स०)— २५० मि० ग्राम की मात्रा मे दिन मे २ वार मधु के साथ चटाने से पित्तजनित हृद्रोग मे आशुलाभ होता हे।

(५) स्वर्णसिन्दूर रस, हृदयरक्षक रस, हृद्रोगनाशिनी वटी, हृद्रोगारि मिश्रण जो पिछले पृष्ठो पर अकित है इनमें अकीक का मिश्रण हृद्रोगो के निवारणार्थ किया गया है।

१२ मुक्ता भस्म एवं पिष्टी का हृद्रोगो मे उपयोग—

पिछले पृष्ठो पर वर्णित हृदयपौष्टिक चूर्ण, हृद्दौर्बल्य नाशक रोग, हृद्रोग नाशिनी वटी, जवाहरमोहरा स्पेशल, जवाहरमोहरा, मुक्ता भस्म प्रयोग, मुक्तापिष्टी प्रयोग विधि, मुक्तापाक (वृ० पा० स० यो० र०) मात्रा २० ग्राम

शेषांश पृष्ठ 209 पर

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में हृत्प्रसार या हृदवृद्धि

वद्य अच्युत कुमार त्रिपाठी
"सदस्य" राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ स्वास्थ्य एव परिवार कल्याण समिति
तथा वरिष्ठ चिकित्सक महर्षि आयुर्वेद प्रतिष्ठान, महर्षि नगर, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर

आयुर्वेद ग्रन्थो मे अति शारीरिक श्रम, चिता, भय आदि तीव्र मानसिक भावो अति उष्ण, अतिरस तथा अतिगुरु गुण भोजन, मलमूत्रादि का शरीर से भली प्रकार से न निकलना, आमवात आदि की सम्यक् चिकित्सा न होने से विभिन्न हृदय रोगो का जन्म होता है। आयुर्वेद मे हृद्वृद्धि या हृत्प्रसार कोई पृथक से रोग नही ह, यह श्लैष्मिक वातिक हृदयरोग हे, जो अत्याहार अति गरिष्ठ, गुरु भोजन से आमदोष की वृद्धि के परिणाम स्वरूप हृदय के अन्तरावरण मास मय भाग या वाह्य आवरण मे श्लैष्मिक शोथ हो जाने से उत्पन्न होने वाला रोग है। जिसमे पोषण आदि कम होने से हृदय की सहज प्राण शक्ति हीन हो जाने से हृदमास मे क्षीणता के कारण हृद्शूल, हृद्दौर्वल्य, हृत्कम्प, मूर्च्छा आदि लक्षण उत्पन्न हो जाते है जो हृद्वृद्धि तथा हृत्प्रसार को प्रकट कर देते हे। हृद्वृद्धि तथा हृत्प्रसार को स्पष्ट रूप से समझने हेतु रक्त परिमाण परिचय समीचीन होगा।

हृदय की दीवार मास सूत्रो (Myocardium) से बनी हूई ह। जिसमे नियमित सकोच करने का स्वाभाविक गुण हे। हृदय अन्दर की ओर अन्त स्तर से ढका हुआ होता ह जो कि पारदर्शी चिकनी तह है तथा लचकीले स्नायु तन्तुओ ओर सूत्रो की तह पर पडे हुए एक विशेष प्रकार के सेलो से बनी हे, हृदय मे वाहर हृदयावरण होता हे दोनो के बीच मे थोडा अवकाश रहता हे। जिसमे १/२ औस लगभग **Pericardial Fluid** रहता है। यह आवरण हृदय को फैलने तथा आघात से बचाता है। हृदय मे मुख्य चार भाग होते ह। वाम निलय दक्षिण निलय, वाम अलिन्द तथा दक्षिण अलिन्द जिनका रक्तभ्रमण मे महत्व पूर्ण योगदान होता हे।

रक्त परिमाण क्रिया—

शरीर का दूषित रक्त शिराओ मे वहता है, अन्त मे महाशिरा अपने अशुद्ध रक्त को ऊपर के दाहिने अलिन्द मे भेजती है। जब रक्त उसमे आता है तो यह दाहिने अलिन्द मे फैल कर उसे ग्रहण कर लेता है। अब दाहिना अलिन्द सकुचित होकर उस अशुद्ध रक्त को नीचे वाले दाहिने निलय मे भेज देता है।

इस अशुद्ध रक्त को यही दाहिना निलय एक रक्त नलिका द्वारा फेफडो मे शुद्ध होने के लिए भेजने के लिए सकुचित होता है, इसी समय ऊपर तथा नीचे के दाहिने अलिन्द आर दाहिने निलय के मध्य वाल्व बन्द हो जाते है, तो रक्त ऊपर के कोष्ठ दाहिने अलिन्द मे न जाकर सीधा फेफडो मे चला जाता है।

फेफडों मे शुद्ध होकर यही रक्त अव फुफ्फुस शिराओ द्वारा वाये अलिन्द मे आ जाता ह जो कि प्रसारित होकर उस रक्त को ग्रहण कर लेता ह। अव यह वाम अलिन्द सकुचित होता हे तो यह शुद्ध रक्त नीचे वाले वाम निलय मे आ जाता हे।

जव यह वाम निलय संकुचित होकर वाये आर के दोनो वाम अलिन्द एव वाम निलयं के मध्य का वाल्व वन्द हो जाता हे। रक्त ऊपर के अलिन्द मे न जाकर महाधमनी की ओर चल देता ह ओर वहा से सारे शरीर मे शुद्ध रक्त भ्रमण करने लगता ह।

वही शुद्ध रक्त जव शरीर मे भ्रमण कर चुकता ह तो अशुद्ध होकर फिर शिराओ द्वारा आगे वढते-वढते महाशिरा मे आकर पुन हृदय के दाहिने अलिन्द मे आता ह। यही क्रम जो हमने ऊपर दिया पुन चालू होता हे आर जीवन पर्यन्त ऐसा होता हे।

दोनो ऊपर के दाहिने अलिन्द ओर वाम अलिन्द एक साथ सकुचित होते है तथा खुलते या प्रसारित होते ह, ऐसे

ही नीचे के दोनो दाया निलय एव दाया अलिन्द एक साथ प्रसारित तथा सकुचित होते हे।

स्पष्ट हुआ कि जब ऊपर के दोनो अलिन्द सकुचित होगे तो अशुद्ध एव शुद्ध रक्त नीचे के दाहिने निलय एव बाये निलय मे आ जाएगा ओर जब दोनो के निलय दाहिना एव बाया सकुचित होगा तो अशुद्ध रक्त फेफडो एव शुद्ध रक्त महाधमनी को भेजा जाऐगा। यह सक्षेप मे हृदय की कार्य प्रणाली ओर विधि हे। हृत्प्रसार मे हमे पाश्चात्य मतानुसार दो अवस्थाये मिलती ह।

(१) हृत्वृद्धि **Hypertrophy of Heart**

(२) हृत्प्रसार **Dialataion of the Heart**

यद्यपि दोनो ही अवस्थाये हृदय के वढ जाने या फल जाने के लक्षणो से युक्त हे जिनमे से वहुत थोडा भेद हे जो आगे अलग-अलग वर्णन करने पर अलग हो जाते हे।

हृद्वृद्धि (Hypertrophy)-

अति शारीरिक श्रम करने पर मासपेशियो को क्रोध आदि मानसिक आवेगो के समय मस्तिष्क को तथा अति मात्रा मे आहार-पान करने पर पेट को जितने भी रुधिर की आवश्यकता होती है उतना ही उन्हे मिल जाता है, क्योकि इन अवस्थाओ मे हृदय प्रवलतर सकोच **Contraction** करके अधिक रक्त भेजने लगता है, अर्थात् शरीर के किसी अग को जितने रक्त की आवश्यकता होती हे उसे हृदय से मिल जाता हे। हृदय अपनी क्षमता **Reserve Power** से अधिक कार्य भी कर सकता हे। आराम मे यह प्रति मिनट ५ लीटर रक्त शरीर को देता हे। आवेग के समय इससे तीन गुनी तथा तीव्रश्रम के समय ४-५ गुना रक्त शरीर को देना पडता हे। जब हृदय के मास **Myocardium** की यह अतिरिक्त कार्य कर लेने की शक्ति कम होने लगती हे तब इसे चिर हृदय दौर्बल्य कहते हे। वहुधा यह दुर्वलता पहले वाम हृदय मे प्रारम्भ होती है और वाद मे दक्षिण हृदय मे होती हे। ४५-५० वर्ष की आयु मे जसे केश, नख, त्वचा आदि पहले के समान मृदु न रहकर कुछ कठोर होने लगते है उसी प्रकार धमनियो की मृदुता भी स्वभावत कुछ कम होने लगती है अर्थात् उनमे धमनी काठिन्य **(Arteriosclerosis)** की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती हे। इससे वाम हृदय के सामने अवरोध की वृद्धि हो जाने से यह आकार मे कुछ स्थूल होने लगते हे अर्थात् उसकी दीवारे मोटी हो जाती है। इसे **Hypertrophy of the Heart** कहते हे। हृदय रोगो मे यह रोग, अर्थात् रक्तभार जनित हृदय रोग वडा सुलभ.रोग हे तथा आगे-आगे वृद्धि करता जाता हे। इसे **Hypertensive Heart Disease** कहते हे।

हृद्वृद्धि की विकृत अवस्था—

वाम हृदय मे अतिवृद्धि होने पर उसका प्रत्येक मास सूत्र लम्वा तथा मोटा हो जाता हे जिससे उसकी दीवार मोटी हो जाती हे पर उसका रक्त पहुचाने वाली पोषक धमनी या **Coronary Artery** की सूक्ष्म शाखाओ मे कोई वृद्धि नहीं होती प्रत्युत आयु के वढने के साथ-साथ उनकी दीवारो मे कठोरता **Sclerosis** की प्रक्रिया होती जाती हे जिससे वाम हृदय मे आक्सिजन कम पहुचने से उसमे शिथिल हो जाने की प्रवृत्ति रहती है। उसम शथिल्य **(Dilatation)** प्रारम्भ होने पर वृक्को को प्रति मिनट रक्त की मात्रा कम मिलती हे जिससे मूत्र कम बनता हे अर्थात् रक्त मे से जल और लवण की निकासी हो जाती हे।

हृत्प्रसार Dilatation-

हृत्प्रसार आरम्भ मे हृदय की मासपेशियो के सकुचन शक्ति या की कमी के कारण होता है, जिसके कारण कोष्ठ पूरा जोर न लगाकर-पूर्णतया सकुचित न होकर कोष्ठ सम्पूर्ण रक्त को खाली करने से असमर्थ हो जाते हे। इसका परिणाम यह होता हे कि रक्त का प्रभाव अपेक्षाकृत कम ओर धीमा हो जाता है तथा अगो का पोषण भी अपर्याप्त हो जाता हे। देखा गया हे कि यदि प्रवाह की गति आधी रह जाय.तो शोथ (अगो मे) के लक्षण पेदा हो जाते हे। शिराओ मे रक्तदाब **Venous Pressure** वढ जाता हे। एक दशा मे जब वाम निलय यदि इस रक्तभार वहन करने मे योग्य हुआ तो वह कोष्ठ प्रसारित हो जाता हे उस दशा मे उसकी दीवारे लचीली तथा मुलायम होती हे जिसमे सकोच क्रिया आसान होती हे हृद्वृद्धि मे सकोच क्रिया हो जाती है। जिसका कारण धमनी काठिन्य होता हे।

समवेत लक्षण—

चूकि इसमे फेफडे से सम्बन्धित कारण होते हे अत अशुद्ध रक्त को शुद्ध करने मे विलम्ब ओर वाधा पडती है, अत रोगी रक्त सम्यक् से शुद्ध रक्त न हो सकने के कारण उसे श्याम रक्तता **(Cyanosis)** हो जाता हे। श्वास

फूलना, दमा होने के समय ज्यादा श्वास फूलना, थोडे परिश्रम मे ही दम का फूलना, रक्त को फेफडों मे सम्यक् मात्रा मे आक्सीजन न मिलने के कारण रक्तश्यामता **Cyanosis** की दशा मे देखा जाता है, खासी प्राय रहती हे, कभी-कभी फेफडो से रक्त मिश्रित कफ आ जाता है। इतना होते हुए रक्त में लालकणो की गणना अधिक पाई जाती है एक्सरे लेने पर दाहिना निलय तो वढा हुआ मिलता है साथ मे फोफ्फुसीय धमनी **Pulmonary Artery** दृष्टिगोचर होती हे।

वक्ष परीक्षा (Pericardium)-

इसमें प्राय बच्चो में इस वाम निलय का निचला भाग आगे निकला हुआ **(Bulging)** होता है। ऊपर **(Apex)** की धमनध्वनि सामान्य हो सकती है, विखरी हुई या अत्यल्प वे मालूम भी हो सकती हे। वाई ओर के तीसरी से पाचवीं पसली के वीच मे इस निलय का प्रसार काफी देखा जा सकता है, जव यह निलय सकुचित होकर **Systolic** दशा मे होता हे तव, वक्षरिथ **(Sternum)** के दाहिनी ओर भी आमाशय के ऊपर अनुभव किया जा सकता हे।

चिकित्सा—

१ लाक्षणिक चिकित्सा—

हृदयवृद्धि तथा हृदयप्रसार मे थोडे से परिश्रम या चितन तथा सोचने की स्थिति मे अकस्मात् रक्तभार या रक्तदाव वढ जाने की स्थिति मे श्वास तथा निमोनिया जैसे लक्षण उत्पन्न हो जाते हे ओर उसे श्वास लेने मे कठिनाई होती हे, वक्ष मे पीडा का भी अनुभव होता है। साथ ही पेशाव कम आने के कारण रक्त मे जलीयाश अधिक हो जाने से हृदय मे पडने वाले कार्यभार के कारण हृदयप्रसार हो जाता है, जिससे रोगी अत्यन्त घवराहट का अनुभव करता हे। ऐसी स्थिति मे उसे तात्कालिक आक्सीजन की व्यवस्था करनी चाहिए तथा मूत्रल औषधि देकर ४-५ बार मूत्र निष्कासन कराना चाहिए साथ ही रक्तदाव कम करने की औषधि देनी चाहिए। जिसमे सर्पगन्धा, वृहत्वातचिन्तामणि आदि वहुत उपयोगी है। इसके अतिरिक्त सर्पगन्धा के योग भी रोगी के वलाबल के अनुसार दे सकते है। रक्तदाव नियन्त्रित होने की स्थिति मे सर्पगन्धा का प्रयोग वन्द करके अश्वगन्धारिष्ट तथा ब्राह्मी आदि दे सकते है। मूत्रल, औषधि से पुनर्नवा, वरुण, शोभाञ्जन क्वाथ, पुनर्नवाष्टक क्वाथ ३-४ वाद देने से शोथ या वृद्धि मे लाभ होता है।

उसके अतिरिक्त रोगी की अवस्था के अनुसार निम्न योगो से अतुरालयी चिकित्सा कर सकते ह।

औषधि व्यवस्था—

(१) मधुमेह की स्थिति में—

शिलाजीत के योगो के साथ नागार्जुनाभ्र या अर्जुनछाल क्वाथ के साथ प्रात साय भोजन के साथ हिग्वाष्टक चूर्ण या हिंग्वादि वटी भोजन के वाद कुमार्यासव, रात्रि को अर्जुनासव तथा अनार का सेवन करे।

(२) हृद्वृद्धि तथा हृत्प्रसार में—

१— दूध के साथ प्रात साय आमलकी चूर्ण तथा आवले के योगो के रसायन जिसमे ब्राह्मरसायन तथा अमृतकलश श्रेष्ठ है। अमृतकलश का अनुसधानात्मक अध्ययन हृदय के रोगो में विशेष लाभकारी सिद्ध हुआ हे।

४०-५० वर्ष की आयु के वाद शरीर के हर टिशु के पास सुपर आक्साइड डामिटेज नाम का एन्जाइम मात्रा मे घटने लगता हे ओर आक्सीजन फ्रीरेडिकल जो श्वास के साथ आते हे, अधिक मात्रा मे बनने लगते ह, जिससे शरीर मे हर प्रकार की जैविक क्रियाओ की डी जनरेशन करके विभिन्न प्रकार के अपचयात्मक रोगो को उत्पन्न कर देता है। जैसे हृदयरोग श्वास, धमनी अवरोध, धमनी काठिन्य, सधिवात आदि। शरीर मे मेटाबोलिज्म की क्रिया को चयापचग कहते है, जो शरीर मे हर समय सचालित रहती है। जिससे एनाबालिज्मका तथा केटाबालिज्म-असात्म्य होती है, जो हृदय सकोचन या श्वास के समय स्पदन के समय प्रतिपल चलती है जो प्रतिमूल आहार-विहार मे अपनी अनियनिन्त्रत होकर विभिन्न रोगो को जन्म देती हे। जिसे प्रतिरोधात्मक रूप से रोगी की इससे प्रवल क्षमता पायी जाती है। अमृतकलश शरीर मे प्राकृतिक अवरथा मे पाये जाने वाले शरीर के टिशु के एन्जाइम सुपर आक्साइड जो मात्रा में घटने तथा बढने लगता है उसे हरीतकी एव आवले के योग के साथ त्वक्, एला, मुस्तक, हरिद्रा, पिप्पली, ब्राह्मी, नागर मुस्तक, शखपुष्पी आदि त्वक् उसे नियन्त्रित रखते है, फ्रीरेडिकल को शरीर से बाहर निकालता है। आवले की भावना का योग रिजेडिव डिसीज से बचाता है।

शरीर में जरावस्था को आने से रोकता है तथा धमनी काठिन्य को मृदु बनाता हे मूत्र तथा मल का विसर्जन करता है जिससे श्वास लेने मे सुविधा होती है।

इसके साथ हृदयार्णव रस, कामदुधा तथा प्रवालपिष्टी गर्म जल या शहद से दिन मे तीन बार प्रयोग करे, लाभकारी होता हे।

२— जवाहरमोहरा पिष्टी, प्रवालपिष्टी दिन मे तीन बार शहद से, भोजन के बाद पुनर्नवारिष्ट रात्रि को योगराज गुग्गुल दूध के साथ।

(३) विश्राम चिकित्सा—

रोगी को शारीरिक तथा मानसिक रूप से पूर्ण विश्राम करना चाहिए। सीधा लेटने से श्वासकृच्छ्रता हो तो कधे के पीछे बडे तकिया के सहारे रोकना चाहिए। सप्ताह मे एक या दो बार प्रयोग कराना चाहिए, जिससे रक्तदाब बढने में भी लाभ होता हे।

लघु भोजन चिकित्सा—

हृद्वृद्धि या हृत्प्रसार मे भोजन चिकित्सा मुख्य है जिसमे प्रारम्भ मे रोगी को अनार का रस, ग्लूकोज तथा दूध देना चाहिए। एक सप्ताह बाद लाभ की स्थिति मे सब्जी रोटी यवयुक्त, बथुआ का शाक, दही का पानी या तक्र छाछ का प्रयोग कराना चाहिए।

पथ्य—

जो, बाजरा की रोटी, मूग, मसूर, कुलथी की दाल, परवल, करेली, लोकी, चौलाई का शाक तथा फलो मे अगूर, पपीता, खजूर, अनार का रस, अद्रक, नींबू तथा दही पानी या छाछ हितकर है।

अपथ्य— इसके अतिरिक्त गुरु, उष्ण, तीक्ष्ण, स्निग्ध, अम्ल, लवण एव मसालो के साथ सुरापान मादक द्रव्य अधिक चिन्तन, व्यायाम, श्रम, धूप तथा सहवास रोगी को अत्यन्त हानिकारक हे।

हृदयरोगों में प्रभावशाली वनौषधियां एवं पिष्टियां, खनिज एवं रत्न

शेषांश पृष्ठ 205 से

दिन मे दो बार उन्नाव के साथ प्रयोग, अर्जुनारिष्ट के साथ मुक्ता १ रत्ती, खमीरा गावजवा अम्बरी १० ग्राम मे मिश्रित कर दिन मे कई बार चटाने से हृद्रोग मे लाभ होता है। इसी प्रकार मकरध्वज के प्रयोग के साथ हृद्रोग निवारणार्थ मुक्तापिष्टी अथवा मुक्ताभस्म का मिश्रण अवश्य करके देना चाहिए। मात्रा १/४ रत्ती से १ रत्ती तक। बलानुसार, मधु के साथ प्रयोग कराने से हृद्रोगो मे शीघ्र लाभ होता है। वृहत् वात चिन्तामणि रस १२५ मि० ग्रा०, मुक्तापिष्टी ६५ मि० ग्रा० नागार्जुनाभ्र २५ मि० ग्राम०, मृगशृग भस्म २५ मि० ग्रा० एव अर्जुन त्वक् चूर्ण २ ग्राम सयुक्त मात्रा बनाकर मधु के साथ चटाने से विभिन्न हृदय विकार निवृत होते है।

वातज हृद्रोग मे— कामदुधा रस १२५ मि०ग्रा०, मुक्तापिष्टी १२५ मि०ग्रा०, स्वर्णमाक्षिक १२५ मि०ग्रा०, गिलोय सत्व २५ मि०ग्रा० की सयुक्त मात्रा घृत मधु से प्रात साय देने से शीघ्र लाभ होता है।

पैत्तिक हृद्रोगो मे— मुक्तापिष्टी १ रत्ती, प्रवाल पिष्टी २ रत्ती, २५ मि० ग्रा० दुग्ध के साथ प्रयोग कराने से रोगी शान्ति अनुभव करता है। द्राक्षावलेह हृद्रोग रोग मे विशेष लाभप्रद है। अथवा मुक्तापिष्टी गुलाव के अर्क में जवाहरमोहरा खटाई के साथ देने से विकलतायुक्त हृद्रोग मे लाभकारी सिद्ध होती है। १ से २ रत्ती।

१३ पन्ना का हृद्रोगो में प्रयोगानुभव— (१) यह भस्म या पिष्टी रूप मे हृदय रोग मे प्रयोग कराने से हृदय रोगो मे लाभ होता है। इससे श्वास, रक्तदाबवृद्धि, हृद्विकार, कर्कस्फोट, वातनाडी विकार, सूर्यावर्त, शीतपित्त, भ्रम, विविध विष विकारो एव भूतबाधा मे प्रयोग मे लाई जाती है। मात्रा— १ रत्ती रोग अनुसार अनुपान के साथ प्रयोग करावे। (२) पित्तज हृदयरोग मे (र० त० सा०)— के अनुसार ६० मि०ग्रा० दिन मे २ बार गुलकन्द के साथ प्रयोग कराने से पित्तज हृद्रोग मे लाभ मिलता है।

भारत में हृदय रोग की समस्या तथा उसका निदान

डा० शुभकर वनर्जी
वी एस सी, एम ए , पी जी डी , वी ए , आई सी डब्ल्यू ए आई (सी सी) पीएच डी
ए ४६ सादतपुर, गली न० १ करावल नगर रोड दिल्ली-११० ०६४

साधारण तार पर हम भारतीय ''परम्परागत रूप से शाकाहारी' ही हाते हे। अत स्वाभाविक रूप से उनका जीवन सादगीपूर्ण हाता ह आर उनकी मानसिकता उग्र नहीं हाती। फलस्वरूप उनमे कारनरि (चक्रीय) हृदय रोग की आशका कम होती ह। उल्लेखनीय हे कि कारनरि ऐसा राग ह जा विकसित होकर एनजाइना पक्टरिस (हृद्शूल), दिल क दारे आर सडन कार्डिएक डेथ (आकस्मिक धडकन वद हाना) जसी स्थितियो का कारण वनता ह। आंद्योगिक राष्ट्रा (विशपकर पश्चिमी जगत) की तुलना मे मान्यता रही हे कि भारतीय नागरिको मे इन रोगो की आशका कम होती ह किन्तु दुर्भाग्य से यह मान्यता सही सिद्ध नहीं हुइ ह।

भारत के विभिन्न हिस्सो मे किये गये अध्ययनो से यह तत्व उजागर हुआ ह कि इस्केमिक हृदय रोग के मामल वहुत वडी सख्या मे मिलते ह। विशेषकर शहरी आवादी मे इनकी भरमार हे। दिल्ली जसे शहर म ६ ७ प्रतिशत आवादी हृदय रागो स ग्रस्त ह जो पडासी राज्य हरियाणा क ग्रामीण क्षेत्रो के मुकावले तीन गुना अधिक ह। दक्षिण भारत मे किये गये अध्ययनो से भी पता चलता ह कि वहा इस्केमिक हृदय रोगियो की सख्या वहुत अधिक ह। दक्षिणी राज्या मे ग्रामीण आर शहरी क्षेत्रो का अनुपात ११ ४१ वहुत अधिक ह। अनुमान ह कि देश म कम से कम ४ करोड लाग कारनरि हृदय रोग से पीडित ह।

हृदय रागियो की यह सख्या स्वास्थ्य सम्वन्धी नीति वनाने वालो को यह समझने के लिए पर्याप्त होनी चाहिए कि इस दिशा मे सार्थक उपाय करने की आवश्यकता ह। एक वार जव व्यक्ति वीमारियो से ग्रस्त हो जाता ह तो सभी उपचार हल्के आर महगे पडते ह। विज्ञान ओर टेक्नोलोजी क क्षेत्र म ज्ञान की नई उपलब्धियो से अवरुद्ध धमनियो के उपचार के नए तरीके विकसित करन म सहायता मिली ह। इनमे वाईपास सजरी, एन्जिआप्लास्टी (जिसम गुब्बार इस्तमाल किए जाते ह। स्टेण्ट्स ओर कई नइ प्रणालिया शामिल ह, किन्तु इनमे खर्च की अधिकता आर ग्राम लागा के लिए सुविधाओ का अभाव हाने क कारण कवल १० प्रतिशत रोगो मे ऐसे उपचार का लाभ उठा पात ह। हमार देश मे हर वर्ष इन उपचार पद्धतियो का लाभ उठा पान वाले रोगियो की सख्या केवल २५ से३० ही ह।

आनुवशिक पूर्वानुकूलता एक महत्वपूर्ण कारण—

कई अध्ययनो से पता चला ह कि दक्षिण एशिया भारत, पाकिस्तान, वगला देश के लागो म कम उम्र म ही कॉरनरि आर्टरीज धमनी अवरुद्ध होने के आनुवशिक कारण पाये जाते हे। अमरीका जाकर वसे पुरुष भारतीय चिकित्सको मे इस्केमिक हृदय रोग सामान्य अमरीकी चिकित्सका के मुकावले तीन से चार गुणा अधिक पाये जाते हे। इसी प्रकार दक्षिण एशिया मूल के जा लाग अमरीका मे रह रहे ह उनम इस वीमारी की वजह से अस्पताल म भर्ती होने की दर जापान आर फिलीपिन्स के मुकावले चार गुणा आर चीन तथा अन्य एशियायी देशा के मुकावले चार गुणा अधिक ह। ब्रिटेन मे रहने वाले भारतीय पुरुषा म ३० से ३९ वर्ष के आयु वर्ग मे इस्केमिक हृदय रोगा स मृत्युदर वहॉ की राष्ट्रीय आसत से दुगनी ह आर २० स २९ वर्ष के आयु वर्ग मे यह तीन गुणा अधिक ह। यह अन्तर इस तथ्य के वावजूद हे कि वहॉ की राष्ट्रीय चिकित्सा सेवा के अन्तर्गत सभी को एक समान चिकित्सा सुविधाय मुहैया करायी जाती हे।

दरअसल उन दक्षिण एशियाई भारतीयो मे इस्कमिक हृदय रोगो से मृत्युदर किसी भी अन्य जातीय समूह से अधिक हे, जो स्वय अपने देश के शहरो मे अथवा विदेश के शहरो मे रहते है। यह अन्तर इस तथ्य के बावजूद हे के इनमे से अधिक जनसख्या जीवनपर्यत शाकाहारी रहने वालो की हे।

दक्षिण एशियाई लोगो मे हृदय रोगो की अधिकता पाये जाने मे इस रोग के परम्परागत जोखिम घटको जेसे अधिक मात्रा मे सीरम कोलस्ट्रोल का जमना, उच्च रक्तदाब (हाईपरटेशन) ओर सिगरेट सेवन आदि का असर अधिक स्पष्ट नही हुआ हे। एशियाई भारतीयो मे उच्च रक्तदाव, धूम्रपान और मधुमेह का होना कारनरि हृदय रोग की अधिकता को स्पष्ट नहीं करते। एशियाई भारतीयो मे आसत सीरम कोलस्ट्रोल का स्तर अमरीकी जनसख्या के वरावर है जव कि ब्रिटेन के लोगो के मुकावले कम हे। इस प्रकार एशियाई भारतीयो मे सी० ए० डी०, की मात्रा कोलस्ट्रोल के कुछ स्तर मे कम पायी जाती हे।

प्रश्न उठता हे कि दक्षिण एशिया के लोगो मे इस वीमारी की अधिकता क्यो पायी जाती हे ओर इसके सम्भावित जोखिम घटक कौन से हे। इन बातो का पता लगाने के लिए किए गए अध्ययनो से यह सकेत मिलता ह कि मोटापा, ऐलिवेटिड प्लाज्मा ट्राइग्लिसेराइड यानि उत्थापित्त रक्तवाहिनी अवरोध, इन्सुलिन प्रतिरोध, प्लाज्मा एच० डी० एल०, कोलस्ट्रोल वेडकोलेस्ट्रोल, के स्तर मे कमी ओर मधुमेह का अधिक मात्रा मे होना इत्यादि ऐसे जो हृदय रोगो की अधिकता के जिम्मेदार हे। दक्षिण एशिया मे लिपो पोट्रीन जुका स्तर अधिक होता हे जो कॉरनरी रोग ओर युवावस्था मे अकाल मृत्यु का सवस भयानक जोखिम घटक हे। इससे स्पष्ट हो जाता ह कि दक्षिण एशिया मे आनुवशिक कारणो से हृदय रोगो की आशका अधिक रहती हे।

वढते शहरीकरण की वजह से लोगो की वढोतरी, खान पान मे परिर्वतन ओर शारीरिक श्रम मे कमी आयी हे, जिससे मधुमेह, उच्च रक्तदाव आर रक्त म कोलस्ट्रोल की वढोतरी हूई हे। इस प्रकार आनुवशिक पूर्वानुकूलता आर पर्यावरण सवधी प्रभावो से रक्त मे मधुमेह आर कोलस्ट्रोल का स्तर वढ जाता हे। जिससे याहरी भारतीयो और दक्षिण एशियाई प्रवासियो मे इस्केमिक हृदय रोगो की आशका स्वाभाविक रूप से अधिक हो जाती ह।

वेज्ञानिक आकडो से पता चलता ह कि सचुरेटिड फेट्स सतृप्त वसा की रक्त मे कोलरट्राल वढाने मे प्रमुख भूमिका हे ओर अन्य घटक जेसे उच्च रक्तचाप, सिगरेट-सेवन, मधुमेह आर शारीरिक श्रम मे कमी अतिरिक्त घटक ह। जा कोलस्ट्राल का स्तर अधिक होने पर हृदय की धमनियो पर दुष्प्रभाव डालते ह।

दरअसल दक्षिण एशियाईयो के सदभ म उच्च कोलस्ट्रोल की परिभापा अत्यन्त महत्वपूण ह। कम आयु मे हृदय रोगियो की अधिकता को देखते हुए यह महसूस किया जाता हे कि हमारी जनसख्या मे समग्र कोलस्ट्रोल का १५० एम जी/डी कोलस्ट्रोल का १०० एम जी/डी एल आर ट्राइग्लिसेराइड का १५० एम जी/डी एल का स्तर ऊचा माना जाना चाहिए।

खाना पकाने के तेलो की महत्वपूर्ण भूमिका—

उल्लखनीय ह कि नारियल के तेल मे सवसे अधिक, ६२ प्रतिशत सचुरेटिड फेटी एसिड होते हे। ये एसिड कोलस्ट्रोल को वढाने वाले चिकनाई युक्त एसिड होते ह। नारियल के तेल से कॉरनरि धमनियो मे थक्का क्लॉट्स वनन के आसार गोमास, मेमना और सुअर की तुलना मे निश्चित रूप से ज्यादा होते हे। केरल के शहरी क्षेत्रो मे इस्कमिक हृदय रोग के मामले बहुत अधिक हे ओर यह महसूस किया जाता हे कि नारियल के पेडो ओर नारियल के तेल के उन्मुक्त प्रयोग के लिए विख्यात करल म इस्केमिक हृदय राग महामारी की तरह वढ रहा ह। अधिकतर मवेशियो स प्राप्त वसा के समान पाम आयल मे भी ५० प्रतिशत सचुरटिड फटी एसिड होते ह। इसका प्रयोग विश्वभर मे सामान्य खाद्य तेला क रूप म किया जाता हे। जवकि यह तेल भी ऐथरोजेनिक ह आर रक्त म एल डी एल कोलस्ट्रोल का स्तर वढाने का कारण ह। अत कारनरि आटरी रोग भी पदा करता हे। यहा मारिशस का उदाहरण भी लिया जा सकता ह, इस देश ने पॉम आयल पर प्रतिवध लगा रखा ह। इस प्रतिवध क फलस्वरूप वहा की आवादी मे रक्त कोलस्ट्रोल के स्तर म ३० एम जी/डी एल की कमी आयी ह।

इस परिप्रेक्ष्य मे कुछ तेल ऐसे ह जिनमे सचुरेटिड फट्स की मात्रा कम होती ह आर मोनो अनसेचुरेटिड फटटी ऐसिड स्वास्थ्यवर्द्धक ऐसिडो की मात्रा अधिक होती हे। इनम जेतून का तेल, मूगफली का तेल ओर रेपसीड का तेल भी शामिल है। भूमध्यसागर के देशो में भोजन मे मोनो अनसचुरेटिड फ़ेट्टी ऐसिड की मात्रा अधिक पायी जाती ह। इससे कॉरनरि धमनियो म थक्का वनने और वसा एकत्र होन की प्रवृति मे कमी आती ह।

दरअसल सूरजमुखी का तेल, मकई का तेल, सायावीन का तेल, कुसुम्भ का तेल आदि मे पालिअनसेचुरेटिड फटटी एसिड की मात्रा अधिक होती ह ओर सेचुरेटिड फ़ेटटी एसिड की मात्रा कम होती हे। इससे कोलस्ट्रोल जमने की सम्भावना नही होती आर ये सुरक्षित भी माने जाते ह। परन्तु चूकि ये एच० डी० एल० कोलस्ट्रोल फायदेमद कोलस्ट्रोल को भी कम करते हे ओर प्रीऑक्सीडेशन पूर्व आक्सीकरण के लिए अति सवेदनशीलता को वढा देते हे अत उतने अच्छे नही हे जितने की मोनोअनसनचुरेटिड फट्टी ऐसिड की अधिकता वाले तेल जतून, कैनोला, रेपसीड तेल आदि होते हे।

वनस्पति तेलो के हाइड्रोजन से पालिअनसेचुरेटिड फ़ेटटी एसिड मे परिवर्तित हो जाते हे। इसका रक्त के प्रवाह पर दुष्प्रभाव पडता ह। इससे धमनियो मे थक्का वनने की प्रवृत्ति को वढावा मिलता हे ट्राससेचुरेटिड एसिड के महत्वपूर्ण स्रोत हे। गुलगुले, फास्ट फूड की दुकानो पर फ्राइ किया गया भोजन, कडे मारजरीन ओर भारतीय वाजारो मे वेचे जाने वाले साधारण वनस्पति तेल।

अत रक्त कोलेस्ट्रोल म सर्वाधिक कमी लाने आर इस्केमिक हृदय रोग की आशका टालने के लिए सवसे वढिया उपाय यह हे कि सचुरेटिड एसिड लेना वद कर दिया जाय। इसके लिए मक्खन आर घी का सेवन वद कर देना उचित ह। पूण मलाईयुक्त दूध के स्थान पर मलाई उतारा दूध ले, चिकनाई वाल डेयरी उत्पादा का सवन कम स कम आर फटटी मछलिया, सालमोन मकरल्स ओर फाम म तैयार की गई कटफिस आदि का सेवन अधिक मात्रा म करना चाहिए। मानोअनसचुरेटिड फेट्टी एसिड की अधिक मात्रा वाले तेला, जतून, कनाला, रेपसीड आदि क प्रयोग अथवा अधिक तेल वाली कुसुम या सूरजमुखी की किस्मो के प्रयोग को वढावा दिया जाना चाहिए।

वेहतर यह ह कि प्रतिदिन फलो आर पत्त वाली सब्जियो के सेवन को वढावा दिया जाय। इ एंटीआक्सीडेट भी होते ह, भारत मे शाकाहारवाद सदूषित शाकाहारवाद भी कहा जाता हे क्योकि शाका भोजन मे डेयरी उत्पादो की मात्रा अधिक हाती है। दरअसल डेयरी उत्पाद मासाहार की तुलना म अधि सैचुरेटिड, ऐथरोजेनिक आर थ्रोम्बोजेनिक भी हात ह।

तत्काल उपचार का उपाय—

भारत मे हृदय रोगो की रोकथाम आर उपचार कम आयु मे ही रक्त कोलस्ट्रोल के निम्न स्तर पर ही शुरु किये जाने की आवश्यकता हे। शहरी जनसख्या म ३० वर्ष से अधिक की उम्र मे रक्त कोलस्ट्रोल ओर ट्राइग्लिसेराइड के स्तर की जाच करना अत्यन्त आवश्यक हे। यह भी जरूरी हे कि पूर्ण कोलेस्ट्रोल ओर सीरम ट्राइग्लिसेराइड का स्तर १५० एम जी /डी एस से कम रखने के प्रयास किय जाये। इसी प्रकार युवा पीढी मे उच्चरक्तदाव आर मधुमेह की जाच करना भी जरूरी हे। दरअसल भारत की जनसख्या म इस्केमिक हृदय रोगो की अधिकता का मुख्य कारण विभिन्न जोखिम घटको का समूह वनना ही हे।

शारीरिक श्रम का महत्व—

यह तथ्य भी महत्वपूर्ण हे कि एच०डी० एल० कोलेस्ट्रोल लाभकारी कोलेस्ट्रोल भारत मे सामान्यत कम ही पाये जाते हे। इन्हे वढाने के लिए भोजन म परिवर्तन इतना महत्वपूर्ण नहीं होता क्योकि नियमित व्यायाम के द्वारा ही इनकी स्थिति मे सुधार लाया जा सकता ह। व्यायाम से पेट के मोटापे ओर ब्लड शुगर का स्तर कम रखने मे भी मदद मिलती हे जो कि दक्षिण एशिया देशो के असामान्य होते जा रहे ह। विशेष करके भारत मे इस्केमिक रोगो म वढोत्तरी वहुत ही चिन्ता का विषय ह। भारत के लिए यह जनस्वास्थ्य का ऐसा मुद्दा वन गया हे जिस पर तत्काल ध्यान देना जरूरी हे। इसके लिए जोरदार जन जागरूकता अभियान और रोकथाम कार्यक्रमो के रूप मे उपचारात्मक उपाय करना भी अत्यन्त आवश्यक हे। ऐसा करके हम हृदय रोगो की वढ़ती हुई आशका का सामना कर सकेगे तथा स्वास्थ्य से सम्वन्धित इस महत्वपूर्ण समस्या पर नियत्रण पाने मे अवश्य सफलता प्राप्त कर सकते ह।

हृदय रोगों का आध्यात्मिक उपचार

प्रो० डा० सु० ब० काले
वेद्यनाथ महाविद्यालय, परठी वे०

आधुनिक युग मे अनेक वज्ञानिक सुविधाओ के वावजूद हृदय रोग वहुत वढ गये हे। मनुष्य एक **Complex** हे। आज के विज्ञान ऐलोपेथ्री को वो पूरा पता नहीं चला है। हमारे वेद आयुर्वेद मे मनुष्य क्या है, और उसका आपस में ओर निसर्ग से केसा सम्वन्ध हे ये पूरा विवरण हे। ऋषि, मुनि, आचार्यो ने अपने चितन से इसका स्पष्टीकरण, कारण मीमासा दी हे।

आयुर्वेद यह केवल चिकित्सा शास्त्र नहीं वल्कि वह जीवन विज्ञान हे। आयुर्वेदाचार्य स्वय कहते हे कि आयुर्वेद, अध्यात्म ओर धर्मशास्त्र ये अलग-अलग नहीं हे या सुख का शास्त्र भी अलग नहीं ह।

"एक शास्त्र वद्यामाध्यात्मक वा सोख्य।
चेक यत्सुख वा तपो वा।। "हारीत"

इसलिए सुख का विचार, कारण, मीमासा बहुत गहराई से वेद, आयुर्वेद मे की हे।

हर प्राणी मनुष्य सुख चाहता ह पर सुख मिलता कसे है ? उसका शास्त्र क्या हे ? नियम ह, नियमो से चलने से सुख मिलता हे, वरना दु ख आता हे। नियमो से चलना ही धम ह। वो ही पथ्य ह। नियमो से नहीं चलना अधर्म हे, अपथ्य हे, इसीलिए कहा हे, सुखस्य मूलं धर्म ।। चाणक्य

आयुर्वेद ने कहा हे कि हर वीमारी मन से पेदा होती है। शारीरिक वीमारियो का कारण भी मन हो सकता है। इसलिए मनुष्य का पूरा अभ्यास अध्यात्म शास्त्र मे, धर्मशास्त्र मे योग विद्या मे किया गया हे। हर वीमारी का **Prevention Curing** योग विद्या से, अध्यात्म विद्या से कर सकते हे।

आज ये विचार पसन्द ही नहीं आयेगे क्योकि धारणा गलत होकर वैठी है।

मनुष्य निसर्ग पर निर्भर हे। उससे सुख प्राप्त करने के लिए वहा नियमो का पालन करना पडता ह, मतलव पथ्य है, धर्म का पालन आचरण है। यह आचरण अध्यात्म का ही अग है।

अव शरीर केवल देखेगे तो उसमे भी—

१— स्थूल शरीर जो दोष, धातु, मल, मूलक हे वो जड हे।

२— सूक्ष्म शरीर जो सत्व, रज, तम पर आधारित ह। अत करण, मन, बुद्धि, चिन्ता, अहकार, षडरिपु, सूक्ष्म इन्द्रिय, वासना आदि हे। इसका स्थूल से सम्वन्ध हे। स्थूल का कार्य सूक्ष्म के अनुसार चलता है। पर जड हे।

३— कारण शरीर जो प्रकृति के अतिसूक्ष्म रूप का हे।

४— आत्मा जो चेतन हे, अमर हे, भोक्ता ह, कर्ता हे और इसकी चाह है, वो कुछ प्राप्त करना चाहता ह इसीलिए उसको शरीर मिला हे। सव दु खो का वो भोक्ता हे।

शारीरिक सुख स्वास्थ्य से ही मिलता ह।

मानसिक सुख सयम से मिलता हे।

अतर्मुख होने से मिलता हे।

मन के विकार के कारण शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान करने से वो शान्त रहता ह।

आत्मिक सुख— आत्मा का सुख नियमो के पालन करने मे हे आर प्रामाणिकता, ईमानदारी, दया प्रेम, स्नह, परोपकार, त्याग, सेवा, दूसरो को खिलाना, दूसरा का दु ख दूर करना। आदि मे आत्मा प्रसन्न आनदी रहता है।

आर सबसे श्रेष्ठ सुख, परमानन्द वो परमात्मा से योग साध्य करने मे ह। परमात्मा से योग साध्य करना मोक्ष प्राप्त करना यही तो मनुष्य जन्म का उद्देश्य हे।

हृदय रोगो के कारण देखेगे तो आपको पता चलेगा कि मनुष्य का अप्राकृतिक जीवन, अप्राकृतिक खान-पान अप्राकृतिक मन के स्तर पर ईर्ष्या, द्वेष, काम, क्रोध, मोह, लोभ, गव, भय, चिन्ता, विकल्प, क्रूरता आदि हे। आज का मानव इनमे ज्यादा फसा हुआ हे। इसके साथ वेईमानी, धोखा देना छलकपट करना, ज्यादा महत्वाकाक्षी रहना, विषया के पीछे लगना ये सभी सूक्ष्म शरीर मे वासना के रूप मे उगता ह, फिर ये आत्मा को पसद नहीं आता। अन्दर ही अन्दर मन ओर आत्मा मे सघर्ष शुरू होता हे। फिर उसका परिणाम शरीर पर पडता हे। पाचन सस्था पर पडता ह। हृदय पर पडता हे। षडरिपु, वासना आदि के प्रावल्य से प्रज्ञापराध होता हे।

'प्रज्ञापराधो हि मूल सर्व रोगानाम्''

हृदय का मन, बुद्धि का वहुत सम्बन्ध हे। मन, बुद्धि मे आत्मा के विपरीत कुछ सोच भी चली तो आत्मा अस्वस्थ होता ह। उसका परिणाम हृदयगति ओर श्वाच्छोवास पर होता हे।

इसीलिए आज जितने हृदय के रोगी ह वो सभी मानसिक रोगी ह। उनका दोष सूक्ष्म शरीर मे हे।

सूक्ष्म शरीर के दोष आध्यात्मिक अभ्यास से, योग से ही निवारण हो सकते ह।

कुछ लोगो को मृत्यु का डर लगता ह, अव इसका इलाज क्या हे ? डर लगते ही शरीर का कार्य वदल जाता ह। मृत्यु क्या ह ? आर तो अटल ह वो परमात्मा की आवश्यक व्यवस्था ह य जाने विना ता डर दूर हागा नहीं।

इसीलिए शास्त्रो मे कहा ह कि—

अज्ञान ही दुःख ह मृत्यु ह। आर सत्य ज्ञान ही सुख ह आनन्द ह मोक्ष ह।

शाश्वत आर अशाश्वत जड आर चेतन इनम का भद नहीं मालूम होन से भी अनक लाग हृदय राग क शिकार ह।

आत्मा शाश्वत ह आर सपत्ति घर, शरीर य अशाश्वत ह आर ये हमेशा अपन साथ रहना चाहिए य समझना गलत ह। उससे भी डर पेदा हाता ह आर हृदय रोग हाता ह।

अत हृदय रोग केवल गलत विचारो से विषयो के पीछे लगने से, आत्मा की आवाज का भूलने से ही ह। परमात्मा का भूलने से उसका सग न करने से ही ह।

इसका मतलव यह कि हृदय रोग की चिकित्सा य मूलत आध्यात्मिक ही ह।

मन, इन्द्रिय, प्रवृत्ति, बुद्धि सभी का शुद्ध रखना पवित्र रखना, अपने कावू मे रखना, सयम मे रखना ये आत्मा का काम हे। आर इन सभी का उपयोग आत्मा के सुख के लिए, प्रसन्नता, आनन्द के लिए ही करना चाहिए।

इसलिए अतर्मुख प्रवृत्ति वढानी चाहिए। परमात्मा से योग साध्य करना चाहिए।

मन को कावू मे रखने के लिए प्राणायाम आवश्यक हे।

मन कावू मे हुआ या शान्त हुआ कि हृदय की धडकन कम होती हे। इसलिए प्राणायाम आवश्यक ह। ध्यान आवश्यक हे, अष्टाग योग आवश्यक ह।

यम— अहिसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य।

नियम—शोच, सतोष, स्वाध्याय।

आसन—

प्राणायाम—

प्रत्याहार—

धारणा—

ध्यान—

समाधि— ये हे सही अध्यात्म। अध्यात्म के नाम पर अनेक गलत प्रथा हे वो अध्यात्म नहीं ह।

प्रण व जप ये महोषधि ह। आत्मा का जो जो प्रिय प्रसन्नता देने वाली वाते ही जीवन मे करना इसको ही अध्यात्म कहते हे।

आत्मा को जो प्रिय हे वो ही करना चाहिए। इसीलिए तो धर्म की व्याख्या ही, आत्मा को जो अप्रिय ह वो नहीं करना ओर जो प्रिय हे वो करना, ऐसी की गयी ह।

आत्मन प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत।

वेद, स्मृति, सदाचार स्वस्थ प्रिय आत्मना।

आज आध्यात्मिक प्रवचन करने वाले भी अज्ञान मे फसे ह। इसीलिए भ्रम जाल ह।

मन को शान्त, अतर्मुख, निर्विषय करके स्थिर किया आर परमात्मा का ध्यान चिन्तन करते रहे तो सब

व्याधिया नष्ट होती है।

आध्यात्मिक अभ्यास मे कम खाना, सात्विक भोजन करना, दिनचर्या ठीक रखना ये सभी है। उससे भी हृदय रोग का पथ्य होता है और पथ्य ही दवा है।

उसके साथ वेगधारण को भी महत्व है। शारीरिक मलविसर्जन आदि के वेग धारण नहीं करने चाहिए। अगर वेग धारण किये गये तो अनेक रोग होते है।

मनोवेग जो आते है उनको धारण करना चाहिए। काम, क्रोध, मद, मत्सर, ईर्ष्या, द्वेष, भय, चिन्ता, आदि सभी वेगो को रोकना चाहिए, धारण करना चाहिए।

इसी प्रकार हृदय रोग का इलाज मनोवेगधारण करने से और शारीरिक वेग धारण न करने से ठीक हो सकते है। अनेक दूसरे रोग भी इससे ठीक होते है।

मन को निर्विषय करके अन्तर्मुख होने से, ध्यान करने से, हृदय रोग ठीक होते है। परमात्मा का नाम स्मरण ध्यान, जप आवश्यक है।

भौतिक क्रियाओ से धोती, नेती, वस्ति नाली, वध आदि से शरीर स्वच्छ निरोगी रख सकते है।

आत्मा को प्रिय वाले जीवन मे करते रहने मे हृदय रोग होते नहीं और हो भी गये तो उससे ठीक होते है।

अत हृदय रोग का सही इलाज आध्यात्मिक है। आज भी इसको अपनाये बिना कुछ नहीं होगा।

वेद के अनुसार तपश्चर्या और धर्माचरण के बिना सुख शान्ति और आनन्द मिलेगा नहीं। इसीलिए वेद कहता है कि दूसरा कोई रास्ता नहीं, एक ही रास्ता है कल्याण का।

इसलिए उस एक ही आध्यात्मिक रास्ते से चलकर ही सुख, शान्ति और आनन्द पाना है और सभी रोगो से मुक्त रहना है।

हृदय रोग नाशक विशिष्ट योग

डा० आर० के० सकारिया
एम०डी०, पीएच०डी (श्रीलका), डी०लिट्०(आयुर्वेद),
डी०मेग०(मुम्बई), एम०ए०एम०एस०, एम०ए०जी०एस० (अमेरिका)
ए—६६, कमला नगर, आगरा

निर्माण विधि—

मोती पिष्टी प्रवाल पिष्टी, कहरवा पिष्टी, अकीक पिष्टी, अभ्रक भस्म शतपुटी तथा चन्द्रोदय सभी समान ओषधियो को लेकर गुलाबजल मे ३ दिन घुटाई करे। तत्पश्चात् उसमे अर्जुन घनसत्व (सम्पूर्ण ओषधियो के वजन का २५ प्रतिशत) मिलाकर पुन अर्क गुलाब मे ७ दिन मर्दन कर १ १ रत्ती की गोलियाँ बना ले।

सेवन विधि—

१ १ गोली सुबह-शाम शर्मायु मधुरिका, खमीरा गावजबा अम्बरी स्पेशल से अथवा इनके अभाव मे १ पाव दूध से सेवन करावे।

सदुपयोग—

इससे नाडी को तुरन्त बल मिलता है अत सन्निपात मे विशेष लाभकारी है। निर्बल हृदय को अत्यन्त शक्ति देता है। अनियमित हृदय स्पदन, हृदय वेदना तथा दम भर आने मे अत्यन्त लाभकारी है।

इसके साथ ही स्मरणशक्ति ह्रास मानसिक व्याकुलता चेहरे पर निस्तेजता आदि रोग नष्ट होते है तथा चेहरे पर काति कुछ ही दिनो के सेवन मे आ जाती है। इस योग की जितनी प्रसशा की जावे कम है। वैद्यगण इसे प्रयोग मे लाकर यश के भागी बने। यह हमारा हजारो रोगियो पर परीक्षित है।

हृदय रोग नाशक

कृगलक-ध्यान

डा० लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी
दवज्ञ धाम फाउण्डेशन, पचनेही (बॉदा)

आजकल दूषित आचार विचार एव खान पान के बढते प्रभाव ने हृदय को आन्तरिक एव वाह्य रूप से इतना क्षतिग्रस्त कर दिया हे कि हृदय रोग महामारी का रूप लेता जा रहा है। दैनिक जीवन म बढती प्रतिस्पधा, भावनाओ का दमन, विचारो की अस्थिरता, स्वार्थ एव सकीणता न हृदय के कपाटो को वन्द कर दिया ह। परिणाम स्वरूप हो रहा है हृदयाघात।

फला व्यक्ति की मृत्यु हृदयगति रुकने से हो गई। यह समाचार अक्सर सुनने को मिलता हे। असल मे हृदय को हम गति करने ही नहीं देते हे क्योकि यदि हृदय गति करेगा तो प्रेम, भाईचारा, सहयोग, उदारता, श्रद्धा आर भक्ति पदा होगी यह सब भोतिक प्रगति मे वाधक हे अत हमे अपनी तथाकथित प्रगति के लिए हृदय के पर कतरने ही पडते ह। हम हृदय को सुनना वन्द कर देते ह, सिर्फ दिमाग स काम लेते हे ओर फिर हृदय रोगो की चपेट मे शेष जीवन पछताते रहते हे।

अव वज्ञानिक भी इस तथ्य को स्वीकार करते ह कि मनुष्य की दुर्भावनाये, स्वाथ, द्वेष, क्रोध आदि रोगवधक होते ह जवकि प्रार्थना, भावनात्मक सम्वन्ध परापकार एव दान रोगनाशक होते हे।

इन्हीं तथ्यो को ध्यान म रखते हुए म ध्यान की एक विधि पर प्रकाश डालना चाहता हूँ जो स्वस्थ व्यक्ति के हृदय की रक्षा करती ह तथा अस्वस्थ हृदय को शीघ्र स्वस्थ करने मे सहायक ह।

प्रात काल सूर्योदय स पूव उठकर नित्यकर्म से निवृत्त होकर किसी पहाडी, टील या छत पर चले जाय। टहलते हुए गहरी सास ले ऐसा १० मिनट तक करे। तत्पश्चात शुद्ध भूमि मे आसन लगाकर वठ जाय गहरी तथा धीमी सास ले तथा नथुनो स होकर फेफडे तक जाने वाली प्राणशक्ति की कल्पना एव अनुभव की दृष्टि स देखे। ऐसा १० मिनट कर ऐसा करने स फफडे प्राणो स भर जायग। मन प्रफुल्लित रहेगा।

अव अन्तिम १० मिनट म कल्पना कर कि इस प्राण क आवागमन से तीसरा नेत्र (भ्रूमध्य) सुलगने लगा ह। वहा एक दिव्य ज्योति प्रकट हो रही ह ज्योति का आकार वढता जा रहा ह आर हृदय का दीपक जो अभी तक बुझा हुआ था दिव्य ज्योति के प्रकाश स जल उठा ह आर तव आपका हृदय अनन्त शक्ति के स्रोत स भर जायेगा। हृदय का सारा अवसाद, विलुप्त एव अधकार दूर हो जायेगा।

लेकिन इस तीसरे चरण मे मन वहुत व्यवधान डालेगा। वार वार यह विचार आयेगा कि क्या कपोल कल्पना कर रहा हू, न कहीं ज्योति हे, न कहीं दिया हे। जाकर अपना धधा देखू लेकिन ऊर्ध्वगमन करना हो तो मन की कभी न सुने हृदय मे श्रद्धा एव विश्वास रखे यही मन रात म सोते समय किसी स्त्री से आलिगन करता ह वह एक सशक्त कल्पना ही हे ओर प्रात जागने पर आप अपना अण्डरवीयर गीला पाते ह कल्पना शक्ति के चमत्कार का स्वप्नदोष से वडा कोइ उदाहरण नहीं हो सकता।

नियमित ध्यान से २ सप्ताह वाद ही परिणाम सामने आने लगग। जसे ज्योति वढेगी वसे प्रसन्नता आर सतोष आपके जीवन मे वढने लगगा। लोग आपसे प्रभावित होने लगगे विना किसी वातचीत क आपके क्रिया कलापो म एक प्रखरता वढने लगेगी आर हृदय की सारी ग्रन्थिया विसर्जित होने लगेगी। इस वीच आपका रोग कव विसर्जित हो गया आप स्वय भी नहीं जान पायेगे। इस ध्यान को २४ घण्टे मे मात्र ३० मिनट करके आप अपने जीवन को नये आयामो म प्रवाहित कर सकते हे। ज्योति का प्रकाश वढते वढते एक दिन के प्रकाश क परम स्रोत से जुड जाता ह जहा व्यक्ति खो जाता ह सिर्फ प्रकाश ही वचता हे।

लेकिन यह सव ध्यान की वाते करने स नहीं होगा ध्यान की वात वहुत हो चुकी अव ध्यान म उतर। धन्यवाद

हस्तरेखा विज्ञान द्वारा हृदय रोग निदान

डा० लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी
पचनेही, बॉदा

हस्तरेखा विज्ञान या सामुद्रिक शास्त्र प्राचीनकाल से ही भारतीय ज्योतिष विज्ञान का अभिन्न अग रहा हे। अधिकतर लोगो की यही धारणा ह कि यह मनुष्य के भूत, वर्तमान एव भविष्य को जॉंनने की विद्या हे। लेकिन निरन्तर अध्ययन एव अनुसधानो से यह सिद्ध हो चुका हे कि हथेली मे अकित चिह्नो से शरीर मे वर्तमान रोगो एव भविष्य मे होन वाली व्याधियो की जानकारी प्राप्त होती हे। इस सम्बन्ध मे जो भी सिद्धान्त प्रस्तुत कर रहा हूँ वे सेकडो हथेलियो मे अनुभूत ह।

इस लेख मे हृदय रोग के निदान पर प्रकाश डाला जा रहा हे आशा हे विद्वान वेद्य अपनी निदान प्रक्रिया मे इसका समावेश कर रोगी को रोग के आक्रमण से पूर्व ही सचेत कर सकेगे। पूर्व सावधानी से काफी हद तक वचाव सभव हे।

यद्यपि हथेली एव रेखाओ के वर्गीकरण का विषय वहुत विस्तृत हे लेकिन अनावश्यक विस्तार से वचते हुए हम हथेली पर पाये जाने वाले उन्हीं सकेतो को महत्व देगे जिनका सम्वन्ध सीधे स्वास्थ्य से ह।

हथेली का रग गहरा लाल होना तथा गुरु एव सूर्य क्षेत्र मे असाधारण उभार होना (चित्र न० १ गु० सू०) इस वात की पूर्व सूचना हे कि व्यक्ति को जीवन के किसी न किसी भाग मे उच्चरक्तदाव का सामना करना पडेगा। साथ ही यदि त्वचा स्निग्ध हो तो स्वस्थ व्यक्ति मे हृदय रोग की सभावना तथा रोगी मे रोग की गम्भीरता का सकेत [illegible] ह।

इसके विपरीत हथेली मे गुरु एव शुक्र का धसा होना [illegible] हथेली का रग पीला या मटमेला, त्वचा रूखी तथा [illegible] चोडी एव जजीरवत हो ऐसे पुरुष या स्त्री को निम्न रक्तदाव, मूर्च्छा गम्भीर रूप धारण कर होती हे। जिसमे हृदय रेखा मे गहरा धव्वा या सुई की नोक चुभाने जेसा विन्दु वना हो। आयु निर्णय के लिए देखे चित्र ४

अगुलिया यदि अपने उद्गम स्थल पर मोटी हो तथा अगुलियो को सीधी करने पर उनके वीच से आर-पार दिखाई न दे तो यह हृदयरोग को वढाने मे सहायक लक्षण हे। चित्र न० १,१ x x x

हथेली भारी एव फूली हुई हो तथा करपृष्ठ मे शिराये फूली हुई हो तो यह हृदय रोग एव कब्ज का लक्षण हे। ऐसी स्थिति को वार-वार मलसचय से कुपित हुई वायु हृदय रोग को जन्म देती हे।

यदि अगुलियो मे नाखून छोटे हो, लाल हो तथा उनकी लम्वाई की अपेक्षा चाडाई अधिक हो, नाखून मास मे धसे हुए नजर आये तो यह इस वात की निश्चित सूचना ह कि हृदय की कार्यप्रणाली दोषपूर्ण हे ओर इस व्यक्ति को जीवन मे गम्भीरता से हृदय रोगो से वचाव करना चाहिए। ऐसे लोगो के स्वभाव मे क्रोध एव उत्तेजना की अधिकता से दोरे भी पडने लगते हे।

हथेली मे हृदय रेखा शरीर मे स्थित अग हृदय,का दर्पण हे। चित्र 3, A-B इस रेखा का गुरु क्षेत्र मे दो या तीन शाखाओ मे विभाजित होना स्वस्थ हृदय का लक्षण ह, वशर्ते ये शाखाये नीचे शीर्ष रेखा की ओर न झुके। तथा हथेली का रग वहुत लाल या पीला न हो वल्कि कुछ गुलावी श्वेत हो। हृदय रेखा के निर्णायक चिह्न हृदय रेखा पर ही पाये जाते ह, ये अलग-अलग चिह्न राग की अलग अलग स्थितियो की जानकारी देते हे, लेकिन ये रोग व्यक्ति को उसी आयु म पीडित करते हे जिस आयु म यह चिन्ह स्थित होता ह। दखे चित्र २

चित्र सं० 1 चित्र सं० 2 चित्र सं० 4 चित्र सं० 3

हस्त रेखा विज्ञान द्वारा हृदय रोग निदान
डा० लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी
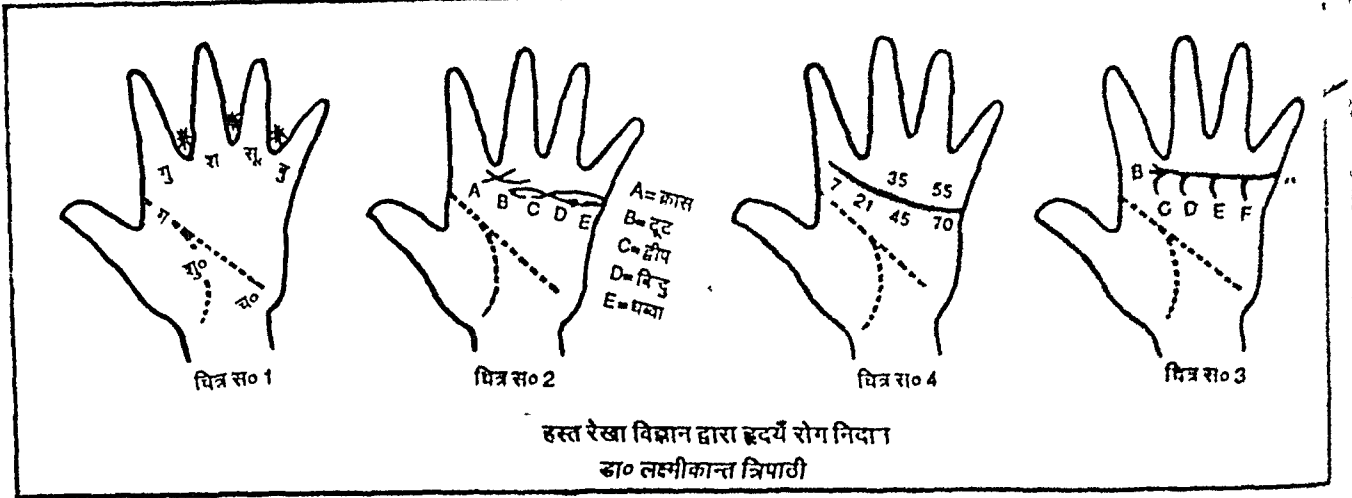
हृदय रेखा मे पाये जाने वाले विभिन्न चिह्नो के अर्थ निम्नलिखित हे—

(१) हृदय रेखा मे क्रास होना— हृदयावरण शोथ

(२) द्वीप होना— निम्न रक्तदाब

(३) लाल विन्दु का होना— हृदय का आपरेशन।

(४) रेखा टूटी होना हृदयाघात

(५) खडी रेखा से कटी होना- हृदयगति सहसा रुक जाना/ गति अवरोध

हस्तरेखा विज्ञान के अध्ययन से हृदय रोग के मूल कारण की तलाश की जा सकती ह, जिनके कारण हृदय अस्वस्थ हुआ।

हृदय रेखा मे उपर्युक्त पाच चिह्नो मे से किसी की उपस्थिति मे यदि हृदय रेखा की एक शाखा या हृदय रेखा स्वय गुरु क्षेत्र के नीचे शीर्ष रेखा की ओर झुकी हो तो किसी प्रेम सम्बन्ध के असफल हो जाने से युवावस्था मे हृदय रुग्ण हा जाता हे। चित्र ३, A-C

यदि हृदय रेखा स्वय या उसकी शाखा शनि क्षेत्र के नीच शीर्ष रेखा को काटती हो किसी वाह्य आक्रमण (चोट) या अभक्ष्य पदाथ (नशा जहर टोटके) के सेवन से हृदय रोग की उत्पत्ति होती ह। व्यक्तिगत दृष्टि से यह चिह्न प्रियजन (पत्नी, प्रेमिका) के विछोह से हृदयरोगोत्पत्ति कारक हे। चित्र 3,A-D

यदि हृदय रेखा या उसकी शाखा सूर्य क्षेत्र के नीचे शीर्ष रेखा को स्पर्श करे तो व्यक्ति के ऊपर लगा गम्भीर कलक या मानहानि हृदय रोग का कारण बनता ह। चित्र ३, A-E

यदि हृदय रेखा या उसकी एक शाखा बुध क्षेत्र क नीच शीर्ष रेखा की ओर झुके तो किसी व्यावसायिक घाटे को लेकर हुई चिन्ता से हृदय रोग का जन्म होता हे। चित्र ३, A-F

हृदय रेखा का ही अलग-अलग टुकडो म विभक्त हो जाना जो किसी सहायक रेखा द्वारा आपस म जुडे न हो यदि दोनो हाथो मे यही स्थिति हो तो हृदयघात स मृत्यु निश्चित सकेत हे। इसके अलावा हृदय रोग सूचक अन्य चिह्नो की उपस्थिति मे यदि जीवन एव शीर्ष रेखाये सम्पूण एव स्वस्थ ह तो व्यक्ति हृदय रोग से पीडित तो होता ह लेकिन उचित देखभाल एव चिकित्सा से उसक स्वस्थ होन की पूरी सभावना होती ह।

इसके साथ ही रोग के सम्बन्ध म अन्तिम निणय लेन से पूर्व हथेली की अन्य प्रकृति एव सकेतो का सयुक्त अध्ययन अति आवश्यक ह। इस प्रकार हस्त रेखा विज्ञान से हृदय रोग ही नहीं अन्य सभी रोगो को निदान सभव ह। आवश्यकता ह इस प्राचीन ज्ञान के आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे पुनर्मूल्याकन की और आधुनिक निदानज्ञो एव हस्त रेखा विशेषज्ञो के बीच परस्पर उदार सवाद की।
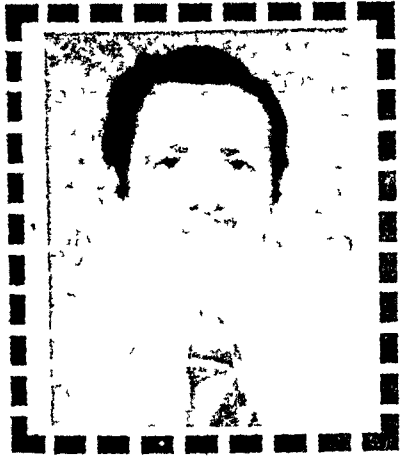
हम कैसे जाने दिल का दर्द

हकीम उमरदीन खा मोयल, उम्दातुल हुकमा (स्वर्ण पदक)
सदस्य बोर्ड आफ इन्डियन मेडिसन, राजस्थान
वरिष्ठ चिकित्साधिकारी- राजकीय यूनानी अस्पताल,
फतेहपुर शेखावाटी, सीकर, राजस्थान

४ मार्च सन् १६४१ को वीकानेर राज्य के मशहूर शहर चूरू मे जन्म हुआ। आपने सन् १६६३ मे हायर सकन्डरी परीक्षा वोर्ड आफ सेकेन्ड्री राजस्थान अजमेर से उत्तीर्ण की तत्पश्चात् इसके पश्चात् जामिया उर्दू अलीगढ से अदीव कामिल (वी० ए०) की परीक्षा उत्तीर्ण एव राजपूताना आयुर्वेद यूनानी तिव्वी कालेज, जयपुर से उम्दा तुल हुकमा प्रथम श्रेणी मे १६७२ मे उत्तीर्ण की। दिसम्वर १६७२ मे ही भरतपुर जिले के घोसिगा ग्राम मे यूनानी चिकित्सालय मे हकीम ग्रेड पद पर नियुक्त किया। १६८० मे फतेहपुर शेखावाटी मे स्व० नेताजी अव्दुल गफ्फार खान मेमोरियल यूनानी होस्पीटल तेयार हुआ उसमे स्थानान्तरण हुआ। १६८८ मे राजकीय यूनानी चिकित्सालय चूरू मे स्थानान्तरण हुआ १६६० मे वरिष्ठ चिकित्सक के सेवा निवृत होने पर रिक्त पद पर स्थानातरित किया गया तवसे अव तक वरिष्ठ चिकित्सक के पद पर कार्यरत ह।

दस वर्ष के वाद वोर्ड आफ इन्डियन मेडिसन का राज्य सरकार द्वारा गठन हुआ उसमे माननीय सदस्य के रूप मे मनोनीत किया गया।

विभागीय चिकित्सक वेलफियर एसोसियेसन मे यूनानी शाखा के कनवीनर ह एव अखिल भारतीय यूनानी तिव्वी काग्रस के सम्भागीय अध्यक्ष के पद पर भी कायरत ह।

सन् १६८५ मे पत्थरी एव ववासीर रोग की विशेषज्ञ चिकित्सा सेवा के लिए उपजिलाधीश फतेहपुर द्वारा सम्मान पत्र एव शाल ओढाकर अभिनन्दन किया गया। सन १६६० मे यात्रा शिविर देवगाव मे जिलाधीश (विकास जयपुर) द्वारा सम्मानित किया गया। सन् १६६४ मे मोहम्डन एजूकेशनल डवलपमेट सोसाइटी चूरू द्वारा सिल्वर मेडिल एव प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। सन् १६६६ मे निदशक आयुर्वेद राजस्थान अजमेर एव नगर परिषद् अजमेर के सयुक्त तत्वावधान मे विशेष चिकित्सा सेवाओ पर प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

इसके अतिरिक्त कई वार आकाशवाणी से कइ रोगो के विषय मे वार्ता प्रसारित होती रही ह एव निरोगी दुनिया पत्रिका मे विभिन्न विषयो पर लख भी छपते रहते ह एव इस पत्रिका के सम्पादक मडल का (यूनानी शाखा) सदस्य भी एव साहित्य से प्रेम होने के कारण उर्दू साहित्य मे शेर कहने का शाक ह जिसमे अव तक १०० से अधिक गजल, नज्म आदि रचनाये है वहुत ही जल्द ''गुदस्तारे अदव' के नाम से प्रसारित होने वाला ह।

चिकित्सा के क्षेत्र मे अनुसधान करते रहते ह अश अश्मरी, गठिया, श्वास यरकान आदि रोगो पर विशेष सफलताये प्राप्त हुई हे। अव मधुमेह एव यकृत एव चर्म रोगो पर अनुसधान निरन्तर जारी ह।

यह रोग स्त्रियो की अपेक्षा पुरुषो को अधिक होता हे। ४५ से ५० वर्ष की आयु के वाद अधिकाशतया होता ह। रजो गम, गुस्सा, आकस्मिक हादसा, फिक्र, भय, अत्यधिक खुशी, शदीद कब्ज, अफारा, शरावखोरी, निफरस (छोटे जोड) का जहरीलामोददा, मधुमेह, आतशक वजेउलमफासिल (वडे जोडो) का दर्द कभी-कभी हृदय के रोग विशेषतया शिरयाने आजम की किवाडियो का रोग वगेहरा इसके मुख्य कारण होते हे। इसके अलावा कभी-कभी कठिन परिश्रम से भी हो जाता है।

यह दर्द आमतोर पर उस समय होता हे, जव मनुष्य अपनी क्षमता से अधिक शक्ति के साथ ऊँचाई पर चढने का प्रयत्न करता है। कभी-कभी भोजन आदि के पश्चात् भी होता हे यह दर्द जव होता हे, तव सीने मे हृदय के स्थान पर यहुत तेज्र होता हे। जैसे किसी ने एक दम दिल को पकडकर जोर से मुट्ठी मे दवाया हो। यह आम तोर पर सीने की हड्डी के वीचो वीच प्रारम्भ होकर गर्दन कमर एव वाये बाजू आर कभी-कभी दोनो वाजुओ के पट्ठे जिसको अजला जालिया के समाप्त होने के स्थान तक होता हे। ओर कभी-कभी यह दर्द अगुलियो तक फेल जाता हे। यह दर्द इस प्रकार तेज होता हे कि रोगी के तुरन्त मर जाने का खतरा होता हे। रोगियो का दम घुटने लगता हे। यह दर्द नाना प्रकार का होता हे कभी-कभी तो ऐसा महसूस होता हे जेसे कोई तेज चाकू चुभो रहा हो। ओर कभी आग मे जलने की तरह ओर कभी जेसे पकडकर मरोड रहा हो ओर यदि चलते फिरते इसका दोरा पडता हे तो रोगी वेचन हो जाता ह ओर किसी वस्तु को पकड लेता हे ओर वेठ जाता हे सास लेने लगता हे, दिल की धडकन तेज हा जाती ह, आखो के सामने चकाचाध हो कर अधेरी सी आ जाती हे ओर वेहोशी की स्थिति होने लगती हे। चेहरा घवराया हुआ व चेहरे का रग फीका पड जाता हे। चेहरे की चमक दमक जाती रहती हे। शरीर ठडा पड जाता हे एव पसीने से पूरा वदन गीला हो जाता हे। नाडी की गति धीमी एव श्वास जल्दी-जल्दी आने लगता हे। परन्तु रोगी को पूर्ण आभास रहता हे। रोगी के होश हवास ठीक रहते ह। ये स्थिति दो या तीन क्षण ही रहती ह कभी-कभी किसी को अधिकाश १ घटा तक भी हो सकती है। इस अवस्था म किसी को वमन भी हो जाता ह, दर्द के शुरू होते ही यदि रोगी चलना फिरना आर जो काम कर रहा ह, उसे फोरन वद कर दे तो ये लक्षण कभी-कभी अपने आप ही समाप्त हो जाता हे। परन्तु जव इस राग के हमले वरावर दोरे की शक्ल मे होने लगते ह आर रोग की गम्भीरता वढ जाती हे तव किसी छोटी सी घटना से भी उस राग की पुनरावृत्ति हा जाती ह आर वह दीर्घ समय तक सरती क साथ रहता हे। इसका हमला विशेषत सुवह सवेरे होता हे। जवकि रोगी सोता ह ओर जव वह उठना चाहता ह परन्तु उठ नहीं सकता ओर इस हमले के साथ ही मृत्यु का ग्रास वन जाता ह। यह दर्द दा प्रकार का हाता ह—

(१) दर्द काजिव (झूठा दर्द)

(२) दर्द सादिक (सच्चा दर्द)

दर्द काजिव—

१— यह दर्द हर अवस्था मे हो सकता ह यहा तक कि पाच सात वर्प के वच्चो मे भी हो सकता ह।

२ आमतोर पर स्त्रियो मे पेदा होता ह विना किसी कारण।

३— आम तोर पर रात्रि मे होता ह।

४— दर्द अधिक तेज नहीं होता। परन्तु रागी का ऐसा लगता हे जेसे दिल फूलकर फट जायेगा।

इस दर्द के कारण आमतार पर इख्तनाकरहिम (हिस्टीरिया) का अधिकाश उपयोग होता ह।

(५) ये दर्द १ घण्टे से २ घण्टे तक रहता ह इस अवस्था मे रोगी जमीन पर लोट पोट होकर चिल्लाता ह।

वजेउलकल्ब सादिक (सच्चा दिल का दर्द)—

१— आमतार पर ४०-५० वर्षो की आयु के लोगो मे होता हे।

२— विशेषत पुरुष को आधिक होता ह रजोगम, चिन्ता एव वदहजमी के वाद इसका दोर होता हे।

३— रात्रि के समय अधिक होता ह।

४— दर्द वहुत तेज होता हे। रोगी को ऐसा मालूम होता हे जेसे दिल को मुट्ठी मे दवा दिया हो।

५— दर्द केवल एक या दो मिनट ही रहता ह। दर्द के आक्रमण के समय रोगी विल्कुल खामोश चुपचाप रहता हे।

इस दर्द का नतीजा अच्छा नहीं होता है हालाकि इतनी जल्द आमतौर पर व्यक्ति की मृत्यु नहीं होती परन्तु पुराना होने पर बार-बार आक्रमण होने पर रोगी बच भी नहीं सकता। मृत्यु निश्चित है।

चिकित्सा—

दर्दे दिल के इलाज के लिए वे दवाये अधिक कारगर सिद्ध हुई है जो अरुक (नलियो) को फैलाने वाली है।

दर्द के आक्रमण के समय रोगी को आराम से बिस्तर पर लिटाये, और यदि शरीर पर तग कपडा या कोई बन्धन कमर वगेरा में हो तो ढीला कर दे। दर्द को आराम व सकून पहुचाने की कोशिश करे। दिल की हरकत को तहरीक दे व हृदय को शक्ति प्रदान करने वाली औषधिया देकर उसमें उत्पन्न बेचेनी को दूर करने का प्रयास करे। अगर मतली हो तो तुरन्त के (वमन) कराकर पेट साफ कर लिया जाय। यदि पेट मे आफरा हो तो पेट फूल रहा हो तो वायु को तोडने वाली कसरे-नरियाह दवाये देकर रोगी के दु.ख मे आराम व सकून पेदा करे। रोगी को इत्र हिना या गुलाब दर्द के स्थान पर मलना चाहिए। हल्दी, सुहागा बराबर मात्रा में लेकर पीसकर ग्वार पाठा की पत्ती को एक तरफ से छीलकर उस पर लेप करें गर्म-गर्म से सीने को सेकना चाहिए।

गेहू का भूसा (आटा छानने के बाद) गुले बाबूना नमक साभर व गुले खतमी इन सबको कूटकर दो पोटलियो मे बाधकर तवे पर रखकर गर्म-गर्म सेक करना चाहिये। अर्क केवडा, अर्क बेदमुश्क, अर्क सदल सफेद, अर्क गुलाब, हरे धनिये का पानी, ताजा घिया का निचोडा हुआ पानी, सिरका ये सब या इनमे से जो भी समय पर उपलब्ध हो रोगी को लख-लखा (सूघना) कराये ओर पीने के लिए ये दे।

जहर मोहरा आधा-आधा रत्ती, खमीरा गावजुबान अम्बरी जवाहर वाला खास मे मिलाकर, अर्क बेदमुश्क, अर्क गावजुबान, अर्क अम्बर, अर्क गुलाब मे शर्बत वरदमुकर्र, या शर्बत अनार मे मिलाकर थोडी-थोडी मात्रा मे मिलाकर बार-बार दे। यदि भोजन के पश्चात् दर्द का आक्रमण हो तो पहले गर्म पानी मे सिकज्जेबीन सादा मिलाकर पिलाये व वमन (उल्टी) कराये। इस के बाद जवारिश कमूनी, अर्क गुलाब, शर्बत वर्द मुकर्र के साथ दे।

यदि कब्ज की वजह से हो तो सबसे पहले कब्ज को दूर करने के लिये शर्बत वर्द मुकर्र, शर्बत दीनार, माजून अजीर वगेरा अर्क गुलाब के साथ दे ओर इसके पश्चात् निम्नलिखित औषधियॉ दे। नोश दारू सादा खिलाकर सोफ, धनिया, कसूस, अन्नीसून का शीरा, अर्क सोफ मे मिलाकर खिलावे दोनो वक्त सुबह शाम हब्बे पपीता दे। दिल की ताकत के लिये दवा उल मिश्क मोऊतदिल जवाहर वाली। मुकर्र वारिद खमीरा मरवारीद खाने को दी जाये और मुश्क अम्बर काफूर, गुलाब, केवडा व जाफरान जेसी मुकव्वी व खुशबू दार दवाये सेवन कराये। यदि रोगी को कब्ज हो तो उसे गुलकन्द ५ ग्राम खिलाना अति उत्तम है। रोगी को रजोगम, चिन्ता मानसिक तनाव व गुस्से आदि से दूर रखें। भोजन के बाद रोगी को चलना-फिरना एव शारीरिक परिश्रम हरगिज न कराया जावे। चाय, कहवा, शराब, तम्बाकू, गुटका व विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थो से बचाना चाहिए। ऊंची जगह पर चढ़ना भी अच्छा नहीं है। सुपाच्य भोजन कराना चाहिए। गरिष्ठ भोजन न दे ऐसा भोजन भी न दे जिससे वायु उत्पन्न करके पेट मे अफरा पैदा कर दे। रोगी को मुर्ग का शोरबा, साबूदाना ओर जो (जो का पानी) दूध, मूग की दाल बकरी के बच्चे का शोरबा दे। सेब, चीकू, अगूर, पपीता, शहद लहसुन अजीर मुनक्का, मुरब्बा आवला, हरड का मुरब्बा आदि मे मासम के अनुसार गाजर, मूली, शलजम, नींम्बू व अदरक आदि का सेवन भी लाभदायक है।

यथा सभव रोगी को शोर, हल्ला-गुल्ला, चीख व चिघाड के स्थानो से दूर रखा जाये। बहुत शान्त वातावरण मे रखे। भोजन के समय भूख से भी कम भोजन ले, अधिक भोजन न करे, चाहे कितना भी स्वादिष्ट व मन चाहने वाला क्यो न हो। रात्रि का भोजन सोने के ३-४ घण्टे पहले कराये। प्रात बहुत जल्दी उठे व खुले वातावरण मे चहल कदमी कराये। मधुर सगीत का आनन्द लें।

खफकान
(धड़कन)
(PALPITATION)

डा० जे० सी० पाण्डेय
बी यू एम एस (राजस्थान), डी ए टी एल एम एम

''दिल की इख्तलाजी हरकत का नाम खफकान हे।''

ये इख्तलाजी हरकत कल्ब की इनकबाजी व इनबिसाती हरकत से अलग होती हे। इसमे दिल इतने जोर से धडकता हे कि मरीज को इसका एहसास होता हे। वेसे तबई तोर पर दिल हर वक्त हरकत करता रहता ह, जिससे जिस्म को साफ खून मिलता हे ओर जिस्म का गन्दा खून यानि कार्बन डाई आक्साईड मिला हुआ दिल से होता हुआ वापस फेफडो मे चला जाता हे, जहा से कार्बन डाई आक्साइड अलग होकर नसीम आक्सीजन मिल जाती ह ओर खून वापस दिल मे आ जाता हे। ये हरकत पूरी जिन्दगी चलती रहती हे। सोते, उठते, बेठते, चलते, दोडते यानि हर वक्त पदा होने से मरने तक बिना थके दिल चलता रहता हे, मगर इसका अहसास नहीं होता।

असबाब (कारण) Cause-

१— इमतलाये दमवी— इसमे इखलात (सफरा, सोदा, बलगम, खून) की मिक्दार ज्यादा हो जाती हे।

२— सोदावी— सादा कल्ब मे पहुचकर धडकन पेदा करता ह।

३— फकरुददम (खून की कमी)— शरीर से खून का निकलना, या खाने पीने की तगी की वजह से हो सकता ह।

४— मदी— कभी मेद की शिरकत से भी इखतलाजे कल्ब हा जाता ह। मेद मे कोई फासिद खिल्त होती हे तो इससे भी धडकन हो सकती ह।

५— जुकावत-ए हिस— कभी कल्ब की कूवते एहसास तज हो जाती हे जिसकी वजह से इसमे नजाकत व लताफत आ जाती ह।

६— सूऐ मिजाज कल्ब— कभी खफकान कल्ब के सूए मिजाज की वजह से भी होता ह यानि हरारत गर्मी सर्दी खुश्की, तरी की वजह से।

७— दूसरे अमराज की वजह से— कभी इखतनाके रहम (Hysteria) कसरते हज किल्लते हज एहतबासे हेज, नुकरस (Gout), तजऊल मफासिल (Arthritis) सरआ (Epilepsy) मालेखोलिया जातुर्रिया (Nevemonia) सिल (T B) बवासीर की वजह से भी होता ह।

अलामात (लक्षण) SYMPTOMS-

१— इमतेलाये दमवी— कसरत खून की अलामात पाइ जाती हे जेसे रोगो का फूलना ओर उभरना, बोझ, पेशाब रगीन व गाढा आता हे।

२— सोदावी— फसादे फ्रिक आरिज होता ह। खाफ, दहशत ओर मालेखोलिया की सी हालत पेदा हो जाती ह।

३— फकरुदम— खून की कमी की अलामत।

४— मेदी— नफखे शिकम (अफारा) होता ह। खट्टी डकारे आती हे। मुह मे पानी आता हे। सीने मे जलन रहती हे।

५— जुकावते हिस— मामूली गर्मी या सर्दी, गरम व गुस्सा की वजह से धडकन हो जाती हे। नब्ज बडी ओर कवी चलती ह। तदुरुस्ती कायम रहती ह।

६— सूये मिजाज कल्ब— इसकी चार किस्मे ह।

(१) हरारत कल्ब— प्यास लगती ह, सीना [illegible] गर्म मालूम होता ह। [illegible] बढ जाती ह। नब्ज शरीर [illegible]

बलती है। टण्डी हवा से आराम मिलता है। कमजोरी महसूस होती ह। सूजन आर बेचनी पाई जाती है।

(२) यरुदत्त कल्व— नब्ज छोटी ओर सुस्त होती है। दो तरफ के बीच वक्फा ज्यादा होता है। गर्मी अच्छी लगती है। तबीयत मे खोफ ओर घबराहट पेदा हो जाती है।

(३) यबूसत कल्व— नब्ज मे सख्ती होती है ओर इसकी चाल मे तवातिर होता है। बदन कमजोर हो जाता है।

(४) खुवत कल्व— नब्ज मे नरमी, सुस्ती व इस्तलाव होता है। गम व गुस्सा जल्द आता है ओर जल्द चला जाता है।

७— दूसरे अमराजो की वजह से— ऊपर लिखे अमराज की अलामते पाई जाती ह।

इलाज—

अलामत के मुताबिक इलाज किया जाता है।

१— कुश्ता जहरमोहरा— दिल को ताकत देता है। उसकी धडकन ओर घबराहट को दूर करता है।

मिक्दार खुराक— १२५ मिलीग्राम।

२—कुश्ता अकीक— दिल को ताकत बख्शता है तथा घबराहट आर धडकन को फायदा देता है।

मिक्दार खुराक— सुबह ६० मि ग्रा कुश्ते को खमीरा मख्वारीद ५ ग्राम मे रख कर खाये।

३—कुश्ता नुकरा— दिल दिमाग आर जिगर को ताकत देता है। दिल की धडकन ओर घबराहट दूर करता ह।

मिक्दार खुराक— ६० मि ग्रा कुश्ता लेकर ५ ग्राम खमीरा गावजंवा अम्वरी जवाहर वाला मे मिलाकर देवे।

४— कुश्ता याकूत—दिल ओर दिमाग को ताकत देता है।

मिक्दार खुराक—६० मि ग्रा कुश्ते को ५ग्रा खमीरा मरवारीद के साथ दव।

५—कुश्ता यशव—दिल को ताकत देता ह। धडकन आर घबराहट म फायदा देता ह।

मिक्दार खुराक—६० मि ग्रा कुश्ते का खमीरा मरवारीद ५ ग्रा मे रखकर देवे।

६— खमीरा आवरेशम हकीम अरशद वाला— इस खमीरे के सेवन से दिल की कमजोरी दूर होती है। दिल की धडकन ओर घबराहट को दूर करता है। दिमाग ओर जिगर को ताकत देता है। मर्ज के बीच जो कमजोरी आ जाती है, उसमे टानिक का काम करती है।

मिक्दार खुराक— ५ग्राम खमीरा खाकर २५० मि ग्रा दूध पीये।

७— खमीरा आबरेशम सादा— घबराहट दूर करता ह, रोशनी बढाता है।

मिक्दार खुराक— १० ग्राम सुबह भूखे पेट।

८— खमीरा आवरेशम शीरा उन्नाव वाला— दिल की कमजोरी धडकन ओर घबराहट दूर करता ह। कूव्वते हाफिजा मे फायदा देता है। आखो की रोशनी बढाता है। सिल ओर दिक की सूखी खांसी मे फायदा देता ह।

मिक्दार खुराक— ५ ग्राम सुबह भूखे पेट।

९— खमीरा सन्दल— दिल की घबराहट आर धडकन दूर करता है।

मिक्दार खुराक— १० ग्राम सुबह भूखे पेट।

१०— खमीरा मखारीद— दिल की धडकन आर घबराहट को दूर करता है। मोतीझरा खसरा ओर चेचक जेसे रोगो मे दिल की हिफाजत करता है।

मिक्दार खुराक— ५ ग्राम सुबह-शाम खाये।

११— जवारिश आमला अम्बरी बनुस्खा कलॉ— दिल की कमजोरी दिल की धडकन, घबराहट मे फायदा देती है।

मिक्दार खुराक— ५ से १० ग्राम सुबह निराहार खाये।

१२— जवारिश शाही— दिल ओर दिमाग को ताकत देती है।

मिक्दार खुराक— ५ से १० ग्राम सुबह भूख पट लेवे।

१३— दवाऊल मिशक मातदिल सादा— सामान्य शरीर वालो का ताकत देती ह।

मिक्दार खुराक— ५ ग्राम सुबह-शाम खाकर दूध पीवे।

१४— दवाऊल मिश्क बारिद सादा— गर्म मिजाज वाला को शक्ति देता ह। धडकन और घबराहट दूर करता ह।

मिक्दार खुराक— ५ ग्राम सुबह-शाम अर्क गावजवा १२५ मि लि पीवे।

यूनानी वनौषधियां—हृदय रोग

हकीम मौहम्मद हासन खॉ
चिकित्साधिकारी— राजकीय यूनानी 'अ' श्रेणी चिकित्सालय, फतेहपुर, शेखावाटी, राजस्थान

मालिके कायनात ने (इनसान) मनुष्य को पदा किया तो स्वर्ग से दुनिया मे भेजने से पहले इसके जीवन रक्षक, हवा, पानी, अग्नि, पृथ्वी, पशु-पक्षियो के साथ-साथ पेड पोधो को लगभग पचास हजार साल पहल इस ससार मे पदा कर दिया था। उसके बाद मनुष्य को इस ससार मे भजा था। पेड-पोधो से मनुष्य को भोजन आषधिया, वस्त्र आदि साधन प्राप्त हाते ह। पेड-पाधे मनुष्य के लिए अत्यन्त आवश्यक हे। मनुष्य के स्वास्थ्य लाभ के लिए आदि काल से ही वनोषधिया उपयोग मे लाई जाती रही ह और आज इस युग मे भी वनाषधियो का अद्वितीय महत्त्व हे। पेटेन्ट वन आषधियो पर हरवल आषधि लिखने मे गर्व महसूस करते है।

हृदय मनुष्य शरीर का महत्वपूर्ण अग ह। जिसके ऊपर मनुष्य के जीवन का मुख्य आधार हे। जब तक हृदय सुचारु रूप से कार्य करता हे। मनुष्य जीवित ह। हृदय द्वारा अपना कार्य न करने का नाम मृत्यु ह।

चंदन संदल SANDAL WOOD

सन्दल का विशाल काय वृक्ष होता ह। आसतन ३५ ४० फीट ऊँचा होता ह। चदन की लकडी बाजार मे दो तरह की मिलती ह— सफेद व लाल रग मे। सफेद चदन के पेड दक्षिण भारत मे मसूर, बगाल मद्रास मे पाये जाते ह। २० वर्ष होने पर तने के अन्दरूनी भाग से खुशबू होता हे। जिससे खुशबू ज्यादा आती हे ओर भी अधिक उत्तम होता ह। उत्तम श्रेणी के चदन से ३०-३५ वर्ष तक खुशबू आती रहती ह।

प्रकृति— ठण्डी व शुष्क होती हे। चदन को विभिन्न प्रकार से प्रयोग मे लाते हैं।

रोगन सदल— चदन का तल हल्के पीले रग का कुछ गाढा होता हे। स्वाद मे तेज चरपरा व सुगन्धित होता हे। इसक तल म Santalol नामक तत्त्व पाया जाता ह।

(१) चदन की सुगन्ध हृदय को ताजगी तथा शक्ति प्रदान करने वाली होती ह।

(२) चन्दन का तल तथा इसकी लकडी का बुरादा दिमाग तथा आमाशय को भी शक्ति प्रदान करता ह तथा वायु विकार का नष्ट करके हृदय को लाभ पहुंचाता ह।

(३) चन्दन का तल तथा बुरादा रक्तशोधक होता ह। अत सुजाक, पेशाब की जलन दूर करन क लिए १५ २० बूंद बताशे मे डालकर या केपसूल म डालकर लेन से बहुत लाभ होता ह।

सुजाक मे १५-२० बूद दिन मे ३ ४ बार देन स पेशाब मे पीप, मवाद का आना बन्द हो जाता ह व इसक लम्बे समय तक सेवन से मूत्रदाह भी नष्ट हो जाता ह।

(४) चन्दन क बुरादे को खिसान्दो क उपयोग मुफर्रह तथा मुकव्वी कल्ब ह।

(५) शरीर की अत्यधिक उष्णता को नष्ट करक अनियमित हृदय स्पन्दन तथा व्याकुलता को दूर करन क लिए चन्दन का विभिन्न प्रकार स प्रयोग करत ह।

(६) चन्दन के बुरादे क सवन स आमाशय क कृमि मर जात ह आमाशय कृमि का विसर्जित मल हृदय व मस्तिष्क क लिए हानिकारक होता ह।

(७) चन्दन का तल पहनने के वस्त्रो म प्रयोग करने से हृदय की ताजगी व कपडो मे कृमि नहीं लगते ह।

(८) चन्दन के खिलाने, माला इत्र आदि उपयोगी वस्तुये बनाते हे जो अप्रत्यक्ष रूप स बलवान बनाती हे।

तबासीर (वंशलोचन) BAMBOO MANNA

वशलोचन सफेद नीलरग होता ह। यह बास की गाठो व शलाखो पर कुदरती तोर पर रिसकर तराबीस पाकर

जाता है। बास के वृक्ष हिमालय के दामन मे व करसरत जाते है। बाजार मे कृत्रिम वशलोचन ज्यादा मिलता असली व नकली वशलोचन म भद करना कठिन है।
(१) तबासीर वशलोचन मुकव्वी कल्ब होता है।
(२) तबासीर वशलोचन खफकान बेचैनी तथा इस हारा दूर करने के काम आता है।

पहचान व परीक्षण— असली व नकली दखने मे एक सा ही होता है। पानी डालने पर असली घुलता नहीं व कृत्रिम घुल जाता है। कृत्रिम वशलोचन को आग पर रखने उसकी चमक व शक्ल बिगड जाती है जबकि असली वशलोचन वेसा का वेसा ही बना रहता है। रूक्षता पैदा करने की वजह से आमाशय की शकील करता है। तथा मुह से बार बार आने वाली (रतूबात) लार को खुश्क करके ज्यादा प्यास को रोकता है।

मुजफिफ होने की वजह से जख्मो को खुष्क करने के लिए इस्तेमाल करते है।

वशलोचन की नारियल के तैल के साथ जले हुए पर लगाने से जख्म जल्दी भरता है तथा जख्म का निशान भी नहीं रहता है।

जाली होने की वजह से वशलोचन को मञ्जनो मे डालते है इससे दांतो मे चमक आती है तथा मसूडे मजबूत होते हैं।

वशलोचन हृदय को शक्ति प्रदान कर व्याकुलता पित्त से होने वाली उल्टी को दूर करता है तथा बेहौशी को दूर करने में लाभप्रद है।

विशेषता— हृदय तथा यकृत को शक्ति देता है।

मात्रा— एक से तीन ग्राम तक।

गावजुबान (BORAGE)

गावजुबान के पौधे के पत्ते खुरदुरे होते है। पत्ते बडे-बडे गाय की जबान के समान होते है हरे कुछ सफेदी माइल होते है इन पर सफेद रग के दाने होते है इसके फूल लाजवर्दी रग के बहुत सुन्दर होते है फूलो की सुन्दरता के कारण हृदय की सात्वना के लिए घरो म लगाते है।

गावजुबान की प्रकृति— मोतदिल सामान्य है।

उपयोग— दिल तथा दिमाग की कमजोरी दूर करने के लिए उपयोग कराते है। दिल व दिमाग के सभी प्रकार के रोगों में गावजुबान के पत्ते तना तथा फूलो के क्वाथ बनाकर पिलाने हृदय तथा मस्तिष्क को लाभ पहुचता है। गावजुबान की पत्तिया तथा फूल के उपयोग से नजला जुकाम खासी तथा र्‌यूमटिक फीवर म लाभ मिलता है।

गावजुबान के उपयोग से रक्तचाप को सामान्य लाने म तथा घबराहट व्याकुलता को दूर करने का विशेष गुण होता है।

मात्रा— गावजुबान का मशहूर योग जो बाजार मे उपलब्ध है खमीरा गावजुबान अम्बरी जवाहर वाला व खमीरा गावजुबान अम्बरी खास।

गुलाब—गुल सुर्ख (ROSE)

गुलाब मशहूर व आम पोधा है जिसे खूबसूरती के लिए घरो म लगाते है। इसके लिए फूल की पखुडिया तथा फूल का जीरा ओषधियो मे उपयोग मे लाते है।

मिजाज— ठण्डा दर्जा अव्वल, खुश्क दर्जा दोयम।

उपयोग— (१) गुलाब के ताजा फूलो की महक दिल को फरहत व शक्ति प्रदान करती है।

(२) रोगन गुल, गुलाब का तेल तथा इसके फूल की पत्तिया दिल व मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करते है।

(३) तेज बुखार तथा सरशाम रोगन गुल तथा सिरके को बर्फ से ठण्डा करके सर पर पट्टी रखने से बुखार कम होता है। सरसाम मे भी लाभ होता है तथा हृदय की अनियमितता स्पदन एवं घबराहट मे लाभ होता है।

(४) रोगन गुल की सर मे मालिश करने से मस्तिष्क तथा हृदय को शक्ति प्रदान करता है।

(५) रोगन गुल से कान व दात दर्द मे लाभ होता है।

(६) इत्र गुलाब जो इससे तयार किया जाता है सभी इत्रो का सम्राट कहा जाता है।

(७) इससे तेयार गुलकन्द कब्जी हटाने व हृदय को शक्ति प्रदान करने की अद्‌भुत ओषधि है।

(८) यह शरीर के विभिन्न प्रकार के (ओराम) को दूर करने के लिए शर्बत गुलाब का प्रयोग कराते है।

(९) मुह के छालो मे रोगन गुल लगाने से तुरन्त आराम आता है।

(१०) रोगन गुल १० १२ ग्राम पीने से कब्ज दूर हो जाता है।

(११) खफकान, घबराहट दूर करने के लिए अर्क गुलाब २ तोला पिलाते है।

(१२) गुलाब की पत्तिया तथा जीरा कामशक्तिवर्द्धक एव हृदय को शक्ति प्रदान करने वाले खमीरा मे प्रयोग मे लाते है।

मात्रा— ५ से ७ ग्राम।

गुलाब का मशहूर मुरकव रोगन— रोगन गुल, इत्र गुलाव, गुलकन्द आदि वाजार मे उपलब्ध है।

गुडहल (HIBICUS FLOWER)

गुडहल का पोधा ओसतन २ मीटर लम्बा होता है। इसके पत्ते अण्डाकार ३ से० मी० लम्बे व २ से० मी० चोडे होते है। पत्ते के डिजाइन कगूरेदार व फूल गहरे लाल रग के सुन्दर होते है।

गुडहल के पोधे बारो तथा दारो के आगन मे अकसर लगाते है। जवकि इसके फूलो मे किसी प्रकार की महक नही होती हे परन्तु इसके फूलो को देखने मात्र से ही हृदय को शान्ति प्रदान होती हे।

प्रकृति— गुडहल के फूलो की प्रकृति मोतदिल सामान्य होती हे।

उपयोग १— ५-७ फूलो का रस निकालकर शक्कर मे मिलाकर प्रयोग करने से हृदय को शक्ति मिलती हे।

२— सुखे साफ गुडहल के फूलो को ५ ग्राम लेकर मात्रा मे शक्कर मिलाकर उपयोग किया जाये तो इससे दिल को शक्ति मिलने के साथ-साथ जरयान, एहतलाम तथा सुजाक मे भी लाभ होता हे।

३— गुडहल के फूलो का सफूफ (चूर्ण) ४० दिन उपयोग करने से शरीर मे रक्त की कमी को दूर करता हे जिससे शरीर मे चुस्ती, ताकत आती हे। दिल व दिमाग के लिए विशेष गुणकारी है।

(४) इसका खसान्दा भी इस्तेमाल करते हे ये थोडा सर्दी माइल प्रकृति का होता हे। अत सर्दी मे कालीमिर्च के साथ सेवन कराना चाहिए।

मुरव्वा— शर्वत गुडहल आदि वाजार मे उपलब्ध हे।

अंगूर

अगूर एक विश्व प्रसिद्ध तथा आम लजीज मेवा हे। ससार के अक्सर देशो मे इसकी खेती होती हे। भारत मे भी खेती की जाती हे।

वडा अगूर सूखने पर (मवीज) मुनक्का कहलाता है। छोटा अगूर सूखने पर किशमिश कहा जाता है।

प्रकृति— गरमतर हे।

उपयोग— (१) अगूर मे सभी प्रकार के विटामिन, केल्शियम आदि पर्याप्त मात्रा मे होते ह इसलिए शरीर का पोषण कर मोटा करता है। तथा शुद्ध करने की अच्छी ओषधि हे।

(२) किशमिश कामशक्ति को वढाता हे तथा हृदय को शक्ति प्रदान करके भ्रम, खफकन आदि मे विशेष गुणकारी हे।

(३) घवराहट व कमजोरी दूर करने के लिए अर्कवेद मुश्क तथा अर्क केवडा के साथ किशमिश उपयोग करने से गुणकारी लाभ होता हे। अगूर के मुरक्कव माजूम फलासफा तथा शर्वत अगूर आता हे।

तुलसी

तुलसी का पोधा ३-४ फीट ऊँचा होता ह। य भारतवर्ष मे सभी स्थानो पर पाया जाता ह। ये काली व सफेद रग की होती हे। उसमे काली अधिक लाभकारी हे।

तुलसी का ससार भर मे ७० प्रजातिया ह। तुलसी का सभी प्रजातिया मुफर्रह तथा मुकव्वी होती ह।

उपयोग— (१) तुलसी के पत्ते नजला, जुकाम, खासी तथा वुखार मे विशेष गुण करती ह।

(२) तुलसी के वीज व पत्ते कालीमिर्च के क्वाथ के साथ उपयोग करने से रक्त मे वढे हुए कोलिस्ट्राल को सामान्य स्थिति मे लाती हे।

(३) स्ट्रोप्टो व स्टेफिलो कोकाई जीवाणुओ को नष्ट करने मे तुलसी विशेष गुणकारी हे। इन्हीं जीवाणुओ से रियूमेटिक फीवर होता हे जो कि रियूमेटिक हार्ट रोग तक पहुचता हे। अत तुलसी का क्वाथ हृदय रोग मे अच्छा हे।

मात्रा— ५-७ ग्राम

तुलसी का मशहूर मुरव्वा दवाउल मिश्क मोतदिल जवाहर वाली आदि वाजार मे उपलव्ध हे।

बेदमुश्क

वेदमुश्क का पोधा ५ से १० मीटर ऊँचा होता हे। इसके पत्ते लम्बे नुकीले होते है। इसके फूल पीले रग के मखमल जेसे रुँयेदार सुगन्धित होते हे वेदमुश्क दो प्रकार का होता हे। एक सादा होता हे जो वेदमुश्क से कम प्रभावशाली होता है। वेदमुश्क के फूल तथा पत्तिया ही ओपधि के प्रयोग मे लाई जाती है।

प्रकृति— वेदमुश्क मुफर्रह तथा मुकव्वी कल्ब है।

(१) वेदमुश्क के ताजा पत्तो का रस पिलाने से हृदय शूल मे लाभ होता है। (२) वेदमुश्क की पत्तियो तथा फूलो का अर्क हृदय की दुर्वलता, मानसिक तनाव को दूर करने के लिए अकेला व अन्य आषधियो के साथ गुणकारी है। (३) वेदमुश्क की छाल मे मोम, चर्वी, टोनिक एसिड के साथ सलिसीन नाम का गुलूकोसाइड होता है जो जोडो के दर्द मे गुणकारी है। (४) वेदमुश्क के जोशादे का उपयोग सेलिसिलिक एसिड से वनी ओषधि की अपेक्षा अहुत सुरक्षित तथा उपयोगी है।

वेदमुश्क के प्रसिद्ध योग— दवाउल मिश्क मातदिल, अर्क खमीरा आवरेश्म आदि वाजार मे मिलते हे।

हृदयरोगों में उपयोगी प्राणिज, खनिज, द्रव्य

अम्बर

यह एक जानवर (अस्फर मवील) के शिकम (पेट) से निकलता है। यह सफेद जर्दी माईल वहुत खुशवूदार होता है। अम्वर असहव सवसे अच्छी किस्म का होता है।

१— यह मुफर्रह मकव्वी कल्व मुकव्वी आसाव होने की वजह से मुकव्वी कल्व दवाओ मे इस्तेमाल करते है।

२— मोहर्रिकवाह व मुकव्वी आसाव होने वजह से जोफवाह की आषधियो मे काम लेते है।

३—मोहर्रिक हरारत गरीजी होने की वजह से हरारत गरीजी को तहरीक देकर कमजोरी को दूर करता है।

४— अम्वर को गरम करने पर मोम की तरह पिघल जाये तो असली है वरना नहीं।

५— विशेषत हृदय की शान्ति के लिए उपयोग मे लाया जाता है।

खुराक— १ रत्ती से लेकर ३ रत्ती तक विभिन्न खमीरो मे भी इसका प्रयोग होता है। खमीरा गावजवा अम्वरी आदि।

कस्तूरी (मुश्क)

यह एक जानवर के गिलाफ (नाभी) की सूखी हुई रतूवत है। जिसके दाने स्याह सुर्खमाइल (कत्थे के रग) का जिनमे खुशवू बहुत तेज होती है। स्वाद कडवा होता है। यह जानवर हिरन की एक किस्म का होता है जो तिब्बत, नेपाल, रूस, चीन, भारत मे पाया जाता है। तिब्बत मे पाये जाने वाली मुश्क अच्छी होती है।

मिजाज— गरम, खुश्क, दरजा सोम होता है।

उपयोग— इसका मुख्य उपयोग दिल व दिमाग के सभी रोगो मे किया जाता है। कोलिस्ट्राल को घोलने वाली होने की वजह से उच्च रक्तदाव वाले रोगियो को उपयोग कराते हे। फालिज, मिर्गी, हिस्टीरिया तथा स्नायु विकार मे विशेष गुणकारी है। वाजार मे कस्तूरी मिश्रित योग अधिकता मे उपलब्ध होते है।

मरजान—बसुद (CORAL) प्रवाल

मरजान एक प्रकार के समुद्री कीडे का घर है यह वाजार मे दो प्रकार का मिलता ही एक तो वारीक (शाखाओ की) भुजाओ आकृति का उसे शाखे मरजान कहते है दूसरा कटोर खण्डो मे विभाजित मिलता है उसे मरजान की जड कहते है।

मरजान की प्रकृति ठण्डी तथा शुष्क होती है।

उपयोग— मरजान को अर्क गुलाव या अर्क वेदमुश्क मे अच्छी तरह पीसकर पिष्टी तैयार कर लेते है। इसकी मात्रा ५०० मिग्रा० से एक ग्राम तक खिलाते है तथा (कुश्ता) भस्म वनाकर भी प्रयोग मे लाते है। इसकी मात्रा १५ मिग्रा० से ३० मिग्रा० होती है।

''मुफर्रह'' मुकव्वी कल्व होने के कारण हृदय को फ्रैशनेस तथा शक्ति प्रदान करने मे उत्तम गुणकारी सिद्ध हुआ है। हृदय का भ्रम, घवराहट तथा व्याकुलता, मानसिक तनाव दूर करता है। मरजान मे विशेष प्रकार का केल्यिशयम तत्व विद्यमान होता है। जो हृदय की मासपेशियो के लिए पोषक का कार्य करता है।

पित्त विकार से उत्पन्न होने वाले विभिन्न प्रकार के रोगो मे मरजान की पिष्टी तथा भस्म दोनो ही शहद या किसी अर्क आदि के साथ उपयोग करने से तुरन्त लाभ मिलता है।

मरवारीद मोती (PEARL)

यह सफेद रग के गोल चमकदार छोटे-छोटे दाने से

होते ह ये एक समुद्री कीडे के घर (सीप) से निकाले जाते ह। मोती का मिजाज (प्रकृति)— सामान्य मोतदिल होती ह। सम्पूण शरीर क विभिन्न अगो को शक्ति प्रदान करने के लिए उपयोग कराते ह।

जुनून, खफकान, हृदय की दुर्वलता आदि हृदय रोगो म विशेष गुणकारी हे। मोती हृदय तथा मस्तिष्क की मासपेशियो को शक्ति प्रदान करने के साथ-साथ चेचक, मोतीझरा, खसरा के दाने वडी सरलता से निकल न मे मोती का अद्वितीय स्थान हे। इसका प्रसिद्ध योग खमीरा मरवारीद हे।

उत्तम श्रेणी का कल्शियम होने के कारण अम्लपित्त विकार से उत्पन्न हुए समस्त रोगो मे अत्यन्त लाभकारी परिणाम प्राप्त होते ह। मोती पिष्टी एव भस्म हृदय का शक्ति प्रदान करन मे विशेष ह।

मात्रा - भस्म दो चावल के वरावर। पिष्टी आधा रत्ती स १ रत्ती हे।

सोना तिला (GOLD)

सोना पीले खुशनुमा चमकदार कदर सुर्खी माईल रग की कीमती धातु ह। सोना साधारण पानी तथा हवा स प्रभावित नहीं होता इसलिए इसकी चमक वनी रहती ह। सोना खालिस (अकेला) वहुत कम मिलता है। अक्सर चादी लोहा वगरह क साथ मिला हुआ पाया जाता ह।

सोना तेजाव नमक २ हिस्से, तेजाव शोरा १ हिस्से म घुल जाता ह। सोने का उपयोग भारतवष तथा खलीज क हकीम वद्य वहुत पुराने समय से करते आ रहे ह आर आज एलोपथिक म भी उपयोग म लाया जा रहा ह।

मिजाज— मोतदिल, सामान्य।

सोना— मुकव्वी कल्व, मुफरह मुकव्वी दिमाग, मुकव्वी जिगर तथा मुकव्वी वाह मुगाल्लिज मनी हे।

नफा खास— मुकव्वी कल्व व दिमाग हे।

उपयोग - (१) सोने के वर्क, कुश्ता तथा सोने का पानी वनाकर उपयोग मे लाते ह। (२) सोने के विभिन्न प्रकार क गहने ओरते पहनती हे जो मुफर्रह तथा मुकव्वी कल्व का काम करता ह। (३) माउज्जहव सोने का पानी, वर्क तथा कुश्ता जाडा के दद तथा हृदयशूल मे भी लाभ पहुचाता ह।

कोया आवरेशम

यह रेशम के कीड का घर ह। यह कीडा शहतूत क पत्ते खाता ह। अपन लेस (लिआव) से अपन ऊपर एक घर वना लेता ह इसी को कोया आवरशम कहते ह। इसक ऊपर से रेशम उतार लेने क वाद जो खाल वचता ह उसी का आषधियो म उपयोग होता ह। यह हल्के पील रग का रोयेदार होता ह।

मिजाज (प्रकृति)— गरम शुष्क

उपयोग— (१) अनियमित हृदय स्पदन का दूर करने के लिए अत्यन्त उपयोगी हे (२) उच्च रक्तदाव जो हृदय की दुवलता अथवा धमनियो की कठोरता स उत्पन्न हुआ हो को सामान्य स्थिति मे लाने क लिए विशष सिद्ध हुआ है।

मात्रा— ३ से ५ ग्राम चूर्ण क साथ शहद आदि स उपयोग करे।

कोया आवरशम के खमीरे शर्वत आदि योग वाजार मे उपलब्ध होते ह जो हृदय टानिक क रूप म प्रयोग कराते हे। जिसका मशहूर मुरकव खमीरा कोया आवरशम ह।

जहरमोहरा खताई

ये खानो से निकाला जाने वाला एक पत्थर जो कई प्रकार का होता ह। को हिस्तानखता की खान स निकाला जाता ह। सवसे अच्छा होता ह। इसीलिए इसको जहरमोहरा खताई कहते ह।

जहरमोहरा की प्रकृति— उष्ण गर्म तथा शुष्क होती है।

विशेषता— हृदय को शक्ति प्रदान करने वाला एव हृदय क सशय (भ्रम) को दूर कर ओजपूर्ण वनाने मे सहायक होता ह तथा विभिन्न प्रकार क विषो का निष्क्रिय करने मे अत्यन्त गुणकारी हे। प्रत्यक प्रकार के डिप्रशन तथा दिमागी तनाव जो हृदय को प्रभावित करता ह उसका दूर करने मे वहुत लाभकारी आषधि ह। इसको अकेला १ ग्राम की मात्रा मे शहद आदि क साथ उपयोग मे लाते ह। जहरमोहरा खताई की गोलिया खमीरो तथा माजूना आदि ओषधियो मे भी हृदय शक्ति के लिए सम्मिलित करत ह।

हृदयशूल ANGINA PECTORIS

डा० दिनेश कुमार नागर
चिकित्साधिकारी— राजस्थान होम्योपैथिक चिकित्सालय विधान सभा, जयपुर

हृदयशूल को हम साधारण बोलचाल मे दिल का दर्द कहते हैं। यह रोग दौरे के रूप में प्रकट होता है जिसमे हृद् प्रदेश असह्य पीडा से घिर जाता है और पीडा ऊर्ध्वांगो तक फैल जाती है।यद्यपि यह अकस्मात् किसी समय भी प्रकट हो सकता है किन्तु रात के समय और अत्यधिक शारीरिक या मानसिक श्रम करने के बाद बहुतायत से होता है। हृद् प्रदेश में बेचन कर देने वाली पीडा होती है और ऐसा महसूस होता है मानो हृदय को किसी लोहे की पट्टी से कठोरता के साथ बांध दिया गया है कन्धे सुन्न पड जाते है और उनमे सुरसुराहट होती है, हृदय मे इतनी सिकुडन महसूस होती है कि श्वास लेना भी कठिन होता है। दौरा पडने पर रोगी मूर्छित हो सकता है या सन्यास के कारण उसकी मृत्यु हो सकती है।

हृदयशूल प्रायः वयस्क जीवन मे अधिकता से प्रकट होता है और पुरुषो को विशेष रूप से आक्रांत करता है। पतृकता इसका एक प्रमुख कारण हो सकता है अन्य कारणो मे हृदय का कोई रोग, विशेष रूप से वसीय हृदयता हो सकता है या कई ऐसी योगावस्थाये हो सकती है जो परिमण्डलीय सचार व्यवस्था में अवरोध उत्पन्न कर देती है। धमनी काठिन्य मद्यपान तम्बाकू का अधिक सेवन उपदंश वृक्क रोग आमवात एवं गठियावात इसके स्मृवृत्तिक कारण होते है।

होम्योपैथिक चिकित्सा—

१- एकोनाइट-30— वक्ष का दम घोट देने वाली सिकुडन जिसमे रोगी बेचैनी से पसीने से तर होता है हृदय मे पीडा होती है जो चारो ओर फैल जाती है बायें हाथ में अधिक दर्द होने के साथ सुरसुराहट और सुन्नपन रहता है, नाडी पूर्ण एव तीव्र रहती है अधिकता के साथ मृत्यु का भय रहता है और लगता है मानो वह मृत्यु का ग्रास बनता जा रहा है।

२- सिमिसीफ्यूगा ३०- पीडा सारे वक्ष मे फैल जाती है और मस्तिष्कीय रक्त सतुलन के साथ मूर्छा घेर लेती है चेहरा नीला रहता है और भुजा ऐसी प्रतीत होती है मानो उसे शरीर के साथ कसकर बाध दिया गया है।

३— डिजिटलिस ३०— जीर्ण रोगावस्था जो विशेष रूप से वृद्ध जनो मे प्रकट होती है, अचानक कई बार दौरा पड जाता है और प्रत्येक दौरा पहले दौरे से अधिक सबल प्रतीत होता है मृत्यु बेचैनी और आमवात अन्त हृदयशोथ के कारण होने वाला हृदयशूल, हृदय मे कोई नुकीली गढ जाने जैसी पीडा के साथ दाहक अनुभूति बाई भुजा मे सुन्नपन और खुजली।

४— जेल्सीमियम— हृदय के वसीय अपजनन होने के फलस्वरूप वाह हृदयशूल मे प्रयुक्त की जाने वाली औषधि।

५— बेलाडाना— हृदयशूल के उपशमनात्मक एक विशिष्ट औषधि विशिष्ट रूप से तब जब शूल हृदय के आंगिक रोग के उपद्रवो से सम्बद्ध हो।

६— टेबकम— चेहरे का शवतुल्य पीलिया के साथ आमाशय के अन्दर रुग्णानुभति मुरझाई हुई मुखाकृति आकस्मिक परिहृदयी अधीरता रात्रिकालीन प्रवेग मे हृदय की प्रबल धडकन वक्ष के आर पार सिकुडन की अनुभूति घुटनो से लेकर पैरो की अगुलियो तक बर्फ जैसा ठंडा।

७— वेराट्रम एल्ब— वक्ष की दम घोटने जैसी सिकुडन इतना प्रबल घुटन होती है कि रोगी बेचैनी से पसीने से बुरी तरह भीग जाता है। सर्वांगीण अवसाद हाथ पैरो में अकडन।

८- बायोकेमिक— मग्नीशिया फास हृदयशूल की प्रमुख औषधि। इसे तीन एक्स शक्ति मे गर्म पानी के साथ निरन्तर देते रहना चाहिए।

फारमफास जब ताप और रक्त सकुलता हो तो इसे मग्नीशिया फास के साथ पर्याय क्रम से देना चाहिए।

कालीफास हृदय की मद क्रिया [illegible] मूर्छित होने की प्रवृत्ति।

टिप्पणी - इन तीनो औषधियो को अपेक्षित अनुपात मे मिलाकर भी दिया जा सकता है। क्रटेगस कैक्टस स्पाइजिलिया ३० केल्मिया।

हृदय धमनी रोग
CORONARY HEART DISEASES

डा० दिनेश कुमार नागर,
चिकित्साधिकारी— राजस्थान होम्योपैथिक चिकित्सालय, विधानसभा, जयपुर

वर्तमान मे हृदय रोग के रोगियो की सख्या ससार के प्रत्येक भागो मे बढ रही है। विज्ञान के इस भोतिक युग ने जहा एक ओर लोगो को हर तरह की सुविधा उपलब्ध करवाई है, वहीं दूसरी ओर शारीरिक परिश्रम के नितान्त अभाव, खान-पान, आचार विचार, मानसिक तनाव एव पर्यावरण प्रदूषण के कारण हृदय व फुफ्फुस रोग प्रतिदिन हजारो लोगो को अपनी चपेट मे ले रहे है। शहरी वातावरण मे रह रहे मध्यम एव उच्च वर्ग के लोगो को यह व्याधियॉ अधिक हो रही हे।

हृदय रक्त परिसचरण द्वारा शुद्ध रक्त को शरीर के प्रत्येक अगो तक पहुचाता है इस कार्य को सम्पन्न करने मे हृदयपेशियो एव धमनियो का बहुत योगदान हे।

हृदय की मासपेशिया सकुचन व प्रसारण द्वारा रक्त को प्रत्येक कोशिका तक पम्प करके दिन-रात रक्त परिसचरण का कार्य करती हे। हृदय की मासपेशियो को हृदय धमनियो द्वारा शुद्ध रक्त मिलता हे जिससे हृदय स्वस्थ रहता है।

यदि किसी कारण से हृदय पेशियो को पर्याप्त मात्रा मे शुद्ध रक्त हृदय धमनियो द्वारा नहीं मिल पाता हे, इसी कारण कोरोनरी हार्ट अटेक होता हे। ज्यादातर रोगियो मे हृदयधमनी काठिन्य व धमनी की दीवारो का क्षय होने से होता हे। परिणाम स्वरूप एक या अनेक कोरोनरी आर्टरी वन्द हो जाती हे।

हार्ट अटैक मे मुख्य दो अवधारणाये होती है—

१— एक या अधिक कोरोनरी आटिस का हृद्धमनी काठिन्य होना।

२— तत्पश्चात् कठोर धमनियो का रुधिर थक्के के कारण वन्द हो जाना, इस कारण हृदय के उपभाग को एव हृदय की मासपेशियो को रक्त नहीं मिल पाता है ओर परिणाम स्वरूप उस भाग को क्षय हो जाता है। इसे मायोकार्डियल इनफ्राक्र्शन कहते हे।

हृदय धमनी काठिन्य मे हृदय की धमनियो की आन्तरिक दीवारो पर वसाकणो, केल्शियम तथा ऋतु उत्तम के जमा होने के कारण होता हे।

रोग के कारण—

स्त्रियो की अपेक्षा पुरुषो को अधिक देखा गया हे। ४० वर्षो से अधिक उम्र पर स्त्री व पुरुष दोनो में समान रूप से हो सकता हे।

(१) व्यवसाय व आदते— मानसिक तनाव, शारीरिक परिश्रम की कमी इन लोगो मे यह रोग अधिक होता हे।

(२) वशानुगत— यह रोग वशानुगत होता हे।

(३) उच्च रक्तचाप— यह भी इस रोग का मुख्य कारण हे।

(४) मधुमेह— के कारण रक्त मे वसा एव शर्करा की अधिकता होती हे।

(५) स्थौल्य— आराम तलब जीवन, अधिक आहार व शारीरिक परिश्रम के अभाव से शरीर का वजन बढता ह व रोग को जन्म देता है।

(६) धूम्रपान शराव— की आदतो के कारण शरीर मे अनेक रोगो को जन्म देता हे।

रोग के साधारण लक्षण—

रोग के आरम्भ मे हृदय प्रदेश मे हल्का दर्द, श्वास का फूलना, नाडी का मद व अनियमित होना वेचैनी इत्यादि लक्षण होते है।

रोग की कठिन अवस्था मे हृदय भाग मे तेज दर्द मूर्च्छा, थोडा चलने से सॉस का फूलना रक्तदाव अधिक नाडीमन्द, पेल्पिटेशन वढना हाथ पेरो का सुन्न होना वेचेनी

सिरदर्द वमन इत्यादि होता है।

हृदय धमनी रोग का निदान—

आधुनिक चिकित्सा शास्त्र मे निदान के अनेक साधन हे जिससे शीघ्र निदान कर चिकित्सा उपलब्ध करवाई जा सके।

इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम (व्यायाम के उपरान्त) रक्त की जाच, रक्तदाव की जाच, एन्जियोग्राफी, एन्जियोप्लास्टी, थायमस टेस्ट इत्यादि।

इन जाचो से पता चल जाता है कि कौन-कौन सी हृदय धमनी वन्द हे तथा कितना प्रतिशत सिकुडन है। रोगो की अवस्था के अनुसार ओषधि चिकित्सा या शल्य चिकित्सा की जाती हे। यदि हृदय धमनिया ६०-१०० प्रतिशत तक वन्द हो तो बाईपास सर्जरी की जाती हे। रोगी को नवीन जीवन प्राप्त होता है।

रोग से बचाव—

किसी विद्वान ने कहा हे कि **Prevention is better then cure** रोग से बचाव, चिकित्सा व आरोग्यता से वढकर हे।

(१) भोजन— कम मात्रा मे वसा व गरिष्ठ भोजन अधिक मिर्च मसाले, हानिकारक हे। हरी सब्जिया, दाले, सलाद, फल, गुड व शुद्ध शाकाहारी भोजन फायदेमन्द हे।

(२) व्यायाम— नित्य सूर्योदय से पूर्व भ्रमण व्यायाम योगा स्वास्थ के लिए लाभप्रद हे। स्नान से पूर्व मालिश भी आवश्यक हे।

(३) श्वसन व्यायाम— सुबह खुली हवा मे पार्क मे छत पर गहरी तेज श्वसन क्रिया करने से अधिक मात्रामे प्राणवायु फुफ्फुस व हृदय को स्वस्थ्य रखती हे।

(४) मानसिक तनाव— को कम करे, दिनचर्या नियमित करे।

(५) आदते— धूम्रपान, शराव, तम्बाकू स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हे।

होम्योपैथिक चिकित्सा—

लक्षणो के आधार पर निम्न ओषधियो के सेवन से आरोग्यता प्रदान की जा सकती हे।

(१) क्रेटेगस— यह हृदय टोनिक के नाम से जाना जाता हे बेचेनी, हृदय प्रदेश मे दर्द, नाडी धीमी, हाथ पेरो का ठण्डा व सुन्न रहना व अगुलियो का नीलापन।

अर्क की १०-१० बूद पानी के साथ प्रतिदिन २ वार सेवन करे।

(२) केक्टस मूलअर्क— टीस मारती हुई पीडा को हिलाने डुलाने पर अधिक होती हे। हृदय मे सिकुडन की अनुभूति, दर्द, हृदय शिखर से गोली के समान वाई भुजा मे जाता है। श्वास कष्ट, श्वासावरोध व नाडी मन्द।

१०-१० बूद मूल अर्क पानी के साथ दो बार पिला दे।

(३) डिजीटेलिस-३० — यह जीर्ण अवस्था मे तथा वृद्ध जनो मे लाभदायक हे। अचानक दौरा पड जाता हे। मृत्यु बेचैनी व हृद्‌रोग की अनुभूति, भय व अधीरता, तीन खुराक प्रतिदिन।

(४) ग्लोनाइन-३०— प्रत्येक वाहिनी मे स्पदन शीण पीडा हृदय प्रदेश मे पूर्णता की अनुभूति तीखी पीडा जो हृदय मे प्रारम्भ होकर प्रत्येक भाग तक फेल जाती हे।

(५) स्पाइजिसिया-३०— प्रत्येक हृदयशूल मे छुरी काटने के समान तेजदर्द, पीडा वाई तरफ से दायी तरफ फैलती हे। हृदय धडकन तेज, जरा हिलने डुलने से दर्द बढे, मूर्च्छित होने की प्रवृत्ति।

(६) केलिमिया-३०— यदि वातज हृद्रोग के कारण लक्षण प्रकट हुए हो, वातज ज्वर के कारण, सन्धिया शरीर के निचले भाग मे ऊपर की ओर अग्रसरित हो

अन्य ओषधियॉ जो लक्षणानुसार प्रयोग मे लाई जाती है एकोनाइट, अर्जुनाअर्क, मेगफास, फेरमफास, कालीफास इत्यादि।

कुछ विशेष औषधियो के चुनाव हेतु प्रमुख लक्षण—

(१) अनुभूति यदि रोगिणी हिले डुलेगी तो हृदय वन्द हो जायेगा। डिजिटेलिस

(२) अनुभूति यदि रोगिणी गति नहीं करेगी तो हृदय वन्द हो जायेगा। जेल्सीमियम

(३) हृदय वन्द होने वाला हे। लोवोलिया

(४) अनुभूति लोहे के हाथो द्वारा हृदय को निचोडा जा रहा ह। केक्टस जी

(५) मानो हृदय को निचोडा जा रहा हे। लिलियम टिग

(६) छुरे घोपने के दर्द की अनुभूति। स्पाइजिलिया

हृदय का त्रिदोषज रोग

विमर्श एवं चिकित्सा सूत्र

वैद्य मदन गोपाल शर्मा, भिषगाचार्य, एच० पी० ए०

श्री वैद्य मदनगोपाल शर्मा राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान जयपुर के पूर्व निदेशक तथा काय चिकित्सा विभागाध्यक्ष हे। ये वर्तमान काल मे राजस्थान मे सर्वाधिक लोकप्रिय एव कुशल आयुर्वेदज्ञ के रूप में समादृत प्राढ विद्वान ह। इन्हे राज घरानो के प्राचीन राजवैद्यो के अनेक गुप्त योग भी प्राप्त हे। ये भिषगाचार्य, एच० पी० ए०, पीएच० डी० हे। इनके चिकित्सालय मे रेलवे टिकट खिडकी की तरह भीड पडती हे। लोग खडे खडे घण्टो अपनी वारी की प्रतीक्षा करते हे। सह लेखिका डा० उमा शर्मा, बी० ए० एम० एस०, एम० डी० इनकी पुत्रवधू ह। शर्मा जी मुझपर अग्रजवत स्नेह एव कृपा रखते है।

सृष्टि की रचना के प्रादुर्भाव काल से प्राणीमात्र के जीवन का सुरक्षित रखने नियमेन सचालन करने, विभिन्न आपदा-विपदाओ का सामना करने की शक्ति प्रदान करने के लिए आहरण एव निहरण रूपी यज्ञ के लिए ईश्वर ने पाञ्चभौतिक पिण्ड के लिए पाञ्चभौतिक आहारादि क्रम का विधान किया ह। आयुर्वेद का प्रादुर्भाव भी सृष्टि एव जीव की उत्पत्ति के साथ हुआ। परम पिता परमात्मा की सर्वोच्च कृति मानव को माना ह। अतल तलातल भुवन रूपी ब्रह्माण्ड की रचना का समावेश किया। ब्रह्माण्ड मे जिस प्रकार सर्वोपरि आकाश तदन्तर तेज क्रमश वायु जल एव पृथ्वी तद्वत् ही मनुष्य मे भी पाच प्रधान अग दर्शी आधार पर निर्मित किए। इसमे उपयुक्त क्रम का दिग्दर्शन स्पष्टत बुद्धिगम्य होता ह। उस क्रम का बुद्धिमान मस्तिष्क, हृदय, फुफ्फुस वृक्क एव यकृत यह श्री मधुसूदन सरस्वती के पञ्च महाभूत विमर्श की विस्तृत व्याख्या से जाना जा सकता ह। इतना ही नही आयुर्वेद क सभी दर्शनो का समावेश कर इसे जीवन का महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया। ज्योतिष से काल का निर्णय, राशियो द्वारा ऋतुओ का निर्णय ऋतुओ द्वारा पञ्चमहाभूत प्रधान रसो की उत्पत्ति रसो द्वारा विशति गुणो की उत्पत्ति, उपर्युक्त रस और गुण द्वारा विपाक का समुद्भव और इन सबसे शरीर पर होने वाले कर्म एव परिणाम का दिग्दर्शन। इसी विषय का स्पष्टीकरण अधोलिखित सारणी से समझ मे आ सकता ह कि किस प्रकार समग्र ब्रह्माण्ड के उपादान पृथ्वी एव शरीर को प्रभावित करते है। (कृपया अगले पृष्ठ पर चार्ट देखे)

यहा अनुसन्धाता अपने प्राकृत विषयो मे शास्त्र सम्मत तैजस् तत्व का मूलभूत उपादान एव क्रिया परक अवयव हृदय से सम्बन्धित विकृतिया उनके हेतु, सम्प्राप्ति, सरचना, पञ्चभूतात्मक कर्म स्वरूप लक्षण, पञ्चभूतात्मक सम्प्राप्ति सगठन का पञ्चभूतात्मक आहार विहार परक रसादि से युक्त विघटनात्मक प्रक्रिया उत्पन्न करने वाले द्रव्य एव क्रिया का प्रयोग तथा इसी आधार पर लक्षण रूपी कर्मो के उपशमन को स्पष्ट करने का प्रयास करेगा।

हृदय शब्द की विभिन्न कोशो की व्याख्या के अध्ययन से यज्ञ का पूर्णप्रतीक, आहरण दान एव नियमन प्रकार से परिलक्षित होता ह इन्ही तीन प्रकार की क्रियाओ तथा उक्त अवयवो की रचना मे विकृति (विषमता) आने का नाम ही कर्मो के रूप मे लक्षण समूह व्याधि का स्वरूप धारण करती है। सूक्ष्म रूप से आधुनिक रचना विज्ञान की दृष्टि से तथा प्राचीन रचना की दृष्टि से इसका स्थान आकार क्रिया एव स्थिति का समान्य ज्ञान होना आवश्यक है।

काल
दक्षिणायन (आदान काल)
उत्तरायण (विसर्ग काल)
१ राशियो के आधार पर ब्रह्माण्ड मे सूर्य की स्थिति
मीन + मेष
वृष + मिथुन
कर्क + सिह
कन्या + तुला
वृश्चिक + धनु
मकर + कुम्भ
शिशिर
वसत
ग्रीष्म
वर्षा
शरद
हेमन्त
२ रसोत्पत्ति
तिक्तरस
कषायरस
कटुरस
अम्ल रस
लवण रस
मधुर रस
वायु + आकाश
पृथ्वी + वायु
वायु + अग्नि
पृथ्वी + अग्नि
जल + अग्नि
पृथ्वी + जल
तरतम भेद से गुणोत्पत्ति
१ रूक्ष २ शीत ३ लघुतम
१ रूक्षतर २ शीततर ३ गुरुतर
१ उष्ण २ रूक्षतम ३ लघुतर
१ उष्णतर २ स्निग्धतर ३ लघु
१ उष्णतम २ स्निग्ध ३ गुरु
१ स्निग्धतम २ गुरुतम ३ गुरुतम
विपाक
विपाक कर्म
कटुतिक्त कषाय रस का
कटु विपाक
१ वातल
२ शुक्रहा
३ बद्धविण्वमूत्रकृत
वातमूत्ररेत्तसामोक्षेदुख प्रदा
अम्ल रस का
अम्ल विपाक
१ शुक्रनाशहन
२ पित्तकृत
३ सृष्ट विण्वमूत्रकृत
लवण मधुर रस
मधुर विपाक
१ कफकृत
२ शुक्रल
३ सृष्टविण्वमूत्रकृत
वाममूत्रपुरीषमोक्षेसुखप्रदा
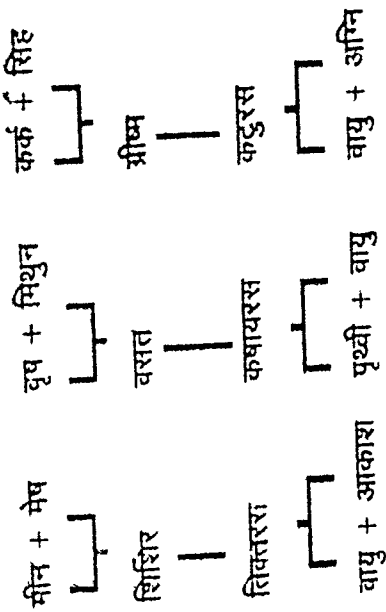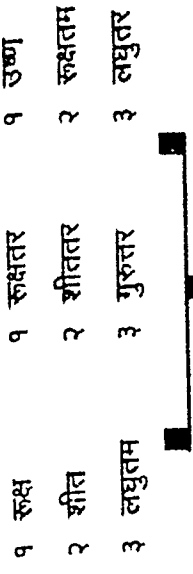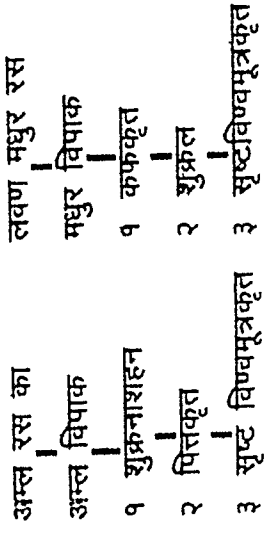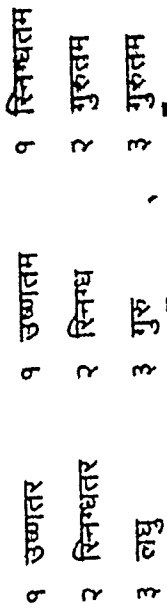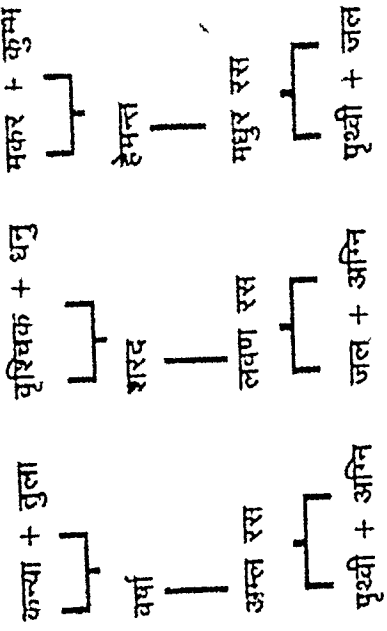
यहाँ अनुसन्धाता अपने प्राकृत विषय मे शास्त्र सम्मत तेजस् तत्व का मूल-भूत उपादान एव क्रिया परक अवयव हृदय से सम्बन्धित विकृतिया उनके हेतु, सम्प्राप्ति, सरचना, पञ्चभूतात्मक कर्म स्वरूप लक्षण पचभूतात्मक सम्प्राप्ति सगठन का पचभूतात्मक आहार विहार परक रसादि से युक्त विघटनात्मक प्रक्रिया उत्पन्न करने वाले द्रव्य एव क्रिया का प्रयोग तथा इसी आधार पर लक्षण रूपी कर्मो के उपशमन को स्पष्ट करने का प्रयास करेगा।

हृदय शब्द की विभिन्न कोषो की व्याख्या के अध्ययन से यज्ञ का पूर्ण प्रतीक आहरण दान एव नियमन प्रकार से परिलक्षित होता हे। इन्हीं तीन प्रकार की क्रियाओ तथा उक्त अवयव की रचना मे विकृति (विषमता) आने का नाम ही कर्मो के रूप मे लक्षण समूह व्याधि का स्वरूप धारण करती हे। सूक्ष्म रूप मे आधुनिक रचना विज्ञान की दृष्टि से तथा प्राचीन रचना की दृष्टि से इसका स्थान आकार क्रिया एव स्थिति का सामान्य ज्ञान होना आवश्यक हे।

१ हृदय चेतना स्थानम्। (सुश्रुत)
२ पुण्डरीकेण सदृश हृदयस्यादधोमुखम्।(सुश्रुत)
३ शोणित कफ प्रसादज हृदयम। (सुश्रुत)
४ प्राणवहाना स्रोतसा हृदय मूलम्। (चरक)
५ रसवहाना स्रोतसा हृदय मूलम्। (चरक)

ये शास्त्र वाक्य आयुर्वेदज्ञो के लिए स्पष्ट करने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती, किन्तु आधुनिक विज्ञान इनके विषय मे क्या स्पष्टीकरण करता हे उसके विषय मे थोडा दृष्टिपात करना आवश्यक हे।

इसकी रचना के विषय मे थोडा विचार करे तो यह एक स्वतत्र मासपेशी सूत्रो से वना सुषिर त्रिकोणाकार प्रत्यग हे। अध मध्यम फुफ्फुसान्तराल मे उरोरिथ के पश्चिम भाग मे दोनो ओर फुफ्फुसो के मध्य वाम गुहा मे वाम भाग को अधिक घेरते हुए स्थित है। इसका आधार दक्षिण ओर के शीर्ष स्थान वाम भाग मे है। यह शीर्ष वाम ओर के पचम पर्शुकान्तरीय स्थान मे मध्यरेखा से चार अगुल की दूरी पर ह। इसे स्पष्ट रूप से हस्ततल से स्पन्दित होते अनुभव किया जा सकता हे। इसकी तीन रचनाये हे।

१ हृत्कोश स्तर **Periardium**
२ पेशी सूत्र स्तर **Myocardium**
३ पतली कलास्तर **Endocardium**

आकार एव भार की दृष्टि से आधुनिक विज्ञान ने सामान्यतया लम्वाई ६ अगुल चाडाई ४ अगुल मोटाइ ३ अगुल (स्वागुल से) तथा भार २७५ से ३५० ग्राम माना ह। व्यान वायु के द्वारा रस परीभ्रमण की क्रिया चार प्रकोष्ठो के द्वारा सम्पादित करता हे। इसके लिए साधकाग्नि का महत्वपूर्ण स्थान ह। इसके विधय मे विस्तृत रूप से दोपो की स्थिति का दिग्दर्शन करते वक्त वर्णन किया जायेगा। ये रस क्रिया का व्यवधान तथा इसके अग प्रत्यग की रचना एव क्रिया विकृति ही पचविध हृद्रोगो की उत्पत्ति के कारण है। यहाँ सर्वविद् हृद्रोगो को विस्तृत रूप मे प्रस्तुत न कर प्रधानत त्रिदोषज हृद्रोग पर ही अनुसधान के प्रमाणो को प्रस्तुत किया जायेगा।

सर्वप्रथम हम निदान के वारे मे विचार करे तो चरक त्रिमर्मीय के आधार पर निदान के इतने घटक हो सकते है, सामान्य निदान, विशिष्ट निदान, आहार परक निदान विहार परक निदान, मनोभाव परक निदान, निदानार्थक रोगपरक निदान, चिकित्सा अपचारज निदान, दोष प्रकोपक निदान, दूष्य प्रकोपक निदान, आमजन्य निदान, अग्निमार्द्याकर निदान, स्रोतो वेगुण्यकर निदान आदि।

हृदय रोग निदान—

व्यायाम तीक्ष्णाति विरेक वस्ति चिन्ताभयत्रास गदातिचारा ।
छर्द्याभसधारण कर्शनानि हृद्रोग कर्तृणि तथाऽभिघात ।।

चरक चि० २६/७०

अध्येता निदानो का वर्गीकरण आयुर्वेदीय दृष्टि से समुपस्थित करने का प्रयास कर रहा ह। जिससे वास्तविक आयुर्वेदीय अनुसधान की दिशा का निर्देश भी मिलेगा तथा चिकित्सा मे सम्प्राप्ति विघटनात्मक चिकित्सा का समायोजन करने की दिशा उपलब्ध होगी। इसे विस्तार भय से अतिसूक्ष्म रूप मे प्रदर्शित किया गया ह।

(१) गुरु— पार्थिव आहार परक निदान— दूध आर खोवा से वनी वस्तुए, आलू, मटर, गोभी, चना, चावल, बिस्किट, ब्रेड उडद, मासाहार अतिस्निग्ध वस्तुए।

(२) उष्ण तथा तीक्ष्ण— तेजस्— आहार परक निदान, तेज मसाले समोसा विभिन्न प्रकार के नमकीन, लहसुन अचार फास्ट फूड।

(३) अम्ल— पार्थिव + तजस— आहार परक निदान- सभी प्रकार के मद्य, अमचूर, इमली, कोकम आदि का अति सेवन।

(४) रूक्ष— वायव्य— आहार परक निदान + विहार परक निदान— चावल, आलू, कद्दू, कणगरा, अल्प स्नेहाश युक्त भोजन, जो, चना, आधुनिक वायोकैमिक ओषधियो का अति सेवन, अति रात्रि जागरण, अति व्यायाम, अति ध्वगमन।

(५) अध्यशन— सर्वभूत— आहार परक निदान— अति भोजन, पुन पुन भोजन, सुस्वादु होने से आवश्यकता से अधिक आहार लेना।

(६) विरुद्धासन— सर्वभूत— आ० प० नि०— अपनी प्रकृति के प्रतिकूल एव रस, गुण वीर्य, विपाक के प्रतिकूल जेसे, दूध-मूली, दूध-दही, चिलचिम मछली-दूध, दूध-लवण एव खट्टे पदार्थ।

(७) असात्म्याशन—वायव्य+पार्थिव— आहार परक निदान— ऋतु के विपरीत स्वप्रकृति के विपरीत आहार द्रव्यो का सेवन, गर्मी मे गर्म तथा शीत मे शीत पदार्थो का सेवन।

(८) वेग विधारण— वायव्य— आहार परक निदान— मल, मूत्र, हिक्कादि के तेरह प्रकारो के वेगो को रोकना।

(६) चिन्ता + त्रास— वायव्य— मनोभावपरक निदान— जीवन यापन की सामग्री के पूर्णता की चिन्ता, ३३ व्यभिचारी भावो का उद्‌गम, आर्थिक सामाजिक समस्याये।

(१०) ध्वनि प्रदूषण— नाभस— विहार परक निदान— आधुनिक मोटर गाडियो की अधाधुन्ध दोड, ध्वनि विस्तारक, टी० वी० रेडियो टेप आदि वाद्यो का तीव्र स्वर।

(११) अजीर्णाशन— वायव्य— आप्य— आहार परक निदान— पूर्व भोजन के जीर्ण न होने पर पुन भोजन करना (शास्त्र ने तीन घटे मे पुन भोजन का निषेध किया ह।)

(१२) मदकारी पदार्थो का अति सेवन— तेजस् आप्य— आहार परक निदान— आधुनिक प्रचलित विभिन्न ड्रग्स, प्राचीन भाग मदिरा आदि।

(१३) रक्तक्षय— वायव्य— विहार परक निदान— व्यस्त जीवन मे विभिन्न प्रकार की दुर्घटनाओ से आघात, आपसी झगडो द्वारा तथा विभिन्न व्याधियो रक्तपित्त, अर्श आदि मे अति रक्तस्राव।

(१४) अनशन— वायव्य— आहार परक निदान— आमरण अनशन, अत्युपवास, पोषण के लिए व्याधिग्रस्त होने पर आहार का न पहुचना।

(१५) आलसी जीवन— आप्य पार्थिव— विहार परक निदान— अतिनिद्रा, अति भोजन, भोजनोत्तर निद्रा, अपरिश्रम, शारीरिक क्रियाओ की अल्पता।

(१६) विभिन्न व्याधि— पचमहाभूत—रोगार्थपरक निदान— श्वास, कास, हिक्का, गुल्म, अम्लपित्त, अजीर्ण, आध्मान, आरोप, आमवात, मानसिक रोग आदि।

(१७) व्यायाम— वायव्य— विहार परक निदान— शक्ति से अधिक श्रम अतिभार वहन अत्यध्वगमन।

(१८) स्निग्ध— आप्य—पार्थिव— आहार परक निदान— घी, तैल, वसा, मज्जा निर्मित वस्तुओ का सेवन, सूखे मेवे, बादाम, काजू, चिलगोजा, अखरोट, चारो मगज तथा आधुनिक तैल आदि भर्जित शाक आदि।

(१६) अचिन्तन— आप्य— मनोभाव परक निदान— शारीरिक क्रियाओ मे किसी प्रकार के मानसिक भावो का विशेषकर चिन्ता का न होना।

(२०) अचेष्टा— मनोभाव परक निदान— कर्मेन्द्रियो को क्रियाहीन रखना।

(२१) निद्रासुख— आप्य—पार्थिव—विहार परक निदान— ज्ञानेन्द्रियो व कर्मेन्द्रियो का निष्क्रीय वात रहना।

(२२) क्रोध— तजस्— मनोभाव परक निदान— रक्ताभिसरण एव मनोभावो का दूषण करना।

(२३) लवण क्षार— तेजस्-आप्य— आहार परक निदान— अष्ट लवण एव विभिन्न सर्जीकादि क्षारो का अति उपयोग।

(२४) कटु— तेजस्—आहार परक निदान— लाल, हरी, कालीमिर्च पीपल, लवग, चव्य, चित्रक, दालचीनी आदि का अधिक प्रयोग।

(२५) अत्यातप सेवन— तेजस्—विहार परक निदान— तेज धूप का अधिक सेवन।

(२६) शुष्क भोजन— आहार परक निदान— विभिन्न प्रकार के तन्तुओ का सेवन एव आहार द्रव्यो को शुष्क करके उनका सेवन।

(२७) अल्प भोजन— वायव्य— आहार परक निदान— शरीर की आवश्यकता से कम भोजन करना।

(२८) छर्दि—वायव्य—रोगपरक निदान— अपचित आहारणीय द्रव्यो का मुख मार्ग से बहिर्गमन।

(२६) श्रम—तेजस—वायव्य— मनोभाव परक निदान— ज्ञानेन्द्रियो एव कर्मेन्द्रियो के कार्यो मे बाधा उत्पन्न करना।

उक्त विवरण से विज्ञ व्यक्तियो को सरलता से इस प्रक्रिया का आभास कराने के लिए यहॉ सूक्ष्म विवेचन अति

सूक्ष्म रूप से दिया जा रहा है कि उपर्युक्त सामान्यत वर्णित २६ निदानो का गुण एव क्रिया रूप मे किस-किस महाभूत से विशेष सम्बन्ध है एव वे किस परक (आहार या विहार या मनोभाव) है। तथा सामान्य जन हेतु सेवन मे किस प्रकार समझ सकता है, यह प्रदर्शित किया गया है। इसके द्वारा दैव प्रकोप की दृष्टि से क्रम संख्या के प्रदर्शित करने का प्रयास हे।

वात दोष को विगुणित करने वाले क्रमश ४, ६, ८, ६, १०, ११, १३, १४, १६, २६, २७, २८, २६ ये चौदह निदान अकित है जबकि २, ३, १२, १६, २२, २३, २४, २६, २६ मात्र नौ ही निदान पित्त को विगुणित करने मे सहायक है। कफ दोष को विगुणित करने के लिए १, ५, ६, ७, ११, १५, १६, १८, १६, २०, २१, २३, २८, ये तेरह निदान परिगणित किये गये है। इनमे ४-५ हेतु ऐसे हे जो त्रिदोष या उभय दोषो को प्रभावित करते हे।

सम्प्राप्ति सरचना मे "यत्र सग ख वैगुण्यात्" की स्थिति से पृथ्वी जल बाहुल्य दोष कफ का आता है। मूर्त रूप इन दो द्रव्यो का ही होता है। अत सग मे कफ की प्रधानता होती हे। जबकि पित्त का तैजस, गुण अपने आवश्यक गुणो की न्यूनता या तीव्रता के कारण विदग्ध अवस्था को प्राप्त होने पर सग मे दोष दूष्य सम्मूर्च्छना में आम के सग का विघटन करने मे अक्षम होता है। उसके मात्र उक्त सख्या मे दिखाये गये निदान स्रोतों विगुणता मे ही सहायक होते है। सर्वाधिक हेतु वात के विगुणित किये गये हे।

"वाय्रोर्धातुक्षयात् कोपोभार्गस्यावरणेन च" के सिद्धान्त पर उभयविध विकृति इस व्याधि मे स्पष्ट रूप से दखी जाती हे। यहा अति सूक्ष्म रूप से सम्प्राप्ति का दिग्दर्शन कराना उचित रहेगा।

सर्वप्रथम आहार परक हेतुओ के सेवन स शरीरस्थ त्रयोदश अग्नियों पर प्रभाव होता ह। जिससे अग्नियो मे मन्दता उत्पन्न होती है। पुनश्च तद्-तद् अग्निमाद्य से तद्-तद् प्रकार का आम उत्पन्न होता हे। तत्-तत् अग्निमाद्य तत-तत् कर्म प्रधान दाषो को प्रभावित करते हैं जिनके दाषो की प्रकुपित अवस्था आती है। एव व प्रसरणशील होते हुए तत तत् दूष्य को प्रभावित करते है तथा आम के कारण उत्पन्न स्रोतस् सग भ अपना अधिष्ठान बना लक्षण स्वरूप व्याधि का निमाण करते है। उक्त व्याधि मे स्पष्ट रूप से सामान्य त्रिदोष, विशेष रूप से तरतम भेद मे प्राण (आकाश बहुल) उदान (जल) व्यान (वायु बहुल) वात का साधक पित्त (आकाश बहुल) अवलम्बक कफ (पार्थिव बहुल) एव जठराग्नि, रस रक्तादि, मेदसाग्नि का साथ दूष्य रस रक्त एव ओज तथा स्रोतस् के साथ ही रोग मार्ग की दृष्टि स मध्यम रोग मार्गानुसारी यह व्याधि अपने कार्यस्थल अर्थात् ख वेगुण्य रूप से प्राण एव रसवह स्रोतस् म रस रक्त मेद का प्रकृति सम समवेत एव विकृति विषम समवत रूप मे दोष दूष्य सम्मूर्छना रूप मे, चतुर्विध स्रोतो मूल दुष्टि अति प्रवृति सग, सिराग्रथि कालान्तर मे विमार्गगमन व्याधि रूप मे जो लक्षण रूप आगे गिनायी जावेगी प्रस्फुटित करती है। विद्वानो के लिए यह अति सूक्ष्म विवेचन ज्ञान गगा को प्रवाहित करने के लिए पर्याप्त होगा।

लक्षणोत्पत्ति—

चरक महर्षि के चिकित्सा रथान त्रिमर्मीय अध्याय २६ से प्राय जो लक्षण वर्णित किये हुए ह, उनको सूक्ष्म रूप मे यहा प्रदर्शित कर रहा हूँ। स्वबुद्धि से दोष भेद क प्रकार से वतमान मे प्रचलित विविध हृद्रोगो का भी उसकी समानता मे ५० प्रतिशत से अधिक लक्षण सामजस्य से स्वरूपोत्पादन समझा जा सकता हे।

वेष्टन (वातदुष्टि), वेपथु (वात दुष्टि) स्तम्भ (वात कफ दुष्टि), शून्यता (वात दुष्टि), साधकाग्नि क्षीणता, हृद द्रव (वात दुष्टि, रस क्षय, साधकाग्नि वृद्धि), अल्प निद्रा (वात दुष्टि, साधकाग्नि वृद्धि) शोष (वात दुष्टि धातुक्षय) वेदना (आवृत वात), दीनता (ओजोभ्रंश, साधकाग्नि क्षीणता), शोक (रजोवृद्धि, वात दुष्टि) भय (ओजोक्षय, रसदुष्टि), शब्दासहिष्णुता (वात वृद्धि रसक्षय साधक क्षीणता), श्वास का अवरोध (वात दुष्टि प्राणवह स्रोतो दुष्टि)

उपर्युक्त प्र ा सभी लक्षण अधिकाश मे **Anjina Pectorious** के रूप म देखे जा सकते ह। आधुनिक विज्ञ इस व्याधि के लक्षणो मे हृदय की मासपेशियो म अत्यधिक वेदना, हृदय को चीरनेवत् वेदना स्वेदागम तृष्णा, श्वास, नाडीगति, वृद्धि अधिक तीव्र होन पर मोह एव सज्ञानाश भी मानते है जो उपर्युक्त विशषत वात प्रधान एव साधक की दृष्टि से आयुर्वेद विज्ञो ने प्रस्तुत किय हे।

पित्त प्रधानता से उत्पन्न लक्षण—

तदवत् ही पित्त प्रधान की दुष्टि मे हृद्दाह (पित्त दुष्टि, साधक दुष्टि), तिक्तास्यता (पित्त दुष्टि), पित्तावृत वात (रस दुष्टि) अम्लोदगिरण (विदग्ध पित्त), मुखशोथ (वात-पित्त दुष्टि) हृदक्लम (साधक-अग्नि क्षीणता, आम), क्लेद (कफ-पित्त दुष्टि), दाह (कफक्षय, पित्त दुष्टि), भ्रम (वात पित्तवृद्धि- रसक्षय), मूर्च्छा (रज, तम, दुष्टि, पित्तदुष्टि) भ्रम (वात- पित्त- रज- दुष्टि), स्वेद (पित्त दुष्टि), तम (रस दुष्टि), अन्य भी लक्षण दाह, मोह, सन्त्रास, ताप ज्वर, पित्त दुष्टि से ही परिलक्षित होते है।

इसको वैज्ञानिको की दृष्टि मे सक्रमण प्रकार से होने वाले **Myocardial Infections** के सानुरूप स्थापित किया जाना विज्ञ व्यक्तियो का कार्य है।

कफ प्रधानता से उत्पन्न लक्षण—

गुप्त हृदय (कफवृद्धि), स्तैमित्य हृदय (कफवृद्धि आम) स्तब्ध हृदय (वात-कफ दुष्टि) निद्रा (कफ तम दुष्टि), तन्द्रा (कफवृद्धि, वात तम रस दुष्टि), अरुचि (वात कफ, आमरस दुष्टि), आलस्य (कफ, आमदुष्टि, साधक क्षीणता) आमवात हृदय (कफ, वात दुष्टि), प्रसेक (कफ दुष्टि, रसवृद्धि) ज्वर (पित्त, रस रक्त दुष्टि), ज्वर (पित्त रस, रक्त दुष्टि), अग्निमार्दव (आम, रस, दुष्टि), मधुरास्यता (कफ, रस दुष्टि), निष्ठीवन (कफ, आम, दुष्टि)

इसको वैज्ञानिक विधा मे प्रस्तुत किये जाने वाले **Bundle Block** (हृद्धमनी रोध) से सामजस्य स्थापित किया जा सकता है।

पृथकश लक्षणो का पृथक्करण यहा स्पष्ट रूप से समझने के लिए किया गया है। अन्यथा अति विस्तार से विवेचन करने पर एक पृथक ग्रन्थ बन सकता है।

यहा चिकित्सा को केवल सूत्र रूप मे प्रदर्शित किया जावेगा। उसके द्रव्यो का वर्णन पूर्व मे वर्णित हेतुओ की पाञ्चभौतिक रचना के विपरीत गुण वीर्य विपाक के रूप मे शास्त्रकार ने उद्देकित किया है।

वात प्रधान लक्षणो में—

चिकित्सा (चरक) अध्याय २६ मे हरीतकी पुष्करमूल, अमृता, आमलकी, सेन्धव, सटी, तैल, गोधृत, दाडिम विजारा, पलाश, देवदारु, षड्षण हिंगु आदि तेजस् आकाशीय तथा उष्ण वीर्य द्रव्यो का विभिन्न योगो के रूप मे विधान किया है। इसमे पथ्यादि कल्क, त्र्यूषणाद्य घृत, प्रयोग मे सर्वश्रेष्ठ साबित हुए हे।

पित्त प्रधान लक्षणो मे—

विरेचन, द्राक्षा, सिता, क्षौद्र, परूषक, मधुयष्टि, कटुका, मृद्धिका, बला, रास्ना, खर्जूर, शतमूली, ऋषभक, अष्टवर्ग, सर्पिगुड, स्थिरादि, क्षीर आदि की प्रधानता जो कि पित्तशामक के साथ उपलेपकर तीक्ष्णता को शमन करने वाले तथा जीवाणु जन्य विकृति को प्रशमन करने वाले हे।

कफ प्रधान लक्षणो मे—

इसी तरह कफ प्रधान लक्षणो मे कटफल, आर्द्रक, दारुहरिद्रा, हरीतकी, अतीस, गौमूत्र, पिप्पली, पुष्करमूल, रास्ना, वचा, शुण्ठी, अर्जुन, शालपर्णी, रोहितक, खर्दिर आदि आमपाक स्रोतो विकाशक तथा क्षरण गुण प्रधान द्रव्यो का उपयोग विहित किया है।

विमर्श—

वर्तमान मे नगरीय एव उपनगरीय स्थलो मे मानव का जीवन यत्रवत हो जाने से स्वस्थवृत्त विहित आहार एव विहार का अनुपालन न होने से तथा आहारादि द्रव्यो का विशुद्ध रूप मे न मिल पाने से, दिनचर्या ऋतुचर्या रात्रिचर्या पालन का अभाव, भोग, विलासिता की अतिवृद्धि, पर्यावरण का प्रदूषण, ज्ञानेन्द्रियो का अतिरेक यथा तीव्र प्रकाश, तीव्र ज्वर तीव्र गन्धादि, प्राण, रस-रक्त एव नाडी केन्द्रो को विशिष्ट रूप से प्रभावित कर शरीर मे पचमहाभूत प्रधान पाच अवयवो को यथा मस्तिष्क, हृदय फुफ्फुस यकृत, वृक्क को प्रभावित कर विकृत कर देते है। जिससे एक दूसरे को प्रभावित करने वाली व्याधिया का प्रभावित्त होकर इन पचभूतो के अवयवो को अपनी प्राकृतिक क्रिया से विगुण कर देते है।

यहा केवल हृदय को प्रधानतम अवयव मानने से उसके विकार की प्रक्रिया, चिकित्सा के सिद्धान्त प्रस्तुत किये गये है।

"सक्षेपत क्रियायोगो निदान परिवर्जनम' के आधार पर जो निदानो मे परिगणित क्रिया है इसका यदि वजन किया जाय तो ३० से ४० प्रतिशत तक हृदयरोग हानि से बचा जा सकता है।

✪

वैज्ञानिक शोध के परिप्रेक्ष्य में
हृदय रोगों की सफल अनुभूत चिकित्सा

आचार्य डा० महेश्वर प्रसाद
निदेशक— आडोंम विज्ञान शोध सस्थान, दुग्धपुरा, मगलगढ (समस्तीपुर)

प्राक्कथन—

आज का आहार-विहार ही ऐसा हे कि अधिकाश व्यक्तियो को हृदय के किसी न किसी रोग से पीडित रहना ही पडता हे। सम्प्रति जीवन के हर क्षेत्र मे आयुर्वेद के यम, नियम, सयम का उल्लघन किया जाता है तथा दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या आदि का खुलकर मजाक उडाया जाता ह। मास, मछली, मुर्गा, अण्डा, वनस्पति घी, आदि के मोखिक सेवन से रक्तवह सस्थान मे ही नहीं हृदय मे भी कोलेस्ट्रोल अधिक नियमित एव सचित होता है। यही हृदयरोग का कारण हे। रक्तवह सस्थान मे हृदय के अतिरिक्त, धमनिया, शिराये, केशिकाये आदि रचनाये सम्मिलित रहती है जिनके सहयोग से शरीर सम्पूर्ण रचनाओ को रक्त आदि पोषक पदार्थ मिलते है और उनकी पुष्टि होती ह।

हृदय की रचना विचित्र हे यह स्वतत्र तथा ऐच्छिक दोनो प्रकार के पेशी सूत्रो से निर्मित है। शिशु के गर्भावस्था मे चार महीने के होते ही उसका हृदय गति करने लगता ह।

वेसे तो अनेक प्रकार के हृदय रोग हे किन्तु नीचे वातज, श्लेष्मज, कफज, पित्तज, कृमिज एव सशूल हृदय रागो की चिकित्सा प्रस्तुत हे।

वातज हृदयरोग—

चिकित्सा सूत्र—

पञ्च लवण, गौमूत्र से सिद्ध कोष्ण तैल को पिलावे ओर स्निग्ध स्वेद एव सस्कृत घृत का प्रयोग करे।

वातज की दो अवस्थाये होती है—
(१) आम ओर (२) निराम

सामावस्था के लक्षण आयाम स्तम्भ तथा शूल ह निरामावस्था मे दीप्ताग्नि, हृद्द्रव आर आयाम होता ह। सामावस्था मे पचमूल सिद्ध जल, लवण ओर गामूत्र सिद्ध घृत (सोवर्चलादि, शुण्ठ्यादि, दाडिमादि, पञ्चकोलादि, पुष्करादि) तथा स्निग्ध स्वेद दे।

निषेध— दूध, दही, घृत (कोई भी), आनूप मास का सर्वथा त्याग कराये। (सामावस्था मे)

निरामावस्था मे वृहण, स्निग्ध, गतघ्न चिकित्सा करें ओर सामावस्था मे जो निषेध या अपथ्य कह गय ह, उ ही को पथ्य रूप मे दे।

स्नेहानार्थ वला तेल, यवस्याहवतेल, सुकुमार घृत का प्रयोग करे। कफानुबन्ध होने पर रूक्षोष्ण चिकित्सा करे।

विशिष्ट/प्रायोगिक चिकित्सा—

(१) प्रात साय
लक्ष्मी विलास रस १२५ मि० ग्रा०
मृगश्रृग भस्म २५० मि० ग्रा०
मधु से चटाकर ऊपर से अर्जुन छाल सिद्ध दुग्ध (गौदुग्ध) पिलाये।

(२) भोजन के वाद दिन आर रात मे
दशमूलारिष्ट ३० मि० लि०,
समभाग जल मिलाकर पिलावे।

(३) रात मे सोते समय
त्रिफला चूर्ण ३ से ४ ग्राम जल से दे।

कफज हृदय रोग—

चिकित्सा सूत्र—

१— निम्ब, वचा जल से वमन कराये।
२— वाद मे अगस्त्य रसायन, शिलाजतु रसायन, व्राह्म

रसायन एव आमलकावलेह का अवस्थानुसार प्रयोग कराये।

विशिष्ट या प्रायोगिक चिकित्सा–

१– प्रात साय

शृग्यादि क्वाथ ३० से ६० मि० लि० पिलाये।

२– भोजन के बाद दो बार प्रतिदिन

शृग भस्म	२ भाग
पिप्पली चूर्ण	२ भाग
करवीर मूल चूर्ण	आधा भाग
शुद्ध कुचला	आधा भाग

एकत्र खरल करके २५० मि० ग्रा० से लेकर ५०० मि० ग्रा० (वय एव आवश्यकतानुसार) मात्रा मे मधु से चटाये और ऊपर से कुमार्यासव २५ मि० लि० वराबर जल मिला पिलाये।

३– दुर्वलता रहने पर दो बार प्रतिदिन–

श्लेष्माभ्रक	१ भाग
सूतशेखर	आधा भाग
हेमगर्भ	आधा भाग

एकत्र करके खरल कर १२५ से २५० मि० ग्रा० तक (वय तथा सहन सामर्थ्य एव आवश्यकतानुसार) पर्याप्त मधु से सेवन कराये।

पित्तज हृदय रोग–

१– द्राक्षा, इक्षु रस से विरेचन दे। ब्राद मे उर क्षत की चिकित्सा करे।

२– कुटकी एव यष्टी मधु का कल्क– खाड/ चीनी के शर्वत से।

३– अर्जुन छाल सिद्ध क्षीर, वला सिद्ध क्षीर, पञ्चमूल सिद्ध क्षीर सेवन कराये।

विशिष्ट प्रायोगिक चिकित्सा–

१– प्रात दोपहर एव साय

कामदुधा रस	२ भाग
प्रवाल भस्म	२ भाग
माक्षिक भस्म	२ भाग
मुक्ता पिष्टी	१ भाग

एकत्र खरल कर वय, सहन सामर्थ्य रोग की दशा तथा आवश्यकतानुसार ५०० मि० ग्रा० से १ ग्राम आमलकावलेह ४ से ६ ग्राम के साथ दे।

२– भोजन के बाद दो बार प्रतिदिन–

अर्जुनारिष्ट १५ मि० लि० समभाग जल के साथ सेवन कराये।

कृमिज हृदय रोग–

चिकित्सा सूत्र–

१– विडग, कुष्ठ चूर्ण को गौघृत के साथ खिलाकर कृमिहर चिकित्सा प्रदान करे।

विशिष्ट/प्रायोगिक चिकित्सा–

१– प्रात , साय

कृमिमुदगर	४ भाग
लक्ष्मी विलास	१ भाग

एकत्र खरल कर ५०० मि० ग्रा० से १ ग्राम मधु से दे।

२– भोजन के वाद दो वार प्रतिदिन–

विडगारिष्ट १२ से २४ मि० लि० समभाग जल के साथ पिलाये।

सशूल हृदयरोग–

चिकित्सा सूत्र–

१– भोजनोत्तर अधिक पच्यमानेऽल्प, जीर्णे शमन वाले शूल मे कूठ, वायविडग, सेन्धव, सोवर्चल, तिल्वक, देवदारू, अतीस चूर्ण उष्णोदक से दे।

२– जीर्णावस्था म अधिक शूल होने पर स्नेह विरेचन दे।

३– पच्यमानावस्था में अधिक शूल होने पर फल विरेचन यथा आरग्वधादि दे।

४– अधिक अर्थात् सर्वदाऽधिक शूल मे मूत्र विरेचन (त्रिवृतारदि) दे। वात के अवरोध से आमाशय मे आगमन शनै के कारण हृदयशूल होता हे।

बाईपास सर्जरी
रास्ता बदलने की एक और नई तकनीक "मिकास"

डा० सी० एम० अग्रवाल
३०—ए, रामगज बाजार, जयपुर

कल्पना कीजिये किसी मुख्य मार्ग पर कोई व्यवधान खडा हो जाता है और उस मुख्य मार्ग पर किसी तरह के एक्सीडेंट से आवागमन मे हुए उस व्यवधान के कारण रास्ता रुकता है तो उस स्थिति मे रास्ता बदलकर आने जाने की व्यवस्था अनिवार्य होती हे। ठीक इसी प्रकार प्रकृति द्वारा प्रदत्त सुन्दर यत्र जो लगातार चलने वाला पम्प ह जिसे "हृदय" कहते हे, को मानव अपने कृत्यो से खराव कर देता हे, उसका रास्ता अवरुद्ध कर देता है।

चाहे वह ज्यादा चर्बी वाले भोजन, शराव, सिगरेट आदि जेसे व्यसनो से हो, चाहे मानसिक अशाति, घृणा, क्रोध, शोक, द्वेष, प्रतिस्पर्धा ओर नकारात्मक सोच आदि से, मनुष्य की हृदय गति पर भारी दवाव पडता है। ऐसे कृत्यो से शरीर के कोने-कोने से अशुद्ध खून खींच लेने और शुद्ध खून सव जगह पहुचाने वाली नसो मे चर्वी तथा केल्शियम युक्त पदार्थ जमा होकर रक्त के प्रवाह मे अवरोध उत्पन्न कर देता है। नसो के अन्दर जमने वाले इस चर्वी केल्सियम के कचरे जिसे 'प्लेक' भी कहते है, के जमाव से शरीर के विविध अगो को खून की जरुरत की आवश्यकता मे विशेषकर हृदय के लिए रक्त की सप्लाई मे कमी आ जाती हे।

शुद्ध खून से शरीर के विविध अगो को प्राणवायु (आक्सीजन) मिलती रहती है, यह कार्य महाधमनी तथा तमाम नसो द्वारा होता हे।

हृदय को शुद्ध रक्त की आवश्यकता होती हे। हृदय के स्नायुओ को शुद्ध खून पहुचाने वाली नसो को ही 'कोरोनरी आर्टरी' कहते हे। इन्हीं आर्टरी का जाल हृदय की दीवारो पर फला होता है। ये आर्टरी ही अविकल, अविरल अविश्रात चलने वाले हृदय को आक्सीजन पोपक के रूप मे पहुचाती हे।

कोरोनरी आर्टरी का वैसे तो कोई इलाज नहीं, परन्तु दवाआ ओर सर्जरी के द्वारा रोगी को आम जीवन जीने मे न केवल मदद मिलती है अपितु वह आनन्दमयी जिन्दगी जी सकने के लिए आश्वस्त होता ह।

दवा के अलावा कोरोनरी आर्टरी के रोगी को 'एनजियोप्लास्टी' चिकित्सा से भी राहत पहुचाइ जाती ह। यदि यह चिकित्सा कारगर सिद्ध नहीं हो तो फिर ऐसे रोगी को वाईपास सर्जरी यानी रास्ता वदलकर जीवन जीने का रास्ता दिया जाता है, जिसमे रक्त के आवागमन मे वाधा नहीं रहे। वाईपास सर्जरी म रोगी के पर से शिरा (नस) को निकालकर उसका छोटा टुकडा काटकर शरीर को शुद्ध खून पहुचाने वाली महाधमनी के साथ जोड दिया जाता है, नस का दूसरा हिस्सा कोरोनरी आर्टरी जहा वन्द हाती है उससे आगे जोडा जाता है। इस तरह शुद्ध खून नस के एक टुकडे द्वारा अवरोध पारकर आगे जान लगता है। यह एक प्रचलित और परिचित वाईपास सर्जरी है। इस परिचित सर्जरी मे एक नई पद्धति आई ह जिसे "मिकास" कहते हैं। इस मिकास पद्धति मे कम से कम चीरफाड करनी पडती ह। छाती मे पसलियो के पीछ स इटरनल ममरी (थोरोसिका) आर्टरी के रूप मे दो नसे इन दोनो नसो मे शुद्ध खून वहता है।

इस नई पद्धति 'मिकास' मे इन दोनो नसो मे से एक नस को वद हुई कोरोनरी आर्टरी के साथ जोड दिया जाता है इस तरह मेमरी आर्टरी मे बहने वाला शुद्ध रक्त कोरोनरी आर्टरी को मिलने लगता हे। जहा वाईपास सर्जरी मे

(क) रोगी की छाती पर एक फीट लम्बा चीरा लगाया जाता हे।

(ख) आपरेशन के दोरान खून शुद्ध करन आर उसे

शेषांश पृष्ठ २५४ पर

हृदय धमनी रोग

डा० सुभाष सी० काला, बाल हृदय रोग विशेषज्ञ
सतोकवा दुर्लभजी ममोरियल अस्पताल, जयपुर

साधारण भाषा मे हृदय रोग का मतलब होता ह हृदय धमनी रोग। इस रोग की शुरुआत अधिकतर बाल्यकाल से ही शुरू हो जाता हे, परन्तु प्रकट उस समय होता हे, जब मनुष्य जीवन मे कुछ कर गुजरने की होड मे लगा होता हे। यह रोग विना किसी खास लक्षण से लेकर एकायक मृत्यु के रूप मे प्रकट हो सकता है। रोग का प्रमुख लक्षण छाती मे तीव्र वेदना होती ह। इस रोग का दायरा काफी बडा होता हे जिन्हे दर्शाने के लिए अनेक नाम प्रयोग मे आते ह। इनमे प्रमुख है– हृदयशूल (एन्जाइना आन एफर्ट) अन्स्टेवल एन्जाइना, प्रिजमेटेल एन्जाइना दिल का दारा (मायाकारडियल इन्फारक्शन) आदि।

हृदय का प्रमुख कार्य है सारे शरीर को रक्त रूपी खुराक पहुचाना। इसके लिए हमारा हृदय बिना विश्राम किये बराबर धडकता रहता ह, इस कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए हृदय को भी ईधन की जरूरत होती है। इधन यानि आक्सीजन प्राप्ति के लिए एक विशेष प्रकार की धमनियो पर निर्भर रहना पडता है, जिन्हे हृदय धमनिया (कोरनरी आर्टरीज) के नाम से जाना जाता ह। हृदय की मासपेशियो को आक्सीजन वाई या दाई हृदय धमनी के माध्यम से प्राप्त होती ह। बाई धमनी कुछ अन्तर के बाद दो शाखाओ मे विभक्त हो जाती ह, इस विभाजन से पहले वाले भाग को वाई मुख्य धमनी (लेफ्ट मेन कारनरी) कहते ह। धमनी का यह हिस्सा अत्यत महत्वपूर्ण होता हे, क्योकि यहा रक्त प्रवाह मे एकाएक रुकावट आन से रोगी की यकायक मृत्यु हो सकती हे। विभाजित बाई धमनी की पहली शाखा हृदय के ऊपर के भाग से नीचे की ओर जाती हे। (लेफ्ट एटीरियर डिसेडिग)। दूसरी शाखा हृदय को घेरा डालकर पीछे की ओर जाती है। सरकम फेल्कस धमनी इन तीनो धमनियो से कई छोटी शाखाये निकलती ह जो और छोटी शाखाओ मे विभाजित होकर हृदय के चारो ओर एक जाल जसा वना लेती ह, इस विशेष तत्र को कोरेनरी सरकूलेशन कहते हे। शारीर के विभिन्न भागो मे जाने वाले रक्त का लगभग दस प्रतिशत इन धमनियो के माध्यम से हृदयपेशी मे पहुचता रहता है, परिश्रम के वक्त इस रक्त की मात्रा कई गुना वढ जाती हे।

हृदयपेशी को खुराक की कमी अनेक कारणो से हो सकती ह। खुराक मे कमी की स्थिति को हृदयपेशी अरक्तता (मायोकारडियल इस्कीमिया) कहते है। यह स्थिति अनेक कारणो से हो सकती हे। इनमे सबसे प्रमुख ह हृदय धमनी का एथरोस्क्लेरोसिस। हृदय पेशी अरक्तता के अन्य कारण हे जैसे महाधमनी वाल्व की खरावी, हृदयपेशी के रोग, हाइपट्रोपिक या डाइलेटेड कारडियोमायोपेथी, मायोकारडाइटिस, ल्यूटिक एओरटाइटिस आदि। इन सब स्थितियो मे हृदय धमनी निरोगी होती है।

हृदयधमनी रोग का प्रमुख कारण है, हृदय धमनी का एथरोस्क्लेरोसिस रोग से ग्रसित होना। कुछ रोगियो मे हृदय धम्नी की विकृति अन्य कारणो से भी हो सकती हे, जेसे हृदय की वारीक धमनियो मे खरावी, जिन्हे साधारण एंजियोग्राफी द्वारा नहीं देखा जा सकता हे। (सिन्ड्रोम एक्स)। हृदय धमनी का सकुचन (प्रिजमेटल एन्जाइना(जन्मजात रूप से हृदय धमनियो के निकलने की असामान्य स्थिति बाई हृदय धमनी महाधमनी के स्थान पर पलमोनरी धमनी से निकलती ह, वच्चो मे तथा युवाओ मे हृदयपेशी अरक्तता का प्रमुख कारण। गठिया तथा अन्य सयोजी ततु रोगो (कनक्टीव टिशूज डिजीजेज) के साथ भी हृदय धमनियो मे विकृति आ सकती हे।

हृदय धमनी मे एथरोस्क्लेरोसिस रोग के वारे मे काफी समय से जानकारी है, हालाकि हम अभी पूर्णतया नहीं समझ पाये हे कि यह रोग क्यो ओर कसे शुरू होता हे, परन्तु हाल ही मे हुई खोज के कारण कुछ महत्वपूर्ण तथ्य सामने आये ह, उनमे से प्रमुख है, क्षति का जवाव अनुमान (रेसपोनस टू इन्जरी हाइपोथिसिस) इस विचारधारा के

अनुसार यह पाया गया है कि किस प्रकार विभिन्न प्रकार की जातिया हृदय धमनी की भीतरी दीवार की कोशिका-अककला कोशिका। (एन्डोथिलियल सेल) की कार्य प्रणाली मे विकृति पैदा कर देती है। सामान्य स्थिति मे अत कला कोशिकाये मिलकर एक पहरेदार की तरह कार्य करती हे (स्वस्थ हृदय धमनी) विभिन्न प्रकार के आक्रमण, जिनमे प्रमुख है, एक विशेष प्रकार का वसा कण (आक्सीडाइज्ड एल डी एल) इन कणो के आक्रमण से अत कला कोशिकाओ की क्षति होती है, जिसके परिणाम स्वरूप रक्त की कुछ विशेष कोशिकाओ जेसे मोनोसाइट, माइक्रोफेज तथा टी लिम्फोसाइट धमनी के किनारे पर आ जाती हे। तथा चोट के स्थान से धमनी की दीवार के अदर चले जाते हे। मेक्रोफेजेज कोशिकाये इन वसा कणो के भक्षक हो जाते हे तथा फूलकर वडे फोम कोशिका के रूप मे आ जाते है। ये फोम कोशिकाये, टी कोशिकाये तथा नर्म पेशी कोशिकाये (स्मूथ मसल सेल) मिलकर धमनी की दीवार मे वसीय रेखाये (फैटी स्ट्रिक्स) वनाते हे। ये पीली दिखने वाली रेखाये ओर वसा तथा तन्तु इकट्ठा कर तन्तु चकता (फाइवर ब्लाक) का रूप ले लेती है।

इस प्रकार क्षतिग्रस्त भाग मे जैसे-जैसे अधिक वसा तथा कोशिकाये जमा होती जाती है, तो कुछ वसा युक्त मेक्रोफेजेज कोशिकाये अदर से वापस रक्त मे आ जाते हे, ऐसा करने पर खास धमनी मे उन स्थानो पर जहा विभाजन होता हे या शाखा निकलती हे, रक्त प्रवाह कुछ असामान्य हो जाता है, ऐसे स्थानो पर विम्वाणु (प्लेटलेटस) रक्त कण थक्के (थ्रोम्बस) बनाने का काम करती है। इन थक्को से तथा अन्य कोशिकाओ से कई रासायनिक तत्त्व निकलते है, जो एथरोस्क्लेरोसिस के वढने मे मदद करते है तथा धमनी मे होने वाले रक्त प्रवाह भी काफी रुकावट पैदा कर देते हे। एथरोस्कलोरोसिस रोग मे धमनी मे रुकावट कई चरणो मे तथा विभिन्न चीजो के मिश्रण से पैदा होती है। कुछ अध्ययनो मे पाया गया है कि इन चरणो पर रोक लगाने से इन रोक के बढने के पर रुकावट तथा कमी की जा सकती है।

इस प्रक्रिया मे आनुवशिकता किस प्रकार काम करती है, एक महत्वपूर्ण पहलू है।

अनेक ऐसी-स्थितिया तथा कारण पहचाने गये हे जो कि हृदय धमनी रोग की प्रगति मे सहायक हो सकते है इन कारणो को पहचान कर उनमे सुधार लाने से कुछ हद तक इस रोग के प्रभाव मे कमी लाना सभव हो सकता है। विभिन्न अध्ययनो के आधार पर यह पाया गया कि कुछ विसगतिया है, जिन्हे हृदय धमनी रोग के लिए कारक माना गया हे। इनमे प्रमुख हे— (१) रक्त मे वसा की अधिकता, (२) उच्च रक्तचाप, (३) तम्बाकू सेवन (४) मधुमेह। अन्य कारण हे— निष्क्रिय जीवन (फिजीकल इनएक्टीविटी), मोटापा, अनुवशिकता, उम्र, लिग, रक्त जमाने वाले तत्त्व। (हिमोस्टेटिक फेक्टर्स) हीमोसिस्टीनिमिया, शराव, मनोवैज्ञानिक कारण, मानसिक तनाव आदि।

ऊपर वताये कारणो मे कुछ कारण हे, जिनमे सुधार करके हृदय धमनी रोग के खतरे मे कमी कर सकते हं।

रक्त में वसा की अधिकता—

स्वस्थ जीवन के लिए हमारे शरीर मे वसा की पर्याप्त मात्रा होना जरूरी है, सामान्यतया वसा का अर्थ लगाया जाता हे कोलेस्ट्रोल, जिसमे रक्त मे स्तर के वारे मे अनेक भ्रातिया हे। हमारे शरीर मे चर्वी या वसा विभिन्न प्रकार की होती है इनमे प्रमुख हे कोलेस्ट्रोल, ट्राईग्लीसराइड तथा लाइपो प्रोटीन। टी कोलेस्ट्रोल हमारे शरीर की हर जीवित कोशिका का आवश्यक तत्त्व हे ओर उसकी क्रिया के सही सम्पादन मे अपना योगदान देता हे। कोलेस्ट्रोल पाच प्रकार के होते है— काइलोमाइक्रोन, वी० एल० डी० एल०, आईडी० एल एल० डी० एल० तथा एच० डी० एल०।

एच० डी० एल (हाई डेनसिटी लाइपोप्रोटीन) अच्छा कोलेस्ट्रोल माना जाता हे, ज्यादातर चिकित्सको के मानको के अनुसार रक्त मे इसका स्तर ३५ मिलीग्राम प्रति डेसीलीटर से ज्यादा होना चाहिए। इसका ऊँचा स्तर हृदय रोग से वचाता है। अन्य चारो प्रकार के कोलेस्ट्रोल का उच्च स्तर रक्त नलिकाओ मे जमा होने को वढावा देते है। पहले चिकित्सक यह मानते थे कि हृदय रोग पेदा करने मे ट्राइग्लिसराइड का कोई खास योगदान नहीं होता हे, लेकिन नवीन अनुसधानो ने यह सिद्ध कर दिया हे कि इसकी अधिक मात्रा भी दिल के दौरे के खतरे को वढा देती हे।

धूम्रपान या तम्बाकू सेवन हृदय धमनी रोग को बढावा देते है, जितना ज्यादा धूम्रपान उतनी ही अधिक ज्यादा दिल के दौरे की सभावना। प्रतिदिन पन्द्रह से अधिक सिगरेट पीने वालो मे यह खतरा छह गुना हो जाता हे। इसके अलावा

सिगरेट के धुए के सम्पर्क मे आने वालो मे भी यह खतरा बढ जाता है।

तम्बाकू सेवन से रक्त मे एच० डी० एल० की मात्रा कम हो जाती है, सिकुडन के कारण हृदय धमनी मे होने वाला रक्त प्रवाह बिगड जाता है, बिम्बाणु मे जमने की प्रवृत्ति अधिक हो जाती हे, रक्त मे फिवरीनोजन की मात्रा बढ जाती है।

मधुमेह के कारण दिल का दोरा पडने की सभावना दुगनी हो जाती हे, छोटी उम्र मे दिल का दौरा पडने का भय बढ जाता है, युवा स्त्रियो को यदि मधुमेह हो जाता है तो उन्हे दिल का दोरा पडने की सभावना चौगुनी हो जाती है।

निष्क्रिय जीवन दिल के दौरे के विविध कारणो मे से एक महत्वपूर्ण कारण हे। नियमित व्यायाम करने से एच० डी० एल० नामक वसा मे बढोत्तरी होती हे इन्सुलिन की निष्क्रियता मे कमी आती हे, मोटापे तथा रक्तचाप को काबू मे रखने मे सहायता मिलती हे, कसरत करने पर खून का दोरा बढता हे तथा शरीर को खुराक अधिक मिलती है।

जरूरत से ज्यादा वजन वाले व्यक्तियो मे हृदय धमनी रोग की सभावना बढ जाती है खासकर उन लोगो मे जहा पेट पर चर्वी अधिक होती है।

अनेक अध्ययनो मे पाया गया हे कि मानसिक तनाव से हृदय धमनी रोग की सभावना बढ जाती है, अधिक आकाक्षा तथा उत्सुकता रखने वाले व्यक्तियो मे हृदय की गतिविधि बढ जाती है ओर वह सभवत इस रोग को बढाने मे मदद करती है। अनेक ऐसी स्थितियो तथा कारण पहचाने गये है जो हृदय की धमनी रोग की उत्पत्ति तथा प्रगति मे सहायक हो सकते हे, परन्तु उनमे बदलाव नहीं लाया जा सकता है, इन्हे अपरिहार्य कारक कहते है जैसे आनुवशिकता, उम्र, लिग आदि। एक परिवार मे अनेक व्यक्तियो को हृदय धमनी रोग होना एक सामान्य बात है, सभवत जींस पर प्रभाव के कारण मोटापा, उच्च रक्तचाप, मधुमेह तथा अधिक वसा की मात्रा आदि मे वृद्धि हो जाती हे, जिससे हृदय धमनी रोग की सभावना बढ जाती हे। यदि माता पिता मै किसी एक को यह रोग है, तो सतान मे इस रोग की सभावना दुगनी रहती हे।

अधिकतर दिल का दौरा ४५ से ६५ वर्ष की उम्र मे पडता है, इस उम्र मे अपरिहार्य कारणो की पहचान कर उनमे सुधार किया जा सकता है, अधिक उम्र वाले रोगियो मे इन कारणो मे सुधार करने के लिए औषधिया आदि देने से पूर्व रोगी मे अन्य रोगो की उपस्थिति आदि पर ध्यान देना चाहिए। हृदय धमनी रोग की सभावना पुरुषो मे अधिक रहती है, परन्तु रजोनिवृत्ति के बाद स्त्रियो मे भी इस रोग की सभावना बढ जाती है।

मधुमेह की उपस्थिति मे स्त्रियो मे हृदय धमनी रोग की सभावना अधिक रहती है। हाल ही मे कुछ ऐसे तत्वो को पहचाना गया है जिनकी कमी से रक्त मे पाये जाने वाले एल० डी० एल० वसा कण तथा लाइपोप्रोटीन ए कणो के आक्सीडेशन मे वृद्धि हो जाती है जो एथरोस्क्लेरोसिस मे सहायता करती है। इन तथ्यो को एटी आक्सीडेट्स कहते है। इन तथ्यो को बाहर से देने से हृदय धमनी रोग की स्थिति मे सुधार पाया गया है। हालाकि इस दिशा मे कुछ अध्ययनो के नतीजे शीघ्र आने की सभावना है।

हालाकि सारा विश्व ही हृदय रोगो को लेकर चितित है तथा इसके बचाव तथा निदान तथा उपचार के नए-नए तरीके खोज रहा है। परन्तु हमारे जैसे विकासशील देशो मे जहा आम व्यक्ति की आय तथा ससाधन सीमित है इस रोग का निदान तथा उपचार एक टेढी खीर है, इसलिए आवश्यक है कि इस रोग से बचाव के उपायो पर अधिक ध्यान दिया जाए।

विकसित देशो मे हृदय धमनी रोग से सम्बन्धित मौतो मे कमी आई है परन्तु हमारे देश मे इस रोग से ग्रस्त लोगो की सख्या बढ रही है। भारत मे इस रोग से होने वाली मौतो की सख्या विश्व मे इस रोग से होने वाली मौतो का करीब १७ प्रतिशत है। परन्तु यहा ध्यान देने वाली बात यह है कि इनमे ५२ फीसदी मौते ७० वर्ष से कम उम्र के रोगियो की होती है, इसके अनेक कारण सामने आ रहे है। हमारी हृदय धमनिया आकार मे छोटी होती है तथा इनमे रोग छोटी उम्र मे ही अधिक तीव्रता से बढता है। इसलिए आवश्यकता है कि काम मे लेने के उन तरीको को जो इस रोग की प्रगति मे रोक लगा सके, इनमे प्रमुख है रोजमर्रा की जिन्दगी मे कुछ नियमितता लाने की, नियमित परिश्रम या कसरत, खाने मे सतृप्त वसा की मात्रा कम लेने की, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप को काबू मे रखने की, पान मसाला, जरदा तम्बाकू, धूम्रपान आदि को त्यागने की। ✪

हृदयाघात, मधुमेह तथा अन्य रोगों के कारण व निवारण

अजमेर में अखिल भारतीय सम्मेलन की रिपोर्ट

डा० सुभाष सी० काला बाल हृदय रोग विशेषज्ञ
सतोकबा दुर्लभजी मेमोरियल अस्पताल, जयपुर

देश मे मधुमह, हृदयाघात तथा ऐसी ही अन्य बीमारियो क बढते आकडे व इलाज म आने वाली परेशानियो से जूझते काय चिकित्सको न पिछले पखवाडे अजमेर मे एक शक्षिक सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन म राज्यभर के चिकित्सको के अलावा देश-विदेश मे कई शीर्षस्थ चिकित्सा विशेषज्ञो न भाग लिया।

काय चिकित्सको के इस शक्षिक सम्मेलन मे भाग लेने वाल सभी चार सा चिकित्सक इस तथ्य से सहमत थे कि आराम तलब जीवन, धूम्रपान, शराब का सेवन, मानसिक तनाव, प्रदूषण का बढता प्रकोप, फास्ट फूड सस्कृति का फलता मायाजाल, हृदयघात व मधुमेह जसे रोगो का मुख्य कारण ह। इन बीमारियो का स्पष्ट दिखता कारण शारीरिक व्यायाम का अभाव ह। पश्चिमीकरण के अधानुकरण क चलत लागो ने रोजमर्रा का शारीरिक व्यायाम भी त्याग दिया ह।

हालात यह ह कि घर मे झाडू लगान से लेकर कपडे धान तक क शारीरिक व्यायाम के काम लोग बटन दबाने वाली मशीन सस्कृति से करन लग ह। लोग घर क दरवाजे से वाहनो पर सवार होते ह व सारा काम वाहनो पर ही लद कर निपटाने के बाद घर के दरवाज तक वाहन से पहुचत ह। एसे म शरीर रूपी मशनी को चलाने के लिए आवश्यक व्यायाम भी त्याग दिया गया है। यही कारण हे कि लोग मधुमेह व हृदयाघात जसी बीमारियो के शिकार होते जा रहे हैं।

शक्षिक सम्मेलन मे अपने शोध कार्यो का आदान-प्रदान करने के लिए भारतीय मूल के रहने वाले अमरीका मे कार्यरत प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डाक्टर देवेन्द्र मेहता, भारतीय मूल के ही आबूधाबी (यू०ए०ई०) मे कार्यरत मधुमह के प्रसिद्ध चिकित्सक एफ०क० शमा, टाटा ममोरियल अस्पताल मुम्बई के प्रसिद्ध हृदय कसर विशषज्ञ डाक्टर एस० एच० आडवानी, दिल्ली क वाई० पी० मुन्जाल डा० आर० आर० आसलीवाल, आगरा क डाक्टर प्रदीप माहेश्वरी, बगलोर के डा० अनिल कपूर सहित राज्य क चार सा चिकित्सको ने सम्मलन मे भाग लिया।

शारीरिक व्यायाम के अभाव मे हृदयघात व मधुमेह जसे बढते रोगो की सत्यता इस आकड से उजागर होती ह कि दुनिया भर मे जापान ऐसा दश ह। जहा प्रति एक लाख लोगो मे सो मात्र २६ ५ व्यक्ति ही हृदयघात से पीडित ह। जापान के लोगो के बारे म यह जानकारी सर्वविदित ह कि जापानी लोगो का शारीरिक मेहनत के बारे मे नजरिया दुनिया मे प्रचलित ह। इलेक्ट्रोनिक के क्षेत्र मे ऊच शिखर तक पहुच चुके जापानी शारीरिक मेहनत का भी बराबर महत्त्व देते है।

हृदय की अनियमितता -

भारतीय मूल क अमरीका मे कार्यरत डाक्टर देवन्द्र मेहता ने हृदय की अनियमितता पर अपन शाध पत्र म इस बीमारी के कारणा व निवारणा का विस्तृत रूप म उल्लेख किया। डाक्टर महता ने बताया कि हृदय एक एसी मशीन है जो पूरे शरीर का पम्प क रूप म सचालित करती ह व स्वय एक बटरी ''पस मेकर' से सचालित होती ह। जन्म से पूर्व ही हृदय की धडकन शुरू होती ह व मृत्यु क समय तक यह धडकन चलती रहती ह। शिशु क जन्म क बाद यह धडकन कुछ साल तक १५० धडकन प्रति मिनट हाती ह। इसके बाद से यह रफ्तार ७२ धडकन प्रति मिनट के हिसाब से दिन-रात चलती रहती ह। हृदय की इस धडकन की गति मे अनियमितता हृदय के रोगो के रूप म उजागर होती हे। इसमे मुख्य रूप स हृदय की धडकन निर्धारित गति से ज्यादा होने व कम होने स हृदय राग उत्पन्न हो

जाते है। इसमे सबसे ज्यादा खतरनाक स्थिति धडकन का निर्धारित संख्या मे कम होने पर उत्पन्न होती है। प्रकृति ने हृदय की धडकन को सुचारु रूप से चलाने के लिए छोटे से इलेक्ट्रिकल जैसा सिस्टम "पेस मेकर" के रूप मे शरीर मे समायोजित किया है।

पेस मेकर मे किसी तरह की रुकावट व हृदय की धमनियो मे रुकावट मृत्यु का कारण भी बन सकती है। इसमे खराबी का बहुत बडा कारण शरीर मे असतुलित मात्रा मे भोजन के साथ पहुचने वाले "कोलस्ट्रोल" है। कोलस्ट्रोल की परते पेस मेकर व धमनियो मे जमा होने से हृदय की धडकन मे अनियमितता पैदा हो जाती है।

उन्होने यह जानकारी दी कि प्राकृतिक पेस मेकर मे खराबी होने पर इसकी जगह कृत्रिम पेस मेकर लगाने देने से हृदय की अनियमितता दुरुस्त की जा सकती है। कई बार पेस मेकर मे अनियमितता क्षणिक होती है जिसे एक तार द्वारा सचालित बैटरी से कुछ समय तक नियत्रित किया जा सकता है। लेकिन यदि यह अनियमितता लम्बे समय तक चले तो इसके स्थान पर स्थाई पेस मेकर लगा दिया जाता हैं।

हृदय की एञ्जियोग्राफी -

एस्कोर्ट अस्पताल, दिल्ली के डॉ० आर० आर० कासलीवाल ने अपने शोध पत्र मे हृदय की एञ्जियोग्राफी कर धमनियो मे आई रुकावट को दुरुस्त करने की प्रक्रिया को बताया। उन्होने बताया कि हृदय की धमनियो मे जमा कोलस्ट्रोल धडकन को अनियमित कर देता है। इस अनियमितता को एञ्जियोग्राफी कर ठीक कर दिया जाता है। एञ्जियाग्राफी प्रक्रिया मे एक पतले तारनुमा औजार "बेलूनकथेटर" को शरीर मे अन्य धमनियो से हृदय की रुकावट वाहिनी धमनी तक पहुचाया जाता है। टेलीविजन पर देखकर मशीन को सेट कर कथेटर मे लगे गुब्बारे को फुलाया जाता है। गुब्बारा फुलाने से धमनी मे जमा कोलस्ट्रोल का प्लाक (चकत्ता) दब जाता है इसके दबते ही धमनी की रुकावट ठीक हो जाती है।

मधुमेह मे हृदयघात—

दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान सस्थान के डा० वाई०पी० मुञ्जाल का मानना है कि मधुमेह मे से ग्रसित मरीजो मे हृदयघात की सम्भावना अधिक रहती है। शरीर मे इसूलिन अग्न्याशय से निकलता है। शरीर मे इसूलिन की भी सीमित मात्रा होती है। इस प्रकार के मधुमेह मे इसूलिन की मात्रा कम होती है। जिससे रक्त मे शर्करा की मात्रा बढ जाती है। दूसरे प्रकार के मधुमेह मे शरीर मे इसूलिन शरीर के योग्य नहीं होता। इसके फलस्वरूप रक्त मे शर्करा की मात्रा बढ जाती है। अत्यधिक मात्रा मे इसूलिन बनने से शरीर की तत्रिकाए क्षीण हो जाती है। मधुमेह से ग्रसित रोगी मे तत्रिकाए क्षीण होने से तत्रिकाओ पर होने वाले प्रभाव का पता नहीं चलता। इसी कारण कई बार हृदयाघात होने पर मरीज को दर्द का अहसास नहीं होता ऐसी स्थिति मे हृदय की अनियमितता बढने से मरीज की मौत भी हो सकती है।

मधुमेह का उपचार—

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान सस्थान दिल्ली के डा० निखिल टण्डन ने मधुमेह के उपचार पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। डाक्टर निखिल का कहना था कि मधुमेह के मरीज की बीमारी के बारे मे घर के सभी सदस्यो को मरीज की बीमारी की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।

यदि शरीर मे शर्करा की मात्रा अधिक हो तो मरीज का भोजन डाक्टर की राय से निर्धारित किया जाना चाहिए। शरीर मे शर्करा की मात्रा अधिक या कम होने से मरीज की तबियत बिगड जाती है। ऐसी स्थिति मे कई बार मरीज बेहोशी की हालत मे भी पहुच सकता है। यदि परिवार वालो को मधुमेह की बीमारी का सही ज्ञान हो तो मरीज का उपचार सही समय व सही तरीके से किया जा सकता है। कई बार मधुमेह के मरीज को चक्कर आने पर लोग उसे कमजोरी की शिकायत समझ लेते है व ग्लूकोज आदि पिला देते है। ऐसे मे मरीज के शरीर मे शर्करा की मात्रा अत्यधिक होने से मरीज मौत के मुह मे भी जा सकता है। घर के सदस्यो को मरीज के रक्त मे शर्करा ज्यादा होने से उत्पन्न होने वाले लक्षणो का भी पता होना चाहिए ।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान सस्थान मे हुए अनुसधानो से यह साबित हो गया कि दाना मेथी व करेले के उपयोग से मधुमेह के मरीज मे शर्करा की मात्रा नियत्रित की जा सकती है।

मधुमेह में तंत्रिका-तत्र की खराबी

सयुक्त अरव अमीरात मे कार्यरत चिकित्सक डा० ए०के० शर्मा मूल रूप से देहरादून के रहने वाले हे। उनका मानना है कि मधुमेह से शरीर के तत्रिका-तत्र पर गहरा व विपरीत असर पडता है। मधुमेह रोग समुचित व्यायाम नहीं करने व अत्यधिक कैलोरी वाले भोजन के सेवन से होता है। उन्होने वताया कि मधुमेह के कारण शरीर मे सवेदना नष्ट होने से कई वार रोगी दुर्घटनाओ का शिकार होता हे।

तत्रिकाओ की सवेदन नष्ट होने से रोगी को जलने व चोट लगने का अहसास नहीं होता व रोगी चोटग्रस्त हो जाता है। मधुमेह के रोगी मे शरीर पर लगी चोट ठीक होने मे काफी समय लगता है। उन्होनें सुझाव दिया कि मधुमेह के रोगी को चोटग्रस्त होने से हमेशा वचना चाहिए व शरीर की विशेष देखभाल करनी चाहिए। अगुलियो के नाखून काटते समय विशेष सावधानी वरतनी चाहिए ताकि नाखून गहरा काटने से कहीं जख्म नहीं हो जाए। मधुमेह के मरीज को दाढी वनवाते या वनाते समय विशेष ध्यान रखना चाहिए ताकि किसी प्रकार का कट नहीं लग जाए। ऐसे मरीज को सही फिटिग वाले मुलायम जूते पहनने चाहिए ताकि जूतो से पैर नहीं कटे। यदि इस तरह की असावधानियो से मरीज को चोट लग जाती हे तो वह आसानी से ठीक नहीं होती।

उन्होने वताया कि शरीर पर लगी चोट लम्वे समय तक ठीक नहीं होने व वार-वार पेशाव आने जेसी वाते मधुमेह के लक्षणो मे से है। ऐसी स्थिति मे मरीज के रक्त की शर्करा परीक्षण कराकर सतुष्टि कर लेनी चाहिए। डाक्टर शर्मा अवूधावी (यू०ए०ई०) स्थित ऐलेन विश्वविद्यालय मे उपाचार्य के पद पर कार्यरत है। डाक्टर शर्मा 'इटरनेशनल जनरल डाईबिटीज' के सम्पादक भी हे। मधुमेह पर इनके द्वारा लिखी गई पुस्तक कॉम्पलीकेशन्स ऑफ डाइविटीज चिकित्सको के लिए काफी उपयोगी सावित हुई है।

भारत मे मधुमेह की देखभाल—

वगलोर के डॉ० अनिल कपूर ने भारत मे मधुमेह के तेजी से वढने व इसकी रोकथाम के सम्वन्ध मे अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। भारत मे मधुमेह के प्रसार को रोकने मे अशिक्षा व गरीवी मुख्य रूप से आडे आ रही है। गरीव तवके के लोगो मे मधुमेह के लक्षणो को नहीं समझ पाने से व इलाज के अभाव मे रोग वढ जाता है। गरीव तवके के लोग मधुमेह जेसी वीमारी का पता चलने पर भी डाक्टरो के इलाज की वजाए यार दोस्तो व नीम-हकीमो से इलाज करा लेते ह। इन लोगो मे इस मधुमेह की उपस्थिति मे स्त्रिया मे हृदय धमनी रोग की सभावना अधिक होती है। हाल ही मे कुछ ऐसे तत्त्वो को पहचाना गया है, जिनकी कमी से रक्त मे पाए जाने वाले एल० डी० एल० वसा कण तथा लाइपोप्रोटीन के कणो के आक्सीडेशन मे वृद्धि हो जाती हे, जो एथरोस्कलेरोसिस मे सहायता करती है। इन तत्वो को एटी आक्सीडेट्स कहते ह। इन तत्वो को वाहर से देने से हृदय धमनी रोग की स्थिति म सुधार पाया गया हे। हालाकि इस दिशा म अभी कुछ अध्ययनो के नतीजे शीघ्र आने की सभावना ह।

हालाकि सारा विश्व ही हृदय रोगो को लेकर चितित है तथा इसके वचाव, निदान तथा उपचार के नए-नए तरीके खोजे जारहे हे, परन्तु हमारे जसे विकासशील देशो म जहा आम व्यक्ति की आय तथा ससाधन सीमित ह, इस रोग का निदान तथा उपचार एक टेढी खीर हे, इसलिए आवश्यकता हे कि इस रोग से वचाव क उपायो पर अधिक ध्यान दिया जाए।

विकसित देशो मे हृदयधमनी रोग से सम्वन्धित मोतो मे कमी आई हे, परन्तु हमारे देश मे इस रोग से ग्रस्त लोगो की सख्या वढ रही हे। भारत मे इस रोग से होने वाली मोतो की सख्या विश्व मे इस रोग से होने वाली मातो का करीव १७ प्रतिशत हे, परन्तु यहा ध्यान देने वाली वात यह है कि इनमे से ५२ फीसदी मौते ७० वर्ष से कम उम्र के रोगियो की होती है, इसके अनेक कारण सामने आ रहे है। हमारी हृदय धमनिया आकार मे छोटी होती हे तथा इनमे रोग छोटी उम्र मे ही अधिक तीव्रता से वढता हे इसलिए आवश्यकता है, काम मे लेने के उन तरीको की जो इस रोग की प्रगति मे रोक लगा सके, इनमे प्रमुख है रोजमर्रा की जिदगी मे कुछ नियमितता लाने की, नियमित परिश्रम या कसरत, खाने मे सतृप्त वसा की मात्रा कम लेने की, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप को काबू मे रखने की, पान मसाला, जरदा, तम्वाकू, धूम्रपान आदि को त्यागने की।

उचित आहार से हृदय रोग पर काबू

डा० शुभकर बनर्जी
वी०—२२६ सादतपुर करावल नगर रोड, दिल्ली —११० ०६४

यदि दिल का दर्द उत्पन्न हो तो समय नष्ट किए विना रोग की चिकित्सा प्रारम्भ कर देनी चाहिए। वृद्ध व्यक्तियो मे विना दर्द के लक्षण वाले दिल के दोरे भी पड सकते हे। ऐसे रोगियो को समय-समय पर अपनी जाच तथा चिकित्सा करवाते रहना चाहिए।

यदि छाती मे उत्पन्न होने वाला दर्द २० मिनट से भी ज्यादा देर के लिए हो, छाती मे भारीपन हो, पसीना छूटता हो, अचानक कमजोरी महसूस करता हो तथा सास फूलता हो, तो समझ लेना चाहिए, हृदय रोग की चेतावनी मिल चुकी हे ऐसे लक्षण प्रकट होने पर रोगी को तुरन्त एस्प्रीन दनी चाहिए। जरूरत पडने पर इस दवा को घर पर भी दिया जा सकता हे।

उसके वाद तुरत पूरी जाच की आवश्यकता हे। हृदय रोग का पता चलते ही तुरत रक्त का थक्का घोलने वाली दवा भी घर पर ही चिकित्सक द्वारा दी जानी चाहिए। थक्का घोलने के लिए इट्राविनस स्ट्रेप्टोकाइनेज तथा यूकोकाइनेज नामक दवाए दी जाती हे। इस प्रकार की दवा देने से हृदय रोगी की मृत्यु की आशका को ४० से ५० प्रतिशत तक कम किया जा सकता है।

आधुनिक युग मशीनीकरण का युग हे। इसी युग की देन है - मोटापा, मधुमेह तथा हृदय रोग । इन रोगो पर काबू पाने के लिए महज'दवा का सेवन करना ही काफी नहीं हे। रोगी की जीवन शेली भी व्यवस्थित होनी चाहिए, क्योकि अव्यवस्थित अनियमित जीवन शेली ही रोग का मूल कारण हे।

हृदय रोगी के लिए कच्ची सब्जी का रस काफी लाभप्रद हे। इन रसो मे उपयोगी खनिज लवण, विटामिन तथा एजाइम्स आदि मोजूद रहते है। अत किसी भी सब्जी का रस (खास करके हरी सब्जी का रस) दिन मे एक दो बार अवश्य लेना चाहिए। परिणाम स्वरूप रोगी का रक्त शुद्ध होता है तथा रक्त का प्रवाह वढने के कारण धमनियो का अवरोध दूर होने मे भी सहायता मिलती हे।

दरअसल दिल के रोगियो के लिए सब्जियो का रस टॉनिक की तरह का काम करता हे। जूसर की सहायता से गाजर, पुदीना, अदरक, टमाटर का रस निकाला जा सकता है। इसके अलावा साग तथा सेव आदि फलो का रस भी लिया जा सकता है। न केवल हृदय रोग वल्कि मधुमेह के रोगियो के लिए भी सब्जी का रस लाभप्रद ह। पेठा, लौकी खीरा तथा हरी तोरई के रसो का सेवन नीबू के साथ किया जाता है।

हृदय रोगी के लिए केले के तने का रस काफी उपयोगी हे। इस रस को शहद मे मिलाकर लेना चाहिए। इसके अलावा पालक, मेथी, आवले का रस भी हृदय रोगी के लिए उपयोगी सिद्ध होता हे। आवले के रस मे शहद तथा पानी मिला लेने से रस स्वादिष्ट हो जाता है। साथ ही ताजा हरा आवला भी हृदय रोगी के लिए लाभकारी हे। सलाद के रूप मे भी कच्चे आवले को दोपहर व रात के भोजन के साथ लिया जा सकता हे। आवले का मुरब्बा तो लाभकारी होने के साथ-साथ स्वादिष्ट भी हे।

एक वडे गमले मे गेहू को उगाकर ८-१० इच्च वडा पौधा हो जाने पर उसे ऊपर से केची से काट ले, उसके वाद उसे धोकर मिक्सी मे पीस ले। गीले कपडे मे उस रस को छानकर तथा निचोडकर थोडा पानी मिलाकर रोगी को देना लाभकारी हे। इस प्रकार के रस मे ऐसे तत्व भी मौजूद रहते है, जो केसर जैसे रागो से भी लडने की छमता रखते हे।

इसके अलावा मोसम के अनुसार मौसमी फलो (जेसे सतरा, अन्ननास, मौसमी आदि) का रस भी लिया जा

सकता है। नारियल का पानी भी काफी लाभकारी होता है।

दालो मे साबूत मूग तथा मोठ का ही प्रयोग करना उचित है। काले चने का सूप भी लाभकारी है। बनाने से पहले दोनो को दस-१२ घण्टे तक भिगोकर रखना चाहिए। दालो को अकुरित कर लेना तो और भी लाभकारी है। अकुरित तथा भीगी दाले न केवल जल्दी बन जायेगी बल्कि स्वादिष्ट भी होगी।

प्राय ऐसा देखने मे आता है कि आजकल लोग नाश्ते तथा खाने मे मक्खन, डबलरोटी, पराठा आमलेट, सेंडविच तथा घी तेल युक्त पकवान आदि लेते है। परन्तु ऐसी चीजो का कम से कम सेवन करना चाहिए तथा दाल, सब्जी का प्रयोग करना प्रारम्भ कर देना चाहिए। खाने को स्वादिष्ट बनाने के लिए तथा मुनक्का का प्रयोग भी किया जा सकता है। साथ ही कद्दू कस मे गाजर को कसकर भी इन चीजो मे मिलाया जा सकता है। जो लोग नाश्ते मे या भोजन के बाद दूध का सेवन करते है, उन्हे चाहिये कि पीने से पहले क्रीम निकाल ले।

गाजर, लौकी, सूजी की खीर या दूध का दलिया नाश्ते मे लेना उचित है। ऐसा नाश्ता हल्का तथा जल्दी पचने वाला होता है। साथ ही पेट साफ करने का काम भी करता है। गर्मियो के मौसम मे मट्ठ का सेवन भी लाभकारी है।

सागो मे पालक, मथी, बथुआ, आदि प्रयोग करना चाहिए। इस प्रकार के सागो को अच्छी तरह धोकर मिक्सी मे पीस लेना चाहिए। इसमे आटा गूध कर रोटिया बनानी चाहिये। यदि आटा गूधने के बाद थोड़ा खमीर हो जाय तो और भी अच्छा है। क्योकि यह सुपाच्य होता है।

सोयाबीन का दही हृदय रोगियो के लिए काफी लाभप्रद है। एक पाव सोयाबीन को एक बर्तन मे १२-१४ घण्टे तक भिगोकर रख ले। इस सोयाबीन का पानी मे डालकर पीस ले। उसके बाद पानी मिलाकर उसका दूध सा बना ले। सूप वाली छलनी मे छानकर दस पन्द्रह मिनट तक उबाल लेना चाहिए। इसके बाद जामन लगाकर उसका दही जमा ले। इस दही का सेवन रात व दोपहर के भोजन के साथ करना लाभकारी है। कुल मिलाकर यह करना उचित है कि हृदय रोगी उचित आहार लेकर भी रोग पर काफी हद काबू पा सकते है।

नोट— उपर्युक्त अनुप्रयोग चिकित्सक की सलाह से ही आजमाये।

बच्चों के हृदय रोग पर तुरन्त ध्यान दें

यदि नवजात शिशु की धडकन तेज हो रही है या दूसरे ऐसे लक्षण प्रकट हो रहे हो जैसे अच्छी तरह से दूध नहीं पीना, वजन सही ढग से नहीं बढ रहा है, माथे तथा सिर पर अक्सर पसीना आना, बार-बार निमोनिया का शिकार हो रहा है, तो लापरवाही न करे, दरअसल बच्चो मे हृदय रोग के ये प्रमुख लक्षण है। यदि रोग का प्रकोप ज्यादा गम्भीर हो, तो बच्चे को होट तथा नाखून भी भागते खेलते तथा रोते समय नीले पडने लगते है। ऐसी परिस्थितियो मे चिकित्सक की सलाह लेना बहुत जरूरी है। यदि लापरवाही या उपेक्षा बरती तो मा-बाप के लिए आजीवन पश्चात्ताप का कारण बन सकता है।

बच्चो मे हृदय रोग के लक्षण प्रकट होते ही चिकित्सा प्रारम्भ कर दी जाय तो बच्चे की जान बचाने मे अवश्य ही सफलता मिल सकती है। दूसरी ओर उपेक्षा करने पर बच्चो के विकलाग होने तथा उसकी मृत्यु तक होने की आशका बन जाती है।

दरअसल बच्चो मे हृदय की दो प्रकार की बीमारिया होती है (१) कजनाइटिल जो जन्म के समय से ही बच्चे मे होती है। (२) रियूमटिक बीमारिया जो पाच से पन्द्रह साल के बच्चो को होती है।

कजनाइटिल बीमारियो मे बच्चा के हृदय मे कइ प्रकार के छेद होते है तथा दूसरी बीमारी बच्चो के नीला होने की होती है। इसके अलावा हृदय के बाहर भी छेद की बीमारी बच्चो मे देखने को मिलती है। इसे डक्टस कहते

ह।

आठ मिलीमीटर तक के छेद, जो डेढ साल से दो साल के बच्चो मे होते है, उनके अपने आप बन्द होने की आशा ८० प्रतिशत रहती है। परन्तु छोटे छेद वाले बच्चो की भी नियमित जाच चिकित्सक से करवाते रहना चाहिए। सात से आठ प्रतिशत ऐसे मामले होते ह, जिनमे शल्य चिकित्सा की जरूरत पड जाती है।

इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि जिन बच्चो के छेद छोटे होते हे, उनके दात नाक-कान या दूसरे किसी भाग मे यदि ऑपरेशन करवाना हे, तो सम्बन्धित चिकित्सक को उस छेद के बारे मे बता देना चाहिये।

प्राय ऐसी शल्य क्रियाओ से हृदय के ऊपर पस जम जाता है, जटिलताए पैदा हो जाती हे। दूसरी ओर हृदय के नीचे के भाग मे ही होने वाले बडे छेद को शल्य क्रिया द्वारा बन्द भी कर दिया जाता है, क्योकि यह छेद काफी घातक होता हे। इससे फेफडो की नसो पर काफी दबाव पड जाता है। साथ ही बच्चे के होठ तथा नाखून उपर्युक्त लक्षणो सहित नीले पडने लगते हे।

यदि बच्चा किसी चिकित्सा के लिये ओर किसी चिकित्सक के पास गया हे तथा जाच के दोरान चिकित्सक यह कहता हे कि उन्हे बच्चे के हृदय मे एक अतिरिक्त आवाज (या मर-मर) सुनाई पड रही है, तो उसे तुरन्त किसी अच्छे हृदय रोग विशेषज्ञ के पास ले जाना चाहिये।

बच्चे की एजियाग्राफी करने के बाद छेद के आकार के बारे मे जानकारी मिल जाती है। यदि छेद बडा हो, तो दो वर्ष की उम्र तक के बच्चे का ऑपरेशन करवा लेना चाहिये।

यदि बच्चा थोडा बडा है, तो आपरेशन से खतरे की आशका बढ जाती ह। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि यदि बडे छेद वाले बच्चो के स्वास्थ्य मे सुधार आ रहा ह या वह बिल्कुल सामान्य दिख रहा है, तो भी यह बात समझ लेना सरासर गलत हे कि छेद अपने आप बन्द हो रहा है।

ऐसे मामलो मे यदि समय पर आपरेशन नहीं किया गया, तो एक उम्र तक पहुँच कर बच्चो का स्वास्थ्य एक दम गिरने लगता है। यहा तक कि बडा होकर वह विकलाग तक हो सकता हे। महिलाओ के मामले मे वे गर्भवती नहीं हो सकती है। उनकी मृत्यु तक हो सकती हे।

दूसरी ओर उम्र के साथ-साथ छेद ओर भी बडा होने लगता है, जबकि बडे छेद कि शल्य क्रिया से लाभ की बजाय हानि ही होती है। अत जान बचाने का एक ही उपाय रह जाता है कि हृदय तथा फेफडो का प्रत्यारोपण करने से ही किसी ऐसी रोगी की जान बचाई जा सकती हे। परन्तु भारत मे अभी यह चिकित्सा पूरी तरह से या आसानी से उपलब्ध नहीं है।

यह बात लगभग तय हे कि हृदय के ऊपर वाले भाग मे स्थित छेद अपने आप बन्द नहीं होते हे। अत इनका आपरेशन भी जरूरी हे। परन्तु एक अच्छी बात यह भी ह कि ये छेद इतने खतरनाक नहीं होते तथा थोडे समय रुककर भी इनका आपरेशन करवाया जा सकता हे।

आजकल एक आधुनिक तकनीक के अन्तर्गत बिना आपरेशन के एक तार की सहायता से छतरी जेसी डिस्क छेद को ढक लेती हे। दिल्ली के कुछ गिने चुने अस्पतालो मे ही अभी यह तकनीक प्रारम्भ हो सकी हे।

वेसे बच्चो मे डॅक्टस बीमारी भी जन्मजात होती हे। इसमे हृदय के बाहर की दो नसे आपस मे जुडी होती हे। साधारण भाषा मे इस भी हृदय मे छेद होना ही कहते ह। परन्तु यह हृदय के बाहर होता हे। इसमे एक आपरेशन के द्वारा दो नसो के बीच की टयूब को एक धागे से बन्द कर देते है। यह आपरेशन लगभग १०० प्रतिशत सफल रहते है। बच्चो मे हृदय रोग के १२ प्रतिशत मामलो मे यह रोग होने की आशका होती है।

बच्चो मे पेदा होते ही नीला हो जाना एक घातक रोग है। यदि ऐसी परिस्थिति मे चिकित्सा मे दो या तीन घण्ट की भी देरी हो जाती है तो नवजात बच्चे की मृत्यु का भय बना रहता हे। जन्म के तुरन्त बाद ही बच्चे के होठ तथा नाखून रोने पर पीले पड जाते ह तो यह समझ लेना चाहिय की स्थिति घातक हे।

उपर्युक्त लक्षण वाले रोग म हृदय की नस गलत जुडी होती हे परिणाम स्वरूप गन्दा खून शरीर मे चला जाता ह तथा साफ खून फेफडो म चला जाता ह। साथ ही फेफडो के वाल्व सुकुडे होते ह जिससे खून साफ नहीं हो पाता अत आपरेशन के बाद इन कमियो को दूर कर दिया जाता हे। रियूमटिक हृदय रोग पाच से पन्द्रह साल के बच्चो का

हो जाता हे। यह वेक्टेरिया के कारण वच्चो को गला अक्सर खराव रहता हे साथ ही उसे गठिया रोग हो जाता हे। यह दोनो मिलकर हृदय रोग का कारण वन सकते हे।

इस रोग मे वच्चे को वार-वार वुखार आता हे। इस वीमारी से भी वाल्व मे सिकुडन आ जाती है उरामे रिसाव होना प्रारम्भ हो जाता हे तथा हृदय वढ जाता है। परिणाम स्वरूप इस वीमारी से पीडित वच्चे की सास फूल जाती ह। धडकन भी तेज हो जाती हे तथा वच्चा सीधा नहीं लेट पाता या जो वह वहुत सारे तकिये लेकर सोता हे या वैठकर सोता हे।

वेसे र्‌यूमैट्रिक हृदय रोग से पीडित ५० प्रतिशत वच्चे गठिया से पीडित नहीं होते। अत गठिया को ही इस रोग का लक्षण नहीं मानना चाहिए।

इसमे सिकुडे हुए वाल्व को कैथेटर वैलून द्वारा खोला जाता है। यह काम विना आपरेशन के भी किया जाता हे। रिसाव को वन्द किया जाता हे। यदि वाल्व मे रिसाव ज्यादा हो गया हो तो आपरेशन के द्वारा कृत्रिम वाल्व भी लगाया जाता है। परन्तु कृत्रिम वाल्व लगाने के वाद वच्चे को जीवन भर खून पतला करने की दवा खानी पडती हे ताकि वाल्व पर खून जमा न हो सके।

रियूमैटिक हृदय रोगो की चिकित्सा असभव नहीं ह गठिया रोग से पीडित वच्चो को पेनसिलिन का इजेक्शन चिकित्सक की सलाह पर लगवाना चाहिए। अल्ट्रा साउन्ड से वाल्व की स्थिति का पता लग जाता हे। अत खरावी का पता चलते ही इसका उपचार कराना चाहिए।

अत माता-पिता को चाहिए कि लक्षण प्रकट होते ही सतर्क हो जाये ओर सुयोग्य चिकित्सक से अपनी सतान की चिकित्सा कराये।

हृदय की बीमारियों से बचाव

यामिनी चतुर्वेदी
रिसर्च स्कॉलर जयपुर

चरक ने हृदय को शरीर का महत्वपूर्ण केन्द्रीय अग माना हे। उनके अनुसार हृदय से ओज की उत्पत्ति होती ह ओर उसके अलावा हृदय सवेदो को ग्रहण करने की शरीर की क्षमता को भी प्रभावित करता हे।

हृदय शरीर के मुख्य अवयवो का आधार हे और ये अवयव ह— वुद्धि, मन, सवेदी अग ओर आत्मा।

आज का आधुनिक चिकित्सा शास्त्र जिस तरह हृदय को जीवन के तीन सबसे महत्वपूर्ण अवयवो मे से एक मानता ह, उसी तरह आयुर्वेद मे भी हृदय को सबसे महत्वपूर्ण जेविक अगो मे से एक माना हे। हृदय अनैच्छिक पेशियो का वना हे ओर इसीलिए सीधे तौर पर इसकी कार्य प्रणाली पर कोई कावू नहीं पाया जा सकता। इसीलिए हृदय की कार्यप्रणाली के खराव होने पर असली कारणो की जाच करनी चाहिए अर्थात् रोगी की तह मे जाना चाहिये ओर फिर उसे दूर करना चाहिए।

हृदय रोग के कारण—

आयुर्वेद ने उन कारणो पर जोर दिया हे, जो रोग के लिए जिम्मेदार होते हे और वे है— मिथ्या आहार आहार-विहार एव रहन-सहन का दोषपूर्ण तरीका। इसका मतलव ज्यादा तले हुए मसालेदार गरिष्ठ भोजन का सेवन नहीं करना चाहिए ओर साथ ही ठूस-ठूस कर भी नहीं खाना चाहिए। आराम पसन्द जीवन शैली से मोटापा वढता है और इससे हृदयाघात भी हो सकता हें। इसके अलावा ज्यादा काम, चिन्ता, भय दिमाग पर बोझ आदि ये भी कुछ कारण हे जिनसे हृदय रोग की सभावनाये वढ जाती ह। कुछ और भी कारण हे, जिनसे हृदय रोग उभर सकता है। जैसे— उच्च रक्तचाप मधुमेह, रक्त मे अधिक कोलेस्ट्रोल, धूम्रपान, मदिरापान, जीवन शेली मे जवरदस्त परिवर्तन, भावनात्मक, शारीरिक वित्तीय या पर्यावरणीय

आदि।

लक्षण—

शरीर के लक्षण हृदय की खराब कार्यप्रणाली के बारे मे काफी पहले ही सूचना दे देते है कुछ लक्षण काफी आसानी से पहचाने जा सकते है। जेसे व्यायाम के वक्त शिथिलता, कमजोरी, थकान, असामान्य त्वचा, बुखार, मुह मे सूखापन और खराब स्वाद, जी घबराना, खराब पाचन क्षमता, बदन में भारीपन, बेचेनी, तकलीफ, दिमागी असतुलन, पसीना आदि के कुछ लक्षण सीधे हृदयघात की तरफ इशारा करते है। जेसे चलने या सीढिया चढने मे सास फूलना, जूते के धागे न बाध पाना, धडकन का तेज होना, पैरो मे सूजन और पेट फूलना।

बचाव के उपचार—

चरक के अनुसार अच्छे स्वास्थ्य के तीन आधार स्तम्भ है। भोजन, नींद और रहन-सहन का नियम। बचाव, उपचार से बेहतर है— आधुनिक चिकित्सा शास्त्र की तरह आयुर्वेद का भी यही मौलिक सिद्धान्त है। हृदय रोग आन्तरिक, बाहरी और मनोवैज्ञानिक कारणो से हो सकता है। आन्तरिक कारण शरीर के दोषो से उत्पन्न होते हे, बाहरी कारणो मे वाह्य कारण जेसे जहरीला पदार्थ या कोई चीज हो सकती है और मानसिक व्याधिया मन के विचारो से होती हे। इन दोषो को मिटाने के लिए आन्तरिक एव वाह्य सफाई ओर आपरेशन का सहारा लेना पडता हे।

अक्सर हृदय रोगो की परिणिति हृदयघात के रूप मे होती हे, क्योकि शरीर की आवश्यकताओ की क्षमता कम हो जाती है। चरक ने स्वस्थ एव बीमार दोनो के लिए खान पान का तरीका बताया है। भोजन तब करना चाहिए जब पहले का खाया पच गया हो और भोजन न ज्यादा गर्म होना चाहिए और न ही ठण्डा, इसके अलावा भोजन अच्छी तरह साफ जगह पर करना चाहिए। हडबडी या फिर बहुत धीरे-धीरे खाया हुआ भोजन बदन के लिए फायदा नहीं करता। हडबडी दु ख, भय, गुस्सा इत्यादि भाव हे जिनमे खाया हुआ अच्छा भोजन भी नहीं पचता। भोजन करने मे, भोजन करने का तरीका, सभी जरूरी भोज्य पदाथो का समावेश और स्वास्थ्य के हिसाब से परहेज का ध्यान रखना चाहिए।

कम वसा और कोलेस्ट्रोल युक्त भोजन—

भोजन करने की दोषपूर्ण आदते एक तरह से धीरे-धीरे शरीर खत्म करती रहती है। भोजन मे अधिक कोलेस्ट्रेल की मात्रा से उच्च रक्तचाप, धमनियो मे थक्का जमना आदि शिकायते हो जाती है। धमनियो मे रुकावट और हृदय रोगो का होना इस बात पर निर्भर करता हे कि रक्त मे कोलेस्ट्रोल की मात्रा २५० मि० ग्रा० १०० मि० ली० से ज्यादा है तो हृदय रोगो की सभावनां बढ जाती हे, जबकि पॉली अन्नसेचुरेटेड फेट्स से यह मात्रा काफी हद तक नियत्रित होती है। कोलेस्ट्रोल भी दो तरह के होते हे (एल० डी० एल०) या लो डैन्सीटी लाइपोप्रोटीन ओर (एच० डी० एल०) या हाई डेन्सीटी लाइपोप्रोटीन। रक्त मे एल डी एल की अधिक मात्रा से तकलीफे उत्पन्न होती हे इसीलिए इसे बुरा कोलेस्ट्रोल कहा जाता हे। जबकि एच डी एल ज्यादा हो, तो बेहतर स्वास्थ्य की उम्मीद की जा सकती ह।

कम कैलोरी युक्त भोजन—

यदि भोजन मे केलोरी की मात्रा अधिक हो तो यह भी हृदय रोगो का एक प्रमुख कारण बन सकती हे। अधिक केलोरी वाले भोज्य पदार्थ जेसे ज्यादा तला हुआ या मीठा भोजन हमेशा कम मात्रा मे लेना चाहिए। क्योकि इससे प्राप्त ऊर्जा शरीर मे स्टोर होती जाती हे ओर व्यक्ति मोटा होता जाता हे। अक्सर देखा जाता हे कि किसान सबसे ज्यादा मेहनत का काम करते हे ओर अपने शरीर की सारी अतिरिक्त ऊर्जा जला देते हे इसलिए उनमे हृदय रोग सबसे कम होता हे। इसीलिए सही मात्रा मे भोजन और व्यायाम हृदय को स्वस्थ रखने के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है।

हृदयाघात

कारण व निवारण सम्बन्धी आधुनिक पद्धतियाँ

प्रो० (डा०) एम० पी० श्रीवास्तव
हृदय रोग विशेषज्ञ बतरा अस्पताल, नई दिल्ली

हृदय शरीर का एक बहुत सक्रिय अग है और शरीर के विभिन्न भागो मे शुद्ध रक्त मासपेशी एक मिनट मे ७० से ८० बार सिकुडकर करती है। इस कार्य के लिए आवश्यक आक्सीजन व पौष्टिक पदार्थ २ धमनिया के द्वारा प्राप्त होते है। इन धमनिया को कारोनरी आर्टरी या हृदय धमनी कहते है।

इन धमनियो द्वारा हृदय की मासपेशी को एक निश्चित मात्रा मे आक्सीजन प्राप्त होती है। इस प्रणाली की खूबी यह है कि हृदय को सामान्य से अधिक आक्सीजन की मात्रा की आवश्यकता होने पर धमनियो द्वारा अपने आप पूरी कर दी जाती है। जब किन्हीं कारणो से हृदय को अपनी जरूरत के अनुसार समुचित मात्रा मे आक्सीजन नहीं मिल पाती तो एक विशेष स्थिति पैदा हो जाती है जिसे हृदय धमनी का रोग कहते है। यह बीमारी कितनी व्यापक है इसका अदाजा इसी बात से ही किया जा सकता है कि अमेरिका मे इस बीमारी से कम से कम १५ लाख व्यक्ति पीडित है। अपने देश मे यह बीमारी आधुनिक सभ्यता के बढाव के साथ साथ बढती जा रही है और सबसे अधिक मौते होने का कारण है।

बढती हुई उम्र के साथ साथ शरीर की धमनिया भी सख्त व मोटी होने लगती है कुछ हानिकारक कारणो के परिणाम स्वरूप यह प्रक्रिया कम उम्र मे ही तेजी से प्रभावित करने लगती है, जिससे हृदय धमनियो का अदर का व्यास कम होने लगता है और रक्त प्रवाह मे रुकावट पैदा होने लगती है। इससे हृदय की मासपेशी को रक्त कम मात्रा मे मिल पाता है। इस स्थिति को आर्टीरियोस्कलेरोसिस अर्थात् धमनियो का मोटा व सख्त होना कहते है।

दूसरी स्थिति में कुछ कारणों से धमनियों के अंदर की सतह टूटफूट जाती है और वहां खून की चरबी (वसा) रक्तकण व कल्शियम तत्वो का जमाव होने लगता है जिससे रक्त प्रवाह मे बाधा आने लगती है। यदि यह बाधा आंशिक हुई तो 'हृदयशूल' अर्थात एंजाइना हो जाता है और यदि रक्त का बहाव बिल्कुल बंद हो गया तो भयंकर स्थिति अर्थात् ''हृदय आघात'' का दौरा पड़ जाता है।

इन हानिकारक कारणो मे कुछ का तो नियंत्रण हमारे वश मे है पर कुछ दूसरे कारण हमारे वश मे नहीं है।

धूम्रपान— यह तय है कि धूम्रपान करने वाले व्यक्तियो को धूम्रपान न करने वाले व्यक्तियो की अपेक्षा हृदय आघात की सभावना ४ ५ गुना अधिक होती है। बीडी सिगरेट के धुए के रासायनिक तत्व हृदय धमनियो को मोटा व सख्त करते है। धूम्रपान का यह दूषित प्रभाव कम उम्र के व्यक्तियो मे अपेक्षाकृत अधिक होता है। जो व्यक्ति जितना अधिक धूम्रपान करता है, उतना ही हृदय आघात का जोखिम बढाता है।

उच्च रक्तचाप— उच्च रक्तचाप भी हृदय धमनिया को मोटा व सख्त बनाता है। उच्च रक्तचाप के कारण रक्त प्रवाह के लिए हृदय की मासपेशी का अधिक जोर लगाना पडता है। परिणाम स्वरूप हृदय मासपेशी का आकार बढ जाता है और जो आक्सीजन व पौष्टिक तत्त्व सामान्य आकार वाले हृदय को पर्याप्त थे बढे आकार वाले हृदय के कामकाज के लिए कम पड जाते है। उच्च रक्तचाप के कारण खून ले जाने वाली धमनियो की भीतरी सतह टूटफूट जाती है और प्रवाहित रक्त की चरबी रक्तकण व कल्शियम उस टूटी फूटी सतह पर जमा होने लगता है। जब जमाव

अधिक हो जाता है तो रक्त प्रवाह मे बाधक बन जाता है। मध्यम आयुवर्ग के व्यक्तियो मे उच्च रक्तचाप का खतरा ज्यादा रहता है। रक्त मे चरवी की मात्रा— अधिक चर्बी (वसा) की मात्रा वाले व्यक्तियो मे सामान्य चरवी वाले व्यक्तियो की अपेक्षा हृदय आघात की सभावना ४-५ गुना ज्यादा होती है। खासकर कम उम्र वाले व्यक्तियो मे चरवी धमनियो की सतह मे जमा होकर उन्हे मोटा व सख्त बना देती है। ऐसे व्यक्तियो मे वसा के कण धमनिया की टूटी सतह पर जमा होने लगते है व थक्का बनने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। धमनी मे थक्के के कारण रक्त प्रवाह मे रुकावट आने लगती है।

मधुमेह— मधुमेह अर्थात डायबिटीज से पीडित व्यक्तियो की हृदय धमनिया सामान्य व्यक्तियो की अपेक्षा अधिक मोटी व सख्त हो जाती है। मध्यम आयु के व्यक्ति इसके अधिक शिकार होते है।

आलसी व निष्क्रिय जीवन चर्या, मोटापा, मानसिक तनाव भावावेश विशेष कर ईर्ष्या व घृणा से उत्पन्न अतर्द्वद्व भी हृदय आक्षेप या आघात मे सहायक होते है।

जिन व्यक्तियो के माता पिता हृदय आघात के शिकार हो जाते है उनके बच्चो को हृदय आघात की सभावना अधिक होती है। फिर अकेला कोई कारण भले ही हृदय आघात सरीखी परिस्थिति पैदा न कर सके लेकिन एक से अधिक कारण, चाहे व कम गभीर ही क्यो न हो, मिलकर कई गुना खतरनाक बन जाते है।

हृदय आघात के लक्षण—

मरीज के सीने के बीचो बीच तेज दर्द होता है जो कभी असहनीय तो कभी अजीब सी सिकुडन, चुभन, जकडन या तेज धार वाले औजार से काटने जैसा महसूस होता है। यह दर्द बाजू मे तो कभी गर्दन, तो कभी पेट की तरफ फैलता है।

कभी कभी हृदय आघात का शिकार व्यक्ति बिल्कुल भी दर्द महसूस नहीं करता। इसे साइलेट या मूक हृदय आघात भी कहा जाता है।

जब हृदय शूल दो से २० मिनट तक चले व दर्द मे काम आने वाली दवा (सारबिट्रेट) आदि बेअसर हो जाये, ठडा पसीना आ जाये, मूर्च्छा के दौरे से आने लगे अत्यत कमजोरी चक्कर सास फूलना व सास लेने मे दिक्कत होने लगे, चमडी सफेद या पीली पडने लगे, हृदय व नाडी की रफ्तार अनियमित होने लगे तो ये सब लक्षण हृदय आक्षेप के परिचायक है। हृदय आघात के पहले एक या दो घटे अत्यन्त महत्वपूर्ण होते है। इन लक्षणो की अवहेलना नहीं करनी चाहिये अन्यथा रोगी का मूल्यवान समय नष्ट हो जाता है।

हृदय धमनियो मे थक्के के कारण रक्त प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है। परिणाम स्वरूप हृदय की मासपेशी का प्रभावित भाग नष्ट होना शुरू हो जाता है। हृदय की इन धमनियो व उन की शाखाओ को क्लाट अर्थात थक्के से मुक्त कराने के लिए कुछ नवीनतम तरीके ईजाद हुए है।

थ्रावा लिटिक थेरेपी— इस उपचार विधि मे कुछ दवाओ द्वारा थक्के को घोल दिया जाता है और अवरुद्ध मार्ग साफ हो जाता है। पर इन औषधियो का सम्पूर्ण लाभ तभी है जब कि इनका उपयोग हृदय आघात के प्रथम ६ घटे के अन्दर किया जाय। अत यह आवश्यक हो जाता है कि हृदय आक्षेप के मरीज को शीघ्रातिशीघ्र ऐसे अस्पताल मे पहुचाया जाय जहा इन दवाओ के द्वारा इलाज की व्यवस्था हो। विश्व भर मे इस विधि को सफलता पूर्वक काम मे लाया जा रहा है।

पीटीसीए— एक आधुनिकतम अन्य विधि है। परकूटेनियस ट्रासल्यूमिनट एजीओप्लास्टी। इस विधि द्वारा धमनी की परिधि को चौडा कर दिया जाता है और अवरुद्ध मार्ग रक्त प्रवाह के लिए खुल जाता है। शुरु मे इस विधि को बडे आश्चर्य की नजर से देखा गया व इसका आविष्कार करने वाले वैज्ञानिक को कोई श्रेय भी नहीं दिया गया। लेकिन आज यह विधि विश्व भर मे प्रचलित है और जैसे-जैसे हृदय रोग विशेषज्ञो का अनुभव बढता जा रहा है, यह विधि भी हृदय आक्षेप के मरीजो मे आशातीत सफल हो रही है। फिर यह विधि बाइपास शल्य क्रिया से एक तिहाई कम लागत मे सम्पन्न हो जाती है। करीब ५ प्रतिशत व्यक्तियो से ही यह विधि असफल होने के साथ-साथ कुछ जटिल समस्याये भी पैदा कर देती है।

स्टेट विधि— पीटीसीए उपचार की विधि द्वारा धमनी को चौडा तो कर दिया जाता है लेकिन २५ से ३० प्रतिशत मरीजो मे धमनी पुन न सिकुडे इसे रोकने के लिए एक नई विधि ईजाद हुई है। इस विधि मे स्टेटो का इस्तेमाल

होता हे। स्टेट धातु से वने होते हे आर प्रोव द्वारा हृदय धमनी के अन्दर पहुचा दिये जाते हे। फलस्वरूप हृदय धमनी पुन नहीं सिकुड पाती ओर हृदय के रक्त सचार मे काई अडचन नहीं आ पाती।

रोटा व्लेड विधि— एक अन्य नवीनतम विधि के आविष्कार के द्वारा थक्के को काटकर छोटे-छोटे टुकडो मे परिविर्तित कर दिया जाता हे ओर उन्हे धमनी से वाहर निकाल लिया जाता है। नतीजतन अवरुद्ध धमनी का रक्त प्रवाह पुन चालू हो जाता है। रोटा व्लेडर को प्रोव द्वारा हृदय धमनी मे प्रवेश करा दिया जाता हे। यह गोल गोल घूम कर थक्के को टुकडो मे विभाजित कर देता है।

इसी प्रकार थक्के को नष्ट करने के लिए लेजर रेज व रेडियो फ्रीक्वेसी का भी प्रयोग किया जाता है।

वाईपास सर्जरी— एक ओर विश्वविख्यात विधि है। हृदय धमनी को थक्के से मुक्त करने की, इसे वाई पास शल्य क्रिया कहते हे। ओपनहार्ट शल्य क्रिया द्वारा इस विधि के अनुसार उपमार्ग वना दिये जाते हे ओर थक्के से अवरुद्ध धमनी का रक्त सचार इस नए उपमार्गो द्वारा हृदय मासपेशी को पहुचने लगता ह। १९६० से शुरू की गइ यह विधि विश्वभर मे प्रचलित है। हृदय प्रत्यारोपण विश्व के कई देशो मे हृदय परिवर्तन करने की विधि सुनिश्चित हो चुकी हे। यदि हृदय इतना नष्ट हो चुका ह कि ऊपर वताई गई विधियो से लाभ की सभावना न हो तो हृदय प्रत्यारोपण कर दिया जाता हे।

वेज्ञानिको के सतत् प्रयासा से आविष्कृत नई-नई विधियो के उपयोग के कारण हृदय धमनी रोग के मरीजो को आशा से भी अधिक लाभ हुआ ह। विना ओपनहार्ट शल्य क्रिया के हृदय धमनी के थक्के निकाल कर नष्ट कर दिये जाते ह ओर हृदय का रक्तचाप प्रवाह पुन शुरू होता ह।

एक वात फिर भी ध्यान मे रखने योग्य हे। अपनी दिनचर्या वदलिए, मोटापा रोकिए, शरीर मे अधिक वसा एकत्रित मत होने दीजिये, मधुमेह व उच्च रक्तचाप नियन्त्रित रखिये, धूम्रपान छोड दीजिये। नियमित व्यायाम कीजिये। चिता रहित रहने की कोशिश कीजिये। सतुलित आहार लीजिये ओर स्वस्थ हृदय व हृदय धमनियो के साथ स्वस्थ जीवन का आनन्द लीजिये।

☆

बाई पास सर्जरी ''मिकास''

शेषांश पृष्ठ संख्या २४० से

शरीर में सभी जगह पहुचाने के लिए 'हार्टलिग मशीन' का उपयोग किया जाता हे।

(ग) रोगी के लिए मशीन का अत्यधिक खर्चा ओर कुछ हद तक हानि की सभावना परेशानी का कारण हे।

वहा नई 'मिकास' पद्धति मे

(क) मात्र तीन इच का चीरा लगता है।

(ख) हार्टलिंग मशीन की आवश्यकता नहीं होती।

(ग) खर्चा वहुत कम आता हे।

इसके अतिरिक्त जहा वाईपास सर्जरी के आपरेशन दो से छह घटे लगते हे वहा मिकास पद्धति मे डेढ से ढाई घण्टे का ही समय लगता हे। वाईपास मे वाहर का खून लेना पडता हे जवकि मिकास पद्धति मे वाहर का रक्त नहीं लेना पडता। इसमे खून से फैलने वाली वीमारी एड्स आदि का भय नहीं रहता। सर्जरी के वाद रोगी को शीघ्र होश आ जाता हे ओर वह अपने को स्वस्थ महसूस करता है।

रोगी के लिए सभी तरह से लाभप्रद यह सर्जरी, सर्जन के लिए चुनोती है। पसली काटकर मात्र डेढ से दो मिलीमीटर चोडी नसो को ढूढकर अलग करना ओर धडकते हृदय को वगेर नुकसान पहुचाये नस के साथ जोडना कोई साधारण काम नहीं होता। यह जोखिम ओर चुनोती भरा काम हे।

दुनिया भर मे प्रतिवर्ष लगभग ४ लाख परपरागत आपरेशन होते है क्या यह सभी आपेशन नई पद्धति मिकास से नहीं हो सकते ? इस मुद्दे पर सभी डाक्टरो की राय जाननी होगी ओर चिकित्सको को विचारना होगा कि क्या रोगी को इस नई पद्धति का लाभ सुखी जीवन जीने के लिए दे सकने मे वे सक्षम एव एकमत हे ? क्या भविष्य मे डाक्टर बाईपास सर्जरी का रास्ता वदलकर मिकास की तरफ मुड सकेगे ? यदि ऐसा होगा तो यह भी हृदय रोग मुक्ति के लिए क्रान्ति ही होगी।

●

मैं आपका हृदय हूँ

वाणी भटनागर
राजस्थान पत्रिका, जयपुर मे पत्रकार

लाल, भूरा रग, वजन १२ ओस, नाशपाती जेसा आकार, कुल मिलाकर प्रभावहीन रग-रूप, किन्तु मे आपका समर्पित ओर निष्ठावान सेवक प्राणाधार, आपका हृदय।

आपके सीने मे लगभग मध्य मे अस्थि वधो की सहायता से अवस्थित हूँ। मै लगभग छ इच लम्बा हूँ ओर मेरी अधिकतम चौडाई चार इच हे।

मै एक कठोर परिश्रमी पप हूँ, जिसके चार प्रकोष्ठ ह। वास्तव मे मेरे अदर दो पप हे, जिनमे से एक की सहायता से रक्त को फेफडो मे प्रवाहित किया जाता हे और दूसरे से उसे शरीर के अन्य भागो मे भेजा जाता हे। मै प्रतिदिन लगभग साठ हजार मील लवी रक्त वाहिनियो मे रक्त का परिसचरण करता हूँ। इतनी 'पम्पिग' से चार हजार गेलन क्षमता वाला टेक आसानी से भर सकता है।

आप सोचते होगे कि मै वहुत कोमल और भगुर हूँ। अब तक मे रक्त की ३,००,००० टन से भी अधिक मात्रा को शरीर मे सचरित कर चुका हूँ। मै किसी धावक के पेर की मासपेशियो या भीमकाय पहलवान के हाथो की मासपेशियो की तुलना मे दुगना कार्य करता हूँ। महिलाओ के गर्भाशय को छोडकर शरीर के किसी भी अन्य अग की मासपेशिया मुझसे अधिक शक्तिशाली नहीं हे, फिर भी मै जीवन भर लगातार कार्य करता हूँ। मे थोडा विश्राम भी करता हूँ। मे दो धडकनो के वीच के समय अन्तराल मे विश्राम भी करता लेता हूँ।

मेरे बाए निलय को सकुचित होकर रक्त को शरीर मे परिसचरित करने की प्रक्रिया मे एक सेकड के लगभग तीसवे भाग जितना समय लगता हे। तब मुझे विश्राम के लिए आधे सेकण्ड का समय मिल जाता है। जिस समय आप सो जाते है, उस समय मुझे उन कोशिकाओ मे रक्त प्रवाहित करने की आवश्यक्ता नही होती।

इस स्थिति मे मेरी धडकने एक मिनट मे ७२ से घटकर ५५ ही रह जाती है। आप शायद ही कभी मेरे विषय मे विचार करते हो, सभवत. यह अच्छा ही हे, क्योकि मै भी नही चाहता कि आप मेरे विषय मे चिन्ता करके हृदय तन्त्रिकाओ के किसी रोग से पीडित हो जाए और मै वास्तव मे ही किसी समस्या मे पड जाऊ।

कभी-कभी मेरा उद्दीपन तत्र कुछ क्षणो के लिए रुक जाता हे। ऐसी स्थिति मे, मे स्वय ही अपने लिए विद्युत या ऊर्जा का निर्माण करता हूँ और सकुचन प्रक्रिया को जारी रखने के लिए आवेग उत्पन्न करता हूँ। कभी-कभी मे भी गलती कर बेठता हूँ और दो धडकने एक साथ उत्पन्न हो जाती है। ऐसी स्थिति में आपको लगता है कि मे उछलने लगा हू। किन्तु, वास्तव मे ऐसा नहीं होता ।

किसी दु स्वप्न के बाद, जब आप जाग उठते हे, उस समय भी आपको मेरी धडकने बढी हुई अनुभव होती हे? ऐसा इसलिए होता है कि जब स्वप्न मे आप दौडते हे, तो मेरी गति भी बढ जाती हे। आपकी चिन्ताए मेरी धडकने बढा देती है। चित्त शात होते ही मै भी सामान्य हो जाता हू। यदि आप शात नहीं हो पाए तब भी मुझे सामान्य स्थिति मे लाने का एक तरीका और भी हे। ऐसी स्थिति मे वेगस तन्त्रिकाए ब्रेक का कार्य करती है। ये तत्रिकाए गर्दन मे, कानो के पीछे से, दातो के जबडो के जोड के पास से गुजरती है। इस स्थान पर हल्की मालिश कर, धडकनो को नियत्रित किया जा सकता है।

सम्भवत कभी ऐसा भी हुआ हो कि आप अपने कार्य मे लगे हो और अपने सीने मे तेज दर्द अनुभव करे। इस समय यह शका उत्पन्न हो सकती हे कि आपको दिल का दौरा पडा है। वास्तव मे, यह चिन्ता का विषय नहीं हे। यह दर्द पाचन सस्थान से आया है और उस गरिष्ठ भोजन का

परिणाम ह, जो दो घट पहले ही आपने खाया ह। सामान्यतया मे सीने के दर्द के रूप म एक सकत देता हूँ, जब आप अत्यधिक या अतिरिक्त परिश्रम कर वठते ह या वहुत अधिक भावुक हो जाते हे। उस समय म आपको यह वताने की चेष्टा करता हू कि मुझे अपने कार्य के अनुपात मे पोषण प्राप्त नहीं हो रहा हे।

रक्त ही मेरे पोषण का स्रोत हे। मे आपके शरीर के सम्पूर्ण भार का दो सोवा भाग हू, इसलिए शरीर मे कुल रक्त आपूर्ति का मात्र वीसवा हिस्सा ही मेर लिए पर्याप्त होता हे। शरीर के अन्य अगो आर ऊतको की तुलना मे मुझे लगभग दस गुने अधिक पोषण की आवश्यकता होती ह। मे अपनी दो कोरोनरी धमनियो से पोषणप्राप्त करता हूँ । ये धमनी (आर्टरी) छोटी छोटी शाखाओ वाले वृक्ष की तरह ही ह, जिसका एक तना होता ह। यह तना (मुख्य धमनी) शीतल पेय पीने के उपयोग मे आने वाली स्ट्रा से कुछ कम चोडा होता हे। यह धमनी ही मेरा सर्वाधिक सवेदनशीता भाग हे। इसमे किसी भी प्रकार का रोग मृत्यु का कारण भी वन सकता ह। जीवन के पूर्वार्द्ध मे आर कभी कभी जन्म के समय से ही कोरानरी धमनियो (आर्टरी) म वसा एकत्रित होने लगती हे। धीरे-धीरे यह वसा धमनी को पूरी तरह अवरूद्ध कर सकती हे या वसा का कोई थक्का अचानक धमनी का मार्ग वन्द कर सकता ह।

एक धमनी के पूरी तरह वन्द हो जाने पर हृदय की मासपेशियो का वह भाग मृत भी हो सकता ह, जिसे उस धमनी विशेष से ही पोषण प्राप्त होता ह।

धमनी मे ऊतको का डाट भी वन सकता ह। यह आकार मे छोटा भी हो सकता ह आर टेनिस के गद से आधा भी। हृदय रोग की गभीरता, धमनी मे आए अवरोध के आकार आर धमनी मे उसके स्थान पर निर्भर करती हे।

कभी-कभी व्यक्ति को हृदयाघात हो जाता ह ओर उसे इसका आभास भी नहीं होता। इस आघात का कारण धमनी मे आया वह अवरोध होता ह, जो आकार मे वहुत छोटा ओर पृष्ठ भाग की भित्ति पर स्थित होता ह, जिस समय व्यक्ति को हृदय मे मामूली सा दर्द होता हे, जिसका उसे पता भी नहीं लग पाता । यदि आपके परिवार के किसी सदस्य का हृदय रोग हो रहा ह अथवा ह तो आप भी दिल की वीमारी के शिकार हो सकते ह। किन्तु उस खतरे का कम करने के प्रयास किए जा सकते ह। शुरूआत मोटापे से करते ह। यदि आप जीवन की मध्य आयु तक पहुच चुके हे, तो विशेष सावधानिया की आवश्यकता ह।

इस आयु मे वसा की एक पाउण्ड अतिरिक्त मात्रा के लिए भी मेरी रक्त वाहिनिया को अतिरिक्त कार्य करना पडता ह। परिणामस्वरूप शरीर म रक्तचाप वढ जाताह। आपकी आयु क अनुपात म १४०/६० रक्तचाप की आदर्श उच्च सीमा ह। यहा १४० उस रक्त दाव का माप ह, जो मुझ सकुचित हाने के लिए करना पडता ह आर ६० वह रक्त दाव ह जव दो धडकना क वीच मे विश्राम कर रहा होता ह। रक्तचाप की निम्न सीमा अधिक महत्वपूर्ण ह। जेसे जसे इसम वढोतरी होता ह, मेरा विश्राम अन्तराल घटता जाता ह। विश्राम के अभाव म लगातार कार्य करके म स्वय को मृत्यु की आर धकल देता हू। अपन रक्तचाप को सामान्य आर सुरक्षित स्तर तक वनाए रखने क लिए कुछ सावधानिया रखी जा सकती ह।

माना कि आप कडी प्रतिस्पर्द्धा म विश्वास रखते ह महत्वाकाक्षी ह या प्राय आपका जीवन तनावपूर्ण रहता ह। आप यह नहीं जानते कि लगातार परशान रहन या तनावग्रस्त रहने से एड्रीनल ग्रथि लगातार उददीप्त होती रहती ह आर परिणामस्वरूप एड्रीनल ग्रथि अधिक मात्रा मे एड्रीनलिन आर नोरएड्रीनलिन हार्मोनो का स्राव करन लगती ह।

इन होर्मोना का स्राव भी वही क्रिया-प्रभाव उत्पन्न करता हे, जा निकोटिन के कारण पदा हाते ह। अथात सकुचित आर अवरूद्ध धमनिया उच्च रक्तचाप आर मेरी गति (धडकन) मे वृद्धि। जानने योग्य मुख्य वात यह ह कि जव आप विश्राम करते ह तव मे भी सामान्य रहता हू। कुछ समयान्तराल पर विश्राम या थोडी सी निद्रा मुझे आराम पहुचा सकती ह। अपने कार्यालय स लाटकर कुछ हल्की फुल्की पाठ्य सामग्री पढे । सप्ताह मे किसी एक दिन वहुत अधिक व्यायाम करना या खेलना आर अन्य दिनो मे विल्कुल भी व्यायाम न करना, मेरे सामान्य कार्य भार को पाच गुना तक वढा देता है। नियमित ओर हल्का व्यायाम करे। एक दिन मे एक दो मील पेदल चलना लाभप्रद हागा। यदि आपका कार्यालय वहुमजिली इमारत की पाचवी मजिल पर

शेषाश पृष्ठ २६५ पर

स्वस्थ हृदय का पार-पत्र
प्राण - शक्ति

आचार्य महाप्रभ-तेरापथ सप्रदाय के परमाचार्य

हृदय हमारे शरीर का महत्वपूर्ण अग है। अनेकान्त दृष्टि से विचार करे तो केवल हृदय को ही जीवन का महत्वपूर्ण अग नहीं माना जा सकता अनेक अवयव ऐसे है, जो जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण हे। हृदय अच्छा काम कर रहाहै, किन्तु किडनी फेल हो गई तो क्या होगा ? अनेक समस्याए पैदा हो जाएगी। इसी प्रकार यह भी कहा जाता है - सब अवयव अच्छा काम कर रहे है, हार्ट फेल हो गया तो क्या होगा ? जीवन खतरे मे पड जाएगा। जिसका जीवन के साथ इतना गहरा सबध है, उसके स्वास्थ्य की ओर ध्यान देना अपेक्षित है। वस्तुत श्वास और हृदय-ये जीवन के पर्यायवाची जैसे बने हुए है। हृदय धडकता है, आदमी काम करता है। हृदय बद हुआ, आदमी निष्क्रिय हो जाएगा। आयुर्वेद मे हृदय दो अर्थो मे प्रयुक्त हुआ करता है। एक हृदय वह है, जो मस्तिष्क मे है। विकृत हो गया, इसके स्थान पर दूसरा कृत्रिम हृदय लगा देना । वस्तुत यह हृदय-परिवर्तन नहीं, हृदय का प्रत्यारोपण है। हृदय-परिवर्तन का एक अर्थ है, भाव को बदल देना, चितन और मानसिकता को बदल देना। वह हृदय है हमारा मस्तिष्क। जो शारीरिक क्रिया कर रहा है, वह हृदय एक मासपिण्ड है। आज हम उस हृदय पर विचार कर रहे है, जो हमारे जीवन की गत्यात्मकता के लिए उत्तरदायी है। यह माना जाता है कि यदि ठीक व्यवस्था चले, तो हृदय आदि अवयव सैकडो वर्षो तक अपना काम कर सकते है । उनकी इतनी क्षमता है, किन्तु वह क्षमता काम मे नहीं आती, उसका उपयोग भी नहीं किया जाता।

अध्यवसान :

हमारे शरीर के अनेक अवयवो पर अध्यवसाय का प्रभाव होता है, हृदय बहुत सवेदनशील है। भावना से बहुत प्रभावित होता है हृदय । क्रोध तीव्र आया और हृदय प्रभावित हो गया। कभी-कभी वह हृदय को इतना प्रभावित करता है कि तत्काल हार्ट-अटैक हो जाता है, व्यक्ति मर जाता है।

लोभ का तीव्र वेग भी हृदय को दुर्बल बनाता है। यदि लोभ अत्यधिक तीव्र हो जाए, तो हृदयाघात से मौत भी हो सकती है। भय का तीव्र वेग भी यही स्थिति पैदा करता है। हृदय रोग का एक कारण है उचित श्रम का अभाव ।

आहार का वैषम्य -

हृदय-रोग का एक कारण है आहार का वैषम्य। भोजन के लिए केलॉरी का भाग निर्धारित है। यह जो कैलॉरी का सिद्धान्त है, उसका भी सदुपयोग कम होता है, दुरुपयोग अधिक होता है। अधिक कैलॉरी का भोजन शायद आवश्यक नहीं होता है, उससे अधिक ही खाया जाता है। शरीर की ऊर्जा भोजन के पाचन मे ही ज्यादा खप जाती है। हृदय-रोग आहार-असमय का एक परिणाम है।

संतुलन की चेतना -

प्रश्न है- क्या हृदय-रोग के कारणो को मिटाया जा सकता है? भावनात्मक प्रतिक्रिया पर नियत्रण किया जाता है । नियत्रण का उपाय है ध्यान । आध्यात्मिक साधना के द्वारा चेतना की ऐसी स्थिति का निर्माण किया जा सकता है, जो समता अथवा सतुलन की चेतना है। सतुलन की चेतना जागती है, तो भय कम हो जाता है, अभय की स्थिति बन जाती है। अन्यान्य भावात्मक प्रतिक्रियाए भी नियत्रित हो जाती है।

अनेकान्त का प्रयोग करें -

सबसे बडी बात है दृष्टिकोण का निर्माण। हमारा कोई भी आचरण और व्यवहार बाद मे होता है, पहले दृष्टिकोण का निर्माण होता है। दृष्टिकोण का निर्माण कैसे करे ? इसके लिए सबसे पहला उपाय है, वह यह है अनेकान्त का जीवन मे प्रयोग करे । भगवान महावीर ने अनेकान्त

का दृष्टिकोण दिया, जिससे भावात्मक सतुलन, मस्तिष्कीय सतुलन और शारीरिक क्रियाओ का सतुलन बना रहे। जहा एकान्तवाद है, वहा आग्रह है। आग्रह मे स्थिति उलझती है। आग्रह वहुत तनाव पैदा करता है । तनाव हृदयरोग की उत्पत्ति मे वहुत जिम्मेवार बनता है। आग्रह केवल वडी बातो का ही नहीं होता, छोटी-छोटी वाते भी आग्रह का कारण बन जाती है।

एकान्तवाद से आग्रह ओर आग्रह से विग्रह की स्थिति वन जाती हे। जहा आग्रह ओर विग्रह हे, वहा तनाव अवश्यभावी हे। अनेकान्त हे आग्रह का विसर्जन, दूसरे के दृष्टिकोण को समझने का प्रयत्न करना। यदि दूसरे का विचार समझ मे न आए, स्वीकार न हो, तो अपनी वात दूसरो पर थोपने का प्रयत्न मत करो। दूसरे के विचार को समझने का प्रयत्न करो, परस्पर मिल-बैठकर विमर्श करो। यदि विचार न मिले, तो समन्वय का सूत्र खोजो । अनेकान्त का दूसरा तत्व हे - समन्वय सूत्र की खोज। यदि विचारो मे समन्वय सूत्र न मिले, तो सह-अस्तित्व के सिद्धान्त का अनुशीलन करो। अनेकान्त का एक सिद्धान्त हे - दो विरोधी वस्तुए एक साथ रह सकती है। कोई भी वस्तु ऐसी नहीं हे, जिसमे दो विरोधी धर्म न हो ।

हृदयरोग और कायोत्सर्ग—

एक प्रयोग है कायोत्सर्ग । यह अनेक समस्याओ से छुटकारा दिलाने वाला है । कायोत्सर्ग से शिथिलीकरण होता हे, जागरूकता बढती है। उससे रक्ताभिसरण की सारी क्रियाए ठीक होती है । कायोत्सर्ग का अर्थ है - भेदविज्ञान, शरीर को आत्मा से भिन्न कर देना। उसका तात्पर्य हे ममत्व का विसर्जन, ममत्व तनाव पैदा करता है। तनाव का पहला बिन्दु हे मेरापन, ममत्व। कायोत्सर्ग साधन है ममत्व के विसर्जन का। अनुभव की वाणी है - कायोत्सर्ग हृदय रोग के लिए सर्वोत्तम दवा है । जव कभी हृदयरोग की समस्या आती हे, डाक्टर का परामर्श होता ह - वेड रेस्ट ले, पूर्ण विश्राम करे। वेड रेस्ट का सबसे अच्छा प्रयोग है कायोत्सर्ग, प्रवृत्ति का अल्पीकरण । इस अवस्था मे ऑक्सीजन की खपत भी कम हो जाएगी, शारीरिक क्रिया भी अपने आप सम्यक् होने लग जाएगी। हमारी रोग- प्रतिरोधक शक्ति वढेगी, इम्युनिटी सिस्टम भी सक्रिय वन जाएगा, प्राण की सक्रियता भी वढ जाएगी।

प्राण और अपान -

प्राण की सक्रियता कायोत्सर्ग की एक महत्वपूर्ण परिणति है योग के प्राचीन शब्द हे प्राण ओर अपान। आज इन दोनो पर शोध होनी चाहिए। प्राण के साथ अपान का बहुत गहरा सबध है। नाभि से लेकर गुदातक का स्थान अपान का स्थान है। जितनी अपान की शुद्धि रहती हे, उतना ही व्यक्ति स्वस्थ रहता है। जितनी अपानकी अशुद्धि रहती है, वेचैनी, उदासी, निषेधात्मक भावनाए, हृदय को कमजोर करने वाली चेतना जागृत हो जाती हे। अपान की शुद्धि प्राण को भी वल देती है। प्राण का एक स्थान माना गया है। नासाग्र । प्रेक्षाध्यान की भाषा मे उसे प्राणकेन्द्र कहा जाता है। प्राण नामक जो प्राणधारा है, उसका एक स्थान है हृदय । नाभि भी उसका स्थान हे ओर पेर का अगूठा भी उसका स्थान है। ये प्राण के स्थान हे। जव प्राण आर अपान का योग होता है, तब अनेक स्थितिया पेदा होती हे । अपान विकृत होकर प्राण को भी विकृत कर देता हे।

मत्र का प्रयोग—

अपान शुद्धि का प्राणधारा के साथ गहरा सबध हे। इसीलिए योग मे हृदयरोग के निवारण के लिए मत्र का निर्माण भी किया गया। वह बीज मत्र है ल। इसके उच्चारण से हृदयरोग मे फायदा होता है । ल ल ल यह लयवद्ध जाप हृदयरोग की समस्या के लिए उपयोगी औषध है। शरीर मे पाच तत्व माने गये है । इनमे पृथ्वी तत्व का वीज मत्र है - ल। ल के उच्चारण से पृथ्वी तत्व सक्रिय बनता है पृथ्वी तत्व का स्थान अपान का स्थान हे, शक्ति केन्द्र का स्थान है।

मंत्र और रंग -

रोग का रग के साथ भी सबध होता हे। कोन सा रग कौन से अवयव को पुष्ट करता है।, यह बोध हो तो बहुत लाभ उठाया जा सकता हे। वह कोन सा रग है, जो यकृत को शक्तिशाली वनाता हे। वह कौन-सा रग है, जो हृदय को शक्तिशाली बनाता है। वाहर से दूसरे सहायक रगो को ग्रहण करके भी हम उस अवयव को पुष्ट बना सकते है। किस प्रकार के रग परस्पर मिल कर किस प्रकार की स्थिति पैदा करते है, यह अन्वेषण का विषय है किन्तु रग से हम प्रभावित होते है, यह स्पष्ट है। इसी प्रकार अनेक

शेषांश पृष्ठ संख्या २७२ पर

बच्चों में हृदय-रोग

डा० जे० पी० सोनी, बाल रोग विशेषज्ञ, जोधपुर

बच्चो मे दो प्रकार के हृदय रोग हो सकते है - जन्मजात एव जन्म के बाद हुआ रोग (एक्वायर्ड)। भ्रूण विकास के समय यदि गर्भवती महिला को रूबेला जैसा सक्रमण रोग हो जाए या मा को मधुमेह रोग हो या फिर गर्भवती महिला ने कुछ दवाइया जैसे- मिर्गी रोग से ग्रसित महिला ने बेलप्रोएट या हाइडेन्टोइन ले ली हो या एक्स-रे करवाया हो तो बच्चे मे विभिन्न प्रकार के हृदय विकार होने की सभावना अधिक रहती है। बच्चो मे होने वाले जन्मजात हृदय रोग निम्न प्रकार के होते है -

हृदय में छेद—

गर्भस्थ शिशु के हृदय का विकास एक नली द्वारा होता है। यह नली बाद मे एक भित्ति द्वारा दो भागो मे विभक्त हो जाती है। अगर इस भित्ति का विकास पूरा नहीं हो तो हृदय मे छेद रह जाता है। यदि यह छेद दोनो अलिन्द से के बीच मे हो तो उसे एट्रिअल सेप्टल डिफेक्ट कहते है और छेद दोनो नलियो को विभाजित करने वाली भित्ति मे हो तो उसे वेट्रीकुलर सेप्टल डिफेक्ट (वी० एस० डी०) कहते है। भ्रूण मे फुफ्फुस एव बडी धमनी के बीच एक नली होती है जो बच्चे के जन्म के बाद बन्द हो जाती है। इस नली को पेटेन्ट डक्ट्स आर्टिरियोसस (पी०डी०ए०) कहते है। परन्तु यह नली कभी/कभी बद नहीं होती। अगर बच्चा समय से पहले पैदा हो एव बच्चे का वजन जन्म के समय बहुत कम हो। इन सभी विकारो मे हृदय के बाए भाग मे दबाव ज्यादा होने लगता है।

अत फेफडो तक रक्त की अतिरिक्त मात्रा पहुचती है। इस कारण फेफडो मे सक्रमण रोग के होने की सभावना बढ जाती है। समय पर इलाज नहीं करने से फुफ्फुस धमनी मे विकार उत्पन्न हो जाते है तथा दबाव बढ जाता है। इस कारण रक्त का बहाव दाए से बाई दिशा मे हो जाता है तथा बच्चे के होठ, नाखून एवं जीभ मे नीलापन आ जाता है।

वाल्व के विकार—

इस तरह के रोग मे हृदय के वाल्व सिकुड जाते है या पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाते है। वाल्व सिकुडकर रक्त के प्रवाह को अवरुद्ध करते है, जैसे— एओर्टिक स्टनोसिस, पल्मोनरी स्टनोसिस (पी०एस०) या माइट्रल स्टनोसिस। कभी कभी ये वाल्व बिल्कुल नहीं खुलते ऐसे वाल्व को एट्रेजिआ कहते है, जैसे ट्राइकसपिड वाल्व एट्रेजआ, पल्मोनरी वाल्व आदि। अगर वाल्व का विकार पूरा नहीं हो तो रक्त धमनी से पुन निलय एव निलय से अलिन्द मे चला जाता है। उसे रिगर्जिटेशन पल्मोनरी कहते है।

फैलटस टेट्रोलोजी—

इस प्रकार के हृदय रोग में दोनो निलयों के मध्य छेद एव फुफ्फुस वाल्व सिकुड जाता है। फुफ्फुस वाल्व के सिकुडने के कारण हृदय के दाए भाग मे दबाव बढ जाता है, और अशुद्ध रक्त दाए निलय से बाए निलय मे होता हुआ शरीर के विभिन्न अंगो को जाता है। इस कारण बच्चो के होठ, नाखून एव जीभ नीले हो जाते है। इन बच्चो मे साइनोटिक स्पेल्स की सभावना अधिक रहती है। इस स्पेल मे बच्चे का नीलापन बढ जाता है। श्वास की गति बढ जाती है एव ताने आ सकती है।

धमनियो के जन्मजात विकार (टी०जी०ए०)—

ट्रासपोजीशन आफ ग्रेट वेसल्स इस रोग मे फुफ्फुस धमनी बाए निलय एव बडी धमनी दाए निलय से जुडे होते है। इस कारण फेफडो मे आने वाला शुद्ध रक्त पुन फेफडो को एव शरीर के विभिन्न अगो मे आने वाला अशुद्ध रक्त पुन शरीर के विभिन्न अगो को चला जाता है। यह एक जानलेवा रोग है। अगर मा को मधुमेह का रोग हो तो बच्चे मे इस रोग के होने की सभावना अधिक होती है। ट्रकस आर्टिरिओसिस मे फुफ्फुस एव बडी धमनी आपस मे जुडी होती है।

अन्य जन्मजात हृदय रोग एक निलय या हाइपोप्लेजिया आफ हार्ट इस रोग मे दाए या बाए भाग का पूर्ण विकास नहीं हो पाता है। साथ ही हृदय की गति से सम्बन्धित रोग भी होते है।

हृदय की मासपेशियों का रोग—

ऐन्डोकार्डिअल फाइब्रोइलास्टोसिस इस रोग मे अलिद एव निलय वहुत ही वडे हो जाते है इस कारण वच्चे की धडकन एव श्वास गति बढ जाती है और यकृत का आकार वहुत वढ जाता है। समय पर उपचार नहीं कराने पर इस रोग से वच्चे की मृत्यु हो सकती है।

जन्म के बाद होने वाले रोग—

रियूमेटिक हृदय रोग—

यह रोग ५-१५ वर्ष की आयु के वच्चो मे होता है। इस रोग मे वच्चे को पहले गले मे सक्रमण स्ट्रेप्टोकोकल इफेक्शन के कारण गले मे दर्द, वुखार एव खासी होती है। इसके वाद ३-४ सप्ताह वाद वच्चे मे हृदय रोग के लक्षण प्रकट होने लगते है। इस रोग में हृदय की तीनो परतो एव वाल्व पर प्रभाव पडता है। हृदय के वाये भाग मे वाल्व मुख्य रूप से समस्याग्रस्त होते है। विकृत वाल्व या तो सिकुडते है या उन मे फैलाव आ जाता है यदि समय पर इलाज नहीं किया जाय तो यह विकार स्थाई हो सकते है।

इस रोग का प्रभाव हृदय के अलावा अन्य भागो पर भी पडता है, वच्चे के जोडो मे दर्द, हाथपावो का अनावश्यक रूप से हिलना (कोरिआ) त्वचा के नीचे छोटी -छोटी गाठे व लाल रग के चकत्ते होना मुख्य लक्षण है।

वाइरल मायोकार्डाइटिस—

हृदय की तीनो परते, वायरस के सक्रमण के कारण यह रोग हो जाता है। शुरू मे इस रोग मे धडकन की गति बढ जाती है, श्वास तेज गति से चलता है एव हाथ पावो मे सूजन आ जाती है।

पेरिकार्डाइटिस—

हृदय के वाहर एक खोली होती है इसे पेरिकार्डियम कहा जाता है। इस रोग मे हृदय के भाग पूरी तरह से फूल नहीं पाते। फलस्वरूप रक्त के प्रवाह मे कमी आ जाती है। इस रोग में धडकन की गति बढ जाती है। श्वास की गति बढ जाती है एव हाथ पाव पर सूजन आ जाती है।

हृदय की गति से संम्बन्धित रोग—

हृदय की गति सामान्य रूप से ६०-१६० प्रति मिनट होती है। जव यह गति ६० से कम होती ह तो उसे ब्रेडीकार्डिया कहते हे एव जव यह १६० से ज्यादा होती है तो इसे टेकिकार्डिया कहते हे। इस रोग का इलाज दवाई एव पेस मेकर लगाकर किया जाता हे।

वच्चों में हृदय रोग के लक्षण—

१— दूध पीते समय वच्चे की श्वसन गति का अनावश्यक रूप से वढना, ललाट पर पसीना आना एव वच्चो द्वारा स्तन से मुह का वार-वार हटाना।

२— वच्चे को वार-वार वुखार, खासी एव जुकाम होना।

३— छाती का उभरा हुआ होना।

४— धडकन का अत्यधिक होना।

५— वच्चे का वजन उम्र के हिसाव से नहीं वढना।

६— होठ, नाखून एव जीभ का नीला होना।

७— हृदय गति का एकदम वढना एव कम होना।

८— वच्चे को साइनोटिक स्पेल्स आना।

९— वच्चे को कार्य करते समय या रात मे अचानक खासी आना, श्वसन गति का तेज एव श्वास लेने मे तकलीफ होना।

हृदय रोग जो स्वत: ठीक हो जाते है—

कई वार वच्चे के दोनो निलयो के वीच मे छोटा छेद जिसे वी०एस०डी० कहते है, होता है, दो वर्ष की उम्र तक वह स्वत ही छेद वद हो जाता है। पर इन वच्चो की छाती का एक्स-रे एव ई० सी० जी० से वरावर जाच कराते रहना चाहिए।

हृदय रोग एवं शल्य चिकित्सा—

ऐसे हृदय रोग जिनके वाल्व सिकुड जाते हे, उनमे कार्डिएक केथेटराइजेशन पद्धति से बैलून द्वारा चोडा किया जा सकता है। (टी०जी०ए०) मे वैलून द्वारा दोनो अलिदो के वीच वाली भित्ति मे छेद कर बच्चे का इलाज किया जाता है। इसे बेलून सेप्टोस्टोमी कहते है। वडे वी०एस०डी०, ए०एस०डी०, टी०जी०ए० फैलेट्रस टेट्रोलोजी एव सम्बन्धित हृदय रोगो मे वच्चो को शल्य चिकित्सा की जरूरत होती है। ए०एस०डी० एव वी०एस०डी० वाले बच्चो

शेषांश पृष्ठ २७५ पर

हृदय रोग से बचिये !

डॉ० रामचन्द्र शाकल्य सेवानिवृत्त आयुर्वेद मेडिकल आफीसर
देवल मौहल्ला (माता मन्दिर), सिवनी मालवा (होशगावाद) म० प्र०

सामान्य तोर पर यह माना जाता हे कि हृदय रोग ज्यादा खाने वालो को होता है, क्योकि ज्यादा खाने से मेद वृद्धि होती हे। अमेरिका के हारवर्ड विश्वविद्यालय के आहार शास्त्री श्री फ्रीडिक जे०स्टेर का कहना है कि मेद वृद्धि ज्यादा खाने से नहीं वरन कम व्यायाम से होती है । यदि हमे ज्यादा खाने का शोक रखना हे तो हमे कठिन परिश्रम की भी आदत डालनी चाहिये। डॉ० स्टेर का मानना है कि हृदय रोग से बचने के लिए आहार का सतुलन चाहिये, खुराक ऐसी होनी चाहिये जो स्वादिष्ट हो, अच्छा हो एव शक्तिदायक भी हो ।

अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन ने चालीस वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियो के लिये कुछ सुझाव दिये है, जिन्हे अपनाकर आप हृदय रोग से बच सकते ह।

१ अधिक वजन वढना।
२ व्यायाम की कमी।
३ भोजन मे स्नेह की अधिकता।
४ उच्च्य रक्तचाप।
५ धूम्रपान।

अनुसधान से पाया गया हे कि जो व्यक्ति उपर्युक्त पॉच बातो से अपने आप को नहीं बचाते वे उन लोगो की अपेक्षा जो इनसे बचते हे रक्तकोष के अधिक सख्त हो जाने के कारण कई बार भीषण हृदय रोग से ग्रसित हो जाते है यदि आप हृदय रोग उत्पन्न करने वालो इन पाचो दोषो से अपने को बचाये तो आप अधिक स्वस्थ बनेगे और दीर्घजीवी तथा सुखी रहेगे।

शरीर की वसा एव प्राणियों की वसा—

शरीर की वसा की अधिकता हृदय पर अधिक दबाब डालती हे । यह अधिक चुस्त कपडे पहनने की आवश्यकता धामाचयापचय और व्यायाम मे अरुचि उत्पन्न करने के साथ ही रक्त मे उच्च कोलेस्टरोल भी उत्पन्न करता है।

जो व्यक्ति आवश्यकता से अधिक भोजन करता है वह सामान्यतया प्राणियो द्वारा प्राप्त वसा लेना पसन्द करता हे। परिणाम स्वरूप बढा हुआ कोलेस्टोरेल रक्तपवाहिकाओ मे प्रवेश कर जाता है और रक्त नलिकाओ को आच्छादित कर देता है। अन्त मे यह हृदय को रक्त प्रदान करने वाली छोटी छोटी नसो मे प्रवेश कर जाता है और रक्त प्रदाय अवरुद्ध कर देता है । अत प्राणियो की वसा से बचना आवश्यक है। प्राणियो की चर्बी के अन्तर्गत चर्बीयुक्त मास, मास सार, पनीर, मक्खन, अण्डे, शुद्ध दूध तथा आइस्क्रीम भी आते हे। अत इनके बदले ऐसे स्वादिष्ट तेल जोकि ब्लड क्लोस्टोरेल लेवल को विना उचा किये शरीर द्वारा ग्राह्य किये जा सकते है सेवन करना उपयुक्त होगा। जैसे सोयाबीन, मटर, जैतून और सूरजमुखी का तेल भोजन बनाने, सलाद तैयार करने तथा बनावटी मक्खन तैयार करने के काम मे उपयोगी है।

दूध और मक्खन की जगह मलाई निकला दूध या कम चर्बी वाला दूध उपयोग करना लाभदायक होता है। इसी प्रकार दही के स्थान पर छाछ का प्रयोग लाभप्रद हे। मेदे से बने पदार्थ तथा गरिष्ठ भोजन के स्थान पर ताजे फलो का सेवन उत्तम है।

अधिकाश व्यक्ति अक्सर स्थूल काय होने लगते हे। अपनी बीसी आयु मे उनका बजन तथा कमर की गोलाई सामान्य रहती है। तत्पश्चात् विवाह, जबावदारी या कारखाने अथवा कार्यालय मे एक स्थान पर काम करते रहने के कारण व्यायाम नहीं कर पाते और हर वर्ष २ पौड के हिसाब से वृद्धि होती हे । यह वृद्धि अगले २० वर्ष तक विशेष रूप से असर नहीं करता और तब चालीस वर्षीय व्यक्ति विवाह के पूर्व की आयु की अपेक्षा ४० पोड अधिक बजनदार होकर अपने आपको चिकित्सक के समक्ष प्रस्तुत करता है।

बढे हुए वजन को कम करना वजन को बढने न देने के कार्य की अपेक्षा अधिक कठिन है । अत अपनी खुशी

से खाने की मात्रा व कोलेस्टोरेल कम किये जा सकते है। इससे वजन कम हो जाता है, कमर पतली हो जाती है और आयु दीर्घ हो जाती है।

नियमित व्यायाम— नियमित व्यायाम हृदय को सक्षम वनाने मे वहुत अधिक उपयोगी हे। यह समानोदक आवर्तन को मजवूत करता है। नियमित व्यायाम करने वाला व्यक्ति हृदय रोग से बचकर जीवित रह सकता हे । और शीघ्रता से रक्त के आवर्तन को वना सकता हे।

शरीर मे उत्पन्न शक्ति (कैलोरी) का परिणाम सम्यक् रखना अत्यन्त आवश्यक है। डॉ० स्टेर का कहना है १५ मिनट जल्द चलने से सामान्यत ७५ केलोरी का उपयोग होता है अर्थात् यदि सामान्य मनुष्य प्रतिदिन आधा घटा इस प्रकार जल्द चलने का व्यायाम करे तब यह १५० केलेरी शक्ति का उपयोग कर सकता है। ज्यादा खाने से जो अधिक उष्मा (कैलोरी) उत्पन्न होती है उसका पूर्ण रूप से उपयोग करना चाहिये।

वसा या कोलेस्टेरोल को रक्त प्रवाह मे जला देने से और रक्त कोलेस्टेरोल के लेवल को २०० से नीचे वनाये रखकर छोटी धमनियो से रक्त प्रवाह की रुकावट के खतरे को बचाया जा सकता है । इस सुधार को अल्पभोजन तथा नियमित व्यायाम द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

अपने पैरो का अधिक प्रयोग करना अपने दूसरे हृदय को बलवान बनाना है, अर्थात् अपने पैरो की मासपेशिया, पेट की मासपेशिया तथा डॉयफ्राम हृदय मे रक्त लौटाने मे अधिक सहायक है। अत. घूमने जाने के व्यायाम का धीमा कार्यक्रम अपनाया जाए तो सवसे श्रेष्ठ रहेगा। प्रतिदिन घूमना राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के दैनिक जीवन का एक अग बन गया था। घूमना सबसे सस्ता और सरलता से उपलब्ध व्यायाम है।

गहरा श्वास लेना भी एक ऐसा व्यायाम हे जो हृदय तथा फेफडो को अन्य व्यायाम की अपेक्षा अच्छी तरह शक्ति प्रदान करता है काम करने के स्थान मे ही ऊपर चढना व नीचे उतरना प्रतिदिन अच्छा व्यायाम हे।

व्यस्त जीवन मे समय की कमी हे , यह मन का भ्रम हे, आलस्य एव प्रमाद है, इसे त्यागे, अपनी दिनचर्या को विना वदले भी आप व्यायाम कर सकते है। अनेको छोटे-छोटे व्यायाम जो आप चलते फिरते वैठे ठाले कर सकते है इसके लिये कोई अच्छी योगाभ्यास की पुस्तक पढे ।

सूर्य ओपधि का निर्माण करके ही हृदय रोग के मरीज लाभ प्राप्त कर सकते हे। सूर्य उपासना एव पूजा एक मुख्य आधार हे निरोग रखने का। अत हृदय एव रक्तचाप जेसी जानलेवा वीमारियो से वचने के लिए अन्य कठिन साधनाओ को करने की अपेक्षा सूर्य उपासना करना श्रेयष्कर हे। ऋग्वेद की ऋचाओ मे सूर्य की प्रार्थना मिलती हे -

उद्यन्नद्य मित्र मह आरोहन्नुत्तरा दिवम् ।
हृदयराग मम् सूर्य हरिमाण च नाशय।।

अर्थात हे हितकारी तेज वाले सूर्य आज आप उदित होते तथा आकाश मे ऊचे समय मेरे हृदय रोग तथा पाडु रोग (पीलिया या जाडिस) को नष्ट करे।

रक्तचाप एव हृदय रोग से प्रभावित व्यक्ति को दिन मे दो-तीन वार शवासन करना चाहिये। शवासन करने से मनुष्य के हृदय की गति दस से पद्रह स्पदन प्रति मिनट घट जाती है । जव भी शरीर मे थकान का अनुभव हो तो रोगी को शवासन करके पुन ऊर्जा प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिये। हमारे मनीषियो ने शवासन पर काफी महत्व दिया है। एक वार दस-पद्रह मिनट के लिए शवासन मे रहने के वाद व्यक्ति पुन अपने अदर स्फूर्ति एव ऊर्जा सकलित कर लेता है। कॉमन वेल्थ मेडिकल एसोसिएशन मे प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ० के०के० दाते शवासन से अनेक हृदय रोगियो को ठीक करने मे समर्थ हुए ह। उनका मानना है कि हाइपरटेशन से उत्पन्न रक्तदाव की वीमारी को मात्र शवासन से ही समाप्त किया जा सकता हे।

कभी कभी या सख्त व्यायात करने के वजाय नियमित रूप से थोडा थोडा व्यायाम अवश्य करना चाहिये। मत्स्य पुराण का वचन है - आरोग्य भास्करादिच्छेत्" । ज्योतिष मे सूर्य को आत्मा का कारक हृदय तथा रक्तदाव का कारक और नेत्रो की ज्योति का कारण माना गया है।

उच्च रक्तचाप— माने हुए हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ० जार्जग्रिफिथ का कथन है कि दवाव से बचना यानि उच्च रक्तदाब से बचना है। लगातार दवाव अधिकाश हृदय रोगो का कारण है। यदि हृदय रोग के आक्रमण से बचना हे तो आराम के लिए बिस्तर पर जाने के बजाय खुले मेदान मे जाना और मन वहलाना अधिक श्रेयस्कर हे। प्राय व्यक्ति दवाव या उच्च रक्तचाप अल्प समय के लिए सहन कर सकता है परन्तु हमेशा बना रहने वाला तनाव अत मे रक्त

शिराओ को सकुचित कर देता हे। रक्तकोषो को सिकुडा देता है ओर उच्च रक्तदाब व हृदयरोग उत्पन्न करता है।

हृदय रोग विशेषज्ञो की राय है कि तनाव को अक्सर समय पर घटाते रहना चाहिये। अत तनाव रहित रहे।

आम भ्रान्त धारणा है कि चिता एव तनाव से मनुष्य दुवला होता है, वास्तव मे सच्चाई ठीक इसके विपरीत है, अधिक तनाव एव चिता मे व्यक्ति व्यर्थ खाता पीता है तनाव एव चिता आलस्य के अनेक कारणो मे से एक हे, इससे दूर रहने का प्रयास करे, इससे जहॉ समस्याओ से जूझने की शक्ति मिलेगी, वहीं क्रियाशीलता बढने के साथ ही साथ निरर्थक उपभोग से वच सकेगे।

हृदय रोग विशेषज्ञो के अनुसार रक्तदाब, विशेपकर उच्च रक्तदाब से प्रभावित लोगो को जीवन का खतरा सदेव वना रहता हे। रक्तदाब का सबंध हृदय से हे।

आज के आर्थिक युग मे व्यक्ति का जीवन अत्यन्त महत्वाकाक्षी हो गया हे। व्यक्ति की समस्त इच्छाए कभी पूर्ण नहीं हो सकती ह। इच्छाओ की पूर्ति न होने पर व्यक्ति मे कुठा, मानसिक तनाव तथा चिताये प्रवेश कर जाती है। चिन्ता ही चिता का कारण वनती हे।मानसिक तनाव जिसे हम अग्रेजी मे हाइपरटेशन कहते है, रक्तचाप एव हृदय रोग के लिये एक महत्वपूर्ण कारण वन गया।

सादा जीवन उच्च विचार का सिद्धात हमारे जीवन से निकलकर पुस्तको एव भाषणो तक रह गया हे। हेल्थ इज वेल्थ वाली कहावत भी उलट गई हे। आज का आदमी वेल्थ को हेल्थ से ज्यादा महत्व देने लगा हे। व्यक्ति सोचता है कि वेल्थ (धन) हे तो वह सब-कुछ प्राप्त कर लेगा, किन्तु वह यह नहीं सोचता कि हेल्थ (स्वास्थ्य) रहेगा तो वेल्थ प्राप्त करने मे वह समर्थ रहेगा। यही भोतिकता मनुष्य को रक्तचाप, हृदय रोग का शिकार बनाकर मृत्यु के द्वार तक ले जाती है।

धूम्रपान से बचे— हृदय रोग के मशहूर विशेषज्ञ डॉ० व्हाइट वताते हे कि जहॉ तक हृदय रोग का सवाल हे वह सिर्फ अति परिश्रम की वजह से ही नहीं है यह रोग ज्यादा धूम्रपान करने की वजह से या कम परिश्रम करने की वजह से या कम परिश्रम वालो को जो ज्यादा खाते है ओर वजन वढाते हे या उच्च रक्तदाव से होता है।

अधिक धूम्रपान करने वालो को कम धूम्रपान करने वालो की अपेक्षा चोगुनी मात्रा मे हृदय रोग का शिकार होना पडता है। यदि आपको अपने हृदय पर दया करनी है तो धूम्रपान वद कीजिये।

तम्वाकू का प्रमुख तत्व निकोटिन होता हे। सिगरेट की लत के लिये यही जिम्मेदार बनता हे। कम मात्रा मे लिये जाने पर यह तत्रिका तत्र को उत्तेजित करता हे, अधिक होने पर शमन, हृदय का कार्यभार और आक्सीजन की आवश्यकता वढ जाती हे।

खून मे ग्लूकोज, कोलेस्टेराल और वसा अम्लो की तादाद बढने लगती हे। प्लेटलेटो मे ऐसे परिवर्तन होते ह कि रक्तनलिकाओ मे खून जमने (थ्राम्बोसिस) की सभावना बढ जाती है। कोरोनरी आर्टरी डिजीज (हृदय की धमनियो मे एथीरोस्क्लेरोसिस) अधिक होती है। दिल के दारे से मृत्यु की सभावना भी वढ जाती ह। मस्तिष्क की धमनियो मे भी ऐसे ही परिवर्तन होते हे। इनमे रक्तस्राव (सिरेब्रल हेमरेज) होने व रक्त जमने (थ्राम्बोसिस) के उपद्रव होते हे।

मनुष्य के शरीर पर तम्वाकू पीने के खतरनाक असर निम्न प्रकार हे -

१ रक्तशिराओ-धमनियो का सकुचन, २ रक्तचाप वृद्धि, ३ हृदय की धडकन की गति तेज होना ४ अन्य कई खामियॉ।

तम्याकू के सेवन को बद करना यानी हृदय रोग से रक्षा करना हे। यदि स्वस्थ रहने की मनुष्य की इच्छा हे तो उसे सर्वप्रथम तम्याकू के सेवन से बचना आवश्यक व प्राथमिक सुधार हे।

आपके लिये निम्नलिखित सुझाव ह। आप पालन कीजिए-

१ अपना वजन घटाईये, २ प्रतिदिन नियमित व्यायाम कीजिये, ३ प्राणी की चर्बी का प्रयोग कीजिये। ४ तनाव या दाब कम कीजिये। ५ धूम्रपान बद कीजिए।

उपर्युक्त सुझावो का पालन कर स्वस्थ रहिये ओर जीवन का आनद प्राप्त कीजिये तथा अपने हृदय की ओर से निश्चित रहिये। इससे आपका हृदय पूरे सो वर्ष से भी अधिक समय तक धडकता रहेगा।

पश्येम शरद शत, जीवेम शरद शतम्।

अर्थात् हम सौ वर्षो तक देखते रहे ओर सो वर्षो तक जीवित रहे।

⌘

जटामाँसी (बालछड़)

जटामासी भारत मे पैदा होने वाली खुश्क टेढी जडे है जिन पर जटा की भाति तन्तु (लम्बे बाल) होते हे इनसे काफूर जैसी खुशवू आती है यूनानी मे इसको वालछड कहते हे। तथा डाक्टरी मे इसको **Valerian** कहते है।

रूस के डाक्टर **Sebastıon Kncıps** ने इन जडो को मानसिक और स्नायु रोगो मे वहुत ही सफल दवा वताया हे ।यह दवा दिमाग और स्नायु पर शामक प्रभाव डालती हे। नींद न आना, मिर्गी, हिस्टेरिया, हाई ब्लड प्रेशर, पागलपन मे बहुत ही लाभकारी है। मानसिक ओर स्नायुविक कमजोरी के कारण मासपेशियो मे ऐठन, सुकडाव और आक्षेप होने से दर्दो ओर ऐठन के कारण रोगी को वेहोश्री के दोरे पडने मे चमत्कार दिखाती है।

जटामासी का उपयोग विभिन्न रोगो मे सफलतापूर्वक सभी चिकित्सा प्रणालियो मे (एलोपैथिक, आयुर्वेदिक, होम्योपैथी, यूनानी आदि) विभिन्न रूपो मे किया गया है।

गुण— जटामासी (वालछड) - सज्ञास्थापन (चरम) गुण की दृष्टि से लघु, तीक्ष्ण, स्निग्ध है। रस की दृष्टि से तिक्त कषाय और मधुर हे।

सस्थानिक कर्म बाह्य- इसका प्रलेप दाहप्रशमन, वर्ण्य एव वेदना स्थापन है। इसका अवचूर्णन स्वेदाधिक्य को रोकता है। कषाय - मधुर होने के कारण यह रक्तवाहिनी सकोचक तथा रक्तस्तम्भन हे। यह शोथहर भी हे कर्म की दृष्टि से यह स्वेदजनन और पित्त शामक होने से कुष्ठघ्न है, और तीक्ष्ण होने से केशवर्धक है। प्रयोग की दृष्टि से शोथ, शूल एव दाह मे लेप करते है व्रण-शोथ एव व्रणविकार मे लेप किया जाता है।

''मासी तिक्ता कषाया च मेध्या कान्ति वलप्रदा स्वाद्वी हिमा त्रिदोषास्र दाहविसर्प कुष्ठनुत्।।'' (भा०प्र०) ।

डाक्टर मार्टल का अनुभव है कि इसका तेज क्वाथ पिलाने से घावो की सख्त पीडा दूर हो जाती है। डॉ०नेली गान इसको पेट के कीडे नष्ट करने मे वहुत लाभकारी बताते है जब पेट मे कीडे होने के कारण रोगी के अगो मे ऐठन हो तो इस दवा के प्रयोग से ऐठन व आक्षेप दूर हो जाते है।

स्नायुविक वदहज्मी मे यह विशेष रूप मे लाभकारी है। पेट फूल जाये, दिल की कमजोरी को दूर करके दिल मस्तिष्क और स्नायु को शक्ति देती हे।

हृदय कमजोर हो, थोडा काम करने से दिल की धडकने वढ जाये। दिल की कमजोरी को दूर करके दिल, मस्तिष्क ओर स्नायु को शक्ति देती ह।

स्त्री को मासिक धर्म दर्द ओर कष्ट स रुक रुककर आये, प्रदर दोषो से सिर मे दर्द, सिर चकराना आदि रोग दूर करती ओर रज विना कष्ट लाती हे। रोगी के चेहरे ओर शरीर मे गर्मी की लहरे प्रतीत हो, चेहरा लाल हो जाये, गर्म या ठण्डा पसीना आये, स्त्री के पेट सेगोला उठता प्रतीत हो जो गले मे आकर फस जाये, गला घुटे ओर स्त्री वेहोश हो जाये तो दवा एलोपैथिक की पेटेण्ट दवाओ ओर इन्जेक्शनो से भी अधिक लाभकारी सिद्ध होती हे।

स्त्रियो की आयु ४५ वर्ष की हो जाने पर जव उनका प्रदर हमेशा के लिये वन्द होने लगता हे तो उनको कई रोग हो जाते हे। चेहरे और शरीर मे गर्मी प्रतीत होना, अधिक पसीना आना, दिल घवराना, चिडचिडापन, नींद न आना आदि कष्ट इस दवा से दूर हो जाते ह। यकृत या गर्भाशय सूज जाने पाण्डु रोग मे भी वहुत लाभकारी है। यह दवा मूत्र अधिक मात्रा मे लाती ओर मूत्र करते समय जलन आर टीस को दूर करती हे।

इस वूटी को कूटकर एक से तीन माशा दूध या ताजे पानी से दे या इस दवा को रात को शीशे या चीनी के वर्तन मे पानी मे डालकर रख दे दिन को निथरे पानी मे मधु मिलाकर या इसका क्वाथ वनाकर दे।

एलोपैथी मे इससे बना मिक्सर वलेरियन अमोनिएटा मात्रा ५ से एक ड्राम) और जिक वलेरियनेस (मात्रा एक से तीन ग्रेन) कैमिस्टो से प्राप्त कर सकते हे। वलेरियन से वनी डाक्टरी दवाओ को लेने पर अन्न नलिका मे गर्मी सी प्रतीत होती है । नाडी की गति वढ जाती है।

टिक्चर वलेरियन अमोनिएटा पानी मे मिलाकर पिलाने से अन्तडियो की वायु गुदा से निकल जाती हे ओर पेट फूलने तथा पेट के दर्द को आराम आ जाता हे। इससे बेहोशी और दिल अधिक धडकने को भी आराम हो जाता है। मिर्गी, सिर और हाथ पाव कापना, काली खासी,

हिस्टेरिया की भी शर्तिया दवा हे। अधिक मात्रा मे देने से वार-वार और अधिक मूत्र आने मे लाभकारी हे।

होमियोपैथी मे इसका टिंचर विकता हे। स्त्री हिस्टेरिया मे बेहोश हो जाये, स्वभाव चिडचिडा, वहमी, ऐसा प्रतीत करे जेसा वायु मे लटकी हुई या उसके गले मे धागा लटक रहा हे। वच्चा दूध की के कर दे, के और मल मे दही की भाति जमे वडे वडे टुकडे निकले गृध्रसी (रींगावाई) का दर्द जो खडा होने या पाव को फैलाने पर वढ जाये। होमियो पेथिक टिक्चर देने से आराम रहता है।

अन्य प्रयोग—

१ किसी अग का विना इच्छा कापना जटामासी सात माशा, ढाई पाव पानी मे भिगोकर छान ले । पाच तोला पानी प्रात साय पिलाये।

२ हृदय का अधिक धडकना जटामासी १० से १५ रत्ती, चूर्ण दालचीनी दो रत्ती और कपूर १/४ रत्ती दिन मे दो वार खिलाये। हृदय अधिक धडकने मे लाभप्रद है।

३ हिस्टेरिया, वायुगोला- जटामासी ४ माशा १० तोला पानी मे डालकर हल्की आग पर रखकर वाद मे छान ले । एक दो ओस पानी मे प्रात साय पिला दे।

४ जटामासी का तेल वालो पर प्रतिदिन लगाते रहने से वाल काले हो जाते हे

५ जटामासी ७ ५ रत्ती, कपूर १ रत्ती, इलायची २ ५ रत्ती यह एक मात्रा हे। दिन मे दो वार दे। हिस्टेरिया, मिर्गी, दिल अधिक धडकने मे लाभकारी हे।

६ जटामासी सवा तोला उवलता हुआ पानी १० छटाक मे डालकर एक घण्टा रख दे। छानकर दो छोटे चमचे दिन मे तीन वार पिलाये। हिस्टेरिया, स्नायु दुर्वलता, दिल अधिक धडकना, हाथ पाव ओर सिर के कापनेमे वहुत गुणकारी है

७ जटामासी के चूर्ण तथा काले जीरे का चूर्ण १-१ ग्राम तथा काली मिर्च चूर्ण ५ ग्राम एकत्रकर मिश्रण को दिन मे २ वार जल के साथ अथवा गोमूत्र के साथ सेवन कराने से स्त्रियो के मासिक स्राव के समय होने वाली पीडा तथा मानसिक और शारीरिक अवसाद मे लाभ होता है।

८ जटामासी १० रत्ती तथा दालचीनी २ रती मधु के साथ चटाने से उच्च रक्तचाप मे लाभ होता हे।

६ जटामासी आमलकी, अश्वगधा २०-२० ग्राम, मुक्तापिष्टी जहर मोहरापिष्टी, अकीकपिष्टी २०-२० ग्राम, शुद्ध शिलाजीत ५० ग्राम, सर्पगन्धा १० ग्राम का सूक्ष्म चूर्ण।

विधि—

सभी को खरल मे अच्छी तरह घोटकर शखपुष्पी भृगराज, जटामासी, व्राह्मी, सर्पगन्धा इन पाच औषधियो के स्वरस और क्वाथ की १-१ भावना देकर चने के वरावर गोली वनाकर रख ले।

मात्रा - १-२ गोली सुवह शाम जल या दूध के साथ सेवन करावे।

उपयोग - यह ओषधि रक्तदावाधिक्य, मनोभ्रम, चिन्तभ्रम, मानसिक दोर्वल्य, अनिद्रा आदि की अवस्था मे वहुत लाभदायक योग है।

मैं आपका हृदय हूँ शेषांश पृष्ठ 256

हे, तो दो मजिल तक पेदल चढे ओर फिर लिफ्ट की सहायता लें। नियमित व्यायाम स मुझे रक्त परिसचरण मे वहुत सहायता मिलेगी। ऐसी स्थिति मे यदि एक धमनी अवरुद्ध हो जाए, तो अन्य धमनिया मुझ तक पाषण पहुचा देती हे। अपने भोजन पर नियत्रण रखे। वसा की अधिक मात्रा धमनियो मे अवरोध उत्पन्न कर देती हे। कुछ लोग भोजन मे ४५ प्रतिशत कैलोरी वसा से ही प्राप्त करते हे। ऐसी स्थिति मे अवरुद्ध धमनियो के कारण मृत्यु की सभावना ५० प्रतिशत तक वढ जाती है। क्या आप जानते हे कि गरिष्ठ और वसायुक्त भोजन करने से क्या होता ह ? वसा के सूक्ष्म ग्लोव्यूल लाल रक्त कणिकाओ को आपस मे चिपका देते हे और अवरोध पैदा कर देते ह। मुझे इस अवरोध को रक्त वाहिनियो से हटाने के लिए कडे प्रयास करने पडते है। मे कठिन से कठिन परिस्थितियो मे आपकी सहायता के लिए तत्पर हू। परन्तु मे भी आपसे सहयोग की अपेक्षा करता हू।

हृदय रोगों में पथ्य व्यवस्था

वैद्या कुसुम लता शर्मा
बी०ए०एम०एस०, एम०डी०
राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय विधानसभा

हृदय हमारे शरीर का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवयव है आधुनिको ने हृदय को सिर्फ रक्त का आदान प्रदान करने वाला अवयव मात्र ही माना है परन्तु हमारे पूर्वाचार्यो ने इसको मन का ओज का, रस का, रक्त का, प्राण का और चेतना का प्रमुख अधिष्ठान बताया है, सत्व, रज और तम का भी अधिष्ठान माना है अर्थात षडगो से युक्त शरीर बुद्धि इन्द्रिया और इन्द्रियो के पाचों विषय, सगुण आत्मा, मन और मन का विषय आदि ये सब हृदयाश्रित रहते है। आहार पोष्टिक व सतुलित हो नियमित रूप से व्यायाम करना, धूम्रपान, चाय, काफी मदिरा, अण्डा तथा लवण रस का सेवन नहीं करना, विषाद चिन्ता एव तनावो से दूर रहना।

आयुर्वेद मे जो द्रव्य हृदय के लिये लाभप्रद है, उसे हृदय कहा गया है। ये द्रव्य हृदय की आकुचन शक्ति बढाकर रक्तवाहिनियो को बलवती बनाते है, हृदय आहार के अतिरिक्त बल्य, बृहण शोणित, स्थापन, रसायन, जीवनीय, ओजोवर्धक आहार हृदय रोगो मे लाभदायक है। हृदय रोगी को फल एव शाक अधिक लाभदायी होते है, स्वास्थ्य विशेषज्ञो के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को कम से काम ३ ओस से १० ओस तक शाक स्वास्थ्य सरक्षण की दृष्टि से आवश्यक है।

हृदय की कमजोरी दूर करने मे नीबू सर्वोत्तम है। इसके निरन्तर प्रयोग से रक्तवाहिनियो मे कोमलता आती है, इससे वृद्धावस्था तक हृदय शक्तिशाली बना रहता है, एव हार्ट फेल का भय नहीं रहता है, नींबू अम्ल होते हुए भी क्षारीय है, नींबू का रस मुख्य रूप से पोटेशियम साइट्रेट है शरीर मे यह खडित होकर साइट्रिक एसिड और पोटेशियम का रूप ग्रहण कर लेता है ऑक्सीकरण होने से पोटेशियम ऑक्सीजन और हाइड्रोक्साइड बन जाता है जो बहुत सशक्त क्षारीय है।

सेव भी हृदय के लिये बहुत लाभप्रद है सेव मे प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फेट लोहा, शर्करा पोटेशियम, सोडियम मैग्नेशियम और कई प्रकार के विटामिन होते है कार्बोहाइड्रेट का एक रूप पेक्टीनसेव मे खूब पाया जाता है। सेव के मुरब्बा भी कुछ दिन खाने से हृदय की दुर्बलता दूर होती है। फलो मे मुरब्बे हृदय के लिये हितकारक है।

लीची फल और अमरूद भी हृदय को शक्ति प्रदान करते है। केला शहद मे मिलाकर खाने से हृदय शूल नष्ट होता है दाडिम एव फालसा भी अम्ल होने से हृदय के लिय हितकारी है। फालसा १ तोला के साथ ५ काली मिर्च के दाने तथा थोडा सेधा नमक मिला घोटकर उसमे १०-२० तोला जल मिलाकर छानकर नीबू का रस मिलाकर विशेषता ग्रीष्म काल मे नित्य नियमपूर्वक लेते रहने से हृदय की दुर्बलता धडकन आदि दूर होते है।

मोसमी के निरन्तर प्रयोग से रक्तवाहिनिया लचकीली हो जाती है। उनमे एकत्रित कोलेस्ट्रोल सामान्य हो जाता है। इसी प्रकार आम भी हृद्य फल है इसमे खनिज लवण प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, केल्शियम, फॉसफोरस, लोहा एव विटामिन ए बी सी डी होते है

२५० ग्राम टमाटरो के रस मे ३ ग्राम अर्जुन त्वक चूर्ण मिलाकर १५ दिन तक सेवन करनेसे हृदय की धडकन ठीक स्थिति मे आ जाती है । टमाटर मे प्रोटीन, लोहा, फास्फोरस, क्लोरीन के अतिरिक्त ताम्र अधिक पाया जाता है जो हृदय के लिये अत्यन्त लाभप्रद है। यह रक्त कणो को बढाता है। नारियल ओर नारियल का जल भी हृद्य कहा गया है।

कच्चे नारियल की कोमल गिरी को पीसकर वस्त्र मे निचोडकर जो दूधिया रस निकले वह ५ तोला लेकर उसमे भुनी हुई हल्दी के टुकडे घिसकर तथा २ तोला घी मिलाकर पिलाये, हृद्रोग मे लाभ होगा।

पिस्ते की गिरी खाने से भी हृदय को शक्ति प्राप्त

होती हे। द्राक्षा हृद्दाह मे उपयोगी है एव उत्तम तर्पण करती हे। इन फलो के अतिरिक्त आम्र, पपीता, सेव, नाशपाती सतरा, द्राक्षा और ताम्बूल के पानक शर्वत भी हृदय रोगो मे पथ्य हे। ग्रीष्म ऋतु मे इनका प्रयोग अवश्य करना चाहिये।

लहसुन हृदय रोगो मे वहुत ही लाभदायक है। इसकी कलियो को दूध मे उवालकर देने से कोलेस्ट्रोल समाप्त होता है हृदय की दुर्वलता मे शुण्ठी का क्वाथ सेधव मिश्रित भी उपर्युक्त रहता हे।

हींग दुर्वल हृदय को शक्ति देता है। रक्त के जमने को रोकता है। रक्तसचार सरलता से करता है। निम्न रक्तदाव मे यह अत्यन्त लाभदायक ह। इसी प्रकार धनिया भी हृदय की दुर्वलता वैचनी आदि को दूर करता हे। मिश्री के साथ पकी हुई इमली का रस पिलाने से भी हृदय की जलन मिट जाती हे। इलायची का प्रयोग भी हृदय के लिये श्रेष्ठ हे हृदय रोगो मे जहा लवण अपथ्य कहा गया हे वहा सेन्धव लवण प्रयोग मे लेना चाहिए। हृदोग मे आलू का रस पीना चाहिए यदि रस निकाला जाना कठिन हो तो कच्चे आलू को मुह मे चवाकर रस पीना चाहिए तथा गूदे को थूक देना चाहिए। शाको मे अरवी की वनी सव्जी हृद्रोगो मे आश्चर्यजनक लाभ पहुचाती हे। वथुआ ओर मेथी की सव्जी का प्रयोग भी हृदय रोगो मे सदा पथ्य है मनुष्य शरीर की फास्फोरस की आवश्यकता एक करेले से पूर्ण हो सकती हे। करेला ओर परवल सदा हृदय रोगो मे लाभदायक है।

कोलेस्ट्रोल को मिटाने के लिये दही भी उपयुक्त है समस्त हृदय रोगो मे घृतपान शुभावह लाभप्रद हे।

आधुनिक दृष्टिकोण से घृत वसा का उत्पादक हे। अत वसामय द्रव्यो से कोलेस्ट्रोल उत्पन्न होता हे जो हृदय कला को स्थूल बनाकर रक्त सवहन मे वाधा उपस्थित करता ह किन्तु आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से यह स्थिति कफज एव कृमिज एव क्वचित सन्निपातज हृदय रोगो से होती हे, वह लघन पाचन के पश्चात् सस्कारित घृत का प्रयोग किया जा सकता है । हृदय की जीर्ण व्याधिजन्य दुर्वलता मे दीपन पाचन एव सन्तर्पण का काम करता हे।

हृदय को शक्ति देने के लिये विश्व की समस्त ओषधियो मे मधु सर्वोत्तम हे जव रक्त मे ग्लाइकोजन के अभाव से रोगी वेहोश होने लगे सर्दी या कमजोरी के कारण हृदय की घडकन अधिक हो जाय दम घुटने लगे तो दो चम्मच मधु के सेवन से नवीन शक्ति उपलब्ध होती हे। उच्च रक्तदाव मे शामक प्रभाव डालकर रक्तवाहिनियो की उत्तेजना को यह घटाता है पुराना गुड भी हृदय के लिये लाभदायक है। हृदय विकारो मे वंगसेन का एक प्रयोग हे। वहेडा तथा असगन्ध के समभाग चूर्ण मे पुराना गुड मिलाकर ३-४ माशा की मात्रा मे पकाये हुए सुखोषण जल के साथ सेवन करने से हृदयगत दूषित वात एव तज्जन्य हृदय विकार नष्ट हो जाते है।

अनाजो मे हृदय रोगी को पुराने रक्त शालि एव गोधूम उपयोगी हे गेहू मे प्रोटीन, कार्वोहाइड्रेट खनिज लवण, सेल्युलाज, लोहा, फास्फोरस एव विटामिन ए वी होता है ३० ग्राम गेहू मे १०० केलोरी ऊष्मा देने की शक्ति होती है। चक्रपाणिदत्त ने हृदय रोगो मे गोधूम को ओषध रूप मे प्रयुक्त किया हे। दालो मे मूग ओर कुलत्थ लाभप्रद है कुलत्थ की दाल भुनवाकर पीसकर दूध मे पतला हलुआ वनाकर कुछ मास तक ५० ग्राम प्रतिदिन की मात्रा से सेवन करने पर हृदय रोगो मे लाभ होता हे।

स्वेदन, विरेचन, वमन, लघन, वस्ति, विलेपी पुराने शालि चावल, लाल मृग जागल जीवो का मासरस, मूग की दाल, कुलथी, परवल, केले का पक्का फल, पुराना गुड, आम अनार, नई कच्ची मूली अण्डी का तेल आकाशीय जल, सैधा नमक, अगूर, मट्ठा, सोठ, अजवायन, लहसुन हरड कूठ, धनिया, काली मिर्च, पिप्पली, अदरक, सोवीरक सिरका, शहद, वारूणी, मदिरा, कस्तूरी, चदन शर्बत, पान चवाना सभी हृद्रोगी को लिये पथ्य हे। पर दोषज भेद से हृद्रोग का ध्यान देकर पितज मे चन्दन पानक ओर कफज मे कस्तूरी युक्त पान का प्रयोग करना चाहिए।

हृदय रोग का निश्चय हो जाने पर रोगी को पूर्ण मानसिक व शारीरिक विश्राम देने के लिये व्यवस्था करनी चाहिए अर्थात् उसे साफ व हवादार तथा निर्जन स्थान मे लिटाना चाहिए, सिर को ऊचा रखना चाहिए शरीर के कपडो को ढीला कर देना चाहिए । रोगी के सामने कोई ऐसी चेष्टा नहीं करनी चाहिए जिससे कि उत्तेजित हो उठे।

रोगी को सुपाच्य ओर हल्का भोजन लेना चाहिए पानी भी थोडा-थोडा कई बार मे पीना चाहिए गाय का दूध या मट्ठा, फल, सब्जी, गुड, शहद, विना छने आटे की रोटी, गेहू का दलिया, अकुरित गेहू रोगी को अनुकूल पडता है। नमक व वसा वाले पदार्थो से उसे परहेज करना चाहिए।

❑

हृद्गति हृद्रोग - प्रकार प्रशमन

डा० वैद्य फूल चन्द्र शर्मा, भिषगाचार्य
पूर्व प्रोफेसर, एन० आई० ए०, जोधपुर
वर्तमान पता— सजीवन चिकित्सालय, ५३ जोहरी बाजार, जयपुर (राजस्थान)

हृदय पुण्डरीकेन सदृश स्यादधोश्रुम्

हृदय मानव शरीर मे वक्षस्थल मे वामभाग मे वक्षस्थ पर्शुकाओ के मध्य प्रतिक्षण स्पन्दन करने वाला वह अग हे जिससे प्रतिक्षण मानव शरीर का पोषण होता रहता हे। इसकी क्रिया ही मानव जीवन की द्योतक हे तथा इसकी क्रिया का अवसान मानव जीवन का अवसान है, दूसरे शब्दो मे हृदय ही जीवन हे।

चरक ऋषि ने त्रिमर्म माने है हृदय, वस्ति, शिर, इन पर आघात से जीवन तत्क्षण नष्ट हो जाता है इसलिये चिकित्सा रहस्य का प्रतिपादन करते हुए आचार्य ने इन मर्मत्रय की रक्षा का सर्वोपरि प्रतिपादन किया हे। इसी को शार्गधर सहिता मे निम्न रूप से उद्यृत किया हे।

हृदय चेतनास्थानमोजसश्चाश्रयो मतम्
शिराधमन्यो नाभिस्या सर्वाव्याप्य स्थिता स्तनुम् ।
पुष्णति चोनिशकायो सयोगात्सर्वधातुमि ।
नाभिस्थ प्राणपवन स्पष्ट्वा हृत्कलान्तरम् ।
कण्ठाद्वहिर्विनिर्यातिपातु विष्णुपदामृतम्।
पीत्वा-चाम्बरपीयूष पुनरापाति वेगत ।
प्रीणयन देहमखिल जीवयन जठरानलम् ।
शरीर प्राणेयोरव सयोगादायुरुच्यते।

आचार्य ने हृदय की चेतना का स्थान तथा ओज धातु जो रस, रक्त, मास, मेद, अस्थि, मज्जा तथा शुक्र के पश्चात अष्टधातु है, का आश्रय स्थान माना है। आधुनिक विज्ञान वेत्ताओ ने रक्तपरिभ्रमण का कम बताया है वह उपुर्यक्त श्लोको से पूर्णत मेल खाता हे । क्योकि सम्पूर्ण शिरा धमनियो का सम्मिलन स्थान नाभि ह, जो प्राण वायु का मूल स्थान ह, से प्राण वायु को ग्रहण कर, हृत्कमल मे पहुच कर वहा रक्त को प्राण वायु से परिपुष्ट कर, पुन नाभि प्रदेश को प्राप्त होकर, उसी वेग गति से नासिका के द्वारा बाहर आकर पुन बाहर से प्राणवायु ग्रहण कर, श्वास, प्रश्वास क्रिया के द्वारा प्रतिक्षण शरीर के समस्त धातुओ को पुष्ट कर, जठरानल को उद्दीप्त कर, हृदय को रसरक्त के द्वारा पोषण करती रहती हे । शरीर ओर प्राण वायु के इस सयोग को ही आयु शब्द से आयुर्वेद विज्ञान मे उद्धत किया हे। इससे यह सिद्ध हो जाता ह कि शरीर के अन्य अगो के अतिरिक्त हृदय को प्राणवायु की आक्सीजन की अत्यन्त सतत् आवश्यकता रहती हे। प्राय यह भी निर्विवाद हे कि अधिक परिश्रम करने पर प्राणवायु की कम आवश्यकता तथा कम परिश्रम करने पर प्राणवायु की कम आवश्यकता रहती है । जो रक्त के द्वारा हृदय प्रदेश को प्राप्त होता रहता हे। यह भी विज्ञान सम्मत सिद्ध हे कि शरीर के ओर अग तो कुछ विश्राम के साथ अपना कार्य करते हे, किन्तु हृदय एक ऐसा अग हे जो निरन्तर क्रियाशील रहते हुए अपना कार्य सम्पन्न करता रहता ह। इसी से शास्त्रो मे हृदय को (हृदय चेतना स्थानमुक्त सुश्रुत देहिनाम्) का उद्घोष किया हे। इस प्रकार श्वसन व रक्त सवहन का एक दूसरे से घनिष्ट सम्बन्ध हे । योग शास्त्र मे प्राणायाम पर जो अधिक जोर दिया जाता हे, वहा भी धातुओ की परिपुष्टि मे प्राण वायु की अधिक पूर्ति का सिद्धान्त सन्निहित हे।

सामान्यत स्वस्थ व्यक्ति के रक्त परिभ्रमण को नापा जाय तो यह प्रकुचन के समय १२० से १४० तक पाया जाता है ओर न्यूनतम ६० से ६० होता हे । सज्ञावह नाडी तत्रो मे उत्तेजना मनोद्वेगो की उत्तेजना या नाडीतनाव जो अन्य किसी कारण से उत्पन्न हो जाना, नाडीतत्र के रक्त परिभ्रमण को प्रभावित करता हे । इसकी कार्मुकता को ज्ञात करने के लिये सहसा हर्ष या विषाद तथा सहसा जोर से आवाज के साथ ठडे हाथ से त्वचा को स्पर्श करे तो रक्त

भार बढ जाता है और यदि केवल आवाज ही हो और ठडे हाथ से त्वचा पर अधिक दाब न दिया जाये तो यह दवाव उतना नहीं बढता जितना उपुर्यक्त क्रिया से वढता हे और भी अनेक कारण हे जिससे रक्त भार मे परिवर्तन देखा जाता हे । यथा— आसपास का तापक्रम, वायुमण्डल का दाव, शारीरिक परिश्रम, मानसिक तनाव, अनेक प्रकार के विप प्रयोग, विविध उपसर्ग तथा पारिवारिक व देशगत परिस्थितिया ।

सामान्यत गहरी श्वास लेना या प्राणायाम करना भी शिराओ मे रक्त सचार को सुदृढ करता है। श्वास अन्दर लेने पर या गहरी श्वास लेने पर प्राणवायु तथा रक्त अधिक मात्रा मे फुपफुसो मे प्रवेश करता है तथा हृदय को भी अधिक मात्रा मे रक्त प्राप्त होता है ओर प्राण वायु (आक्सीजन) भी। इससे शरीरगत धातु पुष्ट होते है तथा आयु की वृद्धि होती हे । यह भी एक नैसर्गिक क्रम हे कि हृदय एक ऐसा अग हे जो शरीरस्थ विभिन्न अगो को अपनी आवश्यकता के अनुसार रक्त द्वारा पोषण करता है और विविध परिस्थितियो मे रक्त की आवश्यकता के अनुसार अपने कार्य का निर्धारण करता है। यथा हृदय विश्राम काल मे या शीत काल मे मन्द गति से चलता हे तथा गर्मी या परिश्रम के समय तीव्र गति से चलता है। वातनाडीजन्य उत्तेजना भी इसकी गति को वढा देती हे । यह भी विज्ञान सम्मत वात है कि विविध परिस्थितियो मे रक्त वाहिनिया यातो विस्फारित हो जाती है या सकुचित हो जाती हे शीत के प्रभाव से भी त्वचा की रक्तवाहिनिया सकुचित हो जाती हे ओर गर्मी के प्रभाव से विस्फारित हो जाती हें। विभिन्न मनोभाव भी रक्तवाहिनियो को विस्फुारित व सकुचित करते रहते हे। यथा लज्जा के प्रभाव से मुखमण्डल का लाल होना और भय या विपाद के कारण मुखमण्डल का सफेद होना भी इसका स्पष्ट प्रमाण है । इसीलिये विद्वत्जन दीर्घ जीवन के लिये हृदय को क्रियाशील रखते हे ओर इस क्रियाशीलता के लिए सुश्रुत ने स्वस्थ्य मनुष्य के लक्षण दिये हे। यथा।

समदोष समाग्निश्च समधातु मल क्रिय । प्रसन्नात्मेन्द्रियमन स्वस्थ इत्यभि धीयते। अर्थात् आयुर्वेद के सिद्धान्तानुसार वात, पित्त व कफ की समावस्था ओर जठराग्नि व धात्वग्निओ की समावस्था या सम्यक् क्रियाशीलता तथा समाग्नि के द्वारा धातुओ के सम्यक् परिपाक स्वरूप उत्तरोत्तर धातु यथा भोज्यन्न से रस, रस से रक्त, रक्त से मास, मास से मेद और मेद से अस्थि, अस्थि से मज्जा, मज्जा से शुक्र तथा शुक्र से ओज की निष्पत्ति होती रहती है। और समाग्नि से मल क्रिया भी सुचारु रूप से सम्यक् होती रहती हैं और इन क्रियाओ के सम्यक् निष्पोदन से आत्मा, इन्द्रियों और मन प्रसन्न होते हे, इसी से मनुष्य को स्वस्थ की सज्ञा दी है । इनमे से एक की भी विषमावस्था रोगमूलक हे, क्योकि स्वास्थ्य के लिये इनका सतत् सामञ्जस्य परमावश्यक हे।

आयुर्वेद विज्ञान मे स्वतत्र हृदय रोग का उल्लेख मिलता हे और उनकी सख्या ५ बताई हे

''यथा हृद्रोगा स्मृतापञ्चवात पित्त कफैस्त्रिभि ।
चतुर्थो सन्निपातेन पञ्चमो कृमिजस्तथा।''

आयुर्वेद मतानुसार ''रोगोसर्वेऽपि मन्देग्नो सुरतामदुराणिच के आधार पर जितने भी रोग है वे सव अग्नि दौर्बल्य के कारण होते हे क्योकि उत्तरोत्तर धातुओ का पोषण समाग्नि के बिना हो ही नहीं सकता । एतवता भोज्यन्न के परिपाक से जो रस की उत्पत्ति होती हे, उसके न्यूनाधिक होने से उसके आश्रय भूत आमाशय के सन्निकट अगो का रोगाक्रान्त होना आवश्यक है, दूसरे इसका स्थान ही हृदय है, यदि रस शब्द से तरल लिया जाय तो धातुओ मे रस के बाद तरल धातु रक्त ही हे जो कि अनवरत हृदय की सक्रियता से इतर धातुओ तथा शरीर का पोषण करता है । इसके दूषित होने से भी हृदय रोगाक्रान्त होना आवश्यक हे। दैवयोग से रसरक्तवह स्रोतो मे किसी भी दोषजन्य विकृति हो जाय तो भी हृद्गृह हो जाता हे । वहा स्तम्भ होने से हृदय की सकोच क्रिया बलपूर्वक होती हे, इससे भी हृच्छूल उत्पन्न हो जाता है। आधुनिक विज्ञान इसे ही (एन्जाइना) कहते है। आयुर्वेद मे इस प्रकार के हृच्छूल को वातज हृदय रोग मे सम्मिलित किया जाता हे, कभी कभी रस रक्तवह स्रोतो के स्तम्भ मे रसरक्त स्रोतो से वाहर रिस कर जमा जाता हे इससे भी रसरक्तवाही स्रोतो मे वायु की गति मे व्यवधान आता हे, उससे भी शूल उत्पन्न हो जाता हे । इसमे व्यान वायु जो हुए रसरक्त से आवृत होकर शूल उत्पन्न करता है।

यद्यपि सिद्धान्तानुसार ''नहि वाताहृतेशूलम्''। के आधार पर हृच्छूल मे वात का अवरोध या प्रकोप आवश्यक है, किन्तु मनुष्य स्वभाववश या परिस्थितियो वश रूक्ष और उष्ण पदार्थो का अधिक सेवन करता है और इनकी शान्ति

के लिये स्निग्ध आहार भी लेता है तो इससे पित्त का शमन तो होगा ही किन्तु रूक्ष गुण वाहुल्य से कफ का क्षय होना भी जरूरी हे। जहा भी क्षय की स्थिति होती है, वहा ही वायु का प्रकोप हो जाता हे ओर इस स्थिति मे भी हृच्छूल हो जाता है। चिकित्सा सोकर्य की दृष्टि से पित्त या कफ दोनो का अनुवन्ध मानकर इसमे उपशयानुपशय के द्वारा जिस दोष के लक्षण प्रवल हो उसकी चिकित्सा प्रारम्भ कर स्वास्थ्य लाभ दिया जा सकता हे।

ऊपर अकित किया गया हे कि पोषण के अभाव मे हृदय रोग होना आवश्यक हे। पोषण करने वाला प्रधान धातु रस है। इसका क्षय या वृद्धि दोनो ही हृद्रोग कारक हे। इसकी वृद्धि मे कफ वृद्धि के लक्षणप्राय मिलते हे । यथा अग्निमान्द्य हृदयोत्क्लेश, प्रसेक वमनादि तथा रसक्षय मे सम्पूर्ण शरीर पर रस की क्षीणता के परिणाम होते हे। यथा-

रसे रौक्ष्य शम शोद्यो ग्लानि शव्दासहिष्णुता।
अ०हृ०सू० रसक्षये हृत्पीडा कायशून्यतारत्तृष्णा। सू०सू० १५/६

चरक ने इसको इस रूप मे प्रकट किया है यथा -

घट्ट्ते सहते शव्द द्रवति शूल्यते ।
हृदय ताम्यति स्वल्पचेष्टस्यापि इस क्षये। च०सू० १७/६४

इस प्रकार हृद्रोग के ओर भी अनेक कारण ह। यहा प्रधान कारणो को ही दर्शाया गया हे । विस्तार भय से सव का उल्लेख करना उचित प्रतीत नहीं होता।

यहा हृद्रोग मे आवश्यक चिकित्सा का उल्लेख करना भी उचित मानते हुए आयुर्वेद चिकित्सा का मूल सिद्धान्त निदान परिवर्तन परम आवश्यक हे। दोपजन्य हृद्रोग मे वमन कराना प्रशस्त हे। क्योंकि हृदय कफ का स्थान है ओर कफ निस्सरण के लिये वमन आवश्यक है। आयुर्वेद के सिद्धान्तानुसार

''स्थानिस्थानगत दोषस्थानिवत् सुमुपाचरेत्।

किन्तु यहा यह भी चिकित्सक की सावधानी हो कि वमन कराने के लिये वमन के योग्य रोगी व रोग हो। अवम्याह रोगियो को कदापि वमन नहीं कराना चाहिये। हृदय रोगियो को प्राय निम्न ओषधियो का चूर्ण निरन्तर सेवन से अत्यन्त लाभ मिलता हे । हरड की छाल, वच, रास्ना, सोठ, कचूर, पोहकरमूल का समभाग चूर्ण अनेक हृदय रोगियो पर आशातीत लाभ किया है।

अत्यन्त सरल व सस्ती चिकित्सा का उल्लेख भी जनोपयोगी प्रतीत होता हे। अत अर्जुन की छाल का चूर्ण ५-५ ग्राम की मात्रा मे। चम्मच गाय के घृत मे मिलाकर दूध से प्रात सांय सेवन करे तो रोगी अवश्य हृद्रोग से छुटकारा पा सकता हे । यदि (कोलस्ट्रोल) हृदय धमनियो मे स्नेह अधिक हो तो केवल दुग्ध या गर्म जल से यह चूर्ण निरन्तर लेवे। इस चूर्ण से केवल हृद्रोग ही शान्त नहीं होता वरन आयु मे भी वृद्धि होती हे । यहा एक योग ककुभादिचूर्ण का लिख रहा हू जो निरापद हृद्रोग मे शक्ति प्रदान करता है। अर्जुन की छाल, हरड की छाल, कचूर, पोहकरमूल, छोटी पीपल सोठ इन सवकी वरावर मात्रा का चूर्ण घृत, दूध या उष्णोदक से निरन्तर सेवन करने से हृद्रोग से पीडित व्यक्ति शान्ति प्राप्त करता ह । किन्तु इन ओपधियो को ३ वर्ष तक निरन्तर चिकित्सक की सलाह के सथ सेवन आवश्यक हे।

हृदयरोग मे मोती का योग हृदयेश्वर २ रत्ती व प्रवाल पिष्टि २-२ रती शहद मे प्रात साय एव भोजन के वाद अर्जुनारिष्ट २५-२५ ग्राम निरतर सेवन से अनेक हृदय रोग से पीडित व्यक्ति स्वस्थ हुए ह। इसी प्रकार हृदयार्णव रस, चिन्तामणिरस, नागार्जुनाभ्रक रस भी २-२ रत्ती की मात्रा मे सेवन करने से अनेक रोगी इस रोग से मुक्त देखे गये हे।

आयुर्वेद मे निदान परिवर्तन व यथासेवन का अपना महत्व हे अलवत्ता हृदय रोगियो को यथा सेवन के लिये भी यहा दिग्दर्शन कराना आवश्यक समझ हूँ। हृद्रोग से पीडित व्यक्ति सोठ, अजवायन, लहसुन का निरन्तर प्रयोग करे। मुनक्का, दाख, पुराना गुड, सेधानमक का भी प्रयोग लाभ दायक हे अनार का फल, तथा मीठा आम भी हृदय रोग को नष्ट करता हे।

ऐसे रोगियो को विशेप कर मल, मूत्र, अधोवायु के वेग तथा प्यास, डकार तथा आसुओ के वेग को नहीं रोकना चाहिये। भेस का दूध, विरुद्ध अन्न, भारी पदार्थ यथा अधिक तेल व अधिक घृत युक्त तथा दाल की पिट्ठियो से वने पदार्थ एव तेल व घृत मे तले हुए पदार्थो का सेवन भी निषिद्ध है।

इस प्रकार अपथ्य निस्तारण व पथ्य सेवन से रोगी विना औषधि के भी स्वस्थ होते देखे गये है। नियमित यथाशक्ति भ्रमण इस रोग से अवश्य मुक्ति दिला देता है।

हृदय-शूल (दिल का दर्द) Angina Pectoris

डा० पी० एन० माथुर
चिकित्सा अधिकारी— राज० होम्यो० चिकित्सालय, विधान सभा मार्ग, जयपुर

डा० एन० पी० माथुर राजस्थान सरकार की सेवा मे राजस्थान विधान सभा के होम्योपैथिक औषधालय मे चिकित्साधिकारी, कुशल, परिश्रमी, हसमुख व योग्य होम्योपेथ है।

हृदय को चारो तरफ से लपेटकर उसका पोषण करने वाली धमनियॉ, कारोनरी आर्टरीज कहलाती है। इनमे रुधिर के रुक जाने से हृदय पर दवाव पडता है ओर दर्द होता है।

एन्जाइना का अर्थ है घुटन (**Suffocation**) और पेक्टस का अर्थ हे 'छाती' (**Breast**) इस प्रकार एन्जाइना पेक्टोरिस का अर्थ हुआ 'छाती की घुटन' इसे मेडीकल साइस मे **Neuralgia of the heart** भी कहते है। इसमे दिल का ऐसा दर्द होता है कि मोत सामने दिखने लगती ह। शरीर का रग राख की तरह फीका पड जाता हे और रोगी छटपटाने लगता है। सास लेना कठिन हो जाता है, शरीर पसीने से तर हो जाता है, ओर दर्द बाये कधे तथा वाये हाथ मे छोटी अंगुली तक फेल जाता हे। ऐसा दर्द स्त्रियो की अपेक्षा पुरुषो मे ज्यादा होता हे। इस रोग की मुख्य ओपधिया निम्न हे—

आर्सेनिक, जल्सीमियम, वेलेडना, ग्लोनायन, केक्टस जी, स्पाईजीलिमा, कार्वोवेज, क्रेटेगस, एमिलनाइट्रेठ

(१) आर्सेनिक-३०— धडकन, दर्द, श्वास कष्ट, मूर्छा, धूम्रपान करने तथा तम्वाकू चवाने वाले व्यक्तियो मे पाया जाने वाला क्षोभक हृदय नाडी प्रात वेला मे अधिक तेज, हृदय फेलाव, श्यावता, साथ ही ग्रीवा व पश्चकपाल मे दर्द, वेचैनी के साथ रात्रिकालीन रोग वृद्धि, हल्का सा परिश्रम करने के वाद भारी थकान, क्षोभक दुर्वलता, न वुझने वाली प्यास, भय, उद्वेग और चिन्ता, अशात, अधीर, सिर के नीचे मोटा तकिया लगाकर उसे उठाकर रखना पडता हे। निद्रावस्था के दौरान दम घुट जाने जैसे दौरे।

(२) जेल्सीमियम-३०— ऐसी भावना बनी रहती हे जैसे निरन्तर गतिशील रहना आवश्यक है अन्यथा धडकन वद हो जायेगी। मन्द नाडी, कोमल धडकन, दुर्वल, शान्त वैठे रहने पर नाडी मद किन्तु गति करने पर अत्यधिक तेज। वृद्धावस्था मे दुर्वल मन्द नाडी पेशी नियन्त्रण शक्ति का अभाव, अत्यधिक कम्पन तथा समस्त अगो की दुर्बलता, हल्का सा भी व्यायाम करने पर अत्यधिक थकान होना, शैथिल्य (**Dullness**) तथा कम्पन (**Trelling**) पेशी समन्वय का अभाव, सिद्धान्तत रोगी को प्यास नहीं लगती।

(३) बेलाडोना-३०— प्रचण्ड धडकन जो सिर मे वार-वार अनुभव होती है इसके साथ ही श्वास लेने मे कठिनाई हल्का सा परिश्रम करने पर भी धडकन बढ जाती है। सारे शरीर मे तपकन, एक जगह दो धडकन महसूस होती है। लगता है कि ᐧदय बहुत बढ गया है, नाडी की गति तेज किन्तु दुर्वल, ठडे पानी की प्यास होना।

(४) स्पाईजेलिया-३०— भयकर स्पन्दन, पुरोहृदय वेदना और गति करने से अत्यधिक वृद्धि, हृदय की धडकन के बार-बार दौरे विशेषकर मुह से सड़ी गन्ध आने के साथ, नाडी दुर्वल और अनियमित। हृदय आवरण प्रदाह के साथ गडती वेदना के हृत्स्पन्दन, श्वास कष्ट, स्नायुशूल, एक वाह या दोनो वाहो तक फैल जाता है। गर्म पानी पीने की उत्कृष्ट इच्छा जिससे आराम मिलता है। कम्पामान नाडी, सारा बाया भाग दर्द करता है, श्वासकष्ट के साथ सिर को ऊँचाकर दाई तरफ लेटने को वाध्य।

(५) कैक्टस ग्रेण्डीफ्लोरसक्यू (मूलार्क) —

अन्त हृद्शोथ के साथ हृदय कपाट सम्बन्धी विकार ओर हृदय रोगो की प्रारम्भिक अवस्था मे सर्वोत्तम क्रिया करती है। धूम्रपान करने के फलस्वरूप होने वाले हृदय रोग, उग्र धडकन, जो बायी तरफ लेटने से या ऋतुस्राव आरम्भ होने पर बढ जाती हे। हृच्छूल के साथ घुटन, इण्डा पसीना, हृदय का हर समय लोहे के शिकजे मे जकडे होने की अनुभूति, हृदय शिखर मे दर्द गोली के समान नीचे की ओर बाये बाजू तक फैल जाता है। चक्कर, श्वास कष्ट, सुई चुभने जैसा दर्द, अल्प रक्तदाब, हृदय ओर धमनियो पर केवल केक्टस का विशेष प्रभाव पाया जाता हे। जिसके प्रमुख लक्षण के रूप मे एक ऐसी सिकुडन का बोध होता ह जेसे कोई लोहे की पट्टी कस रखी हे।

(६) क्रेटेगिस क्यू (मूलार्क)— जरा सा परिश्रम करने पर श्वास लेने मे भारी कठिनाई होती है परन्तु नाडी की चाल अधिक नहीं बढती। हृत्प्रदेश तथा बायें कधे के जोड के नीचे दर्द हृत्पेशिया जैसे दुर्बल पड गयी हो। हृदय फैला हुआ, पहली ध्वनि कमजोर, त्वचा पर ठड की अनुभूति, हाथ पैरो की अगुलियो का रग नीला पड जाता हे। परिश्रम या उत्तेजना से सारे हृद्विकार बढ जाते हैं। सक्रामक रोगो के हृदय को प्रतिरक्षण प्रदान करती हे।

(७) कार्बेवेज-३०— अगर पेट मे बहुत अधिक हवा अथवा गेस के कारण छाती पर दबाव पडने से हृदय का दर्द अनुभव हो तो इस ओषधि की एक मात्रा भोजन से आधा घण्टा पहले लेने से लाभ होता हे।

(८) ग्लोनायन-३०— श्रमसाध्य क्रिया, फडफडाहट, धडकन के साथ श्वास कष्ट, पहाडी पर नहीं चढ सकता, किसी प्रकार का परिश्रम करने से हृदय की ओर रक्त का अधिक बहाव हो जाता हे तथा मूर्छा के दोरे पडते है। लपकन होती हे गर्मी बर्दाश्त नहीं होती, दम घुटना।

(९) एमिल नाइट्राइड-३ — अगर किसी प्रकार भी यह दर्द ठीक न होता दिखे तो रूई से इसकी ३-४ बूंद सुघाने से हृदय का दर्द शान्त हो जाता हे।

प्राण शक्ति शेषांक पृष्ठ २५८

मत्र ऐसे हे जो हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहे हे। हम ह्रा ह्रीं इस मत्र का ही सदर्भ ले। प्रत्येक व्यक्ति यह अनुभव कर सकता हे कि शरीर मे जो विकार पेदा होता है, हमारी रोग निरोधक शक्ति को कमजोर करता है, उस विकार को निकालने के लिए ह्रा ह्रीं का प्रयोग बहुत शक्तिशाली है। मूल बात है विकार का निष्कासन। प्राकृतिक चिकित्सक भी इस बात पर बल देते हे - विजातीय तत्वो का सचय नहीं होना चाहिए। जितना विजातीय तत्त्व का सचय उतनी ही बीमारी है। जितना विजातीय तत्व का निष्कासन उतना ही आरोग्य । हमारे शरीर मे इतना विजातीय तत्त्व सचित हो जाता हे कि कब्ज की समस्या सदा बनी रहती है । उससे हृदय भी प्रभावित होता रहता हे। जब तक शरीर स्थित मल का शोधन नहीं होगा, दवा क्या असर करेगी ? दवा भी उसमे विष बनती चली जाती है। केवल स्थूल मल ही सचित नहीं हे, प्रत्येक कोशिका मे, कोशिका के अणु-अणु पर मेल सचित रहता है। वह मल ही हमारी प्रकृति को विकृत बनाए हुए हे। हमारी प्रकृति हे आरोग्य। विजातीय तत्व विकृति पेदा करता हे और व्यक्ति बीमार हो जाता है। विकृति के निवारण का एक उपाय हे अपान शुद्धि। अपान शुद्धि का एक शक्तिशाली प्रयोग है ह्रा ह्रीं का जप। कोई व्यक्ति दस मिनट तक यह जप करे तो उसे अनुभव होगा कि इससे शारीरिक ही नहीं, मानसिक-विकारो का भी विरेचन होता है।

दीर्घश्वासप्रेक्षा - हृदय-रोग की समस्या के लिए दीर्घश्वसप्रेक्षा बहुत उपयोगी है। मूल बात यह है कि इन प्रयोगो के द्वारा प्राणशक्ति बढती है, इम्युनिटी सिस्टम शक्तिशाली बनता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रबल होती है। बीमारी का विरेचन होने लग जाता है। यदि प्राणशक्ति को प्रबल कर प्राणसचार का प्रयोग किया जाए और मानसिक चित्र का निर्माण किया जाए, तो एक दिन ऐसा आ सकता हे, जिस दिन हृदय की धमनी के अवरोध बिल्कुल समाप्त हो जाए।

हृदय रोग में पुष्करमूल

वैद्य वनवारीलाल गौड
प्रोफेसर एव विभागाध्यक्ष— मौलिक सिद्धान्त विभाग, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर

डा० श्री वैद्य बनवारी लाल गौड भिषगाचार्य, एम० ए०, पीएच० डी, आयुर्वेद वाचस्पति, प्रोफेसर एव विभागाध्यक्ष मौलिक सिद्धान्त विभाग राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर। अनेक महाग्रथो के लेखक, पीयूषपाणि प्राणाभिसर वैद्य वर्तमान युग के आयुर्वेद विद्वानो मे मूर्धन्य जयपुर जिले के इटावा भोपजी ग्राम के मूल निवासी श्री गौंड मुझसे स्नेह सम्बन्ध रखते है। विशेष अनुरोध पर लेख दिया है।

चतुर्विंशतितत्त्वात्मक शरीर की संस्थिति सर्वाधिक जटिल है। थोडी सी भी विकृति शरीर मे प्राकृत भावो को प्रभावित करती है। शरीर को प्रकृत स्थिति मे स्वस्थ रखने मे शरीरस्थ अवयवो का विशेष महत्त्व है। सभी अवयवो की विशिष्ट क्रियायें शरीर को प्राकृत बनाये रखने मे अपना योगदान देती है। एक अवयव की क्रिया दूसरे किसी एक अवयव या अनेक अवयवो की क्रिया पर निर्भर करता है। कुछ अवयव ऐसे भी होते है जिन पर शरीर के सभी अश अवलम्बित है। हृदय एक ऐसा ही अवयव है, इस पर शरीर की सभी क्रियाये और प्राणवायु प्रमुख रूप से आश्रित है। शरीर के १०७ मर्मो में वस्ति, हृदय और शिर की तीन प्रधान मर्मो मे गणना की है। किसी भी मर्म पर आघात या विकृति से शरीर का विनाश या विकृति हो जाती है। इन सभी मर्मो मे प्राणो का आश्रय है। मुख्य रूप से तीन मर्मो मे प्राणो का आश्रय विशेपज है। चक्रपाणि कहते है— हृदयद्युपघातेनयस्माद् विशेषत प्राणेपघातो भवति, तस्माद् हृदयाद्याश्रिता प्राणा उच्यन्ते, यदा भित्त्युपघातोपहन्यमान चित्र भित्त्याश्रयमुच्यते। (च० चि० ५७/४ पर चक्रपाणि)

इन तीनो मर्मो का अपना-अपना विशेष महत्त्व है। हृदय इन तीनो मे से ही एक है, शरीर मे रक्त की जीव-सज्ञा की गई है। उस रक्त को शरीर मे सवाहित करने वाला यह विशिष्ट अवयव है। इससे सम्पूर्ण शरीर की स्थिति प्रभावित होती है।

प्राचीन प्रधानाचार्यो ने विशिष्ट हेतुओ से कुपित वातादि द्वारा हृदय को विकृत करने की कल्पना के साथ हृदय रोगो को पञ्चविध माना है। हृदय की मास-पेशियो, सिरा धमनियो और रक्तस्थ विशिष्ट विकृतियो से हृदय प्रभावित होता है। सामान्यतया अधिक व्यायाम, तीक्ष्णौषध सेवन, पञ्चकर्म की व्याधिया, मर्मोपघात, रस-रक्तादि का सहसा अतिमात्र-क्षय एव ईर्ष्या, भय, शोक, चिन्ता आदि मानसिक विकृतियो के कारण हृदय रोग होता है।

हृदय रोग के लक्षणो मे भी वैविध्य है, पर इन्हे दो भागो मे विभक्त किया जा सकता है तीव्र एव मृदु। यदि विकृति का स्वरूप तीव्र है तो हृदय मे शूल, तृष्णा, भ्रम एव मूर्च्छा आदि लक्षण उत्पन्न होते है, यदि तत्काल उचित उपचार न मिले तो मृत्यु भी हो सकती है। इसके विपरीत यदि हृदयरोग की विकृति का स्वरूप मृदु है तो वैवर्ण्य ज्वर, कास हिक्का, श्वास, अरुचि उत्क्लेश आदि उत्पन्न हो सकते है। आचार्य चरक ने दोनो तरह के (तीव्र एव मृदु) लक्षणो को एक ही हृदय रोग के सामान्य लक्षणो मे उल्लिखित किया है।[1] इसके अतिरिक्त निद्रानाश भय, श्रम, क्लम एव शोथ आदि लक्षण भी हृदय रोगियो मे दिखाई देते है। यदि किसी व्यक्ति मे हृदय के स्पन्दन मे अनियमितता हृदय धमनी मे विकृति हृद्द्रव, भय मुख-शोथ एव अस्थिरचित्तता हो तो उसकी हृदय विकृति की ओर यह स्पष्ट सकेत मानना चाहिये।

(१— वैवर्ण्यमूर्च्छाज्वरकासहिक्काश्वासास्यवैरस्यतृषाप्रमोहा ।
छर्दि कफोत्क्लेशरुजोऽरुचिश्च हृद्रोगजा
स्युर्विविधास्तथाऽन्ये।। (च० चि० २६/७८)

चिकित्सा— हृदय रोग शीघ्रतापूर्वक मृत्यु की ओर ले जाने वाले होते है। अत लक्षणो में तीव्रता है तो तत्काल लक्षणानुसार चिकित्सा व्यवस्था करके प्राण-रक्षा की जानी चाहिये। एक वार हृदय मे विकृति हो जाने पर यावज्जीवन इसका भय बना रहता हे। हृदयरोग की तीव्रावस्था को नियन्त्रित करने के वाद लम्वे समय तक चलने वाली चिकित्सा व्यवस्था मे 'निम्न बातो को ध्यान मे रखा जाना चाहिये— मृदु विरेचन, मूत्रल औषधियॉ, हृद्दौर्वल्य को दूर करने वाली ओषधिया वीच-वीच मे या निरन्तर प्रयुक्त की जानी चाहिये। पूर्ण विश्राम (ठीक होने पर यथोचित विश्राम) एव लघु भोजन तथा सत्वावजय सर्वदा हितकारी है। इसके साथ ही दोष का अनुवन्ध ज्ञात कर तदनुरूप चिकित्सा व्यवस्था करने पर ही रोग मे लाभ सम्भव हे।

विशिष्ट द्रव्य— प्राचीन आचार्यो ने पुष्करमूल, अर्जुन, वचा, ब्राह्मी, लहसुन आदि द्रव्यो को अनेक प्रकार से प्रयुक्त करके हृद्रोग के विशिष्ट लक्षणो के शमन एव नियन्त्रण मे सफलता पायी है।

पुष्करमूल— आचार्यो ने हृद्रोग मे जिन द्रव्यो का उल्लेख किया है उनमे पुष्करमूल का प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण हे। यह कटु, तिक्त रस युक्त होता है, लघु, तीक्ष्ण गुण युक्त इस द्रव्य का विपाक कटु एव वीर्य उष्ण होता हे। कफवात शामक, शोथहर, दीपन, पाचन, होने के साथ-साथ हृदय के लिए वल्य यह औषधि द्रव्य वेदना स्थापन होने के कारण हृच्छूल मे परम उपयोगी हे। मूत्र जनन होने के कारण भी हृदय रोग मे हितकारी यह द्रव्य कास-श्वास नाशक हे। यह द्रव्य मेदोहर होने से भी हृद्रोग मे लाभदायी हे। प्राचीन आचायो ने इस द्रव्य का हृदय रोगो मे अनेक प्रकार से उल्लेख किया हे। यहा कुछ ऐसे योगो का उल्लेख किया जा रहा है जिनमे पुष्करमूल का प्रयोग हुआ हे तथा ये योग हृद्रोग मे हितकारी हे।

(१) पुष्करमूलादि कल्क— पुष्करमूल, विजौरा नींवू का मूल, सोठ, कचूर, हरड। इस कल्क यवक्षार जल गौघृत मिलाकर पीने से हृदय रोगो का नाश होता है। चरक सहिता में उल्लिखित यह योग सभी हृदय रोगो के लिये समान्येन निर्दिष्ट हे। पर विशेषेण वातज हृदय रोगो मे उपयोगी है।

इस प्रकार से भेषज्यरत्नावली मे भी इसी कल्क का वर्णन किया हे। लेकिन उसमे कुछ द्रव्यो को अतिरिक्त सम्मिलित किया है। यथा—

पुष्करमूलादि कल्क— पुष्करमूल, मातुलुगी के जड की छाल, सोठ, कचूर ओर हरड समप्रमाण लेकर कूटकर जल के साथ पत्थर पर पीसकर कल्क वनावे। इस कल्क मे क्षार(यवक्षार), अम्ल (काजी), घृत, लवण मिला मात्रानुसार सेवन करे। वातिक हृदय रोग का नाश करता हे।

(२) पुष्करमूलादि क्वाथ— पुष्करमूल, विजौरा नींवू मूल, पलाश की छाल, भूतीक, कचूर, देवदारू, इसका क्वाथ वनाकर उसमे सोठ, जीरा, मीठा वच, अजवायन, यवक्षार ओर नमक का प्रक्षेप देकर सेवन करन से हृदय रोग मे हितकर है। यह चरकोक्त योग हे।

इसी पुष्करमूलादि क्वाथ का उल्लेख भेषज्य रत्नावली मे भी किया गया हे।

(३) पथ्यादि कल्क हरड, कचूर, पुष्करमूल, पचकोल, विजोरा नींवू का मूल इनका कल्क वनाकर घी ओर तेल मे भूनकर गुड, प्रसन्ना और नमक के साथ सेवन करने से हृदय रोगो का नाश करता है। यह भी चरकोक्त हे।

(४) पुष्करमूल चूर्ण— पुष्करमूल के चूर्ण को ४ रत्ती से १ माशे भर तक लेकर शहद के साथ सेवन करने से हृदयशूल, श्वास, कास, क्षय रोग नष्ट होते हे। भ० रत्नावली मे उल्लिखित यह प्रयोग पुष्करमूल के वेदनास्थापक स्वरूप को दर्शाता हे।

(५) पुष्करादि चूर्ण— पोहकरमूल, अतीस, काकडासिगी, पिप्पली, धमासा, के चूर्ण को शहद के साथ मिश्रित करके प्रयुक्त करने पर कास एव हृदयरोग नष्ट होते हे। यह भी भै० रत्नावली का योग है।

(६) हिग्वादि चूर्ण— भुनी हींग, वच, विलवण सोठ, पिप्पली, कूठ, वडी हरड चित्रक की छाल, यवक्षार, कालानमक, पोहकरमूल इनका चूर्ण जो के काढे के साथ शूल तथा हृदय विकार दूर करने के लिए अति उत्तम हे। चक्रदत्त मे उल्लिखित यह योग दीपन, पाचन, वातानुलोमन एव शूलप्रशमन होने के साथ-साथ श्रेष्ठ मूत्रल भी हे। अत हृदय रोगो मे परमोपयोगी है।

(७) पाठादि चूर्ण— पाठा, वच, जवाखार, हरीतकी, अम्लवेत, यवासा, चित्रक, त्रिफला, त्र्यूषण, कचूर, पोहकरमूल, इमली, अनार का दाना, तथा विजोरे नींवू की

जड इनको समानमात्रा मे लेकर चूर्ण करके ईषदुष्ण जल या मद्य के साथ सेवन करने से अर्श, शूल, हृदयरोग, गुल्म शीघ्र नष्ट होता है। चक्रदत्त द्वारा निर्दिष्ट यह योग पुष्करमूल की हृदयरोगो मे उपयोगिता को स्पष्ट करता है।

(८) हरीतक्यादि घृत— हृदय और पसलियो मे वेदना के साथ यदि वातज गुल्म रोग उत्पन्न हुआ हो तो हरड, सोठ, पुष्करमूल, गुडूची, आवला, सेधानमक ओर हींग इनका कल्क बनाकर घृत को विधिपूर्वक पकाकर पीना चाहिये। वस्तुत गुल्म के लिए उपयोगी यह चरकोक्त घृत हृदय रोगो के मृदु स्वरूप के उपयोगी है तथा इसकी मात्रा रोगी के बलाबल के स्थौल्य-कार्श्य भाव को जानकर निश्चित की जानी चाहिये।

चरक संहिता मे हृदयरोगो के लिए कृष्णादि चूर्ण का वर्णन भी मिलता है।

(६) कृष्णादि चूर्ण— पीपर, कचूर, पोहकरमूल, रास्ना, मीठावच, हरड, सोठ, इन द्रव्यो के चूर्ण को प्रात सायकाल गोमूत्र से सेवन करने पर कफजन्य हृदय रोग नष्ट होता है। यह भी चरकोक्त योग है।

(१०) हरितक्यादि चूर्ण— हरीतकी, वचा, रास्ना, पिप्पली, सोठ, कचूर, पुष्करमूल, इन सातो द्रव्यो का चूर्ण बनाकर २-२ ग्राम मात्रा सेवन करने से हृदय रोगो का नाश होता है। भै० रत्ना० मे उल्लिखित यह योग हृदय रोगो मे अत्यन्त लाभकारी है। रा० आयुर्वेद सस्थान, जयपुर मे शोधकार्य पूर्वक इसकी उपयोगिता मानी गयी हे।

(११) ककुभादि चूर्ण— अर्जुन त्वक्, वचा, रास्ना, बला, नागबला, हरीतकी, कचूर, पुष्करमूल, पिप्पली, सोठ, इन दस द्रव्यो को चूर्ण बनाकर ३-७ ग्राम की मात्रा मे घी के साथ सेवन करने से हृदय रोगो मे लाभ प्राप्त होता हे।

उपर्युक्त सभी योगो मे पुष्करमूल का प्रयोग हुआ है। ऐसे अनेक योग विभिन्न ग्रथो मे उल्लिखित है जिनमे पुष्करमूल का प्रयोग किया गया है तथा वे योग हृदय रोगो मे उपयोगी भी है। एक बात अवश्य ध्यान देने योग्य यह है कि पुष्करमूल एक तीक्ष्ण एव उष्णं औषधि है अत इसका उपयोग सावधानी पूर्वक किया जाना चाहिये।

बच्चों में हृदय रोग शेषांश पृष्ठ 260 का

मे शल्य चिकित्सा, फुफ्फुस धमनियो के विकृत होने से पहले कराना चाहिए । ये छेद डेक्रोन या टेफ्लोन लगाकर बद कर दिए जाते है। टी०जी०ए० विकार वाले बच्चो का इलाज बेलून सेप्टोस्टोमी द्वारा करने के बाद आर्टिरिअल स्विच ऑपरेशन करके किया जाता है।

रयूमेटिक हृदय रोग— अगर वॉल्व सिकुड गए हो तो बेलून डाइलेटेशन द्वारा ठीक किए जा सकते है। माइट्रल स्टनोसिस को क्लोज- कमिशुरोटोमी द्वारा ठीक किया जा सकता है। अगर वॉल्व बहुत ज्यादा खराव हो गए हो तो मेटेलिक या बोवाइन बॉल्व लगाए जा सकते है। बॉल्व वदलने के बाद बच्चे को प्रतिदिन एस्प्रिन एव रुधिर को थक्का बनने से रोकने वाली दवाई लेना जरूरी हो जाता है। रक्त की बार-बार जॉच कराना आवश्यक हो जाता है।

हृदय रोग एवं टीकाकरण— रोग वाले बच्चे को टीका लगाकर संक्रमण रोगो से बचाना चाहिए ।

बच्चों में हृदय रोग की रोकथाम—

१ गर्भधारण से पहले टीका लगाकर सभी महिलाओ को रूबेला नामक सक्रमण रोग से बचाना चाहिए, क्योकि गर्भ के दौरान इस रोग से बच्चे मे हृदय रोग की संभावना बहुत बढ जाती है। एम०एम०आर० की टीका १५ महीने की आयु या रूबेला का टीका १२ से १६ वर्ष की आयु पर लडकियो को लगवाना चाहिए।

२ ३५ वर्ष की उम्र के बाद गर्भ धारण से वचना चाहिए।

३ गर्भवती महिला को पहले तीन महीनो मे डॉक्टरो की सलाह के बिना कोई दवाई नहीं लेनी चाहिए तथा एक्सरे नहीं कराना चाहिए।

४ नजदीकी रिश्तेदारो मे शादी नहीं करनी चाहिए।

५ यदि पहले बच्चे को हृदय रोग है या ऊपर वताई गई परिस्थितिया है तो गर्भधारण के तीसरे से चौथे महीने मे फीटल इकोकार्डियाग्राफी द्वारा जाच कराकर हृदय की जाच करानी चाहिए ।

६ अगर मा को मधुमेह रोग है तो वच्चे की फीटल इकोकार्डियोग्राफी द्वारा आच करा लेनी चाहिए।

:: बढ़ते हृदय रोग, बिगडती जीवन शैली ::

वैद्य श्यामसुन्दर वशिष्ठ
रजिस्ट्रार— वोर्ड ऑफ इण्डियन मेडिसिन राजस्थान, जयपुर

वद्य श्यामसुन्दर वशिष्ठ राजस्थान के प्रख्यात आयुर्वेद कार्यकर्ता हे। मेरे अनुजवत् तथा वर्षो निकट सगठन सहयोगी रहे हे। राजस्थान आयुर्वेद चिकित्सक वेलफेयर एसोसियेशन के स्थापनाकाल से ही अध्यक्ष सीकर जिले म खूड निवासी हे। गायत्री युग निर्माण योजना मे जुडे है। अपने पूज्य पिताजी की स्मृति मे एक चिकित्सालय भवन वनाकर दान किया हे। जयपुर के जिला वोर्ड राजस्थान के रजिस्ट्रार हे। इन्हे राज्य सरकार ने दो वार राज्य-स्तरीय पुरस्कार देकर सम्मान किया हे। कुशाग्र वक्ता, प्रखर सगठनकर्ता तथा मिलनसार, सहयोग भावना रखने वाले कुशल वेद्य, अधिकारी हे।

आज देश मे हृदय रोगियो की सख्या वडी तेजी से वढी है ओर रोगियो की सख्या के आधार पर ही हृदय रोग चिकित्सा में जबरदस्त प्रगति हुई हे। आज देश मे एन्जिोग्राफी एन्जिोप्लास्टी, वाईपास सर्जरी, ओपन हार्ट सर्जरी जैसी शल्य क्रियाये आम वात हो गयी हे। वहीं ऐलोपेथी चिकित्सा मे विश्वव्याणी अनुसधान से हृदय रोगियो के लिए चिकित्सा व्यवस्था के नये आयाम स्थापित हुए हे। परन्तु इन सव परिस्थितियो के मद्देनजर रखते हुए हमे यह सोचने पर मजवूर करता है कि देश मे इतनी तेजी से हृदय रोगी क्यो वढ रहे हे।

आयुर्वेद मे जीवन के तीन आधार वताये ह, जिनमे आहार, निद्रा, व्रह्मचर्य का वर्णन किया गया है। अगर तीनो आधारो पर विस्तृत चितन किया जावे तो वढते हुए हृदय रोग के कारण स्पष्ट हो जाते हे। हमारी परम्परागत जीपन शैली तेजी से विगड रही हे, सामूहिक कुटुम्य प्रणाली टूट रही है, एक दूसरे का विश्वास समाप्त हो रहा है, तनाव तेजी से वढ रहा हे, आहार द्रव्यो मे मिलावट वडी तेजी से हो रही है, भारतीय किसान को ज्ञान के अभाव मे हरी सब्जिया, फल, तथा अनाज कीटाणु नाशन रसायनो के दुष्प्रभाव से नुकसानदायक हो रही हे। हमारी सामाजिक परम्पराये लुप्त हो रही हे, टेलीविजन सस्कृति ने सेक्स की सारी परमपराये तोड दी हे,फलस्वरूप आयुर्वेद मे वर्णित जीवन के आधार आहार, निद्रा, व्रह्मचर्य सव समाप्त हो रहे है और इस देश मे तेजी से हृदय रोगियो की सख्या वढ रही हे। प्रदूषण के प्रभाव से शहरो मे फेलती विषेली गैसे दिन दुगना रात चौगुना के आधार पर हमारे स्वास्थ्य को वर्वाद कर रही हे। अस्पताल खोलने उनमे हृदय रोग चिकित्सको की नियुक्ति ओर आधुनिक शल्य चिकित्सा के चमत्कारो के वावजूद भी हृदय रोग नियन्त्रण मे नही लाये जा सकेगे, अपितु वडी तेजी से वढेगे। इसके लिए आवश्यक है कि हमारी जीवन शैली को वदले आर परम्परावादी सामाजिक मूल्यो की पुनर्स्थापना करे।

आयुर्वेद मे हृदय रोग की चिकित्साक्रम वडी प्रभावी तरीके से वताया हुआ है, परन्तु कस्तूरी, अम्वर जेसे ओषधि द्रव्यो के लुप्त हो जाने से औषधियो मे गुणो की कमी आई है, ओर तत्कालिक चिकित्सा प्रदान करने मे आयुर्वेद अप्रभावी हो गया है। हृदय रोग से वचने के लिए समुचित शिक्षा की आवश्यकता हे, जिससे देश मे वढते हृदय रोगियो की सख्या कम की जा सके। परम्परावादी चिकित्सा पद्धतियो में हृदय रोग से वचने के अति महत्त्वपूर्ण

दिशा निर्देश दिये हुए जिनमें से मुख्य है—

(१) तनाव मुक्त रहे और ६ घण्टे निद्रा अवश्य ले।
(२) संयमित आहार ले।
(३) प्रतिदिन ईश उपासना अवश्य करे तथा नियमित व्यायाम करे।
(४) श्रमशील बने, परन्तु अतिश्रम नहीं करे।
(५) ५० वर्ष की उम्र के पश्चात ब्रह्मचर्य का पालन करे।
(६) अपनी जिम्मेदारिया परस्पर एक दूसरे के सहयोग से पूरी करे।
(७) विश्वस्त बने और विश्वसनीयता को बढाये।
(८) सप्ताह मे एक दिन मालिश करे।
(९) स्वय को स्वच्छ रखे, परिवार को स्वच्छ बनाये और पडोसी को स्वच्छ रखने की प्रेरणा दे।
(१०) क्रोध से बचे आलस्य को छोडे तथा जीवनक्रम मे नियमितता लाये।
(११) दीर्घ जीवन जीने की मानसिकता रखे और हतोत्साहित नहीं हो।

फिर भी हृदय रोग निम्नानुसार है—

हृदय रोग एवं उसके प्रकार—

(१) आनुवशिक या जन्मजात रोग।
(२) सक्रमण के कारण वाल्व सम्बन्धी रोग।
(३) हृदय की धडकन सम्बन्धी रोग।
(४) हृदय की मासपेशिया सम्बन्धी रोग।
(५) दिल का दौरा।

जन्मजात अथवा आनुवंशिक रोग—

कई बार गर्भावस्था मे हृदय के निर्माण अथवा विकास मे कोई कमी रह जाती है, जो आनुवशिक व प्राकृतिक कारणो से हो सकती है जैसे—

(अ) दोनो एट्रियम के या दोनो वेन्ट्रिकल के बीच की दीवार मे छेद होना जिन्हें क्रमश एट्रीयल सेप्टल डिफेक्ट (ए एस डी) व वेन्ट्रीकूलर सेप्टल डिफेक्ट (वी एस डी) कहते है। इससे शुद्ध व अशुद्ध आपस मे मिलते रहते है।

(ब) वाल्वो का पूरा विकास न हो पाना। उनमे ढीलापन या सिकडाव होना, जैसे बाए ऐट्रियल व वेन्ट्रिकल के बीच मे वाल्व जिसे माइट्रल वाल्व कहते है, का सिकुडना इससे खून शरीर बाकी अगो मे आगे के बजाय पीछे फफडो मे जा सकता है। इससे हृदय की कार्यक्षमता प्रभावित हो सकती है। इसी प्रकार अन्य वाल्वो की खराबी से भी हृदय पर कोई न कोई दुष्प्रभाव अवश्य पडता है।

(स) हृदय से जुडी खून की नालियो मे सिकुडन अथवा गलत ढग से जुडा होना जिसे पेटेन्ट डक्टस आर्टिरियोसिस (कोआक्सीजन ओफ एओर्टा) कहते है।

संक्रमण के कारण वाल्व सम्बन्धी खराबी—

जन्मजात या आनुवशिक कारणो के अतिरिक्त भी हृदय के वाल्वो का रोग ग्रस्त होना सामान्य बात है। इसका मुख्य कारण है रिट्रयमटिक फीवर। इस बीमारी के असर से हृदय वाल्वो पर पडता है और वे रोग ग्रस्त हो जाते है। विदेशो मे यी बीमारी ज्यादा नहीं है परन्तु हमारे देश मे यह बीमारी अत्यन्त व्यापक है। यहा तक कि जितने रोगी अस्पताल मे आते है (हृदय रोग के उपचार के लिए) उनमे ४० ५० प्रतिशत इसी बीमारी के कारण होते है।

हृदय की धडकन सम्बन्धी रोग—

इन बीमारियो मे हृदय की धडकन तेज या धीरे हो जाती है। बीच-बीच मे मानो हृदय धडकना भूल जाता है अथवा धडकन की लयताल मे व्यवधान आ जाता है। ऐसा या तो हृदय के बिजलीघर साइलोएट्रियल एस ए नोड अथवा एट्रीयलवेन्ट्रिकूलर (ए वी नोड) अथवा विद्युत सकेतो के परिचालन मार्ग मे कोई बाधा आ जाने के कारण होती है।

दिल का दौरा—

शरीर मे अन्य अगो की तरह ही हृदय को भी आक्सीजन एव पोषण चाहिये जो इसको कोरोनरी धमनियो व उनकी शाखाओ, उपशाखाओ के माध्यम से पहुचाने वाले रक्त से प्राप्त होता है। हृदय के पोषण के लिए खून की आवश्यकता उसके द्वारा किये जा रहे कार्य के अनुसार घट बढ जाती है। जब हृदय को अपनी आवश्यकता के अनुसार खून नहीं मिलता हो तो मासपेशियो मे आक्सीजन व पोषण की कमी आ जाती है। आक्सीजन (खून) की कमी के लक्षण छाती के दबाव या विशेष प्रकार के दर्द के रूप मे परिलक्षित होते है। इस प्रकार के दद को एजाइना पक्टोकरिस कहते है। आराम करने से सामान्यत ये लक्षण समाप्त हो जाते

हे क्योकि कार्य वद करने से शरीर एव हृदय की आक्सीजन की आवश्यकता कम हो जाती है लेकिन इसकी विपरीत अगर कोरोनरी धमनियो म अवरोध होने के कारण लगातार ही हृदय की धमनियो मे रक्त नहीं पहुच पाया तो हमेशा ही इस्कीमिया की स्थिति वनी रहती ह, तो उसे इस्कीमिक हार्ट डिजीज या (आई एच डी या कोरोनरी आर्टरी कहते ह।) इसके कारण से हृदय के उस हिस्से मे लगातार खून का सचार नहीं हो पाता ह व उस हिस्से की मासपेशिया निष्क्रिय हो जाती हैं। आर उस स्थिति को हृदयघात (हार्ट अटक) या दिल का दारा कहते हे। तकनीकी भाषा मे मायोकोर्डियल इफेक्शन कहते हे। अव तक हुए शोध कार्यो मे यह प्रमाणित हो चुका हे कि निम्न प्रकार की धमनियो मे जमाव की प्रक्रिया को गतिमान करते हे।

खून से अधिक कोलेस्ट्रोल एव चर्वी होना, मोटापा, धूम्रपान, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, निष्क्रिय जीवन, मानसिक तनाव, आनुवशिक कारण अन्य जेसे शराव का अत्यधिक सेवन।

निदान— हृदय रोगो के निदान के लिए एक्स-रे, ई०सी०जी०, ट्रेडमिल, एजोयोग्राफी, इकोकार्डियोग्राफी थेलियम— लिपिड टेस्ट, मूगाटेस्ट तथा रक्त एव मूत्र सम्बन्धी कई परीक्षण किये जाते हे।

उपचार—

जन्मजात एव आनुवशिक कारणो से होने वाले हृदय रोगो से वचाव—

आनुवशिक कारणो से होने वाले हृदय रोगो को रोकना सभव नहीं ह। पर यह वताना आवश्यक हे कि शराव पीने वाली व धूम्रपान करने वाली माताओ के शिशुओ मे हृदय राग की सभावनाए ज्यादा रहती ह। गर्भावस्था मे तीसरे माह म कुछ दवाओ के सेवन से ये रोग उभर सकते हे। गर्भावस्था मे विकृति होने से भी शिशु को हृदय रोग हो सकता ह। गर्भकाल म माता को रेडियशन (एक्सरे) करवाने से भी वचना चाहिए।

सक्रमण के कारण हुई वाल्व सम्बन्धी खरावी— वच्चो के गले का पूरा ख्याल रख व गला खराव होते ही जाओ मे दर्द होने पर पूण इलाज कराये।

कोलेस्ट्रोल— खून मे कोलेस्ट्रोल अथवा वसा की मात्रा अधिक हो तो दिल के दोरे मे ज्यादा खतरा रहता हे। खून मे वसा व कोलेस्ट्रोल की मात्रा कम रखना आवश्यक हे। इसके लिए निम्निलिखित प्रयास उपयोगी ह—

(अ) खान-पान मे सशोधन— वढे हुए कोलेस्ट्राल को कम करने के सदर्भ मे महत्वपूर्ण तथ्य यह हे कि कोलेस्ट्रोल जीव जगत मे पाया जाता हे, वनस्पति जगत मे नहीं। जानवरो मे एव पक्षियो मे मास, अण्डो व दूध मे कोलेस्ट्रोल प्रचुर मात्रा मे पाया जाता हे। इसका सेवन वद कर दे या वहुत कम कर दे।

वहुत से फलो व सब्जियो मे यह गुण होता ह कि वे कोलेस्ट्रोल की मात्रा घटाती हे। जिस सब्जी मे रेशे जितने ज्यादा होगे कोलेस्ट्रोल उतना ही कम होगा।

(च) धूम्रपान— धूम्रपान करने वालो मे दिल का दौरा पडने की सभावना उन लोगो की तुलना मे तीन गुना ज्यादा होती हे, जो धूम्रपान नहीं करते। ४५ वर्ष से कम उम्र के जिन लोगो की मृत्यु दिल के दोरे पडने से होती ह उनमे से लगभग ८० प्रतिशत सख्या धूम्रपान करने वालो की होती हे, जो वचपन से ही धूम्रपान करते हे। उनमे दिल के दोरे की सभावना १० गुना ज्यादा होती ह।

धूम्रपान छोडने के इच्छुक लोगो के लिए अच्छी वात यह ह कि धूम्रपान छोड देने के वाद व्यवित्त मे हृदय रोग की सभावना मे वडी तेजी से कमी आती ह। आधुनिकतम परीक्षणो से यह सिद्ध हो चुका है कि तम्बाकू का सवन भले ही किसी प्रकार से किया जाय वह नुकसानदायक होगा।

(स) उच्च रक्तचाप— वेसे तो प्रत्येक व्यक्ति का सामान्य रक्तचाप उसकी प्रकृति के आधार पर कम या ज्यादा होता हे लेकिन सामान्य आधार पर १२०/८० को ही सामान्य रक्तचाप माना जाता हे। उच्च रक्तचाप क्या होता हे, इसके वारे मे एक कारण वताना मुश्किल ह लेकिन वज्ञानिक परीक्षणो से पता चलता हे कि अधिक नमक के सेवन से यह रोग अक्सर हो जाता हे हमारे शरीर मे प्रतिदिन नमक की आवश्यकता २ ग्राम से अधिक नहीं होती भोजन मे यदि नहीं भी डाला जाय तो साग सब्जियो म होने वाले प्राकृतिक नमक से काम चल सकता ह। मानसिक तनाव

शेषांश पृष्ठ २८३ पर

हृदय-विवेचन

डा० श्रीमती अल्पना शर्मा
एम ए , पीएच डी, (सस्कृत), बी एड, आयुर्वेद रत्न
निवास— १०८३ कसल वाटिका, बेगमबाग मेरठ—२२०००१
फोन— ०१२१—५४३२२४, ६४०५०६

"हृ" आहरणे "दा" दाने ओर "इण" गतो इन तीन धातुओ के सयोग से हृदय शब्द बना है। जिसका अर्थ क्रमश "हरति ददाति एति हृदयम्" अर्थात् जो आहरण करता ह दान करता ह व निरन्तर गति करता है वह हृदय ह। आचार्यो ने हृदय की गणना मातृज अवयवो मे की है। आचार्य रणजीतराय देसाई आयुर्वेदोक्त 'हृदय' को आधुनिको के 'स्रोतसहित हृदय' मानते हे।

हृदयलक्षणं- रचनात्मक—

१— सख्या— हृदयमेकमेव। द्विहृदयत्व न कुत्रापि अस्ति।

२— उत्पत्ति— शोणितकफ, प्रसादजम्

३— आकारेण— पुण्डरीक कलिकाकारम्

४— अगत — कोष्ठागम्

५— कर्मत — चेतनाधिष्ठानम्, रसवहस्रोतसा प्राणवह स्रोतसा च मूलम्।

६— स्थानत — कोष्ठवक्षसीस्तनयोश्च मध्ये आमाशयद्वारेस्थित। तस्य अध वामत प्लीहा फुफ्फुस दक्षिणत यकृतक्लोम च।।

७— आश्रयदातृत्व— दशहामूलानामाधारभूत तथैव षडगाधारो भवति। विज्ञानस्येन्द्रियार्थाना जीवत्मनत्तश्चित्त स्याप्याधारो भवति।

८— नामत — हृदयम् (सु०शा० ३/१८), हृत् (सु०शा० १०/१४) चेतनास्थानम् (सु०शा ३/३१) रक्ताशय (च० सू० २२/६) हृदय (च० शा० ७/३१) हृत (च० सू० १०/७४) आत्मायतनम् (च०नि० ८/६) सर्वाश्रय (च०वि० २/३) चेतनाऽधिष्ठानम् (च० शा० ७/११) महत् (च० सू० ३०/३) अर्थ (च० सू० ३०/३) हार्दिम (अथर्व० २/३३/३)

९— उत्पत्तिक्रम— गर्भश्य प्रथमागम् अस्मिन्नेव चेतनाया प्रथम स्वन्द, ततोऽनन्तर इतरेवामगणप्रत्यंगाना तदागतरसेन् प्रादुर्भाव ।

१०— स्वभावत स्वय सकोचविकासशीलम्।

हृदय लक्षणं—क्रियात्मकं—

आचार्य चरक ने हृदय की रसवह व प्राणवह स्रोतो का मूल बताया हे। (च० वि० ५/८) चरक टीकाकार चक्रपाणि के अनुसार प्राणवह से तात्पर्य प्राण सज्ञा वात का स्थल शब्द गति विपरीत अर्थ वाली 'ष्ठा' धातु से उत्पन्न हुआ ह। अग्रेजी का सेशन शब्द इसी से मिलती जुलती हे 'स्टे' धातु से सिद्ध हुआ हे।

मानव का हृदय मात्र चोथाई किलोग्राम का एक मासपिण्ड होते हुए भी प्रतिदिन छियानवे हजार कि० मी० लम्बी रक्त वाहिनियो मे सतत् रक्त को चलायमान रखता है। जितना रक्त हृदय दिन भर मे पम्प करता हे उतना १८००० लीटर के एक टेक को भरने के लिए पर्याप्त होता हे। ऐसा अनुमान हे कि चालीस वर्ष की आयु तक हृदय करीब ३००००० टन रक्त को पम्प कर चुका होता हे। इसकी एक दिन की शक्ति द्वारा दस हजार कि० ग्रा० भार एक मीटर की ऊँचाई तक बिना किसी कठिनाई के उठा सकते है।

हृच्छूल या हृदयशूल (ANGINA)

डा० विभा पाठक् बी एससी , बी ए ओनर्स (सस्कृत), बी ए एम एस
आयुर्वेदीय चिकित्सा पदधिकारी
मारवाडी सहायक समिति, रॉची, कार्यकारिणी समिति सदस्य, झारखण्ड आयुर्वेद चिकित्सक सघ, रॉची

हृच्छूल या हृदयशूल हृदय से सम्बन्धित एक सकट कालीन स्थिति का रोग है। इस रोग का यदि तत्काल उपचार नहीं किया जाए तो रोगी की मृत्यु होत देर नहीं लगती ह। अत हृच्छूल के विभिन्न पहलुओ पर प्रकाश डालने का प्रयास इस लेख मे किया जा रहा ह।

हृदय एक महत्वपूर्ण मर्म—

शरीर मे १०७ मर्म वतलाये गये हे। उसकी विस्तृत विवचना चरक सहिता के शरीर सख्या नामक अध्याय (च० शा० अ० ७/१४) मे की गई हे। इन सभी भर्मो मे वस्ति, हृदय आर शिर को विद्वानो ने प्रधान माना ह ओर इन तीनो को मिलाकर 'मर्मत्रय' या 'त्रिमर्म' की सज्ञा दी हे। वस्ति, हृदय आर शिर ये तीनो मर्म साध प्राणहर होते हे। अत इनमे होने वाले रोगो की यत्नपूर्वक चिकित्सा करनी चाहिए। महर्षि चरक ने त्रिमर्मीया चिकित्साध्याय मे महत्व प्रतिपादित करते हुए लिखा हे—

''सप्तोत्तर मर्मशत यदुक्त शरीरसख्यामधिकृत्य तेभ्य।
मर्माणि वस्ति हृदय शिरश्च प्रधान भूतानि वदन्ति तज्ज्ञा।।
प्राणाश्रयात्, तानि हि पीडयन्तो वातादयोऽसूनपिपीडयन्ति।
तत्सश्रितानामनुपालनार्थ महागदाना श्रृणु सोम्य रक्षाम्।।''

सोम्य अर्थात् अग्निवेश को वतलाते हुए कहा गया ह कि शरीर १०७ मर्मो मे वस्ति, हृदय और शिर सवसे प्रधान मर्म है क्योकि इन तीनो का आश्रय लेकर ही प्राण आश्रित रहते हे। वातादि दोषो के कारण जय इन मर्मो मे पीडा उत्पन्न होती हे तव प्राणो को भी पीडित होना पडता हे।

चरक के तत्रकार मे त्रिमर्मीयासिद्धि नामक अध्याय मे इन तीनो मर्मो की प्रधानता को इस प्रकार स्पष्ट किया हे—

''हृदये मूर्ध्नि वस्तौ च नृणा प्राणा प्रतिष्ठिता ।
तस्मात तेषा सदा यत्न कुर्वीत परिपालने।।
आधातवर्जन नित्य स्वस्थवृत्तानुवर्तनम्।
उत्पन्नार्तिविघातस्य मर्मणा परिपालनम्।।

उपयुक्त वर्णन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते ह कि हृदय, वस्ति तथा शिर के रोगो को अत्यन्त सावधानीपूर्वक एव यत्नपूर्वक चिकित्सा कर उन्हे सदा स्वस्थ वनाये रखने की चेष्टा करनी चाहिये।

आयुर्वेदीय ग्रथो मे हृच्छूल का वर्णन—

प्राचीन आयुर्वेदीय सहिताओ आर ग्रथो मे 'हृच्छूल' नाम से स्वतत्र रोग का वर्णन नहीं मिलता हे। महर्षि चरक, महर्षि वाग्भटाचार्य, आचार्य शार्गधर तथा माधव निदान के रचनाकार श्री माधवकर ने हृदय रोगो के पॉच ही भेद वतलाये ह। माधवनिदान मे लिखा हे—

''हृदामय पञ्चविध प्रदिष्ट ।''

आचार्य शार्गधर ने लिखा हे—

हृद्रोगा पच कीर्तिता ।
वातादिभिस्त्रय- प्रोक्ताश्चतुर्थ सन्निपातत ।।
पचम कृमिसजात ।''

अर्थात् वात, पित्त और कफ दोषो के कारण वातज पित्तज एव कफज नामक तीन प्रकार क हृदय रोग होते ह तथा तीनो दोषो के कुपित होने के कारण सन्निपातज हृदय रोग होता हे। इसके साथ ही कुष्ठ मे कृमि होन के कारण कृमिज हृदय रोग होता हे। इस प्रकार हृदय रोगो के कुल पॉच भेद होते हैं। महर्षि चरक ने भी इन्ही पॉच प्रकार के हृदय रोगो का वर्णन किया हे।

इस प्रकार हम पाते हे कि हृदयशूल एक अलग स्वतत्र रोग के रूप मे इन विद्वानो ने वर्णन नही किया हे। किन्तु हृदय रोग के कई भेदो मे तथा अन्य अनेक रोगो मे एक प्रमुख लक्षण के रूप मे 'हृच्छूल' या 'हृदय शूल का वर्णन आयुर्वेदीय ग्रथो मे पाया जाता है। वातज हृदयरोग के लक्षणो का वर्णन करते हुए श्री माधवकर ने लिखा है।

आयम्यते माहतजे हृदय तुद्यते तथा।
निर्मथ्यते दीर्यते च स्फोटयते पाटयते ऽपिच''।।

अर्थात् वातज हृदयरोग मे सुई चुभाने मथने, विदीर्ण

करने चीरने तथा काटने जसी वेदना होती है।

त्रिदोषज या सन्निपातज एव कृमिज हृदयरोगो का वणन करते हुए उन्होने लिखा ह—

विघात त्रिदोष त्वपि सर्वलिग,
तीव्रार्तितोद क्रिमिज सकण्डूम्।
उत्क्लेश ष्ठीवन तोद शूल हृल्लासरस्तम।
अरुचि स्यावनेत्रत्व शोथश्च कृमिजे भवेत्।।''

अर्थात् तीनो दोषो के प्रकोप से उत्पन्न हृदय रोग मे तीनो दोषो के लक्षण विद्यमान होते है। इससे यह भी पता चलता है कि त्रिदोषज हृदय रोग मे वातज हृदय राग के लक्षण वर्तमान रहने के कारण हृदय मे वातज हृदय रोग जसी पीडा भी रहेगी।

कोष्ठ मे कृमि होने के कारण उत्पन्न होने वाले कृमिज हृदय रोग मे हृदय मे सुई चुभाने की सी वेदना होती है।

यो तो 'हृच्छूल' हृदय रोगो में सर्वाधिक व्यापक लक्षण ह किन्तु हृदय रोग के अतिरिक्त भी कई अन्य रोगो मे 'हृच्छूल' एक लक्षण के रूप म पाया जाता ह। जेसे, उदावर्त रोग के लक्षणो का वर्णन करते हुए महर्षि चरक न कहा ह—

''रुग्वस्ति हृत्कुक्ष्युदरेष्वभीक्ष्ण
सपृष्ठपार्श्वेष्वति दारुणा स्यात।''

अर्थात् उदावर्त राग मे वस्ति, हृदय कुक्षि उदर प्रदेश, पीठ आर पसलियो मे अत्यन्त तीव्र वेदना होती है।

इसी तरह कोष्ठगत वात, ग्रहणी, मूत्रकृच्छ, शकराश्मरी, अपस्मार, विशूचिका, अभिचारज ज्वर, सन्निपातज ज्वर आदि रोगो म भी हृच्छूल, हृदय वेदना, हृदय पीडन आदि लक्षणो के वर्णन आये ह। हृदय शूल लक्षण मूर्च्छा तथा श्वास रोग के पूर्व रूप मे भी उत्पन्न होता है। श्वास रोग के पूर्व रूप मे भी उत्पन्न होता है। श्वास रोग के पूर्वरूप का वर्णन करते हुए चरक संहिता के हिक्का श्वास चिकित्साध्याय मे महर्षि पुर्नवसु आत्रेय ने कहा है—

''आनाह पार्श्वशूल च पीडन हृदयस्य च।
प्राणस्य च विलोमत्व श्वासानि पूर्वलक्षणम्।।''

अर्थात् पेट का फूलना, पसलियो मे दर्द का होना, हृदय मे पीडा तथा प्राणवायु का विपरीत होना श्वास रोग के पूर्वरूप है। इस तरह हम देखते है कि हृच्छूल, हृदयशूल, हृदय वेदना, हृत्पीडा आदि नामो से 'हृच्छूल' अनेक रोगो म लक्षण के रूप में आता है।

हृच्छूल के सामान्य लक्षण—

हृच्छूल के प्रमुख लक्षण इस प्रकार ह

१ रोगी के हृदय मे सूई चुभाने जसा दर्द होता ह।

२ रोगी को ऐसा लगता ह कि कोई उसके दिल को काट रहा ह।

३ श्वास लेने मे कठिनाई होती ह आर हृदय म खिचाव होता ह।

४ रोगी का चेहरा सफेद होने लगता ह।

५ नाडी मन्द पड जाती है तथा कभी-कभी नाडी बन्द भी हो जाती है।

६ रोगी के माथे आर ललाट पर पसीना होने लगता ह।

हृच्छूल के प्रमुख कारण—

चूँकि हृच्छूल अनेक रोगो मे पाया जाता ह। अत हृच्छूल उन सभी कारणो से हो सकता ह। जिन कारणो से उससे सम्बन्धित रोग उत्पन्न होते है। किन्तु निम्नलिखित कारण प्रधान है।

१— शक्ति से अधिक परिश्रम करना।

२— चाय, काफी, सिगरेट तथा शराब आदि उत्तेजक पदार्थो का सेवन करना।

३— मिर्च मसाले तथा अधिक तले पदार्थो का सेवन करना।

४— अधिक मैथुन करना।

५— मानसिक तनाव मे रहना।

६— मल, मूत्र, वायु, छींक आदि के वेग को रोकना।

७— आवश्यकता से अधिक भोजन करना।

८— कब्ज का बना रहना।

९— भोजन के तुरन्त बाद भारी काम मे लग जाना।

१०— लगातार जरूरत से कम सोना।

हृच्छूल की आयुर्वेदिक चिकित्सा—

हृच्छूल की चिकित्सा करते समय इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिये कि हृच्छूल की सप्राप्ति का कारण क्या है। जिस कारण वश हृच्छूल हुआ हो उस कारण या दोष का शमन करने का प्रयास करना चाहिये। कई प्रकार के हृदय रोगो मे हृच्छूल प्रकट होते है जसा कि ऊपर लिखा गया है। जिस प्रकार के हृदय राग अथवा उदावर्त गुल्म आदि के कारण हृच्छूल प्रकट हुआ हो उसकी चिकित्सा

यत्नपूर्वक करनी चाहिये। कुछ सामान्य एव आकस्मिक चिकित्सा एव उपचार नीचे दिये जा रहे हे।

वातज हृदय रोग से पीडित रोगी के हृदयशूल को शान्त करने के लिये स्निग्ध कराकर वमन कराना चाहिये। भेपज्य रत्नावली कार के अनुसार—

"वातोपसृष्टे हृदयेवामयेत् स्निग्धमातुरम्।
द्विपचमूली क्वाथेन सस्नेह लवणेन च।।"

अर्थात् वातज हृदय रोग के रोगी को पहले स्निग्ध कराये आर उसके वाद दोनो पचमूलो (लघु पचमूल एव वृहत पचमूल) के क्वाथ मे तिल तेल अथवा गोघृत ओर नमक मिलाकर रोगी को पिलाना चाहिये जिससे वमन होकर हृदयशूल मे आराम पहुचे।

(२) चरक सहिता के त्रिमर्मीयचिकित्साध्याय के श्लोक ८१ मे आनाह, गुल्म तथा हृदय पीडा का विनाश करने मे चार प्रकार के योग वतलाये गये है।

तेल ससोवीरकमस्तुतक्र वाते प्रपेय लवण सुखोष्णम्
मूत्राम्वुसिद्ध लवणेश्च तेलमानाहगुल्मार्ति हृदामयघ्नमा।

अर्थात वातज हृदयरोगी के आनाह, गुल्म तथा हृदय-पीडा का विनाश करने के लिये निम्नलिखित योगो का प्रयोग करना चाहिये—

(क) सोवीर, दही का पानी, मठा तथा नमक डालकर पकाया हुआ तेल रोगी को पिलाना चाहिये। अथवा

(ख) सोवीर, दही का पानी, मठा ओर सेधानमक को गर्म तेल मे मिलाकर पिलाना चाहिये। अथवा

(ग) गोमूत्र, काजी ओर पॉचो नमको से तिल के तेल को पकाकर पिलाना चाहिये। अथवा

(घ) गोमूत्र, काजी तथा पाचो नमको को गर्म किये हुए तिल के तेल मे मिलाकर पिलाना चाहिये।

(३) सहिताकार ने पुनर्नवादि तेल का प्रयोग अभ्यग तथा पिलाने के लिये करने का निर्देश दिया हे।

(४) चरक सहिता मे हृदयशूल के साथ ही साथ पसलियो का शूल, पृष्ठशूल तथा योनिशूल को नष्ट करने के लिए पथ्यादि कल्क के प्रयोग का भी वर्णन किया हे।—

पथ्याशटी पोष्कर पचकोलात् ,
समातुलुगाद् यमकेन कल्क ।
गुडप्रसन्नालवणेश्च भृष्टो,
हृत्पार्श्व पृष्दोदरयोनिशूले।।"

(चरक सहिता, चिकित्सास्थानम्, त्रिमर्मीय चिकित्सा ध्याय २६, श्लोक ८६)

अर्थात् हरड, कचूर, पुष्करमूल, पचकोल विजारा नींवू की जड, इन सवो को समान भाग लेकर कल्क तयार कर लेना चाहिये। फिर यमकस्नेह (तेल आर घी) मे भूजकर गुड, नमक तथा प्रसन्ना (मद्य के ऊपरी स्वच्छ भाग को प्रसन्ना कहा जाता ह) के साथ सेवन करने से हृदय शूल पसलियो का शूल, पृष्ठ शूल, उदर शूल तथा योनि शूल नष्ट होते ह।

जिस प्रकार वातज हृदय रोग म प्रकट होने वाले हृदयशूल की चिकित्सा के वारे म ऊपर उल्लेख किया गया ह उसी प्रकार अलग अलग प्रकार के हृदय रोगो से सम्वन्धित हृदयशूल मे भी चिकित्सा ओर उपचार करने चाहिये।

विशेष प्रकार के हृदय शूल की चिकित्सा—

चरक सहिता मे त्रिदोपज हृदयरोग चिकित्सा के क्रम विशेष प्रकार के हृदय शूल का उल्लेख ह, जो चिकित्सा की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण ह। उनका वर्णन नीचे किया जा रहा हे।

१— भुक्तेऽधिक जीर्णाति शूलमल्प
जीर्णेस्थित चेत् सुरदारुकुष्ठम्।
सतिजवर्क द्वे लवणेविडग
उष्णाम्वुना सातिविष पिवेत् स ।।"

अगर भोजन करने के वाद हृदय मे शूल वहुत अधिक होता हे, भोजन के पाचनकाल मे हृदय का शूल कम हो जाता हो तथा भोजन के भली भाति पच जाने पर हृदय का शूल पूरी तरह से शान्त हो जाता हो तो ऐसे हृदयशूल मे रोगी को देवदारू कूठ पाठानी लोध, सेधानमक, सोचरनमक, वायविडग ओर अतीस का चूर्ण गरम जल के साथ सेवन करना चाहिये।

२— जीर्णेऽधि स्नेहविरेचनस्यात्,
फलैर्विरेच्यो यदि जीर्यति स्यात्।
त्रिष्वेव कालेष्वधिकेषु शूल,
तीक्ष्ण हित मूलविरेचन स्यात्।।

यदि भोजन के पच जाने के वाद हृच्छूल वढ जाता हो तो इसे तरह के हृच्छूल मे स्नेह विरेचन कराना चाहिये ओर इसके लिए एरण्ड आदि के तेल का प्रयोग करना

चाहिये।

यदि भोजन के परिपाक काल मे अर्थात् भोजन के पचते समय मे हृच्छूल अधिक हो तो ऐसे हृच्छूल के रोगी को मुनक्का आदि विरेचक फलो से विरेचन कराना चाहिये।

किन्तु यदि हृच्छूल तीनो कालो मे अर्थात् भोजन करने बाद, भोजन के परिपाक काल मे तथा भोजन के पच जाने पर अधिक ही रहता हो तो ऐसे रोगी को मूलद्रव्यो जसे दतीमूल, इन्द्रायणमूल, त्रिवृतमूल आदि द्वारा तीक्ष्ण विरेचन कराना चाहिये।

हृच्छूल की कुछ सामान्य चिकित्सा–

हृच्छूल मे स्नेहन वमन तो कराना ही चाहिये। साथ ही अर्जुन का प्रयोग भी किसी न किसी रूप मे करना चाहिये। मृगशृग भस्म, अभ्रक भस्म, पुष्करमूल चूर्ण, विषतिन्दुक वटी, अश्वगधा चूर्ण आदि भी काफी उपयोगी आषधिया हे। इनकी मात्रा, रोगी की अवस्था, रोग की तीव्रता आदि को ध्यान मे रखते हुए, तय की जानी चाहिये। इनकी सामान्य मात्रा, अवयव मिश्रण एव अनुपान का एक उचित अनुपात होना चाहिये।

(१) मृगशृग भस्म २५० मि०ग्रा० से ३७५ मिवग्रा तक, अभ्रक भस्म (सहस्त्रपुटी हो तो अति उत्तम अन्यथा शतपुटी अथवा साधारण भी) ५० मि०ग्रा० से १०० मि०ग्रा तक, मल्ल चन्द्रोदय ५० मि० ग्रा० से ७५ मि०ग्रा० तक की एक मात्रा हुई दिन रात मे इस तरह की २ से ३ मात्रा मधु एव ताम्बूल स्वरस के साथ चटाने से हृच्छूल के रोगी को शीघ्र आराम पहुचता हे।

(२) मृगशृग भस्म २०० मि०ग्रा० से २५० मि०ग्रा० तक, महावातविध्वसन रस १०० से १२५ मि०ग्रा० तक, पुष्करमूल १ ग्राम, अर्जुन छाल का चूर्ण १ ग्राम मिलाकर १ मात्रा बनाये। ऐसी २ से ४ मात्रा तक दिन रात मे गोदुग्ध के साथ पिलाना चाहिये।

(३) शुद्ध गुग्गुल २०० मि०ग्रा० से २५० मि०ग्रा० तक, विषतिन्दुक वटी २ से ३ गोली, अश्वगधा चूर्ण २ ग्राम, अर्जुन छाल का चूर्ण २ से ३ ग्राम तक मिलाकर एक मात्रा बनाये। रोग की अवस्था को ध्यान मे रखते हुये दिन रात मे ऐसी दो से चार मात्रा मधु के साथ चटाये ओर ऊपर से दूध पिलाये। हृच्छूल मे तुरन्त लाभ पहुचाता हे।

(४) अर्जुन की छाल का चूर्ण १० ग्राम लेकर उसे एक पाव पानी मे १२ घण्टे तक फूलने के लिए छोड दे। फिर उसमे एक पाव गाय का दूध मिलाकर धीमी आच पर तव तक पकाये जब तक कि पूरा पानी जल न जाये। इस प्रकार अर्जुन क्षीर पाक तैयार होता हे। इस अर्जुन क्षीर पाक मे मिश्री मिलाकर आवश्यकतानुसार रोगी को पिलाना चाहिये।

(५) अर्जुन की छाल का जोकुट चूर्ण धनिया, सोट, पिप्पली, इलायची, ब्राह्मी, लोग ओर तुलसी मजरी का मोटा चूर्ण बनाकर रख ले। इस मिश्रण चूर्ण की चाय बनाकर पिलाने से भी हृच्छूल मे लाभ पहुचाता हे। ■

शेषांश पृष्ठ 278 का

भी उच्च रक्तचाप का प्रमुख कारण हे, इसके अतिरिक्त मासाहारी भोजन, मोटापा, मद्यपान, एव धूम्रपान उच्चरक्तचाप के प्रमुख कारण हे। यह रोग आनुवशिक भी हो सकता हे महिलाओ द्वारा गर्भ निरोधक गोलिया या नाक मे डालने वाली दवाये भी उच्च रक्तचाप करती है। गुर्दे के रोग भी उच्च रक्तचाप कर सकते है।

मधुमेह– मधुमेह के ५० प्रतिशत रोगियो मे हृदय रोग होता है। मधुमेह के रोगियो के रक्तचापतुलनात्मक रूप से सामान्य रोगियो को ज्यादा होता है। साथ ही मधुमेह के रोगियो की धमनियो मे कोलेस्ट्रोल के जमाव प्रक्रिया रोग हो जाती हे इस प्रकार मधुमेह एव हृदय रोगो का चोली दामन का साथ हे।

मोटापा– मोटे आदमियो मे हृदयघात की सभावना ५ गुना बढ जाती है।

(ख) मानसिक भावो का प्रभाव– अमेरिका के दो चिकित्सको डा० फ्रेडमेन ण्व रोजमैन ने वर्षो तक मानव व्यवहार का अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला है कि वे व्यक्ति जो जीवन घडी की सुईयो मे बधा रहता हे, दो टूक बात करते हे, स्वभाव से अक्खड होते है, अति महत्वाकाक्षी व दूसरो से आगे निकलने के अधीर होते हे, उनमे अन्य व्यक्तियो की अपेक्षा हृदयघात के दुगने चास रहते हे। □

हृदय के वाल्व बदलने एवं बाईपास सर्जरी से पहले

वैद्य सुरेश चन्द्र शर्मा
चिकित्साधिकारी— राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय छोकरवाडा भरतपुर (राजस्थान)

वैद्य सुरेशचन्द्र शर्मा, भिषगाचार्य है। भरतपुर जिले मे राज० आयु० औषधालय छाकरवाडा म वैद्य है।
कुशल प्रयोगधर्मी लोकप्रिय सेवाभावी विनम्र तथा मिलनसार वैद्य है।
इनकी श्रीमती जी भी इनकी चिकित्सा सहायक है।

स्कूलो मे स्वास्थ्य परीक्षणो की जो अनिवार्यता रखी गई ह वह आमवात जन्य हृदय रोग (रियूमेटिक हार्ट डिसिज) हृदयावरोध (हार्ट अटेक) जैसे गम्भीर रोगो की रोकथाम एव उपचार का कारगर कदम सिद्ध हो रहा है। साभाग्य से मेरा ज्यादातर सेवाकाल महिला विद्यापीठ जसी विशाल आवासीय शिक्षण सस्था मे रहा ह। अत बाल्यावस्था मे अपनी जड जमाने वाले उक्त रोगो की गहराई तक जाने एव चिकित्सा का अवसर मुझे मिला हे। जनहित मे प्रकाशित किया जा रहा हे।

रोग के लक्षण—

६ से ८ वर्ष तक की आयु मे इस रोग के लक्षण स्पष्ट दिखाई देते ह। इसमे सवसे प्रमुख लक्षण रोगी की छाती मे हृदय की तीव्र धडकन तीन फुट की दूरी से ही दिखाई पड जाती ह। धडकन कुछ इस प्रकार की होती हे, जेसे विना पानी के मछली कूदती है, स्टथस्कोप से सुनने मे योग्य चिकित्सक इस रोग की अवस्था को भी मालूम कर लेते हे। इसमे वच्चा थोडा सा भी तेज चलने अथवा खेलते समय भी तेज गति से हॉफने लगता हे। रोगी का निस्तेज चेहरा सही ढग से भूख न लगना एव किसी-किसी को सन्धियो मे शोथ सहवेदना प्रमुख हे। जिन वच्चो का स्वास्थ्य परीक्षण नहीं हो पाता उनके अभिभावक को जब वच्चा चलने फिरने मे असमर्थता जताता हे तव इसकी चिन्ता करते हे। इसलिए वर्तमान परिस्थितियो मे सभी अभिभावको को अपने वच्चो का नार्मल स्थिति मे भी स्वास्थ्य परीक्षण करा लेना चाहिये एव यदि इन रोगो की कुछ भी सभावना हो तो उपचार योग्य चिकित्सक द्वारा करा लेना चाहिये।

रोग का कारण—

वस्तुत यह रोग एकाएक नहीं होता अपितु गर्भ अथवा शशवावस्था मे ही परिस्थतिजन्य कारणो से धीरे-धीरे पनपते हे। यदि स्वय माता पिता मधुमेह, पाण्डुरोग आदि से पीडित हो तो यह रोग गर्भ मे ही पकड लेता ह। इस अवस्था मे वच्चे के हृदय मे छेद हो गये हो तो वच्चे का वचना कठिन हो सकता ह अथवा जन्मोत्तर कम स कम ४ माह तक स्वस्थ माता का दूध का अभाव वच्चे का रहा तो बच्चा रुग्ण हो सकता हे। अत वच्चो को गर्भिणी माता, पेश्चूराईड, डब्बे का दूध ओर अब तो सिन्थेटिक दूध नहीं देना चाहिये। इनसे वच्चो का यकृत खराव हो जाने से अतिसार न्यूमोनिया आदि रोग होकर उक्त प्राण लेवा रोगो की जड जम जाती हे। चूकि भेस अथवा उक्त प्रकार के दूध के सेवन से वच्चो को अतिसार हो जाने पर मातायें यह सोचकर कि यह दूध वच्चे को पच नहीं पा रहा ह अत दूध मे पानी एव फिर पानी मिलाकर पिलाती चली जाती हे जिससे बच्चे का स्वास्थ्य विगडता चला जाता ह। जवकि जन्म के ४ माह तक वच्चे को माता अथवा वकरी के

दूध के अलावा कुछ भी नहीं देना चाहिये। जन्म के प्रथम माह मे पानी की एक बूद भी बच्चे को हानिकर हो सकती ह अथवा जब बच्चा स्वयं जमीन पर बैठने लगता हे तो वह मिट्टी के सम्पर्क मे आता है, जिससे उसके हाथ मिट्टी मे हो जाते हे बच्चा इन्हीं हाथो को मुह मे दे लेता है और इसके बाद तो उसे मिट्टी खाने की आदत हो जाती है। इससे भी यकृत खराब होकर बच्चे को बार-बार अतिसार एव न्यूमोनिया जेसी बीमारी होकर मर भी सकता है। अथवा उक्त रोग भी हो सकते हे। इन रोगो के हो जाने पर ज्यो ज्यो बालक बालिकाये युवा होते हे वैसे-वेसे इस रोग मे अन्य ओपसर्गिक रोग, आन्त्रिकज्वर (टाईफाइड) आमवात (रियूमेटिक आर्थराईटिस) आमवात ज्वर (रूमाटायड) जसे गम्भीर रोग हो सकते हे अथवा पत्नी सहवास एव अन्य प्रतिकूल परिस्थितियो मे हृदयावरोध एव पत्नी गर्भ के कारण कष्ट मे पड सकती हे।

चिकित्सा—

इस रोग की प्रारम्भिक अवस्था मे निरन्तर उपचार से यह रोग प्राय ठीक हो जाता हे। चाहे वह किसी भी पद्धति द्वारा हो। हॉ इतना अवश्य है कि रोग की प्रारम्भिक अवस्था मे आयुर्वेद चिकित्सा से रोग पूर्ण रूप से निर्मूल हो जाता हे जबकि अन्य अन्य चिकित्सा मे वाल्व परिवर्तन जैसे गम्भीर आपरेशन के बाद भी आजीवन ओषधियो पर निर्भर रहना पडता ह अथवा वाल्व परिवर्तन के समय अथवा बाद मे भी असामयिक मृत्यु हो सकती हे। वेसे भी जिस देश मे एक मनुष्य रोजाना मजदूरी करके अपने परिवार का पालन पोषण करता हे ओर वही मनुष्य अथवा उसके परिवार का कोई सदस्य इन जान लेवा रोगो से ग्रसित हो जाये तो वह न तो वाल्व परिवर्तन करा सकता हे एव न ही बाई पास सर्जरी ही करा सकता ह। अत जनसाधारण ही नहीं अपितु दुनिया का सबसे अमीर व्यक्ति भी हृदय के वाल्व परिवर्तन एव बाईपास सर्जरी से पूर्व इस ओषधि से अपना जीवन सुखी बना सकता है। वह औषधि है एक विशिष्ट प्रकार की लहसुन हे। आज से लगभग २२ वर्ष पूर्व एक कश्मीरी हकीम जी ने जोडो के दर्द के लिए इन लहसुन के विषय मे बताया। किन्तु जब मैने इसे आमवात जन्य हृदय रोग (आर० एच० डी०) वाले जोडो के दर्द वाले एक १२ वर्षीय बच्चे पर प्रयोग किया तो उसका जोडो के दर्द के साथ-साथ हृदय की गति मे साम्यता पाई। इसके बाद तो इस प्रकार के कई रोगियो को लाभ हुआ जिन्हे हृदय के बाल्व परिवर्तन अथवा बाईपास सर्जरी की सलाह दे दी गई थी।

यह लहसुन बाजार मे बिकने वाले लहसुनो से भिन्न हे। जम्मू श्री नगर के बर्फीले पहाडो मे वर्षात की मोसम मे वहा के ग्राम वासी इसे बोते हे फलस्वरूप जो जुलाई से लेकर अप्रेल तक बर्फ मे ही दबी रहती है। यह अवश्य हे कि इसकी पेनी पत्ती ज्यो-ज्यो बर्फ बढती हे त्यो-त्यो वह पत्ती बर्फ के ऊपर दिखाई देती रहती हे। गोल बादामी रग की होती हे। पहला पर्त भी बादाम के दूसरे परत से कुछ हल्का होता है। भीतर से छीपकली के अण्डे जेसी गिरी निकलती हे। सुबह-साय निराहार २-२ गिरी खाने से रोगियो मे आश्चर्यजनक लाभ होता हे। इसे चबाकर खानी चाहिये ऊपर से सर्दियो मे गर्म एव गर्मियो मे ठण्डा पानी पिलाये। रोग का प्रभाव कम हो जाने पर १-१ लहसुन कर देनी चाहिये। आजीवन खाने पर भी न तो किसी प्रकार की टैस्ट की आवश्यकता है एव न ही किसी प्रकार के रियेक्शन का डर है। फिर भी उक्त प्रकार के रोगियो को किसी योग्य चिकित्सक की सलाह तो लेते रहना चाहिये। इसका स्वाद लहसुन जैसा तो हे किन्तु न तो इसमे गन्ध एव तीक्ष्णता नहीं होन से बच्चे, गर्भिणी, वृद्ध सभी धर्म वाले ले सकते हे। इसे गठिया के नाम से जाना जाता है।

अत यदि आमवातजन्य हृदय रोग (रियूमेटिक हार्ट डिसीज) मे अन्य ओपसर्गिक रोग नहीं हुए तो इससे अवश्य लाभ होगा एव यही स्थिति सम्भावित हृदयाघात रोगियो की भी है। सम्भावित हृदयाघात का रोगी निरन्तर ३ माह तक उक्त ओषधि लेने के बाद सुरक्षित होता जाता हे एव हमेशा ही लेते रहने से पुन रोग की आशका नहीं रहती हे।

हृदय में आधुनिक निदान प्रणाली

डा० उमेश शर्मा
पी०जी० अध्येता द्वितीय
कायचिकित्सा स्नातकोत्तर विभाग,
राष्ट्रीय आयुर्वेद सस्थान, जयपुर—२.

डा० अजय कुमार शर्मा
विभागाध्यक्ष (प्र०)
कायचिकित्सा स्नातकोत्तर विभाग,
राष्ट्रीय आयुर्वेद सस्थान, जयपुर—२.

डा० अजय शर्मा राष्ट्रीय आयुर्वेद सस्थान, जयपुर मे कायचिकित्सा के विभागाध्यक्ष, पजाव के आयुर्वेद स्नातक, एम डी, पीएच डी, योग डिप्लोमाधारी मृदुभाषी, कुशल शासक, पीयूषपाणि चिकित्सक एव अत्यन्त व्यवहार कुशल युवक है। अनेक लोगो ने इनके पास अध्ययन कर एम० डी० उपाधि हासिल की हे। इनकी श्रीमती जी डा० प्रवीण शर्मा भी निजी चिकित्सालय सचालित करती हैं।

डा० उमेश शुक्ला श्री अजय कुमार शर्मा के विभाग मे एम० डी० द्वितीय कर रहे ह। उभरते हुए नवयुवक लेखक है।

आधुनिक युग मे विज्ञान की प्रगति के साथ नये-नये यन्त्रो के आविष्कार से हृद्रोगो का निदान जो कि एक जटिल प्रक्रिया थी, अब अति सरल हो गई है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति मे हृद्रोगो से सम्वन्धित मेडिसन की एक इकाई'' कार्डियोलॉजी'' अत्यधिक विकसित हो गयी हे, जिसके अन्तर्गत हृद्रोगो के निदान हेतु विभिन्न उपकरणो का विकास भी होता जा रहा है। आधुनिक हृद्रोग निदान प्रणाली को यदि दो भागो मे विभक्त कर ले तो यह सुविधाजनक रहेगा।

अयात्रिक विधि—

दर्शन, स्पर्श न ठेपण ओर श्रवण के माध्यम से हृद्रोगो को निदान करने मे अधिक सहायता मिलती हे।

अ— परिसरीय रक्तवाहिनियो को ध्यानपूर्वक देखना चाहिये।

व— रक्तवाहिनियो की मुख्य परीक्षा स्पर्शन द्वारा ज्ञात होती हे। नाडी की परीक्षा के लिए Raidial artery को दोनो rist joints पर स्पर्श द्वारा ज्ञात करना चाहिये। स्पर्शन विधि से नाडी परीक्षा हेतु निम्न भावो को देखा जाता है।

१— गति (Rate per Minute)- नाडी गति वच्चो मे ६० से १००, युवावस्था मे ७२ से ८० तथा वृद्धो मे ५५ से ६० प्रति मिनट के लगभग होती है। हृदय की गति को नाडी की गति के साथ तुलना अवश्य करनी चाहिये क्यो कि विशिष्ट परिस्थितियो मे हृदय की गति से नाडी की गति कम हो सकती है जिसके अन्तर को Pulse deficit कहते हे।

२— लय (Rhythm)- पुन नाडी की लय देखते हे कि गति एक व्यवस्थित क्रम से चल रही है या अव्यवस्थित क्रम से। कभी-कभी स्वस्थ व्यक्तियो मे भी नाडी गति निःश्वास के समय बढ जाती है और उच्छ्वास के समय घट जाती है, इसे Sinus arrhythmia कहते हे।

३— नाडी की प्रकृति (Character)- क्या नाडी गति प्राकृतिक है या अप्राकृतिक ? विभिन्न हृद्रोगो की अवस्था मे विभिन्न प्रकृति की नाडी मिलती है। उदाहरणार्थ—

एनाक्रोटिक पल्स, कोलैप्सिग पल्स, पल्सस आलटरान्स।

४— नाडी का विस्तार (Volume)- नाडी की गति के समय रक्त प्रवाह के माध्यम से दोनो हाथो की नाडियो का विस्तार परीक्षण किया जाता है।

५— रक्तवाहिनियो की दीवारो की अवस्था (Condition of the vessels walls)- आरटीरियोस्केलेरोसिस जैसी अवस्थाओ मे रक्तवाहिनियो की दीवारे मोटी हो जाती है।

स— टेपण (Percussion)- वक्षस्थल पर टेपण प्रक्रिया द्वारा हृदय की सीमाओ का ज्ञान किया जा सकता है।

द— श्रवण— श्रवण यत्र की सहायता से हृदय की विभिन्न ध्वनियो को सुना जा सकता हे। इस विधि का समावेश यान्त्रिक विधि के अन्तर्गत ही किया जाना चाहिये।

इसके अतिरिक्त रक्त सम्बन्धी विभिन्न परीक्षण जो कि हृद्रोगो के निदान मे सहायक होते हे उनका समावेश भी इसी वर्ग मे किया जा सकता हे। यथा— विभिन्न रक्त कणो की स्थिति (Blood count), प्लाज्मा इलैक्ट्रोलाईट्स, यूरिक एसिड, थायरॉयड फक्शन टैस्ट आदि।

यान्त्रिक विधि—

विभिन्न वेज्ञानिक उपकरणो का प्रयोग हृद्रोग निदान हेतु निम्न परीक्षण किये जा सकते हे—

१— स्टेथोस्कोप— यह एक श्रवण यत्र है जिसके दो भाग होते हे—

(१) **Chest piece** जिसके द्वारा हृदय की मद ध्वनिया (**Low pitched sound**) जेसे **mitral stenosis** की **Diastolic murmur** एव

(२) **Flat diaphragm like chest piece** जिसके द्वारा हृदय की तेज ध्वनिया (**High pitched sound**) जैसे **Aortic regurgitation** का **murmur** (हृदय की वैकारिक ध्वनि) सुना जाता है।

२— स्फिग्मोमेनोमीटर— इसके द्वारा धमनियो मे स्थित रक्त के दाव को नापा जा सकता हे।

स्वस्थावस्था मे एक वयस्क पुरुष का रक्तचाप सामान्यत १४०/६० से ११०/७० मि०मी० पारद के बीच होता हे।

३— एक्स-रे वक्षप्रदेश— इसके द्वारा हृदय की सीमाओ और स्थिति के बारे मे जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

४—इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफी— इसके द्वारा हृदय की मासपेशियो की क्रियाशीलता के साथ जो वैद्युतीय घटनाये होती हे, उनका ज्ञान होता है। इसके द्वारा हृदय की मासपेशियो तथा उनकी क्रियाशीलता की लय के बारे मे जानकारी प्राप्त होती है।

५— इकोकार्डियोग्राफी— इसका प्रयोग जन्मजात हृदय विकृति, पेरीकार्डियल इफ्यूजन, हृत्कपाट विकृति आदि रोगो मे किया जाता है। यह दो प्रकार का होता है—

अ— **Mmode (motion) echocardiography-** इसके द्वारा हृदय की सरचना एव उसकी गति को देखा जा सकता है।

ब— **2-D (Two Dimensional) echocardiography-** हृदय की गतियो को विभिन्न कोणो से देखने के लिए इस विधि का उपयोग किया जाता हे।

६— इन्ट्रावेस्कुलर अल्ट्रासाउड— इसके द्वारा **Intrathoracic** वक्षगुहा) और **Intra abdominal** (उदरगुहा) **Vassels** (रक्तवाहिनियो) की **Tomographic imaging** होती हे।

७— डाप्लर अल्ट्रासाउड— इसके द्वारा हृदय की मासपेशियो मे होने वाली विकृति का ज्ञान प्राप्त होता हैं। हृदय से सम्बन्धित विभिन्न ध्वनियो को अत्यधिक परिवर्धित अवस्था मे ज्ञात कर हृदय मे होने वाली विभिन्न विकृतियो का अनुमान लगाया जाता हे।

८— फोनोकार्डियोग्राफी— इसका प्रयोग हृदय की ध्वनि एव **Murmur** (हृदय की वैकारिक ध्वनि) को ज्ञात करने मे होता है।

६— मैगनेटिक रिज़ोनेन्स इमैजिग (**M R I**)- इस यत्र के द्वारा बिना किसी **Contrast agents** ओर **Ionising radiation** के हृदय और महाधमनियो की **High resolution image** प्राप्त की जा सकती है।

१०— मेटाबेलिक इमैजिग— इसमे पॉजिट्रान इमीसन टोमोग्राफी (**P E T**) का प्रयोग किया जाता हे। इसमे **Radiopharmaceuticals** का प्रयोग किया जाता है तथा हृदय की मासपेशियो की चयापचय को देखा जाता है।

११— न्यूक्लियर कार्डियोलॉजी— इसमे हृदय के कार्य, रक्त परिसचरण, हृदय की मासपेशियो की चयापचय तथा उनके अभिघात का अध्ययन **Radiopharmaceuticals** के द्वारा किया जाता हे। इसके अन्तर्गत निम्न क्रियाये समाविष्ट होती है—

अ— मोयोकार्डियल इनफार्क्ट इमैजिग

ब— मायोकार्डियल परफ्यूजन इमैजिग

स— रेडियोन्यूक्लाइड एन्जियोकार्डियोग्राफी

१२— एन्जियोकार्डियोग्राफी— कार्डियक कैथेटर के द्वारा जिस स्थान की सरचना ज्ञात करनी होती है उस स्थान

शेषांश पृष्ठ २६४ पर

हृदय रोग एवं उनके प्रकार

डा० वी० वी० अग्रवाल

डा० वी० वी० अग्रवाल जयपुर स्थित हृदय रोग चिकित्सा के राजकीय संस्थान 'बांगड अस्पताल'' म कार्डियोलॉजी के सहायक आचार्य हे। एम० बी० बी० एस०, एम० डी०, डिप कार्डि, आदि योग्यताधारी मिलनसार मृदुभाषी हसमुख चिकित्साशास्त्री हे।

प्रमुख रूप से निम्न प्रकार के हृदय रोग होते है—

१ जन्मजात या आनुवशिक रोग (Congenital Heart Disease)-

२ आमवात बुखार (Acute Rheumatic fever and rheumatic heart disease

३ Coronary Heart Disease (कोरोनरी हृदय रोग)

A Anjina Pectoris (एन्जाइना पेक्टोरिस)
Stable (स्टेवल)
Unstable (अनस्टेवल)

B Myocardial Infarction हृदयाघात या हार्ट अटक या दिल का दोरा।

४ हृदय की मासपेशियो सम्बन्धी रोग (Cardiomyopathies)

A Dilated Cardiomyopathy (डाइलेटेड कोर्डियोमायोपेथी)

B Restrictive Cardiomyopathy (रेस्ट्रिक्टेड)

C Hypertrophic Cardiomyopathy (हाइपरट्रोफिक)

५ हृदय की धडकन सम्बन्धी रोग (Arrhythmias)-

A Brady cardias (ब्रेडिकार्डियाँ)
Sinus Nodal Disease (साइनस नोड रोग)
Av Nodal Disease (ए वी नोडल रोग)

B Tachycardias (टेकिकार्डिया)
Supraventriculalr (सुप्रावेन्ट्रिक्यूलर)
Ventricular (वेन्ट्रिक्यूलर)

६ Inflammatory Heart Disease

A Endocarditis (एन्डोकार्डईटिस)

B Myocarditis (मायोकार्डिइटिस)

C Pericarditis (पेरीकार्डाइटिस)

७ हृदय की गाठे (Cardiac tumurs)-

A Benign (बिनाइन)

B Malignant (मेलिग्नेन्ट)

८ रक्तदाव सम्बन्धित

A उच्च रक्तदाव (Hypertension)

B निम्न रक्तदाव (Hypotension)

९ Heart Failure- (हार्ट फेल्योर)

A Acute and chrnic heart failure

B Systotic and Diastotic heart Failure

C Right and left heart failure

१० हृदय के बाद आवरण सम्बन्धित रोग (Pericardial Disease)

A Pericarditis- Acute

B Chronic constructive pericarditis

c Pericardial Effusion (पानी भर जाना)

कोरोनरी हृदय रोग (Coronary Heart Disease)

१ Stable Anjina Pectoris (स्टेबल एन्जाइना पेक्टोरिस)

कारण— हृदय की मासपेशियो को रक्त सचार करने वाली धमनियो (कोरोनरी आर्टरीज) मे वसा (कोलेस्ट्रोल) के जमाव की वजह से उसमे आशिक अवरोध उत्पन्न हो जाता है। जिसकी वजह से हृदय को पर्याप्त रक्त नहीं मिलता है।

लक्षण— सीने मे दर्द, भारीपन, खिंचाव, जलन, दवाव

आदि। इस तरह का कोई भी लक्षण जो कि एक से बीस मिनट तक हो, अधिकतर श्रम करने मे हो, आराम करने मे कम हो जाये या नाइट्रेट की गोली जीभ के नीचे रखने से कम हो जाये, एन्जाइना हो सकता है। कभी कभी यह दर्द दोनो हाथो, पीठ, जबडे मे भी देखा जा सकता है। भावनात्मक वेग, भारी वजन उठाने, सीढी चढने नहाने एव भोजन उपरान्त इसके होने की ज्यादा सभावना रहती है।

Precipitating Factors (इस रोग को बढाने वाली अवस्थाये)

धूम्रपान, तम्बाकू, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, रक्त मे वसा (कोलेस्ट्रोल) की अधिकता, परिवार से इस रोग का पाया जाना, मोटापा, निष्क्रियता, तनाव, पुरुषो मे इसके होने की सभावना अधिक होती है। स्त्रियो मे कुछ कम। प्रौढावस्था (चालीस से ऊपर) मे यह अधिक होता है, परन्तु आजकल व्यस्त एव तनावयुक्त जीवन शैली के कारण यह कम उम्र (तीस वर्ष के आसपास) मे भी हो सकता है। एन्जाइना के मरीजो मे दिल का दौरा (हार्ट अटेक) होने का खतरा हमेशा बना रहता है। एन्जाइना का इलाज करके हृदयाघात या हार्ट-अटेक न हो इसका प्रयत्न करते है।

निदान (Diagnosis) —

१— ई सी जी (इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम)— इस जाच से रोगी के हृदय की धडकन की नियमितता, हृदय का अपर्याप्त रक्तसचार आदि का पता चलता है परन्तु यह देखा जाता है कि एन्जाइना के अधिकाश रोगियो का ई० सी० जी० सामान्य होता है।

२— छाती का एक्स-रे

३— २-डी इको (द्विआयामी इकोकार्डियोग्राफी) इस जाच से हृदय की कार्यक्षमता, इसका आकार वाल्वो आदि का पता चलता है। हाल ही मे स्ट्रेस इको नामक विधि शुरू हुई है जिसमे रोगी का ईको टेस्ट व्यायाम के तुरन्त बाद लिया जाता है। एन्जाइना के रोगी मे श्रम के तुरन्त बाद हृदय की कार्यक्षमता मे कमी पायी जाती है जो कि विश्राम अवस्था मे नहीं होती।

४— ट्रेडमिल टेस्ट (टी० एम० टी०)— यह एक बहुत ही आवश्यक जाच है, जो लगभग सभी एन्जाइना की सभावना वाले रोगियो मे करनी पडती है। इस जाच मे रोगी को एक विशेष प्रकार की कम्प्यूटराइज्ड मशीन पर चलाया जाता है जिससे हृदय की गति बढ जाती है व लगातार ई० सी० जी० लेते रहते हैं। एन्जाइना की सभावना वाले रोगियो मे ई० सी० जी० मे खराबी आ जाती है या फिर अन्य लक्षण जैसे छाती मे दर्द, सास की तकलीफ, थकान आदि आते है।

५ कोरोनरी एन्जियोग्राफी— यह परीक्षण अभीतक सर्वोत्तम माना जाता है। इससे रोग की उपस्थिति, फैलाव एव गम्भीरता का सही आकलन किया जा सकता है।

६ अन्य परीक्षण—

थेलियम— २०१ जाच

रेडियोन्यूक्लाइड वेन्ट्रिक्यूलोग्राफी

हाल्टर मोनिटरिंग

एम० आर० आई०

उपचार— मुख्य रूप से तीन प्रकार से उपचार किया जाता है।

१— मेडिकल थेरेपी (औषधि चिकित्सा)—

(ए) तम्बाकू व धूम्रपान का सेवन पूर्ण रूप से बद। उच्च रक्तचाप व मधुमेह यदि है तो उसका नियत्रण। शरीर का वजन सामान्य करना चाहिये। निम्न वसा, निम्न कोलेस्ट्रोल युक्त भोजन करना चाहिये। रोगी की रक्त वसा की जाच करवानी चाहिये। अगर एल०डी०एल० १०० मि०ग्रा०/डीई से ज्यादा हो तो दवाइया लेनी चाहिये जैसे कि लोवास्टेटिन २०-४० एमजी प्रतिदिन, जन फिब्रेजिन ६००-१२०० एमजी प्रतिदिन।

(बी) एस्प्रिन— १६०-३२५ एमजी प्रतिदिन लेनी चाहिये।

(सी) जिह्वा के नीचे नाइट्रोग्लिसरीन ० ०३—० ०६ एमजी की गोली जब भी दर्द हो, इससे १-५ मिनट मे तुरन्त आराम मिलता है। अगर तीन गोली ५-५ मिनट के अन्तर से लेने पर भी २० मिनट तक आराम नहीं मिलता है तो दिल का दौरा (हार्ट अटक) या अनस्टेबल एन्जाइना की सभावना रह सकती है। नियमित रूप से लम्बे समय तक काम करने वाली नाइट्रेट (मोनोसोर्बिट्रेट मोनो या डाई नाइट्रेट) १०-६० एमजी प्रतिदिन लेनी चाहिये जिससे कि एन्जाइना का अटेक नहीं हो। इस औषधि से हृदय की धमनिया खुलती है।

(डी) बीटा ब्लाकिग एजेन्ट्स— यह हृदय की धडकन कम करत ह व उसक सतुलन की गति भी कम करते ह जिसस कि हृदय की आक्सीजन की माग कम हो जाती ह व रागी का दद नहीं हाता ह। यह लम्बे समय तक नियमित रूप स लनी चाहिये।

एटिनालाल — २५—२०० एमजी प्रतिदिन
मटाप्रालाल — ५०—२०० एमजी, प्रतिदिन
प्रापनालाल — ३०—२५० एमजी प्रतिदिन

(ई) केल्सियम ब्लोकिग एजेन्ट्स (Calcium Bloking Agents)- म हृदय की गति, सकुचन, रक्तचाप, आक्सीजन माग को नियन्त्रित करती ह। ये हृदय की कारोनरी धमनियो का फलाने मे भी मदद करती ह जिससे की रक्तसचरण वढ जाता ह व रोगी का दर्द मे आराम मिलता ह। य भी नियमित रूप से लम्बे समय तक लेनी चाहिय।

वरापमील (Verapamil) १२०-२४० एमजी प्रतिदिन
डिल्टियाजेम (Diltiazem) ६०-३६० एमजी प्रतिदिन
निफेडिपिन (Nifedipine) १५-१२० एमजी प्रतिदिन

उपरोक्त दवाइया अकेले या मिलाकर दोनो प्रकार स ल सकत ह। अगर रोगी को केवल नाइट्रेट लेने से पूर्ण आराम नहीं मिलता तो बीटा या कल्सीयम ब्लोकिग एजेन्ट अकल या दोनो भी साथ दे सकते ह।

२ PTCA (बेलून एंजियोप्लास्टी)—

इस विधि से चिकित्सक एक बहुत ही सूक्ष्म बलून जाघ की फिमोरस धमनी द्वारा हृदय की सकुचित धमनी म प्रवश कराता ह व उसको फुलाता ह जिससे कि अवराध खत्म हो जाता ह व रक्त सचरण चालू हो जाता ह। आजकल एक विशेष प्रकार की स्प्रिग भी हृदय की चाडी की हुइ धमनी मे लगा दी जाती ह जिसस कि धमनी पुन सकुचित होन की सभावना बहुत कम हो जाती है।

३ CABG (बाई-पास सर्जरी)—

जिन रागियो की दो या तीन कोरोनरी धमनियो मे अवराध हाता ह व साथ ही हृदय की कार्यक्षमता भी कम हा जाती ह एसे रोगियो को बाई-पास सर्जरी जरूर करवानी चाहिय। इस विधि मे पर की नस या छाती की धमनी लेकर कारोनरी धमनी जिसम कि अवरोध ह के पहले व बाद मे प्रत्यारोपण कर अवरोध को बाई पास कर दिया जाता ह।

हृदयाघात या दिल का दोरा (हार्ट अटक)— (Myocardial Infarction)

कारण— जब पहले से ही अस्वस्थ (वसा क जमाव द्वारा) कोरोनरी धमनी किसी कारण स रक्त क थक्क जमन पर पूण रूप से बन्द हो जाती ह तब हृदय की मासपेशी का वह भाग जो उक्त धमनी से रक्तप्राप्त करता ह हमेशा के लिए काम करना बन्द कर देता ह या उक्त भाग की मृत्यु हो जाती ह। (Necrosis) इस अवस्था का हृदयघात कहते ह। यह एक बहुत गम्भीर रोग ह इसस रोगी की तुरन्त मृत्यु भी हो सकती है। यह देखा गया ह कि हृदयघात क रोगियो मे करीब ४०-५० प्रतिशत रोगी मृत हा जात ह। (Sudden Cardiae Death)

लक्षण— सीने मे तीव्र दर्द, असहनीय य भारीपन जलन, दबाव और बाये हाथ मे अधिकतर या दाय हाथ म जाता हो, २०-३० मिनट से ज्यादा देर तक रहता हो तथा नाइट्रेट की गोली जबान के नीचे रखने से भी ठीक नहीं होता हो। साथ मे बहुत पसीना आना, जी मिचलाना उल्टी होना, चक्कर, घबराहट, बचेनी भी हो सकता ह। कभी कभी बेहोश भी हो जाती ह या मर भी सकता ह।

निदान—

१— लक्षणो के आधार पर।

२— ई०सी०जी० द्वारा ८० प्रतिशत मे निदान सम्भव २० प्रतिशत मे सामान्य ई०सीजी०।

३— रक्त परीक्षण— हृदयाघात मे कुछ रसायन हृदय की मासपेशियो के मृत होने पर रक्त मे स्रावित हो जात हे जेसे की सी० पी० के०— एम०बी, एल० डी० एच० (CPK-MB-LDH) रक्त मे इसकी मात्रा अधिक हो जाती ह व परीक्षण स इसका पता लग जाता ह।

४— इकोकार्डियोग्राफी जाच द्वारा

५— थेलियम-२०१ जाच द्वारा।

६— टेक्निटियम-११ एम - पाइरोफास्फेट जाच द्वारा

उपचार— हृदयाघात के रोगी को जहा सम्भव हो अस्पताल मे कोरोनरी केयर इकाई मे भर्ती करवाना चाहिय व आक्सीजन शुरू करनी चाहिये।

दर्द निवारक— मोर्फिन (Morfin) 2-4 Intravenous

(Diluted) धीरे-धीरे देनी चाहिये। यह दो या तीन बार तक दे सकते है। जब तक दर्द मे आराम न हो। साथ वमन निरोधक औषधि भी देनी चाहिये।

नाइट्रेट— इंजेक्शन द्वारा या जबान के नीचे। नाइट्रोग्लिसरीन की गोलिया ० ३-० ६ एमजी हर तीन घण्टे मे।

बीटा ब्लोकिंग एजेन्ट— जैसे कि मेटोप्रोलोल या एटिनोलोल ५-१५ एमजी नस मे देनी चाहिये। तदुपरान्त गोली २५ ८०० एमजी प्रतिदिन देनी चाहिये। इसके साथ मे केल्सियम ब्लोकिंग एजेन्ट भी दे सकते है।

एस्प्रिन— यह तुरन्त देनी चाहिये। प्रत्येक रोगी को। १६०-३२५ एमजी तुरन्त व बाद मे प्रतिदिन इससे खून का थक्का बनने की प्रक्रिया कम हो जाती है।

हिपेरिन— १००००-१५००० यूनिट नस मे तुरन्त उसके बाद मे २-३ दिन तक यह भी खून का थक्का बनने की प्रक्रिया कम करता है।

थ्रोम्बोलिसिस (Thrombolysis)- अधिकतर रोगियो मे स्ट्रेप्टोकाइनेज (१५ मिलियन) या यूरोकाइनेज (Urokinase) (१५ मिलियन यूनिट) तुरन्त देना चाहिये। इससे जमा हुआ खून का थक्का गलने लगता है व रक्त सचरण बढने लगता है।

प्राथमिक बैलून एंजियोप्लास्टी— कुछ रोगियो मे बैलून एंजियोग्राफी अगर सभव हो तो करवानी चाहिये। इसकी सफलता दर ६० प्रतिशत से ६५ प्रतिशत तक होती है।

बाई-पास सर्जरी— जिन रोगियो को उपरोक्त चिकित्सा से आराम नहीं मिलता या रम लायक नहीं होते ह उनमे बाई-पास सर्जरी से काफी आराम मिलता है, किन्तु तात्कालिक बाई-पास सर्जरी मे मृत्युदर ५-१० प्रतिशत तक हो सकती है।

जनरल— पूर्ण विश्राम, नींद की दवाईया, हल्का भोजन, कब्ज नहीं होने की औषधि आदि देना चाहिये। मानसिक तनाव नहीं होने की दवाई जैसे एल्प्राजोलाम जरूर देनी चाहिये।

आमवात हृदय रोग
(Rheumatic Heart Disease)-

इस रोग मे हृदय के वाल्व मुख्य रूप से माइट्रल व एओर्टिक सक्रमित होने की वजह से या तो सिकुड जाते ह या लीक करने लग जाते हे। भारत मे यह देखा जाता हे कि हृदय के दायी ओर का वाल्व जिसे Tricuspid valve (ट्राइकस्पिड वाल्व) कहते हे भी एक तिहाई रोगियो मे खराब हो जाते ह।

कारण— आमवात हृदय रोग एक्युट रियूमेटिक फीवर का लेट केम्पलीकेशन हे। आमवात बुखार अधिकतर ५ से १५ वर्ष के बच्चो मे होता है आमवात बुखार होने के १० १५ वर्ष बाद हृदय के वाल्वो मे विकृति होना शुरु हो जाती ह व यह विकृतिया समय के साथ-साथ धीरे-धीरे बढती जाती हे।

आमवात बुखार (Aute Rheumatic fever) स्ट्रेप्टीकोक्कल विरीडेन्स (Streptococcal Viridens) नामक विषाणु (Bacteria) द्वारा सक्रमण से होता ह। यह विषाणु बच्चो मे गले मे सक्रमण करता ह जिससे स्ट्रेप्टोकाकल फेरिन्जाइटिस (Streptococcal Pharyngitis) कहते हे। गले के सक्रमण के करीब २ हफ्ते बाद रोगी के शरीर मे एन्टी-स्ट्रेप्टोकोकल एण्टीबोडी (Antibody) द्वारा शरीर के कई हिस्सो मे जसे कि परो के जोड, त्वचा, मस्तिष्क आदि मे Inflammation हो जाता हे और रोगी आमवात् बुखार से ग्रसित हो जाता हे। हृदय के आमवात बुखार से ग्रसित होने के पश्चात् धीरे-धीरे हृदय के वाल्व खराब होने लगते हे। व रोगी को आमवात हृदय रोग हो जाता ह।

प्रकार—

1- **Mitral stenosis/Regugitation**
(माइट्रल वाल्व का सिकुड जाना ओर लीक करना)

2- **Aortic stenosis/Regurgitation**
(एओर्टिक वाल्व का सिकुड जाना आर लीक करना)

3- **Tricustpid stenosis &/or Regurgitation**
(ट्राइकास्पिड वाल्व का सिकुडना या लीक करना)

4- **Pulmonary stenosis / Regurgitation)**
(पाल्मोनरी वाल्व का सिकुडना या लीक करना)

5- **Combination of any**

लक्षण—

मुख्य— सास फूलना, धडकन का बढ जाना, सीन म दर्द, थकान।

लक्षणो की गम्भीरता वास्तव मे खरावी की अवस्था व काल पर निर्भर करती हे। साधारणतया ज्यादा खराव वाल्व होने पर लक्षण भी ज्यादा होते हे।

निदान—

१ लक्षणो व रोगी के शारीरिक परीक्षणो के आधार पर।

२ ई० सी० जी० व एक्स-रे द्वारा

३ २-डी इकोकार्डियोग्राफी द्वारा इस जाच द्वारा हृदय के वाल्वो की खरावी पूर्ण रूप से पता लग जाती हे।

४ कार्डियल केथ एव एन्जियोग्राफी द्वारा।

५ रक्त परीक्षण व गले का स्राव कल्चर द्वारा

उपचार—

(ए) **Acute Rheumetic fever** (आमवात वुखार)—

(१) प्राइमरी प्रिवेन्शन— अगर वच्चे के जव एक्यूट फेरीञ्जाइटिस हो तो उसका पूर्ण उपचार कराना चाहिये। पेनिसिलिन का इजेक्शन १० दिन तक लगाना चाहिये या इरिथ्रोमासिन २५० एमजी हर ६-१२ घण्टे से दस दिन तक देनी चाहिये।

(२) सेकेन्डरी प्रिवेन्शन— अगर रोगी को आमवात का वुखार का अटेक हो चुका हो या आमवात हृदय रोग हे तो उस अवस्था मे पेनिड्योर ६ या १२ लाख यूनिट्स हर तीन हफ्ते वाद मे मासपेशियो मे टैस्ट करके लगाना चाहिये व ३५ वर्ष की आयु तक लगाना चाहिये। अगर पेनिसिलिन माफिक नहीं आये तो इरिथ्रोमासिन २५० एमजी दिन मे दो वार या सल्फाडाइजिन की गोली ५०० एमजी. दिन मे दो वार देनी चाहिये।

(वी) आमवात हृदय रोग (**Rheumatic Heart Diaese**) ओषधि द्वारा— रोग की अवस्था अनुसार डिजोक्सिन की गोली ० २५ एमजी प्रतिदिन, **QlsekmM (Frusemide)** २०-८० एमजी प्रतिदिन, पोटेशियम सिरप २-२ चम्मच दिन मे २-३ वार, आइरन की गोली-प्रतिदिन व अन्य दवाये जेसे आइसोप्टीन, निफेडिपिन, इनालेप्रिल रोगी की जरूरत के अनुसार यदि आवश्यक हो तो देनी चाहिये।

वाल्वोटोमी— सिकुडे हुए वाल्व को या तो वेलून से या शल्य चिकित्सा द्वारा खोलना चाहिये।

वाल्व का रिपेयर या वदलना— अगर वाल्व अत्यधिक विकृत हो गया हो तो उसको मेटेलिक या टिशु वाल्व द्वारा वदल दिया जाना चाहिये। अगर रिपेयर के लायक हो तो ओपन हार्ट सर्जरी करके रिपेयर करवाना चाहिये।

जन्मजात हृदय रोग (Congenital Heart Disease)-

जन्म से हृदय में विकृति होनें पर इसे जन्मजात हृदय रोग कहते हे यह रोग मुख्यत दो प्रकार का होता हे।

१— एसायानोटिक (**Acyanotic**)

२— सायानोटिक (**Cyanotic**)

एसायानोटिक रोगो मे रोगी नीला नहीं पडता है इसके मुख्य रोग है— एट्रियल सेप्टल डिफेक्ट (**ASD**), वेन्ट्रिक्यूलर सेप्टल डिफेक्ट (**VSD**), पेटेन्ट डक्टस आर्टिरियोसिस (**PDA**), वाल्व का सिकुडना या लीक करना, क्वार्क्टेशन ऑफ एओरटा इत्यादि।

साईनोटिक हृदय रोगो मे रोगी नीला पड जाता हे क्योकि इसमे शुद्ध रक्त मे अशुद्ध अपरिष्कृत रक्त मिल जाता हे। इसके मुख्य प्रकार हे— टेट्रालोजी आफ फेलो, ट्रासपोजिशन आफ ग्रेट आर्टरीज, ट्रक्स आर्टिरियोसिस, ट्राईकरिपंड एट्रेजिया इत्यादि। ये सभी रोग अधिक गम्भीर होते हे व अल्पकाल मे अधिकतर वच्चो की मृत्यु हो जाती हे।

जन्मजात हृदय रोगो का उपचार इसके प्रकार पर निर्भर करता हे व अधिकतर रोगो को शल्य चिकित्सा (या तो शिशु मे या युवावस्था मे) द्वारा ही सभव होता है। आजकल शिशु हृदय शल्य चिकित्सा वहुत माडर्न व परिष्कृत हो जाने से अधिकतर रोगो का उपचार सभव हे। कुछ विकृतिया शल्य चिकित्सा के वगेर भी डिस्क या वेलून या स्प्रिंग द्वारा भी आजकल सभव हो गयी है। जिसका की भविष्य मे ओर प्रचलन होने की सभावना है। जिससे की शल्य चिकित्सा के खतरे वहुत कम हो जाते हे किन्तु ये विधिया अधिक खर्चीली है।

हृच्छूल विभिन्न संहिताओं में

डा० आलोक शर्मा
बी०एससी० (आगरा वि०), बी०ए०एम०एस० (कानुपर वि०),
एम०डी० (आयुर्वेद मेडिसन) राजस्थान विश्वविद्यालय
वरिष्ठ चिकित्साधिकारी—
दिल्ली नगर निगम आयुर्वेदिक ओषधालय,
रघुवरपुरा, दिल्ली—३१

आप मेरठ (उ० प्र०) के मूल निवासी है। आप योग्य विद्वान नवयुवक है। आपने हृदय रोगो पर ही अनुसन्धान कार्य किया है।

हृच्छूल निरुक्ति—

वाचस्पत्यम् के अनुसार हृच्छूल—

"तस्य शूलस्य देशमाह हृदादिषु अत हृच्छूलस्य प्रथगवि" हे तो शब्दकपुष्पम् के अनुसार हृच्छूल वैद्यकशास्त्र मे वर्णित 'शूलरोग' का भेद है जोकि हृदय मे होता हे। हृच्छूल देशभेद अर्थात् स्थान भेद से प्रथक से वर्णित हे। हृच्छूल विशिष्ट सज्ञा के रूप मे सर्वप्रथम महर्षि सुश्रुत ने प्रतिपादित किया था। आचार्य चरक व वाग्भट्ट ने शूल को गुल्म के उपद्रव स्वरूप ही वर्णन किया हे, जबकि महर्षि सुश्रुत ने शूल का स्वतंत्र रूप से वर्णन किया है।

चरक संहिता में हृच्छूल—

आचार्य चरक ने वातादि हृद्रोग के लक्षण के रूप मे तो अनेक हृदय की वेदनाये वर्णित की ह, साथ ही त्रिमर्मीय चेकित्साध्याय मे हृद्रोगो की चिकित्सा का भी वर्णन करने के उपरान्त हृच्छूल चिकित्सा का विशेप वर्णन किया हे।

भोजन के पच जाने पर जो हृच्छूल अधिक होता हे उसमे स्नेह विरेचन भोजन के परिपाक काल मे शूल अधिक हो तो 'फल विरेचन' तथा भोजन के इन तीनो ही कालो मे शूल अधिक हो तो तीक्ष्ण मूल विरेचन प्रयुक्त करना चाहिये। चरक टीकाकार चक्रपाणि के अनुसार हृच्छूल का कालानुसार यह विभाजन सान्निपातिक हृद्रोगो मे हृच्छूल होने के अनुसार किया गया हे। भोजन के तुरन्त बाद मे होने वाला शूल श्लैष्मिक, भोजन के जीर्ण होने के बाद 'वातिक' तथा भोजन के पाचन होने की अवस्था मे होने वाला शूल पैत्तिक होता है।

सुश्रुत संहिता मे हृच्छूल—

महर्षि सुश्रुत ने वातिक हृद्रोगो मे अनेक प्रकार के हृदय मे होने वाले शूल वताये हे। इसके साथ ही सुश्रुत ने शूल का वर्णन गुल्म के उपद्रव के रूप मे पृथक् किया ह। अत शूल प्रकरण मे हृच्छूल का पृथक् व स्वतत्र वर्णन भी मिलता है। सुश्रुत टीकाकार डल्हण के अनुसार हृच्छूल शूल वर्णन व सम्प्राप्ति के कारण हृद्रोग से भिन्न हे। इसमे चिकित्सा हृद्रोग के अनुसार करनी चाहिये।

अष्टांग सग्रह मे हृच्छूल—

हृच्छूल का वर्णन पृथक से तो उपलब्ध नहीं होता ह। हृद्रोग मे होने वाले अन्य लक्षणो के साथ-साथ अनेक प्रकार के शूल वताये हे। टीकाकार अरुणदत्त ने वताया ह कि अन्य हृद्रोगो की अपेक्षा वातिक हृद्रोग मे हृच्छूल विशेप हुआ करता है।

अष्टाग हृदय मे हृच्छूल—

गुल्मरोग के निदानो से ही 'हृद्रोग' के निदान वताये गये है। अष्टाग सग्रह की ही भाति वातिक हृद्रोग मे अनेक प्रकार के शूल वताये ह यथा तोदवत्, स्फुटनवत, भेदनवत्।

भावप्रकाश मे हृच्छूल—

भावप्रकाश उत्तरार्द्ध मध्य खण्ड हृद्रोगाधिकार ३८ मे वातिक हृद्रोग मे अनेक प्रकार की वेदनाओं का वर्णन भावमिश्र ने किया हे। याम्य पीडा मे हृदय विस्तारित होता हुआ तुदयत् पीडा मे सूची चुभने के समान निर्मथ्यते मे मन्थनवत् दीर्यते मे दो करवल को पृथक करने के समान स्फोटयत मे अस्रेणेव तथा पाटयते मे हथोडे की चोट के समान शूल होता हे।

भावमिश्र ने शूल रोगाधिकार मे वताया ह कि आमशूल यदि कफ से सम्बन्धित होता हे तो हृदय मे शूल होता है। भावमिश्र ने स्वतत्र रूप से हृच्छूल सुश्रुत की भाति शूलरोगाधिकर मे किया हे।

माधवनिदान में हृच्छूल—

"वातिक हृद्रोग के अन्तर्गत अनेक प्रकार के शूलो का वर्णन किया हे। पर स्वतत्र रूप से हृच्छूल" का वर्णन नही मिलता हे। वातिक शूल का प्रभाव उदर के पाचो खण्डो के अनुसार हृदय, पार्श्व, पृष्ठ, त्रिक या वस्ति प्रदेश मे भी होता है। इन्हीं अगो मे मुख्य रूप से शूल होने पर विशेष रोग भी हो जाते हे।

शारंगधर संहिता मे हृच्छूल—

इस सहिता मे कोई स्पष्ट वर्णन नहीं मिलता ह।

काश्यप संहिता मे हृच्छूल—

अन्तर्वलीयचिकित्साध्याय मे वताया हे कि वातिक हृच्छूल मे मातुलुग रस के साथ सेधव पत्तिक हृच्छूल मे प्रियगु, पिप्पली मोथा वदरचूर्ण आदि तथा कफज हृच्छूल मे पिप्पली चूर्ण का कल्क, मातुलुग का रस आदि क साथ लेने का विधान है। काश्यप सहिता के अतिरिक्त इस तरह का दोषानुसार हृच्छूल वर्णन अन्यत्र प्राप्त नहीं होता ह।

भेल सहिता मे हृच्छूल—

भेल सहिता मे हृच्छूल का वर्णन स्वतत्र रूप से नहीं मिलता है। हृदय मे होन वाले शूलो का वर्णन केवल वातिक हृद्रोग के अन्तगत ही किया हे,

चक्रदत्त में हृच्छूल—

चक्रदत्त मे स्वतत्र रूप से तो हृच्छूल वणन नहीं ह पर हृच्छूल नाशक अनेक योगो का वर्णन इसमे मिलता हे।

हृदय में आधुनिक निदान प्रणाली शेषांश पृष्ठ 287 का

पर Contrast medium inject करते है और उनको एक से अधिक कोण से देखते है ओर उनका एक्स रे चित्र लेते ह। इसके द्वारा हृदय ओर महाधमनियो के सरचना की जानकारी मिलती है। हृदय एव उससे सम्बन्धित विभिन्न रक्तवाहिनियो मे किसी प्रकार के अवरोध या रुकावट को इस विधि द्वारा ज्ञात किया जा सकता हे।

१३— कोरोनरी आरटीरियोग्राफी— **Right heart catheterization** के लिए स्थानिक सज्ञाहरण द्रव्यो के प्रयोग के द्वारा हाथ या पैर की सिराओ से केथेटर को प्रवेश कराया जाता है। **Left heart catheterization** के लिए धमनियो का प्रयोग किया जाता है तथा यह **Retrograde cannulation** होता है।

इस प्रकार उपरोक्त विभिन्न उपायो से हृद्रोग का सुनिश्चित निदान कर रोगी की चिकित्सा एव प्राण रक्षा की जा सकती है।

Reference-

1- **Medicine for students- A F. Golalla, S A Golwalla**
2- **Davidson's Principal and Practice of Medicine- John Madeod**
3- **Hutchison's Clinical Methods- Donald Hunter, R R Bomford**

मैं आपका फेफड़ा हूँ

वानी भटनागर, पत्रकार
जयपुर की राजस्थान पत्रिका मे पत्रकार

मे आपका दाया फेफडा हूँ। म अपने विषय मे *जानकारी देने का अतिरिक्त अधिकार मानता हूँ, क्योकि* म अपने जोडीदार यानी वाए फेफडे से थोडा सा वडा हूँ। मेर तीन लोव्स ओर प्रभाग हे, जवकि वाए के पास दो ही ह।

आप सोचते होगे कि मे एक खोखला गुलावी रग का गुव्वारेनुमा अग हूँ, जो छाती मे लटका हुआ ह, किन्तु म खोखला नही स्पज जसा हूँ। म गुलावी रग का उस समय था जव आप वहुत छोटे थे। अव हजारो सिगरेटो के धुए आर शहर के प्रदूषित वातावरण के कारण मे स्लटी ग्रे रग का हो गया हूँ।

हर व्यक्ति के सीने म तीन अलग अलग वद प्रकोष्ठ हाते ह, जिनमे से दो, हम दोनो फेफडो के लिए आर हृदय के लिए ह। मेरा वजन लगभग २ पाउन्ड ह। मेरे अन्दर मासपेशिया नही ह। मेरे प्रकोष्ठ मे थोडा सा निवात ह, अत जव आप सॉस भरते हे, तो मे फूल जाता हूँ आर जव सॉस वाहर निकलती ह, तो म पिचक जाता हूँ। यह निरन्तर चलते रहने वाली प्रक्रिया ह। इस प्रक्रिया मे निर्वात की महती भूमिका हे। यदि किसी दुर्घटना मे सीने की भित्ति क्षतिग्रस्त हो जाए आर निवात समाप्त हो जाए, तो मेरी काय प्रक्रिया ही वद हो जाएगी।

मेरी सरचना पर एक नजर डाले। मरी श्वास नली नीच आकर दो ब्रोकियल श्वास नलिकाओ मे विभक्त हो जाती ह। ये दानो नलिकाए दोनो फेफडो मे आकर मिलती ह। इसके पश्चात् एक पेड की तरह यह अनेक शाखाओ म वट जाती ह। पहले एक मुख्य शाखा 'ब्रोकाई' आर इसके वाद अनेक 'ब्रोकाइल्स', शाखाओ मे विभाजित हो जाती ह। 'ब्रोकाइल्स' का व्यास एक इच के सोवे हिस्से के वरावर होता ह। इन सभी शाखाओ स वायु का आवागमन हाता ह। *मेरा वास्तविक काय अगूर के गुच्छा की तरह सूक्ष्म काया* एलवेयली मे होता ह। मेरे अदर य एलवयली लगभग दो करोड पचास लाख की सख्या म हाती ह।

प्रत्येक वायुकोष रक्त कोशिकाआ के जाल स ढकी होती ह। हृदय के द्वारा भेजा गया रक्त काशिकाआ क अन्तिम सिरे तक पहुचता ह लाल रक्त कणिका एकल फाइल माग (सिगल फाइल पसज) स लगभग १ सकन्ड के लिए गुजरती ह। इस समय एक महत्वपूण कार्य हाता ह। रक्त कोशिका भित्ति की गोसाइमर झिल्ली क माध्यम से कोशिकाये उनमे विद्यमान कावन डाइआक्साइड की समस्त मात्रा का वायु कोषो म उत्सजित कर दती ह। उसी समय मेरी कोशिकाय दूसरी आर जा रही आक्सीजन का अवशोषित कर लेती ह। इस प्रकार काशिका क एक सिर स अस्वच्छ रक्त प्रवाहित होता ह ओर दूसरे सिर र' लाल (स्वच्छ)।

मेरी स्वचालित श्वसन प्रक्रिया का नियत्रण मडूला आव्लागेटा में निहित ह। मेडूला आव्लागटा वह स्थान ह जहां मेरुरज्जु (स्पाइनल काड) मस्तिष्क स मिलती ह। यह एक आश्चर्यजनक रूप से सवदनशील रासायनिक ससूचक ह। यहा काय करने वाली मासपशिया तजी स आक्सीजन का दहन करती ह आर अनुपयागी कावन डाइआक्साइड को वाहर निकालती ह। जसे ही यह गस अवशापित हाती ह, रक्त हल्का सा अम्लीय हा जाता ह श्वसन नियामक केन्द्र (मेडुलाआव्लागेटा) तुरत ही इस अम्लता का पता लगा लेता ह आर मुझे तेजी से काय करन का निर्देश दता ह।

जव आप व्यायाम करत ह ता रक्त म अम्ल का स्तर वढता जाता ह, तो मुझे गहरी आर तज सास लन का निर्देश

दिया जाता है।

सामान्य तोर पर वैठे हुए व्यक्ति को एक मिनट मे १६ क्वार्टज वायु की आवश्यकता होती है, जवकि चलते हुए २४ क्वार्टज, दौडते हुए ५० क्वार्टज वायु की आवश्यकता होती हे। सोते समय मात्र आठ क्वार्टज वायु की आवश्यकता होती हे। वायु की इस मात्रा की आपूर्ति के लिए व्यक्ति को एक मिनट मे १६ वार सास लेने की आवश्यकता होती है, इसे प्रत्येक वार श्वसन द्वारा ली गई वायु की एक पिन्ट (द्रव नापने की इकाई) भी कहा जा सकता हे। इस मात्रा से मे थोडा फूल जाता हूँ यद्यपि मे इससे आठ गुना अधिक मात्रा मे वायु रख सकता हूँ। मुझे श्वसन के लिए नम और हल्की वायु प्रिय है। वायु को नम वनाने के लिए अश्रु ग्रन्थि और नमी का उत्पादन करने वाली अन्य ग्रन्थिया एक निश्चित मात्रा मे द्रव का उत्पादन करती है।

ऐसे पदार्थो की सूची अनन्त है, जो मेरे लिए समस्या खडी कर देते है। प्रतिदिन श्वास के साथ विभिन्न प्रकार के जीवाणु एव विषाणु शरीर मे प्रवेश कर जाते है। इनमे से अधिकतर को नाक एव गले में उपस्थित लाइसोजाइम नष्ट कर देता है, फिर भी जो मुझ तक पहुच जाते हे उन्हे फेगोसाइट नष्ट कर देता हे। दूपित वायु मेरी सवसे वडी शत्रु है। मै एक कोमल अग हूँ, फिर भी सल्फर डाई आक्साइड, वेन्जोपायरीन ओर नाइट्रोजन डाइआक्साइड जैसे पदार्थो के प्रवेश के वावजूद अपनी कार्य प्रणाली को सुचारु रूप से जारी रखता हूँ।

वायु को स्वच्छ करने की प्रक्रिया नाक से आरम्भ होती हे। नाक के रोम धूल के वडे कणो को रोक लेते हे। नाक, गले और ब्रोकियल मार्ग मे उपस्थित चिपचिपा श्लेष्मा छोटे कणो को आगे जाने से रोकता है। वायु को स्वस्थ करने का वास्तविक कार्य सिलिया सम्पन्न करते हे। सिलिया अति सूक्ष्म वाल होते हे। जो श्वास नली मे स्थिति होते हे। ये एक सेकन्ड म लगभग १२ वार की आवृति रा आग पीछे लहराते रहते ह। ऊपर की ओर इनका उछाल श्लष्मा का गले तक ले जाता हे। जहा से इसे निगला जा सकता ह। सिगरेट का धुआ या प्रदूपित वायु सिलिया की क्रिया प्रणाली को वन्द कर देती हे या अस्थायी रूप से इसे लकवाग्रस्त कर देती हे। यदि प्रदूपित वायु निरन्तर शरीर में प्रवेश करती रहे तो सिलिया मृत हो जाते हे आर भविष्य में कभी पेदा नहीं होते।

यदि कोई व्यक्ति ३० साल लगातार धूम्रपान करता रहे तो वायु मार्ग मे स्थित अधिकतर सिलिया मृत हो जावेगे ओर उसके वायु मार्ग मे स्थिति झिल्ली, जो श्लेष्मा का स्राव करती हे, वह अपने सामान्य आकार से तीन गुनी मोटी हो जाती हे। इसके परिणाम स्वरूप वहुत अधिक मात्रा मे कफ वायु कोपो मे प्रवेश करता हे, जिससे श्वसन मार्ग के पूरी तरह अवरुद्ध होने का खतरा वना रहता है। लगातार धूम्रपान कर रहे व्यक्ति का कफ जिसमे धुए के कण मिलते है, भी सिलिया की भूमिका अदा करने लगते हे, वहुत अधिक मात्रा मे कफ होने के वाद वचाव का यही तरीका शेष रहता है। ऐसे व्यक्ति के लिए कफ नाशक दवाओ का लगातार सेवन करना जरूरी होता हे।

निरन्तर धूम्रपान करने वाले व्यक्ति के वायुमार्ग को धुए के कण अवरुद्ध कर देते है, साथ ही मेरे ऊतको को भी जला देते हे वायुकोपो की भगुर भित्तिया अपनी प्रत्यास्थता खोने लगती है। जव व्यक्ति सास छोडता है तव यह सकुचित नहीं होती। इसलिए स्थिति यह होती हे कि व्यक्ति सास तो लेता है, लेकिन कार्वनडाइ आक्साइड की सम्पूर्ण मात्रा को वाहर नहीं निकाल पाता। इस प्रकार वायु कोप आक्सीजन की समुचित मात्रा को रक्त तक नहीं पहुचा पात। इसका निश्चित परिणाम एम्फीसेमा नामक खतरनाक रोग, जिससे ग्रस्त व्यक्ति को हर सास पर अपनी जीवन रक्षा के लिए सघर्ष करना पडता हे।

फुफ्फुसों की रचना एवं कार्य

वैद्य जलेश्वर प्रसाद, आयुर्वेद रत्न
ग्राम— वहदलिया, पोस्ट— डोडा (बिलासपुर) मध्यप्रदेश

फुफ्फुस रचना—

१— दोनो फुफ्फुस हमारे शरीर मे वक्षगुहा मे हृदयके दक्षिण व वाम पार्श्व मे स्थित रहते है। फेफडे उरोस्थित एव पसलिया सेवनी वक्षगुहा में सुरक्षित रहता हे। दाये फुफ्फुस का आकार बाये फुफ्फुस की अपेक्षा कुछ अधिक होता हे। आकार की दृष्टि से दोनो फुफ्फुस शक्वाकार और त्रिपृष्ठिय होता है। इसमे से प्रत्येक का ऊपर का नोकीला भाग ग्रीवा की ओर है, इसे उसका शीर्ष कहा जाता हे और नीचे का चौडा भाग महाप्राचीरा (Dipterahum) पर रख रहता हे, यह भाग आधार या तल (Base) कहलाता हे।

२— दाये फेफडे का भार बाये फेफड़े से ५ प्रतिशत अधिक होता हे दाया फुफ्फुस तीन खण्डो मे बटा रहता है, (१) ऊपरी फुफ्फुस खण्ड (Upper lunghob) (२) मध्य फुफ्फुस खण्ड (Middle Lung Lobe) (३) निचले फुफ्फुस खण्ड (Lower Lung Lobe) ओर बाये फुफ्फुस मे दो ही खण्ड होते है— ऊपरी ओर निचले फुपफुस खण्ड। ओसतन सामान्य और स्वस्थ वयस्क पुरुष के फेफडो का भार ११०० ग्राम और महिला का ६०० ग्राम होता है। वक्ष की दीवार से सटा हुआ फुफ्फुसो का भाग उभरा हुआ तथा हृदय की ओर वाला भाग कुछ गहरा होता हे। फुफ्फुसो के पृष्ठीय क्षेत्रफल ७० से ८० वर्ग मीटर तक होता हे। इनके वर्ण म मनुष्य की अवस्थानुसार रग मे अन्तर पाया जाता हे। गर्भस्थ शिशु मे फेफडो का रग गहरा लाल होता हे, नवजात शिशु के फेफडे का रग गुलाबी होता है। प्रौढ मनुष्य का फेफडे का रग कुछ नीलाहट लिये भूरा सा होता है। फेफडे ऊपर से कुछ चित्तिया, चिकने और चमकीले होते है। फेफड़े को स्पर्श करने से मृदु, लचीला प्रतीत होते ह। दबाने से स्पज जैसे रहता है।

३— फुफ्फुस पर एक पतली (Fibrous Tissue) झिल्ली भी आवृत रहती है। यह झिल्ली सौत्रिक तन्तु से निर्मित स्नेहिक झिल्ली (Serous Menlrane) है, इसे फुपफुसावरण (Pleura) कहा जाता है। फुपफुसावरण दो स्तरो का बना होता है जिसकी एक तह फुफ्फुस के पृष्ठ से चिपकी रहती है। यह आशयिक स्तर (Visceral Layer) कहलाता है। दूसरी तह वक्ष अन्त भित्ति (Chestwall) से सश्लिष्ट होता है, इसे परिसरीय स्तर (Parietal Layes) कहते है। इन दोनो तहो के बीच मे एक चिकना द्रव (Pleural Fluid) पदार्थ फुफ्फुसावरण द्रव भरा रहता है।

फुफ्फुस की आंतरिक रचना—

४ दोनो फुफ्फुस श्वास नली (Trachhqa) की दो शाखाओ जिन्हे श्वसनी या फुफ्फुसनाल (Broncpus) कहते है। से जुडा रहता है। फुफ्फुसो की नलिया गहरी होती है, परन्तु बाये की इतनी अधिक गहरी नहीं होती दाया फुफ्फुस नाल से दाये फेफडे और बाया फुफ्फुस नाल से बाये फेफडे से जुडा रहता है। फेफडे के अन्दर जाकर श्वसनी (Bronchi) अनेक छोटी-छोटी नलियो मे बेट जाते है। जिन्हे श्वसनिकाये (Broncheoly) कहते हैं। प्रत्येक श्वसनिकाये और आगे जाकर अन्त मे अगूर के गुच्छो की तरह परन्तु अन्दर से खोखले वायुकोपो (Alvgol) की थैलियो का गुच्छा होता है। इन फेफडो की सबसे छोटी इकाई कारे वायुकोष Alveolus) कहते है। इस प्रकार फुफ्फुस श्वसनिकाये तथा वायुकोप, धमनी, कोशिकाए एव शिरा और लसीका वाहनियो से मिलकर बना होता हे।
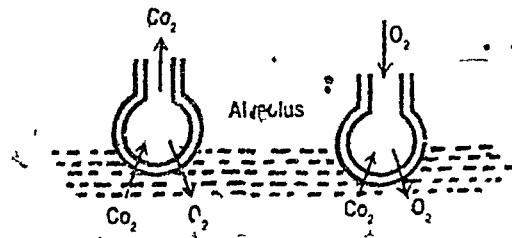
हृदय के दाहिने निलय से निकलने वाली धमनी फेफडे मे अशुद्ध रक्त पहुचाती है। इसे फुफ्फुसीय धमनी **(Pilmonary Artory)** कहते है। जो आगे शाखाओ मे वटकर केशिकाए **(Capillarias)** वन जाती है और फिर केशिकाये मोटी होकर शिरा का रूप ले लेती है। जो हृदय के वाये अलिद मे शुद्ध रक्त पहुचाती है, इसे फुफ्फुसीय शिरा कहते हे।

फेफडे के वायुकोषा की सख्या मे जन्म से लेकर आठ वर्ष तक वृद्धि होती ह, इसक बाद वायु कोषो की सख्या आजीवन स्थिर बनी रहती हे। एक वयस्क व्यक्ति के फेफडा मे कुल मिलाकर लगभग तीस करोड वायुकोष होते है। एक वयस्क स्वस्थ मनुष्य १६ से २० वार एक मिनट मे श्वसन (सास अन्दर लेना-सास वाहर करना) लेता है।
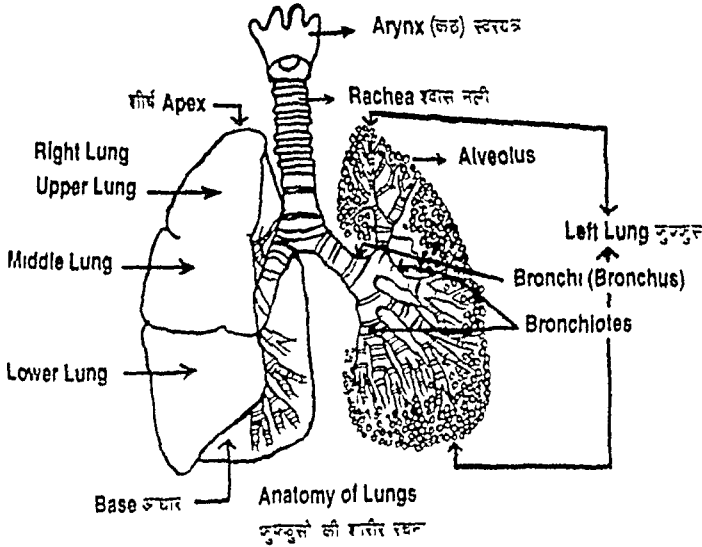
१ नवजात शिशु १ मिनट मे ४० से ४४ वार श्वसन करता ह।

२ १ माह से १२ माह उम्र के शिशु एक मिनट मे ३० वार श्वसन करता हे।

३ २ वर्ष से ५ वर्ष उम्र के वालक १ मिनट मे २० से २४ वार श्वसन करते हे।

४ वयस्क स्वस्थ व्यक्ति १ मिनट मे १६ से २० वार श्वसन करता है।

मनुष्य को गहरी सास लेना अच्छी वात ह, इससे फुफ्फुसो के कोने कोने भली प्रकार खुल जाते ह। वायु खूव प्रवेश कर जाती ह। शारीरिक श्रमो से सास सख्या वढ जाती हे। ज्वर मे श्वास की सख्या वढ जाती ह। रोगावस्था मे श्वास सख्या अल्प हो जाती ह।

फुफ्फुसो के कार्य—

फेफडे के निम्नलिखित कार्य ह—

१— हमारे फेफडे का सवसे प्रमुख कार्य वायुमण्डल से शरीर की कोशिकाओ मे होने वाली चयापचय **(Metabdirum)** की क्रियाओ के लिए आक्सीजन (O_2) प्राप्त करना हे।

२— आर वदले मे इन कोशिकाओ मे पापाहार क चयापचय के कारण पदा होने वाली (CO_2) (कावनडाइ आक्साइड) का शरीर से वाहर निकालना ह।

३— कुछ पदार्थ जेसे अल्कोहल, अमानिया एव जलवाष्प इत्यादि शरीर से वाहर निकाल दिये जात ह।

४— फेफडे के द्वारा रक्त कुछ दवाइया व गसेज सोख लेता हे जसे— अमाईवा नाइट्रेट, विक्स, ईथर इत्यादि।

५— यह शरीर का तापमान स्थिर रखन मे मदद करता ह। अगर शरीर का तापमान वढ जाता ह तो श्वसन क दर भी वढ जाती ह आर शरीर से निकलन वाली हवा गरम निकलती ह।

६— जव श्वास तेज चलती ह तो हृदय भी तजी स धडकने लगता हे। अत यह रक्त के दाडने म मदद करता ह।

७— अगर कोइ वाहरी वस्तु सास क द्वारा अन्दर चली जाती ह तो खासी या छींक के द्वारा वाहर निकाल दी जाती हे।

८— इसके द्वारा ही हम किसी भी वस्तु का सूघत ह।

श्वसन प्रक्रिया

वैद्य हरीशकर त्रिपाठी शास्त्री
१२८/८४ एच—१ ब्लाक किदवई नगर कानपुर

मानव शरीर ईश्वर की बडी महत्वपूर्ण तथा विचित्र रचना है। मनुष्य शरीर को शास्त्रो मे पाच भागो मे बाटा गया हे। १— सिर, २— गला, ३— धड, ४— ऊर्ध्व शाखाये और ५— निम्न शाखाये। प्रत्येक भाग मे अनेको अग है। शरीर के बहुत से अग आपस मे मिलकर एकसा काम करते है। जिसको सस्थान अथवा सिस्टम कहते है। हमारे शरीर मे निम्नलिखित सस्थान हे।

१— अस्थि सस्थान— यह शरीर के लिए ढाचा या ककाल बनाता है इसी से शरीर दृढ रहता हे।

२— मासपेशी सस्थान— शरीर को गति एव आकार रूप देता है।

३— रक्तवहन सस्थान— जीवन के लिए आवश्यक रक्त का सचार करता हे।

४— सन्धि सस्थान— शरीर को गतिशील करता है तथा अन्य कार्यो को करने की क्षमता देता है।

५— पाचक सस्थान— खाये गये अन्न का परिपाक करके रस आदि बनाकर शरीर का पोषण करता है।

६— श्वासोच्छ्वास सस्थान— इससे श्वासोच्छ्वास क्रिया का सचालन होता है।

७— मलवाहन सस्थान— शरीर से त्याज्य दूषित पदार्थ को मल मूत्रादि के द्वारा शरीर से बाहर करता है।

८— वातनाडी सस्थान— इसके द्वारा सर्वत्र अगो का सचालन एव सोच विचार का कार्य होता है।

९— प्रजनन सस्थान— सन्तानोत्पत्ति का कार्य करता हे जिससे मानव वश चलता है।

श्वसन सस्थान— नासिका से फेफडा तक वायु के आवागमन मार्ग को श्वास मार्ग कहते है। वायु नलियॉ सूक्ष्म एव सूक्ष्मतर होकर फेफडो मे फैली हुई है। मानव शरीर मे श्वास प्रश्वास का सर्वश्रेष्ठ साधन फुफ्फुस ही है। फुफ्फुस मुलायम स्पज की भाति छिद्र युक्त और हल्का नीलापन लिये हुये धूमैला रग का होता हे।

वक्ष मे दाई ओर तथा बाई ओर अर्थात् हृदय क दोनो ओर एक-एक फुफ्फुस होता है। यह मधुमक्खी क छत्तो की तरह असख्य कोष्ठो का बना होता हे, जिनम वायु नलिकाओ की सूक्ष्म शाखाओ से वायु आती रहती ह। वायु कोष्ठो के समूह का ही नाम फुफ्फुस हे। फुफ्फुस श्वास यत्र का एक महत्वपूर्ण अग है। प्रतिबार श्वास लेने क बाद वायु को फुफ्फुसो के भीतर भेजते है जिस क्रिया को श्वसन कहते हे और फिर इस वायु को दूषित होने पर बाहर निकाला जाता है जिसको उच्छ्वासन कहते ह। प्रश्वास और उच्छ्वास दोनो मिलकर श्वास कर्म कहलाते हैं।

श्वास लेने मे वायु नासिका और ग्रसिका से होकर श्वासनाल मे पहुचती है। श्वासनाल आगे जाकर दो शाखाओ मे विभक्त हो जाता ह। श्वासनाल की ये शाखाये फुफ्फुसो मे प्रवेश करने के बाद पुन अनेक शाखाओ मे बट जाती है। जिनको वायु नलिकाये कहते ह। इनके आर विभाजित होने पर बारीक वायु प्रणालिकाये इतनी बारीक ओर सूक्ष्म हो जाती हे कि केवल तान्तव ऊतक की बारीक नलिकाये रह जाती ह। फुफ्फुसो की रचना मे इनपर एक आवरण चढा रहता हे जिसको फुफ्फुसावरण या प्लूरा कहते है। इसके दो स्तर होते है एक स्तर फुफ्फुसो पर चिपका रहता है और दूसरा वक्ष का भीतर से आच्छादित किये हुय और वक्ष की भित्ति के सम्पक मे रहता ह। दानो स्तर फुफ्फुसो के ऊपर तथा नीचे ओर सामने आर पीछ की ओर जाकर मिल जाते है। इस प्रकार से यह आवरण फुफ्फुसा को चारो ओर से घेरे रहते है। साधारण दशाओ मे दोनो परत आपस मे मिलते रहते है उनके बीच मे स्थान नाम मात्र को होता है, किन्तु वक्ष मे किसी यन्त्र या आघात स छेद हो जाय तो इस स्थान मे तुरन्त वायु भर जाती ह। और फुम्फुस सिकुड जाता हे आर दोनो स्तरो के बीच

शेषाश पृष्ठ ३०३ पर

राजयक्ष्मा रोग - एक विवेचन

डा० राजीव सूद
एम०डी० आयु० स्कालर
काय चिकित्सा विभाग,
राष्ट्रीय आयुर्वेद सस्थान, जयपुर

डा० अजय कुमार शर्मा
एम०डी० आयु पी-एच०डी०
अध्यक्ष (प्रभारी)
काय चिकित्सा विभाग,
राष्ट्रीय आयुर्वेद सस्थान, जयपुर

शोष, क्षय, राजयक्ष्मा, तपेदिक, पलमनरी ट्यूबरकुलोसिस, काक्स डिसीज, थाइसिस ।

परिचय— राजयक्ष्मा रोग जिसे आयुर्वेद मे क्षय रोग से भी जाना जाताहै, प्राचीन काल से ही समाज मे फैलता आ रहा हे। फादर आफ मेडीसन, हिपोक्रेटस ने भी इसका उल्लेख किया है। हमारे देशमे लगभग १० लाख लोग प्रतिवर्ष इस रोग से मरते है। इसी तथ्य से इस रोग की घातकता का अन्दाज लगाया जा सकता हे।

कारण— आयुर्वेद मे इस रोग की उत्पत्ति के निम्न कारंण वताये गये है -

१	अत्यधिक साहस	२	वेगावरोध
३	क्षय	४	विषमाशन

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में इस रोग का प्रधान कारण यक्ष्मा दण्डाणु (Mycobacterium Tuberculosis) माना गया हे। यह आकृति का, रक्त वर्ग का, अगतिशील, एसिड फास्ट दण्डाणु है। सन् १८८२ मे रौवर्ट कौक ने इस जीवाणु की खोज की थी। यह जीवाणु वर्फ जमने के तापक्रम पर भी जीवित रहता है। इस पर किसी (Antiseptic) औषधि का भी प्रभाव नहीं होता । सूर्य की किरणो अथवा गर्म करने से यह जीवाणु मर जाता हे। इस जीवाणु का बाहरी आवरण वसा से बना होता है। इस कारण यह जीवाणु

१ एसिड फास्ट कहलाता हे।

२ फगोसाईटस (एक विशेष प्रकार के श्वेत रक्त कण के अन्दर पड़ा हुआ भी चिरकाल तक समाप्त नहीं होता।

३ औषधियो से शीघ्र प्रभावित नहीं होता ।

यह जीवाणु एक प्रकार के प्रोटीन से बना होता हे। जिसे ट्यूबरकुलिन कहते है। यही इसका विषैला पदार्थ होता है। इस जीवाणु मे Corbohydrate या Polysaccharide पदार्थ होता है। जिसके कारण इसके शरीर मे प्रविष्ट होने पर इसके आस-पास Polymorphs (एक विशेष प्रकार के श्वेत कण) अधिक मात्रा मे एकत्रित हो जाते है।

यह जीवाणु गाय के दूध मे भी पाया जाता है। इसे Mycobacerium Tuberculosis Bovis कहते हे। जिसके कारण राजयक्ष्मा रोग का सक्रमण गाय-भेसो आदि जानवरो से भी हो सकता हे।

सहायक कारण— अस्वच्छ वातावरण, दरिद्रता, कुपोषण तथा अनेक प्रकार के रोग जैसे मधुमेह, ब्रोकोन्यूमोनिया आदि जिनके कारण शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति कम हो जाती हे।

रोग के प्रसार (Mode of Infection)—

मानवीयर यक्ष्माणु का प्रवेश श्वास मार्ग से तथा गाय मे पाये जाने वाले यक्ष्माणु का मुख मार्ग से शरीर मे प्रवेश होता है। मानवीय यक्ष्माणु का प्रसार थूक के द्वारा (Droplet Infection) भी होता है। यह वायु के द्वारा श्वास मार्ग से फुफ्फुस मे पहुचकर विकृति उत्पन्न करते हे। थूक के द्वारा दूषित वस्तुओं के सेवन से यह जीवाणु लसीकावाहिनियो के द्वारा रक्त मे मिल जाते है तथा फिर फुफ्फुस मे पहुच जाते है ओर राजयक्ष्मा रोग की उत्पत्ति करते हे । फुफ्फुस के अतिरिक्त यह रोग हड्डियो, आन्त्र ओर प्राय शरीर के सभी अगो को प्रभावित करता हे।

सम्प्राप्ति— आयुर्वेद मे राजयक्ष्मा रोग की सम्प्राप्ति का वर्णन इस प्रकार है -

निदान	सम्प्राप्ति घटना	घटनाक्रम	परिणाम
साहसात क्ष्यात् —	रक्तादीनाच सक्षयात्	प्रतिलोम क्षय	
	धातुष्मेणा चम्यापच —		राजयक्ष्मा
विपमाशनात् वेगधारणात्	स्रोतसा सन्निरोधात्	अनुलोम क्षय	
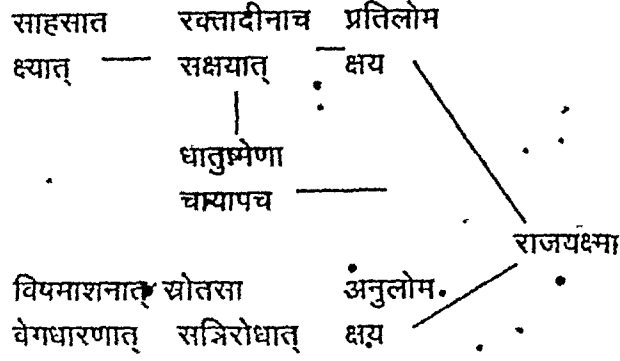
आधुनिक चिकित्सा विज्ञान मे राजयक्ष्मा रोग का वर्णन इस प्रकार है -

श्वास के द्वारा यक्ष्माणु फुफ्फुस मे पहुचते है जहा पर यह श्वेत रक्त कणो के द्वारा ग्रहण किये जाते है। यही रक्तकण इनको अन्य स्थानो पर भी लेकर जाते है इन रक्तकणो मे इनका विभाजन होता है। तीन से आठ सप्ताह के अन्दर रोगी मे हाइपरसेन्सटिविटी होती है जोकि एक प्रोटीन (Tuberculo Protein) के कारण होती है। इसकी प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप सूक्ष्म ग्रन्थियाँ उत्पन्न होती है जिन्हे यक्ष्मिका (Tubercle) कहते है यह निम्न तत्वो से मिलकर बनता है -

१ ऐपिथिलाईड सैलस आफ मेकरोफेजिज (Epitheloid cells derived from Macrophages).

२ लेगहेन्स सैलस आफ मेकरोफेजिज (Langhans Cells derived from macrophages)

३ लिम्फोसाईटस (Lymphocytes)

इन यक्ष्मिकायो मे निम्नलिखित क्रियायें होती है -

१. केसियेशन (Caseation) - इन यक्ष्मिकायो में रक्त की कमी तथा विष के कारण मध्य की कोशाओ का Fatty degeneration होने के कारण वह पनीर के समान हो जाती है। इसे किलाटी भवन कहते है ।

२ साफ्टनिग (Softening) यह कोशाये गलकर मृदु एव द्रव रूप हो जाती है। इसे मृदु भवन कहते है ।

३ कैविटेशन (Cavitation) इन यक्ष्मिकाओ मे जो तरल द्रव होता है। वह श्वासनलिकाओ मे उत्सर्जित हो जाता है, जिससे एक छोटी सी Cavity बन जाती है, जिसका सम्बन्ध श्वासनलिकायो से रहता है। इसमे पूयजनक जीवाणुओ का उपसर्ग होने से वहाँ पूय (Pus) बनने लगता है। इसे विवरीभवन कहते है ।

४ रक्तस्राव (Bleeding) - प्रारम्भ मे रक्तस्राव अल्प होता है। फिर इसके पश्चात् रक्तवाहिनियों की दीवारो मे आघात के कारण मध्यम रक्तस्राव होता है। अन्त मे Cavity के भीतर के *Aneurysm* के फटने से अधिक रक्तस्राव की सभावना रहती है।

५ रोपण (Healing) - रक्त की कमी के कारण रोपण में कठिनाई होती है। बाहर का आवरण रेशेदार होने के कारण सिकुडकर उन्हे चारो तरफ से घेर लेता है। तथा Tubercle एव उसके आवरण मे Calcification होने से जीवाणु अन्दर कैद हो जाते है। यदि शरीर की प्रतिकारक शक्ति उत्तम हो तो रेशो तथा खटिको का प्रचूषण होकर स्थान पूर्ववत हो जाता है। इस शक्ति के प्रमाण के अनुसार जीवाणु या तो कुछ नहीं कर पाते या अल्पकाल तक विकार करते है तथा बाद मे प्रतिकारक शक्ति प्रबल होकर रोपण हो जाता है। अथवा सर्वदा ही विनाशन क्रिया जारी रहती है।

मिलियरी ट्यूबरकुलोसिस (Miliary Tuberculosis)

इसमे शरीर के अवयवों मे यक्ष्मिकायो की उपस्थिति पाई जाती है । सिराओ के द्वारा यह सर्वदेह मे पहुच जाती है। यह प्राय बच्चो मे अधिक होता है।

राजयक्ष्मा के लक्षण—

यह दो प्रकार के हो सकते है -

१ सार्वदैहिक लक्षण २ स्थानिक लक्षण

सार्वदैहिक लक्षण—

१ भूख कम लगना (Anorexia)

२ दौर्बल्य (Weakness-lassitude)

३. कृशता (Cachexia)

४ रात्रि स्वेद (Night Sweats)

५. सायकालिक ज्वर (Evening Rise of Temperature)

स्थानिक लक्षण—

१ कास (Cough)

२ रक्तष्ठीवन (Heamoptysis)

३ उर प्रदेश मे वेदना (Chest pain)

उर. परीक्षण—

राजयक्ष्मा रोग की अन्तिम अवस्थायो मे उर परीक्षण मे निम्न भाव देखने को मिलते है -

१ दर्शन (Inspection) Movement of Chest wall decreased on affected side

२ स्पर्शन (Palpation) - Mediastinum is displaced towards) - affected side

३ ठेपन (Percussion) Impaired sounds on affected side

४ श्रवण (Auscultation) Coarse Crepitations

प्रयोगशालीय परीक्षण—

राजयक्ष्मा के रोगी मे निम्न प्रयोगशालीय परीक्षण करवाये जा सकते है -

१ थूक की जाच - एसिड फास्ट बैसिलस (A F B) की उपस्थिति हेतु ।

२ ई०एस०आर० (E.S R.) प्राय बढा हुआ मिलता है।

३ ट्यूबरकुलीन (Tuberculin) टेस्ट Or Mantoux Test प्राय पोजिटिव (+Ve) होता है।

४ रक्त मे हीमोग्लोबिन की मात्रा- प्राय कम मिलती है ।

५ श्वेत कणो की सख्या (Total Leucocyte Count) प्राय सख्या मे बढे हुये मिलते है।

क्ष किरण परीक्षण (Radiological Examination)

X-Ray chest PA view may show opacities in the Upper lobe of the affected lung An area of translucency within opacities shows cavitation

उपचार (Management).

१ Isolation of Patient - राजयक्ष्मा से पीडित व्यक्ति को अलग रखना चाहिये । यह रोग थूक के द्वारा फैलता है। इसलिये सक्रमित व्यक्ति के थूक कपडो तथा बर्तनो इत्यादि को अलग रखना चाहिये तथा उन्हे गर्म जल, डिटोल सेवलोन लायसोल आदि से धोना चाहिये ।

२ Rest - राजयक्ष्मा रोग मे रोगी की शारीरिक क्षमता कम हो जाती है। अत उसे शारीरिक एव मानसिक विश्राम करना चाहिये ।

३ Chemotherapy - रोगी को निम्न ओषधिया सयुक्त रूप से देनी चाहिये

१ रीफैम्पिसीन (Rifampicin)

२ आईसोनायाजिड (Isoniazid)

३ इथेमब्यूटोल (Ethambutol)

४ स्ट्रैप्टोमाइसिन (Streptomycin)

५ पाइरेजिनेमाईड (Pyrazinamide)

यह ओषधियाँ राजयक्ष्मा के रोगी को कम से कम नौ माह तक अवश्य लेनी चाहिये ।

नौ माह के कोर्स लेने की विधि—

१ प्रथम दो महिने

Rifampicin + Isoniazid

Drug (औषधि) Dose (मात्रा) Side (दुष्प्रभाव)

१ Rafampicin- बच्चो मे १०-२० मि ग्रा /के जी हाइपरसेन्सटिविटि, यकृत शोथ, उदरशूल हृल्लास ज्वर

शरीर भार वयस्क—

५० के०जी० से कम ४५० मि ग्रा

५० के०जी० से अधिक ६०० मि ग्रा

२ Isoniazid बच्चो मे -१० मिग्रा/के०जी० शरीर भार वयस्क-२००-३०० मिग्रा०

हाइपरसैन्सटिविटी पोलीन्यूरोपैथी (Polyneuropathy)

३ Ethambutol १५-२५ मिग्रा/के०जी० शरीर भार

हाइपरसैन्सटिविटी आप्टिकन्यूराइटिस (Optic Neuritis)

इसके अतिरिक्त रोगी के खान-पान का विशेष ध्यान रखना चाहिये। रोगी को पौष्टिक आहार जैसे दूध, मछली पपीता, बकरे का माँस, मूग की दाल, हरी सब्जी एव ताजे फल अधिक मात्रा मे देने चाहिये । रोगी को सदेव स्वच्छ हवा एव साफ सुथरे वातावरण मे रखना चाहिये ।

संदर्भ ग्रन्थ (Reference Books)-

1- Text Book of Pathology by Robins

2 Davidson's Principles and Practice of Medicine

३ काय चिकित्सा— डा० शिवचरण ध्यानी

४ काय चिकित्सा— आचार्य विद्याधर शुक्ल

आयुर्वेदिक चिकित्सा— आयुर्वेद मे मुख्यत दो प्रकार की

चिकित्सा की जाती है—

१ सशोधन चिकित्सा २ सशमन चिकित्सा

सशोधन चिकित्सा—

रोगी बलवान व बहुत मलवाला हो तो स्वेदन करके स्निग्ध व तर्पक औषधियो से मृदु वमन व विरेचन देकर शोधन विबन्ध, रूक्षता आदि होने पर स्नेह युक्त बस्ति । शिर शूल, शिरोगौरव, पार्श्व व कधो मे शूल होने पर नस्य व धूम्रपान ।

कोष्ठ के शुद्ध हो जाने पर दीपन व वृहण चिकित्सा रोगी क्षीण व दुर्बल हो तो शोधन कदापि नहीं देनी चाहिये। यक्ष्मा क रोगी के मल व वीर्य की रक्षा सावधानी से करनी चाहिये।

सशमन चिकित्सा— औषध योग—

१ रस औषधियाँ— स्वर्ण बसन्तमालती रस, लोकनाथ रस, मृगाक रस, हेमगर्भ रस, श्रृगाराभ्र रस, क्षयान्तक रस

२. चूर्ण— सितोपलादि चूर्ण, तालीसादिचूर्ण, श्रृग्यादिचूर्ण, मधुयष्टि चूर्ण।

३ भस्म पिष्टि— मृगश्रृग भस्म, प्रवाल भस्म, प्रवाल पिष्टि।

४ आसव-अरिष्ट— द्राक्षारिष्ट, लोहासव, बलारिष्ट

५ अवलेह— च्यवनप्राश अवलेह, वासावलेह, कण्टकारी अवलेह

६. लौह— यक्ष्मारि लौह, शिलाजत्वादिलौह, शत्मूल्यादि लौह

७ तैल— महाचन्दनादि तेल, बलातैल, लाक्षादि तैल, अभ्यगार्थ

ज्वर की तीव्रता मे— मुक्तापचामृत रस, पचानन रस, अमृतासत्व

श्वास वृद्धि मे— श्वासकासचिन्तामणि रस, सोम सत्व, सोम चूर्ण

वीर्य क्षय मे— मृगाग चूर्ण, वृहत पूर्णचन्द्र रस

स्वरभग मे— किन्नरकण्ठ रस, खर्जूराद्य घृत

पथ्य— प्रचुर मात्रा मे दूध, मास रस, अण्डा, फल, मक्खन, घी आदि लहसुन का सेवन ।

अपथ्य— कटु-तीक्ष्ण पदार्थ, सरसो का तेल, लाल मिर्च इत्यादि ।

श्वसन प्रक्रिया शेषांश पृष्ठ 299 का

का अन्तर बढ जाता है। अब यदि वायु नलिका मे उसमे भीतर गई वायु को खींच लिया जाय तो फुफ्फुस फिर फैल जाता है ओर दोनो स्तरो का अन्तर फिर कम हो जाता है, किन्तु फूकना बन्द करते ही फुफ्फुस फिर सिकुड जाता ह। वायु कोष्ठो की दीवारो मे स्थिति स्थापक तन्तु होते हे जिनके द्वार कोष्ठ फैलने के पश्चात् स्वय सिकुडकर फिर पूर्वावस्था म आ जाते है। शिराओ के द्वारा कार्बनडाईआक्साइड युक्त रक्त हृदय मे जाकर फुफ्फुसो मे जाता हे और उच्छ्वास करके बाहर निकल जाता है। इस प्रकार रक्त शरीर में घूमता है और फुफ्फुस के अन्दर उसका अमिसरण होता रहता है। इस प्रकार शरीर मे घूमने से जो रक्त अशुद्ध होता रहता है वह दक्षिण हृदय के द्वारा फुफ्फुसो मे आकर श्वासोच्छ्वास से शुद्ध हा जाता है।

फुफ्फुस धमनी हृदय से निकल कर दो भागो मे बढती है और दोनो फुफ्फुसो मे पहुच कर सूक्ष्म कोशिकाओ का रूप धारण कर लेती है। उक्त कोशिकाये वायुकोषो से घिरी रहती है जिसके फलस्वरूप वायुकोषो मे शुद्ध हवा पहुचकर अपने समीपस्थ के अशुद्ध रक्त को शुद्ध कर देती है। वायु के ससर्ग से रक्तस्थित कार्बोनिक एसिड गैस वायुकोष मे चली जाती है और वायुकोष से आक्सीजन गैस रक्त मे मिल जाती है। अत कोशिकाओ द्वारा लाया हुआ रक्त विशुद्ध हो जाता है।

शरीर मे रक्त के शुद्धिकरण का कार्य फुफ्फुसो के द्वारा किया जाता है। फुफ्फुसो को सक्रिय ओर सबल बनाने के लिय सदैव निम्न बातो पर ध्यान दना चाहिये -

१ सदेव शुद्ध हवा का सेवन किया जाय। २ नियमित प्राणायाम किया जाय। ३ प्रतिदिन शखध्वनि की जाय।

राजयक्ष्मा उपचार

डा० दीपनारायण तिवारी
एमडी० आयु० चिकित्साधिकारी
राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय, जयपुर

चिकित्सा सेवा के प्रारम्भ से अद्यावधि ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय चिकित्सालयो मे ही कार्यरत रहा हूँ। इस अवधि का अनुभव यह रहा है कि ग्रामीण क्षेत्र मे क्षय (राजयक्ष्मा, टी०बी०, तपेदिक, टयुवरकुलोसिस) रोग प्रचुर मात्रा मे फेला हुआ हे व ग्रामीण जनसख्या का एक वडा वर्ग इस रोग से ग्रस्त हे। या जीवनकाल मे कभी न कभी ग्रस्त रहा हे। भारतवर्ष की केन्द्रीय सरकार ने क्षय उन्मूलन की परियोजना स्तर पर राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत समाहित किया हुआ हे, फिर भी इस ओर अभी वहुत कुछ किया जाना शेष है। सामान्यजन मे एक ओर जहा जानकारी का अभाव हे वहीं क्षय उन्मूलन कार्यक्रम की क्रियान्वयन पूरी तीव्रता से नहीं किया जा सका हे।

विगत मे इस रोग को इसकी भयकरता के कारण घृणा की दृष्टि से देखा जाता था इसलिये रोगी इस रोग से ग्रस्त होने पर सामाजिक भय से इसे छिपाता था, और समाज मे उसकी प्रतिष्ठा मे गिरावट होती थी, किन्तु वर्तमान मे क्षय लाइलाज नहीं है। वह सही समय पर उचित चिकित्सा द्वारा इसे नि सदेह समूल नष्ट किया जा सकता है। अज्ञानवश अधिकाशजन इस रोग से भयभीत रहते हे व सामाजिक प्रतिष्ठा के भय से इसका इलाज समय पर नहीं करवाते है। देखा तो यह भी जाता है कि इस रोग के रोगी को क्षय रोग की सम्भावना वताने पर वह मानने को तैयार ही नहीं होता कि उसे क्षय रोग है और वह उस चिकित्सक विशेष के पास दोबारा जाता ही नहीं है, दूसरी तरफ स्वय बुरी तरह से डरकर गम के सागर मे डूव जाता है।

यद्यपि इस रोग के वारे मे पर्याप्त आधुनिक वैज्ञानिक जानकारी, साहित्य एव असदिग्ध सफल चिकित्सा ऐलोपेथी एव आयुर्वेद मे उपलब्ध हे। और कुछ नया लिखने को शेष नहीं है, फिर भी इस रोग की व्यापकता को देखते हुए इसे उपेक्षित नहीं छोडा जा सकता।

अष्टागसग्रहकार ने इस रोग की नेदानिक व्यापकता के चलते इसे रोगराट् कहा हे -

'अनेक रोगानुगतो वहुरोग पुरोगम । राजयक्ष्मा क्षय शोषो रोगराट् इति च स्मृत ।।

अर्थात् जिस प्रकार राजा की सवारी चलने पर उसके आगे पीछे अनेक अनुयायी चलते है, उसी प्रकार इस रोग के हो जाने पर पाडु, अतिसार, शोथ, दार्वल्य क्षुधानाश, ज्वर आदि रोग हो जाते है। इसीलिये इसे 'अनेक रोगानुगत, तथा इस रोग से उत्पन्न होने से पहले प्रतिश्याय कास, श्वास आदि रोग स्वागतकर्ता के रूप मे इसके आगे-आगे चलते हे अत ''वहुरोग पुरोगम , सम्प्रति, रोगराट् - रोगो का राजा या रोगो मे प्रधान राजयक्ष्मा माना गया हे।

आधुनिक दृष्टि से यह ओपसर्गिक रोग ह। वेसिलस टयूवरक्लोसिस नामक क्षयदण्डाणु के सक्रमण द्वारा मुख्यत इस रोग की उत्पत्ति होती हे। आयुर्वेद मे भी ओपसर्गिक रोगो की उत्पत्ति के हेतुओ का उल्लेख हुआ हे। उन्हीं मे इसका समावेश किया जाना उचित हे-

प्रसगात् गात्रसस्पर्शान्नि श्वासात्सहभोजनात्।
सहशय्यासनाच्यापि गन्धमाल्यानुलेपनात् ।।
कुष्ठ ज्वरश्च शोषश्च नेत्राभिष्यन्द एव च।
ओपसर्गिक रोगाश्च सक्रामन्ति नरान्नरम् ।।

उपर्युक्त सभी हेतु राजयक्ष्मा की उत्पत्ति मे कारक

है।

क्षय रोग से वही मनुष्य आक्रान्त होता है, जिसका किन्हीं भी कारणो से धातुक्षय हुआ हो, इसीलिये इस रोग का नाम ही क्षय है। दुर्बल शरीर धारियो को यह रोग शीघ्र ही घेर लेता है। धातुक्षय होने पर शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी स्वाभाविक रूप से कम हो जाती है, उस स्थिति मे इस रोग का आक्रमण शीघ्र एव आसानी से हो जाता है।

विप्रकृष्ट निदान -

वेगो को धारण करने या रोकने से, धातुओ का क्षय होने से, दु स्साहस करने से, विषमाशनसे वात पित्त कफ यह त्रिदोष प्रकुपित होकर यक्ष्मारोग को उत्पन्न करते है, इस प्रकार का वर्णन माधवनिदान मे मिलता है।

वेगरोधात् क्षयाच्चैव साहसाद्विषमाशनात् ।
त्रिदोषोजायते यक्ष्मागदोहेतु चतुष्टयात् ।।

वस्तुत इन चारो मे क्षयात् ही मुख्य है, अर्थात् वे सभी हेतु जिनके कारण शरीर मे क्षीणता उत्पन्न हो चाहे वह अत्यधिक मैथुन, विषमाशन या अनशन, शरीर के बल से अधिक श्रम करने, दु स्साहसपूर्ण कार्य करने, अपौष्टिक भोजन लेने, प्रदूषित या अस्वास्थ्यकर वातावरण मे रहने या किसी भी कारण से रक्तस्राव जन्य क्षीणता उत्पन्न हो तो रसरक्तादि सभी धातुए धीरे-धीरे क्षीण होती जाती है, फलस्वरूप रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है, और इस रोग के दण्डाणु अपना आक्रमण सरलतापूर्वक शीघ्रता से कर देते है।

गरीबो एव ग्रामीणो मे यह रोग अधिक पाया जाता है। बचा खुचा व बासी भोजन, अपोष्टिक भोजन भक्षण, सीलन भरे, प्रकाशहीन अधेरे घर, गन्दे व बिना धुले बिस्तर कपडे, एक ही कमरे मे कई लोगो का निवास शराब का सेवन, धूम्रपान तथा तज्जनित कास श्वास रोगो का लापरवाही एव गरीबीवश इलाज न कराने, जीविकोपार्जन के लिये शक्ति से अधिक परिश्रम करने, अशिक्षा एव अज्ञानवश बीमारी को छिपाने, खुले मे शौच जाने, तालाबो आदि का गन्दा पानी पीने, इलाज करावे भी तो गाव के नीम हकीमो का मिथ्या व आधा अधूरा उपचार कराने आदि अनगिनत कारण है कि गरीबो एव ग्रामीणो मे यह रोग बहुतायत से मिलता है। बदकिस्मती से क्षय उन्मूलन केन्द्र या तो उनकी पहुंच से दूर होते है या उन्हे उनकी जानकारी ही नहीं होती कि वहा दवाइया सरकार की ओर से मुफ्त मिलती है। जो लोग इन दवाइयो को लेना प्रारम्भ कर देते है, वहा थोडा फायदा होते ही उपचार बीच मे ही छोड देते है, जिससे यह रोग पुन अधिक तीव्रता से आक्रमण करता है।

क्षय के लक्षण आमतौर पर इसकी प्रारम्भिक अवस्था मे ही पकड मे नहीं आते, और मनुष्य सामान्य दौर्बल्य ही समझता रहता है, सायकाल हल्का तापमान, बल का क्षय तथा शरीर मे अस्वस्थता का अनुभव क्षुधानाश, वजन का निरन्तर घटते जाना, रात्रिस्वेद, पेट मे दर्द, सर्दी लगना, मलेरिया, फेफडो को श्वास लेने मे कष्ट होना, काम मे मन न लगना तथा थकावट गले मे या बगल मे छोटी-छोटी गाठे उठना यह क्षय के मुख्य लक्षण है पर इनके आधार पर ही क्षय रोग का विनश्चय नहीं किया जा सकता है -

आयुर्वेद मे लक्षणो की दृष्टि से निम्न प्रकार वर्णन मिलता है -

१. त्रिरूप क्षय लक्षण -

असपार्श्वाभितापश्च सताय करपादयो ।
ज्वर सर्वाडगश्चेति लक्षण राजयक्ष्मण ।।च चि अ.८/५

कन्धे व पार्श्व मे पीडा, हाथ व पैरो में जलन तथा समस्त शरीर मे ज्वर की अनुभूति राजयक्ष्मा के उक्त लक्षण चरक द्वारा बताये गये है । जबकि सुश्रुतानुसार - कासो ज्वरो रक्त पित्त त्रिरूप राजयक्ष्मणि। यह तीन लक्षण मिलते है।

२. षडरूप राजयक्ष्मा लक्षण -

अ. कास आ ज्वर, इ पार्श्व शूल, ई स्वरभेद, उ. अतिसार ऊ अरुचि छह लक्षण बताये है।

३. दोषानुसार एकादश रूप राजयक्ष्मा के लक्षण -

अ वात के कारण

१. स्वरभेद, २ असप्रदेश तथा पार्श्व मे शूल ३. सकोच

ब पित्त के कारण

१ ज्वर, २ दाह, ३ अतिसार, ४ थूक मे खून का आना ।

स कफ के कारण - १ भोजन मे अरुचि, २ कास,

३ कण्ठपीडा, ४ सिर मे भारीपन

नैदानिक परीक्षण

१ श्वास परीक्षण - क्षय की प्रारम्भावस्था मे सर्वप्रथम जव तक न तो श्वास के रूप मे कोई वदलाव आया होता ह ओर नही कोई नैमित्तिक शब्द सुनाई देते है, उस समय भी काष्ठीय श्वास निर्वल सुनाई देता हे । उस समय श्वास फेफडो के शिखर पर सीमित क्षेत्र मे निर्वल अथवा बिल्कुल भी सुनाई नहीं दता, प्राय असप्राचीरक के पास यह स्थिति पाई जाती हे, प्रारम्भ अवस्था मे ही यहा पर यह लक्षण मिलने के कारण इसे एलार्म जोन कहा जाता है। इसी प्रकार अक्षकास्थि के भीतरी एक तिहाई भाग के नीचे भी अन्त श्वसन की निर्वलता मिलती हे। अन्त श्वसन के अन्त मे करकरापन भी सुनाई देती हे। क्षयरोग विनिश्चय मे निर्वल श्वास का महत्व तभी होता है जव यह किसी शिखर पर स्थानावद्ध, सुपरिगत, स्थिर और स्थायी होता ह और जोर से श्वास लेने पर खासने पर अन्तर नहीं पडता ह। रोग की वढी हुई अवस्था मे भी श्वास नली मे कफ के अवरुद्ध हो जाने से प्राय सीमित क्षेत्रो मे निर्वल श्वास पाया जाता ह किन्तु जोर से खासन कफ का अवरोध हट जाने स स्पष्ट श्वास सुनाई देने लगता ह। प्रारम्भिक क्षय म प्राय विषमश्वास भी पाया जाता हे। विषमश्वास तीव्रता मे कम भी हो सकता हे। ओर कभी कभी तो अत्यन्त धीमा हो जाता ह। विषमश्वास असप्राचरिकोर्ध्वप्रदेश (Supraspinus) मे आर अक्षकास्थि के ऊपर आर नीचे सुनाई देता हे। मासपेशियो मे अकडाव से भी विषमश्वास के समान स्वर सुनाई दे सकता हे, आर भ्रम हो जाता ह, अत श्रवण काल मे मासपेशिया ढीली करने के लिये रोगी को पेट से श्वास लेन का कहना चाहिये यदि फिर भी विषमश्वास मिले तो क्षय रोग मानना चाहिये। क्षय की थोडी वढी हुई अवस्था मे झटकेदार प्रतिवधित श्वास एक विशिष्ट परीक्षण है। इसमे अन्त श्वसन का निरन्तर स्वर सुनाई न देकर तेज तरगो या झटको मे सुनाई देता हे। यो तो झटकेदार श्वास उद्विग्न चित्त वाले मनुष्यो मे भी मिलता हे, किन्तु अन्तर यह ह कि क्षय रोग मे यह लक्षण सीमित क्षेत्र मे मिलता है, जवकि उद्विग्नावस्था मे यह सम्पूर्ण वक्ष मे सुनाई देता ह । प्राचीन क्षय रोगी मे फेफडो की स्थिति स्थापकता नष्ट हो जाने के कारण प्रखर या ककश श्वास सुनाई दता हे।

२ रक्त परीक्षण - रक्त परीक्षण करान पर यदि ईएसआर अधिक वढा हुआ मिले व डब्ल्यू वी सी की सख्या भी वढी हुई मिले तो क्षय रोग की उपस्थिति की सभावना हो सकती है।

३ ष्ठीवन परीक्षण - रोगी के थूक के परीक्षण से भी राजयक्ष्मा के निदान मे सहायता मिलती हे। प्रारम्भ मे थूक मे क्षय के दण्डाणुओ की सख्या कम होने पर क्षय का निश्चयात्क निदान नहीं हो सकता हे, अत थूक का परीक्षण एकाधिक बार करवाया जाना चाहिये ।

४ एक्सरे परीक्षण - चोथा मुख्य परीक्षण क्ष-किरण परीक्षण ह इसके द्वारा क्षय रोग का निश्चयात्मक निदान करने मे सहायता मिलती ह। श्वास परीक्षण एव रक्त ष्ठीवन परीक्षण के वाद यदि तनिक भी क्षय का सदेह हो तो एक्सरे परीक्षण करवाना चाहिये। विशेपतया फुफ्फुसो मे होने वाले क्षय मे थोडा भी शक हाने पर क्षय किरण परीक्षण शीघ्र एव आवश्यक रूप से करवाना चाहिये, क्योकि प्राय सामान्यजन खासी व श्वास को सामान्य तार पर लेते ह, और विशेष ध्यान नहीं देते । इस कारण ऊपर से स्वस्थ दीखते हुये भी क्षय रोग स ग्रस्त होते ह। ऐसे रोगियो का पता इस परीक्षण के द्वारा लग जाता हे।

५ टयुवरकुलीन परीक्षण - एक्सरे - परीक्षण के वाद टयुवरकुलाइन परीक्षण द्वारा क्षय दण्डाणुओ की सूक्ष्मतम मात्रा के सक्रमण से पैदा हुई सूक्ष्म सवेदनाओ के आधार पर रोग का विनिश्चयात्मक ज्ञान किया जा सकता हे। इसके अतिरिक्त थूक, सुपुम्ना द्रव एव उरस्तोय की माइक्रोस्कोपिक जाच तथा तत्पश्चात् कल्चर परीक्षण द्वारा शतप्रतिशत विनिश्चयात्मक निर्णय किया जा सकता हे।

चिकित्सा -

क्षय रोग के चिकित्साक्रम मे ओषधि चिकित्सा से अधिक महत्व प्रतिषेधात्मक उपायो को अपनाये जाने तथा साथ ही रोगी को भरपूर विश्राम, स्वच्छ वायु एव वातावरण तथा पयाप्त पौष्टिक आहार का हे। इनके अभाव मे उचित औषधि चिकित्सा देने पर भी पर्याप्त लाभ मिलना मुश्किल होगा। क्षय रोग का निदान होते ही रोगी को कुछ सप्ताह तक पूर्ण विश्राम की सलाह दी जानी चाहिये। क्षय रोगी को उसकी प्रकृति तथा भूख के अनुसार उचित मात्रा मे पोप्टिक भोजन देना चाहिये। अच्छे भोजन के सवन स रोगी

का बल एव वजन बढ़ेगा, जिससे उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता स्वयमेव बढ़ेगी फलस्वरूप रोगमुक्ति शीघ्रता से हो सकगी।

इसी प्रकार स्वच्छ वातावरण विसक्रमित बिस्तर कपडे, आवास जहा साफ हवा व पर्याप्त धूप व रोशनी उपलब्ध होना अत्यावश्यक है। सूय का प्रकाश क्षय दण्डाणुओ के नाश मे मुख्य भूमिका अदा करता है। नमीयुक्त वातावरण का सर्वथा निराकरण आवश्यक है। रोगी को पृथक वातावरण मे रखना चाहिये। जिससे अन्य स्वस्थ व्यक्तियो या परिवारजनो मे सक्रमण न फैले । शराब एव धूम्रपान से पूर्णतया परहेज रखे। इधर-उधर हर स्थान पर नहीं थूके। खासते समय व छींकते वक्त मुह पर रूमाल रखे रोगी को पूर्ण रूप से ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये।

पथ्य - मूग, जौ, गेहू, चना, साठी चावल, साबूदाना आदि अन्न क्षय रोग मे हितकर है।

अनार, आवला, केला, अगूर, कूष्माड (पेठा) खजूर, मीठा आम, बादाम, किशमिश, घीया, तोरई, पका कटहल, बथुआ, अदरख, सेधा नमक, काली मिर्च आदि फल व सब्जिया लाभदायक है ।

वायुशद्धि के लिये- कीटाणुनाशक औषधियो का धूम्र, तथा गूगल, लोबान आदि का प्रतिदिन रोगी के कमरे मे धुआ देना चाहिये।

क्षय रोग के शीघ्र निवारणार्थ अण्डे एव दूध का सेवन बहुत अच्छा रहता है। शाकाहारियो को भी अपनी धार्मिक मान्यताओ के विरूद्ध रोग की आत्ययिकता एव औषधीय आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए मासाहार अपना लेना चाहिए।

बकरे का मास तथा जगली पशुपक्षियो का मास, मास रस, मास मिलाकर सिद्ध किया गया भोजन, क्षयरोगी के लिये शीघ्र स्वास्थ्यवर्द्धक है। दुग्ध, मक्खन, घी, विशेषकरछागल्यादि मिलाकर सुबह सुबह चटाना बहुत लाभदायक है।

पानी उबालकर ठडा किया हुआ पीना चाहिये। भोजन मे अपचन होने पर सोठ, कालीमिर्च, पीपल, नागरमोथा, इलायची मिला हुआ उबला जल या दूध पीना चाहिये।

बकरी का दूध, बकरे का मास, बकरी का घी, तथा बकरियो के साथ निवास करना क्षय रोगी के लिये लाभकारी है।

क्षय रोगी को सर्वप्रथम मृदुविरेचन एव वमन कर्म कराना पश्चात्, बृहण एव दीपन चिकित्सा करना हितकर है। लक्ष्मीविलास रस, अभ्रक भस्म, जयमगलरस, सुवर्णमालिनी बसन्त, मृगांक रस, क्षयकेसरी रस, चतुर्मुख रस, स्वर्ण भस्म, प्रबाल, श्रृग भस्म, चन्द्रामृत रस, श्रृगाराभ्र रस, बसन्त कुसुमाकर रस, यक्ष्मारि लोह कनक सुन्दर रस आदि कई रस उचित अनुपान मे मिलाकर या अलग अलग दिये जा सकते है।

च्यवनप्राश अवलेह क्षय रोग नाशक प्रमुख रसायन औषधि है। वासावलेह, अमृतप्राश आदि अवलेह भी हितकर है।

शिवा गुटिका, एलादि गुटिका, सिहास्यादि वटी, लवगादि वटी का प्रयोग क्षय रोग की चिकित्सा मे किया जाता है।

कनकासव, द्राक्षासव, पिप्पल्याद्यारिष्ट आसव-अरिष्ट भोजनोत्तर दिये जा सकते है।

जीवत्यादि घृत, पिप्पली घृत, एलादि घृत, बलाद्यघृत, शतावरी घृत, नागबला घृत, वासाघृत, निर्गुण्डी घृत, वासाघृत, क्षयरोग निवारण मे प्रयुक्त होते है।

सितोपलादि चूर्ण, लवगादि चूर्ण, एलादि चूर्ण, बलादि चूर्ण, जातिफलादि चूर्ण, मुख्य क्षयरोग नाशक चूर्ण है।

सितोपलादि चूर्ण, अभ्रक भस्म एव प्रबाल पिष्टी यह तीनो च्यवनप्राश मे मिलाकर चटाना बहुत लाभकारी है।

बेर की छाल के कपडछन का चूर्ण २ ग्राम की मात्रा मे शहद के साथ चटाकर बेर की छाल का काढा पाच-छह महीने तक लगातार पिलाने से क्षयरोग निवारण की पूर्ण सम्भावना रहती है।

बकरे की ताजी अस्थि को धोकर मिट्टी के सराव मे रखकर कपडा मिट्टी कर गजपुट मे फूक दे। शीतल होने पर कूटकर कपडछन चूर्ण कर बकरी के मूत्र की भावना देकर टिकिया बनाकर सुखाये और पुन गजपुट मे फूक दे। इस प्रकार तीन बार फूक कर औषधि का बारीक चूर्ण बनाकर ५०० एमजी या १ ग्राम की मात्रा दिन मे तीन बार शहद के साथ चटावे। इसके ऊपर श्वेत जीरा दूध मे उबालकर पिलाने से उल्लेखनीय लाभ होगा।

▲

श्वास एक कष्टप्रद रोग
निदान एवं चिकित्सा

गजेन्द्र वर्मा
चिकित्साधिकारी— राजस्थान आयुर्वेद चिकित्सालय, लक्ष्मीनारायण पुरी, जयपुर
पता— म० न० २१६२, लाडली का खुर्रा, रामगज वाजार, जयपुर
योग्यता— राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर से आयुर्वेदाचार्य (राजस्थान विश्वविद्यालय) अप्रेल १६७८ मे
अनुभव— (१) जुलाई १८, १६७६ से राजकीय सेवारत, वर्तमान मे चिकित्साधिकारी
(२) आकाशवाणी जयपुर व जयपुर दूरदर्शन पर स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी व स्वास्थ्य परिचर्चा का समय-समय पर प्रसारण

श्वास रोग (Dyspnoea) की गम्भीरता—

मानव मात्र मे वात, पित्त, कफ तीनो दोषो से रोगो का प्रभाव सर्वदा होता है जो कि शारीरिक तथा आगन्तुक, मृदु, ओर दारुण भेद से दो प्रकार के होते है। तथा असात्म्येन्द्रियार्थ सयोग, प्रज्ञापराध और परिणाम इन दोनों प्रधान कारणो से सम्पूर्ण रोग कौन सा कृच्छ्साध्य हे। वास्तविक रूप में अनेक रोग प्राण घातक होते है परन्तु ये रोग इतने शीघ्र प्राणघातक नहीं होते कि जितना गम्भीर और प्राणान्तकारी श्वास होता है और नाना प्रकार के रोगो से आक्रान्त प्राणी को भी मृत्यु के समय मे तीव्र पीडाकारक श्वास रोग उत्पन्न हो जाता है। श्वास रोग की उत्पत्ति पित्त स्थान से होकर कफ व वायु द्वारा उत्पन्न होता है और रसादि सात धातुओ का शोषण करता है तथा श्वास रोग का समुचित उपशमन होने से वह कुपित हुए सर्प के समान मृत्यु का कारण होता है।

रोग परिचय— उरोगुहा मे कफ के द्वारा अवरुद्ध वात प्रकुपित होकर जव कफ के साथ ऊपर नीचे की ओर वार-वार आने जाने लगता है तो मासपेशियो के कार्य मे विकृति करके श्वास रोग की उत्पत्ति करता हे। यह श्वास दोष (वायु) की गति किस और हे इसके अनुसार १— महाश्वास, २—ऊर्ध्वश्वास, ३— छिन्न श्वास, ४— तमक श्वास और क्षुद्रश्वास नाम से ये पाच प्रकार का होता ह। इनमे से प्रथम तीन महा, ऊर्ध्व व छिन्न श्वास असाध्य है और चोथा तमक श्वास कृच्छ्साध्य हे तथा अन्तिम क्षुद्रश्वास साध्य होता है। विशेष रूप से यहा तमक श्वास का ही वर्णन किया जा रहा है।

तमक श्वास— श्वास नलिका मे कफ विकृत होने पर श्लेष्मा श्वास नलिका मे चारो ओर चिपक जाता हे, जिसके कारण वायु के आवागमन मे रुकावट हो जाती हे। जिसकी चिकित्सा न होने पर श्वास नलिका की पेशियो व फुफ्फुस के सूत्रो के आक्षेप तथा सकोच से सयुक्त होने वाली श्वासनली की पीडा को तमक श्वास कहते हे इसमे फिर कभी-कभी श्वास फूलता है व वेग के रूप मे श्वास चढने से हृदय और फुफ्फुसादि आशयो में वात विकृत होकर हृदय की धडकन का बढना, खासी आना इत्यादि लक्षण उत्पन्न हो जाते है। कई वार अजीर्ण आदि हेतु से आमाशय मे

भी विकृति से भी तमक श्वास का दोरा हो जाता है।

निदान— अधिकतर इस रोग के रोगी वशानुगत होते है। माता, पिता, दादा या वश मे किसी पूर्व पुरुषो को दमा होने पर उनकी सतान को दमा हो जाता है माता व पिता दोनो मे ही समान रूप से सतान मे हो सकता है एक परिवार मे एक को भी हो सकता है व अनेक व्यक्तियो को भी हो सकता है। यह रोग प्राय शीतल व आर्द्र जलवायु वाले प्रदेशो मे दखा जाता है। किन्तु अन्य प्रदेशो मे भी हो सकता हे। एक वार जव यह रोग हो जाता है तो इस रोग के वेग ठडक, आर्द्र, गर्मी व शुष्क काल मे कारणानुकूल पैदा हो जाते रहते हे, जिन कारणो से यह रोग पेदा होते हे, वह कारण जन्य निम्न हे—

कुछ रोगियो मे यह रोग अनूर्जताजन्य जिस प्रकार किसी रोगी को धुआ से, किसी को धूल के कणो से, किसी का द्रव्य की दुर्गन्ध से, किसी को शीतल स्थान, नमी व ठडा जल के सेवन से, किसी को व्यायाम आदि करने से, किसी को अधिक भोग विलास आदि करने से, अधिक मार्ग चलने से, रूक्ष अन्न के सेवन से तथा विषमासन से, लघन करने से, आनाह से, आमदोष से, दुर्बलता से, मर्म स्थान पर आघात के कारण, वमन विरेचन आदि के अतियोग से तथा अतिसार, ज्वर, छर्दि, प्रतिश्याय, क्षत, क्षय, रक्तपित्त, विसूचिका, पाडुरोग व विष प्रयोग से भी यह रोग हो जाता हे। प्रतिश्याय, पीनस के कारण नासिका के अन्दर की श्लेष्मिक कला मे सूजन होने से तथा अधिक मद्यपान करने से भी यह रोग उत्पन्न हो जाता हे। इसी प्रकार श्वसन सरथान के सक्रमण विकार, तुण्डिकेरी शोथ, नासाकोटर मे पूयजनक जीवाणुओ को उपसर्ग, प्रतिश्याय, नासाटरमीनेट नामक ग्रन्थि की वृद्धि, श्वास नलिका शोथ, फुफ्फुसावरणीय कला का शोथ आदि भी श्वास रोग के कारण है।

यह रोग स्त्रियो की अपेक्षा पुरुषो मे अधिक होता हे। इसका आक्रमण युवावस्था से पूर्व ही होता है तथा कभी-कभी वाल्यावस्था मे उसका आक्रमण हो जाता है किन्तु प्रवल रूप मे युवावस्था मे ही होता हे। यह रोग अधिकतर स्वतन्त्र ही होता हे परन्तु किसी किसी मे वातरक्त, राजयक्ष्मा आदि उद्दीपक कारण हो जाते है। श्वास रोग वाले रोगियो मे वाल्यावस्था मे फुन्सिया, शिरोवेदना, शीतपित्त और आमावशयिक रोग तथा दूसरे रोग हो जाते है। श्वास रोगियो मे मिथ्या आहार विहार कर लेने से यह रोग प्रबल रूप मे हो जाता है।

सम्प्राप्ति— श्वसन सरथान के फुफ्फुसनामक श्वासयन्त्र मे वायु प्रणालिया सकुचित हो जाती हे ओर वायु कोष्ठ फैल जाते है इसके साथ साथ वक्षोदर स्थित मध्यमा मासपेशी (डायफ्राम) भी सकुचित हो जाती है। श्वास दौरे के वायु प्रणालियो और वायु कोष अपनी पूर्व अवस्था को प्राप्त हो जाते है। रोग पुराना होने पर यह स्वरूप कुछ अवशिष्ट ही रह जाता है। श्वासनली के प्राचीर निर्माण मे जो अनेक पैशिक सूत्र सहायता करते है और जो नली के अति सूक्ष्म भाग तक फैले रहते है उन सब मे आक्षेप रहने से श्वासनली पेशी मे आक्षेप और सकोच होता है जिससे श्वास रोग पैदा होता है। इसी प्रकार धातुक्षय मल-मूत्र तृषादि वेगो का सन्धारण, रूक्ष पदार्थो का सेवन, अति व्यायाम, अति सुधा लगना (उपवास करना), और इतर दारुण कारणो के करने से प्राणवाहिनिया दूषित हो जाती हे, प्राणवाहिनियो की विकृति के बाद प्राणवायु कुपित होता है और श्वास रोग की सम्प्राप्ति करा देती है।

इसके अतिरिक्त मार्ग मे प्रतिबन्धित होने पर प्राणवायु कुपित हो जाती है। यह प्रतिबन्धित कफ, पित्तशोथ या अन्य पदार्थ प्राणवाहिनियो मे आ जाने और नलिका के मुख का सकोच हो जाने पर होता है। और श्वास नलिका मार्ग सकुचित हो जाता हे।

पूर्वरूप— श्वास रोग होने से पूर्व कण्ठ ओर उर स्थान मे भारीपन हृदय मे पीडा के साथ अर्द्धरात्रि के समय श्वास का दौरा शुरु हो जाता है। यह दौरा लगातार दो-तीन घण्टे तक भी रह सकता है, जबकि दौरे से पहले रोगी की दशा ठीक रहती हे तथा पूर्व मे शूल, अफरा, मलावरोध, मुह का स्वाद बिगडना व कनपटियो मे तोडने के समान पीडा का अनुभव होना लक्षण होते है। रोग का उचित कारण न ज्ञात होकर रोग शुरू हो जाता हे।

लक्षण— जब श्वास पुराना हो जाता हे तब कई बार बिना पूर्व रूप के भी अचानक श्वास रोग पैदा हो जाता हे। रोगी को श्वास लेने मे बहुत कष्ट होता है, जिससे रोगी बैटे रहने और गर्म पदार्थो के सेवन से रोगी को आराम मिलता है रोग की प्रबलता के कारण रोगी को लेटने मे भी परेशानी होती है तथा रोगी तुरन्त उठकर बेठ जाता हे। वायु के कारण पेट फूल जाता है दोनो बाहु स्थिर भाव से सामने

की ओर रखता हे एव दोनो कधो को ऊपर उठाने मे रोगी को आराम मिलता है। रोग की प्रबलता के कारण श्वास कठिनाई से निकलता है उच्छवास छोटा व निश्वास लम्बा होता हे। श्वास प्रश्वास का शब्द सीटी बजाने के सदृश सुनाई देता है तथा कभी कभी कूजन व फा फा शब्द सुनाई देता हे। रोगी का मुख निस्तेज व दुखी मालूम होता है।

श्वास के रोगी की ग्रीवा की शिराये फूली हुई मालूम होती हे। रोगी श्वास लेने की इच्छा करता हे। अत किसी वस्तु को पकडकर अथवा बाहु पर शिर रखकर श्वास लेता हे। साधारणतया बीमार हिलने-डुलने मे भी असमर्थ हो जाता है। और रक्त सचालन की कमी से रोगी के हाथ पैर ठडे पड जाते हे। पसीने आने लगते है व चेहरे पर कभी कभी भयानक लक्षण दिखाई देने लगते है। श्वास प्रश्वास मे कठिनाई के कारण स्वर प्राय लुप्त प्रतीत होता हे। प्रतिश्वाय, प्रश्वास मे श्वास प्रश्वासीय पेशियो की क्रिया मे अधिकता हो जाती है। नासिका फैली हुई, नाडी क्षीण व क्षुद्र हो जाती है। और कई बार नाडी की गति अनियमित हो जाती है। श्वास के प्रारम्भ मे खासी नहीं आती है किन्तु श्वास का वेग जब समाप्त होने लगता हे उसी समय खासी नहीं आती किन्तु श्वास का वेग जब समाप्त होने लगता हे तो उसी समय खासी आ जाती हे, जब कफ निकलने लगता है तो वेग अल्प हो जाता हे, जिस श्वास मे कफ निकलता है उसमे कष्ट कम होता हे।

श्वास रोग मे वेग का समय निश्चित नहीं रहता हे किसी मे थोडी देर तक तो किसी मे बहुत देर तक रहता हे। एक ही रोगी मे भी सदा वेग का समय समान नहीं रहता हे। कभी कभी तो श्वास का समय कुछ मिनट से लेकर कई सप्ताह तक रहता है। इसमे कफ उबले हुए साबूदाने के समान गोठदार चिपचिपा निकलता हे। इस कफ की परीक्षा करने पर एक विशेष प्रकार के स्फटिक मिलते है। ये स्फटिक दमा के कफ मे ही होते है। यदि रोग का वेग चिरकाल तक बार-बार प्रकट होता है तो तब उरोगुहा के सब यन्त्र आक्रान्त होकर पीडा से पीडित हो जाते है। सामान्य परिश्रम से भी श्वास बढ जाता है। और वयोवृद्धि के साथ-साथ हृदय का दक्षिण भाग आक्रान्त हो जाता है। अन्त मे रक्त सचालन मे व्याप्त और शोथ उपस्थित होकर रोग साघातिक हो जाता है। अगुली प्रहार से अभिगुजन शब्द मालूम होता हे किन्तु प्रबल होता हे। निश्वास लम्बा किन्तु उसमे प्रबलता कम रहती हे।

रोग निर्णय— लक्षणो को देखते हुए श्वास रोग का निर्णय किया जाता हे किन्तु यह ध्यान देने योग्य बात ह यह रोग वस्तुत तमक श्वास हे या अन्य रोगो के कारण भूत लक्षण हे। अन्य रोगो के कारण उत्पन्न हुआ श्वास भी कुछ समय पश्वात श्वास रोग मे ही परिवर्तित हो जाता हे। श्वास रोग मे श्वास बडी कठिनाई से आता हे ओर कूजन शब्द दूर से सुनाई पडता है कफ मे स्फटिक विशेष देखे जाते है अम्ल रगेच्छु स्वास्थ्यावस्था मे १-२ प्रतिशत देखे जाते है परन्तु तमकश्वास मे १० से ३५ प्रतिशत अम्ल रगेच्छु देखे जाते ह। इन लक्षणो के कारण तमक श्वास का पूर्ण निर्णय हो जाता हे। लक्षणो के अति प्रबल होने पर भी रोग साघातिक नहीं होता हे।

चिकित्सा— तमक श्वास की चिकित्सा तीन प्रकार से की जाती है।

(१) रोगी की यन्त्रणा नाशक चिकित्सा
(२) रोग के वेग नाशक चिकित्सा
(३) रोग का पुनराक्रमण नाशक चिकित्सा

यन्त्रणा नाशक चिकित्सा—

१— श्वास रोगी को तीव्र दौरे के समय आगे की ओर झुककर बेठने से पीडा कुछ कम होती है। फिर भी रोगी को जिस प्रकार बेठने से राहत मिले उसी प्रकार बटावे। पश्चात रोगी के छाती एव कण्ठ पर सेन्धानमक मिलाकर गौघृत की मालिश करे। फिर एक बर्तन मे पानी गर्म कर ऊपर से छलनी ढक देवे, उसमे से जो वाष्प निकले उससे फलालेन के टुकडे को गर्म कर छाती पर सेक करे। फ़लालेन के दो टुकडो को बारी बारी से बदलते हुए करीब तीस मिनट तक सेक करे। इससे जकडा हुआ कफ पिघल जाता है स्निग्धता नहीं रहती है। श्वास स्रोत मृदु हो जाते हैं, जिससे प्राणवायु का अनुलोमन होता हे ओर शरीर मे जमा हुआ कफ स्वेदन से पिघल जाता है।

२— रोगी को मलावरोध होने पर मृदु विरेचन देना चाहिये।

३— श्वास वेग उठने से पूर्व धतूरो के सूखे पत्ते के चूर्ण का धूम्रपान करवाने पर श्वास का वेग नहीं उठता हे।

४— अडूसा के पत्तो का स्वरस पुटपाक कृति से निकाला हुआ ४० ग्राम, शहद ६ ग्राम, सैधानमक १/२ ग्राम

मिलाकर पिला देने से तुरन्त कफ निकलकर वेग निवृत हो जाता है।

५— सोठ २ ग्राम और भारगीमूल चूर्ण ३ ग्राम को शहद मिलाकर चाटने से श्वास निवृत हो जाता है।

६— कफ के सूख जाने की अवस्था मे मुलहठी १० ग्राम को पानी २०० ग्राम मे उबाले, पानी आधा रह जाने पर छानकर घी २० ग्राम और मिश्री २० ग्राम तथा सेधानमक १ ग्राम मिलाकर पिलाने से कफ गलकर सरलता से बाहर आ जाता है।

७— सोम का चूर्ण ५ ग्राम को लेकर पानी मे १०० ग्राम मे उबाले, एक दो उफान आने पर उतारकर ढक देवे। १५-२० मिनट बाद छानकर शहद मिलाकर पिला देने से वेग तत्काल शान्त हो जाता है।

८— श्रृग्यादि चूर्ण— काकडा सिगी, सोंठ, पीपल, नागरमोथा, पुष्करमूल, कचूर ओर कालीमिर्च इन्हे समभाग मिलाकर चूर्ण बनावे। इस चूर्ण मे से ४ ग्राम चूर्ण को समभाग मिश्री मिलाकर सेवन करावे एव ऊपर से गिलोय अडूसा, बृहत्पचमूल २० ग्राम का क्वाथ बनाकर पिलाने से तीव्र वेग का शमन होता है।

वस्तुत जो कुछ ओषधि अन्नपाक, कफ वातनाशक, उष्णवीर्य और वातानुलोमक होती हैं वे ही श्वास नाशक होती है। केवल कफ नाशक किन्तु वातवर्धक अथवा वातपित्त नाशक किन्तु कफवर्धक औषधि अन्नपाक का उपयोग लगातार नहीं करना चाहिये। किन्तु इन दोषो मे से वातनाशक ही प्राय ठीक रहता हैं। अत श्वास रोगी की स्थिति के अनुसार शाधन कर अथवा बिना शोधन किये हुए शमन अथवा बृहण चिकित्सा फलदायक ह।

६— वमन प्रयोग— स्नेहन, स्वेदन से फुफ्फुसस्थ कफ पिघलकर सूक्ष्म प्रणालियो के द्वारा आमाशय म पहुचता हे उस समय स्निग्ध, स्विन्न रोगी को स्निग्ध शाली चावल का माड मछली के साथ दही मिलाकर खिलावे। इससे आमाशय मे आर भी कफ उत्क्लेशित होता ह। उस समय पीपल, सेधानमक आर मधु मिलाकर साथ मे वमनकारक औषधियो का क्वाथ बनाकर प्रयोग करे। वमन हो जाने से दूषित कफ निकलता हे तथा श्वास स्रोत शुद्ध हो जाते है और प्राणवायु अनुलोम हो जाता है और फिर भी रोगी म कफ अवशिष्ट होने पर धूम्रपान करावे।

१०— धूम्रपान प्रयोग— हल्दी वच, एरण्ड की जड लाख, मन शिला जटामासी, दवदारु बडी इलायची इनको समान मात्रा मे लेकर पीसकर बत्ती बनाकर सुखा ले फिर बत्ती को घी से स्निग्ध कर इसका धूम्र देवे। इससे अवशिष्ट कफ निकल जायेगा।

११ अपामार्ग प्रयोग— रविवार के दिन अपामार्ग की जड को लकडी से खोदकर उखाड लेवे आर उसे ३० एम एल पानी मे घोलकर कपडे से छानकर २५० मिली० दूध मे चावल व अपामार्ग का पानी डालकर खीर बनाकर भोजन के समय खावे। इससे श्वास रोग का दौरा शान्त हो जाता है। ऐसी अपामार्ग खीर का प्रयोग ३-४ रविवार तक करना चाहिये।

इनके अलावा निम्न औषधियो के प्रयोग भी चिकित्सालय के सलाह से श्वास रोग मे लाभप्रद है।

श्वासकास चिन्तामणि, मल्ल सिन्दूर, अभ्रक भस्म ताल सिन्दूर, समीर पन्नग रस श्वास कुठार रस लाक्षा भस्म, श्रृगाराभ्ररस सितोपलादि चूर्ण मरिच्यादि वटी वासावलेह खर्जुराद्यावलेह, हरिद्राद्रकावलेह सोमकल्पासव कनकासव वासा सीरप आदि।

पथ्य— द्राक्षा खजूर, पिण्ड खजूर छुहारा, तुरई, परवल, लोकी, सहजन की फली पालक, बथुआ गेहू जौ मूग, अरहर, गाय व बकरी का दूध गाय का घृत तल शीतल चीनी आदि के पथ्य से श्वास के वेगो का नाश होता है।

अपथ्य— रूक्ष, शीत, गुरु अन्न शीतल जल वर्फ का पानी, शर्वत, भैस का दूध व घी, सेम विदाही पदार्थ सरसो, राई गर्म मसाला उडद की दाल, दही मछली आनूप जीवो का मास तल मे तले हुए पदार्थ कब्ज करने वाले पदार्थ, अधिक परिश्रम करना मार्ग मे पदल चलना, धूप सेकना, धूल, धुआ मे रहना, ठंडे व शीतल वाले कमरे मे रहना, विषय भोग- बोझा ढोना, वेगावरोध, रक्तमोक्षण, ठडी हवा मे घूमना एवं कफ वातनाशक पदार्थो का सेचन हितकर है।

पुनरावर्ती दुष्टप्रतिश्याय और चिकित्सा

वैद्य अम्बालाल जोशी, जोधपुर

आजकल चिकित्सक के पास ऐसे अनेक रोगी आते है जो यह शिकायत करते है कि उन्हे बार बार जुकाम हो जाता है और औषधियो से मिट भी जाता है मेरे पास भी ऐसे लोग आते हे और समाचार कहते है साधारणतया मे तो उन्हे कह देता हू कि क्या करे भाई अभी तक तो कोई ऐसा टीका नहीं निकला है जो यह गारन्टी दे कि भविष्य मे आपको जुकाम नहीं होगा। जुकाम हो तो उसकी चिकित्सा आयुर्वेद के पास है। भविष्य मे न होने के लिए आपको अपना आहार आचार व्यवहार ही आयुर्वेद मतानुसार बदलना होगा। आयुर्वेद मे दिनचर्या, रात्रिचर्या तथा ऋतु चर्या और पथ्यापथ्य नियम निर्देशित है जिसका अनुपालन कर आप चिर स्वस्थ रह सकते है।

सामान्य रोग परिचय—

जुकाम एक साधारण नासागत रोग है जो कभी हो जाता है कभी मिट जाता है इसलिएं हम लोग न चिकित्सक ही न रोगी या उसके परिजन ही इसको गम्भीरता से लेते है परन्तु आवश्यकता इसे समझने की है कि जुकाम के फलस्वरूप जो अनुगामी रोग आते है वे साधारण रोग नहीं है वे रोग है, प्राणघातक रोग— राजयक्ष्मा, वातबला ज्वर, फुफ्फुस प्रदाह, उरस्तोय, श्वास, कास, बधिरता, मस्तिष्क दुर्वलता, अग्निमाद्य, प्रदर, दारुण शिर शूल, ऊर्ध्वाग मे जल सचय आदि बहुसख्यक रोग आ धमकते है।[1]

रोग कारण—

पक्वाशय विकारजन्य तथा पर्यावरण विकृति तथा निजकृत आहार विहारजन्य त्रुटिया जैसे श्रम करके तत्काल स्नान कर लेना, प्रसेकावस्था मे ठडा पानी पी लेना, ग्रीष्म वातावरण मे तपे शरीर दही की लस्सी पी लेना, ठडा तथा गर्म का प्रयोग एक साथ करना, जैसे ठंडा पानी पीकर चाय पीना जो अधिकतर होटलो मे होता ही है। वातजन्य तथा कफ प्रकोपक पदार्थों का अतिसेवन इस रोग के जनक कारण है। नासा विवर शोथ इसमे कथित होता हे, इसकी उपेक्षा करते रहने से यह जीर्ण होकर उपरोक्त अनेक व्याधियो को उत्पन्न कर देता है।

रोग लक्षण—

दोषानुसार वात कफ वृद्धि या दुष्टि इस रोग के कारण है। इस रोग मे नासास्राव, हीन रक्तचाप, छींक आना, सिर मे भारीपन, शूल, अनुत्साह, गलशुण्डी पतन, जीर्ण होने पर प्रदर रोग भी हो जाता हे। ऊपर से देह शीतल होने पर भी रोगी को ज्वर का आभास रहना। उर प्रदेश मे भारीपन, मस्तिष्क मे जल सचय होने पर वहा कुछ चीटियो की तरह चलना प्रतीत होना, गले मे मीठी मीठी खुजलाहट होना।

प्रतिश्याय के विभेद—

दोष कारण अवस्था से यह चार प्रकार का बताया गया है। (१) वातज, (२) पित्तज, (३) श्लेष्मक, (४) सन्निपातज[2]। शास्त्र मतानुसार वात प्रकोप ही इस रोग का जनक कारण है परन्तु आचार्य कश्यप ने इसे वात श्लेष्मज माना है। और इसमे अनुगामी पित्त के सहचर्य से सन्निपातिक भी बताया है।[3] जीर्ण अवस्था मे यह अपीनस रोग से भी सम्बन्धित किया गया है।[4] रोग की साधारण तथा दारुण अवस्था मे यह नवीन तथा जीर्ण रूप मे स्वीकार किया गया है। आश्रित का अनादि रूप मे इसकी पहचान स्वतत्र प्रतिश्याय तथा परतत्र प्रतिश्याय के रूप मे की जाती है। नवीन प्रतिश्याय स्वतत्र व्याधि है जो निजी कारणो से जो ऊपर बताये गये है उत्पन्न होती है। परन्तु जीर्ण प्रतिश्याय अन्य रोगो का अनुगामी भी हो सकता है। यह प्रतिश्याय का उपचार उचित ढग से न होने पर भी होता है तथा अन्य रोगो के पूर्व रूप तथा परिणाम स्वरूप भी हो जाता है, सद्योजनित प्रतिश्याय व्याधि क्रम से उत्पन्न होता है परन्तु जीर्ण प्रतिश्याय के लिए यह आवश्यक नहीं

है कि वह सचय, प्रकोप, प्रसार स्थान सश्रय के क्रम से ही आगे बढा। [५]

प्रतिश्याय का पूर्व रूप—

प्रलिश्यायो के पूर्व रूप मे हिक्का, शिरोगौरवता, देहावयवो मे तथा गात्र सधियो मे जकडाहट, फूटन, अगमर्द, रोमाच, नासिका से धूआआ निकलना, अधिमन्थ, तालू मे खुजलाहट, नासास्राव, मुख मे लालास्राव, कण्ठ मे स्वर बैठना, ज्वर, अरोचक आदि लक्षण मिलते है।

प्रतिश्याय रोग के सामान्य परिचय के बाद हम पुनरावर्ती जीर्ण प्रतिश्याय के कारणो, पूर्वरूपो, रूपो पर विचार करेगे। इसे शास्त्रो ने अपीनस नाम से भी पहचाना है। चरक मे दुष्ट प्रतिश्याय पर मत प्रस्तुत करते समय मेदावस्था बताते हुए अपीनस आदि सम्बन्धी सभी रोगो का वर्णन किया है। जिन्हे सुश्रुत सहिता मे दुष्ट प्रतिश्याय से प्रथक विविध नासा रोगो मे किया है। अष्टाग हृदय मे चरक के मत का समर्थन किया है। भावप्रकाश तथा माधव निदान में सुश्रुत के मत को समर्थन दिया हे।

(१) सर्वेऽतिवृद्धोऽहित भोजनात्।
दुष्ट प्रतिश्याय उपेक्षित स्यात्।। चरक ।।
सर्वे एव प्रतिश्यायनस्या प्रतिकारेण
कालेन रोगजनाना जायन्ते दुष्ट पीनस (सुश्रुत)

सामान्य प्रतिश्याय की उपेक्षा करने से तथा उचित उपचार तथा पथ्यापथ्य की ओर ध्यान न देने से कालान्तर मे वह अति उग्र हो जाला है। उसे दुष्ट प्रतिश्याय कहते है। यह कष्टदायक तो होता ही है परन्तु प्रकारान्तर से कष्टसाध्य मारक भी होता है।

जीर्ण प्रतिश्याय के उपद्रव—

जीर्ण प्रतिश्याय मे छींके अधिक आना, नासा का सूखना, नाक मे कुद भरना, नासा विवरो मे शुष्क मल का चिपटा रहना, यत्न करने पर कभी कभी नासिका से रक्त निस्सरण होना, नासा दौर्गन्ध, मुख दौर्गध्य, अपीनस, नासापाक, घ्राण नष्ट या घ्राणकाठिन्य, नासार्बुद, शिरोरोग या सिरशूल तथा सिर मे अरुषिका का उत्पन्न होना, कर्ण बाधिर्य, दृष्टि मे अवरोध सा होना अथवा नेत्र विकार, खालित्य, पलित, भ्रशथु, दीप्त, पुटक, तृषा, श्वास कास, ज्वर, रक्तपित्त, स्वरभेद, राजयक्ष्मा, अग्निमाद्य, उर शूल, पसलियो मे दर्द, शोफ, कृमिजात, शिरोरोग, नासापुटी मे कृमि उत्पन्न होना, उपद्रव मे अकस्मात् ही उत्पन्न हो जाते है। रोग फलक के अनुसार उष्ण तथा तीक्ष्ण लक्षण भासते है। आगे बढकर ये ही लक्षण पुन पुन रोगानुसार होते रहते हे। अपने स्वरूप मदता तथा उग्रता के अनुरूप ही ये रोग कष्ट देता हे तथा ज्ञानेन्द्रियो तथा क्रिया अशो को तथा मनोवेगो को कष्ट देता हे या प्रभावित करता हे।

रोग की उग्रता के कारण—

प्रतिश्याय को क्षुद्ररोग मानते हुए इसकी उपेक्षा, उचित उपचार का अभाव, औषधि प्रतिक्रिया, आहार विहार की विषमता, देशकाल के विपरीत आचरण आदि त्रुटियो से प्रतिश्याय उग्र होता है ओर वह राजयक्ष्मा जेसे मारक रोगो को उत्पन्न कर देता है। अत इसकी अवज्ञा न कर उचित उपचार करे।

दुष्ट प्रतिश्याय के लक्षण—

नासा विवर मे अवरोध, नाक से श्वास लेने मे कठिनाई, कफ का निकलना, नाक सूखना, नासापाक तथा नाक पर अगुली रखने से पीडा का अनुभव करना, नासा की गन्ध ग्रहण शक्ति का हास, मुख मे दुर्गन्धता, श्वास मे दुर्गन्धता, भिन्न भिन्न दोषो का प्रकट होना तथा कभी पित्त प्रकट होना कभी वात दुष्टि व कभी श्लेष्मा उत्पादन होना। कभी श्वासकीय अवरोध, कभी श्वास का निस्सारण, कभी दुर्गन्ध महसूस होना तो कभी नहीं रहना। इस प्रकार भिन्न भिन्न समयो पर भिन्न भिन्न अवस्थाओ मे दोषो का चय प्रकोप होकर लक्षणो का प्रकट होना दुष्ट प्रतिश्याय के लक्षण है।

दुष्ट प्रतिश्याय मे उपद्रव—

रोग की उग्र अवस्था मे रोग के लक्षण ही उग्र वनकर उपद्रव का रूप धारण कर लेते है तथा साथ ही अपने सहचारी रोग लक्षणो को उद्वेलित कर देते हे यहा हम उन्हीं सक्षेप मे लेख करेगे—

(१) *अपीनस*— इसके लक्षण जीर्ण प्रतिश्याय से भी उग्र होते है यह दो प्रकार का होता हे। स्वतत्र तथा दुष्ट प्रतिश्याय जन्य।

(२) पूतिनस्य— दुर्गन्धयुक्त होता है, श्वास तथा मुख से दुर्गन्ध निकलती है।

(३) क्षवथु— छींक वार-वार तथा वेग से आती हे।

(४) नासाशोष— नासिका के पट सूखे तथा श्लेष्मा शुष्क रहते है।

(५) नासानाह— नासा द्वारा श्वास लेने की क्रिया मे अवरोध होता हे।

(६) नासा पाक— पित्तजन्य, प्रतिश्याय वनकर नासिका के पुटो मे व्रण, दाह, शूल तथा शोथ लक्षण उत्पन्न करते हे।

(७) नासाशोथ— वायुदोप रक्त को उत्तेजित कर दूपित शोथ उत्पन्न करता है।

(८) भ्रशथु— सुश्रुत के मत से जलीयाश का जम जाना लक्षण होता हे।

(६) परिस्राव— नासिका से श्वेत, पीत रक्त घना अथवा पतलास्राव निकलता हे। ऐसा चरक मे वताया गया हे।

(१०) नासा परिस्राव— निरन्तर नाक वहना।

(११) पूयरक्त— नासामार्ग से रक्त मिश्रित रक्तस्राव होना यह रक्तपित्त मे भी होता है।

(१२) दीप्ति— नासिकामार्ग से धूम्र निकलता प्रतीत होना। इसमे नासिका वाहर से अथवा पुटो से लाल हो जाती ह।

(१३) अरुपिका— सिर मे छोटी छोटी रक्तपिडिकाओ का फेलना।

(१४) पुटक— नासिका पुटो मे मल का सग्रहीत होकर जम जाना। इससे नासास्राव कफ पित्त दोपो के कारण जम जाता हे।

(१५) नासार्वुद या नासार्श— नाक मे पिडिका उत्पन्न होना, शोथ युक्त पिडिका का होना अथवा नाक मे अर्श हो जाना ये अत्यन्त दुखद होता हे। केसर तक उत्पन्न कर देता हे। इस प्रकार पुनरावर्ती दुष्ट प्रतिश्याय दारुण दुखद रूप लेकर कष्टदायी हो जाता हे। अब हम इस रोग की सामान्य तथा विशेष विकित्सा पर विचार करेगे।

सामान्य चिकित्सा सूत्र—

प्रतिश्याय साद्य उत्पन्न हो या जीर्ण निज कारणो से उत्पन्न हुआ है यॉ किसी पर आधारित, साम हो या निराम इसमे पथ्यापथ्य पर ध्यान देना आवश्यक हो जाता हे। खुली ग मे न घूमना। वस्त्रो का उचित पहनाव, शास्त्रो ने इसपर नस्य प्रयोग पर अधिक महत्व दिया हे। आहार म रूक्ष तथा उष्ण भोजन करना निर्देशित किया हे। द्रव पदार्थो का प्रयोग आवश्यक होने पर ही किया जाय। कोष्ठ शुद्ध करके हरीतकी का चूर्ण का प्रयोग करे अथवा दोप कल्पना के अनुसार शुण्ठी मिलाकर हरीतकी गर्म जल मे लेव गुड शुण्ठी का प्रयोग या गुड अदरक उत्तम रहता ह। स्निग्ध । पदार्थो का सेवन यदि करे तो द्रव का प्रयोग नहीं करना चाहिये। स्पष्टत ठडा जल नहीं पीना चाहिय।

नस्य प्रयोग—

नस्य प्रयोग मे सरसो का तेल, पुरातन घृत पडविन्दु तेल तथा अजवायन को गर्म करके वस्त्र पोटली म डालकर मल मल कर सूघे। तीव्र नस्य के लिए व्रन्दाल का प्रयोग हो सकता हे प्रकारान्तर से अनुभवी व्यक्ति नासिका पान नमक डालकर गर्म पानी मे अथवा नमक डालकर घृत का प्रयोग करे। सद्य उत्पन्न प्रतिश्याय मे तीक्ष्ण नस्य न देकर नीलगिरी के तैल को वाहर से सुघाना ही उत्तम ह। कर्पूर या अमृतधारा भी सुघाई जा सकती ह। नृसार सुधा मिश्रण (अमोनिया) को ध्यानपूर्वक सुघाना लाभ कर सकता ह। नस्य के रूप मे एरण्ड का तेल भी प्रयोग मे लाया जा सकता है। स्नेह प्रयोग करते समय यह ध्यान मे रखना आवश्यक है कि तेल नासापुट मार्ग से मस्तिष्क की ओर अग्रसर रह गले म न उतरे। इसकी विधि गर्दन के नीचे तकिया लगाकर गर्दन लटकाकर तल नाक मे डाले ओर जोर से ऊपर खींचे।

उदर सेवनीय योग—

अव हम उन योगो को पेश करेगे जो प्रतिश्याय मात्र मे लाभप्रद है—

(१) हल्दी गुड तथा अदरक एक साधारण परन्तु अत्यन्त उपयोगी है यह गर्म जल से लिया जा सकता ह।

(२) कटफल चूर्ण जरा नस्य के रूप मे उपयोगी ह तथा यह दुग्ध तथा स्निग्ध खाद्य के साथ दिया जा सकता है।

(३) गुड तथा गेहू के आटे का गुलराव वनाकर शुण्ठी चूर्ण डालकर रात्रि समय पीने से प्रतिश्याय मिटता ह।

(४) गर्म मिरची वडा प्रतिश्याय जल को वाहर निकाल कर लाभ करता है।

(५) मद्यपान प्रतिश्याय मे लाभकारी है।

(६) विदाम, गेहू की चापड तथा कालीमिर्च, मिश्री का क्वाथ या हलवा सा बनाकर लेना लाभदायक है।

(७) त्रिभुवन कीर्तिरस (योगरत्नाकर)

(८) लक्ष्मीविलास रस नारदीय (स्वर्णयोग) या महालक्ष्मी विलास रस, रस योग सागर मे लक्ष्मी विलास के अनेक योग हे, परन्तु अधिक प्रभावशाली योग उपरोक्त ही है।

(९) आनन्द भैरव रस

(१०) धनिया, पुदीना, शुण्ठी, कालीमिरच तथा मिश्री। यथा मात्रा मे क्वाथ बनाकर प्रयोग करे।

(११) तुलसी, कालीमिर्च, पुदीना तथा हरी चाय का प्रयोग श्री रणणित राय देसाई ने बताया है।

(१२) भारग्यादि क्वाथ (श्री यादवजी)

(१३) कण्टकार्यादिअवलेह

(१४) कटफलादि क्वाथ

(१५) अत्यन्त तप्त तवे पर पानी डालकर उस उबलते पानी मे नमक आधा चम्मच डालकर थोडा हल्दी डालकर पीवे। हजम होने पर कफ को निकाल देता है। वमन होने पर भी कफ को निकाल देता है।

(१६) चित्रक हरीतकी लेह्य प्रतिश्याय की उपयोगी ओषधि हे।

(१७) रस माणिक्य, प्रतिश्याय को सुखाकर लाभ करता है यह उग्र ओषधि है इसका सावधानी से उपचार करना चाहिये।

(१८) समीर पन्नग यह ऐसा ही योग हे जिसका प्रकार भी उग्र हे।

(१९) मधुयष्टि क्वाथ— मुलहठी ५० ग्राम, गुलबनफसा २५ ग्राम, गावजुवा २५ ग्राम, उन्नाव २५ नग, मुनक्का २५ नग, सपिश्ता (लसोडे) २५ नग, खीर— पिश्ता ३ ग्राम, उस्तखुदूख १० ग्राम, अजीर १० नग, भारगी ५ ग्राम, पिश्ते के छिलके ५ ग्राम, बेर की छाल ३ ग्राम, सेधानमक १० ग्राम, यह योग ख्यातिप्राप्त चिकित्सक द्वारा साधित है।

(२०) गोजिह्वादि क्वाथ— गावजुवा, मुलहठी, सोफ, उन्नाव, मुनक्का, अजीर, वासा, लिसोडा, जूफा, खूबकला, कटेरी, सभी १०-१० ग्राम मात्रा १० ग्राम २ कप पानी मे उबालकर छानकर पीये।

(२१) अन्य कुछ क्वाथ है जिनमे उपरोक्त द्रव्यो मे से एक दो निकाल देते है तथा एक अन्य द्रव्य बढा देते है उसका नामकरण ही तदनुसार ही कर दिया जाता हे।

(२२) लवगादि वटी (चूसने के लिये)

(२३) खदिरादि वटी (चूसने के लिये)

(२४) व्योषादवटी (चूसने के लिये)

उपरोक्त योगो मे से परिस्थिति के अनुसार तथा रोग अथवा रोगी के बलाबल का अध्ययन कर एक या इसस अधिक औषधि का सयोजन कर सकते हे।

प्रतिश्याय का दूषित होना तथा पुनरावर्तन रोग की अपेक्षा, औषधि व्यवस्था उपक्रम की कमी, त्रुटिपूर्ण औषधि प्रयोग, ओषधि का विपरीत अनुक्रम तथा पथ्यापथ्य अथवा ऋतुचर्या के अनुपालन मे व्यवधान उत्पन्न करने स होता है। अत रोगी की जीर्ण अवस्था निवारण या रोक शीघ्र ही कर लेना चाहिये। भगवान धन्वन्तरि तथा आद्य ऋषियो के उपदेशो को व्यवहार मे लाना मात्र दुष्टि निवारण तथा पुनरावर्तन निरोध का उपाय हे।

आयुर्वेदोपदेशेषु विधेय परमादर ।

पादटिप्पणियॉ—

(१) भूयिष्ठ व्याधय सर्वे प्रतिश्याय निमित्तजा (चरक)

(२) वातश्लेष्मोत्तरा प्राय प्रतिश्याय त्रिदोषज (काश्यप)

(३) सर्वोऽति वृद्धोऽहित भोजनातु
दुष्टिप्रतिश्याय उपेक्षित स्यात् (चरक)

(४) सर्व एव प्रतिश्याय नरस्या प्रतिकारिणी।
कलेन रोगजनना जायन्ते दुष्ट पीनस (सुश्रुत)

(५)- सर्व एव प्रतिश्याया दुष्टता यान्ति उपेक्षिता (अ०हृ०)

(६) सर्व एव प्रतिश्याय नरस्या प्रतिकारिण
दुष्टायाति कालेन तदासाध्या भवन्ति हिं
(मा० नि० भा० प्र०)

दमा (श्वास) Asthma

हकीम उमरदीन खॉ मोयल, फतेहपुर (शेखवाटी)

अरवी मे इस रोग को जीकुन्नफस कहते ह। इस रोग मे रोगी पर मिरगी की तरह अचानक आक्रमण होता हे, जिसमे श्वास लेने मे कष्ट होने लगता हे, फिर कुछ समय पश्चात् अपने आप समाप्त हो जाता है। ओर कुछ मुद्दत वाद पुन इसी तरह के दोरे आते हे।

तिब्वे यूनानी मे इसीलिये इस रोग को जी कुन्नफस (तगीय श्वास) इन्तेसावुन्नफास (खडा श्वास लेना) वोहर वगेरा अनेक नामो से सम्वोधित किया जाता है।

ये फेफडो की वीमारी हे इसमे रोगी के दो सासो के वीच का फासला वहुत ही कम होता है। यानि वार-वार सास पर सास लेता है इसका कारण यह है कि नसीम (**Oxygen**) की वहुत अधिक आवश्यकता होती है और श्वास के रास्ते तग होने ओर अखलत से भरे होने के कारण हृदय तक वो वहुत ही कम पहुचती है। जव श्वास के लम्वे होने ओर तेज होने से भी आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती हे, तो इसका हल इसी तरह किया जाता हे कि सास वार-वार लेना पडता हे, जव श्वास की आवश्यकता अधिक वढ जाती है, किसी प्रकार की कोई रुकावट नहीं होती तो श्वास अधिक होने लग जाता हे, उसे तनफ्फुसे अजीम कहते हे ओर इससे भी अधिक जरूरत पड जाती हे तो ओर सास मे तेजी हो जाती हे उसे सुरअते तनफ्फुस कहते हे। इससे भी अधिक आवश्यकता वढ जाती है तो रोगी वार-वार गर्दन सीधी करते हुए मुह फाडकर सास लेने लगता हे। उसे तवातुरे तनफ्फुस कहते हे।

इस रोग की माहिय्यत (**Pathology**) इस प्रकार वताई जाती हे कि फेफडो मे वाल की तरह वारीक शाखो की झिल्ली मे रक्त और वायु रुककर एकत्रित हो जाती हे ओर उन नालियो मे विशेष प्रकार की वलगमी रतूवात टपकती रहती है। ये रोग यदि शरीर के किसी अन्य आजा (अग) के सहयोग (शिरकत) से होता है तो उसे रवू शिरकी (अरजी) कहते है। ओर अन्य किसी आजा के विना शिरकत के तनहा ही मे रोग उत्पन्न हुआ हे तव इसे रवू मरजी कहते हे।

इस रोग [illegible] विषय मे यूनानी वेज्ञानिको मे मतभेद हे कुछ विद्वानो का मानना हे कि दमा का दारोमदार हिजाने हाजिज (**Diaphragm**) के सिकुडने पर ह तो कुछ तनफुस के अजलात के सिकुडने पर मानते हे। दरअसल दमे का दारोमदार उस असवी मरफज की खरावी से होता है जो रगो को हरकत देकर उन्हे सिकोडता आर फलाता है।

इस रोग के पेदा होने के वहुत कारण हे जिसमे निम्न लिखित हे।

(१) नजला,
(२) जोफे कुव्वा,
(३) फेफडो की रगो मे वलगमी रतूवतो का रुकना,
(४) फेफडो का वरम,
(५) सिल ओर दिक (राजयक्ष्मा)

१— दमे का कारण नजले का लेसदार आर ग्लीज वलगम होता हे जिसको फेफडे सीने ओर उसके आन्तरिक अगो से जव्ज करते हे, वे वलगम नजले के तार पर फेफडो मे गिरकर कसवा एरिया की शाखाओ को भर देते हे इस किस्म को इन्तेसावुन्नफस कहते है ओर रवूव वोहर उस सूरत को कहते हे जिसमे कसवा एरिया की शाखाये शोअव मे होने की वजाय फेफडो की शिरयानो मे इमतेला हो, लेकिन वाज विद्वानो के मतानुसार अरू के खथना के इमतेला को राव ओर शराइन के इमतेला को वाहर कहते है।

२— हरारत गरीजिया के जोक की वजह से तमाम वदन की कुव्वते मुहर्रेका जईफ हो जाती हे आर इस कमजोरी से सीने के अजलात शामिल होते हे इसलिये वो सिकुडने ओर फेलने से मजवूर होते है।

३— सीने ओर फेफडे मे हृदय की हरकत व हरारत की वजह से इमतेला हो जाता है जिससे हवा के रास्ते ओर उसके स्थान तग हो जाते हे ओर सास लेने मे कष्ट होता

है।

४— सिल ओर दिक (राजयक्ष्मा) से प्रभावित फुफ्फुसजन जीर्ण अवस्था मे पहुच जाते है रो के अन्तिम चरण पर पहुचने मे सास मे भी तकलीफ होने लगती है। बाज वक्त तो आवाज भी बारीक हो जाती हे अगर हैजरा तक प्रभाव होने पर आवाज भी बिगड जाती है और बलगम भी बाहर निकलता खुश्की ज्यादा हो जाती है। रोगी के फेफडे का तर करने वाली चीजो खाने के बाद दमे मे आराम मिलता हे।

५— फुफ्फुस और उसके निकटतम अगो को (जाव आजिग हृदय) वरम से भी हवा के मार्ग दबकर तग हो जाया करते है कभी कभी यकृत ओर प्लीहा ओर आमाशय के वगेरा के वरम से भी दमा हो सकता हे।

इन तमाम उपरोक्त कारणो के अतिरिक्त हमारे अनुभव मे आया हे कि निम्नलिखित से भी यह बीमारी उत्पन्न होकर कष्टदायी हो सकती है जैसे तम्बाकू, गुटखा, ठण्डी हवाये, प्रदूषण, गरदो गुब्बार, हृदय रोग, वृक्क रोग, आमाशय के विकार, अफरा पुराना, विबन्ध (कब्ज) नाक की बवासीर, नजला, खासी, जीर्ण, प्रतिश्याय, हमल की गिरानी, मानसिक परेशानी (गम, गुस्सा) वगैरा अज्म लोजन्तेन (टान्सिलो के बढने से), गले की बीमारियो से, सीने के मध्यभाग मे रसोली होने से, उख्तेनाकुर्राहीम (हिस्टीरिया) से, चेचक से, खसरा, आन्त्रिक ज्वर, शहीका (हूपिग कफ) अमराजे रहिम, अनुरूसमा आदि बीमारियो के होने के बाद इनकी चिकित्सा मे लापरवाही होने पर उन्हे दमा हो सकता हे।

यह रोग प्रत्येक अवस्था मे एव हर मुल्क मे हो सकता हे। परन्तु अधेडावस्था के लोगो मे अधिकतर देखने को मिलता हे।

श्वास लेने मे कष्ट होता है, सीने के अगले भाग मे बोझ के साथ दर्द होता है, यदि चेहरे पर सुर्खी होती है विशेष तोर से रूखसारो पर ऐसा लगता है जैसे कि लाल रग लगा दिया हो आखे भी लालिमा लिये होती है पपोटो मे वरम होता है प्यास अधिक होती है जुबान शुष्क होने लगती है, नब्ज सूखी चलती है।

फेफडे के वरम के कारण फेफडे के हवाई खाने भर जाते हें इसलिए सीने को ठोक कर देखा जाए तो गूजने की आवाज की तरह भद्दी और बुरी आवाज निकलती है, अगर रोगी के सीने पर हाथ रखकर देखा जागे और रोगी से कहा जाए कोई आवाज निकाले तो आवाज मे एक थर थरा हट जो स्वस्थ की अपेक्षा कहीं अधिक कम्पन महसूस होगी यदि आला मिसमा उस्सदर (**Stethescope**) सीने पर लगा लगाकर मरीज से कहा जाय कि वह कुछ बोले तो वरम के स्थान पर स्थान पर आवाज की गूज तेज मालूम होगी।

इसी प्रकार (**Stethascope**) मे श्वास के अन्दर जाने की आवाज मे एक प्रकार की खर-खर की बारीक आवाज सुनाई देती है ओर कभी आवाज मे बालो को चुटकी मे लेकर रगडने की सी मालूम होती हे। कमर के चोथे मौहरे के पास मिसताउस्सदर लगाने से जो आवाज स्वस्थ अवस्था मे होती हे उससे कहीं अधिक खरखराहट जिए सुनाई देती है।

इस रोग मे विशेष प्रकार का बलगम लेसदार चिपचिपा होता हे जो बडी मुश्किल से निकलता हे श्वास की तगी के कारण जब रोग भयकर रूप धारण कर लेता है तब बलगम भूरे रग का पतला होता हे। जो लालिमा लिये होता है। श्वास अधिक कष्टदायक होने लगता है नब्ज कमजोर हो जाती है चेहरे का रग फीका हो जाता हे होठ नीले पड जाते है जिस्म ठडा ओर पसीने से तर हो जाता है अन्त मे रोगी वेहोश होकर मर जाता है।

जब दमे का कारण नजला हो तब सीने मे खरखराहट की आवाज होती है, खासी के साथ बलगम निकलता हे, सास मे तगी होती है। रोगी जुबान बाहर निकालता हे, विशेष तोर मे दौरे के वक्त मे ज्यादा होती हे।

अगर इसके साथ खासी न हो तो ओर खासी मे गाढा बलगम न निकलता हो तो रोगी का अजाम ये होता हे कि वह नींद मे घुटकर रह जायेगा या उसका अजाम सुबत (नींद) और उसके बाद मौत होगा। यदि इसका कारण बुहर कस्वी होता है, श्वास लम्बे मुह फाड फाडकर लेता है, नब्ज भी अजीम होती है, प्यास शदीद होती है, जोफे कुब्बा मे सास बीच-बीच मे टूट जाती है, जिससे हवा का अन्दर जाना बाहर आना दो बार मे होता है, जिस प्रकार बच्चो के रोते वक्त होता है, इसको नफसे मुजाइफ भी कहते है। इस

शेषांश पृष्ठ ३२१ पर

फेफड़े. व उनके रोग

हकीम उमरदीन खॉ मोयल

उमदातुल हुकमा (स्वर्णपदक)
सदस्य, वोर्ड आफ इण्डियन मेडीसिन
वरिष्ठ चिकित्साधिकारी— राजकीय यूनानी होस्पीटल,
फतेहपुर शेखावाटी, सीकर (राजस्थान)

कसबातुर्रिया—

मुह का अन्तिम भाग जहा से हलक और जुवान की जड प्रारम्भ होती हे ओर गर्दन के नीचे तक जाती है, यहा तक कि हसली के नीचे से उतर जाती हे जहा दो भागो मे विभक्त हो जाती है, फिर इनमे एक साथ वहुत सी शाखाओ मे (जिनको उरूक खश्ना कहते है) वट जाती है ओर यह फेफडो के जोहर मे दुसरो रगो के साथ विशेष तोर पर गुथ जाती है ओर इनके मध्य फुफ्फुस का विशेष मास युक्त आ जाता हे। उरूफ खश्ना के ऊपरी भाग अन्त मे फेल जाते है, इनके अन्दर अत्यधिक वायु एकत्रित हो जाती हे, इन वायु के कोष्ठो मे ओर अरूक खश्ना के साथ वसीद शिरयानी ओर शिरयानो वरीदी की अन्तिम शाखे (जो वाल जैसी बारी रगे होती हे) जिनकी अरूक शाउरिया फेली हुई होती है इनको दिवारे इस प्रकार की पतली होती हे कि वरीद शिरयानी की अरूके शाअरिया से कार्वन डाई आक्साइड (दुखान मादा) हवा की थैलियो मे घुस जाता हे ओर यहा से अच्छी हवा के उत्तम भाग जजव से होकर इन रगो के खून मे चले जाते है जो शिरयाने वसीदी के द्वारा हृदय के वाये जोफ मे पहुच जाते है। वरीदे शिरयानी का जोफ इन दुखानी मवाद की वजह से अगर स्याही माइल था वो यही रक्त विशेष अज़्जा हवास्या (यारुह=प्राणवायु) के कारण लाल शिरयानी हो जाता हे।

यानी के मशहूर विद्वान जालीनूस ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक तशरीह कवीर (Anatory) मे लिखा है कि मनुष्य जव स्वस्थ होता है तो उसके सीने का निचला भाग हरकत करता हे परन्तु वह जव कठिन परिश्रम करता हे या उसे वुखार हो जाता है तव पसलियो के मध्य के अजलात हरकत करते हे ओर जव हवा की आवश्यकता इससे भी वढ जाती है तव सीने का ऊपरी भाग भी हरकत करता हे।

अव आप वखूवी समझ गये होगे कि हम जो रोजाना रात दिन सास लेते हे उसका मुख्य अग फुफ्फुस ही हे जिसको सक्षिप्त जानकारी उपरोक्त वर्णित लेखनी से स्पष्ट हो चुका हे अव हम इसमे उत्पन्न होने वाले महत्त्वपूर्ण रोगो के विषय मे जानकारी करते है।

१— जीफुन्नफस (दमा)
२— खासी (सुआल)
३— वरम शोअव
४— खून थूकना (नफसुधम)
५— फेफडो का वरम (जातुरिया)
६— उब्बारे अतफाल (पसली चलना)
७— शहीका (काली खासी)
८— सिल
६— नफसुधम मिदी (पीप थूकना)
१०— सीने की पीप कटा हुस्सदर
११— जातुलजम्ब (जुनाव)
शोसा (Pleurisy of the talsarises)

जातुल सदर (Anterior messol mites)

जातुल अर्ज (Posterior mesodmites)

सीना जकड़ना (जमूदे सदर)

अब इन उपरोक्त फेफड़ों की बीमारियो के विषय में पूर्ण जानकारी देना एद उनमें से प्रत्येक की चिकित्सा लिखना बहुत कठिन है क्योंकि यह स्वयं अपने आप मे एक बहुत बड़ी पुस्तक हो जाती है, परन्तु मे फुफ्फुसों मे होने वाल रोगों में फेफड़ों का वरम (जातुर्रिया) जो एक आम बीमारी है और जिससे लगभग सभी परिचित हैं इसका संक्षिप्त वर्णन करते हुए इस रोग की विस्तार से चिकित्सा लिखने का प्रयास कर रहा हूँ।

जातुर्रिया (निमोनिया)—

यह दो प्रकार का होता ह हाद (Accute) और मुजभिन (Chronic) हाद की भी दो किस्मे हैं।

१— जातुर्रिया फस्सी (इसमें फेफड़े या उसके कोई भाग में वरम हो जाता है)

२— जातुर्रिया फुनेसी (इसमें फेफड़े के छोटे लोथड़ों में वरम होता है इसमें फेफड़ा पूरा या उसका आधा भाग या कुछ भाग रोग से पीडित हो जाता है, जो तीन श्रेणियों में विभक्त होता है (जिसे दर्जा इमतेलाइया)

श्रेणी प्रथम में फेफड़ा रक्तसे पुर (अधिक भरा हुआ) होता है, इसे छूने पर चिपचिपाहट सी महसूस होती है और थोड़ा सा दबाने से अगुलियों के निशान बन जाते हैं और उसे पानी में डाल दिया जाय तो उसका कुछ भाग पानी में डूब जाता है और कुछ पानी पर तैरता रहता है। अगर इसे काटकर अवलोकन करें तो इसमें झागदार रक्त निकलता है, जो बारीक कोशिकाओं जैसी नालियां हैं, वे रक्त से भर जाती हैं और उनकी दीवारो से रक्त टपकने लगता है, जो हवाई खानों (वायुकोषों) में इकट्ठा हो जाता है।

दूसरा दर्जा— तकब्बुद यकृत की तरफ फेफड़ो में सख्ती रूप कठोरपन होता है, दबान पर आवाज नहीं होती है और पानी में डालने से फेफड़ा डूब जाता हे आर उसे काटा जाय तो किसी कठोर चीज की तरह कट जाता है और इसका रग गहरा कालिया लिये यानी यकृत की तरह होता है।

तीसरा दर्जा तकब्बुदे इजवेसरी— इसमे फेफड़ा गल जाता है और उसका रंग मटियाला हो जाता है, काटने पर इसमे से भूरे भूरे रंग का पानी निकलता है। यह स्थिति अत्यन्त गम्भीर एवं असाध्य होती है, रोगी कुछ दिनो म जीवन लीला समाप्त कर लेता है।

निमोनियां हर उम्र मे हो सकता है, परन्तु जन्म से ६ वर्ष तक की आयु के बालको को ये रोग बहुत होता है। युवा भी इस रोग से अधिक पीडित होते हं, परन्तु युवतियां कम होती हैं और देहाती लोगो की अपेक्षा शहरी लोग अधिक पीडित होते हं, यह रोग कभी कभी महामारी के रूप मे फैल जाता है, अधिकाश शरद ऋतु एव वसंत मे इसका प्रकोप अधिक होता ह, इस रोग का सबसे बड़ा कारण सर्दी लगना या सर्दी के मौसम म ठण्डी चीजे खाना जैसे आइसक्रीम, गुलकन्द, गुलबनफशा शर्बत, आदि ठडी तेज हवाओ एव ठंडे पानी से नहाने से अक्सर इससे कमजोर वृद्ध एव बच्चे अधिक पीडित होते हैं। परन्तु ताकतवर एवं शक्तिशाली व्यक्ति भी इस रोग से पीडित होते हैं, इसमे दाहिने फेफड़ क अपेक्षा बांया फेफड़ा आर ऊपरी भाग की अपेक्षा नीचे का भाग अधिकांश पीडित होता है। इसमे कठिन परिश्रमी एवं शराबी लोग एव खान पीने मे कोई परवाह नहीं करते, ऐसे लोग अधिक पीडित होते हैं। सीने की बीमारियो मे सबसे अधिक कष्टदायी रोग है। इसका श्वास क्रिया से सीधा सम्बन्ध ह। इस रोग के फलने मे प्रदूषण का सबसे अधिक योगदान है। जब कोई इस रोग से पीडित होता ह तब उसे प्रथम बदन मे सूखी बेचनी होकर सिरदर्द होकर ज्वर हो जाता हे और ज्वर के साथ-साथ कपकंपी के साथ-साथ सर्दी भी लगती हे आर एक साथ कमजोरी का अनुभव होता ह, मतली होती ह, वमन हा जाता है, ज्वर की तेजी से रोगी बहकने भी लग जाता है, बेचनी बढने लगती ह आर रोगी को हल्की बेहोशी होने लगती है, रोगी से पूछताछ से पता चलता हे कि नजला जुकाम हुआ हे शरीर पर खुश्की और बुखार से शरीर गर्म महसूस होता है नाडी गति ६० से १२० तक हो जाती ह, बुखार १०२ से १०५ तक पहुच जाता ह और श्वास ३० या ४० और कभी कभी ६० या ७० हो जाता ह। शुरू म नाडी लम्बी व मुलायम होती ह। अन्त मे दबील और धीमी हो जाती हे सीने म दर्द होता है, खांसी खुश्क आती ह मगर सीने के दर्द क कारण रोगी खांसी रोकता ह। आर कभी खांसी

इतनी तेज तेज होती है, रोगी जब बैठता है या सीधा लेटता हे तो खासी अधिक आती है, शुरू मे बलगम नहीं निकलता परन्तु बाद मे गाढा चिपचिपा लेसदार लालिमा लिये व भूर रग का बलगम मिनकलता हे, रोगी की जुबान मेली व किनारे पर काटे से दिखाई देते है, नाक सुर्ख होती हे, प्यास अधिक होती है, जिस तरफ के फेफडे मे अधिक वरम होता हे, उस तरफ के गाल भी अधिक लाल दिखाई देते ह। सास मे कष्ट होता है, जब रोग असाध्य होने लगता हे, हिलावत का कारण होने लगता हे, तब बलगम लेसदार नहीं निकलता बल्कि पतला और मटमैला भूरे रग का लालिमा लिये हुये निकलने लगता है, और श्वास लेने मे काफी कष्ट होता है। नब्ज नाडी बहुत कमजोर हो जाती हे। चेहरा फीका होठ नीले और शरीर ठडा होने लगता हे ओर पसीना अधिक आने लगता है, अन्त मे रोगी इतना कम्जोर हो जाता है कि बेहौशी आने लगती है, ओर रोगी मर जाता है।

इस रोग मे उपद्रव के रूप मे जो रोग उभरते है, उनमे सरसाम गुर्दो का वरम जोडो के वरम हृदय के खानो मे वरम हृदय की बाहरी झिल्ली पर वरम आदि हो सकता है। यदि रोग के लक्षण हल्के हो तो पाच से आठ रौज मे बुखार उतर जाता है, इसमे कुदरती तौर पर रोगी को दस्त आते हे या नकसीर आती है या पसीना वगेरह आकर रोगी स्वस्थ होने लगता हे और यदि लक्षणो का भयकर रूप होने लगता हे तो ६ से १२ दिनो मे रोगी की मृत्यु हो जाती हे। मोत का कारण फेफडो का वरम अधिक होना, जिससे फेफडो की क्रिया समाप्त हो जाती है और श्वास लेना रुक जाता हे।

इस रोग के और भी प्रकार है जातुर्रिया फुसेरी, जातुरिया मुजमिन वगैरह, परन्तु समय के अभाव के कारण व अधिक विस्तार की नजाकत समझकर सक्षिप्त ही प्रस्तुत है। अब इस रोग की सफल चिकित्सा का अवलोकन करे जो निम्न लिखित है—

चिकित्सा—

यदि रोगी को कब्ज हो तो सबसे पहले उसकी कब्ज दूर करे। यदि रोगी की स्थिति मुह से दवा लेने की है तो उसे लउक सपिस्ता खयार शम्ब्री १ तोला अर्क गावजुवान १२ तोला मे जोश देकर पिलाये अन्यथा हुकना (एनिमा) रोगन एरण्ड मे नमक का गर्म पानी डालकर एनीमा कराये. और आते साफ करे। जब आते साफ हो जाय तब जोशादा पिलाये। उन्नाव ५ दाना, गावजुवान ४ माशा, बेहदाना ३ माशा, लिसोडा ६ दाना, पानी मे जोश देकर शर्वत बनफशा मिलाकर खूबकला छिडककर पिलाये यह दिन मे दो बार आवश्यक है।

अगर रोग मे जियादती हो ओर प्यास अधिक लग रही हो तो इसी नुस्खे मे तुख्म खतमी, शीरा तुख्म काहू ३ माशा, शीरा मग्ज ४ माशा, तुख्म कदू शिरी मिलाकर दे ओर यदि खासी अधिक आये तो शर्वत एजाज २ तौला अर्क गावजुवान १२ तोला मे जोश देकर पिलाये, लउक सपिस्ता, लउक मोउतदिल को भी अर्क गावजुवान मे जोश देकर दिया जा सकता हे। सीने पर कैरुती अरदे किरशना की मालिश कराये। या ऐलेवा १ ग्राम, केसर १ ग्राम, पीसकर अण्डे की जर्दी या मोम आदि मे मिलाकर नीम गर्म मालिश कराये रुई सीने पर बाध दें पलाश के पत्ते भी बाधे जा सकते है, यदि सीने मे दर्द अधिक होता है तो लोबान १ माशा मोम सफेद १ माशा दोनो मिलाकर मूग के बराबर गोलिया बनाये एक-एक गोली सुबह-शाम दें गर्म। पानी से प्यास के वक्त नीम गरम पानी या नीम गरम अर्क गावजुवान या अर्क सौफ थोडा-थोडा पिलावे।

यदि इससे भी लाभ न हो तो।

सत लोबान १ रत्ती, कुश्ता बारहसिगा २ रत्ती, कुश्ता अभ्रक १ रत्ती, कुश्ता तनकार कुश्ता गोदन्ती २-२ रत्ती, सब मिलाकर शहद के साथ दिन मे तीन बार दे।

रोगनअरण्ड २ तोला, शहद ४ तोला, अदरक का रस १ तोला, मिलाकर थोडा थोडा दिनमे कई बार चटाये।

रोगी को गर्म दूध मे शहद मिलाकर पिलाये आशे जौ या साबूदाना यखनी गोश्त व चूजे का शोरबा, मूग की दाल का पानी थोडी-थोडी मात्रा मे प्रत्येक दो-दो घण्टा के पश्चात् देते रहे।

यदि दूध के इस्तेमाल से पेट मे अफारा आता हो और इसके कारण श्वास लेने मे अधिक कष्ट होता हो तो इसमे सोफ जोश देकर या चूने का निथरा पानी मिलाकर देवे या दूध की बजाये माउलजुबुन अण्डे की सफेदी का पानी थोडा-थोडा दे। ओर नीम गरम पानी मे थोडा नमक

घोलकर दे तो अधिक लाभदायक होता है। रोगी को गर्मी महसूस हो रही है। प्यास अधिक हो तो जोशान्दा गर्म न दे। बल्कि ठण्डा करके लुआब मे शीरा तुख्म खुरफा शीरा मग्ज तुख्म कदू व शीरा तुख्म रख्यारेन के साथ शर्वत निलोफर मिलाकर पिलाये। फिर रोग मे जेसे जेसे कमी आये गिजा खुराक को बढाते जाये।

सावधानी—

रोगी को गर्म एव स्वच्छ कपडे पहनाये। हवादार चौडा एव मोउतदिल वातावरण के मकान मे रखा जाये। रोशनी एव हवा की आमदरफ्त हो रोगी को आरामदायक बिस्तर पर रखा जाय बाकी रोगी आराम व सकून से लेटा रहे।

रोगी को ज्यादा चलने फिरने की आज्ञा न दें औरनहीं किसी से ज्यादा बात करे। रोगी के पास ज़्यादा शोरगुल न करे। कमरे या उसके आस-पास धुआ न होने दे। सीने को हरकत करने से रोके। कमरे को सर्दी या गरम रखा जाय रोग पीडित भाग पर जोके भी लगाई जा सकती है।

▲

दमा श्वास (अस्थमा)

शेषांश पृष्ठ संख्या 317 से

वक्त मे ऐसे सास का सबब है कि कुब्वत कमजोर हो जाती है और इन्तेसाबे तनफ्फुस (सास खडा) क्योकि खडे होने से जिगर और मैदा वगैरा भी नीचे सीने और कमर से हट जाते है। इसलिए वह फेफडो पर पडकर दबाव नहीं डालते ओर रोगियो को अनुभव के पश्चात् इसका ज्ञान हो जाता हे। इसलिए सास लेने के वक्त वाह सीधे खडे होते हे ताकि श्वास जारी हो सके नब्ज नरम होती है।

ज्यादातर रोगियो के अवलोकन के पश्चात् इस निर्णय पर पहुचे है कि दमा के रोग के वास्तविक निदान के जो लक्षण प्राप्त हुये हे वे निम्नलिखित हे।

(१) दमे की बीमारी आमतौर पर रात के पिछले हिस्से से शुरू होती है।

(२) दौरे के समय रोगी का सीना जकडा हुआ मालूम होता है।

(३) घबराहट होती हे सीना फुलाकर सास लेने की कोशिश करता है।

(४) सास को अन्दर की तरफ लेने की हरकत छोटी होती है और श्वास बाहर निकालते वक्त हरकत लम्बी होती है।

(५) सास मे साय साय की आवाज आती है।

(६) आखे उभरी हुई और चेहरा उदास और परेशान होता है।

(७) शरीर का तापमान घटकर कभी ८० फारेनहाइट से ८२ फारेनहाइट तक आ जाता हे।

(८) श्वास की तकलीफ से शरीर की त्वचा नरम या पसीने से तर होती है।

(६) इस मर्ज का दौरा २-३ घटे से १६ घटे तक रहता है।

(१०) दोरे के बाद पसलियो के बीच मे अजलात कुछ दिन तक दुखते रहते है।

(११) दोरा जब नहीं होता हे तब शेष दिनो में रोगी स्वस्थ नजर आता है।

(१२) रोग जब पुराना हो जाता है तो शरीर से कमजोर दुबला दिखाई देने लगता है। चेहरे पर उदासी, दानोशाने गोल सामने और ऊपर को झुके हुए गाल चिपके हुए होते है।

(१५) इसके दौरे कभी कायदे के साथ आते है और कभी बेकायदे आते है कभी दौरा एक साल के बाद होता है कभी हर महीने तो कभी प्रत्येक दिन एक निश्चित समय पर आता है।

■

फुफ़्फुसों का कैंसर—एक विस्तृत विवेचन

आयुर्वेद वृहस्पति डा० जहानसिह चौहान
डी एससी , एम एस सी ए , आयुर्वेदाचार्य
एन डी ए , मु० पोस्ट ठठिया, जनपद— कन्नोज (उत्तरप्रदेश)

फेफडो के कैसर की संख्या—

१६ वीं शताब्दी मे महिलाओ का कैसर (सर्विक्स केसर) सवसे पहले नम्वर का पाया जाता था, पर अव फेफडो का कैसर काफी उच्च स्थान पर ओर दुनिया मे इससे मरने वालो की सख्या एक विलियन है। फुफ्फुस कैसर **(Cancer Of the Lungs)** पश्चिमी देशो मे सर्वाधिक रूप मे होता है। केवल अमेरिका ओर इग्लेण्ड मे ही विगत २०-३० वर्षो मे अत्यधिक सख्या मे लोग इस घातक रोग से आक्रान्त हो चुके हे। फेफडो का कैसर भारत मे पाये जाने वाले केसरो मे प्रमुख हे। लगभग ८से १४ व्यक्ति हर एक लाख व्यक्तियो मे से हर साल फेफडो के केसर से पीडित होते है। इनकी सख्या पिछले कुछ वर्षो से लगातार वढ रही हे। इसका प्रमुख कारण भारतीयो मे धूम्रपान के व्यसन का होता है। इस व्यसन का जाति या आर्थिक स्तर से कोई लेना देना नही है। यह देखा गया है कि ७५ प्रतिशत गरीव पुरुष धूम्रपान करते है। अत यह आश्चर्य नहीं है कि पश्चिमी देशो में जहाँ धूम्रपान हो रहा है, केसर भी स्थिर है, जवकि भारत मे यह अव भी वढ रहा हे।

फेफडो के कैसर होने मे कार्य स्थल कुछ मिनरलो व केमिकलो जेसे-एस्वेस्टस का भी प्रभाव पडता है। इन पदार्थो से भी कैसर हो सकता हे। यद्यपि धूम्रपान की अपेक्षा कम मात्रा मे होता है। धूम्रपान तथा केमिकल साथ-साथ ज्यादा हानिकारक होते हैं जितना एक-एक करके तुलर्नात्मक दृष्टि से अध्ययन करके यह देखा है, कि फुफ्फुस का कैसर धूम्रपान करने वाले व्यक्तियो मे अन्य लोगो की अपेक्षा अधिक मिलता है। इसमे भी यह देखा गया है कि जो व्यक्ति दिन भर मे २० सिगरेट से अधिक सिगरेटो का सेवन करते है, उनमे अन्य लोगो भी अपेक्षा फेफडो का केसर होने की अधिक सम्भावना रहती हे।

धूम्रपान से फेफडों का नुकसान—

लगातार सिगरेट के धुए से फेफडे की आन्तरिक सतह पर स्थित म्यूकस वनाने वाली कोशिकाये आकार मे वडी हो जाती ह ओर अधिक म्यूकस वनाने लगती ह। सीलिया जो सास के रास्ते मे स्थित होते हे तथा छोटे-छोटे गन्दगी के कणो को गले से वाहर निकालते हे समाप्त हो जाते हे। जिससे स्मोकर्स कफ हो जाता है। यदि इस समय धूम्रपान करने वाला व्यक्ति धूम्रपान छोड देता हे तो उपरोक्त वदलाव सामान्य स्थित मे लोट आते हे। यदि वह धूम्रपान जारी रखता है तो वहुत सारे एयर से नष्ट हो जाते है। इसके वाद भी धूम्रपान करते रहने से फेफडो की कोशिकाये असामान्य रूप से वढकर फेफडो के कैसर का निर्माण कर सकती है।

एक आदमी जो स्वय तो धूम्रपान नही करता है पर ऐसे व्यक्ति के साथ रहता है जो धूम्रपान करता है को भी कैसर होने की पर्याप्त सम्भावना रहती है। धूम्रपान न करने वाली पत्नियॉ जिन के पति धूम्रपान करते हे, सामान्य से ३५/ अधिक कैसर होने की सम्भावना रहती हे। वच्चे जिनके माता-पिता धूम्रपान करते है, तो फेफडे का इन्फेक्शन तथा अन्य बीमारियॉ होने की अधिक सम्भावना होती है।

फेफडो का कैसर महिलाओ की अपेक्षा पुरुषो मे अधिक पाया जाता है। इसका कारण कदाचित यही हो सकता है कि महिलाओ की 'अपेक्षा पुरुषो मे अधिक सख्या मे और अधिक मात्रा में मधुपान तथा धूम्रपान करते है। कोई भी देश क्यों न हो ओर कोई व्यक्ति कितना भी

आधुनिक क्यो न बन गया हो महिलाओ मे मद्यपान की प्रवृति प्रत्येक देश मे पुरुषो की अपेक्षा कम मात्रा अथवा कम सख्या मे पायी जाती है। यही बात धूम्रपान की भी है। यद्यपि मद्यपान की अपेक्षा धूम्रपान करने वाली महिलाओ की सख्या अधिक होती है।

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि महिलाओ की अपेक्षा पुरुषो मे फेफडे का कैसर अधिक प्रमाण मे होता हे, यह अनुपात १ और ३ का तो है ही किन्तु कहीं कहीं यह अनुपात १ और ३ का भी होता है। ऐसी मान्यता है कि अधिकाशतया यह रोग ४० वर्ष के उपरान्त होता है।

ग्रामीणो की अपेक्षा फेफडे का कैसर नगरवासियो मे अधिक परिमाण मे पाया जाता है नगरो मे भी यह श्रमिक वर्ग तथा निम्नवर्ग के लोगो मे अधिक पाया जाता है। दूषित वातावरण अथवा कल कारखानो के समीप के निवासी इससे अधिक प्रभावित देखे गये है। धूम्रपान से तो इसका सीधा सम्बन्ध है। किन्तु जो लोग कोलतार के कार्य से किसी प्रकार से सम्बन्धित है अथवा कोयले के धुए से जिनका अधिक सम्पर्क होता है, यह रोग ग्रस लेता हैं।

कारण जो फुफ्फुसों के कैंसर होने की सम्भावना बढाते हैं—

(१) सिगरेट पीना—

पुरुषो मे होने वाले ८५ पतिशत तथा महिलाओ मे होने वाले ७८ प्रतिशत फेफडो के कैसर सिगरेट पीने से होते है। १० प्रतिशत से भी कम कैसर धूम्रपान न करने वाले व्यक्तियो को होते है। धूम्रपान करने की अवधि पी गयी सिगरेटो की सख्या व टार या निकोटिन की मात्रा वढने के साथ साथ कंसर की सम्भावना भी वढती जाती है। यद्यपि धूम्रपान की हानि पहुचाने की कोई निश्चित सीमा नहीं है। यहॉ तक कि आधा पैकेट कम निकोटिन वाली सिगरेट पीना भी हानिकारक है। सुरक्षित सिगरेट जेसी कोई चीज नहीं हे जो कंसर पेदा करने की सम्भावना को वढाती न हो।

(२) सिगार व पाइप—

जो व्यक्ति सिगार या पाइप द्वारा धूम्रपान करते हे, उनमे केसर की सभावना यद्यपि सिगरेट पीने वालो की अपेक्षा काफी कम होती है पर धूम्रपान न करने वालो की अपेक्षा काफी अधिक होती है। इन व्यक्तियो मे मुह, इसोफेगस व श्वासनली का कैसर होने की भी सभावना अधिक रहती हे।

(३) इण्डस्ट्री से होने वाले नुकसान—

यदि आप किसी इण्डरट्रीयल पदार्थो के आसपास काम करते है तो आप मे केसर होने की अधिक सभावना रहती है। इन पदार्थो मे एस्वेस्टस, निकेल, क्रोमेट, कोल गेस, मस्टर्ड गैस, आर्सेनिक, मिथाइल क्लोराइड ओर रेडान आदि आते है। इन पदार्थो के साथ यदि आप धूम्रपान भी करते है तो कैसर होने की सभावना ओर भी वढ जाती है। उदाहरण के लिए— जो व्यक्ति धूम्रपान करते हे तथा एस्वेस्टस फेक्टरी मे कार्य करते हैं, केसर की सभावना ६० गुना अधिक होती है। सामान्य की तुलना मे एस्वेस्टस फैक्ट्री मे काम करने वालो मे फेफडो के केसर की सभावना ११ गुना अधिक होती हे। एस्वेस्टस का प्रयोग गृह निर्माण की विभिन्न वस्तुओ जेसे— पाइपो, छतो, फर्शो, चिमनियो, गटरो, प्लास्टिक एव पेन्ट मे होता है। आज भी एस्वेस्टस का उपयोग मोटरो के क्लिचो एव ब्रेको मे होता है। ये उपयोगी होते हुए भी खतरे से खाली नहीं हे। रेडियेशन व कैमिकल पदार्थ जैसे क्लोरोमिथाइल ईथर से भी इस कैसर की सभावना वढ जाती हे।

(४) अनचाहा धूम्रपान—

इसको पैसिव स्मोकिग भी कहते है। जिसका अर्थ हे किसी दूसरे के द्वारा पीये जाने वाले तम्वाकू के धुए का सेवन। यद्यपि दूसरे के द्वारा सेवन से धुए की मात्रा कम हो सकती है पर इसमे सभी हानिकारक पदार्थ होते हे। सम्पूर्ण जाच के वाद यह पाया गया हे कि उन पत्नियो को कैसर की अधिक सभावना रहती हे, जिनके पति धूम्रपान करते है, उनकी तुलना मे जिनके पति धूम्रपान नहीं करते है, फेफडे की टी० वी० फुफ्फुसो के कसर होने की सम्भावना को ८-६ गुना वढा देती हे।

इसके अतिरिक्त जो व्यक्ति खानो ओर खदानो मे काम करते हे उनको भी फेफडो का कैसर डस लेता ह। खानो मे जो लोग कार्य करते हैं, उनके श्वास मे धातु मिश्रित धूल के कण फेफडो मे पहुचते हे, इससे उनके फेफडो का कैसर होने की अधिक सभावना रहती हे। शोधो से यह निष्कर्प निकला हे कि खानो मे काम करने वाले श्रमिको

को संखिया तथा अन्य प्रक्षोभक पदार्थ से युक्त धूल सूघनी पडती है। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार के तीव्र सक्रिय पदाथ भी उसमे सम्मिलित होते है। उसके कारण यह रोग उत्पन्न होता है।

किसी अन्य रोग के कारण भी केसर की उत्पत्ति हो सकती है। विशेषतया यक्ष्मा और ब्रान्काइटिस आदि मे फेफडो में सीधे कैसर होने के साथ-साथ अन्य स्थानो के कैसर की जडे जब फेफडो तक आती है, तो उसके कारण भी फेफडो मे केसर हो जाता है। दूसरी अवस्था मे यह कैसर अधिक व्यापक तथा भयकर होता हे, क्योकि जडो के रूप मे यह चारो ओर स्वत शीघ्र फैल जाता है। इसीलिए फुफ्फुसग्रस्त पूर्व उपसर्ग जैसे इन्फ्लुएजा, यक्ष्मा (टी०बी०), श्वसनी-विस्फार तथा फेफडो का पुटिय रोग (सिस्टिक डिजीज आफ लॅग्स) आदि फेफडे के कैसर सहायक कारण माने गये है।

एक समाचार के अनुसार लकडी ओर उपलो से चूल्हे मे भोजन बनाने वाली महिलाओ को फुफ्फुस कैसर होने का खतरा बढ जाता है पर्यावरण एव स्वास्थ्य सेवा विशेष डा० किर्क स्मिथ के अनुसार प्रतिदिन २ घण्टे तक इस प्रकार के चूल्हे पर खाना बनाने वाली महिला के स्वास्थ्य पर उतना ही बुरा असर पडता हे जितना कि प्रतिदिन २० सिगरेट पीने वाले को।

फुफ्फुस कैंसर के लक्षण—

फुफ्फुस कैसरो के प्रारम्भिक लक्षण प्राय बहुत साधारण होते है जैसे कि खासी व खरखराहट का होना। इन लक्षणो को प्राय अधिक ध्यान न देकर नकार दिया जाता है, विशेषतया धूम्रपान करने वाले व्यक्तियो मे।

सबसे प्रमुख लक्षण लगातार खासी व खखार मे खून आना है अन्य लक्षणो मे बार-बार निमोनिया का होना, बुखार, कमजोरी, शरीर का वजन कम होना और सीने मे दर्द का होना है। गम्भीर रोग की स्थिति मे आवाज का बदलाव, सास फूलना, गर्दन मे गाठो का बढना, कन्धे व बाह का दर्द, खाना निगलने मे परेशानी और ऊपरी पलको की कमजोरी है। कुछरोगियो मे जब रोग शरीर के अन्य भागो मे फैल जाता है तो इसके लक्षण सिरदर्द, आखो की रोशनी का कमजोर होना, चक्कर आना व हड्डियो मे दर्द का होना है।

रोग को भली प्रकार समझने के लिए इन लक्षणो को विस्तार से नीचे दिया जा रहा है।

(१) खासी— फुफ्फुस कैसर का प्रथम लक्षण खासी है। खासी सूखी भी हो सकती है और बलगम भरी भी हो सकती हे यदि बलगम के साथ रक्त भी निकल तो फिर रोग के लक्षण स्वत ही स्पष्ट हो जाते हे। इनमे खासी का वेग मुख्यत रात्रि के समय अधिक होता है और इसमे बलगम रोग के प्रसार के अनुपात मे क्रमश बढता रहता है। कभी कभी यह बलगम रक्त मिश्रित भी रहता हे तथा रोगी को रक्त निष्ठीवन (Haemoptysis) भी होता है। कभी -कभी रोगी विकृत पार्श्व की ओर व्हीजिंग ध्वनि का अनुभव करता है, यह ध्वनि श्वसनी मे कुछ अवरोध के कारण उत्पन्न होती है। जो लोग धूम्रपान करते हे वे समझते है कि उनकी खासी धूम्रपान के कारण ह, इसके लिए कभी कभी वे इसके निदान मे आलस्य कर जाते हे अथवा कि असावधान रह जाते ह, रोग के सक्रमणकाल के कुछ माह के अन्दर रोगी को अवरोधक फुफ्फुस शोथ के दौरे भी पडते हे, इसके साथ साथ कुछ सप्ताह और माह के अन्दर रोगी को मृदु ज्वर के लक्षण प्रकट होने लगते है। इसलिये यह आवश्यक है कि ४५ वर्ष की अवस्था के उपरान्त यदि रोगी को स्थायी रूप से खासी आती हो तथा किसी दवा से स्थायी रूप से खासी शान्त न हो तो इस खासी को शका की दृष्टि से ध्यानपूर्वक देखना चाहिये तथा उसके कारणो की तत्काल खोज करनी चाहिये।

(२) वेदना— खासी के बाद फुफ्फुसगत कैसर का दूसरा आवश्यक लक्षण है वेदना। इस लक्षण के अन्तर्गत रोगी के विकृत पार्श्व मे वेदना तथा भारीपन की अनुभूति होती हे, जो गम्भीर श्वसन (Deep Breathing) के समय उग्र हो जाता हे। यह वेदना सकीर्णन (Constructive) प्रकृति की होती हे ओर मुख्य रूप से तब प्रकट होती ह जब श्वसनी पूर्ण रूप से अवरुद्ध हो जाती हे तथा फुफ्फुस का कुछ भाग फुफ्फुसपात की स्थिति मे पहुच जाता ह।

याद रहे— जब तक इसकी उत्पत्ति का कोई अन्य कारण दृष्टि गोचर न हो यह वेदना ४० वर्ष से कम की अवस्था के रोगियो मे राजयक्ष्मा होती हे। तथा ४० वर्ष की अवस्था के ऊपर की अवस्था की रोगी मे कैसरजन्य होती है।

राजयक्ष्मा जन्य कारणो मे रोगी को प्राय सायकाल के समय ज्वर की वृद्धि होती है, जबकि केसरजन्य कारण मे जब तक उसके ऊपर कोई और उपसर्ग उत्पन्न न हो जाए तब तक ज्वर की वृद्धि नहीं होती है। कभी-कभी अन्त पूयता (इम्पाइमा) तथा प्लूरल इफ्यूजन के कारण स्थानिक वेदना होती है।

उपरोक्त वेदना (छाती मे पीडा) सम्पूर्ण छाती मे हो सकती हे अथवा केवल एक ओर या स्थान पर जहाँ कि व्याधि ने जन्म लिया है। किन्तु यह पीडा निरन्तर बनी रहती है। कभी-कभी रोगी को ज्वर भी हो जाता हे। यह श्वसन सस्थान के अगो मे किसी भी प्रकार की अनियमितता के कारण होने लगता है। ज्वर के कारण रोगी चिकित्सक के पास जाता है तो चिकित्सक भी साधारण ज्वर समझ कर उसकी चिकित्सा करता है और उससे उसका ज्वर ठीक हो जाता है तो रोगी समझता है कि उसका ज्वर भाग गया है। अत वह स्वस्थ हो गया है। पर उसका केसर तो बना ही रहता हे।

(३) कष्टश्वास— श्वास लेने मे कष्ट की उत्पत्ति फुफ्फुस केसर का एक और सामान्य लक्षण है जो कि फेफडो के केसर की उस अवस्था मे उत्पन्न होता है। जबकि केसर के कारण श्वसनी अवरुद्ध हो जाती हे। साथ ही फुफ्फुस का कोई एक खण्ड निपात की स्थिति मे पहुच जाता है।

याद रहे— सामान्य रूप से श्वास कष्ट के लक्षण निम्न अवस्थाओ मे भी मिलते ह, इनका अवश्य ध्यान रखना चाहिये—

१— फुफ्फुसावरणशोथ तथा अन्त पूयता मे।

२— श्वासकष्ट प्राय प्रत्यावर्ती स्वरयन्त्र तन्त्रिका के सपीडन के कारण भी उत्पन्न हाता ह।

(४) शरीर के भार मे कमी— रोगी के शरीर के भार की कमी भी केसर का एक प्रमुख लक्षण हे। ऐसा लक्षण टी० बी० मधुमेह आदि क्षयजन्य रोगो मे भी विद्यमान होता ही हे परन्तु स्थायी रूप से खासी के साथ क्षुधानाश एव शरीर मे निरन्तर भार की कमी निश्चित रूप से फुफ्फुसागत केसर का द्योतक हे।

कभी कभी इस केसर मे निगरणकष्ट भी हो जाता हे। रोगी के कन्धे व बाहु मे तीव्र शूल हाता है।

(५) ज्वर— फुफ्फुसगत केसर मे ज्वर भी प्रमुख लक्षण ह जो तब प्रकट होता हे जब कि इस रोग के साथ साथ ऊपर से उपसर्ग (इन्फैक्शन) का आक्रमण भी होता है। ऐसा रोगी कृशकाय होता है। ओर निरन्तर बीमार रहता है। साथ ही बलगम के साथ पीले रग का स्राव निरन्तर स्रवित होता रहता है। स्राव मे बदबू विद्यमान रहती है।

इस अवस्था को फुफ्फुसगत विद्रधि (लग्स एब्सिस) समझकर टाल देते हे। अथवा एण्टीबायोटिक्स के अधिक सेवन से उसे दबा देते है।

(६) रक्त निष्ठीवन— रक्त निष्ठीवन भी फुफ्फुसागत केसर का एक प्रमुख लक्षण हे। इसमे रोगी को निरन्तर बलगम और खासी के साथ रक्त के कुछ कुछ छीटे दिखाई देते है।

इस अवस्था को भी लोग टी० बी० समझकर टाल देते है।

नवीनतम अध्ययन के अनुसार—

● ४० वर्ष की अवस्था के पूर्व रक्तनिष्ठीवन प्राय टी० बी० जन्य होता है जबकि—

● ४० वर्ष की अवस्था के बाद रक्त निष्ठीवन प्राय कैंसर जन्य होता है।

● वृद्ध व्यक्ति मे थोडा भी रक्त निष्ठीवन फुफ्फुसगत केसर का द्योतक है। साथ ही रक्त के साथ अन्य कोई भी लक्षण न होते हुए भी इस लक्षण को ध्यान से देखना चाहिये।

नोट— फुफ्फुसगत कैंसर मे इसी प्रकार का थोडा सा रक्तस्राव ही अधिक रक्तस्राव से भी अधिक महत्त्व रखता है।

फुफ्फुस कैंसर की अवस्थानुसार विभाग—

फुफ्फुस केंसर किस अवस्था मे पहुच चुका है निदान ओर चिकित्सा मे इसकी विशेष महत्त्व है। इस रोग की अवस्थाओ के विभाग लगभग इस प्रकार है—

१— फुफ्फुस केसर की प्रथम अवस्था— इस अवस्था मे फुपफुस के किसी भी अश को आश्रय मानकर छोटे छोटे अर्बुदो की उत्पत्ति होती हे। क्रमश यह बढने लगते हे। यह वृद्धि रोगी की पूरी अज्ञानता मे ही होती ह। यह अवस्था छुपके चुपके इस प्रकार बढती हे कि इस रोग के विशेषज्ञ भी रोगी के शरीर पर इसके आक्रमण का आभास कर

पाते।

इस अवस्था मे खासी और सर्दी लगने का कोई लक्षण न रहने पर भी कफ निर्गमन, नींद की अवस्था मे खासी होने के यह सभी लक्षण दिखाई देते हे।

२— फुफ्फुस के कैसर की द्वितीय अवस्था— फुफ्फुस के भीतर अर्बुदो की वृद्धि के कारण थोडा तना हुआ भाव, भारवोध, श्वास कष्ट एव बीच बीच मे यन्त्रणा की अनुभूति इस अवस्था मे होती हे।

३— फुफ्फुस के कैसर की तृतीय अवस्था— फुफ्फुस केसर की इस अवस्था मे दिन रात मे किसी एक समय स्थाई भाव से बहुत समय तक दर्द होता हे और हल्का हल्का ज्वर रहता है, रोगी का शरीर दुर्वल और भीतर अर्बुदो की वृद्धि होती रहती है। साथ ही रोगी के रक्त मे से लाल रक्त कण नष्ट हो जाते है और सारे शरीर मे विशेष रूप से मुह, नाक, आख मे पाण्डुता देखी जाती है।

रोगी का क्रमश शरीर सूखता जाता है और खाने मे अरुचि रहती है। रोगी कुछ भी नहीं खा सकता। यदि खा भी ले तो कै (वमन) हो जाती है। वेदना की तीव्रता बढने लगती है और ज्वर तीसरे पहर आकर सवेरे उतर जाता हे। कुछ दिन के बाद यह ज्वर निरन्तर रहने लगता हे। कभी कभी कफ के साथ रक्त के छींटे दिखायी देते है

यह भी देखा गया है कि जिस और के फुफ्फुस पर आक्रमण होता है उस ओर का हाथ पक्षाघात ग्रस्त हो जाता हे। दोनो फुफ्फुस आक्रान्त होने पर दोनो हाथ पक्षाघात ग्रस्त होते है।

४— फुफ्फुस कैसर की चतुर्थ अवस्था— इस अवस्था मे रोगी जल्दी ही जीर्ण शीर्ण तथा दुर्वल हो जाता है। रोगी को सब समय ज्वर रहता है। बीच बीच मे रक्त की वमन भी होती है। श्वास कष्ट के साथ अन्त मे रोगी असह्य पीडा को भोग करते करते मृत्यु की गोद में सो जाता है।

साराश मे—

- *जीर्ण कास इसका सामान्य लक्षण है।*
- *कफ मे रक्त (हीमोप्टिसिस) का आना लगभग आधे मरीजो मे*
- *छाती मे दर्द (चैस्ट पेन)*
- *बुखार* • *सास लेने मे कष्ट*
- *गाढा बदबू दार कफ, कैसर की बडी बुरी अवस्था मे गम्भीर स्वरूप का सीने मे दर्द*
- *भूख का न लगना एव*
- *शरीर भार मे कमी रोग की अन्तिम अवस्था में*

उपद्रव—

कभी कभी फुफ्फुसगत कसर मे शरीरगत अन्य उपद्रव भी दिखायी देते ह। यथा—

- चयापचयी विकार
- तन्त्रिका मासपेशीगत् विकार
- रक्तवाहिनीगत विकार
- रक्त सम्बन्धी विकार
- अस्थिगत विकार

कभी कभी फुफ्फुस केसर हृदय, रक्तवाहिनियो, लिम्फ नोड्स तथा बहुत से अन्य अगो तक फेल जाता है।

जब फुफ्फुस कैसर के विक्षेप मे मस्तिष्क अथवा सधि स्थान भी प्रभावित हो जाता है, उस अवस्था मे रोगी मे अनेक मस्तिष्कगत तथा सन्धिगत् लक्षण दिखायी देते हे।

इस रोग की आन्तरिक अवस्था मे घातक उपद्रव पैदा हो जाते हैं। यथा—

- अत्यधिक खासी
- अत्यधिक बलगम का निकलना
- रक्तनिष्ठीवन
- श्वास कष्ट
- फुफ्फुसावरणगत स्राव की अधिकता के कारण स्थानिक वेदना।
- शरीर के भार मे कमी
- अनेक हृदय फुफ्फुसगत लक्षण आदि।

नोट— इनमे से किसी लक्षण के उग्र रूप धारण करने पर रोगी की तत्काल मृत्यु हो जाया करती है। इनमें रक्तनिष्ठीवन सबसे प्रमुख लक्षण है।

याद रहे— रोगी जब इन सबको किसी अन्य कारण से समझता है तो वह चिकित्सक को भी उसी अनुसार वर्णन करता है। उसका परिणाम यह होता हे कि चिकित्सक ठीक निर्णय नहीं पर नहीं पहुच पाता हे। और रोगी का वाह्योपचार होने लगता है। उससे कोई एक या सब लक्षण कम होने लगते है। ऐसी अवस्था मे जो रोगी सावधान होता

है और जो चिकित्सक निपुण होता है, वह रोगी का सारा विवरण जानकर और उसके आसपास के वातावरण को जानकर अनुमान लगा लेता है कि रोगी को ज्वर, कास, श्वास आदि नहीं अपितु मुख्य रोग कैसर है। अन्यथा जो असावधान होते है उनका वैसा ही उपचार चलता है और रोग बढता ही जाता है।

फेफडे के कैंसर की जांच—

बिना किसी लक्षण के कैंसर को प्रारम्भिक अवस्था मे ही सीने के एक्स-रे व बलगम की जाच द्वारा पहचाना जा सकता है। यद्यपि इन जाचो से न तो मरीजो की उपचार की सख्या मे वृद्धि देखी गई है और न इससे होने वाली मृत्युओ की सख्या में कमी।

बहुत सारी विधिया है जो फेफडे के कैसर के निदान मे प्रयोग की जाती है तथा उससे कैसर के प्रकार व विस्तार के बारे मे पता लगाया जाता है। उचित जाच द्वारा ही सबसे उपयुक्त उपचार किया जा सकता है। फुफ्फुसगत कैसर के निदान के लिए रोगी की अवस्था रोग का काल तथा विशेष परीक्षण विशेष रूप से सहायक होते है।

(१) रोग के सम्बन्ध में उचित जानकारी—

सबसे पहले सम्पूर्ण शारीरिक स्थिति व मेडिकल हिस्ट्री की जानकारी लेता है। यथा—

१— क्या मरीज धूम्रपान करता है ? हा तो कितनी सिगरेटे प्रतिदिन पीता है तथा वह कितने सालो से धूम्रपान कर रहा है।

२— फेफडे कैसा काम कर रहे है।

३— कोई पहले की दिल या फेफडे की बीमारी तो नहीं है।

(२) सीने का एक्स-रे—

सम्भावित ट्यूमर का पता लगाने मे यह बहुत उपयोगी है। इससे लगभग ६२ प्रतिशत रोगियो मे कैसर का सही सही पता लगाया जा सकता है।

(३) टोमोग्राम—

यह वह एक्स-रे है जो फेफडे के एक पतले भाग को दिखाते है तथा रोग का वह भाग जो सामान्य एक्स-रे से पता नहीं चलता, इनसे पता चल जाता है।

(४) सी० टी० स्कैन (कम्प्यूटराइज्ड टोमोग्राम)—

इसमे एक्स-रे किरणे शरीर के चारों ओर घूम कर कई सारे एक्स-रे विभिन्न कोणो से खींचती है। इस सूचना को कम्प्यूटर, व्यवस्थित कर शरीर के एक भाग के पतले क्रास सेक्शन को एक्स-रे के रूप में दिखाता है। सी० टी० स्कैन फेफडे के कैसर का सम्बन्ध अन्य भागो से दिखाकर तथा इसके विस्तार को बता सकता है।

(५) स्पूटम साइटोलाजी—

इसमे फेफडो की आतरिक कोशिकाओ का जो बलगम के साथ बाहर निकलती है, सूक्ष्मदर्शी द्वारा जाच की जाती है। कुछ फेफडे के कैसर के रोगियो मे जिनके सीने का एक्स-रे सामान्य होता है को इसके द्वारा पहचाना जा सकता है तथा कैसर के प्रकार का भी निर्धारण किया जा सकता है। इसके द्वारा टयूमर भी फेफडे मे सही स्थिति नहीं जानी जा सकती है। अत अन्य चीजे भी सहायक है।

स्पूटम साइटोलाजी अर्थात् कोशिकीय परीक्षा के लिए बलगम तथा स्राव के तीन निदर्भ की परीक्षा की जाती है। जिन रोगियो मे बलगम कम निकलता है उनमे एरोसोल के प्रयोग से बलगम के स्राव को बढाने मे अधिक सहायता मिलती है। इससे ८० प्रतिशत अर्बुद के प्रकार की दुष्टि मे भी सहायता मिलती है।

उपरोक्त जाचो के अतिरिक्त फुफ्फुस कैसर के निदान मे कुछ अन्य विशेष परीक्षाये भी है यथा—

१— ब्रान्कोस्कोपी

२— सुई द्वारा बायोप्सी

३— थोरेकोटमी

४— लिम्फग्रन्थि की बायोप्सी

५— रेडियो न्यूक्लाइड स्कैन

६— अन्य जाच जो फेफडे के कैसर के निदान तथा विस्तार जानने के लिए प्रयोग होती है। जैसे खून की जाच, एम० आर०आई० या मैगेनेटिक रेजोनेन्स इमेजिंग और मोनोक्लोनल एण्टीबोडीज मे शरीर की डायमेन्सनल इमेज बनती है तथा इस मे रेडिएशन का भी प्रयोग नहीं होता है।

मोनोक्लोनल एण्टीबोडी एक विशेष प्रकार की प्रोटीन

है जो कैंसर पहचानने में काम आती है।

जैसा कि पूर्व मे बताया जा चुका है कि खासी इसका प्रमुख लक्षण है। यदि चिकित्सा द्वारा खासी किसी प्रकार से भी ठीक न हो रही हो तो उचित यही है कि सीने का एक्स-रे करा लेना चाहिये। एक्स-रे से इसका ज्ञान हो जाता है। किन्तु रोग के बढ जाने पर झिल्ली और फुफ्फुसो के बीच मे पानी आ जाने से एक्स-रे मे वह स्पष्ट नहीं होता है। इसके कारण इसका पता भी नहीं चलता और रोग छिप जाता है। ऐसी दशा मे यही उचित है कि उस पानी को निकालकर पुनः एक्स-रे कराना चाहिये और यह भी ध्यान मे रखना चाहिये कि उस पानी का वर्ण किस प्रकार का है। यदि वह पानी रक्तिम या रक्त मिश्रित है तो यह निश्चित करने मे विलम्ब नहीं करना चाहिये कि रोगी को कैंसर का रोग है। उस पानी का परीक्षण कर लेना चाहिये और रोगी के फेफड़ो का पुनः एक्स-रे करवा लेना चाहिये।

फुफ्फुसीय कैंसर की चिकित्सा—

आयुर्वेद मे अर्बुद की जो चिकित्सा है वही कैंसर की भी चिकित्सा है तथा आधुनिक चिकित्सा विज्ञान मे तो समस्त विश्व मे विभिन्न प्रकार की औषधियो का प्रयोग किया जा रहा है। किसी भी उपचार से किस सीमा तक सफलता मिलती है, अथवा अब तक मिली है, यह तय तो नहीं कहा गया है और न कहा ही जा सकता है। क्योंकि अभी तक चिकित्सको की दृष्टि मे अभी तक भी यह दुसाध्य है। जनसाधारण तो इसको असाध्य भी मानता है।

उचित तो यही है कि रोग उत्पन्न होने के कारणो से बचा जाय। यह तो सर्वविदित तथ्य है कि धूम्रपान से कैंसर पनपता है। दूषित वातावरण मे निवास भी कैंसर की उत्पत्ति का कारण बनता है। कल कारखानो के वातावरण मे कैंसर की उत्पत्ति होती है अतः यही उचित है कि धूम्रपान और मद्यपान का त्याग किया जाय। दूषित वातावरण से बचा जाय। ऐसे स्थान पर यदि किसी का निवास हो तो उसको बदल दिया जाय तथा कल कारखानो मे काम करने वालो को चाहिये कि वे मुख पर किसी प्रकार का ऐसा आवरण लपेट लें अथवा मास्क लगा ले जिससे संखिया अथवा धातु मिश्रित धूल के कण उनके मुख और नाक के द्वारा श्वास नली और फेफडे मे न जा सके।

फुफ्फुस कैंसर मालूम होते ही रोगी को पचकर्म कराये तत्पश्चात निम्न काढे का सेवन प्रारम्भ कर देना चाहिये। इससे उक्त रोग की रोकथाम मे पर्याप्त सहायता मिलती है।

काढा— सहिजन की छाल, अजमोदा, बनी, हल्दी, दारुहल्दी तथा पीपल की छाल, समभाग लेकर इसका काढा बनाये।

मात्रा— उक्त काढे मे आधा ग्राम बोल मिलाकर सुबह शाम पिलाये।

फुफ्फुस कैंसर में विशेषकर दक्षिण फुफ्फुस कैंसर की रोकथाम से पर्याप्त सहायता मिलती है।

इसके साथ ही रोगी को हर समय पचकर्म कराते रहना चाहिये तथा पथ्य देते रहना चाहिये।

ऐसे रोगी जिनके फुफ्फुसगत कैंसर मे शल्य चिकित्सा तथा विकिरण चिकित्सा भी की जा चुकी है और कोई लाभ नहीं मिला है तब उक्तभाग मे अर्बुधरी प्रलेप का बाह्य प्रयोग करते है और निम्न लिखित औषधियो का आभ्यान्तरिक प्रयोग करते है।

१— ताम्र भस्म— १२५ मिग्रा० की मात्रा मे अदरक के स्वरस तथा मधु के साथ सेवन कराते है।

२— रोदरस— २५० मिग्रा० की मात्रा मे श्वेत पुनर्नवा के स्वरस मधु के साथ।

३— वज्रपत्र हरताल भस्म— ६५ मिग्रा० की मात्रा मे ५-१० ग्राम शुद्ध गौघृत के साथ।

शेष लाक्षणिक चिकित्सा के लिए निम्नलिखित औषधियो का प्रयोग किया जाता है।

१— खासी के लिए— वसन्त तिलक रस

२— दर्द निवारण के लिए— धात्री रस

३— वमन के लिए— प्रवाल भस्म

४— अर्बुद के आकार को कम करने के लिए— नित्यानद रस।

५— मानसिक शान्ति तथा हृदय की क्रिया को नियमित रखने के लिये— बृहत्वात चिन्तामणि रस का उपयोग लाभकर होता है।

६— किसी विशिष्ट समय पर होने वाली वेदना को कम करने के लिए— सोमनाथ ताम्र का उपयोग करते है।

७— पेधन के समान वेदना की अवस्था को कम करने के लिये— स्वर्ण समीर पन्नग रस' अथवा मल्ल सिन्दूर—

मे से किसी एक को अदरक स्वरस + मधु के साथ सेवन राना चाहिये।

८— मलावरोध के निराकरण हेतु— अमृत भल्लातक थवा महाभल्लातक का प्रयोग प्रारम्भ से ही लाभप्रद होता

र्बुद की वृद्धि रोकने के लिए—

(१) रस पर्पटी का प्रयोग।

(२) आहार मे लवण तथा जल का कम सेवन कराते है।

६— केसर के उपद्रव से उत्पन्न बाहु के पक्षाघात की वस्था मे—

महामाष तेल, महाबला तेल, प्रसारिणी तैल की लिश। आभ्यान्तरिक प्रयोग के लिए— वृहद् वात न्तामणि, योगेन्द्र रस का प्रयोग।

१०— बहुदिशा मे प्रसारित होने वाले कैसर— क्षारीय षधियो का प्रयोग कराते है।

ैंसर की पुनरावृत्ति रोकने के लिये—

(१) ताम्र पर्पटी, लौह पर्पटी, विजय पर्पटी तथा वज्र र्पटी का सेवन।

(२) भोजन के साथ घृत दुग्ध तथा मासरस का सेवन। सरो न केवल रोग की पुनरावृत्ति ही रोकी जा सकती है ल्कि मूल रोग का उपचार भी होता है।

ोम्योपैथिक चिकित्सा—

इसमे आर्स, आर्स आ, ब्रोम, कार्बोवेज, कोवाल्ट, फयो, केलिकार्ब, केलि-आ, लैके, फास, सिकेलि, सेन्गु, ाइराइड, हिप्पोज आदि ओषधिया लाभकर है।

कोबाल्ट मयूर— कोबाल्ट धातु की खानो मे काम करने ालो के फेफडे मे कैसर का होना पाया जाता है जोकि नमें स्वभाविक है। कर्कट धातु वाले रोगियो मे कोबाल्ट योर विद्युत सा असर करता है। इस रोग मे कोवाल्ट म्योर ० एम व उससे ऊँची शक्तियो मे आश्चर्यजनक रूप से ाभ करता है।

ाधुनिक चिकित्सा—

फेफडे के कैसर मुख्यतया सर्जरी, कीमोथेरेपी, डियोथेरेपी से ठीक किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति की चेकित्सा उसमें शारीरिक स्थिति, केसर के प्रकार व बीमारी की स्टेज पर निर्भर करता है।

(१) शल्य चिकित्सा—

फुफ्फुसीय कैंसर के आधे रोगी की चिकित्सा शल्य चिकित्सा द्वारा होती है, इस चिकित्सा की सफलता तभी सभव है, जब रोगी चिकित्सक के पास इसकी प्रारम्भिक अवस्था मे आता है। इस अवधि मे चिकित्सा के द्वारा इसकी मृत्युदर ५ से २० प्रतिशत देखी गई है। परन्तु बहुत कम ऐसे रोगी होते है, जो इस रोग की प्रारम्भिक अवस्था मे चिकित्सार्थ आते है। इस विधि मे शल्य चिकित्सा द्वारा फुफ्फुस का एक भाग या पूरा फेफडा ही निकाल देते है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि कैसर कितना फैल गया है। नानस्माल सेल प्रकार के कैसर मे शल्य चिकित्सा द्वारा ५ वर्ष जीने की दर लगभग ४०-४५ प्रतिशत है।

शल्य चिकित्सा मे कैसर वाले भाग के अलावा आपपास के कुछ सामान्य भाग को भी निकाल देते है। सर्जरी के बाद रोगी को पहले कुछ दिनो के लिए सास लेने के लिए एक मशीन की आवश्यकता होती है। रोगी को कुछ कम काम या भारी काम करने के लिए मना किया जाता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि फेफडे का कितना भाग निकाला गया है।

(२) रेडियोथैरेपी (विकरण चिकित्सा)—

फुफ्फुसगत कैसर मे विकिरण चिकित्सा का प्रभाव मुख्यत प्रशामक होता है तथा इससे ६० प्रतिशत फुफ्फुसगत केसर का प्रशमन होता है। रक्त निष्ठीवन मे भी इस चिकित्सा से लाभ होता है।

रेडियोथैरेपी का प्रयोग शल्य चिकित्सा के साथ बचे हुए ट्यूमर के लिए या दूसरे भागो मे फेल गये केसर को रोकने मे किया जाता है अथवा सर्जरी के स्थान पर इसका उपचार मे प्रयोग जब कैसर बहुत अधिक फेल चुका हो व सर्जरी सम्भव न हो तब दर्द व अन्य लक्षणो से आराम के लिए प्रयोग किया जाता है।

(३) कीमोथैरेपी/रसायन चिकित्सा—

फुफ्फुसगत कैसर रसायन चिकित्सा का उपयोग शल्य चिकित्सा की सह चिकित्सा के रूप मे किया जाता है। पर यह स्माल सेल प्रकार के कैसर मे विशेष उपयोगी चिकित्सा है। इसका प्रयोग प्रारम्भिक अवस्था के लगभग ७० प्रतिशत

रोगियो के जीने के समय मे वृद्धि करने मे यह सहायक हे। अन्य प्रकार के फेफडो के केसर मे इसका प्रयोग तभी करते हे जब कैसर को सर्जरी या रेडियोथैरेपी से कन्ट्रोल नहीं कर पाते है। इन दवाओ के कुछ विषाक्त प्रभाव भी होते हे जैसे— वालो का झडना, मितली तथा उल्टी का आना, कमजारी का अनुभव होना।

याद रहे— आधुनिक चिकित्सक केसर का ओषधोपचार उस दशा में करते ह जव वे शल्य चिकित्सा मे असफल हो गये हो अथवा विकिरण चिकित्सा भी सफल न हो पायी हो। कभी कभी ऐसा भी होता हे कि रोगी की अवस्था ऐसी होती हे कि न तो वह आपरेशन के योग्य समझा जाता हे ओर न ही विकरण चिकित्सा के योग्य ऐसी दशा मे आषधि उपचार ही एक मात्र उपचार रह जाता हे। रोग जव भयकर रूप धारण कर लेता हे तो उसे अवस्था मे भी न आपरेशन सफल हो सकता हे ओर न विकरण चिकित्सा ही, तव औषधि उपचार ही एक मात्र आश्रय शेष रहता हे।

अनुगामी विचार (प्रागनोसिस)—

फुफ्फुस केसर की रोकथाम आवश्यक हे क्योकि इसका प्रारम्भिक अवस्था मे निदान मुश्किल होता हे। जव तक इसका निदान किया जाता हे लगभग २/३ रोगियो मे यह पूरी उपचार करने की स्थिति से वाहर हो चुका होता हे। निदान के पश्चात् केवल १३ प्रतिशत रोगी ही २ साल या उससे अधिक जीवित रह पाते हे। यह कम गम्भीर तथा एक स्थान पर स्थित केसर के लिये ३३ प्रतिशत हे, जो वहुत अच्छी स्थिति नही हे।

फुफ्फुस के केसर के रोगी प्राय असाध्य होते हे, क्योकि अक्सर रोगी चिकित्सक के पास चिकित्सा के लिये उसी अवस्था मे आता हे। जवकि रोग काफी वढ गया होता हे। प्राय यह देखा गया हे कि वाये फुपफुस का कैसर दक्षिण फुफ्फुस के केसर से अधिक साध्य होता हे क्योकि वाये फुफ्फुस मे दक्षिण फुफ्फुस की तुलना म विशेष (मेटास्टेसिस) वहुत कम होता हे।

भविष्य के लिये निर्देश—

धूम्रपान छोडना अथवा धूम्रपान शुरू ही न करना कसर रोकथाम का सवसे वडा कदम ह।

फुफ्फुस का एक अन्य कैसर— मीसोथीलिओमा—

यह फुफ्फुस की झिल्ली से उत्पन्न होता ह। कभी-कभी यह पेट की झिल्ली से भी उत्पन्न होता ह।

कारण जो इस कैसर को उत्पन्न करते है—

एस्वेस्टस के शरीर मे जाने से जिस प्रकार का फाइवर होता ह। १ कोसीडोलाइट २ काइसोलाइट ३ एमासाइट इनमे कोरीडोलाइट फाइवर सवसे खतरनाक होता ह। एस्वेस्टस से भी मीसोथेलियोमा होने की सभावना वढ जाती है।

लक्षण—

इस कसर के प्रमुख लक्षण निम्न प्रकार ह—

१ सास की तकलीफ

२ छाती मे दर्द (चेस्ट पेन)

उपचार—

इसका कोई उपयुक्त उपचार अव तक सभव नही हे। आधुनिक शल्य चिकित्सा भी इसमे निरर्थक सावित होती है। आयुर्वेद (पूर्वोक्त) चिकित्सा अवश्य लाभकारी होती हे।

बचाव—

एस्वेस्टस का प्रयोग, भवन निर्माण तथा विजली के सामानो मे नहीं करना चाहिये।

फुफ्फुसावरण प्रदाह-उरस्तोय प्लूरिसी

डा० एस० एम० शफी, प्राणाचार्य
एम० एस० सी००ए०, एम० डी०,
ए० आर० एस० एच० लदन

शरीर मे जिस तरीके से हृदय सरक्षण के लिये हृदयावरण की रचना है ठीक उसी तरह से फुफ्फुस के लिए भी फुफ्फुससावरण एक सरक्षण हेतु प्राकृतिक रचना है। शरीर के अतिरिक्त अन्यान्य अवयवो की सुरक्षा के लिए उनके ऊपर एक तरह की श्लेष्मिक कला का आवरण होता है। इसी तरह फेफडो के ऊपर चारो ओर श्लेष्मिक कला का आवरण वना रहता हे। जिसे सुरक्षा कवच की सज्ञा दी गई है। फुफ्फुसावरण मे दोनो ओर फेफडे अलग-अलग पूर्ण रूप से सुरक्षित रहते हे। फुफ्फुसावरण पर जव किसी बाह्यघात या चोट आदि लग कर वक्ष पीडा होती है, सर्दी या मौसम परिवर्तन के कारणो से फेफडो मे कुछ विकृति आ जाती ह। जिसके परिणाम स्वरूप आवरण आक्रात होकर व्यथित होती है ओर प्रदाह-पीडा तथा शोथ की अवस्था प्रारम्भ हो जाती हे। साथ ही आवरण मे तरल सचित होकर असहनीय पीडा न रुकने वाली खासी के लक्षण दिखने लगते हे। आधुनिक चिकित्सा जगत मे **Plursy** ओर आयुर्वेद मे फुफ्फुसावरण प्रदाह-उरस्तोय कहा गया ह। 'उरस्तोय' अर्थात् उर मे जल-तरल पदार्थ की प्रदाहिक सचितावस्था इसलिए चिकित्सा विज्ञान मे **Pleural Effusion** अर्थात् उररस्तोय का नाम दिया गया हे।

फुफ्फुसावरण दो कला-सदृश पतल आवरणो के मध्य लसीका से बनी सरचना हे जिसके दोनो स्तर आपस के घर्षण से वचे रहते हे। स्वसन क्रिया म इनके सकोचन के समय मे दोनो स्तर मे दूरिया वरावर वनी रहती है। सास, कास आदि प्राणवह स्रोतस् व्याधियो मे जिस तरह से वायु तथा कफ का प्राधान्य हे उसी तरह फुफ्फुसावरण मे भी यही दो दोषो से व्याधि होने के सम्भावित आसार रहते है। मोसमी वायु का सम्पर्क और उसके कारण फुफ्फुस मे रूक्षता न वढजाये इसके लिये स्निग्घता की आवश्यकता भी हे। आर दोषो के परस्पर विरोधी गुणो से समान रखने के लिए स्वस्थावस्था मे इनका सतुलित रहना भी जरूरी है। फुफ्फुसावरण मे भी इन दो दोषो के कारण होने वाली मुख्य व्याधि उरस्तोय-प्लूरिसी रूक्ष (ड्राय) या आर्द्र (वैट-गीली) दो प्रकार की होती है। कभी-कभी किन्ही विशेष कारणो से रक्त भरितावस्था-पूयावस्था जो सचित तरल मे विशेष विकृति कर उनमे विदीण हो जाती ह। पूयावस्था मे पीप-पस उत्पन्न होकर रोग भीषण रूप से गम्भीर अवस्था मे बढ जाता हे। यह प्राय असाध्यावस्था होती हे। शुष्कावस्था रूक्षावस्था यह शमन कालको आरम्भिक अवस्था हे। इसमे सूखी खासी, दर्द ओर साथ मे मन्द ज्वर आदि लक्षण रहते है। आर्द्र अवस्था मे फुफ्फुस की सतह मे जल सचित होना आरम्भ हो जाता है और पूर्ण लक्षण लगते है।

वक्ष फेफडा और प्लूरा
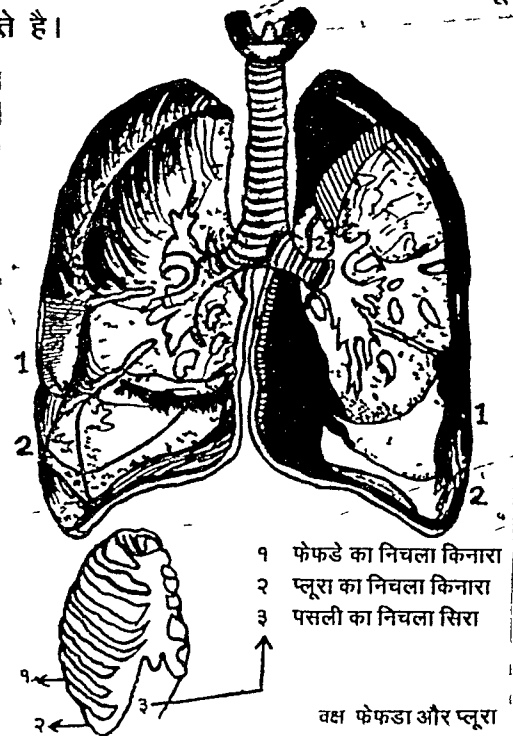
सुश्रुत ने उत्तरतत्र मे प्रतिश्याय के प्रकरण मे रक्तज प्रतिश्याय' की डल्हणाक्त टीका मे तन्नातर वचन उदधृत करते हुए लिखा ह कि–

उर क्षत गुरु स्तब्ध पूर्तिपूर्णकफोरस ।
सकाम सज्वरो ज्ञेय उरोघात सपीनस ।।

अर्थात् उर के शमन से फुफ्फुसावरण गुरु स्तब्ध तथा दुर्गन्धित कफ से पूर्ण होता हे ओर उसमे कास ज्वर एव पीनस के भी लक्षण विद्यमान रहते हे।

इसलिए आयुर्वेद के मतानुसार प्रतिश्याय के प्रकरण मे होने के कारण ओर प्रतिश्याय के निदानो क वर्णन मे सुश्रुत मे वताया गया ह कि अत्यधिक यान प्रसग सिर मे अभिताप के प्रसग, रज का नासा मे प्रवेश शीतल वायु

का अधिक सेवन, शीत ओस मे घूमना फिरना और मूत्रादि प्राकृतिक वेगो के अवरोध से ही प्रतिश्याय की इतिश्री होती हे। ऐलोपेथी मे श्लेष्मज्वर (न्यूमोनिया) ब्रोकियल इन्फेक्शन, (हाइपोथायरोडिज्म), नेफ्रिटिक सिन्ड्रोम, क्रोनिक ब्रोकाइटिस, ट्रोमा आदि कारण मानते है।

फुफ्फुसावरण प्रदाह मे ज्वर आता हे, कभी कभी जाडा भी लगा करता हे। छाती (पसलियो) मे अकस्मात् चमक लिये पीडा हुआ करती है, जो धीरे धीरे त्रिशूल चुभन के समान वेदना बढती जाती है। छाती से वक्ष कट रहा हो, वेदना का इतना तीव्र स्वरूप भी देखने को मिला ह। फेफडे के जिस भाग (दाये या बाया) पर इसका प्रभाव होता है। उसी तरफ पीडा का भी अनुभव होता हे। ज्वर १०० से १०२ फरेनहाइट तक देखा गया है। कभी कभी इससे भी अधिक हो सकता है। फेफडो की सतह मे सूजन बढकर उसमे तरल वृद्धि के कारण स्वसन क्रिया मे बाधा उत्पन्न होती हे। श्वास कष्ट दर्शन परीक्षा करनें से आक्रात भाग मे सास लेने के समय मे होने वाली गति कम महसूस होती हे या तो गति का अभाव भी प्राय देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त एपेक्स बीट, एम० स्टीनम, सास की नली आदि विरुद्ध पार्श्व मे सरके हुए अनुभव होते है। पार्श्वाक्रान्त प्रदेश मे अगुली रखकर (आकोटन परीक्षा) करने से डल साउण्ड सुनाई पडता हे। उरस्तोय की शका को निश्चय करने के लिए वक्ष का क्षय किरण परीक्षण ओर उसमे सचित जल का परीक्षण करना प्रथम आवश्यक हे। वर्तमान समय मे बायोप्सी कराना भी जरूरी हो गया है। श्रवण परीक्षा पाने पर कक्षा तथा स्तन अघोभाग मे आक्रान्त पार्थ्व मे घर्षण ध्वनि सुनाई देती हे। खासी आने पर ध्वनि मे कुछ भी बदलाव नही होता। पार्थ्व शूल तथा फुफ्फुसावरण व्याधि प्राय राजयक्ष्मा के जीवाणुओ के सक्रमण वश होते है। इसलिए आयुर्वेद भी प्रतिश्याय से प्रावरण मे प्लूरल इनफ्यूजन का विवरण हे। राजपक्ष्मा के चारो प्रकार के लक्षण के रूप मे निर्दिष्ट है ओर ज्वर-कास-पीनस आदि फुफ्फुसावरण मे बताये हे, जो राजयक्ष्मा के लक्षणो मे भी सम्मिलित है

इसमे सदैव गर्म पानी का ही प्रयोग करना चाहिए, चाहे पानी पीना हो, नहाना हो सभी कुछ गर्म पानी से और ठड से बचकर आराम करने की सलाह हितकर होगी। पेट साफ रखे, कभी कभी सौम्य रेचन की भी आवश्यकता पड जाती हे। पीडा शामक तेल लगाकर सेक भी करना हितकर है। तारपीन के तेल मे सेधा नमक ओर कर्पूर मिलाकर वक्ष स्थल मे मालिश करा सकते ह। चरक ने पुष्करमूल को पार्श्वशूल मे श्रेष्ठ कहा है। ''धान्यक'', मूत्रल, ज्वरघ्न त्रिदोषनाशक, तृषा तथा दाह को हरने वाला एव श्वास कास को शान्त करने वाला हे। फुफ्फुसावरण म जलीयाश बढ जाने से सचित जल का निष्कासन हो या शोषण हो ऐसी चिकित्सा प्रशस्त हे। जल शोषण के लिए सावरश्रृग अति प्रचलित हे। भस्म ओषध के रूप मे ओर लेप के बाह्य रूप मे प्रयोग करते हे। जलीयाश के तीन अवयव यथा— हृदय, यकृत एव वृक्क जिम्मेदार होते हे इसलिये आयुर्वेद मे चन्द्रप्रभा वटी, शोथादि के लिए मुख्य एव प्रसिद्ध औषधि हे। इसी के साथ-साथ पुनर्नवा क्वाथ भी प्रशस्त ह। उररस्तोय नाशक मिश्रण प्रात साय मधु के साथ। उरस्तोय हर वटी २-२ वटी मिश्रण के एक घण्टे बाद उररस्तोय नाशक क्वाथ के साथ प्रात साय दिये जाने का प्रावधान ह। वक्ष स्थल मे पीडा के लिए महानारायण तेल एच महाविषगर्भ तेल समभाग मे लेकर उसकी आधी मात्रा मे तारपीन का तैल साथ मे मिलाकर मालिश करने से लाभ मिलता ह। (गोपालशरण गर्ग) सितोपलादि एक ग्राम + तालोसादि १ ग्राम + सावरश्रृगभस्म चोथाई ग्राम + अभ्रक भस्म चोथाई ग्राम + समीरपन्नग १/१० ग्राम मिलाकर तीन बार आर्द्रक, तुलसीपत्र स्वरस तथा मधु के साथ देना हे। चन्द्रप्रभावटी २+२+२ तीन वार पानी या दूध के साथ। अश्वगन्धारिष्ट + द्राक्षारिष्ठ + कुमारी आसव + जल समभाग भोजनोपरान्त।

लेपार्थ —लशुन हरिद्रा सेन्धव लेप एव तीव्र शूलावस्था मे धनक्षारयोग शूल प्रदाह मे लगाना हितकर ह।

पथ्यापथ्य— हल्का आहार एव हरी सब्जी (पातगोभी को छोडकर) उपयोग करना चाहिये। पीने के लिए चतुर्थाश शेष जल प्रशस्त है। दूध का सेवन मन्दोष्ण क्षीरपाक विधि द्वारा देते है। गुरु भोजन, विदाही नवान्न द्रव्यो का भोजन, विरुद्धाहार, अम्ल द्रव्य, गुड एव तेल से बने खाद्य पदार्थ, दिवास्वप्न, शीतल वायु, जल, स्नान, व्यायाम, मैथुन, क्रोध, शोक आदि करा त्याग।

यथा शीघ्र लाभ प्राप्ति हेतु रोगी को विधि विधान एव गम्भीरता पूर्वक ओषधिया सेवन करना चाहिये। साथ मे पूर्ण आराम भी क्यो कि प्राणवह स्रोतस मे फुफ्फुस का स्थान अत्यधिक महत्वपूर्ण होता हे।

हरीश फार्मा द्वारा निर्मित कैपसूल

- **यक्ष्माक्योर नं० १ कैपसूल–** रुदन्ती घनसत्व, सितोपलादि चूर्ण, मृगश्रृंगभस्म, सवर्णबसन्तमालती आदि से निर्मित कैपसूल, यक्ष्मा, पुरानी खासी आदि मे शीघ्र लाभकारी ।
- **सुगर क्योर कैपसूल–** वेलपत्र घनसत्व, उदुम्वरपत्र घनसत्व, गुडमार वटी घनसत्व, जामुनगुठली चूर्ण, शिलाजीत, त्रिवगभस्म आदि से निर्मित कपसूल मधुमेह, वहुमूत्र आदि मे उपयोगी ।
- **वातक्योर कैपसूल–** रास्नाघनसत्व, योगराज गुग्गुल, आमवातेश्वररस, एकागवीर रस आदि से निर्मित, आमवात, सन्धिवात, पक्षाघात, गृध्रसी आदि वात विकारो मे उपयोगी कैपसूल ।
- **अर्शक्योर कैपसूल–** निशोथ घनसत्व, वकायन घनसत्व, जिमीकन्द घनसत्व, नागकेशर घनसत्व, वडी हरड घनसत्व, अर्शकुठार रस आदि, दोनो प्रकार के बवासीरो मे लाभकारी ।
- **डायरिन कैपसूल–** कुटज घनसत्व, नागरमोथा घनसत्व, वेलगिरी घनसत्व, अतीस मीठी घनसत्व, कुटकी चूर्ण आदि, पाचन क्रिया को नियमित करके सभी प्रकार के अतिसारो मे शीघ्र लाभकारी ।
- **प्रदरक्योर कैपसूल–** अशोक घनसत्व, लोध्र घनसत्व, चोलाई घनसत्व, खरेंटी पचाग घनसत्व, त्रिवगभस्म, प्रदरान्तक रस, सगजराहतभस्म आदि, मासिक धर्म को विकृति आदि मे निश्चित लाभकारी।
- **श्वासक्योर कैपसूल–** अर्कपत्र घनसत्व, धतूरापत्र घनसत्व, सोमघनसत्व, मुलहठी घनसत्व, काकडसिगी घनसत्व, श्वासकुठार रस, जहरमोहरापिष्टी आदि से निर्मित श्वास वेग को रोक, श्वास कष्ट को दूर करने मे अद्वितीय कैपसूल
- **विषमज्वरक्योर कैपसूल–** सुदर्शन घनसत्व, सतोना घनसत्व, कुटकी घनसत्व, कुचलाछाल घनसत्व, करजवीज घनसत्व, गोदन्ती भस्म आदि से निर्मित सभी प्रकार के ज्वरो विशेषत विषम ज्वर (मलेरिया) मे शीघ्र लाभकारी ।
- **पाण्डुरिन कैपसूल–** पुनर्नवा मूल घनसत्व, त्रिफला घनसत्व, गिलोय घनसत्व, वासापत्र घनसत्व, कुटकी घनसत्व, नीम छाल घनसत्व, चिरायता घनसत्व, मण्डूर भस्म, लोह भस्म आदि से निर्मित दीर्घकालीन व्याधि के बाद हुई रक्ताल्पता, कामला के लिए उपयोगी केपसूल ।
- **हृदरिन कैपसूल–** अर्जुनघनसत्व, अकीकपिष्टी, जहरमोहरापिष्टी आदि से निर्मित केपसूल । हृदय की धडकन को दूर कर हृदय क्रिया को नियमित करने वाला केपसूल ।
- **ज्वरक्योर–** महामृत्युजय रस, त्रिभुवन कीर्तिरस, लक्ष्मीविलासरस, गोदन्ती हरतालभस्म आदि ज्वरनाशक ओषधियो से निर्मित केपसूल सभी प्रकार के ज्वरो मे शीघ्र लाभकारी ।
- **पावर-३१ कैपसूल–** रससिन्दूर, मुक्ताशक्तिभस्म, कुक्कुटाण्डत्वक् भस्म, स्वर्णवग, शुद्ध शिलाजीत, शुद्ध विजयाचूर्ण, शुद्ध हिंगुल, तालमखाना, अश्वगन्धा, सफेदमूसली, गोखरु, अकरकरा आदि शक्तिवर्धक ओषधियो से निर्मित केपसूल नपुसकता, शीघ्रपतन, इन्द्री की निर्वलता, स्तम्भन शक्ति की न्यूनता के लिए अनुपम कैपसूल ।
- **गैसक्योर कैपसूल–** सोंठ, मिर्च, पीपल, सधा नमक काला नमक, अजवायन, सज्जीक्षार, अग्निकुमाररस, नवायस लोह, शखभस्म, हींग आदि से निर्मित केपसूल । अजीर्ण, भूख का कम लगना, पेट मे गैस वन्द होना आदि मे प्रभावशाली ।
- **चर्मक्योर कैपसूल–** आरग्वध, चिरायता, नीम के पत्ता, उन्नाव, कुटकी, रस माणिक्य, गन्धक रसायन आदि से निर्मित केपसूल । सभी प्रकार के कुष्ठ, खाजखुजली आदि सम्पूर्ण रक्तविकारो में लाभकारी ।
- **शूलक्योर–** गोमूत्र भावित पीपल छोटी, पीपरामूल, सज्जीक्षर, शूलवज्रिणी वटी, महाशूलरस, शखभस्म, यवक्षार, कालानमक आदि से निर्मित केपसूल । सभी प्रकार के शूल "दर्द" शिर शूल, दन्तशूल, उदरशूल मे उपयोगी । विशेषत उदरशूल मे प्रभावी ।
- **शक्तिफोर्ट–** हीरकसीसभस्म, लोह भस्म, माण्डूरभस्म, स्वणमाक्षिक भस्म, प्रवालपिष्टी, विजयाचूर्ण, त्रिफला, शतावर,

आदि से निर्मित कैपसूल, यकृतजन्य, विकारो को दूर कर देने और क्षुधा बढाने मे अद्वितीय है ।

- **कुमार शोषान्तक कैपसूल–** प्रवालभस्म, मुक्ताशुक्तिभस्म, अभ्रकभस्म, गोदन्तीभस्म, कपर्दभस्म, कच्छपपृष्ठ भस्म, शुद्ध सुहागा, आदि से निर्मित कैपसूल । बच्चो के सूखा रोग, दस्त, कब्ज, कैल्शियम की कमी को दूर करने मे उपयोगी।
- **रजक्योर कैपसूल–** एलुआ, कालीमिर्च, पीपल, अजवायन, इन्द्रायण की जड, कसीसभस्म, शुद्ध हींग, मूली के बीज, गाजर के बीज, कलोंजी, प्रतापलंकेश्वर रस आदि से निर्मित कैपसूल । मासिक धर्म तथा उसकी विकृति के कारण होने वाले सिरदर्द, कटिशूल आदि मे उपयोगी ।
- **लिवरक्योर कैपसूल–** भृंगराज, हारसिंगार, मकोय, कासनी, चिरायता, आंवला, अपामार्ग, दारुहल्दी, कालमेघ, कुटकी, अमृता, पित्तपापडा, अभ्रकभस्म, स्वर्णमाक्षिक, लौहभस्म आदि से निर्मित कैपसूल । यकृत वृद्धि, प्लीहा वृद्धि, रक्ताल्पता, मदाग्नि, पाण्डु कामला, आदि विकारो मे श्रेष्ठ लाभकारी कैपसूल ।
- **शिलाजीत कैपसूल–** शिलाजीत, असगन्ध, सफेद कौंच बीज, स्वर्णभस्म, वगभस्म आदि से निर्मित कैपसूल । सभी आयु वर्ग के स्त्री पुरुष के लिए आई हुई कमजोरी को दूर करने मे अद्वितीय कैपसूल ।
- **उष्णवातक्योर कैपसूल–** शीतल चीनी चन्दन सफेद गोखरु, बडी इलायची, चोपचीनी, श्वेतपर्पटी, यवक्षार, नागजराम्त भस्म, प्रवालपिष्टी आदि से निर्मित कैपसूल । मूत्रनली मे व्रण, मूत्र की रुकावट, जलन तथा अन्य विकार नष्ट होने मे लाभकारी कैपसूल ।
- **स्वप्नप्रमेहर कैपसूल–** शतावर मूसली, असगन्ध, तालमखाना, इलायची छोटी, हल्दी, विदारीकन्द कमलगट्टा, बला, तुलसीबीज, फिटकरी सफेद, शुद्ध शिलाजीत, आदि से निर्मित कैपसूल । वीर्य को गाढा कर स्वप्नदोष को दूर करने मे अद्वितीय कैपसूल ।
- **कृमिरिन कैपसूल–** अजवायन, वायविडग, ढाक के बीज, शुद्ध कुचला चूर्ण, कबीला चूर्ण, शुद्ध गन्धक आदि से निर्मित कैपसूल । कृमियो के द्वारा उत्पन्न उपद्रवो तथा उदरशूल को दूर करने मे उपयोगी कैपसूल ।
- **रेचक कैपसूल–** इन्द्रायण, निशोथ, कालादाना, सनाय, हरड, काला नमक आदि से निर्मित कैपसूल । मलावरोध, उदरशूल तथा पेट के भारीपन मे उपयोगी कैपसूल ।
- **हर्टिना–** सर्पगन्धा, शखपुष्पी चूर्ण, अकीक पिष्टी, ब्राह्मी चूर्ण, पीपरामूल एव प्रवालपिष्टी आदि से निर्मित कैपसूल हृदय की धडकन नियमित करके रक्तचाप को ठीक करता हे ।
- **एसिड क्योर–** लक्ष्मीविलास रस, त्रिभुवनकीर्ति रस, मृत्युञ्जय रस, लाल फिटकरी का फूला, प्रवालपिष्टी, गोदन्ती हरिताल भस्म, सितोपलादि चूर्ण आदि से निर्मित यह कैपसूल अम्लपित्त तथा उसके उपद्रवो को शान्त करने हेतु विशेष लाभदायक हे । इसके कुछ दिनो के नियमित सेवन से अम्लपित्त मे होने वाले शूल, वमन, अन्ननलिका, छाती तथा पेट की जलन शान्त होती हे । इसके नियमित प्रयोग से अम्लपित्त मे स्थाई लाभ होता हे ।
- **हिस्टीरिया क्योर–** नेत्रवला घनसत्व, जटामासी चूर्ण, अश्वगन्धा चूर्ण, खुरासानी अजवायन, कर्पूर एव हींग आदि से निर्मित कैपसूल । योपापस्मार (हिस्टीरिया), अपस्मार एव मस्तिष्क सम्बन्धी विकृतियो के लिए अत्युत्तम हे । इसके व्यवहार से पुराने से पुराने हिस्टीरिया रोग मे भी लाभ होता हे ।दोनो का अन्तर कम होते होते बन्द हो जाते हें ।
- **फैट क्योर–** मेदोहर गुग्गुल, त्रिमूर्ति रस, आरोग्यवर्धिनी वटी, विडग घनसत्व, हरड घनसत्व, बेल की जड आदि से निर्मित कैपसूल, फेट क्योर मेदो रोग, कफ प्रकोपज व्याधियो और आमवात को दूर करता है । यह मेद को जलाता हे, पाचन क्रिया को बढाता है ओर नई मेदोत्पत्ति को रोकता हे । मेदोविकृति को दूर करने के लिए यह निर्भय उत्तम ओषधि हे ।
- **स्टोन क्योर–** गोक्षरादि गुग्गुल, श्वेत पर्पटी, वरुण घनसत्व, मूत्र कृच्छान्तक रस, बडी इलायची, कुलथी, सज्जी, मूलीक्षार, प्रवाल पिष्टी आदि से निर्मित कैपसूल वृक्क एव वस्ति मे उत्पन्न अश्मरी (पथरी) को निकालने मे उपयोगी हे । पौरुष ग्रन्थि (प्रोस्टेट) मे मूत्र की तकलीफ को कम करता हे । शुक्रमेह, रक्तमेह, पूयमेह, मूत्र मे फास्फेट, एल्ब्यूमिन आदि मे उपयोगी हे ।

हरीश फार्मा के आयुर्वेदिक घनसत्व कैपसूल

घनसत्वो का आयुर्वेद मे विशेष महत्व हे। घनसत्व काफी उपयोगी हे, परन्तु बनाने के झझट के कारण घनसत्वो का प्रयोग काफी कम होता हे। हमने कुछ वनोषधियो के घनसत्वो के कैपसूलो का निर्माण किया हे। हमारा निवेदन हे कि इन कैपसूलो को अपनी चिकित्सा मे प्रयोग कराकर यश अर्जित करे।

अर्जुन घनसत्व— अर्जुन की छाल हृदय रोग की विशिष्ट ओषधि हे । इसके घनसत्व के कैपसूल धडकन एव हृदय विकार मे विशेष लाभकारी हें ।

अशोक घनसत्व— अशोक की छाल का घनसत्व स्त्री विकारो विशेषकर प्रदर की उपयोगी औषधि है, इसके कैपसूल गर्भाशय शोथ तथा प्रदर मे विशेष उपयोगी हें ।

अश्वगन्धाद्रि घनसत्व— असगन्ध, शितावर, गोखरू का घनसत्व वल व वजन वढाने के लिए अद्वितीय है । किसी भी बीमारी के कारण होने वाली कमजोरी को दूर करने मे शीघ्र लाभप्रद हे ।

अपामार्गादि घनसत्व— अपामार्ग, वासा, मुलहटी, सोमकल्प का मिश्रित घनसत्व कास, श्वास मे शीघ्र प्रभावशाली कैपसूल है ।

कुटज घनसत्व— कुडा की छाल अतिसार, आव के लिए बहुत उपयोगी ओषधि हैं । इसका घनसत्व बनवाया है । अतिसार आमातिसार मे प्रभावशाली हे । १-१ ।। माह तक लगातार इसका सेवन करना चाहिए ।

मुलहटी घनसत्व— मुलहटी श्वास, कास, वच्चो की कुकुर खासी मे काफी उपयोगी है ।

नेत्रबालादि घनसत्व— नेत्रवाला, असगन्ध, खुरासानी अजवायन के मिश्रित घनसत्व केपसूल हिस्टेरिया एवं अपस्मार मे उपयोगी हैं ।

बावली घास घनसत्व— बावली घास रक्तरोधक की विशिष्ट वनोषधि हे । इसका घनसत्व रक्तपित्त मे विशेष उपयोग किया जाता है ।

रास्ना घनसत्व— रास्ना (वायसुरई) गृध्रसी, पक्षाघात एव अन्य वात रोगो मे शीघ्र प्रभावशाली है । इसके कैपसूल विभिन्न वातो रोगो मे लाभकारी हें ।

सुदर्शन घनसत्व— सुदर्शन चूर्ण आयुर्वेदिक चिकित्सको द्वारा काफी प्रयोग मे आता है । कटु होने के कारण रोगी मुश्किल से लेता हे । इसके घनसत्व मे १० गुनी शक्ति हें । इसका घनसत्व मलेरिया, जीर्ण ज्वर मे विशेष उपयोगी है ।

आयुर्वेदिक मलहम

☆ **नवजीवन मलहम**— केचुआ, मालकागनी, कन्नेर की जड, सफेद मल्ल, अकरकरा, मोम आदि से निर्मित मलहम । नपुसकता मे वाह्य प्रयोग हेतु । इसके प्रयोग से इन्द्री की निर्वलता, टेढापन, पतलापन आदि व्याधि दूर हो जाती है ।

☆ **वातक्योर मलहम**— धतूरापचाग, कुचला, जायफल, असगध, रास्ना मोम आदि से निर्मित मलहम । वात विकारो मे वाह्य प्रयोग हेतु । इसके प्रयोग से आमवात, गृध्रसी, पक्षाघात सृजन आदि व्याधि दूर हो जाती है ।

☆ **छाजनक्योर मलहम**— निर्मली वीज, हल्दी, दारुहल्दी, चक्रमर्द वीज, गन्धक, सत्यानासी तैल, सरसो का तैल, मोम आदि से निर्मित मलहम । छाजन तथा अन्य चर्म विकारो मे उपयोगी ।

☆ **चर्मक्योर मलहम**— कालीमिर्च, निशोथ, दन्तीमूल, आक के पत्ता, देवदार हल्दी, दारुहल्दी, नीम की छाल, गौमूत्र आदि से निर्मित मलहम । चर्म विकारो मे वाह्य प्रयोग हेतु । इसके प्रयोग से खाज, खुजली, दाद आदि रोग शीघ्र ठीक हो जाते हें ।

☆ **पाइल्स क्योर मलहम**— कासीसादि तेल, मोम आदि से निर्मित मलहम । इसके प्रयोग से अर्श रोग ठीक हो जाते हैं

हरीश फार्मा की आयुर्वेदिक पेटेण्ट औषधियाँ

"सीरप"

- **बेवीविटड्राप्स**— वला, हरड छोटी, काला नमक, उन्नाव, अतिबला, मुनक्का, अजवायन, कालमेध, कासनी, गुधवच, भगराज, मकोय, ब्राह्मी, शखपुष्पी, गुलाब के फूल, आरग्वध आदि से निर्मित ड्रोप्स । बच्चो के विभिन्न रोगो यथा अस्थिमार्दव, पोषक की कमी, ज्वर, हरे-पीले दस्त अफरा, दूध का पलटना आदि मे शीघ्र लाभकारी है ।
- **जुकामक्योर**— मुलहठी, उन्नाव, अपामार्ग, वासापत्र, सोंफ, कटेरी छोटी, काली मिर्च, पीपल छोटी आदि से निर्मित सीरप । जुकाम, नजला एव खासी मे शीघ्र प्रभावशाली औषधि ।
- **हेमसुधा सीरप**— केपसूल— अशोक की छाल, वला, वहेडा, चोलाई, लोघ्र, वासा, गेरूलाल सेलखडी, धाय के फूल, पतगलकडी, नागरमोथा आदि से निर्मित सीरप । स्त्रियो के प्रदर तथा उनके कारण होने वाले उपद्रव यथा हाथ पैरो मे हडकन, चक्कर आना, सिरदर्द, कमर दर्द आदि मे शीघ्र लाभकारी ।
- **गैसक्योर सीरप**— सोंठ, कालीमिर्च, नीवू सत्व, नमक, अकपुष्प, अमृतकर्पूर, सेंधानमक, हींग जीरा आदि से निर्मित सीरप, इसके सेवन से भूख न लगना, खट्टी डकारें आना, पेटदर्द, वायु का बिगडना, [illegible] न होना आदि शिकायते दूर हो जाती हैं ।
- **पावर ३१ सीरप**— सितावर, गोखरू छोटा, वहमन सुर्ख, मूसली काली, अकरकरा, तालमखाना, खजूर, सफेद मूसली, बीजवन्द, असगन्ध, पोस्तदाना, विजया, वादामगिरी, शुद्ध शिलाजीत आदि से निर्मित शर्बत । पुरुषो के बल, वीर्य मेधा, स्मृति, नपुसकता, वीर्य निर्वलता, शीघ्रपतन आदि मे प्रभावशाली सीरप ।
- **शक्तिसुमन**— शतावर, तालमखाना, गोखरू छोटा, असगन्ध, विदारीकन्द, छुआरा, मुनक्का, वादामगिरी, पोस्तदाना आदि से निर्मित शर्वत । इसके सेवन से सभी आयुवर्ग के व्यक्तियो की आयु, वीर्य, मेधा, बल वढता है । इसके सेवन से शरीर मे आयी कमजोरी दूर होती है और शरीर मे वल व स्फूर्ति आती है ।
- **लिवोनोल सीरप**— भृगराज, हारसिगार, मकोय, कासनी, चिरायता, अपामार्ग, दारुहल्दी, कालमेध, कुटकी, पित्तपापडा, स्वर्ण माक्षिक भस्म आदि से निर्मित सीरप । इसके सेवन से यकृत विकार, भूख न लगना, कब्ज, पीलिया, खून की कमी आदि दूर होती हैं ।
- **ग्राइप वाटर**— सौंफ, अजवायन, पोदीना, सोया, ढाक के बीज, वडी इलायची, अतीसमीठा, काला नमक आदि से निर्मित सीरप इसके सेवन से वच्चो मे दॉत निकलने के समय के विकारो, पेट दर्द, उल्टी, अफरा, अपच आदि दूर हो जाते हैं ।
- **डायरोल सीरप**— वेलगिरी, अतीस, नेत्रवाला, नागरमोथा, जायफल, मोचरस, सोंफ, काला नमक, कुडाकी छाल आदि से निर्मित सीरप । वच्चो के सग्रहणी, पेचिस, अतिसार मे लाभकारी ।

आयुर्वेदिक तैल

☆ **लाल तैल**— मकोय, तालमखाना, भागरा, मुलहठी, देवनार, नागरमोथा, हल्दी, [illegible], लाल चन्दन, असगन्ध, नागोरी, रतनज्योति, तिल तेल आदि से निर्मित तेल । वच्चो के सूखा रोगो मे उपयोगी ।

☆ **वातक्योर तैल**— कुचला, धतूरा, असगन्ध, विधारा, कायफल आदि से निर्मित तेल । वातविकारो मे वाह्य प्रयोग हेतु ।

आयुर्वेदिक कैपसूल

नाम औषधि	उपयोग	थोक मूल्य			खुदरा मूल्य		
		५०० कैप०	१२० कैप०	६० कैप०	५०० कैप०	१२० कैप०	६० कैप०
अर्श क्योर	रक्तज–बादी अर्श नाशक	३६५ ००	९२ ००	४८ ००	४३८ ००	१११ ००	५८ ००
उष्णवात क्योर	सुजाक, मूत्र विकार नाशक	४०५ ००	१०२ ००	५३ ००	४८६ ००	१२३ ००	६४ ००
एसिड क्योर	अम्लपित्त मे शीघ्र लाभकारी	३६५ ००	९२ ००	४८ ००	४३८ ००	१११ ००	५८ ००
कुमारशोषान्तक	वच्चो के सूखा रोग मे उपयोगी	३६५ ००	९२ ००	४८ ००	४३८.००	१११ ००	५८ ००
कृमिरिन	सभी प्रकार की कृमियो के लिए	४०५ ००	१०२ ००	५३ ००	४८६ ००	१२३ ००	६४ ००
कामशक्तिवर्धक	कामशक्ति वृद्धि हेतु	—	—	४६० ००	—	—	५५२ ००
गैसक्योर	अपचन, गैस मे शीघ्र लाभकारी	३६५ ००	९२ ००	४८ ००	४३८.००	१११ ००	५८.००
चर्मक्योर	खाज–खुजली, दाद मे उपयोगी	४०५ ००	१०२ ००	५३ ००	४८६ ००	१२३ ००	६४ ००
ज्वर क्योर	विभिन्न ज्वरो मे उपयोगी	४४५ ००	११२ ००	५८ ००	५३४ ००	१३५ ००	७० ००
डायरिन	दस्तों मे शीघ्र लाभप्रद	४४५ ००	११२ ००	५८ ००	५३४ ००	१३५ ००	७० ००
पावर–३१	नपुसकता, शीघ्रपतन नाशक	६५५ ००	१६५ ००	८५ ००	७८६ ००	१९८ ००	१०२ ००
प्रदर क्योर	श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर मे उपयोगी	४०५ ००	१०२ ००	५३ ००	४८६ ००	१२३ ००	६४ ००
पुसनो	पुत्र प्राप्ति के लिए	—	२१४ ००	११० ००	—	२५६ ००	१३२ ००
पाण्डुरिन	पाण्डु, कामला मे उपयोगी	४४५ ००	११२ ००	५८ ००	५३४ ००	१३५ ००	७० ००
फैटक्योर कैपसूल	मोटापा नाशक	४७५ ००	१२० ००	६२ ००	५७० ००	१४४ ००	७५ ००
वात क्योर	वात–विकारो मे शीघ्र लाभप्रद	४०५ ००	१०२ ००	५३ ००	४८६ ००	१२३ ००	६४ ००
विषम क्योर	मलेरिया, जीर्णज्वर नाशक	४०५ ००	१०२ ००	५३ ००	४८६ ००	१२३ ००	६४ ००
मेघाटोन कैपसूल	स्मरण शक्ति वर्धक	४०५ ००	१०२ ००	५३ ००	४८६ ००	१२३ ००	६४ ००
यक्ष्मा क्योर न०१ (स्वर्ण मालती युक्त)	यक्ष्मा मे शीघ्र लाभकारी	६६० ००	१६६ ००	८५ ००	७९२ ००	२०० ००	१०२ ००
यक्ष्मा क्योर न०२ (लघु मालती युक्त)	यक्ष्मा मे शीघ्र लाभकारी	४६० ००	११६ ००	६० ००	५५२ ००	१४० ००	७२ ००
रज क्योर	मासिक अनियमितता नाशक	४०५ ००	१०२ ००	५३ ००	४८६ ००	१२३ ००	६४ ००
रेचक	कब्ज को दूर करने के लिए	४०५ ००	१०२ ००	५३ ००	४८६ ००	१२३ ००	६४ ००
लिवर क्योर	यकृत–प्लीहा मे लाभप्रद	४०५ ००	१०२ ००	५३ ००	४८६ ००	१२३ ००	६४ ००
सुगर क्योर	बहुमूत्र, मधुमेह मे उपयोगी	४४५ ००	११२ ००	५८ ००	५३४ ००	१३५ ००	७० ००
शूल क्योर	पेट दर्द मे शीघ्र लाभकारी	४०५ ००	१०२ ००	५३ ००	४८६ ००	१२३ ००	६४ ००
शक्ति फोर्ट	शक्तिवर्धक, बल एव क्षुधा बढ़ाये	५६० ००	१४० ००	७२ ००	६७२ ००	१६८ ००	८७ ००
स्टोन क्योर	पथरी नाशक	४०५ ००	१०२ ००	५३ ००	४८६ ००	१२३ ००	६४ ००
श्वास क्योर	श्वास मे उपयोगी	४०५ ००	१०२ ००	५३ ००	४८६ ००	१२३ ००	६४ ००
शिलाजीत कैप०	दुर्बलता, वीर्य–विकार नाशक	५६० ००	१४० ००	७२ ००	६७२ ००	१६८ ००	८७ ००
स्वप्नप्रमेह हर	वीर्य को गाढा कर स्वप्नदोष दूर करता है।	४७५ ००	१२० ००	६२ ००	५७० ००	१४४ ००	७५ ००
हिस्टीरिया क्योर	हिस्टीरिया के लिये लाभप्रद	४०५ ००	१०२ ००	५३ ००	४८६ ००	१२३ ००	६४ ००
हर्टिना कैपसूल	उच्च रक्तचाप मे उपयोगी	४०५ ००	१०२ ००	५३ ००	४८६ ००	१२३ ००	६४ ००
हृदरिन	हृदय विकार मे लाभकारी	४०५ ००	१०२ ००	५३ ००	४८६ ००	१२३ ००	६४ ००

तैल

नाम औषधि	उपयोग	पैकिंग	थोक मूल्य	खुदरा मूल्य
लाल तैल	बच्चों के सूखा रोग मे	50 ML	13 00	15.75
वात क्योर तैल	वात रोग नाशक तैल	50 ML	18.00	21 75

मलहम

नाम औषधि	उपयोग	पैकिंग	थोक मूल्य	खुदरा मूल्य
चर्म क्योर मलहम	चर्म रोगों मे उपयोगी	28 gm	14 00	17 00
छाजन क्योर मलहम	छाजन में उपयोगी	28 gm	14.00	17 00
वात क्योर मलहम	वात रोगों मे उपयोगी	28 gm	14 00	17 00
पाइल्स क्योर मलहम	अर्श में लगाने हेतु	28 gm	14 00	17 00
नवजीवन मलहम	इन्द्री पर लगाने हेतु	10 gm	17 00	21 00

चूर्ण

नाम औषधि	उपयोग	पैकिंग	थोक मूल्य	खुदरा मूल्य
प्रदरान्तक चूर्ण	प्रदररोग नाशक	120 gm.	26.00	31 00
योनि प्रक्षालन चूर्ण	योनि प्रक्षालन हेतु	120 gm	16 00	19 50
सुगर क्योर चूर्ण	मधुमेह नाशक	120 gm	38 00	46 00
गैस क्योर चूर्ण	पेट दर्द मे उपयोगी	100 gm	22.00	26 50
		50 gm.	12 00	14 50
निगम चूर्ण	मलावरोध नाशक	100 gm	20 00	24.00
		50 gm.	11 00	13 25
शिवाक्षार पाचन चूर्ण	अजीर्ण कब्ज आदि मे लाभप्रद	100 gm	26 00	31 25
		50 gm	14 00	17.00

वटी

नाम औषधि	उपयोग	पैकिंग	थोक मूल्य	खुदरा मूल्य
कामकेशरी वटी	कामशक्ति वृद्धि, नपुसकता में उपयोगी	120 गो०	250 00	300 00
		60 गो०	130 00	156 00
नपुसकहारि वटी	कामशक्ति वृद्धि मे उपयोगी	120 गो०	190 00	228.00
	कामशक्ति वृद्धि मे उपयोगी	60 गो०	100.00	120 00
वीर्य शोधन वटी	वीर्य विकार में उपयोगी	120 गो०	170.00	204 00
		60 गो०	90 00	108 00
वात क्योर वटी	वात रोगो में उपयोगी	120 गो०	80 00	96.00
		60 गो०	43 00	52 00
बसन्तकुसमाकर रस	शास्त्रोक्त	60 गो०	260 00	312 00
अर्श क्योर वटी	अर्श रोग में उपयोगी	120 गो०	34 00	41 00
		60 गो०	18.00	22.00

आयुर्वेदिक घनसत्वों से निर्मित कैपसूल

नाम कैपसूल	उपयोग	१०० ग्राम घनसत्व चूर्ण		थोक मूल्य			खुदरा मूल्य		
		थोक मूल्य	खुदरामूल्य	५०० कैप०	१२० कैप०	६० कैप०	५०० कैप०	१२० कैप०	६० कैप०
अर्जुन	हृदयविकार नाशक	६५ ००	७८ ००	३६५ ००	९२ ००	४८ ००	४३८ ००	१११ ००	५८ ००
अशोक	प्रदरनाशक	७० ००	८४ ००	३८० ००	९६ ००	५० ००	४५६ ००	११६ ००	६० ००
अश्वगन्धारिष्ट	शक्तिवर्धक	६५ ००	७८ ००	३८० ००	९६ ००	५० ००	४५६ ००	११६ ००	६० ००
अपामार्गादि	कास, श्वासनाशक	६५ ००	७८ ००	३८० ००	९६ ००	५० ००	४५६ ००	११६ ००	६० ००
उदम्बर	मधुमेह नाशक	७० ००	८४ ००	३८० ००	९६ ००	५० ००	४५६ ००	११६ ००	६० ००
कुटज	अतिसार नाशक	६५ ००	७८ ००	३८० ००	९६ ००	५० ००	४५६ ००	११६ ००	६० ००
नेत्रबालादि	अपस्मार नाशक	६५ ००	७८ ००	३८० ००	९६ ००	५० ००	४५६ ००	११६ ००	६० ००
बावली घास	रक्तरोधक	६५ ००	७८ ००	३६५ ००	९२ ००	४८ ००	४३८ ००	१११ ००	५८ ००
मुलहठी	कासनाशक	८०.००	९६ ००	४०५ ००	१०२ ००	५३ ००	४८६ ००	१२२ ००	६४ ००
रास्ना	वातरोग नाशक	७० ००	८४ ००	३६५ ००	९२ ००	४८ ००	४३८ ००	१११ ००	५८ ००
रुदन्ती	यक्ष्मानाशक	८० ००	९६ ००	४६० ००	११६ ००	६० ००	५५२ ००	१४०००	७२ ००
सुदर्शन	मलेरिया नाशक	६५ ००	७८ ००	४०५ ००	१०२.००	५३ ००	४८६ ००	१२२ ००	६४ ००

आयुर्वेदिक पेटेण्ट औषधियाँ

शर्बत (SYRUP)

नाम औषधि	उपयोग	पैकिग	थोक मूल्य	खुदरा मूल्य
गैसक्योर सीरप	पेट दर्द, खट्टी डकारो, हाजमा मे उपयोगी	४०० मि०लि०	७० ००	८४ ००
		१०० मि०लि०	१६.००	२३ ००
ग्राइपवाटर	बच्चो के दात निकतले समय के रोगो मे उपयोगी	१०० मि०लि०	१२ ५०	१५ ००
जुकाम क्योर	जुकाम, खासी, नजला मे उपयोगी	४०० मि०लि०	७० ००	८४ ००
		१०० मि०लि०	१६.००	२३ ००
डायरौल सीरप	बच्चो के अतिसार मे उपयोगी	५० मि०लि०	१२ ००	१४ ५०
पावर–३१ सीरप	पुरुषो के लिए बल, वीर्य वर्धक	२०० मि०लि०	३२ ००	३८ ५०
पावर–३१ सीरप (२० कैपसूल सहित)	पुरुषो के लिए बल, वीर्य वर्धक	२०० मि०लि०	५० ००	६० ००
लिवोनोल सीरप	यकृत, प्लीहा रोगो मे लाभप्रद	४००. मि०लि०	७० ००	८४ ००
		२०० मि०लि०	३६ ००	४३ ००
लिवोनोल सीरप (२० कैपसूल सहित)	यकृत, प्लीहा रोगो मे लाभप्रद	२०० मि०लि०	४५ ००	५४ ००
शक्ति सुमन सीरप	बलवर्धक, स्फूर्तिदायक टॉनिक	२०० मि०लि०	३० ००	३८ ००
हेम सुधा सीरप	स्त्रियो के श्वेत प्रदर मे उपयोगी	४०० मि०लि०	५५ ००	६६ ००
		२०० मि०लि०	२६.००	३५ ००
हेम सुधा सीरप (२० कैपसूल सहित)	स्त्रियो के श्वेत प्रदर मे उपयोगी	२०० मि०लि०	३६ ००	४४ ००
[illegible] ड्राप्स	बच्चो का केल्शियम युक्त टॉनिक	३० मि०लि०	१२ ००	१४ ५०
शिलाटोन	बलवर्धक, स्फूर्तिदायक टॉनिक	१०० मि०लि०	१६ ००	२३ ००
		३०० मि०लि०	४० ००	४८ ००